

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मुंबई पायथोनी पास शान्ति सुधर प्रेसमें

चीमनलाल सांकलचंद मारपीयाने

मुद्रित किया.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभः ॥
 प्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥
 ॥ वर्षाणिहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंनव्यजोवा
 ॥, तत्त्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं
 ॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वानि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,
 ॥ द्वायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिवहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥
 ॥ येयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृतसंक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्गोरजिनेन्द्रतीर्थतिलकःसद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः
 मंगणभूतस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽभवत्सुविहितेपक्षेस
 ॥रवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥
 नीतत्पदपंकजैकमधुकृत्श्रीवर्द्धमानान्निधिः, सूरिस्तस्यजिनेश्वर
 णभृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्तन्नसिद्धिपंकितसरदि ।
 ८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुद्धंरुतौखरतरे त्पाख्यं
 देर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलान्नि
 ॥ दादाविरुद्विरुद्धातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ हेमकीर्त्तिप्र
 यः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, हेमवाटी
 स्थी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविरुद्धातः, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ
 केनेकनेकानां, ज्ञानक्रियाप्रपादकाः ॥ ९ ॥ तत्ररणसमालोढा, नि
 षानकुशलान्निधिः ॥ धर्ममशसमाधिस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥
 उपाध्यायसदाचारा, वादीनांमानजंजका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, नं
 पदंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठककृद्विरुद्धेण, कृतोवंग्रंथसंग्रहः ॥
 सपरोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंनपितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यैस्तेचंद्रेण,
 ॥ नामरसवांधवैः ॥ श्रीमंशक्रुत्सहायेन, सुव्याशासकाकरैः ॥ १३ ॥

यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेऽथोवै, नि
त्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेऽरम्ये, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृह
दोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकका सर्व रकम खरच तथा इसका लाज शुज
हमारे पोषपुत्र शिष्य पं । श्रीक्षेमचंद्र चि । पेमचंद्र चि ।
अमरचंद्रका हे, हमने हमारा सर्व स्वउपासरा पुस्तक धनमालका
मालक इन तीनोंकों किया हे, दूसरा किसीका दावा वजर नहीं ॥
शुज ॥

दसकत । ३० । श्रीरामलालगणिका खुद ॥

॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रज्ञवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंजवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोवसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंज्ञ तविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीजङ्गवाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीशूलज स्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिस्वरजी ज्ञये सो वीरजगवानसे १३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकू प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्त्रितसूरी १ क्रोन सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगच्छ प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वघर बने प्रज्ञावीक विद्यासिद्ध ज्ञये इनोसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तेसे १७ पट्टपर श्रीजिनचंडसूरी हुये इनोसे चंडकुल प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपाठ जगवानसे ३० में श्रीउद्योतन सूरिः ज्ञये सो एक तो निजशिष्य नर इसरा साधुनके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योंको आचार्यपद दिया तबसे ८४ गच्छ ज्ञया, यह ८४ गच्छोंके आचार्य बने प्रज्ञावीक धर्मोद्योतक ज्ञए, इन उद्योतनसूर जीके निजपाठधारी आवूजीतीर्थ प्रगटकर्ता विमलमंत्री प्रतिबोधके ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः ज्ञये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः ज्ञये सो अणद्वलपुरपट्टणमें डुर्जजराजाकी तन्नामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके गजाने खरतर विजद दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊ लज्जलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जितमें खर कहीये बने कठोर इस वास्ते खरतर बिरुद्ध पाया,

कोटिकगह वज्रशाखा चंडकुल खरतर विरुद्ध एसे ४ जेद नवदी
 कित शिष्यकूं कहणा सरू जया, इनोके ४१ में पट्ट दिह्लीके बाद
 साह प्रतिबोधक जीवहिंसा ठुमाणेवाले श्रीमालमइतियाण गोत्र
 प्रतिबोधक श्रीजिनचंडसूरिजी जये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके
 लघुभ्राता श्रीस्थंजणातीर्थ नर नवांगवृत्ति प्रगटकर्ता श्रीअजयदेव
 सूरिः जये, तत्पट्टे ४३ में अठारे हज्जार वागमीश्रावक प्रतिबोधक
 श्रीजिनवज्रजसूरिः युगप्रधान जये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रज्ञावीर
 युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः जये जिनोने चितोर नर उदाधणी
 वज्रखंजसे साहीतीन कोटी विद्यान्नायकी पुस्तक निकालके साथ
 कर बावनवार चोसठ योगणी एक लाख तीस हज्जार घर राजन्य
 वंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर नुसवाल बणाया, उस
 वखत तीनसे गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारो लूणिया राखेचा
 सावणसुखा ठाजेम इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसे इस वखत
 सातसे करीब दोगये हे, वह गुरूका गुण ज़िख नहीं सकते, वह
 आज तक बने दादाजीके नामसे सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५
 में मणीधारी दिह्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दि-
 खलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंडसूरिः जये जिनो
 का दिह्लीके जरबजारमें दाग जया बना चमत्कार देख बादसाहा-
 दिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी जये, अनुक्रमे
 ५० में पट्टपर महाप्रज्ञावीर कुशलसूरिःजी जये, सो आचार्यपद
 पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं बसकर संवमें बने २ उपगार
 किये, गूजरमल बोधरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप
 में उदा जाकर दरियाबमें तिराई एसे परमोपकारी अंतमें फागुण
 बदि अमावशको स्वर्गवादा जये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-
 गट होय प्रथम दर्शण दिया, निसर्पणि नक्षत्रोंका उपगार

जगेर करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघने अपने आचार्यको इष्टेव समझके सर्व नगर गांवमें चरणमूर्ति स्थापन कर दादाजीके नामसे वंदन पूजन करणे लगे. सर्व जगे दादागुरुका जश प्रख्यात जया, प्रत्यक्ष परचा देखेवाले यह तीसरा दादाजी जये, इनोके पाठानुपाठ ६१ में श्रीजिनचंडसूरि जये, जिनोने अकबर बादशाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका बताना जत्यादि दिखाकर अमारि उद्योपणा फिरवाई, सर्व बेपवारियोंकी हिंजुस्थानमें म्हा करवाई, क्रियानुद्धार कर पतितोंको गंटा म्हाकी व्यवस्था करमचंद बनावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरि, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरि: इनोके समयमें आचार्य गद्य सागरचंडसूरि:सें जया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरि: इनोके समय रंगविजयमूरि:सें रंगविजय गद्य जया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंडसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनभक्तिसूरजी जये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनजाजसूरजी जये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनदर्पसूरिजी जये. इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी जये, इनोके समयमें महेन्द्रसूरिजीसें संतोवरागद्य जया, इनोके ७२ में पट्ट श्री जिनहंसमूरि:जां जये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरि: जये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्तिसूरि:जी वर्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्ता कुल प्रकाशक पुण्यश्रेणी ॥

॥ दादामादिय श्रीजिनकुशलनूरि: महाराजके शिष्य म. रंभाध्याय श्रीकर्मकीर्तिगणि: जीने जं । बु । प्र । ज । श्रीजिनपद्ममूरि:जीके वगवतमें साधुनोक आचार्यमहाराजके पासमें ब. डोन थोमें रह कर वर्तमान कियवंतोंको उर २ जगे चतु-

मांस करणें जेजेगये, थोमे बहोत रहेथे सो ज्ञी गोचरी थंमिल
 जूमी चलेगयेथे उस बखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी
 ही बैठेथे, श्रीजीका थंमिलजूमीका हाथ धुलाणेकूं उठै, अपने वि-
 द्यापाठकजीका ऐसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप
 विराजो समयका बना अपरबलीपणा हे सो गछमें साधू बहोत
 कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके बखत
 कैसेर ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसेर थंमित वि-
 द्यमान थे, अब यह गछ किसदशाकूं षोडचा हे, थोमा समुदाय,
 जिसमें सुपात्र तो बहोतही थोमे हैं, तब उपाध्यायजीने कहा म-
 हाराज यह बृहज्ज खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी
 अज्ञी गुरुदेवकी कृपासें यतीर होजायंगे, एसा कह दादासाहि-
 बका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे,
 गुरूके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-
 रणेकूं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन
 नमस्कार कर गुरूके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीने शांतरज्ञा
 का ज्ञरा बेराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोंने वि-
 वाहकी वांग ठोम दीक्षा ली, दादासाहिबने देवशक्तीसें सबोंको
 धर्मोपगरण वेष दिया, इन सबोंको लेकर श्रीआचार्य पास आये,
 सूरिथ्वरनें कहा, कैमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने
 कहा तथास्तु, मेरे शंतानी कैमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे,
 उस दिनसें बृहत्साखा कैमधाम विस्तारजावकूं प्राप्त जई.
 यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची
 देशमें जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध
 हे, इस साखामें बनेश विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये
 अनेक प्रकरण काव्य न्याय टीका वगैरह विद्यमान हे, उस साखा

(ए)

में उपाध्याय श्रीनेमयूर्तिजीजिः तत् शिष्य उ । श्रीकैममालि
कजीजिः तत् शिष्य । पंथित प्रवर श्रीविनयजद्रजिजिः तत्
शिष्य श्रीपं । प्र । लब्धिदर्पजिजिः तत् शिष्य पं । प्र । श्रीधर्म
शीलजिजिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्य पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि
जिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीरुद्विसारगणिजित्तंगृहीत
रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलास तच्छिष्य पं । हमासौज्ञायसुनिः
चि । पेमचंद्र चि । अमरचंद्रकी तरफसे यह ग्रंथ सब जीवोंके उ-
पगारार्थ पढणेकूं ठपाया । श्रीवीकानेरमें सं । १९५९ की ज्येष्ठ
वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ
स्थापन करी हे इसमें मदत देणवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीका-
नेरमें दिया ॥

- ४१ रु । श्रीनमसेवजी चांदमलजी ठढा.
११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंद्रजी जानक.
११ रु । श्रीसदारामजी गोलठा.
११ रु । मानमलजी केसरीचंद्रजी सास.
११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलठा.
१० रु । श्रीराजरूपजी देवचंद्रजी नाहटा.
३ रु । श्रीआसकरणजी वरदिया.
११ रु । श्रीशारमलजी जसकरणजी रामपुरिया.
११ रु । श्रीसिरदारमलजी तातेम.
२५ रु । श्रीनालचंद्र कतीराम आजम मुमईवाला.
३ रु । श्रीवठराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रायक इन पाठशालाकूं मदत देंगे तो
ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जन्तुलोकोंके कल्याण शिष्य जैनपं-
थित तत्त्वज्ञानी बण जायेंगे, जैनउपदेशक बनें, सर जो नही प-

दते हैं उनको हरतरे आवकलोक शिक्षा देकर पढ़ाएकुं उद्यमवत
 करणा यह काम आवक मातपिता नर गुरुलोकोंका हे, इस नही
 पढ़ाएके सबव जैनके जेपधारी नर जेपधारणीयां अनेक कुकर्मोंके
 वश नरकके पात्र नर धर्मकुं लजाते हे, क्यों को दशवी-
 कालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तनु दया ॥) पढ़-
 ली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीठे दया पाल सकता हे ॥ ज्ञा-
 नीका जन्म सुवरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ ऐसा
 कहते हैं हमारे ज्ञावे विगमे तो क्या नर सुधरे तो क्या, हम नतो
 इनोको गुरुकरके मानेंगे न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेतो मानरहित कंग-
 लोकी तरे ॥ हम पढ़ाएकी क्यों कोसीत करें ॥ उत्तर ॥ यह स-
 मजसे तो जैनधर्म अभावश चंडनाकुं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसे
 जैनधर्ममें पूनमचंद्रता कैसे उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि
 आवकाचार ग्रंथोंमें ऐसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-
 र्मसे नृष्टजये धर्माचार्यकुं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला उत्तरे,
 दस बीस आदमी एकठे होकर निंदा करणसे विगारका सुधार नही
 होता, धर्ममें थिर करणकी असली जरु विद्यावृद्धि हे, स्वज्ञाव कोई
 किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चै हे, तथापि कारणसे
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढ़णा है कार्य सो अठी क्रिया चोथा
 पांचमा ठठा सातमा गुणठाणा चढ़णेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थिकरोका हे सो विचारणा.
 प्रश्न । हम जतियोंको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोइ
 कृतघ्नी अपणे पितासे पिताज्ञाव नरके तो उसका क्या कोइ कर
 सकता हे लेकिन संसारमें वद लावकबंदतो नही गिणाजाता, ए-
 सेइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य
 तो जतीही हे, जतियोंमें पढ़ते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पक्कमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हैं यह तो चलता उपगार है. उर जतियोंके वस्त्रोंमें तुमारे वस्त्रोंमें चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया है, यह उपगार सबसे बढा है. ॥ प्रश्न ॥ एमोंकों तो हम मानने है लेकिन सुशाणे पढ़ाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बढोत जिनोकों केमें माने? ॥ उत्तर ॥ सच्च है, इस बातका निर्णय हमने आगे लिखा है सो वांचो. एक आवकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करते हैं इनोमें यथार्थ धर्म पलतानही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्र्यकं कदा है सो तो वज्ररूपजनाराच सं-
 द्धान विवेक होतेइ गया, सामायक वेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें जी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकनीका व-
 रतावा देखके मध्यस्थ हो के रहे, आरंजत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें बोही साधु है, जतियोंके चेला वणाणेमें इतना फायदा है—मिश्र्यात्वकुलमें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रम-
 का पाप ज्ञानपढ़े बाद आपसेही वेदवेद्या, केइयक इनोमें चोथा पांचमा ठहा सातमादि गुणवाणे चढ़णा, आवगवर्गका इस जव परजव संबंधी अनेक कार्योंका सवाणा, इत्यादि लाज परजीवकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थकर गोत्रकर्म बांधता है, ओमेंमें विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोकूं पढ़ाया नही उर गुरुमेरे बाद गुरुके क-
 माये धनसें पापारंज करे तो यह पाप चेलेका गुरुकूं जरूर लगे या नही? उत्तर—जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह गोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसें करे जो पापारंज सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकूं नही, यह जैनधर्मका

मर्म है, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखवाते है संतान वेसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविस्तन गुरु सिखवाते नही इस वास्ते करै करावै अनुमोदे असकू पाप लगे ॥

प्रोफानेर वडे उपासै पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीराम-लालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पासे इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सोलैचाणक्य स्वरोदय ज्ञापा	१	०
करुणावत्तीत। दादासाहिवपूजा	०	४
मूर्तिमंनणका अदञ्जुत ग्रंथ सिद्धमूर्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगछ तपगछकी	४	०
ध्यावकव्यवदारालंकार	१	८

विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवन्त रूपवन्त उर विद्यावन्त सुशी-
लही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्ष-
णवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसँही होणा,
फेर हमेंसा शास्त्राज्यासी होणा, बहोत प्रमादवन्त नहीं होणा, देश
क्षेत्र काल जाय मुजब सदा गद्यकी सारसंज्ञालसँ जैनधर्मके दीप-
क होणा, बेजा चलणसँ यतीयोंको दटकणा, उनोके मन मुजब
नहीं चलणे देणा, लांठित पुरुषकी संगत नहीं करणी, उन्नय
काल प्रतिक्रमण करणा, अज्ञकके त्वागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य
जाप करणा, देवदर्शन उर आपनाचार्यादि पन्थिलेइण करणा, जती
जतणीकुं शुद्ध परंपरागम वेप उर संघ तारीफ करे ऐसे मार्गमें
प्रवर्त्तणा, इत उपरांत जो आज्ञा न माने उसकुं गलादही करणा,
स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अथै सुशील पंथितो
की सोदवत करणी, कर्मावन्त जी होणा, समय जी सोचणा, उ-
पदेश करणमें दुसियार होणा, उपाध्याय वाचकदिपद योग्य उर
पंथितकुं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख उर अयोज्ञ उर दुद्धिहीन अव-
स्थावृद्ध कलहकारकुं न देणा, अपणे २ गजके अधिष्टायक क्षेत्रपा-
ल मानज्जद्रादिकके साहायसँ धर्मके उद्योग वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रा-
दिक विद्या लब्धिवलसँ संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञाचोक
होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढ़ने उर पढ़ाणेवाले होणा,
वर्तमानविद्याका नित्य जाप करणा, सत्रीचोविहार नवकारमी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गुरु के घोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुद्ध अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधुओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके जंगल नही हें उहां पुस्तक लिखवाके जंगल करवाणा, अपनी निश्रयें हजारों रुपयेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधुजंका धर्म नही, फकत अपनेसे उठे उर नित्य पमिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकूं चहीये तो ज्ञानजंगलसे लेकर पीठा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिसमें वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रसन्न करवादेणा, अथवा दूसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके भेजादेणा, गृहस्थोंसे वैयावक्त करानी नही, वती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, अंधावल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंक्तियोंसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीठी दीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही हें क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक उत्तमाल पोरवाल उर श्रीमालादि श्रावक हैं, फेर इन जतियोंमेंसेही हजारों त्यागी वैरागी इस पमते समयमें जती होतेआए हें, तपा सत्यविजयजी जिनके शंतानमें वुंटे-रायजी उर आत्मारामजी वगेरे जये हें, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी कृष्णकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे जये हें उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी ज्ञायचंदजी

वंगरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चाग्रि इन तीनोंकी जर इन पुरुषोके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीजी प्रमादी ठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे जर आजकलके साधूजी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो ठाने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें जाव करके पंचस गुणघाणी हे केइयक चतुर्थ गुणघाणी, इसी तरे साधुजके मुजबदी शुभ जावसंयुक्त जतियोके जाव आश्री गुणघाणा समझणा, निश्चयतम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीजगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ बलवान हे, लोचादि कायकेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कपायकी बहुलता आजकल साधूजमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गणेशवालेंतें आपसमें देष रखते हे, खरतर तथा तपोके जो देखणेमें आता हे, जब कपाय विद्यमान हे तो लिङ्गिपद केसे सभेगा बलीहारी उनहीकी हे जिनोंने कपायकी चोकनी त्यागी हे. किंवहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक् राजपूत जाट वंगरे उत्तम जाती का चेला तीन चार वर्षकी अवस्थावाला होय तो खेणा यावन् वारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नहीं जर बढोत छोटा खेणेंसे धाय रखणी होती हे उत्तकी पात्रगेट करणेंकूं तब बढोतसे कमजात अपणी एवकूं विपालेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूमेंतें बात नही निकालते मूयोंके कइणेंमें सोना पीतल नही वणता, उष्टोंका स्वच्चा-

बढ़ी होता है सो गुणमें उगुण निकालते है, जर्तृहर जितता है-
सूरवीरकुं निर्दंड कहते है गमखाणेवालेकुं मरौकम केते है ब्रह्म-
चारीकुं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर ऐसे चलेहुं मुखपाठ
जैनधर्मका अवश्य कर्त्तव्य गुणाना निज फेर अक्षर वांचने सि-
खाणा अक्षर जमाणे बोलखा पाटी लिखाणी फेर कौश व्या-
करण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जी-
वविचारादि पट्ट प्रकरण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोल-
पट्टा मुंहपत्ती उधा मांका चेदर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, म-
स्तकके बाल केचीसैं कतराणे या उस्तरेसैं मुंदाणा, पादस्त्राण स्वे-
त वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर
देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां ऐसा उपसर्ग
नही देश विरुधके कारण त्याज्य है, प्रवचनसारोद्धार ग्रंथमें का-
रणविशेष साधूंसैंको पादस्त्राण पहरणेकी आज्ञा है, पुस्तक लि-
खणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गुंथणा तिरपणीके मोरे बणाणे
मात्रा बणाणी ठोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलता रखणी सो ज्ञी
जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातहुं चोविहार नवकारसी पोरली प्रमुख
यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखन परिक्रमणा करणा, ठत्ती शकें
सञ्चित त्यागणा, राजदंभे लोकजंभे एते रस्ते नही चलणा, कुलम-
र्याद लोपणा नही, बिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके बरखि
लापनस्ता पीणेवालेकी संगत नही बेठणा, कुविसनीयोके संगतसे
लंठन लगता है, आवक जो द्रव्य देंगे सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ-
यात्रा चेला लेणा उनोके खिलाणा पिलाणा पंक्तोको रुजगार देके
चलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय
पापोंकी गद्दी सुकृतकी अनुमोदना कर सब बोसराके परजव सा-
वणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुव्रजबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोंमें लिखा है, उस गुणोंकें धारणा चाहिये. ठाणांगमूत्रमें साधुओंकी प्रतिपाल करनेमें श्रावकोंकें मातापिता मुख्य जगवंतने कहा है, बालक कसूर न करे तो ज्ञाता मातापिता अपने शंतानपर अंतरंगसे कच्ची देख नहीं करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकें साधुओंकोसे वर्त्तना चाहिये, जेपधारीसाधुओंमें कोई तरेकी एव दीखपरे तो एकांतमें हितशिक्षा देके ठुमाणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जैसे धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नहीं दीखेतो कर्मोंकी विचित्रता समझके एसीकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावै एसी एव कोई नहीं होय नर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल जाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय नर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, नर जिनधर्मकूं लजावै एसा होयतो उहांमें रुकसत करादेणा, जिनमंदिर नर उपासरेकी श्रावद खरचकी सारसंज्ञाल जरूर करे, विनासंज्ञाल किये बढ़ोतसे मंदिर उपासरेकी तजवीजें बिगम रही है, जंमार लोक खागये हैं, उती शके इन बातका खयाल दगतरेंमें करें, अपणा लरुका लरुकीयोकूं संसारविद्या नर धर्मकी मजबूती करणकूं पक्षिगमणा चित्यवदनादि श्रावकाचार नर जैनन्यायशास्त्री अथर वचणसें सिखलाणा चाहीये देय गुरु नर वमेर अकलवंतोंकी संगत करवाणी चहिये, विरागरीमें सनातन कुत्रमरजादमें जो विपरीत आचारणा करे उसकी देखदेख थाप न करणा, वणे जहांतक उणोंका ज्ञी रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इहम समझोंकें निखलाये तो पढ़जां जैन न्यायसें दुसिआर कर पीजे सिखलाणा क्योकीं उम अंधजं इहमकी ज्यादा किताबोंके पढ़णसें पुष्टि नये

कें सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता हे,
 जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चोथे दर्जे
 पात होकर हाल मुकाम जेपुरमें ददा गुलाबचंदजीकों हम धन्य-
 वाद देतें हैं इस वजें वेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी
 मजबूती उर तारीफ जिसने समजा हे वोही जाणता हे उर लस-
 नकूं मुसककी खसबो कव लग सकती हे, जिनोंको संसारमें अन्नी
 बहोत जवभ्रमण करणा बाकी रहा हैं उनोंकों जैनधर्म किसी तरे
 रुचता नही. कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे? हे मानेजी
 तो कोन सच्चा उर कोण जूठा? (उत्तर) हे जव्य हमने पेस्त-
 रही लिखा हे न्याय जो जैनका सात जंगरूप हे उसकूं समजा
 उर वस्तुज पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता हे. (प्रश्न) इ-
 तनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोमे हैं सो एसा न्याय प-
 ढके निश्चय करे सहजमें निश्चय कैसे होय? (उत्तर) जो इतना
 नही समजो तो जो रूपजदेवजीमें लेकर आज दिनतक जो स-
 नातन जैनधर्म चलता आया हे वोही जैनधर्म सच्चा हे बीचर
 में अल्पज्ञोने अहंकारके वस मनोकाटपत फंदसे एक नय पकमके
 अपने मत खमे किये हे, पट्टशास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी
 निर्युक्तीकार जगवान जड्याहुस्वामी उमास्वाती ज्ञाप्यकार जिन-
 जद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरीपे बुद्धी-
 के धणी उनोंने जिस बातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म
 समजणा, श्रावणधर्मवालों पर वसा उपगार रत्नप्रज्ञसूत्र उर दादा
 श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया हे सो केइयक पापारंज
 की बानें तो उस जातीके कायदेसेही बंध होगई हे, जैसे मयका
 पाणा उर नांतादि अन्नक खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस
 धारि एसे उत्तम कुलमें निगुठीषेने अयोग्यताकी समक बां-

धर्मे पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते है, चिंतामणीरत्न समान जैन
 धर्म पाय के निगन्ताग्रकी तरे क्यों हाथसे फेरते हो पीठे पठ-
 तावा होना ओम्मे दिनकी जिदगानी है, मदिरा पीणेमें वावन
 उगुण है एमेंइ मांतमें देखो जैनतत्वादर्श ज्ञापायंत्र, यही चीज
 अर्था होती तो तुमारे वन्देरे लाखों राजपूत इस चीजोंको
 क्यों ठोकरते उर मुसलमानीको जो धर्मकायेदेमें इस बातकी
 सकत मनाई है इत्यादि, किंवहुना ॥ जैनपाठशालानु स्थापन
 कर्णी पढ़नेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाडियै,
 जैनकोममे संप नदी है इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं-
 नित तो दुस्मन ज्ञा अर्था होता है मूर्ख हितकारी जो कामका
 नही, विद्यावान सब काम विचारकेइ करता है मूर्खके विनाका-
 रण हैप उर अहंकारीपणा होता है वाकी तो कवियोंने कहा है—
 दुहा ॥ गङ्गा नदी जाके मो नदी, दुस्मन नदी पचास ॥ जलनी जलके
 क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ आवक जितनी चीज
 अपने उपजोगमें लेता है सो सब उत्तम चीजका दान करता है
 एक त्नी वर्जके उत करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एवर्वता जांग
 कर संसारका पार पुन्यानुबंधो पुन्यसे पाता है मुक्तिपंथ जाते हुये
 जीवके पुन्य बानाउत्तर है, अन्न वस्त्र उपधी सज्या पात्रादिकसाधुसंको
 देवे, देवके निमत अष्टद्वय गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजासंमें
 दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूजा वगेरे कजमगे दान करे, सा-
 धर्मी तथा जैनपंडितोंके नगद्वय वस्त्र जोजनादिक यथायोग्य
 दान करे, तीर्थकर जगगन ज्ञा गैवतमी दान देते हैं, दानधर्म
 मुख्य है जगवतीजमें अहंकार जजंगद्वय कहा है, जगवतीनु
 जमें तीन गुरु कहें हैं सिद्ध गुरु १ जो कारागरी निवृत्तावे सो, क-
 लागुरु २ जो सिन्धवा पट्ट्यादि उर कला निवृत्तावे सो, धर्मगुरु

३ । सामायक पम्पिकमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्ति-
पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य ज्ञाती करे ॥ अत्र
चउज्जंगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवत देसविश्राधक । १ । कउरुप
क्रियां करणेवाला देशेआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्व-
विराधक । ३ । ज्ञान उर संतुक्रियावत सर्वेआराधक । ४ । ॥ इति
पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोंके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा
होय तो हमारा उपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोके कर्त्तव्य ॥

मारवाँरमें प्रायें जैनमंदिर जोगह्नी पूजते हैं उनमें इस
बखत प्रायें मिश्यात्वी बहोत सम्यक्ती बहोतही कम है, गुजरातमें
जो जोजक जैनमंदिर पूजते हैं सो सर्व जैन हैं जिनोको अन्य
देशोंमें शंकर कहते हैं. (प्रश्न) पूर्वोक्त जोजकोने जैनधर्म कवसें
छोडा है ? (उत्तर) पहले श्रीरूपनदेवजीने जोगवंश स्थाप-
नकर अपने कुलके मोहित बनाये, पीछे जरतजीने ब्राह्मणवंश
आराधन करा, राजा सूर्ययशने जोगवंशीयोको पूज्य जाण जिनमं-
दिरोंकी सारमंजाल सांपी लेकिन जिनमंदिरका चढापा मंदिरके
कुठपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणसें बलिदान जोगवंशी नही
होतये दो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोको अनेक तरेसें पर्व
मोहोहव पर डूब्य बख जोजनादिकसें राजा उर प्रजा सब मत्कार
करतेये दो सब नवमें दशमें जगवानके अंतरमें मिश्याधर्मी लोगये
बाद कत्ती कोउ जैन कत्ती मिश्यात्वी एसे दोते चले आये, जब २४
वर्ष पदले सुर्मायामें जैनधर्म फैला तब राजाके पुगेहित राज-
पूतके संग जोगवंशी पर जैनधर्मी लोगये तब राजा उपलदेव प-
क्षीय योगोंने ज्ञाती उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-
धर्मी नाधर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

सैवन् श्रीगैमेमै रानानुज माधवाचारी वगेरोने विष्णुं संप्रदाय नि-
 कासी, उसदी जनानेमें अनेक राजन्ववंशीयोंको दादा इत्तसूरजा
 ने लाखों तुमवाल फेर बणाये, तब राजवालोंने गुरुसे अरज की
 इत दयाधर्मके प्रज्ञावसे निर्दयीपणा हम लोकोंमें होगा मही राज्य
 तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा,
 गुरुने कहा जो जिनमंदिरोकी जत्ती उर जतीगुरुकी सेवा अन्नक
 त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलेगे तहां
 तक पाटका भालक राजा उर सर्व थाटका मालक तुमलोकें रदोगे
 तथास्तु वरदान एसाइ जया, राजाउने अपणे जाई स्वजनवर्गी
 उत्तवालोकें प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथा-
 चांग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौ राजवालोंमें उत्तवालोकें राज्या-
 धिकार बणा तबसे उत्तवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शि-
 वालययादिकोका पूजारीपणा जौ जोजकोंको सोंपा बह जोगवंशी
 फेर पाँच धारे मिश्रवात्वी बणवेवे, विद्याहीनता होणेसे सब तरे
 की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्रह्मण जोजकोंको कर्म कर
 करके मोनणे लगे पूज्यज्ञाच उठगेया, जो कर्तौ जोजकलोक एसा
 नमजते होंगे की हम तो अबलसेही जैव वैष्णव थे (उत्तर)
 यह समझकी नून हे हम पदार्थी जियदिवा हे जैनधर्मको बहुत
 लायनमें प्रजा जैन रही, घोघोक असल बोद्ध, चांग्यादिकोके अ-
 सलमें चांग्य, इत्यादि बातें तवारीकोमें जौ पाईजाती है लेकिन
 जैधर्म नुर निरुपाधर्म दोनो अन्तदि काजका हे इतना जोज-
 कोंको जरूर समझणा चाहिये जो तुमलोक सदा निरुपाधर्मो हो-
 ने तो गजा उपलदेव पसागदिक परमजैन तुमग जागा नुर बहु-
 मान उत्तवंश पर कली नही लगते, मिश्रधर्मोकोका जोग उत्त-
 चान जैनोपर बह नम सकनाथा इतनेमेंही समझणा, पाँचमें

विष्णुमंदिरोंकी पूजा नर राजा वगैरोंकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंने तिथि नहीं करी बध गया, इस तरेही बडा-तसें उसवंशी जी खुतामदीसे डुतरा धर्म धारलिया तुमकों क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसे हमारे कुन मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखते हैं उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणावट जी हे “ जिसकी खावे वाजरी जिसकी जरणी हाजरी ” उसमें हरज करणसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगनकीसें जिनमंदिरमे जामू देणा, वरतन मलणा, अंगदूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्त्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा जी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेंमें ढकणा वगैरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध बाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री ब-होतही विवेकसें रखणा, देवइव्यकी चोरी नही करणी, हकमें हरकत मालणा नही, देव नर गुरुकी सेवा करणसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो जावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके बश जो श्रद्धा नही आवै तो जिसकी ब दोलन रोटी आदि सडकमों रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुम्हें सडकमों रुपै आवक देते हैं वो सब देवगुरुका प्रताप समझ इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर व उपदेश मैंने लिखे हे कोइ कठोर लवज लिखा होय तो माफी मांगताहूं सरलजावसें लिखा हे देयसें नही ॥

इस ग्रंथके बाणणेंमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके बांचे या गुरुसें शुद्ध करावेवें में मनशुद्धिसें सर्व मंत्रसें कृपा मांगनाहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते-

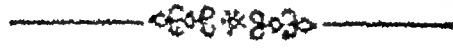
हैं, उनका मैं तदा आचार मानता हूँ ॥ यतः ॥ तथापि क्रियत
 ग्रंथ, संतिग्रहपिड्जना ॥ नहिदस्थुज्जयाल्लोको, देव्यवानिद्वर्त्तते ॥
 ॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह ताली करता हूँ यद्यपि छुरजन बहोत हे
 चोरोके मरने लोक कंगाल नही बल वेठते तेसे १ मेने अपने
 हाथसे लिखकर सुबड जेजकर शिष्यवर्गके कहणेसे हममें सं-
 ग्रह मेने अनेक ग्रंथोले किया हे, बहोत चीजें पं । प्र । श्रीअवी-
 ग्चंद्जीगुनिःमे लीदे, पुस्तक यह बहोतही स्वरूप संचय हे,
 रूपतेद्वजकी आदिअकर । २ । महावीरस्वामीका । मा । इन दोनोंसे
 चणा जो । राम । उनोके मध्यवर्त्ता सब जगवंतोके गुणोका विलास
 इसवास्ते इस ग्रंथका स्वरूपसुत्रय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे ॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सर्वईया ॥

दाशानुदाशावसर्गदेवाः, यदीयपादावजतलेलुवन्ति ॥ मरु-
 स्थलीकल्पतरुःसजीया, क्लृप्तप्रधानोजितदत्ततूरिः ॥ १ ॥ चिंताम-
 णिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिजग्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्री
 जिनदत्तमूर्तेः, सर्वपदावस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचवोगिनो,
 नचभगार्थशस्वनेशाकिनी ॥ नोवेत्तात् पित्राचराकृतगणाः नोरो-
 गशोगोत्रधं नोमारीनचविग्रहः, प्रभृतयः प्रीत्याप्रगत्पुत्रकैः ॥ य-
 स्तेर्थाजिनदत्ततूरि, गुण्योनामाशरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-
 र्वईया ॥ बाबन वीर किये अपने बज, चौसर योगण पाय ल-
 गाई ॥ साइण साइण व्यंतेर खेला, नूनरूपेत् पिशाच पुलाई ॥
 बीज ननक कमल जटका, छटप गेहे जु खटका न काई ॥ कहे ध-
 मतीद लेंगे कृण लीद, बाँये जिनदत्तरी एक पुलाई ॥ १ ॥ इति ॥
 राजे धुंन ठौरठौर, एसा देव नदी और ॥ दादी दादी नामनें, ज-
 गत्र जग गावो दे ॥ आपणेदी ज्ञाय जाय, पुजे लम्क लोक पाय ॥
 प्यासनके गंनमांज, पाणी आन पायो जे ॥ बाट पाट शत्रु शट,

हाट पुर पाटलमें ॥ देह गेह नेहमें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-
 ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, मात्रों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम सुं
 कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग नवरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कु-
 शल देव देहरे, कुशल घन राजड्वारे ॥ पुन्य पसाये कुशल कुशल
 श्रीसंघ जणीजै, वाहण आवै कुशल कुशल घर २ गाईजै ॥ जिन-
 चंद्र सूरि पुह पटधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि
 पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल बमो संसार
 कुशल सज्जन घर चाहै, कुशल मङ्गल माल लखि घर कुशल
 आवै ॥ कुशल घन वरसंत कुशल घन धनरुक्मिणी, कुशल घोमां
 अट कुशल पहरीय सुवन्नी ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशल जय
 रलियामणो, जट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर २
 होय वधामणो ॥ १ ॥

रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका-



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ उँकारं विंदुसंयुक्तादि मंगलाचरण ...	१
२ स्वरवर्ण	२
३ वर्णव्यंजनमाला	५
४ जिह्वावाक्य	३
५ मंथिसूत्र	४
६ द्वितोपदेश	५
७ विद्मं जिन नाम जेलि सती नाम ...	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नयकागमंत्र	१०
९ ध्यापनाचार्यजीकी तेरेपमिलेदण ...	१०
१० स्वमानमय	१०
११ सुगुरुने जाना सुखपुत्रा	११
१२ सुदपती पमिलेदणके पञ्चीन घोस ...	११
१३ श्रमकी पञ्चीन पमिलेदण	११
१४ नामायकका पञ्चव्याण	१२
१५ इग्विगडि	१३
१६ तन्मज्जनी	१३
१७ ज्ञानसूत्रनिर्णय	१३
१८ योगमय	१४
१९ वेदणोमंदिस्मानं	१४

२०	गई प्रतिक्रमण विधि...	१५
२१	सकलतीर्थनमस्कार	१५
२२	जंकिर्चिनामति०	१५
२३	नमोबुणं	१५
२४	जावंति चेइआई	१६
२५	जावंति केवि साइ	१६
२६	परमेष्ठिनमस्कार	१६
२७	उपसर्गहरस्तोत्र	१६
२८	जयवीयराय	१७
२९	परिक्रमण ठायवेका अवसर	१७
३०	सबस्सवि	१८
३१	इच्छामिठामि	१८
३२	वंदणवत्तियाए	१८
३३	पुस्करवरदी	१९
३४	सिद्धाणंनुद्धणं	१९
३५	वेयावच्चगराणं	२०
३६	संभासाप्रमार्जन	२०
३७	सुगुरुवांइणा	२०
३८	देवत्तियं आलोउं	२१
३९	रात्रि संवंधी अतिचार आलोयण	२१
४०	अठारे पापस्थानक आलोयण...	२२
४१	आवकवंदितासूत्र	२३
४२	वंदितासूत्र पीठेकी विधि	२६
४३	अष्टुवित्तिमि	२६
४४	आयरिय उवझाए	२६

४५	आवश्यक स्त्रीमुहपत्ती	२७
४६	सकल तीर्थ नमस्कार	२७
४७	परसमय तिमरतराणि	२८
४८	संसारदावाकी स्तुति...	२९
४९	काञ्चसगर्भे स्तुतिका पृथग् पाठ	२९
५०	श्रद्धाङ्गुलीसु दीवसमुदे	३०
५१	जय२ त्रिजुवन० सीमंधर चैत्यवंदन	३१
५२	सीमंधर स्तवन ॥ श्रीसीमंधर साहिवा...	३१
५३	सीमंधर स्तुतिकी एक गाथा महीमंरणं	३२
५४	सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन जय२ नाजिनरिंदनंद३२	३२
५५	सिद्धाचल स्तवन ॥ सिद्धाचलगिरि जेव्या रे	३२
५६	सिद्धाचलशुद्ध शेत्रुंजगिरिनमीये रूपजदेवपुंमरीक३३	३३
५७	पम्पलेहण विधि	३३
५८	सामायक पारनेकी विधि	३४
५९	जयवं दत्तशज्जो	३४
६०	संध्याकालसामायक विधि ,	३५
६१	देवसी पम्पकमण विधि	३६
६२	जयतिदुष्टण	३६
६३	जयमहायश	४०
६४	महावीर स्तुति॥मुरति मनमोहन कंठण को०	४०
६५	स्तुति कर्यां पाठेकी विधि	४१
६६	श्रुतदेवताकी स्तुति...	४३
६७	क्षेत्रदेवताकी स्तुति...	४३
६८	नरकनक	४३
६९	नमोस्तु वर्द्धमानाय...	४४

७०	श्रीजिनविंश जुहारो रे जिविका ॥ स्तवन	४४
७१	तिस पीठे कानसग्ग करणेकी विधि ...	४५
७२	थंजणापार्श्वनाथका चैत्यवंदन ॥ श्रीसेढी०	४६
७३	थंजणयद्विपाससाभिणो ...	४६
७४	दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना ...	४७
७५	दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधना	४७
७६	चनकसाय चैत्यवंदन	४७
७७	लघुशांतिस्तवन	४८
७८	कमलदल स्तुति	४९
७९	कल्याणकमला गेहं ॥ स्तुति... ..	४९
८०	सकलकुशलवल्ली ॥ स्तुति	५०
८१	सर्व जिन स्तुति ॥ दर्शनात् डुरि० ...	५०
८२	आदिजिन स्तुति ॥ सुवर्ण वर्ण गजराजगामिनं	५०
८३	सोलम जिनवर शांतिनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८४	प्रह शम प्रणमुं ॥ नेमनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८५	पुरसादाणी पास नाह ॥ स्तुति चैत्यवंदन...	५१
८६	वंदू जगदाधार ॥ महावीर स्तुति चैत्यवंदन	५१
८७	अथ पाक्षिकादि प्रतिक्रमण विधि ...	५१
८८	वृद्धदतिचार	५२
८९	अतिचारके पीठैकी विधि	६३
९०	जुवनदेवता स्तुति ॥ चतुर्वर्णाय संवाय...	६४
९१	दत्त पञ्चस्काण	६५
९२	पञ्चखाणोकी आगार संख्या	६९
९३	पञ्चखाणके आगारोंका अर्थ	६९
९४	साधू प्रतिक्रमण सूत्र चत्ताग्निमंगलं ...	७२

९५	पक्कीमूत्र	७६
९६	अठपहरी पोसेकी विधि	९०
९७	पोसदका पञ्चस्काग	९१
९८	चोवीस अंमिला करणेका पाठ	९२
९९	अंमिलाकहाकरणा	९३
१००	पांचे शक्रस्तवे देववंदण विधि... ..	९४
१०१	पञ्चस्काण पारणेकी विधि	९५
१०२	राड संशारा विधि	९६
१०३	पोसद पारणेकी विधि	९७
१०४	दिन उगतां पाठे पोसद लेणेकी विधि	१००
१०५	रात्री चोपुहरी पोसेकी विधि... ..	१०२
१०६	गणेशमणै चंकमणै... ..	१०३

॥ देववांदणेमें अथवा प्रातःकाल मध्याह्नकालके

प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

१०७	दूजकी शुद्ध ॥ मही मंदण	१०३
१०८	पांचमीकी शुद्ध ॥ पंचानंतक०... ..	१०४
१०९	आठमकी शुद्ध ॥ चोवीसे जिनवर... ..	१०४
११०	मानकादशी स्तुति ॥ अस्य प्र०	१०५
१११	पार्थ्वजिन स्तुति ॥ ईंकि चतुर्दशीकी... ..	१०५
११२	निरुपम सुखदायक ॥ नवपद स्तुति	१०६
११३	बलि२ हूं ध्यातं ॥ पञ्चपण स्तुति	१०६
११४	सुद असुर बंदिय ॥ नैमजिन स्तुति	१०७
११५	पाषाचांपुर चारुः ॥ दीवमालिका स्तुति	१०८

॥ शुद्ध मंद ॥

११६	पंचनिंद विधि विहरना ॥ श्रीमद्विद्यमान स्तुति: १०८
-----	---

११७	समदमोत्तम वस्तुमहापणं ॥ पार्थिवस्तुतिः	१०९
११८	वरमुत्तियहार ॥ रुक्मस्तुति ...	१०९
११९	प्रणमुं परमपुरुष ॥ रुक्मस्तुति ...	१०९
१२०	विश्वनायक लायक ॥ अजितजिन धुङ्ग...	११०
१२१	यदंद्दिनमनादेव० वर्द्धमानस्तुति ...	११०
१२२	वीरंदेनं० वीरजिन धुङ्ग ...	१११
१२३	मुरति मनमोदन० वीर धुङ्ग ...	१११
१२४	चञ्चवीस जिन पंचकल्याणक स्तुति ...	१११
१२५	श्रीशैत्रुंजमंरुण आदिदेव ॥ सेत्रुंज धुङ्ग...	११२
१२६	गिरनार शिखरपर० नेमजिनस्तुति ...	११२
१२७	सुख समकितदायक० शीतलजिनधुङ्ग...	११३
१२८	मिल चोविह सुरवर० समवसरणस्तुति...	११३
१२९	सेत्रुंजगिर नमियै ॥ चैत्रीपूनमस्तुति ...	११४
१३०	समरुं सुखदायक० नवपदस्तुति...	११४
१३१	शिवसुख दाता ॥ वीसस्थानकस्तुति ...	११५
१३२	अरिहंत सिद्ध पवयण० वीसस्थानक धुङ्ग	११५
१३३	अनुपमगुण आगर० नवपद स्तुति ...	११६
१३४	विमलाचल मंरुण जिनवर ॥ शैत्रुंजय स्तुति	११६
१३५	शांतिजिनेसर जगअलवेसर ॥ शांतिनाथ धुङ्ग	११७
१३६	मन सुख बंदो ज्ञावे ज्ञवियण ॥ सीमंवरस्तुति	११८
१३७	पंच अनंत महंत गुणाकर० पंचमी स्तुति	११८
१३८	अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा ॥ अग्यारस स्तुति	११९
१३९	जयकारी जिनवर वासुपूज्य ॥ रोहणी स्तुति	११९
१४०	प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर ॥ पस्की चौदश स्तुति	१२०

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

१४१	अजित शांत स्तव प्रथम	१२०
१४२	उद्धासिक्रम ॥ द्वितीय स्तव लघुअजित शांति	१२५
१४३	नमिऊण ॥ तृतीय स्तव	१२६
१४४	तंजयउ ॥ गणधर स्तुति चतुर्थ स्तव ...	१२८
१४५	मयरदियं ॥ गुरुपारतंउय ॥ पंचम स्तव	१३०
१४६	सिग्घमवहरिउ० षष्ठ स्मरणं... ..	१३१
१४७	उवसग्गदरं स्तोत्र ॥ सप्तम स्मरणं ...	१३२
१४८	अक्कामर स्तोत्र	१३३
१४९	वमी शांति ॥ ओओओव्या	१३७
१५०	जिनपंजर स्तोत्र	१४१
१५१	किंकण्णरु० वमा नवकार	१४२
१५२	तिजयपहुत्त ॥ अत्ततिजिन स्तोत्र ...	१४५
१५३	दोसावहारदस्को ॥ नवग्रह० पा० ...	१४६
१५४	जगद्गुरु नमस्कृत्य ॥ शांति स्तोत्र ...	१४६
१५५	कब्ब्याणमंदिर स्तोत्र	१४८
१५६	रूपिमंजल स्तोत्र	१५२
१५७	लघुजिनसदस्यनाम	१५५
१५८	महिम्न स्तोत्र	१५८

॥ अथ तुटकर चैत्यवंदन ॥

१५९	सिद्धो विक्काय चक्की ॥ तेवुंज चैत्यवंदन	१५२
१६०	असिदीतट मेरु धाम ॥ धंजणापार्थ चैत्यवंद०	१६३
१६१	वंदु जिनवर वीररमान ॥ सीमंधरजिन चै०	१६३
१६२	पुग्ग वेसे दीपतो ॥ शिवरगिरी चैत्यवंदन	१६३
१६३	प्रथम महेस्वर पद्मनाभ ॥ पद्मनाभजिन स्तुति	१६३

१६४	अवामावामार्हे ॥ पार्श्व स्तुति ॥	...	१६३
१६५	अविरलशब्दधनोघा ॥ सरस्वती स्तुति...		१६३
१६६	दर्शनं देवदेवस्य ॥ सर्वजिन वंदन स्तुति		१६४
१६७	ज्ञापामई दोहा ॥ वंदनस्तुतिरूप॥हत्याजेहसुल.		१६४
१६८	श्रीअरिहंत उदार कांति ॥ नवपद चैत्यवंदन		१६५

॥ अथ वमा स्तवन संग्रह ॥

१६९	सुगण सनेही साजण श्रीसीमंधर स्वामि		१६५
१७०	सफल संसार ॥ दूजका वमा स्तवन	...	१६६
१७१	प्रणमुं श्रीगुरु पाय ॥ पंचमीका वमा स्तवन		१६८
१७२	पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥ पंचमी लघु स्त.		१७०
१७३	अमल कमल० अष्टमी लघु स्तवनं	...	१७१
१७४	विमलजिन म्हा रे तुमसुं प्रीत ॥ विमलजिन स्त.		१७२
१७५	समवसरण वैवा जगवंत ॥ मूनङ्गयारस स्त०		१७२
१७६	सारदमान नमुं शिरनामी ॥ शांतिनाथ स्तवन		१७३
१७७	चौराली आमातनाका स्तवन...	...	१७५
१७८	चोवीसजिन देइमान स्तवन	...	१७६
१७९	चोवीसजिन आयुप्रमाण स्तवन	...	१७७
१८०	त्रैलोक्य शलाकापुरुष स्तवन	...	१७८
१८१	श्रीविमलाचल शिरतिलो ॥ संत्रुज स्तवन		१८०
१८२	निध्याचल मंरुणस्वामी रे ॥ निध्याचल स्त०		१८१
१८३	जपजिनेमर दिनकर साद्वि ॥ स्तवन		१८२
१८४	वीर सुशोमोरी वीनती ॥ अमावसका म. स्त.		१८३
१८५	चोवीस वंमक स्तवन	...	१८५
१८६	अग्न्यावही मित्रामिष्टक मंख्या स्तवन		१८८
१८७	पंच समवाच स्तवन...	...	१९०

१८८	चौदे गुणभागा स्तवन	१८९
१८९	नव तत्व ज्ञायागप्रित स्तवन... ..	१९०
१९०	दंभक ज्ञायागप्रित स्तवन	२०३
१९१	जीवविचार ज्ञायागप्रित स्तवन	२०६
१९२	ममवशरण विचारगप्रित स्तवन	२१०
१९३	सुण२ मेरुंजगिरिस्वामी ॥ रूपनदेव स्त०	२१२
१९४	पातजिनंस्तर जगतिलो ॥ दशमीका पार्थस्तर०	२१३
१९५	मंगल कमला कंद ए ॥ अजित शांति स्त०	२१५
१९६	मुंडपत्ती पन्तिरेडण स्तवनं	२१८
१९७	आलोयण दंन स्तवनं	२१९
१९८	नंदीश्वर वावन जिनालय स्तवनं	२२२
१९९	अढाईदीप नीम विदग्मान स्तवनं	२२३
२००	जात्रीनाजाइ आवृजीनी जात्रा करज्यो	२२७
२०१	सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवन...	२२८
२०२	अविजित पूजे रे शीतल जिनपती ॥ स्तवन	२३०
२०३	म्हारे भरमजिनंदहुं लागी पूरण प्रीत जो ॥ धर्म जिन स्तवन	२३१
२०४	गणपुगे रतिदामणो ॥ गणपुग स्तवन...	२३२
२०५	सनकिन दाम गुंजारे पेनतां ॥ दर्शन, आ, स्त.	२३३
२०६	आदिजिनंस्तर अरज नुर्जीजे ॥ स्तवनं	२३३
२०७	देवचंदजी कन अजितजिन स्त० छानादिक गुण२३४	
२०८	दे कर जोनी नीनवृंजी ॥ आलोयण स्तवन	२३५
	॥ आनंदधनजो कन मनयने ॥	
२०९	रूपन जिनंस्तर प्रीतम मादरो...	२३७
२१०	पंचिमो निहान् रे पोजा जिनतनो रे...	२३८

२११	शंजवदेव ते धुर सेवो सवे रे	२३९
२१२	अजिनंदन जिन दरशन तरसियै	...	२३९
२१३	सुमति चरण कज आतम अरपणा	...	२४०
२१४	शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी	...	२४०
२१५	मनमो किमही न बाजे हो कुंशु जिन...		२४१

॥ पार्थनाप्रज्जीके ठोटे स्तवन प्रतिक्रमणके ॥

२१६	श्रीशंखेसर पास जिनेस जेठिये	...	२४२
२१७	मनमोहन माहाराज	...	२४२
२१८	जयकारी जिनराज	२४३
२१९	वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा	...	२४३
२२०	अरज सुणीजै अंतरजामी	...	२४४
२२१	प्यारी पासकी देखी मूरति०	...	२४४
२२२	श्रीचिंतामण पासजी	...	२४४
२२३	जीवन ध्वारा तेवीसमा जिनरायरे	...	२४५
२२४	सुगण सनेही प्रज्जुजी अरज सुणीज्यो...		२४६
२२५	मोरा पास जिनराज	...	२४६
२२६	जिनजी मडिर करीने राज	...	२४७
२२७	तूं मेरे मनमें प्रज्जू तुं मेरे दिलमें	...	२४७
२२८	मार्ग देशक मोक्षनो ॥ दीवाली निर्वाण स्त०		२४८
२२९	सैत्रुंज रुपज समोसरचा ॥ तीर्थमाला स्त०		२४८
२३०	आज आषे चालो सहिया ॥ सिद्धाचल स्त०		२४९
२३१	भडावीरस्वामीका पारणा	...	२५०
२३२	पद्मावती जीवरास खमाणा ॥ द्विवराणीपद्मा०		२५२
२३३	वाणी ब्रह्मा वादनी ॥ गोर्माजीका वृध्वस्तवन		२५४
२३४	धम्मो मंगल मुक्किठं ॥ मंगलीक	...	२५९

२३७	आत्मरक्षा स्तोत्र	२५९
२३६	सुखकारण जवियण ॥ नवकार वंद ...	२६०
२३७	सेवो पाम संखेसरो मन सुखै... ..	२६१
२३८	चार जनेमर केरो सीत	२६१
२३९	शोल सती वंद ॥ आदिनाग्र आदिदेई...	२६२
२४०	गीतम स्तवन ॥ जय२ मंगल निधान ...	२६३
२४१	मुनिजेय वर्णन स्तवन	२६४
२४२	जवसे अद्धा शुद्ध जई ॥ अग्रिहंत स्तवन	२६४
२४३	थावककी करणी ॥ थावक तुं उठे० ...	२६४
२४४	गीतमस्वामीका रास... ..	२६६
२४५	सेत्रुंज राम ॥ श्रीरिसदेसर पाय नमी ...	२७२
२४६	शिवरजीका रास	२८०
२४७	मुनिमालका	२९१
२४८	चित्रंजिन स्तवन	२९५

॥ अत्र निज्ञायस्तंयद् माला ॥

२४९	उपदेशमाला पोसद तिज्ञाय ॥ जगजुमामणीजू२१७	२९७
२५०	राउ मंथारा पोसद निज्ञाय ॥ निस्तिदी०	३००
२५१	निदावारक निज्ञाय	३०१
२५२	गीतासती तिज्ञाय ॥ जलजलती मीलनी०	३०२
२५३	अनायाशरि निज्ञाय ॥ अणिक रववामी०	३०३
२५४	प्रतिक्रमय तिज्ञाय ॥ कर पतिक्रमणो जावसुं	३०३
२५५	सांगलिक छरणा चार	३०४
२५६	देवगशरि निज्ञाय	३०५
२५७	श्रीजिन नाणी रे धना ॥ पद्मा ज्योतिज्ञाय	३०६
२५८	देव दाणव नोईकर ॥ कर्मनिज्ञाय ...	३०७

२५ए	सात व्यसन सिझाय	३०८
२६०	चेलणा सती सिझाय	३०९
२६१	वैराग्य सिझाय ॥ जूलो मन जमरा कांड जमे			३१०
२६२	बाहूवल सिझाय ॥ राजतणा अति लोन्नीया			३११
२६३	अरणक मुनि सिझाय	३११
२६४	इलापूत्र सिझाय	३१२
२६५	मेवकुमार सिझाय	३१३
२६६	असिझाई निर्णय सिझाय	३१४
२६७	बावीसअजक सिझाय	३१५
२६८	गजसुकमाल सिझाय	३१६
२६९	प्रणचंड सिझाय	३१७
२७०	उतपति सिझाय	३१८
२७१	आत्मनिद्या	३२८
२७२	मंदिर जाणेकी उर दर्शन करणेकी विधि			३२७
२७३	चवदे नियम श्रावकके चितारणेकी विधि			३२७
२७४	श्रावकके वारे व्रत उच्चारण विधि	..		३२४
२७५	वीसस्थानक लघु स्तवन देववंदनमें कइणेका			३३८
२७६	चलोदेखोरी मधुवनको राव ॥ पार्श्वजिन स्त०			३३९
२७७	मेरो मन वस कर लीनो ॥ पार्श्वजिन स्तवन			३३९
२७८	सुणो सुजाण नेमजी ॥ स्तवन	...		३४०
२७९	नेमजिनंदजोतिं आंगवली ॥ स्तवन	...		३४०
२८०	आज प्रभु तोरे चरण लागि	...		३४०
२८१	रात गई अब प्रात होन ज्यो	...		३४०
२८२	तुम विन दीनानाथ दयानिध	...		३४१
२८३	जाय धर धन्य दिन० तिळावल स्तवन	...		३४१

२८४	श्रीसीमंथर लाडिका ॥ स्तवन	...	२४१
२८५	मनसो अष्टापद मोह्यो मादगो	...	२४२
२८६	सुण अग्दाना सुगुण० पार्श्वजिन स्तवन		२४२
२८७	अंतरजानी सुण अजवेनर ॥ पार्श्वजिन स्त०		२४२
२८८	प्राण पियारा जीइो पासजी	...	२४३
२८९	महाराज ववाई वाजे ठै ॥ सुमतिजिन स्त०		२४३
२९०	आज महोछव रंग रलीरी	२४४

॥ पूजा प्रारंभ ॥

२९१	देवचंज्जी कृत स्नात्रपूजा	...	२४४
२९२	अष्टप्रकारी पूजाके आठ श्लोक	...	२५०
२९३	सतरहजेदी पूजाकी विधि	...	२५२
२९४	सतरहजेदी पूजा	२५२
२९५	आरतिविध तथा आरती ॥ जै जै आरति शा०		२६२
२९६	नवपदजीकी पूजामें चाहिये नौ चीजोंकीविधि		२६३
२९७	नवपदजीकी वस्ती पूजा	२६३
२९८	नवपदपूजामें कलसढालण त. वासकैपपूजा वि.		२७३
२९९	दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा आठ श्लोक		२७४
३००	दादाजीकी आरती	२७५
३०१	गुनअविचार	२७५
३०२	असिझाऽ विचार	२७७
३०३	जहाजक विचार	२७९
३०४	नव मड दश दिग्पालकी आहुत विगर्जनविधि		२८०
३०५	नवपद मंगल पूजा विधि	...	२८६
३०६	नवपद मंगल प्रतिष्ठा विधि उजमणे तक		२८९

॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

३०७	सत्तरसयको गुणनो...	३९९
३०८	सत्तरसय तप स्तवन...	४०३
३०९	कम्मपयमी तप गुणनो	४०५
३१०	कम्मपयमी स्तवन	४०७
३११	नवकार तप स्तवन	४०९
३१२	नवकार तप विधि	४११
३१३	पंच कल्याणक तप स्तवन	४१२
३१४	रुषिमंजुल सुणणेकी पूजणकी विधि	४१५
३१५	जगवंतके नव श्रंगपूजन डहा...	४१५
३१६	शिक्षाका डहा ५	४१६
३१७	नवपदोका नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा धुई.	४१७
३१८	शंस्कृतवद्ध चतुर्विंशति जिन स्तुति	४२५
३१९	नवपद वृद्ध स्तवन ॥ सुरमणी शम सहुमंत्र०	४२८
३२०	नवपद स्तवन ॥ तीरथनायक जिनवरू रे	४२९
३२१	नवपद ध्यान धरो रे जविका ॥ स्तवन	४३०
३२२	जीया चतुरस्रजाण नव० स्तवन	४३०
३२३	जिन नित नमो नित नमो नमो ॥ स्तवन	४३०
३२४	नितप्रति प्रणामुं ॥ नवपद धुई	४३०
३२५	अथ जैती संयुक्त नवपद उली करण विधि	४३१
३२६	अथ तपस्या ग्रहणकरणेकुं गुरु पाशजाणेकी वि.	४२८
३२७	उलीकी संक्षेप कजमणा विधि	४२९

॥ अथ छादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

३२८	प्रथम चैत्रमास पर्वाधिकार प्रथम १ उलीतप	४५०
३२९	अष्टापद उली करण विधि: मंजुलविधि स. द्वि. २.	४५१

३३०	महावीरस्वामी जन्मकल्याणक पर्व तीसरा	४५४
३३१	चैत्रीपूतम पर्वधिकार पर्व ४ देववन्दन वि०स०	४५४
३३२	चैत्रीपूतम म्त्वन	४५६
३३३	नंदीश्वर तपस्या करण विधि	४५७
३३४	वैशाखमास पर्वधिकार आम्वातीज ...	४५८
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीज्ञानि पर्वधिकार ...	४५९
३३६	आषाढमास १४ पर्वधिकार	४५९
३३७	आषाढमासमें शुद्धकर तपस्याधिकार ...	४६०
३३८	आषाढमासमें पर्युषण पर्वधिकार ...	४६५
३३९	आश्विनमासमें तुलसी पर्वधिकार ...	४६३
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वधिकार... ..	४६७
३४१	दीपमाला गुणतो करण विधि... ..	४६८
३४२	ग्यानपंचमी पर्वधिकार	४६९
३४३	ग्यानपंचमी देववन्दन विधि	४६९
३४४	ग्यानका वस्त्र धृत्यवन्दन युक्ति ...	४६९
३४५	श्रीआचारंगसूत्र सिद्धाय	४७१
३४६	श्रीसुषगहांगसूत्र सिद्धाय	४७२
३४७	श्रीठाणांगसूत्र सिद्धाय	४७२
३४८	श्रीसमवायांगसूत्र सिद्धाय	४७३
३४९	श्रीजगवतीसूत्र सिद्धाय	४७४
३५०	श्रीज्ञानांगसूत्र सि०	४७५
३५१	श्रीउपराशरुद्रांगसूत्र सि०	४७६
३५२	श्रीसंतगसूत्रांगसूत्र सि०	४७६
३५३	श्रीसप्तगोत्रांगसूत्र सि०	४७७
३५४	श्रीप्रश्नोत्तरांगसूत्र सि०	४७७

३५५	श्रीविषाकसूत्र सि० ...	४३८
३५६	झगरे अंग वर्णन सि० ...	४३९
३५७	मेर रे मन मानी ज्ञान जरी ॥ ज्ञानका स्त०	४३९
३५८	श्रुत अतहि जलो ॥ जिनःगमस्तवनं ...	४४०
३५९	कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार...	४४०
३६०	कार्तिक १५ पर्वाधिकार ...	४४०
३६१	सिद्धगिरि स्त० ते दिन क्यारे आवस्यै ..	४४२
३६२	नमो रे नमो सेतुंजगिरी ॥ स्तवनं ॥ ...	४४२
३६३	अंग ऊमाहो मोने अतिघणो ॥ सिद्धगिरि स्त०	४४३
३६४	जात्रा निनाणूं करियै ॥ सिद्धगिरि स्त०	४४४
३६५	जाव धर धन्य दिन० सिद्धगिरि स्त० ...	४४५
३६६	मार्गशिरमास पर्वाधिकार मौनएकादशी	४४५
३६७	मौन ११ देहसे कळयाणक गुणनो ...	४४६
३६८	पौषमासे वदि १० पर्वाधिकार ...	४४७
३६९	माघमासे मेरुत्रयोदशी पर्वाधिकार ...	४४८
३७०	फाट्गुनमासे पर्वाधिकार ...	४४८
३७१	द्रव्यहोली जावहोली अधिकार ...	४४९

॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥

३७२	होरी खेलिये नर बहुरन० ...	४४९
३७३	जय बोलो पाश जिनेशरकी ...	४४९
३७४	मधुवनमें जाय मची होरी ...	४४९
३७५	यादव मन मेरो दर लियो रे ...	४४९
३७६	इक सुणले नाथ अरज मोरी ...	४४९
३७७	सांवरो सुखदाई जाकी विव ...	४४९
३७८	नेना दरखाई आज तेरी सू० ...	४४९

३७९	एसें फागुण मस्त महीनें चलोरी ...	४९७
३८०	नेम स्वामसें कहियो मोरी ...	४९७
३८१	होरी खेलो रे जविक मन थिर करके ...	४९८
३८२	होरीके खेलइया तूं तो प्रजु०... ...	४९८
३८३	बाके ममतानें धूम मचाई ...	४९८
३८४	समकित विन जीव जगत जटक्यो ...	४९९
३८५	विमरे मत नाम प्रजुजीको ...	४९९
३८६	नेम निरंजन ध्यावो रे ...	४९९
३८७	गढ गिरनारकी तलहटी ...	४९९
३८८	धन राजुल तेरो जागरी ...	५००
३८९	एमी होरी तो हो रही चंपानगरमें ...	५००
३९०	बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी ...	५००
३९१	एसे प्रजु नेमनाथ मेरे दिल बसिया ...	५०१
३९२	संजव जिन सुखकारी हो लावा ...	५०१
३९३	सारो सोरठ देश दिखावो रसिया ...	५०२
३९४	जिनराज जुहारो, क्या बेठे जव हारो रे ...	५०२
३९५	मनमोहन गजगतकी कामनी ..	५०३
३९६	रंग लग्यो गुरु ज्ञान... ..	५०३
३९७	चिदानंद खेल फाग... ..	५०३
३९८	होरी खेलो नेमसें धायर ...	५०४
३९९	मेरी घटकी गागरिया रंगसें जरी ...	५०४
४००	बावो रूपज बेठे अलबेसर ...	५०४
४०१	गिरगजकुं दमारी बंदना रे ...	५०४
४०२	इरशन कियो आज सिंगर गिरको ...	५०५
४०३	सिद्धगिरीजीको इरशण करले ...	५०५

२५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता ...	५५७
२५४	उपधान तप विधि ...	५५९
२५५	उपधान तप प्रवेश विधि ...	५६१
२५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि ...	५६२
२५७	वाचना विधि: ...	५६३
२५८	तप संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ...	५६३
२५९	परिपुत्रा विगय तप पारण विधि: ...	५६३
२६०	कुमाश्रमणादि प्रज्ञात संध्या परिलेहण विधि: ५६४	
२६१	उपधान तप विवरण गाथा ...	५६६
२६२	रूपिमंरुल मंरुलपूजा विधि ...	५६६
२६३	शांतिके पूजा विधि: ...	५६८
२६४	पंचतीर्थी आरती ...	५७०
२६५	चक्रेश्वरी आरती ...	५७१
२६६	चोपरु खेलण सिझाय ...	५७१
२६७	सेत्रुंज खेलण सिझाय ...	५७२
॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥		
२६८	हुक निजर महरदी क० ...	५७२
२६९	लोक चवदके पार किनारे ...	५७३
२७०	सखी सव बनठन ...	५७३
२७१	हो जिन तेरे दरशपर० ...	५७३
२७२	म्हारा कयन्न जिनंदने ग० ...	५७३
२७३	मन लीनो हमारो जिन चरणारे ...	५७४
२७४	अजित२ जिन ध्यान ...	५७४
२७५	यह अरजी मोरी सहीयां ...	५७४
२७६	मुजरो मानी लीजे हो गो० ...	५७४

४७३	तुं मैना प्रजु इण दिव वसणावे ...	५७४
४७४	हम जाणत हे तुम तारोगे ...	५७५
४७५	पंथीना पंथ चलेगो ...	५७५
४७६	तेवोशमा जिनराज जोमे थारे कोण जुमेगो	५७५
४७७	केसें काज सरे मादाराजविन केसें० ...	५७५
४७८	राजरी वधाई वालैवै ...	५७५
४७९	मोतनकीमाला जिनगल सोहे... ..	५७६
४८०	रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय ...	५७६
४८१	हे माय वांकनी करमगति जाय न कही	५७६
४८२	म्हाने प्यारो लागेवे जी थारो उपदेश ...	५७६
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे ...	५७७
४८४	वरपित वचन ऊरी० ...	५७७
४८५	या घर में रंग० ...	५७७
४८६	चिहुं उर वदरिया वरसे ...	५७७
४८७	मोरवा पपइया बोले ...	५७८
४८८	सनऊ नर जीवण थोरो ..	५७८
४८९	मत कर मान गुमान ...	५७८
४९०	निश दिन जोउं थारी वाटमी० ...	५७८
४९१	आज तो हमारे जाग्य वीरप्रजु आए हे	५७९
४९२	वावरो रे आज मनवो मेरो ...	५७९
४९३	ऊयन बिहारी थारीतो ठवि न्यारी हो ...	५७९
४९४	सुग मन दोनहार न टरे रे ..	५७९
४९५	सहियोरी मित्र चालो प्रजु पूजन काज...	५८०
४९६	मनवा जिनंद गुण गाय रे ...	५८०
४९७	चलो देखोरी मधुवनको राव...	५८०

२५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता ...	५५७
४५४	उपधान तप विधि ...	५५९
४५५	उपधान तप प्रवेश विधि ...	५६१
४५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि ...	५६२
४५७	वाचना विधि: ...	५६३
४५८	तप संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ...	५६३
४५९	परिपुत्रा विगय तप पारण विधि: ...	५६३
४६०	कुमाश्रमणादि प्रज्ञात संध्या परिलेहण विधि: ५६४	
४६१	उपधान तप विवरण गाथा ...	५६६
४६२	रूपिमंरुल मंरुलपूजा विधि ...	५६६
४६३	शांतिके पूजा विधि: ...	५६८
४६४	पंचतीर्थी आरती ...	५७०
४६५	चक्रेश्वरी आरती ...	५७१
४६६	चोपरु खेलण सिझाय ...	५७१
४६७	सेत्रुंज खेलण सिझाय ...	५७२
॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥		
४६८	हुक निजर महरदी क० ...	५७२
४६९	लोक चवदके पार किनारे ...	५७३
४७०	सखी सव वनवन ...	५७३
४७१	हो जिन तेमें दरशपर० ...	५७३
४७२	म्हारा रूपज्ञ जिनंदने ग० ...	५७३
४७३	मन लीनो हमारो जिन चरणारे ...	५७४
४७४	अजित२ जिन ध्यान ...	५७४
४७५	यह अरजी मोरी सहीयां ...	५७४
४७६	मुजरो मानी लीजे हो गो० ...	५७४

४७३	तुं मैना प्रजु इण दिज वसणावे ...	५७४
४७४	इम जाणत हे तुम तारोगे ...	५७५
४७५	पंथीमा पंथ चलेगो ...	५७५
४७६	तेवीशमा जिनराज लोमे थारे कोण जुमेगो	५७५
४७७	केसें काज सरे माहाराजविन केसें० ...	५७५
४७८	राजरी बधाई वाजैवै ...	५७५
४७९	मोतनकीमाला जिनगल सोदे... ..	५७५
४८०	रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय ...	५७५
४८१	हे माय बांक्रमी करमगति जाय न कही	५७५
४८२	म्हाने प्यारो लागेवे जी थारो उपदेश ...	५७५
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे ...	५७५
४८४	वरपित वचन ऊरी० ...	५७५
४८५	या घरमें रंग० ...	५७५
४८६	चिहुं उर वदरिया वरसे ...	५७५
४८७	मोरवा पपइया बोले ...	५७५
४८८	सनऊ नर जीवण थारो ..	५७५
४८९	मत कर मान गुमान ...	५७५
४९०	निश दिन जोउं थारी वाटमी० ...	५७५
४९१	आज तो हमारे ज्ञाय वीरप्रजु आए हे	५७५
४९२	बाबरो रे आज मनवो मेरो ...	५७५
४९३	रूपन विहारी थारीतो ठवि न्यारी हो ...	५७५
४९४	सुग मन दोनहार न टरे रे ...	५७५
४९५	सदियोंरी मिल चालो प्रजु पूजन काज...	५७५
४९६	मनवा जिनंद गुण गाव रे ...	५७५
४९७	चलो देखोरी मधुवनको राव... ..	५७५

५०२	राखूं रे हमारा घटमें	५००
५०३	तेरे दरशको चाह लग्यो	५००
५०४	थारे मुखमारी हो वारी राज...	५०१
५०५	एसी विध तेने पाई रे	५०१
५०६	मोहि अपणो कर जाणो प्र०	५०१
५०७	वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें	५०१
५०८	जोर जयो अब जाग बावरे	५०१
५०९	जाग रे सब रैण विहाणी०	५०१
५१०	सांवरो सखनो सखी...	५०१
५११	आज रूपन घर आवै	५०३
५१२	अंगण कलप फळ्योरी	५०३
५१३	ऊठेने मोरा आतमराम	५०३
५१४	जज मन नाजिनंदन देव	५०३
५१५	आवो नेम रह जावो सदन	५०४
५१६	कीरतीवाग मन प्रेम लाग	५०४
५१७	अधम जग काम जये अगीवान	५०४
५१८	प्रभु तेरी सूरतिया लागे जली...	५०५
५१९	आयो सही अब जानं कहां	५०५
५२०	घरु२ पल२ ठिन२ निशदिन...	५०५
५२१	सुमताने क्या कर मारा रे	५०६
५२२	तुम तो जले विराजो जी ॥ शिखर गिरि स्त०	५०६
५२३	शिखर गिरिइ जुहारो ॥	५०६
५२४	सांवरिया में दीठो दरश तिहारो "	५०७
५२५	त्रिजुवन नायक वीरजी ॥ पावापुरी स्तवन	५०७
५२६	निरख हीया हरख जरे ॥ चंपापुरी स्तवन	५०८

५२७	मैं सुच देखो गोमीपारसको...	...	५८९
५२८	किरपा करो रे गोमीपाश जिनेसर	...	५८९
५२९	मुजरा साद्वि मुजरा साद्वि...	...	५८९
५३०	घंट बाजै घननननन...	...	५९०
५३१	निरंजन सांझ्यां रे	५९०
५३२	एसे सहर बिच कोनसा दिवान हे	...	५९०
५३३	आय रहो दिलबागमें	...	५९०
५३४	रहो रे यादव दो धनिया	...	५९०
५३५	विराजो बंगलामें	५९१
५३६	किण देखा हमारा स्वामी	...	५९१
५३७	अवधू सो जोगी गुरु मेरा	...	५९१
५३८	अवधू एसो ज्ञान विचारी	...	५९१
५३९	हंता तूं मानसरोवर वासी	...	५९२
५४०	बेरु नही आवै अवसर०	...	५९२
५४१	ये जिनजोके पाये लाग रे	...	५९३
५४२	चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो	...	५९३
५४३	अवधू निरपक्व विरला कोई	...	५९३
५४४	चलगा जरु जाकुं ताकुं केसा सोचणा	...	५९३
५४५	समऊ परी मोड़े समऊ परी...	...	५९४
५४६	जन्तांजी भेगे नेम चछपो गिरनार	...	५९४
५४७	रसना नफरु नई मेंतो गुण०	...	५९४
५४८	गजुन पुकारे नेम पिवा	...	५९४
५४९	कोन किमीको मित	...	५९५
५५०	आदीसर जिनराज	५९५
५५१	गोमी गाईये मन गंग	...	५९५

५५२	हारे हूं तो मोह्यो रे लाल ...	५९५
५५३	प्रभुजी से लागो मारो नेह ...	५९६
५५४	खतरा दूर करणा ...	५९६
५५५	रे जीव जिनधर्म कीजीये ...	५९६
५५६	सोइर सारी रैन गमाई ...	५९७
५५७	चंदा प्रभुजीसे ध्यान रे ...	५९७
५५८	ते शिवपुर गये रहे रे ...	५९७
५५९	म्हारे जले रे ऊगो ठै दामो आजनो रे	५९७
५६०	धन२ ते दिवाली मारे आजनी रे ...	५९८
५६१	धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे ...	५९८
५६२	म्हारे आज आनंद वधामणा रे ...	५९८
५६३	सवालाख टकानी जाय एक घन्टी ...	५९८
५६४	आवो२ने प्यारा नेम अम घर ...	५९९
५६५	मनमोहन पारस प्यारारे ...	५९९
५६६	मेरे मन जावनकी ठवि नीकीजी ...	६००
५६७	साद्वि सुगुण सुपारससें ...	६००
५६८	सांवरिया पासजी सुख दीजे ..	६००
५६९	तुम जजो रूपज प्रभु प्यारा जग० ...	६०१

॥ अथ लावण्या संग्रह ३४ घन १० ॥

५७०	अगस्तुं२ वजै चोधमा ...	६०२
५७१	आम्हातीजकी लावणी ...	६०४
५७२	दीवालीकी लावणी ...	६०५
५७३	सीमंधरजिन लावणी ...	६०६
५७४	अजीमगंजमें सांवरियाजीकी लावणी	६०७
५७५	नेमनाथ मेरी अगज सुणीजे ...	६०८

५७६	तुम जपो मंत्र नवकार ॥ जिनदाशादि कृतघन	६०९
५७७	चख चेतन अत्र नठकर ०	६१०
५७८	तुम जजो जिनेसर देव	६११
५७९	तुं कुमति कखेसण नार लगी क्युं केमे...	६१२
५८०	तुम तजो जगतका रूपाव	६१२
५८१	दे गया दगा दिखदार ॥ नेमजीकी लावणी	६१३
५८२	मुखक बीच मगली पारसका... ..	६१४
५८३	सुकुतकी बात तेरे हाथ रती ना रही रे...	६१५
५८४	तुम तज कर राजुल नार	६१५
५८५	आप समझका घर नही पाया	६१६
५८६	नमुं२ में गुरु नियंथकुं	६१७
५८७	करूं२ में ऐसे सदगुरु	६१७
५८८	तजूं२ में उन कुगुरुकुं	६१८
५८९	यो जिनदाश जूठो रे जूठो	६१८
५९०	जत्र तन दोस्ती हे इह मस्ती	६१८
५९१	अरज इमारी सुणो दीनपति... ..	६१९
५९२	मुक्ति जाणेकी मिगरी	६१९
५९३	अनुजव पद मिगरी... ..	६२१
५९४	नेमकी जान वणी जारी	६२२
५९५	नेमनाथजीका चोमासा ॥ गार्ड घटा ग०	६२३
५९६	सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ...	६२४
५९७	सज शोले मिणगार दुई दुमिमार ...	६२६
५९८	चंदावदनी मुखले कइती निगनारीकुं० ...	६२७
५९९	कौइ देख्या रे हो भांविजिया नादिव ...	६२८
६००	सुणजो बातों राव तदाशिव... ..	६२८

६०१	केशरीयानाथजीकी माहात्मकी लावणी	६२९
६०२	पार्थप्रभु आरती लावणी	६३४
६०३	आदि जिनेस कीयो पारणो	६३५
६०४	अजितनाथजीकी लावणी	६३५
६०५	पिया मेरा गिरनार सिधाए ॥ ने० ला० ...	६३६
६०६	दीवाली स्तवन ॥ धन२ मंगल एह सकलदिन	६३७
६०७	मारे दीवाली थई आज प्रभु मुख जोवाने	६३७
६०८	पोढो१ जी रुपन्न विहारी	६३८
६०९	कीजे मंगल ज्यार आज घरण	६३८
६१०	सिन्हाचल गिर जेटो रे जविजन	६३८
६११	जगतमें नवपद जयकारी ॥ लावणी ...	६३९
६१२	ध्यान धरो नवपदका चेतन	६४०
६१३	चलो सखी जिन मंदिरमें जग नवपद...	६४०
६१४	सांवरो लागे प्यारो प्रभु मनमोहनगारो ॥ होरी	६४१
६१५	आज सुरंग धन वरसत होरी	६४२

॥ अथ वारे मासा ॥

६१६	मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें	६४३
६१७	नेमनाथजीका वारेमासा	६४४

॥ स्तोत्र तुटकर संस्कृतबंध ८ ॥

६१८	सकल मंगल केलि० शीतल० स्तोत्र ...	६४६
६१९	विशद गुण विचित्रं० पार्थ० स्तोत्र .	६४६
६२०	चस्त ज्ञान दया० अंगेश्वरपार्थ स्तोत्र ..	६४७
६२१	लक्ष्मी निदानं० पार्थ० स्तोत्र ...	६४७
६२२	गोमीग्रामे० अंगेश्वरपार्थ स्तोत्र ...	६४८
६२३	विशदमहण० पार्थ स्तोत्र	६४८

६२४	श्रीमत्पार्श्वजिनेश्व० पार्श्व स्तोत्र	...	६४९
६२५	आद्य श्रीरूपज्ञ० चतुर्विंश० स्तोत्र	...	६४९
६२६	मंगलाष्टक स्तोत्र	...	६५०
६२७	परमात्मा स्तोत्र	...	६५१
६२८	नमस्कार स्तोत्र	...	६५१

॥ अथ तपगुष्ठ सामाचारी ॥

६२९	पुण्य प्रकाश आलोचन स्तवन	...	६५२
६३०	जरहेसरना सिद्धाय...	...	६५९
६३१	मन्दजिष्णानं सिद्धाय	...	६६०
६३२	सकल तीर्थ वंदना	...	६६०
६३३	सकलार्हस्तोत्र	...	६६१
६३४	शांतिकर स्तोत्र	...	६६३
६३५	सीमंधर चैत्यवंदन ॥ सीमंधर परमात्मा		६६४
६३६	श्रीसीमंधर जग धणी	...	६६५
६३७	सिद्धिगिरी चैत्यवंदन ॥ विमल केवल०	...	६६६
६३८	श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	...	६६७
६३९	परमात्मा चैत्यवंदन० परमेश्वर परमात्मा		६६८
६४०	सुगो चंडाजी सीमं० सीमंधर स्तवन	...	६६९
६४१	आंबेदाथे में आज० सेवुजा स्तवन	...	६७०
६४२	विमलाचल नित वंदिये ॥ स्तवन	...	६७१
६४३	पंचतीर्थ संस्कृतवच स्तवन	...	६७२
६४४	नेम गजुल निज्ञाय ॥ पिठजी२ नाम	...	६७३
६४५	आकृष्यो तृप्तामे मांयो० निज्ञाय	...	६७४
६४६	आदि देव परिदंत नमूं ॥ पंचती० चैत्यवं०		६७५
६४७	कुनिध धर्म जिन उ० दूज चैत्यवंदन	...	६७६

६४८	त्रिगुणे बैठा वीर जिन ॥ ग्यानपंचमी चैत्यर्व०	६५०
६४९	महा सुदि आठमने० अष्टमी चैत्यवंदन	६७१
६५०	शाशन नायक वीरजी० इग्यारश चैत्यवंदन	६७७
६५१	सीमंधर जिनवर स्तुति०	६७२
६५२	श्रीसीमंधर देव सुहंकर ॥ श्रौय ...	६७२
६५३	दिन सकल मनोहर ॥ बीजनी श्रौय ...	६७३
६५४	श्रावण सुदि दिन पंचमी ए ॥ पांचमनी श्रौय	६७३
६५५	मंगल आठ करी० आठमनी श्रौय ...	६७४
६५६	एकादशी अति रूवमी ॥ इग्यारश श्रौय	६७५
६५७	स्नातस्या प्रति० चवदशनी श्रौय ...	६७५
६५८	कल्याणकंदनी श्रौय... ..	६७६
६५९	श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ० श्रौय ...	६७६
६६०	महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी ॥ श्रौय	६७७
६६१	पंचैदिय संवरणो	६७७
६६२	सामाझववयजुत्तो ॥ सामायक पारवागाथा	६७८
६६३	सागरचदो ॥ पोसह पारवा गाथा ..	६७८
६६४	जगचिंतामणि चैत्यवंदन	६७८
६६५	अतीचारनी ८ गाथा... ..	६७९
६६६	विशाललोचन स्तुति	६७९
६६७	सुयदेवया जगवई ॥ स्तुति	६८०
६६८	जीति खिते सादृ ॥ क्षेत्रदे० स्तुति	६८०
६६९	सामायक लेखा विधि	६८०
६७०	सामायक पारवा विधि	६८१
६७१	देवज्ञिक प्रतिक्रमण विधि	६८१
६७२	राई प्रतिक्रमण विधि	६८३

६७३	पक्की प्रतिक्रमण विधि	६८५
६७४	चउमाशी प्रतिक्रमण विधि	६८७
६७५	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि	६८७
६७६	पम्पलेदण करवानी विधि	६८७
६७७	पञ्चक्राण पाग्वानी विधि	६८८
६७८	पुस्तकवद् विजये जयो ॥ श्रीमंधर स्तवन	६८८
६७९	बीज तिथीनो स्तवन वमो ॥ प्रणमी शार०	६८९
६८०	पंचमी वृ० स्तवन ॥ सुत सिद्धारथ० ...	६९०
६८१	आठमनु वृद्ध स्तवन ॥ मारे ठाम ध० ...	६९६
६८२	एकादशी वृ० स्तवन ॥ जगपतिनायक०	६९८
६८३	माहावारस्वामीनुं हालरियुं	७०१
६८४	निंदा म करज्यो कोईनी० सिझाय ...	७०३
६८५	देववांदवानो विधि	७०४
६८६	ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन...	७०४
	आदिनाथ चै० श्रीय स्तवन	७०४
	अजितनाथ चैत्यवंदन, श्रीय	७०५
	मंनवनाथ, अजितनंदन चैत्यवंदन श्रीय...	७०६
	नृनतिनाथ, पद्मप्रत्न, सुपार्थनाथ चै० श्रीय०३	७०७
	दंडप्रत्न, सुविधिनाथ, मितलनाथ चै० श्रीय०	७०८
	श्रीश्रेयान, वानुपूज्य, विमलनाथ चै० श्रीय०	७०९
	धर्मनाथ, शांतिनाथ चै० श्रीय स्तवन...	७१०
	कुंश्रुनाथ, धरनाथ, मल्लिनाथ चै० श्रीय	७१२
	मुनिमुप्रन, नमिनाथ, नेमिनाथ चै० श्रीय	७१३
	पार्थनाथ चैत्यवंदन श्रीय स्तवन ...	७१४
	महावीरस्वामी चैत्यवंदन श्रीय स्तवन	७१६

	शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवन्दन श्रोय	७१७
	नीलमी रायण तरु तले ॥ सिध्वाचल स्तवन	७१०
	नेम निरंजन देव के ॥ गिरनार स्तवन...	७१०
	आवो आवोने राज अर्बुदगिरी स्तवन...	७२२
	अष्टापदगिरी जात्रा करणकुं ॥ अष्टा० स्तवन	७२२
	समेतशिखरगिरी जेटीये रे ॥ शि० गि० स्त०	७२३
६८४	सत्तरजेदी जिन पू० पर्यूपण श्रोय ...	७१४
६८८	नेमनाथजी धारेमाशो ॥ शीयाले खाटूं०	७१४
६८९	अपठरा करती आरती जिन आगे ...	७२६
६९०	पहली तो समरुं हो० नेम राजेमती सिझाय	७२६
६९१	गोतमस्वामी पूठा करी ॥ मुक्ति वर्णन सिझाय	७२८
६९२	नेमनाथजीरो सिलोको	७२९

॥ अथ चोढालीया संग्रह ॥

६९३	विजयसेठ विजयसेठाणी चोढा० ...	७३१
६९४	इखुकार राजा जृगु प्रोहितरो चो० ...	७३३
६९५	दान शील तप ज्ञाव चोढालीयो ...	७३६

॥ अथ वंद संग्रह ॥

६९६	सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो० ...	७४३
६९७	नवकार वंद ॥ वंगित पुरे विविधपर० ...	७४५
६९८	धधरनीसाणी ॥ सुख संपत्ति० ...	७४७

॥ दादा गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥

६९९	बिलशै रुद्धि ममृद्धि०	७५१
७००	वर लाठ बिलाश० श्रीजिनदत्त० ...	७५२
७०१	रितद जिनेसर० कुशलसूरि० ...	७५३
७०२	आयो सहु श्रीमंघ	७५४

७०३	सदगुरुजी अे मांजलो	७५५
७०४	दादा चिरंजीवो	७५६
७०५	गाजै जिनकुशल गमालै	७५६
७०६	सदाऽ मेरे श्रीजिनकुशल गुरु	७५७
७०७	आयोऽ जी समरंता दादो०	७५७
७०८	जाया जक्तिसूं पूर रहो रे	७५८
७०९	पूजो जवि हितसूं कुशल सुरिंद	७५८
७१०	आज करो रे उवाड श्रीजिनकुशल	७५८
७११	मैं निरख्या गुरु महाराज	७५९
७१२	चरणकी चरणकी वारीजा०	७५९
७१३	अव मांदि दरशण दीजै कु०...	७६०
७१४	कुशल गुरु कुशल करो जरपूर	७६०
७१५	सदगुरु पूजण जावस्यां	७६०
७१६	श्रीसदगुरुजीसैं वीनती रे	७६१
७१७	सदगुरु दीनदयाल...	७६१
७१८	सुगुरु मेरी बेनिया पार०	७६१
७१९	देख्या मैं दरश तिहारा	७६३
७२०	सदा नमार्ज कुशल सुखिंद०	७६३
७२१	जिनकुशल सुखिंद गुरु सदा नमो	७६३
७२२	उज्जवती छोरे पाव नमैं जी	७६४
७२३	सदगुरुजी सुगो मोरी अगजी...	७६४
७२४	सदगुरुके वरण चित लावरे...	७६५
७२५	होरी होले जविक सदगुरुके संग	७६५
७२६	गुरु पूज रहो रे सुजानी	७६५
७२७	सदगुरुजीके डार मची होरी...	७६६

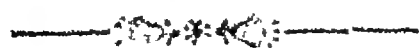
७२८	केसैश अवसरमें गुरु ररकी लाज०	...	७६६
७२९	श्रीजिनकुशल सूरौसर साद्विब...	...	७६६
७३०	श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके	...	७६६
७३१	कुशल गुरु देखके दरशण	...	७६७
७३२	कुशल गुरु दरशन दीजे हो	...	७६७
७३३	पूजो नजो रे नार्ई...	...	७६७
७३४	हूंतो अरज करुं करजोमनें	...	७६७
७३५	सांगानेर विराजै	...	७६८
७३६	सदगुरुजी म्हााराण लावणी	...	७६८
७३७	मोरी सखी सदेढ्यांण लावणी	...	७६९
७३८	कामित कामगवी ॥ श्रीजिनचंद० स्तवनं		७७०
७३९	श्रीसौजाग्य सूरौ स्तवनं	...	७७०

॥ देशना वधावा संग्रह ॥

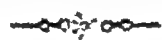
७४०	वीरजी दिये ठे देशना रे	...	७७१
७४१	गुणनिधि श्रीजिनचंद मुणिंदा	...	७७१
७४२	श्रीजिनचंद सूरौसरू	...	७७२
७४३	एहवा सदगुरु वांदिये	...	७७३
७४४	सुखकर स्वामी श्रीतीर्थकरू रे	...	७७३
७४५	मोतीयमे मेह वरसीयो	...	७७५
७४६	जिनशामन जयकारी ॥ गुंढली	...	७७५
७४७	सुणिये सदगुरु देशना ए सद्धियां ॥ गुंढली		७७६
७४८	सुगुरु म्हाारा ज्वाजनी पर तारो	...	७७७
७४९	वृद्धत् खरतर गन्न मुद्ध सिजंत सामाचारी		७७८

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ रत्नसमुच्चय ॥



॥ मंगलाचरण ॥



ॐकारं विदुस्तुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥

कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ कवित ॥

ॐकार उदार अगम्म अपार । संसारमें सार पदारथनांमो ॥
सिद्धि ममृद्धि सरूप अनूप । भयो नवही सिर नृप सुधामी ॥
मंत्रमें ग्रंथमें ग्रंथकें पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥
पंचघी इष्ट वसे परमेष्ट । मदा भ्रमसी कैर नाहि सलामी ॥ १ ॥
नमो निमदिस नमायके सोस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥
जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतह मव ईत असाना ॥
इंद्र नरिंद दिण्णिंद पुणिंद । नसाण्हें रुंद आनंद विधाता ॥
धोरो धरमको धीर धराधर । जान धेर भ्रमसी गुण ध्याता ॥२॥

॥ अथ गुरुपद्विमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी साधमें ॥ जिनदीनो महा इत्त स्यात्त नगीनो ॥
इह भग्यो भ्रम गो नम देवान । पुर जग्यो पक्कात्त नगीनो ॥
देताहि देताह दूनो वर्य । अरु लायोंहि गूढत नाहि सजोनो ॥
एगो पसाय कियो गुरुसाय । निजे भजता पदपंकज लीनो ॥३॥

अलाननिधिगन्धानां । ज्ञानाभनगल्लकषा ॥

नेत्रमुन्मीलितं येन । नमो श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥
 सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
 विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
 सरस्वतो मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
 हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरे सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।
 रागे आए लागे पाए जागे मोट्टी माईहे ॥
 चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
 हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकुं गाईहे ॥
 हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।
 लीलासेती लाले पाले खुद्री बुद्री दाईहे ॥
 सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
 एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ इ उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ उ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द
 ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क । छ ॥ क
 का कि की कु कू के कें को कौ कं कः ॥ ऋ ॠ नृ दृ ष्ट नृ वृ मृ शु
 ष्ट ह्र ॥ क्य ख्य ग्य घ्य ज्य व्य ट्य ठ्य ड्य ण्य एय त्य व्य ध्य
 न्य प्य च्य म्य ज्य व्य व्य इय प्य स्य ह्य द्य ॥ क य व ज त द प्र ब्र
 अ व श ख ह्र ॥ क ग्य ण्य त्व द्वा न्व म्व स्त्व द्वा ण्य स्व ॥ क य व
 ल प्र अ अ ण्य ल क्षण ॥ कम गम धम चम एम अ नम इम पम सम
 ल दम । कं खं गं घं ॥ क र क ग ग्य ह्र । च छ ज झ ञ

ॠ ऋ ॠ ऋ ण त त्य ञ इ ऋ ऋ ॥ ए एक् व्य चर म्म व्य र ल्र
 व दञ्ज ए स्त ॥ इत्यस्त्व्य पू ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ ।
 ७ । ८ । ९ । १० । १ । १००००० ॥ १०००० ॥ १०००००
 ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिथो कृष्णवृहस्पत्या । णिवद्राहुस्त्युश्च स्वस्करा ॥

पृथ्वीभृद्वल्युश्रष्टात्म । त्रम्यास्तेहवज्रमिदा ॥

॥ अय शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥

अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥

स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥

पंसिते च गुणा सर्वे । मूर्खे दाया हि केवलं ॥

तस्मात्मूर्खे सदमेव । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥

नक्षत्रज्ञपणं चंद्री । नारीणां ज्ञापणं पतिः ॥

पृथिव्या ज्ञापणं राजा । विद्या सर्वस्य ज्ञापणं ॥ ४ ॥

माता शत्रुः पिता धैरी । बालो येन न पाठितः ॥

न ज्ञातते मज्जामध्ये । संस्रमध्ये वक्रो यथा ॥ ५ ॥

लात्तयत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि तामयेत् ॥

प्राप्ते तु योमशो वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥

नरमेको गुणो पुत्रो । न च मूर्खेनान्यपि ॥

एकमन्द्रस्तस्यो दन्ति । न च तारागणापि च ॥ ७ ॥

अविद्यं जीविने अन्व । दिशःशून्यारत्नवर्धिव ॥

पुत्रदीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥

न च विद्या समेकाय । न च व्याधिसूतो गिरुः ॥

न व्याप्यतमः क्षेत्रो ॥ न च देवान्पर्वदने ॥ ९ ॥

ति नया शिष्ये केनवा । दानमृत्युननुपदा ॥

कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान्न ज्ञप्तिमान् ॥ १० ॥

उपदेशो हि मर्खाणां । प्रकोपाय न शान्तये ॥

पयःपानञ्जुङ्गानां । केवलं विपवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

आत्मवत्सर्वज्ञतानि । विद्वन्ते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना
तेपांद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोद्भूतः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्जो-
नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचपंच
वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शपसश्चघोपाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ङ-
त्रणनमाः अनतस्थाः यरलवाः उष्माणः शपसद्वाः अःइतिविसर्ज-
नीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपमानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-
परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरं व्यंजनं परं वर्णं नयेत् अनतिक्रमवत्-
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्प्रवृत्तसिद्धिः इतिसंधोसूत्रतः प्रथमश्चरण-
समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अहतोभगवंतं इंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिरिषिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । गन्त्रयाराधकाः ॥

पंचते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः चुष्माकं मंगलं कुर्वंतु)

यद्भजो पंचपरमेष्ठिपदे सो ङ्गेषां तुमन्त्रव्यजीवोद्भूतं मंगलकरो, के-
सेकदे पंचपरमेष्ठि (अहतोभगवंतं इंद्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री
अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोर्को ङ्गो मो अरिहंत कदीज,
फेर श्री अरिहंत केसेकदे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तदे फेर अरि-
हंतमादाराज केसेकदे जगवंतदे जगज्जदके अनेकार्य कोपमें चौदे

अर्थदे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यज्ञ ४ वैराग्य ५ भुक्ति ६
 रूप ७ धीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य
 १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसे दो अर्थक वज्रकर बाकी १५
 अर्थ अरिहंत जगवंतमेंदे एकतो सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो
 दालके फेर श्री अरिहंत जगवंत कैसेकदे (इन्द्रमहिता) चोमठ इ-
 द्रोसैं पृजनीक वारेगुणोसैं विराजमानहै सो वारे गुण ऐसेहैं प्रथ-
 मतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होतादे रोग उर पसीना उर मलर-
 दित वमा खसबोदार तरीर होतादे १ सासोश्वासमें कमलके
 फूल जेली खनबो होतीदे २ लोही उर मांस गजके दुध जेना
 स्वेत होताहै ३ आहार नीडारकी विधि अदृश्य होतीहै अर्थात् चर्म
 चक्रवालेको दिखाई नहीं देता ४ यह चार अतिशयगुण जन्मसेही
 होतादे उर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये वाद होताहै अजो-
 कवृत्त १ जगवानके तरीरमें वारेगुणा ऊंचा होताहै जिसकी गाय
 बैठनेसे रोगनोकाधिक दूर होताहै १ सुरपुष्पचूटिः देवतोके स-
 मूह गोके पर्वत पंचरंगेफलोंकी बरसात करे आकासमें गिरते सीधे
 गिर । बीट नीचा रहे पांखनो ऊपर रहे २ । (दिव्यध्वनि) एक
 योजन तक देवता मनुष्य तिर्यच सब जीव अपनी १ ज्ञापामें
 यथावस्थित नमजे एता उनोको मात्रम देवेके जगवान हमारी
 पोखीमेंही उपदेज दे रहेहैं सोही बात सिद्धांतोंमें कहाजोहै ॥
 गाय ॥ एगाङ्गिगालेगे । मंदेहेदृष्टिगंतमंघ्रिना ॥ निदुयणमणु-
 सागंता । अरिहंताहुंतिमेतरणं १ । ३ ॥ आपर ४ जगवानके
 योनों तरफ इन्द्र चमर दोलना रहै ४ ॥ आसनय ॥ जगवंतके बैठ-
 पोहै इन्द्रादिक देव रचित फटिकगद्दा मित्रासण रहै ५ ॥ नामंकरं
 ८ जगवानके पिताजी भामंकर रहै जिन्हें जग्यतीव जगवानके
 नमक देवतके जगवंतके प्यारमुख प्यारेंदितामें ईलादेदे भग-
 वान पुर्तबिनामें मुख करके धैर उर तीन दितामें जगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन भगवानके अतिशयसे
 ज्यारोहीदिसामें वारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि-
 खाइदेवे ६ ॥ डुंडुजी उ आकाशमें देव ते वेवडुंडुजीवाजित्र वजावे
 उ ॥ रातपत्रं उ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन वज्र
 रहै उ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव
 चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोजित एकहजार
 आठ लक्षणांलंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-
 क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-
 वलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका ज्ञाव देखतेजये पृथ्वीमंजल-
 पर जव्यजीवोंके मनोरथ पूरणके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसें
 विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो ? ॥
 (सिद्धाश्रसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार
 हुं केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप
 अग्निसैं जस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-
 नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संगुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक
 जयादिकसें रहित चवदे राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-
 मयमें जाणते नर देखतेअके लेकिन आत्मगुणोंमे मग्न रहेजये ऐसे
 श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ३ ॥ (आचार्या-
 जिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-
 स्कार हुं केसेकहें श्रीआचार्यमहाराज उन्नीसगुणोंसें विराजमान
 मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रुकेविगवक पंचाचारपालक अनुधजीव-
 प्रतिबोधक कृमागुणजंमार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-
 शासनके उन्नतिके करणेवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-
 राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ ४ ॥ (पूज्याउपाध्यायका श्रीसि-
 द्धांतसुपाठका) चौथे परमेषिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नम-
 स्कार हुं केसेकहें श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

णकार नवनिर्देशागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेषदागवाले २५ गु-
णोंमें विराजमान ऐसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा सं-
गल करो ४ ॥ (मुनिवराःरत्नत्रयासधकाः) पंचम परमेश्वरमें
सरव साधूमुनिराजजी कैसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान ? दर्शन ?
चारित्र ३ इन तीन स्त्योंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुते-
गुना वल्लवके पीछर कुरकीसंवल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक
एसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें तोजित श्रीसंघमें सदा
संगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोंके कल्याणार्थें ॥

॥ अथविंशतिनाम ॥

॥ अतीतचोवीसो ॥

- | | |
|--------------------|-----------------------|
| १ श्रीकेवलज्ञानीजी | ९ श्रीनिर्व्याणीजी ॥ |
| २ श्रीसागरजी | ४ श्रीमहायज्ञजी |
| ५ श्रीविमलदेवजी | ६ श्रीतुल्यानुभूतिजी |
| ७ श्रीधीधरजी | ८ श्रीदत्तस्वामीजी |
| ९ श्रीदामोदरजी | १० श्रीभुक्तेजनाथजी |
| ११ श्रीस्वामीजी | १२ श्रीमुनिसुव्रतजी |
| १३ श्रीसुमतिनाथजी | १४ श्रीशिवगतिजी |
| १५ श्रीयस्तागजी | १६ श्रीनमिश्वरजी |
| १७ श्रीप्रतिनाथजी | १८ श्रीवज्रोपरजी |
| १९ श्रीकृतार्थजी | २० श्रीजिनेश्वरजी |
| २१ श्रीशुद्धमतीजी | २२ श्रीशिवकरजी |
| २३ श्रीस्वप्ननाथजी | २४ श्रीअंभरनिस्वामीजी |

॥ वर्तमानचोवीसो ॥

- | | |
|------------------|---------------------|
| १ श्रीनरसिंहजी | ९ श्रीवज्रनाथजी |
| २ श्रीसंज्ञनाथजी | ४ श्रीपद्मिनेश्वरजी |
| ३ श्रीसुमतिनाथजी | ५ श्रीदत्तनाथजी |

४ श्रीमुपार्थनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रभूजी
ए श्रीसुविघनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रियांसजी	१२ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशान्तिनाथजी
१७ श्रीकुंभुनाथजी	१८ श्रीअरुनाथजी
१९ श्रीमह्मिनाथजी	२० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्थजी	४ श्रीश्वं प्रभूजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभूजी	८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोटिलप्रभूजी	१० श्रीशतकीर्तिदेवजी
११ श्रीसुव्रतनाथजी	१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी	१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीलमाधिनाथजी	१८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीवसोधरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमह्मिप्रभूजी	२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी	२४ श्रीभद्रंकरजी

॥ वासविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंवरजी	२ श्रीयुगमंवरजी
३ श्रीवाहूजी	४ श्रीनुवाहूजी
५ श्रीनुजातुजी	६ श्रीस्वयं प्रभूजी

७ श्रीकृष्णभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रभुजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रवाहजी	१४ श्रीजुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभुजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहान्नद्रजी
१९ श्रीदेवयज्ञजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारमास्यतातीर्थकृत्नाम ॥

१ श्रीकृष्णभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवाग्भिएजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनामा जिना साय्वतैव जयन्ति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनवालाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीदोषद्वीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीसृगावतीजी
७ श्रीसुलनाजी	८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुनद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीश्रीलवतीजी
१३ श्रीइन्दुदेवीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

हत्वादि नदीर सतिवोंको प्रिकालर वंदना ॥

—

॥ ॐ परमेश्वरिणे नमः ॥

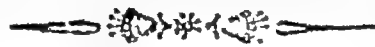
॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराह ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवच्चायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वसा
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ए ॥
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण के थापनाजीकी थापना
करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सदहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥
॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पावुं ॥ १ ॥ प
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥
॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने
खमा हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इत्थामि खमासमणो वंदितं जावणिज्जाए निसीहिआए म
वण्ण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अय सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ उन्नकार जगवन् सुहराउ, सुहृदेवसी, सुख तप शरीर निरा
वाय सुखसंयम यात्रा निर्वहोठोजी? स्वामी शाता ठेजी? इति ॥

॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेंवारे गुरु कहे दे-
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें घैठकें जिमणा हाय नीचा करकें अघुष्टि
नुमि कहे पीठें स्वमानमण देकें उच्चाकोरेण संदिस्तह जगवन्
सामायिक लेवा मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेह. पीठें उच्चं
कही दृजी कमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥

॥ अय मुहपत्ती पडिलेदणके पच्चोम बोल लिखते हें ॥

मूत्र, अर्थ साचो सईहुं ॥ १ ॥ मम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥
मिळ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल
मुहपत्ती खोलती विगीवां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ जेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परि-
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कडीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पमिले-
दण नावे हाथे करीये ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंभ ॥ १ ॥ वचनदंभ ॥ २ ॥ काय-
दंभ ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पमिलेदण जिमणे हाथसें करणी
॥ यह पशीज बोल मुहपत्तीकें जानने ॥

॥ अब अंगवरी पशीज पडिलेदण लिखते हें ॥

॥ ज्ञानवैश्या ॥ १ ॥ नीतिवैश्या ॥ २ ॥ आयोतवैश्या
॥ ३ ॥ नानुं नीतिवै मन्त्रें परिहरुं ॥

॥ ऊर्द्धगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शांता गारव ॥ ३ ॥
ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ नियाणाशब्द ॥ २ ॥ मित्रादंतण-
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय मावे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे
हाथे परिहरुं ॥

॥ ज्ञय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुर्गंछा ॥ ३ ॥ ए तीन
जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अग्निकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए
तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वायुकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ अस्त्रकाय ॥ ३ ॥
ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुद्रपत्ति पन्निखेदणा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खमा होय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें
इच्छाकरेण संदिस्तद् जगवन् ॥ सामायिक संदिस्तायुं ? गुरु कहे
संदिस्तावेद् ॥ पीठें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छा ॥
ज्ञ ॥ सामायिक गानं ? गुरु कहे गाणद् ॥

॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देउ थोमो जुकी तीन नव-
कार गणी इच्छाकरेण संदिस्तद् जगवन् पसाउ करी सामायिक
वंक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें
सामाश्य इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकतुं पञ्चख्यान ॥

॥ करेमि जंतें सामाश्यं, नावळं जोगं पञ्चख्यामि ॥ जाव
नियमं पञ्चवातामि ॥ दुविहं निविदेणं मणें वायाए काणें,

करेमि, न कारवेमि, तस्मै ज्ञेयं पन्थिमामि निन्दामि गरिदामि
स्पर्शं बोधिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठं स्वमात्मण दे कें इच्छाकारेण संदिस्तद् जगत्तन्
रियावहियं पन्थिमामि ॥ गुरु कहे पन्थिमम्, पीठं इत्तं कही ॥
इच्छामि पन्थिममिच्छं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, तो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्तद् जगत्तन् ॥ इरियावहियं पन्थिमा
मि ॥ इत्तं इच्छामि पन्थिममिच्छं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विरादणाए
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्रमणे वीथक्रमणे इरियक्रमणे
॥ उता उन्निग पणग दग मट्टी मक्कम संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अजिहया वत्तिया लेसिया संयाड्या संघट्टि
या पणियाविया ॥ कित्तामिया उटविया ठाणाउ ठाणं संतामिया
जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्मिन्निच्छामि इत्तं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्मै उत्तरी ॥

॥ तस्मै उत्तरीकरणेण ॥ पावच्छित्तकरणेण ॥ वित्तोहीकरणेण
॥ वित्तुत्तरकरणेण ॥ पावणं कम्मणं ॥ निग्यायणहाए ॥ ग्रामि
पाठस्मरणं ॥ ८ ॥

॥ अथ अज्जय उत्तमिणं ॥

॥ अज्जय उत्तमिणं नीलमिणं त्वामिणं वीणं जंजाडणं
सुसुणं वायवित्तमणे जमजिणं पित्तमुहाए ॥ १ ॥ सुसुमेदि अंगमंचा
मेदि ॥ सुसुमेदि स्वप्नमंचात्रेदि ॥ सुसुमेदि दिदिसंयानेदि ॥ २ ॥ एव
माइएदि आगारेदि ॥ अज्जयो अविगाहिउ ॥ एउ मे कावस्मयो
॥ ३ ॥ ज्ञाय अविहंतणं जगत्तणं समुत्तमणे न पगेमि ॥ ४ ॥
ज्ञायमायं नालेनं मोणेणं ज्ञाणेणं पण्यणं बोधिरामि ॥ ५ ॥ इ
ति ॥ ६ ॥ इहो पाठ नवरत्नं लक्ष्मी एव मोक्षस्तोत्रो कावस्मय

करे, पीठें एमो अरिहंताणं कहे कें कानस्तग्ग पारकें मुखसैं प्रगट
लोगस्त कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्त ॥

॥ लोगस्त उज्जोअगरे ॥ धम्म तिठयेरे जिणे ॥ अरिहंते
कित्तवस्तं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उत्तम मज्झिं च वंदे ॥
संजव मज्झिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च
चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंत वासु
पुज्जं च ॥ विमल सणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥
कुंयुं अरं च मह्विं ॥ वंदे सुणिसुवयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ
नेभिं ॥ पासं तह वरुमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्झिअुआ ॥ वि
हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिठय
रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिव वंदिय महियां ॥ जे ए लोगस्त उ
त्तमा सिज्जा ॥ आरुग वोहिलाज्जं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेतु निम्मलयर आउचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंजीरा
॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठें खमासमण देइ इच्छा ॥ जगवन् वैसणो संदि
स्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कहे कें वली खमा-
समण दे कर ॥ इच्छा ॥ जगवन् वैसणो ठाठं ? गुरु कहे
ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे कें खमासमण दे कर इच्छा ॥
ज ॥ सिद्धाय संदिस्तावुं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें
इच्छं कहे कें वली खमासमण दे कर इच्छा ॥ जग ॥ सिद्धाय
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्छा स्वमे हो कर
आठ नवकार कह कर सिद्धाय करे, तथा जो शीतकालादि होवे
तो खमासमण दे कें इच्छा ॥ ज ॥ पांगरणी संदिस्तावुं ? गुरु
कहे संदिस्तावेह ॥ पीठें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा ॥
ज ॥ पांगरणी पन्निग्वाठं ? गुरु कहे पन्निग्वाएह ॥ पीठें इच्छं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवन्त अथवा पौसासहित श्रावक
वांछे तो “वंदामो” ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांछे तो, सि
चाय करेह, ऐसै कहे ॥ इति प्राज्ञातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा ॥ ज्ञ ॥ चैत्यवंदन
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीवै इहं कही जयन्त सामि जयन्त सामि
इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयन्त सामिय जयन्त सामिय, रिसइ सेतुंजि उज्जति ॥
॥ पहु नेमिजिण, जयन्त वीर सच्चन्तरिमंरुण ॥ १ ॥ नरुअब्बेइ
मुणिसुव्वय, महुरिपास इह डुरिय खंरुण ॥ अवरविदेहिज तिठ-
यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडु जिण
सव्वेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संधयणि ॥ उक्कोसउ सत्त-
रिसउ, जिणवराण विहरंत लप्पई ॥ नवकोमीहिं केवल्लिण, कोमि
सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर दीस मुणि, विहुं कोमीहिं
वरणाण ॥ समणह कोमी सहस्स डई, शुणिऊइ निच्च विहाण
॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा ठप्पन्न अठ कोमीन् ॥ चउ-
सय ठायासीया, तिस्सुक्के चेशए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं,
पणवीसं कोमि लख तेवणा ॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठ-
तिया पन्निमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिउं ॥ सन्गे पायाले माणुमे लोए ॥
जाइं जिणविंवाइं ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

जगराणं, सयं संवृक्षाणं ॥ १ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरि-
 मवरपुंररीआणं, पुरिसवरगंधहन्त्रीणं ॥ २ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग-
 नाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अन्न-
 चदयाणं, चख्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, घोहिदयाणं
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसा-
 रहीणं, धम्मवरचानुरंतचक्रवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरणाण
 वंसण धराणं, विअट्ट उज्जमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं
 तारयाणं, वुळाणं वोहयाणं, सुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं
 सबदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरुखय मवावाह मपुणरा-
 वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं,
 जिअ जयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति
 णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सब्बे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उहेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं
 ताइं वंदे ॥ इहसंतो तव संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहु ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहु ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥
 सब्बेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिवंरु विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मवणमुक्कं ॥ विसह-
 रविमनिन्नासं ॥ मंगलक्ख्खाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुल्लिगमंतं
 ॥ कंठ थोइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारो ॥ उव जरा
 जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिउउ दूरे मंतो ॥ तुअ पणामां वि बहु-
 फल्लो होइ ॥ नरतिरिएनुवि जीवा ॥ पावंति न् उख्ख दोहगं ॥

॥३॥ तुह सम्मते लखे ॥ चिंतामणि कप्पेपायवप्रहिए ॥ पार्वति
अविग्घेणं ॥ जीवा अवरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संश्रुतं महायस
॥ जत्तिप्ररनिप्ररेण हिअएण ॥ ता देव दिऊ बोहिं ॥ जवे जवे
पासजिएचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पन्नावउं जयवं ॥
जवनिब्बेउं मग्गा, एउसारिआ इठ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचा
उं ॥ गुरुजणपूआ परठकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतवय, ए सेवणा
आजव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें
खमासमण दे केँ इच्छा ॥ १ ॥ ॥ कुसुमिणउसुमिण राई पाय
छित्त विसोहणठं काउस्तग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीठें इठं कह
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित्त विसोहणठं करेमि काउ
स्तग्गं ॥ अन्नठ उससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे केँ सोले नव
कार अथवा चार लोगस्तका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन
कर केँ काउस्तग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ
स्तग्ग पारकेँ मुखसँ एक लोगस्तका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें
गुण संवधि मोटको दृषण लागो होवे तो काउस्तग्गमाहे ॥ सगर
वरगंजीरा ॥ पर्यंत चितवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पन्निक्कमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जव खमासम
ण देइ श्रीआचार्यजी मिअ कहि केँ वांदिये ॥ १ ॥ खमासमण
देइ श्रीउताध्यायजी मिअ कहिके वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ
जंगम युगप्रधान वर्तमान जटारक श्रीपूज्यजीका नाम ले केँ वां
दिये ॥ ३ ॥ खमासमण देइ केँ सर्व साधुजीकुं वांदिये ॥ ४ ॥ इत
तरे चार खमासमणने पन्निक्कमणां ठायी मोनाजीयें वेठ केँ मस्त
क नमाय कर दोनु हाथे सुहवनी सुहमे दे कर ॥ सबस्तविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इच्छाकारेणसंदिस्तह इच्छं इस माफक न कहे ॥

॥ अथ सधस्सवि ॥

॥ सधस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुप्पासिय दुच्चिठिअ इच्छा करेण संदिस्तह जगवन् इच्छं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कमं ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राश्यं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठें नमुवुणं कह केँ खमा होय केँ ॥ करेमि जंतें सा माश्यं सावय्यं जोगं पच्चरुक्कामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठें इच्छामि कानुस्तग्गं जो मे राइउ ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिगामि ॥

॥ इच्छामि गामि कानुस्तग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइयारो क उ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उत्तुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अक रणिज्जो ॥ उअउ ॥ दुच्चिंतिउ अणायारो ॥ अणिज्जिअवो ॥ अ सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुषयाणं ॥ तिन्हं गु णवयाणं ॥ चउन्हं सिक्कावयाणं ॥ वारसवियस्स सावगवम्मस्स ॥ जं खंमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इ हां देवसियंके ठिकानें राश्यं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठें तस्सउत्तरी ० ॥ अन्नउ उत्तिएणं कह कर चारित्रशु ढि निमित्त चार नचकार अयवा एक जोगस्सका कानुस्तग्ग करी पारि केँ दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट जोगस्स कही सबजोए अरिहंत चेइयाणं ॥ करेमि कानुस्तग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआण ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स म्माण वत्तिआए ॥ बोहिल्लान्न वत्तिआए ॥ निरुवत्तग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुपेदाए ॥ वद्धमाणी
ए ठामि कानस्तगं ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

पीठें अन्नत्र० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्तका
कानस्तग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुष्करदी० ॥
सुयस्त जगवत्त करेमि कानस्तगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुष्करदी ॥

॥ पुष्करदीवद्धे, धायइसंमे अ जंवुदीवेअ ॥ जरदे रवय
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्त
सुरगणनरिंदमहिअस्त ॥ सीमाधरस्त वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल
स्त ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्त, कल्लाण पुख्खलवि
सालसुद्धावहस्त ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्त, धम्मस्त तार
मुवल्लप्र करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेनो पयत्त णमो जिणमए, नंदी
सया संजमे ॥ देयं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्तप्पूअ जावच्चिए ॥
लोगो जठ पइठिन् जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वद्धन् सा
सत्तं विजयन्, धम्मुत्तरं वद्धन् ॥ ४ ॥ इति ॥ ११ ॥ सुअस्त ज
गवत्त करेमि कानस्तगं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर
अन्नत्रूससिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्तका कान
स्तग करे. कानस्तगके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आ
में लिखेंगे, पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु-
वगयाणं, नमो सया सच्चिदिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं
देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महियं, सिरसा वंदे मद्दायी
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवमहस्त वद्धमाणस्त ॥ तं
सारसागरत्तं, तारेइ नरं व नारि वा ॥ ३ ॥ उक्किन् सेल सिहरे,

दिक्का नाणं निसीद्ध्या जस्त ॥ तं धम्मचक्रवट्ठिं अरिद्वेमिं न
मंतामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दम दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं
॥ परमठ निष्ठिअण, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्विठि समाहिगराणं ॥
इति ॥ करेमि कानस्तगं ॥ अन्नउ ० ॥ इति ॥ ५३ ॥

॥ पीठें संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र
वादणां निमित्तें मुहपत्ती पम्पिलेहुं ? गुरु कहे पम्पिलेह ॥ मुहपत्ती
पम्पिलेहे, पीठें वादणां दे, तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उच्चा हुआ आधा नीचा नम कर
इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीद्धिआए अणुजा-
णद मे मिउग्गहं, उतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता
हुआ निसीद्धि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा
प्रमार्जन कर कें उक्कम वेठ के माथे हाथमें मुहपत्ती ले कें माथे
कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निह्लाम पूंजी, मुहपत्ती आगे
रख कें तिसके मध्य जगमें गुरुचरणकी कटपना कर कें ॥ अदो
कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो जे किलामो
॥ इत्यादि पाठ कहे, पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्त्तन कर
कें खमा होके पीठें पगमें जूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर
निकलके स्वस्थान पर आवे, उहां आवस्तिथाए ॥ इत्यादि पाठ
सब कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुम्वांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदितुं, जावणिज्जाए निसीद्धिआए
॥ अणुजाणद मे मिउग्गहं निसीद्धि ॥ अदो कायं काय संकासं,
खमणिज्जो जे किलामो ॥ अणुकिवन्तायं बहु सुत्तेण ते, दिवसें

वश्कंतो जत्ता जे जनणिज्जं च जे, खामेसि खमासमणो ॥ देव-
 सिअं वश्कम्मं आवसिआए, पक्कमामि खमासमणां ॥ देव-
 सिआए, आनायणाए ॥ तिचीसन्नयराए जं किंचि निआए, मण-
 डुक्काए, वयडुक्काए कायडुक्काए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-
 ज्जाए, सबकालिआए, सब मिछोवयाराए, सबधम्माश्कमणाए ॥
 आसायणाए जो मे अइआरो कन्, तस्स खमासमणो पक्कमामि ॥
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइन् वश्कंतो, तथा
 चउमासीयें चउमासीन् वश्कंतो, परकीयें परको वश्कंतो, संवह-
 रीयेसंवहरीन् वश्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इच्छं ॥ आ-
 लोएमि, जो मे ॥ इति ॥ १५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीठें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक आलोवे, सो क-
 हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख
 तेजकाय ॥ सात लाख वायुकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-
 काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख त्रै-
 द्रिय ॥ दोय लाख तैद्रिय ॥ दोय लाख चौरिन्द्रिय ॥ चार लाख
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यच पंचेन्द्रिय ॥ चउदे
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,
 मादारे जंविं जे कोइ जीव इण्यो होय, इणाव्यो होय, इणातां
 प्रत्ये जलो जाण्यो होय, तेनदेहुं मन वचन काचार्य करी मिछा
 मि डुक्कं ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥
मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया
॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥
अज्ञाख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥
परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द
॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,
सेवना प्रत्ये जलां जाण्यां होय, ते सबे हुं मनें, वचनें, कायार्ये
क ॥ तस्त मित्रा मि दुक्कं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव
करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा
नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, ज्ञान
कथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं
होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायार्ये करके, दि
वस अतिचार आलोयणे कर के पम्किमणामे आलोउं ॥ तस्त
मित्रा मि दुक्कं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पम्किमणामे
दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ केहनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीठे सबस्तवि राज्यं ॥ उत्पादिपाठ कहे. तिहां
इहाका ॥ ज० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-
यचित्त मागे ॥ गुरु कहे पम्किमद ॥ पीठे इजं तस्त मित्रामि
दुक्कं कह के संभासा प्रमार्जन कर के आसन पर बैठे के जि-
मणा गोमा उंचा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसे कह कि
जगवन्! सूत्र जगुं? तव गुरु कहे जगोह ॥ पीठे इजं कहि के तीन
नवकार अरु तीन बार करेमि जते ॥ जग के इजामि पम्कि
मित्रं जो मे राज्य उत्पादि कह कर ॥ तं निदे तंव गरिहामि

पर्यंत चंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीठें खमा हो कें अष्टुष्टि
उमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितुं सब सिद्धे, धम्मायरिए अ सबसाहू अ ॥ इच्छामि
पम्भिमिजं, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,
नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे
तं च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविद्धे
अ आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पम्भिमि देवसियं सबं ॥ ३ ॥
जं वळमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण
व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं-
कमणे अणाज्जेणे ॥ अज्जिज्जे अ निज्जे, पम्भिमि ॥ ५ ॥ संका
कंख विगिंछा, पसंस तह संयवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,
पम्भिमि ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा
॥ अत्तणाय परछा, उज्जयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचणहमणुव-
याणं, गुणवयाणं च तिसह मइयारे ॥ तिरकाणं च चउसहं, पम्भि-
क्के ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, शूलग पाणाइवाय विरइत्त ॥
आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह वंथ उविच्छेए,
अइ जारे जत्त पाण बुत्तेए ॥ पढमं वयस्त इआरे, पम्भिमि ॥
१० ॥ वीए अणुवयंमि, परिशुलगअविअ वयण विरइत्त ॥ आया-
रिअमप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त दाणे,
मोसुवण्णते अ कूरुलेहे अ ॥ वीयं वयस्त इआरे, पम्भिमि ॥
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, शूलग परदव्वहरण विरइत्त ॥ आयरिअ
मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहमप्पज्जे, तप्पमिरुवे
विरुद्ध मसणे अ ॥ कूरुतुल कूरुमाणे, पम्भिमि ॥ १४ ॥ चउत्ते
अणुवयंमि, निजं परदारगमण विरइत्त ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ उज्ज, अगंग वीयाह तिव्व

अगुराणे ॥ चउत्र वयस्स ऽअरं, पम्पिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए
 पं, चमंमि आवरिय मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्त पमायप्पसं
 गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू, रूप्प सुवत्ते अ कुविअ परि-
 माणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पम्पिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-
 माणे, दिसासु उट्ठं अहेअ तिरिअं च ॥ वुम्भित्त्तंअंतरद्वा, पढमंमि
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ
 गंधमत्ते अ ॥ उवत्तेण परिज्जेणे, वोयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सज्जिते
 पम्पिक्कमे ॥ अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुल्लोसहि जस्सकणया,
 पम्पिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी, जामा फोमी सुवज्जए
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस वित्तवित्तयं ॥ २२ ॥
 एवं खु जंतपिच्चणं, कम्मं निच्चंणं च दवदाणं ॥ सरदद्द तलाव
 सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सज्जग्गि मुसल जंतग, तण
 केठ मंत मूल जेसजे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पम्पिक्कमे० ॥ २४ ॥
 न्हाणू वट्ठण वन्नग, विलेवणे सदल्लव रसगंधे ॥ वज्जासण आजरणे,
 पम्पिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुकुडए, मोद्धरि अहिगरण जोग अउ-
 रिच्छे ॥ दंमंमि अणुठाए, तउयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविधे
 दुप्पणिहाणे, अणवठाणे तद्वा सउ विजुणे, ॥ सामाअ अ वितद्दकए,
 पढमे सिक्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सइं रुवे अ
 पुंगलखेवे ॥ देमावगा सिवंमि, बीए सिक्कावए निंदे ॥ २८ ॥
 संथा सज्जाविही, पमाय तह चेव ज्ञायणात्तोए ॥ पोसह विद्धि
 विवरीण, तज्जा सिक्कावा निंदे ॥ २९ ॥ सज्जिते निस्सिक्कवणे, पि-
 हिणे ववात्त मज्जेरे चेव ॥ कायाउक्कम दाणे, चउत्रे सिक्कावा
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिण् सुअ उहिण् सुअ, जामे अतंजणसु अणुकंपा
 ॥ रागेणव दासणव, तंनिंदे तं च गम्हामि ॥ ३१ ॥ नादनु
 संविज्जाणे, न कळ तव चरण करण जुनेनु ॥ मंतं फानु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ
 आसंस पन्ने ॥ पंचविहो अइआरो, मा मच्च दुक्क मरणंतै ॥ ३३ ॥
 काएण काइअस्स, पम्भिकमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-
 अस्स, सवस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयं सिक्काणां,
 रवेसु सन्ना कसाय दंसेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो
 अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठि जीवो, जइ विदुपावं समायेरे
 किंचि ॥ अप्पोसि दोइ वंदो, जेण न निद्धंघसं कुणइ ॥ ३६ ॥
 तं पिदुसपम्भिकमणं, सप्परिआवं सन्नत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइं,
 चाहिच्च सुसिरिक्कं विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुळगयं, मंत मले
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेदिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥
 एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्झिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,
 खिप्पं हणइ सुसावत्तं ॥ ३९ ॥ कय पाचोवि मणुस्सो, आलोइअ
 निंदिय गुरुसगासे ॥ दोइ अइरेग लहुत्तं, उइरिअं जस्स चारवहो
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावत्तं जइवि बहुरत्तं दोइ ॥
 उक्काण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-
 अणा बहुविहा, नयसंजरिआ पम्भिकमणकाले ॥ मूल गुण उत्तर-
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्म धम्मस्स केवलं
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुठ्ठिमि आरा, हणाए विरत्तमि विरादणाए ॥
 तिविदेण पम्भिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति
 चेइआइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि सादू ॥ ४५ ॥ चिर संचिय
 पाव पणासणीइ, जवसयसइस्स मदणाए ॥ चउवीस जिण वि-
 णिग्गय कदाइं, वोत्तंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मस्सिहंता,
 सिद्धा सादु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठो देवा, दिंतु समाधिं च
 वोदिं च ॥ ४७ ॥ पम्भिनिद्धाणं करणे, किञ्चाण मकरणे पम्भिक-
 मणे ॥ असइदणे अ तदा, विवरीय पम्भणाए अ ॥ ४८ ॥ स्वा-
 भेमि गग जीव, सधे जीवा खमंतु मे ॥ मिनीमे सव अप्पसु, वेरं

मञ्जु न केणइ ॥ ४ए ॥ एव महं आलोइअ, निविअ गरदिअ डुगं-
विअं सम्मं ॥ तिविदेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५०
॥ इति ॥ २ए ॥ इहां प्रज्ञातके पमिक्कमणमै देवसिके ठीकाने राइयं
कदना ॥

॥ पीठें दो वादणां देकर अवग्रहं मांदिथकोज कहे ॥ इच्छा-
का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अणुच्छिन्ति अग्रिंतर ॥ राइयं खामेमि ?
गुरु कहे खामेइ ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाती बैठ के, बे
बांइ पडिलेदि ॥ मुहपती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ
गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अणुच्छिन्ति ॥

॥ इच्छाकरेण संदिस्सइ जगवन् अणुच्छिन्ति अग्रिंतर देव-
सिउ खामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं ज्ञे
पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर
जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मञ्जुविणय परिदीणं सुदु-
मंवा वायरं वा ॥ तुप्पे जाणइ अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि
उक्कमं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि उक्कमं कहे, पीठें बे वादणां देई
जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह धादिर आय कें आय-
रिय उवज्जाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्जाए ॥

॥ आयरिअ उवज्जाए, सीसे साहमीए कुलगणे अ ॥ जे
मे कया कसाया, सोव तिविदेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समण
संवस्स, जगवत्तं अजलिं करिअ सीसे ॥ सबं खमावज्जा, खमामि
सबस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, जावत्तं धम्मो निदिअ
निअ चित्तो ॥ सबं खमावज्जा, खमामि सबस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीठे करेमि प्रते इच्छामि ठामि कान्तस्सगं तस्सुत्तरी० ॥

श्रीमदावीर स्वामी उमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि कान्त-
स्सगं अन्नवू० ॥ कहि कें कान्तस्सग करे, कान्तस्सगमें श्रीवीर-
कृत उम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ
बोगस्सका कान्तस्सग करे, कान्तस्सग पारिकें प्रगटलोगस्स कहे ॥

॥ ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह

॥ मुहपत्ती पमिलेही बे वांदणां देई सकल तीर्थनाम खइ नम-
स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्गत्तया देवलोके रविशशिञ्जवने, व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पद्म-
गेंद्रे स्फुटमणिकरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदि-
वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे
कुंभले दस्तिवंते, वरकारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषवे नीलवंते ॥
शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥
श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके
वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सहाद्रौ वैजयंते विमल-
गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षि-
तितटमुकुटे शिखरकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिपनतटे हेमकूटे
विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च ज्रोटे ॥ श्री०
॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलपिनि निपथे मेखले पिङ्गले वा,
नैपाले नाहले वा कुषलयतिलके सिंदले केरले वा ॥ माहाले
कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा दमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥
भंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चोमे मुरमे
वरतरद्रविमे उद्रियाणे च पौमे ॥ भार्दे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविमकवज्रये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमधु-
 रापत्तने चोळान्यां, कौशल्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्या
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जहिले तांभ्रलियां ॥
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीर्नारतीरे,
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने जूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये
 वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाढमलौ जंबुवृक्षे, चोळान्ये चैत्यनंदे
 रतिकररुचके कौमले मानुषांके ॥ इक्षुकरे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
 व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके जवंति त्रिजुवनवलये यानि चैत्या-
 लयानि” ॥ ९ ॥ इत्वं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं अक्तिज्जाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-
 तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिञ्चैः
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥
 इति ॥ ३२ ॥

पीठे गुरुमुखे पञ्चकाण करि कै ॥ इवामोनि सद्धियं कहि
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेणमो खमासमणाणं एमोऽईत्ति. ॥ १ ॥ कइ कर.
 परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अय परसमय तिमिरतरणि ॥

॥ परसमय तिमिरतरणि, जवसागर चारि तरण वरतरणि
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निजह संसार
 विदारकारि, हरन्तज्जावारिणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा
 वो, जवावइं मोडजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेइकारिकुनयागमरूढगूढ,
 संमोहपंकहरणामलचारिपूरम् ॥ संतारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-
 रागमं परमसिद्धिं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरलोत्तालीदलोत्ता-
 लीमात्ता, बग्गमलनिवासे दारनीहारदामे ॥ अविमलजविकारागार

विद्वित्तिकारं, कुङ्कुममलकरं मे मङ्गलं देवितारम् ॥ ४ ॥ इति ॥
३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोदधूलीहरणे समीरम् ॥
माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-
वावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमाहितानि ॥
संपूरितान्नितलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि
तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूरान्निरामं, जीवाहिंसा-
विरललङ्घरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेवं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बंधुलं
परिमला लीढलोलालिमाला, जंकारा रावसारा मलदलकमलागार-
ज्यूमीनिवासे ॥ वायासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहारान्निरामे, वा-
णीसंदोहदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा ज्ञानी, शक्रस्तव कहे. पीठें खम्भा हो
कर अरिदंत चेड्याणें करेमि काउस्तगं ॥ वंदणवत्तिआएण अन्नवूण
॥ इत्यादि पाठ कहि कै ॥

॥ काउस्तगमाहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक भावक
प्रथम काउस्तग पारी नमोऽर्हस्तिआण कही ॥ एक गाथा स्तुति
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरूपम,
नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंठण सेवित, पञ्चमावड धरणिंद ॥
प्रद उठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक
जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्तगमाहे रक्ष्या हुआ सुणे ॥ पीठें
णमो अरिदंताणं कहि कै काउस्तग पारे ॥ इत तरे आगे पल
जाणता ॥ पीठें लोणस्त कहे ॥ सचजेए अरिदंत चेड्याणं वंदण-

कान्यकुब्जेनुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमधु-
 रापत्तने चोङ्गायिन्यां, कौशल्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्या
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जहिले ताम्रलिप्तां ॥
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे,
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये
 वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्री-
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाळमलौ जंबुवृक्षे, चोङ्गान्ये चैत्यनंदे
 रतिकररुचके कौमले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ
 व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके जवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्या-
 लयानि" ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं जक्तिज्ञाजत्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-
 तीर्थयात्राफलमतुलमत्वं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिर्जच्चैः
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥
 इति ॥ ३२ ॥

पीठं गुरुमुखे पञ्चरूपाण करि कै ॥ इष्टामोनि सद्वियं कदि
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे,

॥ पीठेणमो खमासमणाणं एमोऽर्द्धस्तिष्ठा ॥ कद् कर,
 परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, जवसागर वारि तरण वरतगणिं
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निऊठ संनार
 विहारकारि, हरन्तज्ञावागिणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलितत्तमा
 वो, जवावडं मोडजरं इरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमनदगूढ,
 संमोहपंकडरणामलवारिपूरम् ॥ संतारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-
 रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरखोज्जालीदलोवा-
 लिमात्रा, वरकमलनिवासे द्वारनीहारदामे ॥ अविखजविकारागार

विट्ठितिकारं, कुङ्कुमकमलकरं मे मङ्गलं देवितारम् ॥ ४ ॥ इति ॥
३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोदधूलीहरणे समीरम् ॥
माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारंधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-
वावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमाहितानि ॥
संपूरिताजिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि
तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवाहिंसा-
विरललहरीसंगमागाददेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहल
परिमला लीढलोलालिमाला, ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागार-
जूमिनिवासे ॥ गायसंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरामे, वा-
णीसंदोहदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा ज्ञानी, शक्रस्तव कहे. पीठें खमा हो
कर अरिदंत चेश्याणं करेमि कान्तस्तगं ॥ वंदणवक्त्याए० अन्नबू०
॥ इत्यादि पाठ कहि कै ॥

॥ कान्तस्तगमादि एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक
प्रथम कान्तस्तग पारी नमोऽर्हस्तिज्ञा० कही ॥ एक गाथा स्तुति
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरूपम,
नील वरण सुखकंद ॥ अदि लंछण सेवित, पञ्चमावड धरणिंद ॥
प्रद ऊर्वा प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक
जण कहे ॥ दूसरे सब कान्तस्तगमादि रह्या दुआ सुणे ॥ पीठें
णमो अरिदंताणं कहि कै कान्तस्तग पारे ॥ इत तरे आगे पण
जाणणां ॥ पीठें लोगस्त कहे ॥ सबजोए अरिदंत धेइयाणं वंदण-

वति० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्तग
करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयष्ठ, कणयाचल अजिराम ॥ मानुषोत्तर
नंदी, रुचक कुंज सुखगाम ॥ जुवणेशुर व्यंतर, जोइस विमाणी
नाम ॥ वर्ते ते जिणवर, पुरो मुऊ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीठें पुरकरवदीवष्टे कहि कें सुयस्त जगवत्त० वंदण०
अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग पारि कें ॥ त्रीजी
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिदा अंग इग्यारे, वार उपंग व ठेद ॥ दस पयत्रा
धारया, मूल सूत्र चउजेद ॥ जिन आगम पद्मव्य, सप्त पदारथ
जुत्त ॥ सांजलि सईदतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कहि कें वेयावच्चगराणं० ॥
अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग करी पारि कें एमो-
उद्विस्तद्धा० कहि कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पठमावई देवी, पार्थ यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट,
दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनजक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख
सुनस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीठें नीचा बैठ कें एमोदूयं० कहि कें ॥ तीन खमा-
समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांछे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो दाथ नीचो करि, मुखें
मुदपत्तो देई अष्टाङ्गेषु कहे हैं, सो लिखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अष्टाङ्गेषु ॥

॥ अष्टाङ्गेषु ॥ इव समुद्रेषु ॥ पद्मरमसु रुक्मज्ज्मीसु ॥
जावंत केवि साहू ॥ स्पहरण गुह्यपद्मिगह्वारा पद्ममङ्गलधारा ॥
अदारसहस्त सौख्यधारा ॥ अम्कवायारचरिषा ॥ ते सबे सिरसा
अशसा मङ्गल वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछे स्थिरता हुवे तो स्वमासमण
तीन षष्ठ्यत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सद् जगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं
जी, यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिजुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय
जय करुणा शान्त दात, नविजनहितकामी ॥ जय जय इंदु नरिंद
चंद्र, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-
नामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-
चिनाम तित्वं ॥ नमोऽवूणं जावंति चेद्वा ॥ जावंत केवि सादू ॥
॥ नर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ तक कदि के
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालदो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥
परम पुरुष परमेस्वर, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥
केवल ज्ञान दिवाकर, जागे सादि अनंत लाल रे ॥ ज्ञासक लो-
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र
चक्रोत्तर, सुर नर रड़े कर जोर लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,
अणादूता इक कोर लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर
चसे, मुज मन डंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-
शरो, जब जब वेदाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उच्चारण
जो तुम्हें, दूर दूरो जब दुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्प मया करी,
वेजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीछे लयवीराराय० चंदणवत्तियाए० ॥ अत्र ३० कदि

वसि० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहि कैं ॥ एक नवकारका काउस्तग
करी पारि कैं दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयठइ, कणयाचल अजिराम ॥ मानुषोत्तर
नंदी, रुचक कुंरुल सुखठाम ॥ जुवणोसुर व्यंतर, जोइस विमाणी
नाम ॥ वर्ते ते जिणवर, पुरो मुऊ मन काम ॥ १ ॥

॥ पीठें पुरकरवदीवठे कहि कैं सुयस्त जगवन्त० वंदण०
अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग पारि कैं ॥ त्रीजी
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार उपंग ठ वेद ॥ दस पयन्ना
झारुया, मूल सूत्र चउजेद ॥ जिन आगम परुद्रव्य, सत पवारथ
जुन ॥ सांजलि सईहतां, त्रूटे करम तुरत ॥ ३ ॥

॥ पाठें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कह कैं वेयावज्जगराणं० ॥
अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग करी पारि कैं एमो-
उद्विस्तिदा० कह कैं चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पठमावई देवी, पार्थ्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट,
दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनजक्ति, सूरि कहे इक्ष चित्त ॥ सुख
सुनस समापो, पुन कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पाठें नीचा वैठ कैं एमोवूणं० कहि कैं ॥ तीन खमा-
समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांछे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो दाग्र नीचो करि, मुखें
मुदपणो देई अष्टाद्वजेसु कहे हैं, सो लिखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अष्टाद्वजेसु ॥

॥ अष्टाद्वजेसु ॥ इव समुजेसु ॥ पञ्जरसासु कम्पज्जमीसु ॥
लावंत केवि ताहू ॥ ग्यहरण गुह्यमिग्नद्वारा पञ्चमद्वयधारा ॥
अदारसहस्त सांजंगभारा ॥ अम्कयापारचरिचा ॥ ते सबे सिरसा
अणसा मण्डण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो स्वमासमण
तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संविस्तद जगवन् ॥ चैत्यवंदन करे
जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिजुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय
जय करुणा शान्त दांत, जविजनहितकामी ॥ जय जय इंदु नरिंद
चंद्र, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-
जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोऽनूणं जावंति चेद्वा ॥ जावंत केवि सादृ ॥
॥ उर लमोऽर्हस्तिद्वाचार्योपाध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ तक कहि के
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालदो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥
परम पुरुष परमेस्वर, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥
केवल ज्ञान दिवाकर, जागे सावि अनंत लाल रे ॥ जासक लो-
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र
घड़ीसर, सुर नर रदे कर लोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,
अणदूता इक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर
चसे, मुज मन दंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-
शरो, जव जव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अथम उद्धारण
जो तुम्हें, दूर दूरो जव दुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्प मया करी,
बेजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीठें जयवीरराव० वंदनवर्तियाए० ॥ अन्न० कहि

कैं ॥ एक नवकारका काजस्तग्न करे ॥ पारि कैं नमोऽर्द्धसिद्धां
कही ॥ एक श्रुद्धनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ मदीमंरुणं पुमसोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलज्ञाणगेहं ॥
महाणंदलब्धी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥ उम
हीज धिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय
प्रथम जिणंद चंद, जव दुःख विहरण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिपन्न जिणेशर ॥
अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पंकज
प्रीति धर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं
॥ एमोत्रुणं ॥ जावंति चेऽग्राऽं ॥ जावंत केवि साहू ॥ एमो-
ऽर्द्धसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः तत्र कहि कैं श्री सिद्धाचल-
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेव्यां रे ॥ धन्य ज्ञान्य दमारां ॥ विम-
लाचलगिरि ॥ एह गिरिवरनो महिमा मढोटो, कहेतां न आये
पारा ॥ रावण रुख समोसर्पा स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ५०
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट
द्रव्यसैं पृजो जावैं, समकित मूल आधारारे ॥ ५० ॥ २ ॥ दूर
देशर्था हुं इहां आयो, अवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण
विरुद तुमारा, एह तीरघ्न जग सारा रे ॥ ५० ॥ ३ ॥ जाव
जक्तिनैं प्रज्ञा गुण गावैं, अपना जन्म सघारा ॥ जात्रा करि
जबिलन जुज जावैं, नरक तिर्थच गति वारा रे ॥ ५० ॥ ४ ॥
संवत अठारं श्यामी मास आषाढ़, वदि आठम जेमावारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिंदमें, कमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५॥

॥ पीठें जयवीराराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नबू० ॥ कटिक्के
एक नवकारका कानुस्तग करी ॥ पारिक्के नमोऽर्द्धस्ति० ॥ कटिक्के ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमिये, रूपनदेव पुंमरीक ॥ शुभ तपनो
महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिगुं
चैत्यवंदनीक ॥ करिये जिन आगल, टाली वचन अलीक ॥ ? ॥
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पन्निहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पढिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् ॥ पन्नि-
लेहण संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्ताह ॥ बीजे खमासमणें ॥
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्निहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे
अंग पन्निहण संदिस्तानं ॥ अंगपन्निहण करुं, कहीके धोतियुं
कणदोरो पन्निहे के ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसान
करी पन्निहण पन्निहावो जी. एम कही ॥ आपनाचार्य
पन्निहे रखे, अने जो गुर्वादिक आपनाचार्य पन्निहे, तो
पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्निहे ? गुरु कहे पन्निहेह
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निहे ॥ दोव खमासमणें ॥ इ-
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पन्निहण संदिस्तानं ॥ उही पन्नि-
लेहण करुं ॥ एम कही कंवल चम्पादि पन्निहे ॥ पीठें पोषध-
आवा प्रमार्जी काजां, विधिगुं परवरी खमासमण देई इच्छावही
पन्निहे ॥ ए मूत्रविधि जाणवो ॥ इतनी स्त्रिरता न होवे, तोनी
दृष्टिपन्निहण तो अवश्य करणी ॥ अवर्जा प्राये एही करते वि-
मते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायबो, पीठें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे थायारो न मोत्तबो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊजो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमाजीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ जयवं दससज्जदो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अय भयवं दससज्जदो ॥

॥ जयवंदससज्जदो, सुदंसणो धूलिज्जद वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासड पावं असंकिया ज्ञावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अज्जिगहो नाण माईणं ॥ २ ॥ उज्जमज्जो मूढमणो, कित्ति य मित्तं पि संज्जरइ जीवो ॥ जं च न संज्जरामि अहं, मिज्जामि डुक्कमं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ ज्ञासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिज्जामि डुक्कमं तस्स ॥ ४ ॥ सामाडय पोसहसं, वियस्स जीवस्स जाइ जो कात्तो ॥ सो सफलो बोधबो, सेसो संसार फलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोड दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायार्थे करी मिज्जामि डुक्कमं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीठें पमिलेहण करे, इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकुं मुहराड पठे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति मृरिजीकी सामाचारीमें एमें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संख्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिठले पहोरे धर्मशास्त्रा प्रमार्जी वस्त्रादिक पन्तिलेहे, जो
अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपन्तिलेहण करे ॥ पाँठें गुरु आगें अथवा
थापनाचार्यजी आगें आवी जूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी
खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक
मुहपत्ती पन्तिलेहुं ? गुरु कहे पन्तिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमास-
मण देई मुहपत्ती पन्तिलेहे ॥ पाँठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥
सं० ॥ ज० ॥ सामायिक तंदिस्तां ? गुरु कहे तंदिस्तावेह ॥
फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठां ?
गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत
थई तीन नवकार गुणी कहे, इच्छकार जगवन् ! पसांठ
करी सामायिक दंरुक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥
पाँठें फेरमि जंत सामाज्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन
अनुज्ञापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥
इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहियं पन्तिकमामि ? गुरु कहे
पन्तिकमेह ॥ पाँठें इच्छं कही ॥ इच्छामि पन्तिकमिं ॥ इरियाव-
हियाए इत्यादि पाठसे इरियावहियं पन्तिकमी ॥ एक लोगस्तका
कांठस्तग करी, एमो अन्हिंताणं कही, कांठस्तग पारी मखें
प्रगट लोगस्त कही, नीचें वेठ कें मुहपत्ती पन्तिलेहि वांढणां देई
कहे, इच्छाकार जगवन् ! पसांठ करी पञ्चक्काण करावोजी, पाँठें
गुरु, दिवस्त चरिम पञ्चक्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावे थापनाचार्य
समंसे अथवा समुखें, अथवा वेमरा साधर्मा मुखें पञ्चके ॥ अने
जो तिनिहार उपवास कींभो हुवे, तो मुहपत्ती पन्तिलेहि पञ्चक्काण
करे ॥ वांढणां न देखे, अने जो चउषिहार उपवास हुवे, तो पञ्च-
क्काण करतुं वे नदी ॥ ते माटे मुहपत्ती नहि पन्तिलेहे ॥ ए
विस्तार विधि है ॥ पाँठें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज० ॥ सिद्धाय संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. पीठें इत्तं कही
 चली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय करुं ?
 गुरु कहे करेद ॥ पीठें इत्तं कही ॥ खमासमण देई ॥ उजो अको
 मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई
 ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेसणुं संदिस्तानं ? गुरु० संदिस्तावेह
 ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेसणुं ठाउं ?
 गुरु कहे, ठाएह ॥ पीठें इत्तं कही जो शीत कालादि हुवे तो
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पांगरणुं संदिस्तानं ?
 गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥
 ज० ॥ पांगरणुं पणिग्धानं ? गुरु कहे पणिग्धाएह ॥ पीठें इत्तं
 कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पणिक्कमण विधिलिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥
 धैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेद, पीठें इत्तं कही ॥ जय तिहुअण कहे
 ॥ जिसमें परकी तथा चउमासी तथा संवत्तरीके रोज तीस गाथा
 कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पढ़ेलेकी, और दोय गाथा
 पिठानीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.
 अथ जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धनं तरि, जय
 तिहुअण कल्लाणकोस हरिअकरि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-
 धियाण चुवणनय सामिअ, कुणनुनुदाउं जिणेस पास अंजणय
 पुरिअ ॥ १ ॥ तउं समरंत लदंति ऊनिवर पुत्त कल्लनदिं, धण सुवन्न
 हिराण पुएण जणजुंजदि रज्जदि ॥ पिम्भदि मुक्क अत्तंखमुक्क तुह
 पासपत्ताअण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क मुक्कदि कुण मदजिण ॥
 २ ॥ जरजऊर परिजुण वाणगुह मुकुणिण, चमुक्काणखणखुण

निरसद्विग्रहसूत्रिण ॥ तद् निण सरणरसाधणेण लहु हुंति पुणसंव,
जय धामंतरि पास मदवि तुहुं रोगदरो जव ॥ ३ ॥ विज्ञाजोडस
मंततंतसिद्धिं अपयत्तिण, नुवणपुत्र अठविद सिद्धिं सिद्धं तुद्
नामिण ॥ तुद् नामिण अपवित्तनवि जण दोइ पवित्तन, तं ति-
दुअण कल्लाणकोस तुद् पास निरुत्तन ॥ ४ ॥ खुद् पवत्तं मंत
तंत जंताइं विसुत्तइ, चरधिरगरलगहुगखगगरिन्नवगविगंजइ ॥
इत्थियसन्न अणत्त घत्त निगारइ दय करि, इरिअई हरत्त सुपासदेव
इरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुद् आणाथंजेइ नीमदप्पुळर सुरवर,
रक्तस जस्क फणिंद विंद चोरानलजलदर ॥ जलथलचारिन्नदखुद्
पमुजोडणि जोडअ, इपतिदुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ
॥ ६ ॥ पत्तिअ अत्त अणत्तदिठत्तत्तिप्रर निप्रर, रोमंवं चिअचारु-
काय किल्लरनरसुरवर ॥ जसुत्तेवदिं कमकमलजुअल परकात्तिअ
कलिमल्लु, सो नुवणत्तयतामि पास मदमदत्त रिन्नल्लु ॥ ७ ॥ जय
जोडअमणकमलत्तसलत्तय पंजरकुंजर, तिदुअणजण आणंदचंद
नुवणत्तयदिणयर ॥ जय मडभेइणि वारिवाइ जयजंतुपिआमद,
अंजणयत्तिअ पासनाइ नाइत्तणकुणमद ॥ ८ ॥ बहु विदवग्गुअवग्गु
सुग्गु वणित्त वण्णदि, मुक्कधम्मुकामत्तकाम नर नियनियसत्तदि ॥
जं ज्ञायइ बहु वरिसणत्त बहु नाम पत्तिवत्त, सो जोड अमण
कमलत्तसलसुद् पास पवत्त ॥ ९ ॥ जयविप्रत्त रणकणिरदसण
अरहत्तिअ सरीरय, तरत्तिअ नयणविस्साणुसुग्गुगगिरगिरकरुणय ॥
नईसदसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मदविद्धाविसत्तमड पाम
जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइंयामयिविअतंततिनपत्तनयविनिय,
वाइपवाइपवूदरुट्ठ इददाइनुपूत्तइय ॥ माणूदिमत्तसत्तण पुणअ-
प्पाणंसुरनर, इय तिदुअण आणंदचंद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥
तुद् कल्लाणमदेनुपंढंकारवपिल्लिय, वल्लमत्तमदत्तत्तनिसुरवग्गं-
जुल्लिय ॥ इत्तुप्फत्तिअ पवनयंति जयणेदिमदमव, इय तिदुअण

आणंदचंद्र जय पातसुहुप्रव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनिघ-
 रविदुरिअ तमपदयर, दंतिअ सबलपवठविठरिअ पद्माजर ॥ क-
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणदअगोयर, तिमिरइं निरुद्ध
 पातनाइ चुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त
 माणव मइ मेइणि, अवरारसरुहुमन्नवोइ कंदलदलइरेणि ॥ जायइ-
 फलजरजरिय इरिय डुइदाइ अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाइ
 दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवत्तिउत्तरि-
 यडुइवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डुग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुइ-
 जणएणतुल्लजंजणियदियावहु, रम्म धम्म सो जयत्त पास जय
 जंतु पिआमइ ॥ १५ ॥ जूवणारणनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,
 जोइणिपूअणत्तिवत्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ
 अविमंजुलचिठदिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासदिं
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नदयल, फलिणी
 कंदलदलतमाव निज्जुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संस-
 ग्गअगंजिअ, जय पञ्चस्कजिणेस पास अंजणय पुरविअ ॥ १७ ॥
 मइमणतरलपमाणेय वायाविविसंठलु, नियतणुगवि अविणचसहाव
 आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाइप्पपमाणदेव कारुणपवत्तउ, इयम-
 इमाअवदीरपासपालदिविलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकिप्पिन्नणेयकलु-
 णकिंकिंवन्नजंपिउ, किं वनचिठिउकिंवेवदीणयमत्रिलंघिउ ॥ का-
 सुनकियनिप्पल्लललुअत्तेदिंउदत्तं, तदविन पत्तउताण किंपि पइं
 पहु परिचत्तं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिइ तुहुं माय वप्प तुहुं
 मिनपियंकरु, तुहुं नइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु येमंकरु
 ॥ इउं डुइजरजारेअवरान राउलनिग्गगउ, लीणउ तुह कमक-
 मल मग्गजिणपालइ वंगउ ॥ २० ॥ पइंकिविक्कयनीरोप-
 लोपकिविपाविघमुहत्तय, किविमइंमंतमइंतकेवि किविमादियनि-
 यपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजत्तवयत्तिअ जूअय, मइं अवदी-

रहिकेणपास सरणागयवञ्चल ॥ ११ ॥ पञ्चुवयारनिरीहनाहनिप्पस
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुगनविमइं पासनिरं-
 जण ॥ १२ ॥ इत्तं बहुविहउहत्तगत्तुहुं उहनासणपरु, इत्तं
 सुयणहकरुणिकगण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ इत्तंजिण पासअसामि-
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन
 सोहिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग विजागनाहमहुजोअणतुहसम, जव-
 णुवयारसु दावजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंण नएइ
 नुविदाहुसमंतन, इय उहवंधव पासनाह मइं पाल शुणंतन ॥
 १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अस्सविकिविजुगय, जं जोइयउव-
 याऊकरइउवयारसमुजाय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिण-
 चत्तन, तो जुगनअहमेव पासपालहिमइं चंगन ॥ १५ ॥ अहअ-
 षविजुगयविसेसकिविमसहि दीणह, जं पासविउवयाऊकरइ
 तुहनाह समगह ॥ सुच्चिअकिल कट्ठाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह,
 किं अणुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पण्ण नहु
 होइ विहल जिणजाणन किं पुण, इत्तं उरिक्कन निरुसत्तचत्तउक्कहु
 उस्सुयमण ॥ तं मसुन निमिसेण एण एउविऊर लप्पइ, सच्चं जं
 नुरिकियवसेण किं उंवुरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह
 मइं अप्पपयासित्त, किज्जन जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहुं जंपित्त ॥
 अणु ए जिणजगुहसमोविदस्सिआदयासत्त, जइअवगिणसि
 तुंहिजअहहकिंहोइसहयासत्त ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ
 पाइणवेत्तंवित्त, तत्तजाणुंजिणपास तुम्ह इत्तंअंगीकरिअत्त ॥ इयम-
 हउच्चिअ जं न होइ सातुहउंहावण, रक्कंतह नियकित्तिणो य जु-
 ऊइअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूत्तत्त, जं
 अणत्तिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धत्त ॥ इय मइं पसि-
 चसुपासनाहअंजणयपुरिअ, इय मुणिवरसिरि अत्तयदेव विस्सवइ

आणिंदिय ॥ ६० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्थनाप्रस्त-
वनम् ॥

पीठे जय महायस कहे, तो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाजाग जय चित्तिय
मुद फलय ॥ जय समञ्च परमञ्जजाणय, जय जय गुरु गिरिम
गरु ॥ जय हुदत सत्ताण ताणय, थंजणयठिय पासजिण ॥ ज-
वियद ज्जीम जवन्नु, जव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जति संज
नमोन्नु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठे शक्रस्तव कद कें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं०
॥ करेमि काउस्तगं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नन्नु० ॥ इत्यादि पाठ
कद कें काउस्तगमांहे एक नवकार चितवी एक श्रावक काउ-
स्तग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, तो
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ
नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक खंठन, सात हाथ तनु
मान ॥ दिनदिन मुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. थरु दूसरे श्रावक सब काउ-
स्तगमें रहे थके सुने. पीठें एमो अरिहंताणं कह कें काउस्तग
पारे. इसीतरें थामें पण स्तुतिकी चारों गाथांमें जान लेनां.

॥ पीठें लोगस्त कद कर सबजेए अरिहंत चेइयाणं वंद-
णवत्ति० ॥ अन्नन्नु० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्तग करे.
पारि कें उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, तो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदिन पद अरविंद ॥ कामित जर
पूरण, अजिनय सुरतरु कंद ॥ जवियणनें नारे, प्रवदण सम नि-

शिदीस ॥ चौबीशे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीन ॥ यह दूसरी
गाथा कहि कैं कानुस्सग्ग पारे. पीठैं पुस्करवरदी० वंदणवत्तिआए०
अन्नबू० कहि कैं, एक नवकारका कानुस्सग्ग कर कैं, पारि कैं उक्त
स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, ज्ञाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने
गुणधा, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न
शकै एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥
यह गाथा कहि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नबू० ॥
कही कानुस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट घूरे,
पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोनी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंघे
गुण गण इम, श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन
स्तुतिः ॥ यह चौथी स्तुति कहि कैं बैठ कैं नमोन्नयणं कहे, पीठैं एक
खमासमण देई कैं श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. प ठैं
श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमण दे कर श्रीवर्त्तमान आ-
चार्यजीका नाम ले कैं मिश्र चौथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र
इसी तरें कह कर गोमालीयें बैठ कैं मस्तक नमावी सधस्सवि
वेवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्चामि पुक्कमं कहे, परंतु 'इ-
च्छाकारेण संदिस्सह इत्थं' ए पद न कहे ॥

॥ पीठैं खरुहे हो कर करेमि जंते सामाइयं० ॥ इच्चामि ठामि
कानुस्सग्गं जो मे देवत्तिउ० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि
कहि कैं, आठ नवकारका कानुस्सग्ग करे. कानुस्सग्गमाहि आजू रा
चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, एमो अरिहंताणं कही
कानुस्सग्ग पारि कैं प्रगट लोगस्त कहे ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जित पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेदेह. पीठें मुहपत्ती पमिलेदि कें वांदणां देवे. पीठें अवग्रहमांदिज उन्नो श्रको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोचं, ऐसा कहे. तव गुरु कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कहे कें अतिचार आलोवे. पीठें सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांभांने इच्छाकारेण संदिस्सइ पर्यंत कहे, तव गुरु पमिक्कमइ. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि उक्कमं कहि कें संभासा प्रमार्जित प्रमार्जित जूमियें आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं ऐसा कहे. तव गुरु कहे जणेइ. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंते जणीने इच्छामि पमिक्कमिजं जो मे देवसिजं इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खमा दो कर अघुठ्ठिमि आराइणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांदिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अघुठ्ठिमि अग्रिंतर देवसियं खामेजं ? गुरु कहे, खामेइ ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमार्जीयं बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीठें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयसिय उव-
 द्याय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि जंते सामाइयं इच्छामि
 तामि कान्त्सगं इत्यादि कही चारित्र गुणि निमित्तें करेमि कान्-
 स्सगं अन्नवृ० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका
 कान्त्सग करी पारि कें पीठें दर्शनगुणि निमित्तें प्रगट लोगस्स
 कही सवलोए अरिहंत चैवमाणं० ॥ वंदणवनि० अन्नवृ० ॥ कहि
 कें एक लोगस्सका कान्त्सग करी पारि कें ज्ञान गुणि निमित्तें
 पुम्भरवरदीवहे कहि कें सुयस्स जगवन्० ॥ वंदणवनि० ॥ अन्नवृ०

॥ कहि कैं एक लोगस्सका कानस्सग्ग करे, पीठैं पारि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कैं वेयावच्चगराणं न कहे, पीठैं सुयदेवयाए करेमि कानस्सग्गं अन्नबू० ॥ कही एक नवकारनो कानस्सग्ग करे, पीठैं गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक कानस्सग्ग पारिकैं एमो अर्हत्तिसिद्धा० कहि कैं श्रुत देवताकी स्तुति कहे, गुरु हुवे तो गुरु कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कैं कानस्सग्ग पारे, अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णाशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोज्जवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीठैं खित्तदेवयाए, करेमि कानस्सग्गं० ॥ अन्नबू० ॥ कहि कैं, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं।

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीठैं खमा हुवा एक नवकार कही, संरुसा प्रमार्जि उकमूवैठ कैं ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेदेह.

॥ पीठैं मुहपत्ती पमिलेही विधिजुं दो वांदशां देइ नैं वरकनक कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ नैं वरकणय संख विट्ठम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सवामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ नैं जवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वालीय ॥ जे केवि उठदेवा, ते सवे नवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पच्चस्काण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसठो पमिकमणां, वांदणां, कान-

स्सग, पञ्चस्काण, ठ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, उंगो अ धिको अक्षर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायार्थे करी मिहामि डुक्कं ॥ इहामो अणुसदिं० ॥ कही बैठे, पीठे गुरु एक स्तुति कहा पीठे श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें एमो खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो खमासमणाणं, कही संसारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा-
समोक्ताय, परोक्ताय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या,
ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं
संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्द्धितजंतुनिर्वृतिं, क-
रोतियो जैनमुखांबुदोक्ततः ॥ स शुक्रमासोज्ज्वलवृष्टि सन्निभो, ददातु
तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरज्जिगंधा लीढनृङ्गाकुरङ्गं,
मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या विज्जर्ति ॥ विकच कमलमूषैः साऽ
स्त्वर्चित्यप्रज्ञावा, सकलमुखविधात्री प्राणज्जाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीठे एमोऽणुं० कहे कें एक
श्रावक खमासमण देई कहे:-इह्याका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन
जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इह्या० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्त-
वनजणुं स्तवन सांजलुं ? गुरु कहे, जणोह सांजलेह. पीठे आसन
पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें बसो स्तवन कहे, सो लि-
खते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविका श्रीजिनविंज जुहारो, आतम परम आधारो रे
॥ ज० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कह्यें किम जाणे
 ॥ झूला तेह अज्ञानें जरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिठाणे रे ॥ ज०
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबर आवक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उष-
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि
 मजार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपर्णें
 अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मजार
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोमी, करिये केम अकाज रे
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठे ज्ञाता अंगें रे
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीथी
 चित्त फिर राखी ॥ द्रव्य जाव बिहुं जेवें कीनी, जीवाजिगम ते
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,
 कोइ झंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम
 घषो चित्त घरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु
 पास पसार्ये, सरथा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाज नुगुरु उपदेशें,
 श्रीजिमखंड्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंता-
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीवें तीन खमातमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु बांदी,
 अक्काडजेसु कदनां, फेर खमातमणे ॥ इच्छाकाण्ड ॥ सं० ॥ ज० ॥

देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं कान्तस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेइ.
पीठेँ इत्तं कहि केँ देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि कान्त-
स्सग्गं अन्नबू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कान्त-
स्सग्ग करे, पारी केँ लोगस्स कहे.

॥ पीठेँ खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-
होवइव नमावणत्तं करेमि कान्तस्सग्गं ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहा.
शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, पारि केँ
अगट लोगस्स कहे. पीठेँ खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्सात्तं फेर
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजे. पीठेँ खमा-
समण देई केँ ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवन्दन करुं जी ॥
ऐसा कह कर अंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवन्दन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवन्दन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-
अयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिजिर्जलैः शिव
फलं ल्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो-
चाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावद्धोशिरोमणिः ॥
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठेँ नमोवृणंसें लेकेँ जयवीरराय सुधी कहे ॥ पीठेँ
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि अंजणयद्विय पास सामिणो०'
इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयद्वियपाससामिणो ॥

॥ श्री अंजणयद्वियपाससामिणो सेस तिठसामीणं ॥ तिठ
समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सवेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणत्तं,
कान्तस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ जतीए गुण सुद्धिस्स, संघस्स समुन्नय
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंभुनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि' कान-
स्तगं ॥ पीठें खेदे हो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोग-
स्तका कानस्तग करि कें पीठें पारी प्रगट लोगस्त कही कें ॥
श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगम युगप्रधान नट्टारक दादाजी श्री
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि
कानस्तगं ॥ अन्नवू० कहि कें, एक लोगस्तका कानस्तग करे,
पीठें प्रगट लोगस्त कह कें

॥ श्रीखरतरगछ सिणगारहारजंगमयुग प्रधान नट्टारक दा-
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधवा निमित्तं
करेमि कानस्तगं ॥ अन्नवू० कहि कें एक लोगस्तका कानस्तग
करे. पीठें प्रगट लोगस्त कहि बैठ कें नावो गोमो नंचो करि कें
खमासमण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ न० ॥ चैत्यवंदन करुं जी.
ऐसे कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पम्पिन्नून्नूरण, डुज्जय मयण वाण मुसुमूरण
॥ सरस पिपंगु वन्नु गय गामिन्न, जयउ पास नुवणत्तय सामिन्न
॥ १ ॥ जसु तणु कंति कम्पसिणिद्ध, सोहइ फणमणि किरणा
जिद्ध ॥ नंनव जलहर तम्पिन्नय लंठिय, सो जिणु पासु पयडय
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमोष्ठिनः प्रतिदिनं
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठें नमुवूणसैं ले कें जयवीरराय^२ पर्थत कहि के पस्की,
चउम्मासी अरु संवठरीके रोज तो बनी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें ठोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितव-
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्ति-
समन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय
॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवन-
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह जूतपिशाच, शाकि-
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि
च संघस्य, जद्र कट्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु-
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ ज्ञानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि !
सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥
९ ॥ ज्ञानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-
ष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि !
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज
रोगरणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरैतिश्वापदादिज्यः ॥ १२
॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

उमिति नमो नमो ह्राँ, ह्रीं ह्रूं हः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाकर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शान्तिं नमतां,
नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-
विदर्शितः स्तवः शान्तेः ॥ सखिलादित्रय विनाशी, शान्त्यादिकरश्च
नक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा
यथायोग्यम् ॥ स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
उपसर्गाः कथं यांति, विद्यन्ते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,
पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण
कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठें चीराकका अथवा बीजलीका चांदणा पमा होय तो
इरियावहि० तस्मुत्तरी० अन्नहू० कहि कै, एक लोगस्तका कान-
स्तग करे, पंठें प्रगट लोगस्त कही पूर्वलो परें सामायिक पारे,
पीठें एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पन्तिकमण
विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥
कमले स्थिता जगवती, वृदातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-
दिगुणपुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु ज्युवनदेवी,
शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः
साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनी ॥
३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंमाजिधं
पार्थ, सदा ध्यायानि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवन्दनस्तुतिलिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेधो, डुरिततिमिरज्जानुः,
कल्पवृक्षोपमानः ॥ ज्वजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स ज्वतु
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनः ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनादुरितध्वंसी, वन्दनादिञ्चितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्
॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञक्त्या रुषज्ञं जिनोत्तमम् ॥
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन
वरण शरीर कांपि, अतिशय अन्निरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-
सेन, नरपति कलचंद ॥ मृगलंठन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंभित आण ॥ एक मने
आराधतां, लहिये कोमि कढ्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी
जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे
सुखकार ॥ गढ गिरनारे जिण लहुं ए, अमृत पद अन्निराम ॥
तास कमा कढ्याण मुनि, निशिदिन नमत कढ्याण ॥ ५ ॥ इति
धीनेमिनाथः

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नभिये मन रंग ॥ नील वरण
अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-
सुत सार ॥ श्रीगोमी पुर स्वामि नाम, जपिये निरधार ॥ त्रिजु-
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जनु वाण ॥ ध्यान धरंतां
एहतुं, प्रगटे परम कट्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा
मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिजुवन विख्यात
॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कट्याण
मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवसिक पम्किमी ॥ १ ॥
खमासमण देई देवसी आलोश्यं पम्किंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥
ज० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पम्किलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-
पत्ती, संवच्छरीये संवच्छरी मुहपत्ती पम्किलेहुं ? एम कहे. पीवें गुरु
कहे. पम्किलेहेह ॥ पीवें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती
पम्किलेही, वांदणां देई, तिहां पस्कीमें पस्को वड्कंतो ॥ चउमासी
पम्कि० ॥ चउमासीउ वड्कंतो संवच्छरीमें संवच्छरो वड्कंतो. एम
यथायोगे कहे ॥ पीवें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानके पा-
म्कि० ॥ चउमासिक सांवच्छरिक जणजो. ठीक जयणा करजो,
मधुर स्वरें पम्किनजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांसलमें
सायचेत रडेजो, पावें सघलाही तदत्ति कहे ॥ पीवें छगी ॥
इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ संवुद्धा खामणेशं ॥ अद्भुतिमि अग्नि-

तर पस्कियं ॥ ३ ॥ खामेजं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पीठें मस्तके
 अंजलि करतो थको, इहं खामेमि पस्कियं ॥ ३ ॥ कहो, गोमालीयें
 बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करो, मुहपत्ती
 मुखें देई ॥ पस्कियें पनरसहुं दिवसाणं पनरसहुं राईणं जं किंचि-
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउहुं मासाणं अ-
 ढहुं परकाणं वीसोत्तरसो राईदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि
 कहे. संवत्तरीयें डुवालसहुं मासाणं चउवीसहुं परकाणं तिन्निस्सय-
 सविराईदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवोरें गुरु
 पण मिच्छामि दुक्कमं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-
 खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवत्तरीयें सात साधुने खमावे ॥
 ॥ पीठें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ ज० ॥
 पस्कियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठें इहं आलोएमि, जो
 मे पस्किउ ॥ ३ ॥ अइयारोकल, इत्यादि मूत्र जणी ॥ संक्षेपे
 अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवत्तरी, अतिचार आलोवे, सो
 लिखते हैं ॥

॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३. तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, वादर,
 जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी
 मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अथ तदुभय, अष्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-
माहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान
हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव
वांदणे पडिक्कमणे सिध्दाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने
मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या,
भणीनें वोसायों, तपोधन तणे धर्में काजो अण ऊधरे दांडो अण-
पडिलेही, वसती अणसोधी, असिध्दाई अणोझा कालवेलामाहि
दर्शवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वहां पखें भण्यो
ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना दुई,
पग लागो थूंक लागो ओसोसे मूक्यो कनें छतां आहार नोहार
कोथो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीथो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो
विणसतो उवेख्यो, छती शक्ते सार संभाल न कीथी, ज्ञानवंत प्रतें
मछर व्ह्यो, अवज्ञा आशातना कीथी, कोई प्रतें भणतां गुणतां
प्रदेष मत्सर अंतराय अपवात कीथो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्वहणा
कोथी, कोई तोतडो वोवडो हस्यो, वितक्यो आपणा जाणपणा
तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषड्ड जिको अतिचार
पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवा होय, ते
सहु मन वचन कायाइं करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अनिचार ॥

॥ निम्संकिय निक्कंसिअ, निधित्तिगिअ अमृदुदिट्ठो अ ॥

उववृह धिरीकरणे, वज्जल पभावणे अट्ट ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे
विषे निःशंकपणो न कीथो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नही,

सबलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवो तणां मल-मलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावो, मिथ्यात्वोतणो पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधी. संवमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चितवी. संवमांहे थिरीक-रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं उदेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणो चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रते तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठवको लागो, मुखतणी बाफ लागी, ठवणारिय हाथयकी पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तोहिं ॥ एस चरित्तायारो, अष्टविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिस्केवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजलसंवाणपारिढावणोयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीये अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्म श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिद्धा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधी. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाडग हनुमंत इत्येवमादिक
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोंगे आ-
 तंके इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी
 भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र
 चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र
 शीख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली वलेव माहीपूनिम अँजो-
 पडिवो प्रेतवोज गोरत्रीज विणायगचाथ नागपांचम ब्रूलणाछठ
 शोलसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारम व-
 त्सवारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,
 जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां वर
 वाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान
 दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां
 थाण्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिछाः—धर्म-
 संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर
 विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धे शुद्ध भावे
 न पूज्या, न मान्या, महान्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,
 कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुआ मिथ्यात्वी तणी
 प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्राति माडो, दाक्षिणलगे तेहनो धर्म
 मान्यो ॥ श्रोसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमाहि
 सूक्ष्म, वादर, जाणतां अजाणतां हुआ होय, ते सहू मन, वचन,
 कायाइं करी मित्रामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विगमणव्रते पांच अनिचार. वह
 बंध छविणेण, अइभारे भक्तपाण बुझेण ॥ छिपद चउपद प्रते
 रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे
 पोल्या, निलोछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावरयुं, रूडे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झीलयां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दू-खव्यां, रूडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रसुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकें-द्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांड काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कीधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसा-त्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चितवो छो. इत्यादिक कळ्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या दोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पांच अतिचार ॥ तेना-
हडप्पन्गे. घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी,
दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संवल
दीधुं, संकेत कळुं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस
विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कोधा, खोटे तोल
मान माप व्होर्यां, दाणचोरी कोधो, साटे लांच लीधी, माता
पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहीनें लेखे
पलेखे भुलव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत
विषडओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोप मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरि-
ग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिबअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन,
इत्तरपरिगृहीतागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-
तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम
चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरघरणां कोधां,
कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी,
पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाप कीधो,
कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषां हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन खित्त
वहू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव
परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो,
माना पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण
लेई पळ्यो नहीं. पद्दी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे
परिमाण व्रतविषडओ० ॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परि-
माणे ॥ ऊर्द्धादिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियमः जे कोई अजाणे भागो, एक गमा संकोडी बीजी गमा
वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी
मोकली ॥ छठे दिग्ब्रत वि० ॥ ६ ॥ -

॥ सातमे भोगोपभोग : परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन
आशी पांच अतिचार अने करमहूती पन्नरे, एवं बीस अतिवार ॥
सञ्चितः पण्डिते, अपोल दुप्पोलय च आहारे सञ्चित तणे नियम
लीधे अधिक सञ्चित लीधुं, तथा सञ्चित मली वस्तु अपक्काहार
दुपक्काहार, तुष्यैषधि तणुं भक्षण कीधुं, होला उंची पहुंक काकडी
भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रसुख भक्षण कीधां ॥ सञ्चित दव्व
विगेई पाणहः तंबोलवडः कुसुमेसु ॥ वाहन सयण विलेवण,
बंम दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ ७ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या
संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या, बावीस अभक्ष, वत्तीस
अनंतकायमांहि आहुं मूला गाजर पींडालू, सूरण सैलरां काची
आंवली गोल्हां खायां, चोमासी प्रसुखमांहि वासी कठोलवी
रोटी खायां, त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, सधु महुडां माखण
माटी वेंगण पीलू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करडा बोल
वडां अणजाण्यां फल टीवहं अधाणुं आमणवोर काचुं मीहुं, तिल
खसखस काचां कोठिबेटां खायां, रात्रिभोजन कीधुं, लगवगती
वेलायें व्यालू कीधुं, दिवस उंचा विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मा-
दान इंगालिकम्मे, वेंगकम्मे, ताडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत
वाणिज्ये, लक्ष्म वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये,
जंत पीलणकम्मे, निछंछणकम्मे, दव्विदावणया, सर दह तलाव
सोराणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्मा, पांच
सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या,
धाणी चणा पक्वान्न करी वेच्या, वासी माखण तपीव्यां, अंगीठा

कीधा कगव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्या,
कृकडा खूडा प्रमुख पोष्या, अनेकं जे कांई बहु सावध कठोर
कर्मादिक सनाचर्यु ॥ सातसा भोगोयभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठसा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच आतिचार ॥ कं-
दप्पे कुलुइए० ॥ कदर्प लगे विटनी परं हास्य कुतूहल सुखादि अंग
कुचेष्टा कोधी, सूरखपणा लगे कुणहोने असंवद्ध वाक्य बोल्या.
खांडा कटारो दुर्गम कुडाडा रथ जखल सूसल अंगन घरटी आदिक
सज करी मेल्या, मास्यां आप्यां, कणक वस्तु दार लेवराव्यां, अ-
नेरो कांड पापोपदेश दीधो, अंबोल नाहण, दांतण, पर्गंधेअण
पाणी तेल अधिक आप्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा
भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त रौद्र ध्यान ध्यायां,
कर्करा वचन बोल्या, करडका सोब्या, संभेडा लाया, भेंसा सांड
कृकडा, पिठा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे
अदेवाई चिंतयो माटो सोडुं कण कपांसिया काजविण चांप्या,
मेह उपर वयठा, आले वनस्पति मृदो, छाम पाणो विस तेल
शुल आस्त्रवेतरस घेरजादिक तणां भाजन उघाडां मृक्यां, ते
गांढी कीडो कंधुआ माखो उंदर गिरोलो प्रमुख जोव विणटा, खूडा
प्रमुख जीव कीडा हने बांधी राख्या, दुर्गा निद्रा कीधी, रोग द्वेष
लगे पंडने जडि परिवार बांली एरुने मृत्युहाणि विमाप्ती आठसा
अनर्थ दंडव्रतदि० ॥

॥ नवसा नासाधिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणि-
हाणे सायाधिक लोभे मन आलट दोढट चिंतव्युं, वचन सावध
बोल्युं, काय अण पडिलेहं ह्ळाव्युं, छनी वेळाडे सायाधिक न
लोभे, नासाधिक लडे उगाडे मुख बोल्या, ऊंच आवी कधी, बीज
दीवा तणां उजाही लागी, कण कपांसोया माटो सोडुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तोयो संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं पारउं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल स्केवे ॥ नियमित भूमिकामांहिबाहिर थको कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपडिलेहुं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कहुं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वोकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निस्कवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा व्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी पराधुं कीधुं, विहरवा वेला ठलि गया असुर करी महातमा तेढ्या, मञ्जरलगे दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साध-
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नही ॥ वारमे अतिथि संविभाग व्रतविषड्यो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥
इहलोका संसप्पज्जे परलोगासंसप्पज्जे जीविआसंसप्पज्जे मरणा
संसप्पज्जे कामभोगासंसप्पज्जे इहलोक मनुष्यभव मान महत्त्व
लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछया.
परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव
वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी,
कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार वारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू
णोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छतो शक्त कीधुं
नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप
विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न
कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी
गंठसी मूठसी साष्टपोरसि पुरिमद्ध एकासणो वेआसणो नीवी
आंविल प्रमुख पञ्चस्काण पारवां वीसार्थी. वेसतां नवकार भण्यो
नही, उठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंविल उपवासादिक
तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषड्यो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ प्रायश्चितं विणओ० गुरुक्कनें मन सुद्धे
आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायश्चित तप लेखा शुद्ध पुद्-
चाड्युं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मो प्रते विनय साचव्यो नही: वा-
चना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्जाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुद्धध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त
लोगस दस बीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइयो ० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणसूहिय बलविरोओ,
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायवो वीरि-
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिकं
दानं शील तप भावना प्रमुख धर्म कृत्यतणे विषे मन वचन
कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रुढां पंचोङ्ग समोसमण न दीधो,
बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मसु ॥
वारस तवविस्सिअ तिगं, चउवीसं सय अइयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं
करणे ० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबांवीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबोज
भक्षण महाआरभे महापरिग्रहादिक कोधो, नित्यकृत्य देवपूजा
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कोधो, जीवाजीवादि वि-
चार सहहियो नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कोधी,
प्राणातिषोत १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-
तिरति १६, मायासृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८, ए अलारह
पापस्थानकसांहि जे कोइ कीधो कराव्यो अनुगोद्यो ॥ एवं प्रकारे
श्रावक धर्मे श्री सम्यक्तत्व मूल बारह व्रत चोवीसों सी अतिचार
सांहि जिहो कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म वादर जाणतां
अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायाये करो मिठामि दु-
कंड ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पठिँ गवस्तवि पस्किव ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्तद्
 पर्यंत कहे. तेचारे गुरु कहे. चउत्तेण पस्किमद्, चउमासे ठवेण
 पस्किमद्, संवत्तराये अठमेण पस्किमद्. इच्छं तस्म मिच्छामि दुक्कमं
 कही. द्वादशावत्तं वांदणा देवे. पठिँ इच्छाकारेण संदिस्तद् जगवन,
 देवसियं आलोडयं पस्किंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं. अणुष्ठुमि
 अप्पितरपस्कियं ॥ २ ॥ खामेऊं? गुरु कहे खाण ॥ पठिँ इच्छं खामेमि
 पस्कियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिच्छामि
 दुक्कमं देई खमादे, पठिँ वे वांदणां देई. जगवन! देवसियं आलोडयं
 पस्किंता पस्कियं ॥ ३ ॥ पस्किमावद्? गुरु कहे सम्मं पस्किमद्. पठिँ
 इच्छं कही करेमि जंतेयामाडयं ॥ इच्छामि वामि काउस्तग्गं जो मे पस्किउ
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी ० अन्नहूण ॥ कही ॥ काउस्तग्ग करे, गुरु,
 पार्यीमूत्र कहे, ते सांनले, अने गुरुशको जूदा पस्किमता हुवे, तो
 एक आवक खमासमण देई कहे. जगवन! मूत्र जणुं? गुरु कहे,
 जणेइ, एसो वचन मनमें धारी ॥ इच्छं कही, उत्तो अको, दाय जोमो
 मुइपत्ती सुखे देई, तीन नवकार कही, सधुर स्वरें मूत्रार्थ मनमें
 धितवतो वांदितु मूत्र गुणे. बीजा आवक करेमि जं ते ० हज मि
 वामे काउस्तग्ग तस्सुत्तरी ० अन्नहूण कही काउस्तग्गमें रखा
 सुणे. मूत्रप्राते एमो अ रेइंतर्ण कही. काउस्तग्ग पारी, उत्ता
 अजा तीन नवकार गुणो वेसे. पठिँ ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ संग्गि
 जं ते कही. इच्छामि पस्किमिउं जो मे पस्किउ ॥ ३ ॥ इत्यादि
 कही, वांदितु मूत्र गुणे, पस्किउं देवसियं तव ॥ एइने ठिकाणं
 पस्किजे पादकव, चउत्तमासियं संवत्तराये नव्वं कहे. पठिँ उज्जो, अणु-
 ठिजोमि आरादणाय इत्यादि पूर्ण जणी, खराममण देई उज्जा ०
 ॥ सं ० ॥ ज ० ॥ मूत्रगुण उतरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,
 काउस्तग्ग करं? गुरु कहे कोइ. पठिँ इच्छं कही, करेमि जंते

सामा० इष्टामि ठामि कान्तस्सग्गं तस्सु० अन्नबू० इत्यादि कही,
 पाखीयें वार लोगस्स चन्मासियें वीस लोगस्स संवत्तरीयें चालीस
 लोगस्सतो कान्तस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, कान्तस्सग्ग करी,
 पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्तो पमिलेही, बे वांदणां देई इष्टा०
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अप्पुठिओमि अप्पितर प-
 रिकियं ॥ ३ ॥ खामेज्जं ? गुरु कहे खामेह. पीठें इत्थं खामेमि पं-
 रिकियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वं कह्यो. तिम कहे, पीठें इष्टाका० ॥
 सं०॥ज०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर
 खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त
 खामणां खामेह. पीठें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं
 नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीठें गुरु कहे
 निष्ठारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इत्थं इष्टामि अप्पुठिं कही,
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आं-
 विल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें
 दैवसिक जणजो. एम चन्मासे ए सर्व दुगुणो कहणो, संवत्तरीयें
 त्रिगुणो कहणो. पीठें जिणें तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न
 कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीठें बे वांदणां देई, अप्पुठिओमि अ-
 प्पितर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीठें बे वांदणा देई. आय
 रिय उवप्पाए० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि दैवसिक
 पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्तस्सग्ग
 करी स्तुति कहे. पीठें जवण देवयाए करेमि कान्तस्सग्गं. इत्यादि
 विधे जवनदेवताको कान्तस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य डुरि-
 तान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो कान्तस्तग करे, तथातीने पर्वे वडा स्तवन
अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा
पङ्क्तिमणो पूरो हुवा पीठें एक श्रावक गुर्वाङ्गायें, नमोऽर्हस्ति-
द्वा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुखे, जिणने
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति
पाक्षिकादि तीन पङ्क्तिमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चखाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरें पञ्चखाण
करे ॥ उग्गए सूरें नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पञ्चखाइ चउविहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णवणान्नोगेणं सदसागारेणं
महत्तरागारेणं सबसमादिवत्तियागारेणं विगइउ पञ्चकाइ. अण्णवणा-
न्नोगेणं सदसागारेणं लेवालेवणं गिहिवसंसिठेणं उख्वत्तविवेगेणं
पमुच्चमस्सिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं तवत्तमादिवत्ति-
यागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चकाइ. अण्णवणान्नोगेणं
सदसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमादिवत्तियागारेणं वोस्तिरइ ॥
इति नवकारसी पञ्चकाण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उर
देसावगासिकका आगार न पञ्चके. तिकेवल नवकारसी आदिक
पञ्चकाण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरें नमुक्कार सहियं पञ्चकाइ ॥ चउविहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सद० वोस्तिरामि ॥ इति नव-
कारसी पञ्चकाण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोस्सी मुंठसी पञ्चकामि, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णवण० ॥ सदसा० ॥ पठण्णकालेणं दिसा
मोद्धणं ॥ साहुवयणेणं सब० विगइउ पञ्चकामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पञ्चस्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ पोरसीका पञ्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साढपोरसिं पञ्चस्काइ कहणां ॥ इति साढ पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें उग्गए पुरिमढं अवढं वा पञ्चस्काइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० ॥ सह० ॥ पढ० ॥ दिसा-
मो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउ पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढ० दिसा० साहु० सब० एकासणं विआसणं वा पञ्चस्काइ, उविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं आ-
उट्ठणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसण पञ्चस्काण ॥ आ० ॥ ८ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पढसका० दिसा० साहु० सब० एकासणं एगठाणं पञ्चस्काइ, उविहं तिविहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं गुरु-
अप्पुठाणेणं पारिठाव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस्स० सह० पढ० दिसामो० साहु० सब० आयेंविलं पञ्चस्काइ, अस्सठ० सह० लेवालेवेणं गि-
हउसंसिठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठा० मह० सब० एकासणं प-
ञ्चस्काइ, तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह०

सागारिआगारेणं आउट्टणपमारेणं गुरुअप्पुवाणेणं पारिवा० मद्द०
सव्व० वोत्तिरइ ॥ ६ ॥ इति आंविअ पच्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पच्चस्खाड. उग्गए सूरे चउव्विहंपि
आहारं अत्तणं पाणं खाडमं साडमं अत्ता० सह० पत्त० दिसा०
साहु० सव्व० ॥ निव्विगडयं पच्चस्खामि, अत्ता० सह० लेवालेवेणं
गिहत्तसंसिठेणं उखिखत्तविवेगेणं पमुच्चमखिएणं पारि० मद्द० सव्व०
एकासणं पच्चस्खाड. ति विहंपि आहारं अत्तणं खाडमं साडमं अत्ता०
सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मद्द० सव्व० देसावगासियं
जोगपरिजोगं पच्चस्खामि, अत्ता० सह० मद्द० सव्व० वोत्तिरामि
॥ इति नीवी पच्चस्खाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरे उग्गए अप्रत्तठं पच्चस्खामि, चउव्विहंपि आहारं अत्तणं
पाणं खाडमं साडमं अत्ता० सह० मद्द० सव्व० देसावगासियं
जोगपरिजोगं पच्चस्खामि, अत्ता० सह० म० सव्व० वोत्तिरामि ॥
इति चउव्विहार उपवास पच्चस्खाण ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अप्रत्तठं पच्चस्खामि, ति विहंपि आहारं अत्तणं
खाडमं साडमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साह पोरसिं पुरिमद्द
अवद्धं वा पच्चस्खाड अत्ता० सह० पत्त० दिसा० साहु० सव्व
देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चस्खामि, अ० स० म० सव्व० वो-
त्तिरामि ॥ इति ति विहार उपवास पच्चस्खाण ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं पुरिमद्दं अवद्धं वा पच्चस्खामि, उग्गए
सूरे चउव्विहंपि आहारं अत्तणं पाणं खाडमं साडमं अ० सह०
पत्त० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगवाणं दत्तियं पच्चस्खामि,
ति विहं चउव्विहंपि आहारं अत्तणं पाणं खाडमं साडमं अत्ता० सह०
सागा० गुरु० मद्द० सव्व० विगडयं पच्चस्खामि, इत्यादि पूर्ववत्,
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चस्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ, चनुव्विहंपि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिव-
सचरिम पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं
अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरामि, देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति
दिवसचरिम डुविहार पञ्चख्वाण ॥ ११ ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चख्वामि अन्न० सह० मह०
सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ १२ ॥

॥ जवचरिमं पञ्चख्वाइ तिविहंपि चनुव्विहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति जवचरिम पञ्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अ-
ज्जिग्रह पञ्चख्वाणकेजी ए चार आगार, अन्न० सह० मह० सव्व०
वोसिरइ ॥ पांचमो चोदपट्टागारेणं सो साधुको होय ॥ इति अ-
ज्जिग्रह पञ्चख्वाण ॥

॥ अहसां जंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि
दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तणं देसावगासियं खित्तत्तणं उव्व
वा अणत्तवा कालत्तणं मुहुत्तधारणाप्रमाणे जावनियमं पञ्चख्वामि
जावत्तणं जावगहेणं न गहिज्जामि ठलेणं न ठलिज्जामि अस्सेण-
केवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पन्निवज्जइ ता अज्जिग्रह
अस्सत्तणाज्जेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया-
गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चस्काण करे, तव देसावगासी नही पञ्चस्के.
अरु तिविहार उपवासमें आंविळमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें
पाणस्सकाठ आगार पञ्चस्के सो दिखावे हैं, पाणस्स लेवामेण वा

अलेवामेण वा अणेण वा बहुलेण वा ससिञ्जेण वा अस्तिञ्जेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार उच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरमिठ्ठे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्तन्न, अठेवय आ-
यंवलंमि आगारा ॥ पंच वयन्नाठे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥
पंच चउरो अज्जिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-
चउ, इवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सद्धियं पञ्चखाण चउविहंपि आहारं ॥
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाण. शिष्य कहे पञ्चखाणमि. पञ्चखाणका
अर्थ सब जगे अंगीकार बांची जाणना. जेसैं सूरज उदय हुआ
पीठे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पाकूं नहीं तहां
तक चउवि० ज्यारोही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो
ज्यार प्रकारका आहार इस मुजब दे. असन कहते अन्न, चावल,
गहूं, मूंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जवकूं आदि
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लहू वगेरे सब
तरेका पकवान सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राव
घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सृफ लूण सेंधवादिक
इत्यादिक सब अस्सणमांहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आन्न
जबोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कदने सब अप्प-
काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखर्मा नाखेर गज्जर द्राग्व सेक्या
अनाज आंवा केला काकनी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब
जातका मेवा सब जातका फल खाइम जाणना ॥३॥ ताइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरमे बहेना आंवडा तुलसी कसेला
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायचो लोंग वायविमंग अजमा
 अजमोद कुल्लिजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया
 कुंजटिआ पांसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजर वावची वांवल-
 ढाल धवढालि खेजमेकीढालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु
 जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीढालि जर
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीढालि चंदन-
 कीराख रोहिणीकीढालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया
 चिरमी कयर बोरकीजर इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब ठो-
 रणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पञ्चखाणका अर्थ जाणे
 विगर जो पञ्चखाण करे सो अंधा पञ्चखाणहे इस वास्ते संक्षेप
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पञ्चखाणमें जितना आगार
 होय सो रखकर हमारे पञ्चखाणहे, अन्नघणान्नोगेण कहिये अना-
 न्नोग टालके किया जो पञ्चखाण, अत्यंत जूल जाणेंसें कोइजी
 चीज जूलके मुंमे मालली होय लेकिन जाणे बाद तत्काल नसी
 वखत पीठा नाख देवें तो पञ्चखाणमें जंग नही. जर जाणे बाद
 जकण करे तो पञ्चखाण निश्चे जंग होय ॥१॥ पञ्चन्नकालेण कहते
 कालकी प्रवृत्तता. आकाशमें गर्द ऊरनी होय आकाशमें बदल
 ढाये होय तेसेइ पहानकीउंट आजावे सूरज नही दीखे तब ज-
 रमसुं पञ्चखाणका वखत पूरा हुदा जाणकर न्नोजन करे तो व्रत
 जंग नही ॥२॥ दिसामोहेण कहतां दिसा जूलकर पूरबकूं पश्चिम
 जाणकर पञ्चखाणका काल पूरा हुये विगर न्नोजन कर लेवे तो
 व्रत जंग नही ॥३॥ सदस्सागारेण कहतां सदसात्कार बहोत उताव
 लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका ठीठा

मूंमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साधूव्रणैणं कहतां साधूके
 वचनसैं उग्यामा पोरसीआदिक जरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका
 काल पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सव
 समादिवत्तियागारेणं कहतां पञ्चस्काणका काल पूरा होणैसैं पदलो
 अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी श्रिता रहे
 नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उगका रोग मिटाणे वास्ते ओपधादिक
 पण्य देवे वा आप लेवे तो पञ्चस्काण जंग नही ६ मदतरागारेणं
 कहतां पञ्चस्काणसैं जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासैं ज्यादा
 निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसैं वण नही आवे एसा जो चैत्य
 संधादिकका प्रयोजन होणैसैं पञ्चस्काणका काल पूरण जये विगर
 ही जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां
 गृहस्थ देखतां साधू जोजन करे नही एसी जिनराजकी आक्षा
 हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर जोजन
 करणे बेगदे उस देखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब
 साधू उस ठिकाणैसैं उठकर उर ठिकाणे जाकर जोजन करे तो
 व्रत जंग नही उर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुषकी
 निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणैसैं एकासणेवाला उठकर उर
 ठिकाणे जाकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आउट्टणपसारैणं
 कहतां पग प्रमुख एकठा करणसैं अथवा पसारणैसैं घोमासा आसन
 चल जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अष्टुगणेणं कहतां आपका गुरु
 आणैसैं तथा आपमें कोइ ब्रमा पुरुष आणैसैं विनयके वास्त जोजन
 पगतां एराजनादिकमें आसन घोम खमा हो जाये तो जोजन
 नही ॥ १० ॥ पारिधावणियागारेणं कहतां नव पञ्चस्काणमें यह आगार
 साधुकाहे, जिस आहारके परणैसैं बहुत जीवकी विगधना होती
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परणे मन मग्न आहार हे नव

ए परिगदससाए पम्किमामि चउहिं विगहाहिं इच्छिकहाए जत्त-
 कदाए देसकदाए रायकदाए पम्किमामि चउहिं जाणेहिं अट्टेणं
 जाणेणं रुदेणंजाणेणं धम्मेणंजाणेणं सुक्केणंजाणेणं पम्किमामि
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव-
 णीआए पाणायवायकिरियाए पम्किमामि पंचहिं कामगुणेहिं
 सदेणं रुवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पम्किमामि पंचहिं महव्वएहिं
 पाणाइवायानुविरमणं मुसावायानुवेरमणं अदिन्नादाणानुवेरमणं
 मेहुणानुवेरमणं परिगदानुवेरमणं पम्किमामि पंचहिं समिईहिं
 इरिआसमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिईए आयाणज्जन्मत्तनि
 खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेवजल्लसंघाणपारिठावणियासमि-
 ईए पम्किमामि ठहिं जीविकाएहिं पुढाविकाएणं आउकाएणं
 तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पम्किमामि
 ठहिं लेसाहिं किन्दलेसाए नीललेसाए कानुलेसाए तेउलेसाए प-
 उमलेसाए सुकलेसाए पम्किमामि सत्तहिं जयठाणेहिं अठहिं म-
 यठाणेहिं नवहिं वंजचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं
 उवात्तगपम्माहिं वारसहिं जिस्कुपम्माहिं तेरसहिं किरियाठा-
 णेहिं चउदासहिं जूयगामेहिं पसरसहिं परमाइम्मिण्हिं सोलसएहिं
 गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अवंजे इगुणवीसाए ना-
 यच्चयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगरुज्जयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी-
 साए ज्ञावणाहिं ठठवीसाए दसाकप्पववहाराणं उदेसणकालेणं सत्ता-
 वीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयापकप्पेहिं एगुणतीसाए
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं
 वत्तीसाए जोगसंगहेहिं तितीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय-
 णाए सिद्धासंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवव्यायाणंआ-

सावणाए माहूणंआ० साहूणींआ० साववाणंआ० सावियाणंआ० दे
 वाणंआसाय० देवीणंआ० इल्लोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलपन्न-
 तस्सधम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणञ्चअजी-
 वसत्ताणंआ० कालस्सआ० मुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा
 ग्गिअस्सआ० जंवाइं वच्चाभेलिअं हीनस्करिअं अच्चस्करिअं पयदीणं
 त्रिणयहीणं जोगहीणं घोसदीणं सुठुदिअं, डुठुपन्निअं अकालेक-
 उल्लज्जानं कालेनकल्लसज्जानं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-
 इयं तस्स मिअमि डुक्कमं एमो चउवीसाए तित्थयराणं उसज्जाइ-
 माहावीरपक्कवसाणाणं इएमेव निग्गंयं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-
 वलियं पन्निपुणं नेआजयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं
 निज्जाणमग्गं निव्वागमग्गं अवितहमविसंवि सव्वडुक्कपदीणमग्गं
 इत्थविथार्जवा सिद्धंति बुद्धंति मुच्चंति परिनिवायंति सव्वडुक्कवाण-
 मंतंकरंति तंधम्मं सदहामि पत्तियामि रोएमि फामेमि पालेमि अ-
 णुपालेमि तंधम्मं सदहंतो पत्तिअंतो रोयंतो फासंतो पालितो अणु-
 पालितो तस्स धम्मस्स केवलपन्नतस्स अणुठ्ठमि थाराइणाए
 विरअमि विराइणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि
 अवेजं परिआणामि वंजंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं
 उवसंपज्जामि अच्चाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिअत्तं परिआणामि सम्मत्तं
 उवसंपज्जामि अओहिं परिआणामि ओहिं उवसंपज्जामि अमग्गं प-
 रिआणामि मग्गं उवसंपज्जामि जं संजयामि जं च न संजयामि जं
 पक्कमामि जं च न पक्कमामि तस्स सव्वस्स देवतिअस्स
 अइयारस्स पक्कमामि समणोद्धं संजय विरय पन्निइय पच्चस्साय
 पावकम्मं अनियाणो दिवितंपन्नो मायामोत्तविक्कित्ठ अट्ठाइल्लेनु
 वीवत्तमुहेनु पन्नरसकम्मज्जमीसु ॥ जावंतिकेविमाहू, रपहरणगुह

परिगहधारा ॥ पंचमहव्यधारा, अघार सहस्त सीलंगधारा ॥
 अरुखयाथार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥
 स्वामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मिति मे सव्व जूएसु,
 वेरं मच्चं नेकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय डुगंछियं
 सम्मं ॥ तिविहेण पक्कंतो, वंदामि जिणेचउव्वीसं ॥ २ ॥ इतिश्री
 साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ परस्वी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिबंकरे अतिवे, अतिवसिद्धेय तिबसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-
 णेरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर,
 मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-
 भिउहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥
 खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मदवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं
 करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवडिउतं, महव्वय उ-
 च्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वानं पाणाइ-
 वायाओं वेरमणं सव्वानं मूसावायानं वेरमणं सव्वानं अदिन्नादाणानं
 वेरमणं सव्वानं मेहुणानं वेरमणं सव्वानं परिगहानं वेरमणं सव्वानं-
 राइभोयणानं वेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायास-
 देरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चकामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा
 पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु
 जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि
 से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वनं खित्तनं कालनं
 भावनं दव्वनं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तनं पाणा

इवाण सयललोण काल्लुण पाणाइवाण दियावा राउवा भावउण
 पाणाइवाण रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लि
 पन्नत्तस्स अहिंसा लखणस्स सच्चहिडियस्स विणयमूलस्स खती-
 पहाणस्स अदिरप्पसोवणियस्स उवमयप्पभवस्स नव वंभचेरुत्तस्स
 अप्पयमाणस्स भिखावित्तियस्स कुण्डीसंवल्लस्स निरग्गिस्सणस्स
 संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-
 त्तोलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिंसंचयस्स अविस्वाइयस्स
 संसारपारगामियस्स निघाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्ताण
 याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाणं रा-
 गदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-
 गरुयाए चउक्खसाउवगाणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
 सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाड-
 वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुत्ताउ तं निंदामि ग-
 रिहामि तिव्विहं तिव्विहेणं मणेणं वायाए काएणं अड्यं निंदामि प-
 ड्डपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावजीवाए अणिसिउहिं नेव
 सयंपाणे अडवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अडवायाविज्जा पाणे अडवा-
 यंतोवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं गिद्धसख्खियं
 साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवड भिक्ख्वा भिक्खू-
 णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा
 परिभागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस्स खल्लु पाणाइवायम्मवेग्गमणे
 हिण्णुहे ल्लमेनिस्सेगिण्ण आणुगामिण्ण पारगामिण्ण संघेमि पाणाणं
 सव्वंमिं भूवाणं संघेमि जीवाणं संघेमि मत्ताणं अहुक्कणयाए अ-
 सोयजयाए अजरणयाए अतिप्पणयाए अर्पाडणयाए अपरियाव-
 णियाए अणुद्वणयाए मट्ठे महागुणे महाणुभावे महापुग्गिण्णु-
 चित्रे परमरिसिंदसिण्ण पराउ तं दुक्कक्कयाए कम्मक्कयाए मोहक्क

पद्मिगहधारा ॥ पंचमहव्यधारा, अघार सहस्स सीलंगधारा ॥
 अरुखयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥
 खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व जूएसु,
 वेरं मच्चं नेकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय डुगंछियं
 सम्मं ॥ तिविहेण पक्कितो, वंदामि जिणेचउवोसं ॥ २ ॥ इतिश्रो
 साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पख्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिठंकरे अतिठे, अतिठसिद्धेय तिठसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-
 णेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर,
 मंविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-
 भिसुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥
 खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं
 करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवडिउतं, महव्वय उ-
 च्चारणं क्काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वान् पाणाइ-
 वायाओं वेरमणं सव्वान् सूसावायान् वेरमणं सव्वान् अदिन्नादाणान्
 वेरमणं सव्वान् मेहु गाउं वेरमणं सव्वान् परिग्गहान् वेरमणं सव्वान्-
 राइभोयणान् वेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउ-
 देरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पंचस्कामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा
 पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं
 मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणु
 जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि
 से पाणाइवायाए चउव्वहे पन्नते तंजहा दव्वन् खित्तन् कालन्
 भावन् दव्वन्णं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तन्णं पाणा

द्वाण सयल्लोण कालञ्जणं पाणाद्वाण दयावा राउवा भावञ्जणं
 पाणाद्वाण रागेण वा दोसेण वा जंपियमण इदस्स धम्मस्स केवल्लि
 पञ्चत्तस्स अहिंसा लखणम्म सच्चहिष्ठियस्स विणयमूलस्स खती-
 पद्धानस्स अहिरणसोवणियस्स उवमसप्पभवस्स नव वंभचेर गुत्तस्स
 अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुख्खीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स
 संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निष्ठियारस्स निव्वि-
 त्तोलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स
 संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाण
 याण असवणयाण अवोहिण् अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-
 गदोस पडिवद्धयाण वालयाण मोहयाण मंदयाण किड्डयाण तिगारव-
 गरुयाण चउक्कसाउवगण्णं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाण साया-
 मोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाड-
 वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुत्ताउ तं निंदामि ग-
 रिदामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाण क्काण्णं अडयं निंदामि प-
 ड्डपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाड्वायं जावज्जीवाण् अणिस्सिउहिं नेव
 सयंपाणं अड्वाएज्जा नेवत्तेहि पाणे अड्वायाविज्जा पाणे अड्वा-
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजद्वा अग्निंतसखिसयं गिळ्ळसखिसयं
 साहुसग्गियं देवमग्गियं अप्पसग्गियं एवं हवड भिक्खूवा भिक्खू-
 णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दयावा राउवा ण्णोवा
 परिसागट्ठवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस सल्लु पाणाड्वायम्मव्वरमणे
 दिण्णुडं सवेनिस्सेयिण् आणुगामिण् पारुगामिण् मवेमि पाणाणं
 सव्वेमिं भूयणं मवेमिं जोवाणं सवेमिं सत्ताणं अहुस्सकणयाण् अ-
 योउजयाण् अजुरणयाण् अतिप्पणयाण् अपीडणयाण् अपरियाव-
 पियाण् अणुद्वणयाण् मट्ठे मट्ठाणुणे मट्ठाणुभावे मट्ठाणुसिण्णु-
 चित्ते पग्गमसिंदेसिण् पनवे नें दुक्कम्कयाण् कम्मक्कयाण् मोहक्क

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिद्धट्टु उवसंपज्जिणाणं विहरामि
 पढमे भंते महव्वए उवट्ठिज्जमि सव्वाच्च पाणाइवायाञ्चवेरमणं ॥ १॥
 अहावरेदोच्चेभंते महव्वए सुसावायाञ्चवेरमणं सव्वं भंते सुसावायं
 पच्चस्सामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं सुसंवाइच्चा
 नेवन्नेहिं सुसंवायाविच्चा सुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-
 रोमि न कारवेमि करंतपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं बोसिरामि से सुरावाए चउ-
 विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वञ्च खित्तञ्च कालञ्च भावञ्च दव्वञ्चणं मुसा-
 वाए सव्वदव्वेसु खित्तञ्चणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालञ्चणं
 मुसावाए दियावा राञ्चवा भावओणं मुसावाए रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसाळ्ळ-
 णस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभवेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्का-
 वित्तियस्स कुस्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदो-
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलस्सणस्स पंचमहव्व-
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स
 निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ-
 बोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए
 बालाए मोहयाए मंदयाए किक्कयाए तिगारवगरूयाए चउक्कसान्वग-
 णं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहं
 वामवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसादाओ भासिओवा भासाविओवा
 भासिज्जंतो वा पेरेहिं समणुत्ताओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि-
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवेरमि अणागयं
 पच्चस्सामि सव्वं सुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिठ्ठिं नेवसयं सुसंवाइ-

व्या नेवलेहिं मुमंवायाविद्या मुमंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखिखयं साहससखियं देवसखियं अप्ससखियं
 एवं इवइ भिरुवृवा भिरुवृगोवा मंजयवेरयपाडिइय पच्चखवाय पा-
 वकम्मं दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा
 एस खलु मुसावायस्सवेरमणे दिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए
 पारणामिए सव्वेसि पाणाणं सव्वेसि भूयाणं सव्वेसि जीवाणं स-
 व्वेसि मत्ताणं अतुरत्तणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-
 याए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए मइठे महागुणे
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसठे तं दुग्गखयाए
 कम्मखयाए मोठखयाए वोढिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-
 संपज्जत्ताणं विहरामि दोञ्जे भंते महव्वए उवठ्ठिउमि सव्वानं मुसा-
 वायाओधेरमणं २ अहावोरे तञ्जे भंते महव्वए अदिन्नादाणान्नेरमणं
 सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चखयामि सेगामेवा नगरेवा रत्नेवा अप्पंवा
 बहुंया अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवनयं अदिन्नं
 गिण्हिजा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हविजा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-
 समणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काण्णं
 न करेगि न कारवाम करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावजीवाए
 तस्स भंते पट्टिक्कामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वांसिगाम मे
 खादिन्नादाणे खट्ठिविहे पन्नते तंजहा दव्वओ सित्तओ कालओ भा-
 वओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्धारणिच्चेलु दव्वेलु भित्तओणं
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्नेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा
 गवाया भावओणं अदिन्नादाणे रामेणवा दोमे गवा जंपियमण इ-
 म्मस्स वम्मस्स केवल्लपन्नत्तस्स अट्ठिताल्लण्णस्स मत्तादिट्ठियस्स वि-
 णवगुल्लस्स मंनिपहाणस्स अट्ठिन्नसुवन्नियस्स उवममपभवस्स
 नवपंभवैरुत्तस्स अणयमाणस्स भिन्नाविनिदस्स कुल्लधीमंवल्लस्स

निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-
 विव्वारस्स निव्वित्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि-
 यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं
 अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए
 मंदयाए किडुयाए तिगारवगरुयाए चउल्लसान्नवगएणं पंचेदियवसट्टेणं
 पडिपुन्नभारियाए सायासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा धिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना
 ओ तं निदामि गरिहामि तिव्हिहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अ
 इयं निदामि पडुप्पन्नसंबरेमि अणागयं पच्चस्काप्पि सव्वं अदिन्नादा
 णं जावज्जोवाए अणिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं
 अदिन्नं गिन्नाविच्चा अदिन्नं गिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणाप्पि तंजहा
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं
 एवं हवइ भिखूवा भिख्खुणीवा संजयदिरय पडिहयपच्चस्काय पाव
 कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिण्सुहे खमे निस्सेसिए आ
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं
 जोवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणयाय
 अतिप्पणयाय अपोडणाय अपरियावणियाय अणुहवणयाय महत्थे
 महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तं
 दुस्सक्कयाय कम्मस्सक्कयाय मोहस्सक्कयाय वोहिलाभाय संसारुत्तारणाय
 त्तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अण्णुट्ठिओमि स-
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सव्वं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वा मा-
 णुसंवा तिरिख्खजोगियंवा नेवसयं मेहुणंसेविच्चा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेदुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारखेमि करंतंपि अ-
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिकमामि निंदामि गरिहामि ।
 अप्पाणं वोसिरामि से मेदुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ
 कालओ भावओ दव्वओणं मेदुणे रुवेसुवा रुवसहगएसुवा खित्त-
 ओणं मेदुणे उट्ठलोएवा अशोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-
 दुणे दियावा राओवा भावओणं मेदुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-
 यमए डमस्स धम्मस्स केवालिपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-
 हिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिस्सन्तोवन्नियस्स उव-
 समप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखावित्तियस्स
 कुखलीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपखालियस्स चत्तदोमस्स गुण-
 गाहियस्स निव्वत्तीलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिडिसंचिय-
 स्स अविस्वाड्यस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपञ्चावसाण-
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अ-
 भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्वयाए वालयाए मोहयाए मंद-
 याए किहयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगाएणं पंचेदियवसट्ठेणं
 पडिपुन्नभारियाए सायासोखलमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा
 भवग्गहणेषु मेदुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहि समणु-
 न्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का-
 एणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरोमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वंमेदुणं
 जावज्जीवाए अणिस्मिओहं नेवसयंसेदुणंसेविद्या नेवन्नेहिमेदुणंसे-
 वाविजा मेदुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखिस्स-
 यं सिद्धसखिस्सयं साहुसखिस्सयं देवसखिस्सयं अप्पसखिस्सयं प्वं हव-
 इभिरुव्वा भिरुवुर्गीवा संजयविरयपडिहवपच्चस्सायपानकम्मं दि-
 यावा राओवा एगओवा परिमागओवा सुनेवा जागग्माणेवा

एसखलुमेढुणस्सवेरमणे हिंसुहे खमे निस्सेसिए आगुगामिए पार-
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजोवाणं सव्वेसिं-
 सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए
 अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्वणयाए महत्ते महागुणे
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्ते तंदुख्खखयाए
 कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टुउव-
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ-
 भेढुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं
 सव्वं भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पंवा वट्ठंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं, परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं
 परिगिण्हविच्चा परिग्गहंपरिगिन्नंतंवि अन्नेनसमणुजाणामि जा-
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकार-
 वेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते
 तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचि-
 त्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे
 अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स
 केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगु-
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्ख्वावित्तियस्स कुल्लवीसंवलस्स निरिग्गि-
 सरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स
 निव्वित्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयनुत्तस्स अविसंवाइयस्स संसारपा-
 र्गामियस्स निवाण गमण पञ्चवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए अस-
 वणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किन्हयाए तिगारव-
 गरुयाए चउकसानवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-
 सोरुमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-
 हिंनवा गाहाविनवा विप्पंतोवा परोहिंसमणुन्नानं तंनिंदामि गरि-
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-
 न्नंसंवरेषि अणागयंपच्चत्कामि सबंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-
 न्हिं नेवसयंपरिगिण्हिजा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविद्धा परिग्गहं-
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखियं सिद्ध-
 सखियं साहुसखियं देवसखियं अप्पसखियं एवंहवइभिख्खूवा भि-
 ख्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चकाय पावकम्मे दियावा रान्वा
 एगन्वा परिसागन्वा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-
 वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं
 पाणाणं सबेसिंभूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं अदुरुखणयाए
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
 णियाए अणुद्वणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने
 परमरिसिदेसियपसत्ते तंदुस्सककयाए कम्मस्सकयाए वोहिलाभाए सं-
 सारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए
 उवठ्ठिन्मि सबानंपरिग्गहान्वेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-
 इभोयणान्वेरमणं सबं भंते राइभोयणं पच्चत्कामि सेअसणंवा पाणंवा
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइभुंजिजा नेवन्नेहिंराइभुंजाविद्धा राइभुं-
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं
 वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि
 तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राइ-
 भोयणे चउविहेपसत्ते तंजहा दव्वन् खित्तन् कालन् भावन् दव्वन्णं
 राइभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तन्णं राइभोयणे

समयस्वित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभो-
 यणे तिच्चेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालस्क-
 णस्स सच्चाहिष्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरत्तसोवन्नि-
 यस्स उवत्तमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्कावि-
 त्तियस्स कुक्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदोसस्स
 गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलस्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स
 असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-
 गमणपञ्चवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अ-
 णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए
 मोहयाए मंदयाए किद्धयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं
 पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा
 भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुज्जंतंवा
 परेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-
 याए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चस्कामि
 सव्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणित्सिओहं नेवसयं राईभु-
 जिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंजंतेवि अन्नंसमणुजाणाभि-
 तंजहा अरिहंतसत्तिकयं सिद्धसत्त्खियं साहुसत्तिकयं देवसत्तिकयं
 अप्पसत्तिकयं एवंहवइभिस्खूवा, भिस्खुणीवा संजयविरय पडिहय
 पच्चस्कायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा
 सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे-
 निस्सेसिए आणुगाभिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं-
 भूबाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुस्कणयाए असोयणयाए
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु-
 द्वणयाए महत्तेमहागुणे महाणुभावे महापुरिमाणुचिन्ने परमरिसि-

देसिप्पसत्थे तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए वोहिलाभाए
 संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छठ्ठे भंते महव्वए
 उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चैइयाइं पंच-
 महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपज्जित्ताणंविह-
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाडवायस्सवेरमणे
 एसबुत्ते अडक्कमे ॥ १ ॥ तिक्वरागायजाभासा तिक्वदोसातहेवय
 मुसावायस्सवेरमणे एसबुत्तेअडक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-
 दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसबुत्ते अडक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा-
 रूवारसागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसबुत्ते अड-
 क्कमे ॥ ४ ॥ इच्चापुच्चायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे
 एसबुत्तेअडक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-
 धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाडवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-
 धम्मे तइयंवयमणुरख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विर-
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-
 णधम्मे पंचमंवयमणुरख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरख्खे विरियामो-
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-
 धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाडवायाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-
 हारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-
 अलियवयणत्त ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिन् जुत्तोगुत्तोठिन्समणधम्मे
 तइयंवयमणुरख्खे विरियामो अदिन्नादाणात्त ॥ १४ ॥ आलियविहार-
 समिन् जुत्तोगुत्तोठिन्समणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरियामोमेहु-

णान् ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिन् जुत्तोयुत्तोठिन्समणधम्मे पंच-
 मंवयमणुरक्के विरयामो परिग्गहान् ॥ १६ ॥ आलियविहारस-
 मिन् जुत्तोयुत्तोठिन्समणधम्मे छट्ठंवयमणुरक्के विरयामोराईभोयणा-
 न् ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिन् जुत्तोयुत्तोठिन्समणधम्मे तिविहे-
 णपडिक्कंतो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिच्चत्तं
 एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोयुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनान्तु उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वए-
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्टरुद्दाइं परिवच्चंतो-
 युत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइं-
 धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-
 नीलाकाऊ तिनियलेसाऊअप्पसत्थानं परिवच्चंतोयुत्तो रक्खामि-
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिनियलेसाउसुप्पसत्थानं उव-
 संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविज-
 वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविन् रक्खामिमहव्वएपंच
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवच्चंतो
 युत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-
 संबरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवच्चंतोयुत्तो रक्कामिम-
 हव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंबरणं तहेवपंचविहमेवसच्चायं उवसंप-
 न्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायबहिं छप्पिय-
 भासान्अप्पसत्थानं परिवज्जंतोयुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥
 छविहमप्पितरियं वज्जंपियछविहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामि-
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयट्ठाणाइं सत्तविहंचेवनान्णविप्रंगा परिव-
 च्तोयुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-
 सत्तिकयामहव्वयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अष्टमयष्टाणां अष्टयकम्माइतेसिवंधिच परिवञ्चंतोगुत्तो रक्खामि
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया दिट्ठाअव्विहनिट्ठिअवेहिं उवसं
 पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसार-
 त्तायनवविहाजीवा परिवञ्चंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न
 वधंभचेरगुत्तो दुनवविहंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंक्किलेसंच परि
 वज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिष्ठाणा दस
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंप्रतिदंडविरत्तं तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति
 विहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चैयंमहव्वयउच्चारणं
 थिरत्तं सञ्जुद्धरणं धिइवलंवसानं साहणघोपावनिवारणं निकायणा
 भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो प
 सञ्जुद्धाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमणे उत्तमणे एसखलुतित्थं
 केरहिं रइरागदोस महणेहिं देसिञ्च पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय
 संजमं उवइसिञ्चं तिप्पुक्क सक्कयंठाणं अप्पुवगया नमोद्धुते सिद्धबुद्ध
 मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय न
 मोद्धुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहन्तं नमोत्थुते भग
 वत्तं तिक्कट्ठु इच्चैसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इत्थामोसुत्तक्कित्थं
 काउं नमोत्तेसिखमासमणाणं जेहिंइमंवाडयं छव्विहमावस्सयं भग
 वंतं तंजहा सामाडयं चउवोमत्तं वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पच्च
 रक्खाणं सुव्वेहिं विण्यंभि छव्विहे आवस्सए भगवन्ते ससुत्ते सअत्ते
 सग्गंये सच्चिजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहन्तेहिं भ
 गवन्तेहिं पच्चत्तावा परुवियावा तेभावे सद्धामो पत्तियामो रोण्मो
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्धन्तेहिं पत्तियन्तेहिं रोयन्तेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपखस्स अंतोचउमासीए अंतो
 संवच्चरस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं
 तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता
 रणाए त्तिकट्ठुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नप
 ढियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवो
 रिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि
 हामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं
 पायच्चित्तं पडिवच्चामो तस्स मिच्चामि दुक्कडं नमो ते सिंखमासमणाणं जे
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं
 कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद
 थुत्तं तंदुलवेयालियं चंदा विच्चयं पमायप्पमायं वीयरगसुयं विहार
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्खाणं महापच्चस्खाणं सव्वेहिंपिए
 यंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सगगंथे सन्नि
 जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं प
 न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्वहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो
 पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्वहंतोहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं
 अणुपालंतेणं अंतोपखस्स जंवाइयं पढियं परिअट्ठियं पुच्चियं अणु
 पेहियं अणुपालियं तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहि
 लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्ठु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोप
 खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपा
 लियं संतेबले संतेवोरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुट्ठे
 मो आहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिवच्चामो तस्स मिच्चामि दुक्कडं न
 मो ते सिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरायणाइं दसान्कण्णोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं
जंजुद्धोवपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा
णपविभत्तो महाल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि
वाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए
वेलंभरोववाए देविंदोववाए उट्टाणसुए समुट्टाणसुए नागपरियाव
लियाउं निरयावलियाउं कप्पियाउं कप्पवडिंसयाउं पुप्फियाउं पुप्फु
लियाउं वह्मोदसान् आसोविसभावणाउं दिट्ठीविसभावणाउं चारणसु
मिणभावणाउं महासुमिणभावणाउं तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिण्यं
मि अंगवाहिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सग्गंथे सन्निजुत्तीए
ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवि
यावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो
ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं
अंतोपरूखस्स जंवाइयं पडियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपा
लियं तंदुरुखस्सयाए कम्मखस्सयाए मोहखस्सयाए बोहिलाभाए सं
सारुत्तारणाए त्तिक्कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरूखस्स जंन
वाइयं नपडियं नपरियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते
बले संतेवीरिए संतेपुरिसकारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो
निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहमो अकरणयाए अणुपेहमो अहारिहं
तत्रोक्कम्मं पायचित्तंपडिवज्जासो तस्स मिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमास
मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो
सूयगडो ठाणो समवानं विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहाउं उवासगद
सान् अंतगडदसान् अणुत्तरोववाइअदसान् पण्हावागरणं विवाग
सुयं दिट्ठिवाउं सुदिट्ठिसुहाउं सव्वेहिं पिण्यंमि दुवालसंगे गणिपिडमे
भगवंते ससुत्ते सअत्ते सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणा
वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सह
 हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो
 पखस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं तं
 दुख्खस्सकयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए
 त्तिकट्ठ उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नपढियं नप
 रियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस
 क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो
 विसोहेमो अकरणयाए अप्पुट्टेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिव
 ज्जामो तस्समिच्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंमंवाइयं दुवाल
 संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्ठं
 ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्चामिदुक्कडं ॥ सुय
 देवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं
 सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अणुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठली घमियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्म-
 रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पन्नि-
 लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें थाप-
 नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी,
 न्नीमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीठें ख-
 मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-
 लेहुं ? गुरु कहे, पन्निरेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती
 पन्निरेहे. पीठें उज्जो थई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पोसह संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही, ख-
 मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह ठातं ? गुरु कहे

ठाएह, पीठें इठं कही खमासमण देई उजो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुद्दपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-
ठकार जगवन् पसान करी, पोसह दंभक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-
च्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें पोसहं ॥ इहांसैं ले के अप्पाणं वो-
सिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पञ्चखाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चखाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसनं सबनं वा,
सरीरसक्कार पोसहं, सबनं वंजचेर पोसहं, सबनं अद्यावार पोसहं,
सबनं चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पञ्चखामि, जावदिवसं अहो-
रत्तिं वा पज्जुवातामि, डुविहं ति विहेणं मणेणं वायाए काएणं, न
करेमि न कारवेमि, तस्त जं ते पम्किमामि निंदामि, गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञापण करतो उच्चरे ॥
पीठें एक खमासमणें ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक
मुद्दपत्ती पम्किहेहुं ? गुरु कहे, पम्किहेहेह. बीजी खमासमण देई
मुद्दपत्ती पम्किहेहे. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्तानं ?
सामायिक ठानं ? कही, खमासमण देई. अर्थावनतगात्र ऊजो थको
तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंतें उच्चरी दोय खमासमणें वे-
सणो संदिस्तानं ? वेसणो ठानं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सि-
धाय संदिस्तानं ? सिधाय करुं ? कही खमासमण देई ऊजो थको,
आठ नवकारनो सिधाय करे. शीतादि परितहें दोय खमासमणें,
पांगरणुं संदिस्तानं ? पांगरणुं पम्किघानं ? कहे. ए सर्व सामायिक-
विधि पूर्व कह्यो ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पहिलां
इरियावही पम्किमी ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंभक उच्चर्यां
पीठें इरियावही नही पम्किमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीरराय

सूधी करी कुसुमिण दुस्तमिण कानुस्सग्ग करे, पीठें पम्भिकमण-
वेलासीम सिञ्चाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पम्भिकमण करे,
पण इतरो विशेष के चारे शुईयें देव वाद्या पीठें खमासमण देई
कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं संदिस्सानं ? गुरु कहे,
संदिस्सावेह. पीठें इत्थं कही खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥
सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इत्थं कही,
तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीनृपाध्यायजी मिश्र
२, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-
स्कार जणें, जो पम्भिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं
चैत्यवंदनादि करी, सिञ्चाय करे. हवे पम्भिलेहण वेला पम्भिलेहण
करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो वे तो पण संके
पें फेर लखीयें ठैयें. दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
॥ पम्भिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पम्भिलेहे. पीठें दोय खमा-
समणें अंग पम्भिलेहण संदिस्सानं ? अंग पम्भिलेहण करुं ?
कहे. पीठें गुरुवचनें इत्थं कही. धोतियो कणदोरो पम्भिलेही
वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार जगवन् ! पसान करी, प-
म्भिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पम्भिलेही स्थापे,
अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पम्भिलेहे, तो पण खमासमण देई
उक्त रीतें आग्या मागे. पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं०
॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पम्भिलेहुं ? गुरु कहे, पम्भिलेहेह.
पीठें इत्थं कही, मुहपत्ती पम्भिलेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका०
॥ सं० ॥ ज० ॥ उही पम्भिलेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सा
वेह. उही पम्भिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें
 पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे
 ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-
 सवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अहि-
 यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आ-
 गाढे दूरे उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-
 वणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥
 आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-
 च्चारें पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-
 वणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणे अणहि-
 यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥
 अणागाढे मध्ये पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-
 वणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अ-
 हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ २०
 ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे
 आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणे अ-
 हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए
 अंमिलपमिलेदण पाठ कदा ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ अंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम
 पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवजेके नीतर पासे दहिणें ३,
 वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवजेके बाहर दोनुं पासे पमिलेहे
 ॥ ६ अंमिलां जिहां उच्चार प्रन्वणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ
 पमिलेहे ॥ इति २४ अंमिलां पमिलेदणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें उठूं कर्दा, कंवल नन्नादि पमिलेदी पोसद आया प्र

मार्जी काजो विधिशुं परठवो, एक खमासमण देई इरियावही पम्किमे, इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्ताजं ? वसती पम्किमेहुं कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्ताजं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इच्छा कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करी नवकार एक कही धर्मध्यान करे, ज्ञणे, गुणे. वखाण सुणे. इम कर्ता पूर्ण पदुर दिन चढ्यां. नग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपम्पिपुन्न पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पम्किमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पम्किमेहुण करुं ? गुरु वचनें इच्छा कही, मुहपत्ती पम्किमेही पान जोजन पात्र पम्किमेही राखे. पीठें सिधाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्र स्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रज्जुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीठें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छा कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोवुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पम्किमे. एक लोगस्सनो कान्ठस्सग करे. मुखें लोगस्सग कहे. संमासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. “जं किंचि नाम तिष्ठं” इत्यादि कही पीठें नमोवुणं कहे. उज्जो अई अरिहंत चेईयाणं करेमि कान्ठस्सगं वंदणवत्ती ॥

अन्नबू० कही, एक नवकारनो कानस्तग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्त० सबलोए अरि० वंदणव० अन्नबू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुरखरवरदो० सुअस्त जग० वंदण० अन्नबू कही एक नवकार० पारी तीसरो थुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नबू० इ रथादि कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कह कर, बैठकें नमोबूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुईयें देव वांदी बेसे ॥ नमोबूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीरराय कही. नमोबूणं सबे तिविदेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन वृद्धनाथमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्र स्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसैं देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही “ जावंति चेइयाइं ” गाथा जणी खमासमण पूर्वक जा चंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोबूणं कही जयवीरराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्तही पूर्वक पोसद्दशाला मांदि आबी, इरियावही पम्किमे, पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविद्धार उपवास कियो हुवे, तो पञ्चग्व्याण बेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पञ्चस्काण पारे ॥

॥ हवे पञ्चग्व्याण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्किमे. फिर एक खमास मण ॥ इजा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पञ्चग्व्याण पारवा मुहपत्ती पम्कि लेहुं ? गुरु कहे, पम्किदेहे ॥ पीठें इहं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्किदेहे, फेर एक खमासमण देई, इजाका० ॥ सं० ॥

॥ पाणहार अमुक पञ्चखाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥
 ॥ पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आचारो न मोत्तव्वो. पीठें तहसि कही, अमुक पञ्चखाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पञ्चखाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्त मिच्छामि डक्कं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. कलामात्र सिज्जाय करी यथासंजवे अतिथिसंविज्ञाग करी पाणीपीवे ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चखाण पारी आहार करे. पीठे आसण वैठो थकोहीज दिवस चरिम पञ्चखे, पीठें इरियावही पम्क्कमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चखाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्नूमि जावणो हुवे, तो आवस्तही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंमिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजले शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्तही पूर्वक पेसी इरियावही पम्क्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इत्तं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्तही करी, प्राशुक देशें जई, संमा सा पूंजी, थंमिलो पम्क्कमी, उच्चार प्रथवण वोसिरावी, निस्तही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंमियं, जं विरा हियं, तस्त मिच्छा मि डक्कं, एम कही वेसे. पीठें पम्क्कमेहण वेला सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठले पडुरे इरियावही पम्क्कमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ पम्क्कमेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इष्टं कही दूजे खमासमणें इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठें इष्टं कही, मुहपत्ती पमिलेही दोय खमासमणें अंग पमिलेहण संदिस्तानं ? अंग पमिलेहण करुं ? कहे, पीठें गुरु वचनें इष्टं कही मुहपत्ती पमिलेही दंभासणो पूंजणी प्रमुखतें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीठें काजो शुद्ध करी, उदरी एकातें वितरतो परवही इरियावही पमिकमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इच्छार जगवन् पतान करी पमिलेहणां पमिलेहावोज ॥ पीठें स्थापनाचार्य पमिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेंद. पीठें इष्टं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पमिलेहे. पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्तानं ? सिधाय करुं ? उक्त रीतें क्षणमात्र सिधाय करी तिबिहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पचरेके ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई, पचराकाण करे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि धंमिला पमिलेहण संहिस्तानं ? बोजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि धंमिला पमिलेहुं ? गुरु वचनें इष्टं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेसणो संदिस्तानं वेसणो ठाउं ? कही वेमे. वस्त्र कंबलादि पमिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पमिलेहे. उपवासी तो वे तेमाटें सर्व पावो कम्पिटो धोतीचो कणदोरो पमिलेहे, उपवा नवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कम्पिट्टादि पमिलेह्या. पीठें वस्त्र कंबलादि पमिलेहे. ए विशेष वे ॥ पीठें काखवेला सोम सिधाय ध्यान करे. पीठें उंचार प्रधवल २४ धंमिला पमिलेहे, जो चवदशी हुवे, तो पांखो चउमानो पमिकप्रणो करे, संचरतीये

संवञ्चरी पम्किमणो करे. तिहां देवसी पम्किमणो पूर्वे लिख्यो
ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो
एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठें “ ठाणे कमणे चंकमणे ” इ
त्यादि पाठ कहे. खुदोवदव काउस्तग कियां पीठें दोय खमासम
णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिधाय संदिस्ताजं ? सिधाय करुं ?
कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिधाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पम्किमणविधि आगे एही पुस्तकमें
लिख गये हैं. वहांसे जान लेना.

॥ हवे पम्किमणो हुवा पीठें साधुको वेयावच्च करी पोरसी
सीम सिधाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसऊ
कहेतो थको, जूमि प्रमार्जे थंमिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे
प्रश्रवण वीसिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पम्पुत्रा पो
रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पम्किमे, पीठें राई
संधारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संधारा
मुहपत्ती पम्लिहं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीठें इच्छं कही, खमास
मण देई मुहपत्ती पम्लिहदे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥
ज० ॥ राई संधारो संदिस्ताजं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०
॥ ज० राई संधारो ठावुं ? पीठें गुरु वचनें इच्छं कही, चउकसाय
पम्मिल्लुत्तरण इत्यादि नमस्कारे कथन पूर्वक जयवीरराय सूधी,
चैत्यवंदन करे. जूमि प्रमार्जी, संधारो उत्तर पट्टो पाथरे. पांठें
शरीर प्रमार्जी निस्तदी निस्तदी एम कही संधारो वेसी, तीन
नवकार तीन करेमि जंते ऊवरी ॥ एमो खमासमणाणं, गोयमा
ईशं महांमुणीणं, अणुजाणद जिदिह्वा अणुजाणद ~~अणुजाणद~~ ~~अणुजाणद~~

इत्यादि राइ संथारा गाथा ज्ञानी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पतवागो फेर तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेर, जो देह शंकायें छे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पन्निक्कमे ॥ पीठें जघन्यें पण तीन गाथानी सिखाय करी सोंवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पदोर छगी, नवकारादि गुणी, इरियावही पन्निक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्तुमिण काउस्तगग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पन्निक्कमे. पीठें दोयखमासमणें सिखाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पन्निक्कमण वेला सीम सिखाय करे. पन्निक्कमण वेला हुवां पन्निक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष ठे, केराइ आलोयां पीठें संथारा उवडणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पन्निक्कमणो करी पन्निक्कमण वेलायें पूर्वोक्त विधें पन्निक्कमण करी, धर्मशाला पूंजी काजो छळरी इरियावही पन्निक्कमे. दोय खमासमणें सिखाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिखाय करे. पीठें पोसद पारे ॥

॥ अथ पोसदपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुडपत्ती पन्निक्कमे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसद पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायबो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसद पारयुं ? गुरु कहे, आचारो न मोत्तवो. पीठें तदति कहे. खमासमण देई अर्थावनत गात्रें उज्जो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुडपत्ती पन्निक्कमे, पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायबो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-

यारो न मोत्तव्वो. पीठें तहेत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उन्नो अको द्वाष्ट जोळ्यां- मुहपत्ती मुखें दिथां अकां तीन न वकार गुणी संमासा पमिलेहे. गोमालीयें वेसी मस्तक नमावी, “ जयर्व दसन्नज्जदो ” इत्यादि जावनारूप गाथा कहे. पीठें पोसहना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविज्ञागत्रत साचवण निमित्तें साधु जणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीठें साधुनें जे आहार दीधो, तेहनोदीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीठें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चित अई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पमिलेही, कचरो विधिगुं परठवी इरियावही पम्तिकमे. खमासमण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पमिलेहे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पोसहदीज करणो हुवे, तो पोसह दंभक उच्चरतां जावदिवसं पज्जुवासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्ति पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीठें सामायिक विधि सर्व करी चैस्यवंदन कुसुमिण्डुस्तमिण काउस्तग्ग करी पम्तिकमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, अने जो पूर्वें पम्तिकमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो पम्तिकमणानें अंतें पमिलेही राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, तथा जो गुरुसैं जूदो पम्तिकमणो करयो हुवे, तो गुरुपासैं आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोउण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पमिलेही जे चांदणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राईयं आलोचं ? गुरु कहे, आ-
 लोएह, पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०
 ॥ सं० ज० ॥ अमुष्मि अग्निं तर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे
 खामेह, पीठें सव पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पन्तिकमणामें न-
 वकारसी पञ्चख्यो थो तेमाटे पीठें गुरु सार्वे पञ्चस्काण उपवासनो
 करे, पीठें दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रका-
 रका विकल्प जाणनां. हवे पन्तिकेदण तो पूर्वे करी ठे, तो पण
 आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०
 ॥ पन्तिकेदण संदिस्ताचं ? बीजे खमासमणें पन्तिकेदण करूं ?
 कही मुदपत्ती पन्तिकेहे. पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पन्ति-
 केदण संदिस्तावी मुदपत्ती पन्तिकेहे. पीठें वली खमासमण देई
 इच्छाकार जगवन् ! पसाज करी पन्तिकेदण पन्तिकेदावो जी. एम
 कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ
 पधि मुदपत्ति पन्तिकेदुं ? कही कोई वस्त्र अणपन्तिकेह्यो राख्यो
 हुवे, तो पन्तिकेहे, नही तो वली आसण पन्तिकेहे. दोय खमास
 मणें सिधाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. आगे
 सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी,
 पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाठली रातें वली सामायिक न
 लेवे. जिणें दिवस संवंधी चउ पुहरी पोसह लोथो हुवे, ते पाठले
 पुदर पञ्चस्काण किया, पं. ठें दोय खमासमणें उडी पन्तिकेदण सं-
 दिस्ताचं ? उडी पन्तिकेदण करूं ? कहे, पण अंमिता पद न कहे.
 अने अंमिता नही पन्तिकेहे. यद् निःकेवल दिन संवंधी पोसह प्र-
 दण करणेंमें विशेष विधिही. नो वताई ॥ इति दिनसंवंधी पोसह
 प्रदण विधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्चरघो है. पीठें संध्यानी पमिलेहण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो पञ्चस्काण कियां पीठें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंरुक ऊच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पङ्गुवातामि एम पाठ ऊच्चरे, पीठें सामायिक विधि पूर्व लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊच्चरघां पीठें दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्तावी, पांगरणो संदिस्तावी, पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही थंमिलां पमिलेहण संदिस्ताउं उही थंमिलां पमिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पमिलेहे. आगे सर्व क्रिया पूर्व लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव थये, पाठले पहर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरथो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पमिलेही इरियावही पमिकमे. पीठें चउविहार पञ्चस्काण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पमिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंरुक ऊच्चरे. तिहां दिवसेसरत्तिं पङ्गुवातामि कहे. संध्या हुवे, तो रत्तिं पङ्गुवातामि कहे. पीठें बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पमिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि जंतें ऊच्चरे. दोय खमासमण देई सिधाय संदिस्तावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्तावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्तावे. पीठें बे खमासमण देई, अंग

पमिलेहण संदिस्तावी, मुहपत्ती पमिलेहे. फेर वे खमासमण देई,
 उही थंमिलां पमिलेहण संदिस्तावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण
 हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्यां हुवे, तो पण या
 नक गून्यता टालवा जणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वे
 ला सीम सिध्दाय ध्यान करे. पांवेँ उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिला
 पडिलेही पडिक्कमणो करे. तया पाठलो राते वली सामायिक न
 लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसद लेवाना विकट्य जाणवा
 ॥ इति रात्रि पोसदविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणानत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे
 वीयकायसंघट्टे आवरकायसंघट्टे उप्पइयासंघट्टे सबस्तवि देवसिअ,
 उच्चित्तिये उप्पासिय उच्चिठिय ॥ इच्छाकारेण संदिस्तइ, इच्छं तस्त
 मिच्छा मि उक्कनं ॥ १ ॥ संयाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टण
 की, पसारणकी, उप्पइयासंघट्टणकी, अच्चकुवित्तयकायकी, सबस्त
 विराअ, उच्चित्तिय, उप्पासिय, उच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्तइ,
 इच्छं तस्त मिच्छा मि उक्कनं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके
 प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ मदीमंरणं पुन्नसोवन्नवेदं, जणाणंदणं केवलज्जाणगेदं ॥
 मदानंदं लच्छी घट्टु बुद्धियं, मुसेवामि सीमंभरं तिज्जरायं ॥ १ ॥
 पुरा तारणा जेइ जीवाण जाया, जवस्तंति ते मच्च जघाण ताया
 ॥ तडा तंपयं वे जिणा वट्टमाणा, मुदं दितु ते मे तिलोचपपडा-
 णा ॥ २ ॥ डुरुत्तां संसार कुप्पां पोयं, कलंका वली पंकपत्ताल

तोयं ॥ मणोवंडियञ्चे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमदप्पं
॥ ३ ॥ विकोत्ते जिणंदाणणंजो जलीणा, कलारूव लावण सोदग्ग
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तं मे णिच्चं पि जाणं, सिरी जारई देहि मे
सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिव्य
पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि
तत्कारिणां, श्रीपंचाननलाठनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्
॥ १ ॥ ये पंचाश्वरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचरूपीकनिर्जयमथो प्राप्ता
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतजृतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं
पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाजं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी,
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, ज्ञक्तानां जविनां गृहेषु ब-
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्लो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धाधिका त्रायिका
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चञ्चवीसे जिनंवर, प्रणमं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करिये,
चंद्रप्रज्जुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिमं चंद ॥ दीगं
डुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रज्जु
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपच्छर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर
दीपे मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठइ महोच्चव, करता होडाहोड
॥ २ ॥ शेजुंजा शिखरे, जाणी लाज अपार ॥ चञ्चमासे रदिया,

गणधर मुनि परिवार ॥ ज्वियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध
साकरग्री पण, वाणी अधिक विशेष ॥ १ ॥ पोसो पडिकमणुं, क
रिये व्रत पञ्चकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥
आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कढ्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे,
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रवज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म
व्रतमपमजं केवलमलं ॥ वल्लैकादश्यां सदसि लसद्दाममहसि,
क्षितौ कढ्याणानां क्षपति विपदः पञ्चकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रभ्रेण्या
गमनगमनैर्नूनिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥
जिनानामप्यापुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ ० ॥ २ ॥ जिना
एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुणामिति च विदि
त्तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुज्जवेयुर्वहुमुदः, क्षि ० ॥ ३ ॥
सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखि
लज्जवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विश्व
तहदः, क्षितौ ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत चण्डे ॥

॥ ईंकि धपमप, धुधुमि धौधौ, व्रतकिधर, धपधोरवं ॥
धौधौकि धौ धौ, दाग्ढिदि दाग्ढिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणर्व ॥
ऊज्जिंकि ध्रूं ध्रूं, ऊणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर
जील शिखरे, जवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेग्गिनि
धौग्गिनि, किटति गिग्गदां धुधुकि धुदनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण,
रणकि णेणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ ऊज्जि ऊंकि ऊंऊं, ऊणण र
णरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलपंति कमला, कलितक
लमल, मुकलमीश, महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठैकि ठैठै, ठज्जिं ठ
॥ ४ ॥

ह्रिक, गृह्णिपट्टा, ताज्यते ॥ तललौकि लौलौ, त्रैषि त्रैषिनि, मॅषिमॅषि
नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, शुंगि शुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३ ॥
पुंदांकि पुंदां, पुषुड्दि पुंदां पुषुड्दि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट,
रणकि ऐंऐं रुणण मॅमॅ, मंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,
सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी
जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ समता रस धामी जी ॥
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव
श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल
पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिएँ ए नीति
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास
जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें
जी ॥ तेर सहस्र वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥
इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्रेशरि देवी जी ॥ नवपद से
वक अविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ ना
यक सदगुरु, श्रीजिनभक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि
पञ्चणे, श्रीजिनलान्न सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पञ्जूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पञ्जु

सण, दारुणां धरमनी शीर ॥ आपाढ चौमासें हूँती दिन पंचास,
 नमिक्कमण संवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर
 पूजा सत्तर प्रकार, करिये जले जावे जरिये पुण्य जंमार ॥ वलि
 चैत्त्व प्रवारें फिरतां लाज अनंत, इम परव पजूमण सहुमें महि
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनाये वंचाय, श्रीकळप
 सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर
 उस्केव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा
 हम्मीवछल करिये वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-
 लधार ॥ अमदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी तांनिध
 कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूपणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोजितं, धन
 सधनश्याम शरीर सुंदर शंख लंठन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर
 वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापर्वे श्रीआदिजिनवर
 वीर जिन पावापुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय
 गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीत जिनवर सुगति पट्टता मुनिवरू,
 चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार
 अंग उपांग वारे वश पपन्ना जाणिये, उ छेइ अंघ प्रसन्न अञ्जा
 भार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग छार उदार नंदीसूत्र जिन
 मत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी जाण्य पेंतालीश आगम ध्याइये
 ॥ ३ ॥ उहुं दितें वाजक दोय जेदने सदा जवियण सुखकरू,
 उण बरे अंवा लुंभ सुंदर उरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण
 नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो
 अंवा देविये ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण अनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्येकपर्यासिनः, दृमापालप्र
 मुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे
 तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र
 भुम् ॥ १ ॥ यज्ञर्जागमनोद्भव व्रतवस्त्रज्ञानाकरासिदक्षणे, संभूयाशु
 सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् कणात् ॥ श्रीमन्नाजिन्नवादिवीरच
 रमांस्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्थने
 नांस्ति च ॥ २ ॥ अर्थार्त्पर्वमिवं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाजिघ,
 स्तत्पश्चात्तणनायका विरचयाम्बकुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमतीर्थसमर्थनै
 कसमये सम्यग्दृशां नूस्पृशां, नूयान्नावुककारकप्रवचनं चेतश्चम
 त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरा सिद्धायिका देव
 ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन
 चंडगीस्सुमतिनो नव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टदस्तिनिधने
 शार्दूलविक्रीमिस्ते ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण-
 कमल तसु नामूं सीस । अदनिस समरुं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं
 च मेरुपासे ऊलकंता । सोदे वीस मदा गजदंता ॥ तिण ऊपर वे
 जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणाहर कहिय
 डुवालस अंग । थांनक वीस ज्ञाया तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे
 आणे रंग । ते नर पाभे सुख अजंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च
 भवीस । पूरे मुऊ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे ।
 तिहुअण जन मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ न
गरजेसलमेरविभूषणं । न जति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे
श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख
कास्का । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जि
नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रवलपुन्यरमोदयधारिका ।
फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।
जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु
सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तिष्यदारमुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकव
म्पयदेवगणं । सिरिश्चबुध वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसि
यपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया ।
मम हुंति जिनागमसुखतया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । क
ह्वाणपयोरुहबुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जि
नागममन्धिकरं ॥ ३ ॥ सिरिंदसमुज्जलगायलया । मुह्जाणविणम्मि
यएगलया ॥ असुरिंदसुरेदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुस
या ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेस्तर, परमात्मपद धारीली । प्रथम
जिनेस्तर प्रथम नरेस्तर, प्रथम परम उपगारी ली ॥ योगीश्वर जिन
राज जगतगुरु, सद्जानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेस्तर लोकदिने
सर, आत्मसंपद जूपोजी ॥ १ ॥ पांच जगत वलि पांचे एरवत,
पंच विदेह मऊरोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्यासिव
पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, आस्थे इणही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ १ ॥
 अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूण्यां श्रोगणधारोजी । अंग डवालस
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग
 प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन श्रुद्ध आराध्यां,
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरिदे
 वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंठित नित सेवीजी
 ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि
 नचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितेशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र
 णमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।
 श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति
 शय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणि
 त रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंडु जिन चोवी
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन ज्ञापित सिद्धांत । स्पाद्वादन
 यादिक हेतुयुक्ति नवि अंत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह
 नाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञारी ॥

॥ यदंहिनमतादेव । देहिनःसंति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नात्रे
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यच्चनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःस्के
 न्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुणायतो जिनाः । सदर्थतो यच्चयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थलमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥
 ३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्तद्वदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुपता
 भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञव्यान् जनान्नयतु नित्य
 ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैनं
 वाक्यं जूयाद्भूतै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी
 स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन
 त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात द्वाथ तनु मान, दि
 नः सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं
 दित पद अरविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि
 यणने तारे प्रवहणसम निसदीप्त, चोवीत्ते जिनवर प्रणमुं विसवा
 चीत्त ॥ २ ॥ अरण्ये करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते
 गूंया गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके
 एकांत, समरुं सुखदायक मन सुख सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धाधि
 का देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आत्त अशेष ॥
 अद्वनिसि कर जोर्मी सेवे सुरनर इंद, जंप्पे गुणगण इम श्रीजिन
 लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नान्नेयं संजयं तं, अजियसुरिद्वयं, नंदणं सुखयवा ॥ सु
 प्पासं पञ्चमनाहं, सुविप्रशक्तिपदं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ धेवांसं ध
 र्मजानिं, विमलप्ररिजिनं, मल्लिकुंश्रुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,
 नमिमविनमिसीं, पंच कल्याण णसु ॥ १ ॥ गधे द्वाणेनु जम्भे,

वय गहणखणे, केवले लोयकाले, पञ्चाणिवाणठाणे, पगवण समए,
 संशुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, जवणवणसए, विंतरे किंन
 रोहिं, । तं मझं दितु मोस्कं, सयलजिनवरा, पंच कद्धाण एसु ॥१॥ देऊं
 तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सबन्नूणं च पासा,
 अहमविनियमा, जायए सबकालं ॥ अन्नपत्तिएहिं, नियगममइणं,
 बीयअंकूररूवं । अवावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कद्धाण एसु
 ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहवा । सबढामाणमं
 वा, वरकमलकरा, रोहिणीठत्तअंवा ॥ पन्नत्ती ठत्तपत्तमा, धणइसर
 णई, खित्तेगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच क
 द्धाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकट्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंरुण आदिदेव । हूं अहनिस समरूं तास सेव
 ॥ रायणतल पगलां प्रज्ञूतणा । पूजि सफल फूल सोहामणा ॥१॥
 तेवीस तीर्थीकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण ज्ञरया ॥ गिरि
 करुणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम
 सांमी उपदिस्या । जंबुगणधरने मन वस्या ॥ पुंरुगिरि महिमा
 जे मांइ । ते आगम समरूं मनउढाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख क
 वरुयह । मन वंठित पूरण कटपवृक्ष ॥ सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेव
 ता । ज्ञणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा, वर केवल
 ज्ञान अने निरवाण ॥ जसु तीन कट्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु
 ज्ञवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अष्टावय चंपा पावापुर
 शुभ ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणज्जाण ॥ अजिता
 दिक बीसे पुइता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

जट्टहास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूँती सुणि त्रिपदी ततकाले । ग
 णधारक गूँछया द्वादश अंग विशाल ॥ नयजंग पदारथ सत्त
 नव तत्त । जवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केस
 रि अंबा पञ्चमादेवि प्रत्यक्ष । श्रीसंघ मनोरथ पूरे बासुरवृक्ष ॥ ध्या
 वे सुख पावे श्रीजिनलान्न सरीस । जिनवर सुप्रसादे आस फले
 सुजगीस ॥ ४ ॥ इति नेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप रां
 णी नंदाकेरो नंद ॥ जद्विलपुर स्वामी फेरे जवना फंद । चित चो
 खे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत दुआ होस्ये अ
 नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं जवणे ठवणा
 सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २
 ॥ कालिक जट्टकालिक अंग अनंग पविठ । नयजंग निक्केपा स्या
 द्वाद मितसिठ ॥ जविजन उपगारी ज्ञारी जिन उपदेश । श्रुत
 श्रवणे सुणतां नासे कोमि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सा
 सन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥
 चिंता डुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन
 लान्नसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगुणो सार । अढी गाउ
 जेचो पिहुखो ज्योयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुख
 कार । श्रीतीरथनायक बैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन उत्र सिरो
 वर चामर ठोले इंद । देवंडुज्जि बाजे ज्ञाजे कुमति फंद ॥ ज्ञा
 मंरुल पूंठे जलके जाण दिनंद । तिहुअण जन जवि मन मोहे
 सयल जिनंद ॥ २ ॥ इय ज्ञाव सुठवणा नाम निक्केपा च्यार ।

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मज्जार ॥ जिनवरनी पद्मिमा
जिन सरखी सुखकार । शुभ्र ज्ञावे वंदो पूजो जग जयकार ॥ ३ ॥
डुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । जवछेद कृपाणी मीठी
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतियूजो जवि प्राणी । सुय
देवि पसाये पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेतुंजगिरि नमिये रूपजदेव पुंरुरीक । शुभ्र तपनी म
हिमा सुण गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य
वंदनीक । करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र
स्तवनादिक प्रथम तिलक दस बीस । अकृत गिणतीसे चढता तिम
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञापइ इम जगदीस । तेहिज नित प्र
णमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चैत्र मास
शुभ्र वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले
वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे जवनो पार
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्रेसरीदेवी से
विय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंपे
गणनायक श्रीजिनलान्सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद
महिमा ज्ञापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव
दीस । नव आंखिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि
हंत बलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसन तिम बलि नाण
चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय दज्जार । सहु
जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारस अमवत्तीस पण बी
स सग बीस सार । सरुसठ इक्कावन सितर पच्चास प्रकार ॥ इण

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम ज्ञापित विधि इम
कीजे अज्जिराम ॥ ३ ॥ चक्रेसरिदेवी तिम विमलेसर जस्क । श्री
पालतणीपर पूरे वंछित सुस्क ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र ज्ञवि
प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अज्जिनव कामी
जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ आनक
वीसे आगम ज्ञापिया वीतराग गुण जुक्ताजी । जे नर अंतर आ
तम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन
सूरी शिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र
ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत
तिष्ठ ज्ञूषोजी । ए पद निज ज्ञवि ज्ञावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो
जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी
। इयज्जावसें विधि परकासे तीर्थकर पद खासोजी ॥ तीजे ज्ञव
वर वीस आनकनी सेव करे ज्ञव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे
निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल
हे मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गह्व जिन आज्ञाधारी पा
टोधर वरदाईजी ॥ जिन सौजाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण
गावेजी । संघ सकलकं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥
४ ॥ इति श्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज शिवराण । उवजाय साहू
नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम
जिनज्ञाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उ
त्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । बलि काल जघन्ये जिनवर

वीस गंजीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे
थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक वे वेला जिनवंदन
त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग
गुण स्तवना पूजा प्रज्ञावना सार । इम शासन वञ्चल करतां न
वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस्क
जस्कणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे
मन रंग । देवचंड आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥
नवपदमांहे मुख्य वखाण्या ऋषज्ञादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञाव धरी
ने जे ज्ञवि वंदे ठेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो
पावो सुख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवद्याया सकल
मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं
धारीजी ॥ नवमें ज्ञव ज्ञवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी ।
वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे ज्ञाखीजी ॥ २ ॥ छादस आठ ठत्तीसे
गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । समसठ इक्कावन वलि जैती
सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल प्रख सातम
थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंवल नव
विहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ष चक्रेसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता
जी । उली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर
गद्य जिन आझाकारी पाटोधरपद चुक्ताजी । जिन सौज्ञाग्यसूरिंद
पसाये हंससूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंरुन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोदी
केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजय

रिसिखरे समवसरथा सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीमां ऋषज्ञादिक
 जिनराय । वलि काल अर्ताते अनंत चोवीसी आय ॥ ते सवि इण
 गिरवर आवी फरसी जाय । इम ज्ञावी काले आवस्ये सवि मुनि-
 राय ॥ २ ॥ श्रीऋषज्ञना गणधर पूंमरीक गुणवंत । द्वादस अंग
 रचना कीथी जेण महंत ॥ सब आगममांहे सेत्रुंज महिम महंत
 । ज्ञाखी जिन गणधर सेवो करि धिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुह
 कवरु पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण आपे इंड उदार ॥ देवचंड-
 गणि ज्ञाखे जविजनने आधार । सब तीरथमांहे सिद्धचल सिरदार
 ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर आचरा उदर अवतरियाजी
 । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु दृष्टणापुर सुख करियाजी ॥ ईत
 उपडव मारि विकारी शांति करी संचरियाजी । जे जवि मंगल
 कारण ध्यावे ते दुध गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्त्तमान जिन सब
 सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । वारे चक्री नव नासयण नव
 प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सदाका वंदत पाप निकं-
 दोजी । इव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे जवजय वंदोजी ॥ २
 ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी ज्ञाखीजी । इव्य
 ज्ञाव बिहुं जेदे पूजा महानिसीये साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत्
 आरंजे विनय तपी ते जाणोजी । शुभयोगे नहि आरंजकारी जग
 वइ अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ आपना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने
 सुखकारीजी । कारणथी सब कारज सीजे जिनवर आज्ञा धारीजी
 ॥ श्रीजिनकीर्त्ति सूरेश्वर गह्वपति पाठक श्रीऋद्धिसारीजी । सम-
 कितधारी देव सहाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांति-
 नाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुख वंदो ज्ञावे ज्ञवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसैं
धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति
सत्यकि नंदन वृषजलंढन सुखदायाजी । विजय ज्ञाली पुखलावइ
विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ
होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस वि-
ख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी ।
ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥
अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणोजी । मोह मिश्यात
तिमिरजर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ ज्ञवोदधि तरणी
भोक्क निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय
समाणी आराधो ज्ञविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी
श्रीपंचागुली माईजी । विघन विमारण संपत्तिकारण सेवकजन
सुखदाईजी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति स-
वाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनदर्ष सदाईजी ॥ ४
॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम
पंचम तपविधि वायक ज्ञायक ज्ञाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांठन
लांठित वंठित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो
ज्ञविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोथक बोथक ज्ञव्य उदार
। पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंडिय
दम सिव पडुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर ज्ञवियण
उपर सुश्रिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम
गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित ज्ञाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरजरमांहे दीपकसम सोजंत । पांचम तपफल
मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-
वाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह ज्ञानी
सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री
जिनलाज सुखिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-
पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमद्वि जनम
व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ।
ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक
अधिक गुण धार । इग्यारे वारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डुगुणा
दोय अधिक जिनराय । मन सूखे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥
२ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये
विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।
इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर जुवण
वण सम्यग् दरसनवंत । जिनचंड सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ
सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण
॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादशीस्तुति ॥

॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल
जाख्यो श्रीजगवंत ॥ नरनारी जावे आराधो तप एह । सुख संपत ली-
ला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ रुषजादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार ।
जिनमुख परकासे बेठी परखदाधार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो
उपवास । मन वंछित लीला सुंदर जोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो
चोढ्यो लाज अनंत । विधसुं परमारथ साथे सुधो संत । सुखदो

इग तेहनो नासि जाय सब दूर । बलि दिन१ अंगे वाधे अधिको
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौजाय
सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर१ महोच्चव नित नवला
सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ परखी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गड
चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथमतुम देखो जिम१ संशय
जाय ॥ १ ॥ चउबीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क
ढपसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर ठाम१
तुम देखो चउदसोपस्की होय, जूला कांइ जमो तुम प्राणी साचो
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख,
जविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी ज्ञाख ॥ आवश्यक
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर
बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो
मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन इ
रेय ॥ सेवक इणपर करे बीनती सूधो समकित पाय, खरतरगड
मंरुण कुमति विहंरुण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पस्को
चोदस शुद्ध संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशान्तिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवज्जयं, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जय
गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाढा ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे, तेहं विजलतवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प
 ज्ञावे, थोसामि सुदिठ सप्पावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सब्ब दुक्कप्पसंतीणं,
 सब्ब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतीणं ॥ ३ ॥
 सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं
 ॥ तह य धिअ मअ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धियं ॥ अजिअस्स य संति
 महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुअ कारणयं च नमं
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जअ दुक्कवारणं, जअ विअ
 ग्गह सुक्ककारणं ॥ अजिअं संतिं च ज्ञावत्तं, अज्जयकरे सरणं पव
 ज्ञहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरअ रअ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज
 रमरणं, सुर असुर गरुल जुयगवई, पयय पणिवअं ॥ अजिअ म
 हसविअ, सुनय नय निज्जणमज्जयकरं, सरणमुवसरिअ जुवि दिवि
 ज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम
 नित्तम सत्तधरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संति
 अरं पणमामि दमुत्तम तिजयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं
 दिसत्त ॥ ८ ॥ सोदाणयं ॥ सावठिपुव्वपठिवं च वरहठि मज्जय प
 सत्त विठिन्न संथिअं थिर सरिअ वत्तं मयगल लीलायमाण वर गंध
 हठि पठाण पठियं संथवारिहं हठिहत्त वाहुं धंतकणग रुअग नि
 रुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुअ सुहम
 णाज्जिराम परम रमणिज्ज वरदेव उंडुहि निनाय महुरयर सुहगिरं
 ॥ ९ ॥ वेद्धत्तं ॥ अजिअं जिआरिणं, जिअ सब्बज्जयं ज्ञवो हरित्तं ॥
 पणमामि अहं पयत्तं, पावं पसमेत्त मे ज्ञयवं ॥ १० ॥ रासालुद्ध
 त्तं ॥ कुरु जणवय हठिणानर नरीसरो पढमंतत्तं महाचक्कव
 ट्ठिज्जोए महप्पज्ञावो जो वाहत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

जणवय वई वत्तीसारायवर सहस्साणु आयमग्गो चउदस वररयण
नव महानिहि चउसठि सहस्स पवर ऊवईण सुंदर वइ
चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी ठसवइगाम कोमि
सामी आसिज्जो जारहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेहउ ॥ तं
संतिं संतियरं, संतिन्नं सब जया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं वि
हेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर, नरव
सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु
अग्या ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय वलाविऊल
कुला ॥ पणमामि ते जवजय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥
१३ ॥ चित्तेहा ॥ देव दाणाविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम,
लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति स
त्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदथेअ सबलोअ जावि
अ प्पजावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल स
सिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणा
इरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते
अ सया अजिअं, सारीरे अवले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं,
एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ नूअगपरिंणिअं
॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ
न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव
इ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥
तिउवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणपुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं
॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयण, संतिमहं महा मुणिं सरण मु
वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणनणय सिरिइ अंजलि, रिसि
गण संथुअं थिमिअं ॥ विवुहाहिव धणवइ नरवइ, थुअ महेअच्चिअं
वहुसो ॥ अइ रुगय सरय दिवायर, समहिअ सप्पजं तवसा ॥

गयणंगण विवरण समुद्र, चारण वंदित्रं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय
 माला ॥ असुर गरुड परिवंदित्रं, किन्नरोरग एमंसित्रं ॥ देव कोमि
 सयसंश्रुयं, समणसंघ परिवंदित्रं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं
 अरुयं ॥ अजित्रं अजित्रं पयन पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसित्रं ॥ आग
 यावर विमाण, दिवकणग रह तुरय पदकर सएहिं हुलित्रं ॥ स
 संजमो अरण खुज्जिअ लुलिअ चल कुंमलंगय तिरीर सोहंत मऊ
 लिमाला ॥ २२ ॥ वेढन ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विज्जता
 नत्ति सुजुत्ता, आयर नूसिअ संजमपिंमिअ, सुहु सुविह्मिअ सबब
 लोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ न्नासुर नूसण न्नासुरिअंगा,
 गाय समोणय नत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥
 रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया
 हिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सज्जवणाइतो गया
 ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि, राग दोस जय
 मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदित्रं, संति मुत्तम महातवं नमे
 ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंवरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस बहुगामि
 णिआहिं ॥ पीण सोणिअण सालणिआहिं, सकल कमल दललो
 अणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर अणन्नरविणमिय गायल
 याहिं, मणिकंचण पसिढिलभेदल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वराखिं
 खिणि नेजर सतिलय वलय विज्जूसणियाहिं, रइकर चजर मणो
 हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तकरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय
 वंदिआहिं वंदिआय जस्त ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहिं
 मंरुणोहुगप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं
 चित्तएहिं संगयं गयाहिं नत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि
 आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अजित्रं
 जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेसं पयन पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥

लंता एतणां सुपूरो, पयम मज्झिमसंती जाण सूरु न जाव ॥९॥
 अरि करि हरि तिण्हु एहं बु चोरा हिवाही, समर रुमर मारी रुद्ध
 खुद्धो वसग्गा ॥ पलय मज्झिमसंती कित्तणे जत्तिजंती, निविमत्तरत
 मोद्धा न्जरालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरिअदारु दित्तजाणग्गि
 जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं ॥ कणय निहसरेद्धा
 कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लब्धिं गाढसंथंनिअव ॥ ११ ॥
 अरुविनिवन्निआणं पण्णिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण
 गुत्ति वियाणं ॥ जलिअ जलण जाला विंगिआणं च जाणं, जणयइ
 लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस्सं पक्क
 पाइक्कपुस्सं, सयलपुहवि रज्जं ठक्किअं आण सज्जं ॥ तण मिव पन्नि
 लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवसा हुंतु ते मे पससा ॥ १३ ॥
 ठणससिक्कणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, अणन्नरनमिरीहिं मुठ्ठिगिज्जोद
 रीहिं ॥ ललिअ नुअलयाहिं पीण सोणिठ्ठणीहिं, सयसुर रमणीहिं
 चंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस्स किम्भि न्नुकुट्ट गंठि कासाइसार,
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसण्णी कुञ्चिक
 साइरगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु
 छुद्धतासे पस्सिए चाउमासे, जिणवर दुग्गमुत्तं वज्जेरे वा पवित्तं ॥
 पढइ सुणइ सिद्धा एह जाणइ चित्ते, कुणइ मुणइ विग्घं जेण धा
 एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे
 सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कोत्तर ॥ तिठ्ठंकर सोल
 सम संति जिणवत्तइ संशुअ, कुरु मंगल मम हर सुडुरिअमखिलं
 पि श्रुणंतइ ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशास्त्रिस्तवनं द्वितीयं ॥

॥ अय नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामणि किरणरंजिअं मुणि
 णो ॥ चलणजुअलं महाजय, पणासणं संयवं बुद्धं ॥ १ ॥ सन्धिय

कर चरण नह मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुं महारो
 गानल, फुलिंग निदृष्ट सवंगा ॥ १ ॥ ते तुह चलणा राहण, स
 लिखंजलिसेय बुद्धिय ज्ञाया ॥ वण दवदद्धा गिरिपा यव व पत्ता
 पुणो लब्धिं ॥ ३ ॥ उवाय खुप्रिय जलनिहि, उप्रम कल्लोल ज्ञी
 सणारावे ॥ संनंत जय विसंतुल, निश्चामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥
 अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण
 चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरं पवणुअ
 वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ रुप्रंत मुद्धमिय
 बहु, ज्ञीसरणरव ज्ञीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,
 निवाविअ सयल तिहुअणान्जोअं ॥ जे संनरंति मणुआ, न कुणइ
 जलणो ज्ञयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत जोग ज्ञीसण, फुरिआरुण न
 यण तरल जीहालं ॥ उग्गजुअं नवजल य, सव्वहं ज्ञीसणायारं
 ॥ ८ ॥ मन्नंत कीरु सरिसं, दूर परिबुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुह
 नामस्कर फुरुसि ह, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु त्ति
 ल्ल तकर, पुलिंद सदल सदज्ञीमासु ॥ जयविहुर वुन्नकायर, उल्लु
 रिअ पडिअ सत्तासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह वसारा, तुह नाह प
 णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्धा सिग्धं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं
 ॥ ११ ॥ पक्कलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह
 कुलिसवायविअलिअ, गइंदकुंजवलाज्जोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंन
 म पठिव, नहमणिमाणिक पमिअ पमिमस्स ॥ तुह वयण पहरण
 धरा, सीहं कुंदपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीह
 करुल्लाल वट्ठि उवाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल
 हरारावं ॥ १४ ॥ ज्ञीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति
 ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लोणा ॥ १५ ॥ स
 मरम्मतिरुक्खवगा, त्तिग्घाय पविद्ध उडुय कवंये ॥ कुंतविणिज्जि

न्न करि कल, ह मुक्कसिक्कार पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर
 रिन्न, नरिंद निवहा ज्ञप्ता जसं थवलं ॥ पावंति पाव पत्तमिण,
 पात्तजिण तुह प्पज्जावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,
 चोरारि मइंद गय रण ज्ञयाइं ॥ पात्त जिणनाम संकि, तणेण
 पत्तमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा ज्ञयहरं, पात्त जिणिंदस्स संथ
 वमुत्थारं ॥ ज्ञविय जणाणंदयरं, कट्ठाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥
 राय ज्ञय जस्क रस्कस, कुसुमिण उस्सन्नण रिक्क पीमासु ॥ सं
 ज्ञासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो
 अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पात्ता पावं पत्तमिन्न,
 सयल जुवणच्चित्र चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्थ्वजिन स्तवनं तृ
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयन्न जय तिष्ठं, जमिष्ठ तिष्ठादि वेण वारेण ॥
 सम्मं पवत्तिअंज, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय
 लकिलेसा, निहय कुलेसा पत्तन्न सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिष्ठ,
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्वक्कम्म वीआ, वीआपरंमि
 णिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पत्तिद्धा, हणंतु उट्ठाणि तिष्ठ
 स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय
 रिआ तह तिष्ठं, निहय कुतिष्ठं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पम्पणीय कए,
 वणित्तु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ
 सव्व साहूजा ॥ तिष्ठप्पज्जायगाते, हवंतु परमिणिणो जइणो ॥ ६ ॥
 जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणकलं च चरणमविद्ववइ ॥ तिष्ठस्स दंसणं
 तं, मंगलमुवणेन सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निष्ठन्नमो सुअधम्मो, समग्ग
 ज्ञवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणमुठ्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

ह दिसन ॥ ८ ॥ रम्मो चरित धम्मो, संपाविअ जवसत्त सिवस
 म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवन सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥
 गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिठस्स ॥
 सिरिवद्धमाण पहुपय, मिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥
 जियपमिवस्काजस्का, गोमुह मायंग गयमुह पमुक्का ॥ सिरि
 वंज संति सहिआ, कय मयरस्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा
 पमिहयमिंवा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्ठा,
 संति सुरा दिसन सुक्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदितु
 संघस्स मंगलं विनलं ॥ अन्नत्ता सहिआन, विस्सुअ सुयदेवयान
 समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रस्का, जस्का चनवीस सासण
 सुरावि ॥ सुहज्जावा संतावं, तिठस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि
 णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहान सब हासवे ॥ वेयावच्च गरा
 विअ, तिठस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुस्समग्ग,
 विहिअ जवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो
 सुहं दिसन ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलअल, वण पवय वासि
 देव देवीन ॥ जिण सासण ठिआणं, उहाणि सवाणि निहणंतु
 ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासस्कि, तवालयया नवग्गहा सनरक्ता ॥
 जोइणि राहुग्गइका, लपास कुलिअइ पहेरेहिं ॥ १८ ॥ सहका
 ल कंटएहिं, सविठिवठेहिं कालवेदाहिं ॥ सबे सबन्न सुहं, दिसंतु
 सबस्स संघस्स ॥ १९ ॥ जवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ
 य जे देवा ॥ धरणिंद सक सहिआ, दलंतु डुरिआइं तिठस्स ॥ २०
 ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरनपणासिअ तमोहं ॥ तंतिठस्स ज
 गवत्त, नमो नमो वइमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयन जिणो वीरो,
 जस्स ऊविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं
 सब जय महणं ॥ २२ ॥ सिरि नसज्जसेण पमुहा, हयज्जय नि

वहा दिसंतु तिष्ठस्स ॥ सव्व जिणाणं गणिहा, रिणो एहं वंढिअं
 सव्वं ॥ १३ ॥ सिरि वद्धमाण तिष्ठा, हिवेण तिष्ठं समप्पिअं जस्स
 ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसन्न सुहं सयल संघस्स ॥ १४ ॥ पय
 इएज्जिआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुरा विहु स
 म्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ १५ ॥ इय जो पढइ तिसंजं,
 डस्सअं तस्स नत्ति किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएग्गिन्न, सुनिद्धिअण
 मुही होई ॥ १६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं
 ॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिज्जणं ॥
 सुगुरुजण पारतंतं. उवहिअं घुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणछ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ,
 सुह संदोहा सुगुण नेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त पर
 तिष्ठ जणिय संखोहा ॥ पन्निजग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्त
 सज्जोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्तवाहा, हय डह दाहा सिवंव तरु
 साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदखिणुव अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु
 गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह
 साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुदा,
 गुणगण निवहा सुरिंद विहिय मदा ॥ ताण तिसंजं नामं, नामं
 न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअ जिणदेवो, देवायरिन्न डुरंत
 जवहारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥
 सिरि वद्धमाण सूरि, पयमीकय सूरि मंत माइप्पो ॥ पन्निहय कसाय
 पसरो, सरय ससंकुव सुहजणन ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ए
 पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तज्जाणन पणय
 सुगुणजणन ॥ ९ ॥ पुरनं डल्लह महिय, छहस्स अणहिअ वारुए
 पयसं ॥ मुक्कावि थारिक्कणं, सीदेणव ववद्धिंणि गया ॥ १० ॥ व

समञ्चैरय निसिवि, प्फुरंतु सञ्चंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरैणव सूरि
 जिणे, सरेण हयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुक्कइत्त पत्त किन्ती, पय
 निअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पदय परवाइ दिन्ती, जिणचंद जई
 सरो मंती ॥ १२ ॥ पयनिअ नवंग सुत्तव्व, रथणुक्कोसो पणासिअ
 पणसो ॥ जवन्नीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥
 ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधणिअं
 ॥ सिरि अन्नयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पत्तमधरो ॥ १४ ॥ कय
 सावय संतासो, हरि व सारंग जग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द
 लणो, आसाइअ पवर कवरसो ॥ १५ ॥ ज्जीमज्जव काणणमिअ,
 दंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुत्त, सूरि जिणव
 छहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिअ सच्चरणो, चउरणुत्तंग प्पहाण
 सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उठ्ठमुहो सहइ जस्स करो ॥
 ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावत्तव्व जत्त
 ॥ गुरुगिरि गरुत्त सरहिव्व, सूरि जिणवच्छहो होत्ता ॥ १८ ॥ जुग
 पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया जव्वा ॥ जेण जिणवच्छ
 हेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि
 रोमणी वूढ डुव्ह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सहइ सत्ताणता
 णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महोणं, सुगुरूणं पारत्तंत मुव्वइ ॥
 जयइ जियइ जिणदत्त सूरि, सिरि निलत्त पणय मुणितिलत्त ॥
 २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंजयनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरत्त विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥
 सिरि पासजिणो अंजण, पुरठिन्नि निठ्ठिआनिठ्ठो ॥ १ ॥ गोयम सु
 हम्म पमुहा, गणवणो विहिअ जव्व सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाण
 जिणति, व सुव्वयंतं कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिणं

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अथहरिश्च विग्ध संघा, हवंतु ते संघ संति
 करा ॥ ३ ॥ सिरि अंजणय छिअ पा, ससामि पयपन्नम पणय पा
 णीणं ॥ निद्वलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरणं डुरिआइं ॥ ४ ॥
 गोमुहपमुक्क जरका, पणिदय पणिवरक पस्क जरका ते ॥ कयसुगु
 ण संघ ररका, हवंतु संपत्त सिवसुरका ॥ ५ ॥ अप्पणिचक्का पमुहा,
 जिण सासण देवयान जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु
 संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सकाए सासच्चउर, पुरिद्धं वद्धमाण
 जिण ज्ञत्तो ॥ सिरि वंज संति जरको, ररकण संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥
 खित्तिगिह गुत्त संता, ए देस देवाहि देवया तान ॥ निबुड पुर प
 हियाणं, ज्ञवाण कुणंतु सुरकाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहि
 पहरि उट्ठिस्स कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सब्बहा ह
 रण विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिठवइ वद्धमाणो, जणेसरो संगण सुसंघेण
 ॥ जिणचंदो ज्ञयदेवो, ररकण जिणवत्तहा पडुमं ॥ १० ॥ सो
 जयण वद्धमाणो, जणेसरो णेस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा ज्ञय
 देवा, पडुणो जिणवत्तहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवत्तह पाए,
 ज्ञयदेव पडुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, णमाण तिठस्स
 बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ;
 मणसा वयसा वजसा, जयंतु सादम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदं त
 गणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वाडुरंत्यपए
 नमामि सादम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति पष्ठं स्मरणम् ॥ ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् ॥ इय का

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण सुं चपुक्कं ॥ विस
 रविसनिष्सासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्याज्जाणइ ॥ ज्ञवेज्जे
 पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीलक्ष्मीपार्वजिन
 वनं सप्तम स्मरणम् ॥ ४ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तं ॥ ॥ ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उ
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तो
त्र्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रे ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विना
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविंगतत्रपोऽहम् ॥ वा
लं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद् शशांककांतान्, कस्ते क
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कट्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को
वा तरीतुमलमंबुनिधिं जुजाज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विंगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी
र्यमविचार्य मृगोमृगेंडं, नाज्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्
॥ ५ ॥ अद्वयश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुघात्रक
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिसंनिबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरज्ञाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी
लमशेषमाशु, सूर्याशुज्जिन्नमिव शर्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदविंडुः
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशज्ञांजि ॥ ९ ॥ नात्यजुतं जुवन
जूपणजुत नाथ, जूनैर्गुणैर्जुवि जवंतमज्जिपुवंतः ॥ तुड्या जवंति
जवतो ननु तेन किं वा, जूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति
 जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति डुग्धसिंधोः, क्षारं जलं
 जलनिधेरशितुं क इहेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिन्निः परमाणु
 जिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिजुवनैकललामज्जत ॥ तावन्त एव खलु तेऽप्य
 एवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क
 ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥ विंशं
 कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्दासरे ज्वति पांडुपलाशकटपम्
 ॥ १३ ॥ संपूर्णमंरुतशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिजुवनं तव
 लंघयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति
 संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाजि,
 नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कटपांतकालमरुता चलि
 ताचलेन, किं मंदरादिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव
 र्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न
 जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः
 ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा
 युगपज्जगन्ति ॥ नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्यातिशायिमहि
 मासि मुनीन्! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,
 गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाज्जमन
 टपकांति, विद्योतयज्जगदूर्ध्वशशांकविंशम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु
 शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेऽदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि
 ष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियजलधरेर्ज्ज्वन्नारनत्रैः
 ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिद
 रादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु
 काचशकले किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिद्वरादय एव
 दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन ज्वता नृ

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्ञवांतरेपि ॥ ११ ॥ स्त्री
 णां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
 प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
 यति स्फुरदंशुजालम् ॥ १२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,
 मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलज्य जयन्ति
 मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींश्चरन्त्याः ॥ १३ ॥ त्वामव्ययं वि
 ज्ञुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माण्णमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥ १४ ॥
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि ज्ञुवनत्रयशंक
 रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग
 वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ १५ ॥ तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्तिहराय नाथ,
 तुज्यं नमः क्लितितलामलजूपणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
 राय, तुज्यं नमोजिनज्जवोदधिशोषणाय ॥ १६ ॥ को विस्मयो
 ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
 दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
 ऽसि ॥ १७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपममलं
 जवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव
 पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ १८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
 भ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं त्रियद्विलसदंशुलताविता
 नं, तुंगोदयाद्दिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ १९ ॥ कुंदावदातचलचाम
 रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छांकशु
 चिर्निर्जरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंजम् ॥ २० ॥ उत्र
 त्वयं तव विज्जातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता
 पम् ॥ मुक्ताकलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्वर
 त्वम् ॥ २१ ॥ उन्निद्धेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाजिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेऽ धत्तः, पद्मानि त
 त्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरञ्जुज्जिने
 ऽ, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रज्ञा दिनकृतः प्रह
 तांधकारा, तादृकुतोयद्गणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्रयोत
 न्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ
 रावताजमिन्नमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा ज्ञयं ज्ञवति नो ज्ञवदाश्रिता
 नाम् ॥ ३४ ॥ जिन्नेज्जकुंजगलडुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर
 जूपितजूमिजागः ॥ वद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति
 क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कट्पांतकालपवनोद्धतवह्निकटपं,
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु
 खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं
 समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फलेनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्राम
 ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः
 ॥ ३७ ॥ वटगतुरंगगजगर्जितजीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि नू
 पतीनाम् ॥ उद्यद्देवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु
 जिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रजिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावता
 रतरणातुरयोधजीमे ॥ युद्धे जयं विजितडुर्जपजेयपक्षा, स्त्वत्पाद
 पंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अञ्जोनिधौ कुञ्जितजीपणन
 क्रचक्र, पाठीनपीठजयदोह्वणवारुवाप्तौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितया
 नपात्रा, स्वासं विहाय ज्ञवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उन्नतजी
 पणजलोदरज्जारज्जुगाः, शोण्यां दशामुपगताऽयुतजीविताशाः ॥
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्यदेहा, मर्त्या ज्ञवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः
 ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टिनांगा, गाढं बृहन्निगमकोटिनिघृ
 ष्टजंवाः ॥ त्वन्नामसंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विग
 तबंधज्ञया ज्ञवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विप्रेऽमृगराजश्चानुलादि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोद्धम ॥ तस्याशु नाशमुपयाति ज्ञयं ज्ञियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्वजं तव जिनेन्द्र
गुणैर्निबद्धां, ज्ञत्वा मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो
य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४
॥ इति ज्ञक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ ज्ञो ज्ञो ज्ञव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वं मेतत्, ये या
त्रायां त्रिजुवनगुरोरार्हतां ज्ञक्तिज्ञाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु ज्ञवताम्
ईदादिप्रज्ञावा, दारोग्यश्रोष्टृ तेमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥
ज्ञो ज्ञो ज्ञव्यलोका इह हि ज्ञरतैरावतविदेहसंज्ञवानां, समस्तती
र्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः
सुधोपाधण्डाचालनानन्तरं सकलसुरासुरैः सह समागत्य सविन
यमर्हन्नट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाङ्गिण्णे, विहितजन्माज्ञिषेकः,
शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन
गतस्स पंथाः ॥ इति ज्ञव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं वि
धाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं
इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं १, प्रीयं
तां १, जगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रै
लोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥
ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विम
ल ५, सर्वानुज्जृति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,
स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग
१५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जि
नेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४,
एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतित्थिकराः ॥

॥ ॐ श्रीरूपज्ञ १, अजित २, संज्ञव ३, अग्निनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज्ञ ६, सुपार्थ ७, चंद्रप्रज्ञ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंभ १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्थ २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्थ ३, स्वयंप्रज्ञ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोष्टिल ९, शंत कीर्ति १०, सुवत ११, अमम १२, निष्कपाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, न इंकर २४.

॥ एते ज्ञावितीर्थिकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा ज्ञ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयडुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र कंतु यो नित्यं ॥ ॐ श्रीनान्ति १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृष्ट १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, ज्ञानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्थ ४, सुमंगला ५, सुस्तीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रज्ञावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, ऋकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, ऋकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंदा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणा १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थिकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंगला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोढ्या १३, अच्युता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ अहाश्वेदसूर्यागारकबुधवृहस्पतिशुक्रशनैश्वरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाःसोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतावयस्ते सर्वे प्रीयन्तां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यश्च ज्वंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रव्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिवंधु
 वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो ज्वंतु ॥ अस्मिंश्च जूमं
 मले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस
 र्गव्याधिदुःखदौर्भनस्योपशमनाय शान्तिर्ज्वंतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टि
 द्विवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः ज्वंतु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा
 नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा ज्वंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना
 याय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाञ्ज
 र्चिताम्बुजे ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे
 गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहेष्टहे ॥ २ ॥ ॐ उ
 न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्,
 नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा
 जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्ज्वंतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्ज्वंतु, श्रीराज
 संनिवेशानां शान्तिर्ज्वंतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्ज्वंतु, ॐ स्वाहा
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शान्तिः प्रतिष्ठा
 यात्रास्नात्रावसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुध
 पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपाठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शु
 वपुः पुष्पवस्त्रश्रंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं त्रिधाय पुष्पम
 कंठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति
 ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो
 त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणज्जाजोहि जिनान्निषेके ॥ १
 ॥ अदं तिष्ठयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह
 शिवं तुम्ह शिवं, अमुद्दोवसमं ज्वंतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु
 सर्वजगतः, परहितनिरता ज्वंतु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं,
 सर्वत्र सुखी ज्वंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः कथं यान्ति, विद्यंते वि

प्रवृत्तयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति
श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हन्नयो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं
अर्हं सिद्धेन्द्रयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येन्द्रयो नमो
नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेन्द्रयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ
र्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुन्द्रयो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच
नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति
मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ क
मलप्रज्ञसूरींशो, ज्ञापते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकज्जकोपवासेन, त्रिकाले
यः पठेदिदं ॥ मनोजितपितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ नू
राध्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, य
एमासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चकुर्वलाटके
॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं
मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वा
र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनदेवी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अं
॥ गंधिषु सर्वज्ञः, परभेष्टी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वांशां श्रीजिनो रक्षे,
अग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणांशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवि
त् ॥ ९ ॥ पश्चिमांशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थ
रुत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं जगवानर्ह,
न्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥
११ ॥ शूषको मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संज्ञ
वः कर्णयुगलं, नासिकां चाज्जिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ठौ श्रीसुमती र
क्षेत्, दंतान्पद्मप्रज्ञो विष्णुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रज्ञो
विष्णुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशोतलः ॥ श्रे

यांसो वादुयुगलं, वासुगूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते,
 दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽपुदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाज्जिमंमलं
 ॥ १५ ॥ श्रोकुंभुर्गुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥ मद्धिरूरुपृष्ठिं
 शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमि
 भरणद्वयं ॥ श्रीपाद्वर्धनाथः सर्वांगं, वर्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥
 पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेदशपापेभ्यो, वी
 तरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंक
 टे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, जूनप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे
 प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी
 निते ॥ २० ॥ माकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहणादिते ॥ नद्युत्ता
 रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुवाय, यः
 स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लज्जते सुखसंपदं ॥ २२ ॥
 जिनपंजरनामेदं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रज्ञराजेंड, श्रियं स
 लज्जते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुवाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेत
 ज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सः कमलप्रज्ञाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछित
 पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपत्नीयवरेण्यगत्रे, देवप्रज्ञाचार्यपदाब्जद्वं
 सः ॥ वार्दीङ्चूनामणिरेपजैनो, जीवाद् गुरुः श्रीकमलप्रज्ञाख्यः
 ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोर्मैस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वटानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पत्तरुं अयाण चिंतनं मणजितरिं, किं चिंतामणि
 कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघन,
 रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघन ॥ चवदे पूरव सार युग लढन
 ए नवकार, सयल काज महिवल सरे उत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

बलि ज्ञासिय रीत जिके नवकार आराहै, जोगवि सुख अणंत
 अंत परम प्यसाहै ॥ इण जाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु
 परि, इण जाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो
 जपे अर्चित चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि
 नियगेह ॥ १ ॥ निय सिर ऊपर जाण मझ चिंतवै कमल नर,
 कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अ
 रिहंतदेव पञ्चमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहरैवि पढम पय
 चिते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुख,
 अरिहंत जाणे तुम लहो जिम अजरामर मुख ॥ ३ ॥ पनर जे
 य तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे, राते विडुमतणे वन्ननिय सो
 हग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धहिं पुढे दिसि, सयल लोय
 तिह नरहि होइ ततखिणसेवसि ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर स
 हू जगधंद, मणमूली उग्रय करे बुद्धि हीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिण
 दिसि पंखनी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित
 उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाज ऊपर जे ध्यावे, पहरै
 पीलावत्थ तेह मन वंठिय पावै ॥ इण जाणे नव निधि हुवेए
 रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर ठत्त सिर
 जीय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवजाय सीस पाढंता पछिम, आराहिजे
 अंगे पुव धारंत मणोरम ॥ पछिम दिसि पंखनीय कमल ऊपर सु
 हजाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्के
 विडुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल
 सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ तर्ब साधु उत्तर विज्ञाग सामला वडवा, जि
 ण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिवा ॥ मण वयण काएहिं
 जपे जे एके जाणै, पंचवन्न तिहां नाण जाण गुण एह पमाणे ॥
 अनंत चौदीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नदी इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ
 गणेहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि जाएह
 मंगलाणं च सबेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पणसिं ॥ चिहुं वि
 सि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु
 जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रज्ञाव धरणिंद हुन
 पायालह सामी, समलोकुप्र उपन्न जिल्ल सुर लोयह गामी ॥
 संवल कंवल वे वलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीयो चोर देव थयो
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंठिय करे जोगी लियो मसा
 ण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके बैगे
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह
 नामी ॥ वाठरू आचारंत वाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही
 उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सबे सरे इरत परत
 विमास, पाळित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर
 धाम संकट टले राजा वसि होवे, तिष्ठंकर सो होइ लाख गुण वि
 धिसुं जोवे ॥ साइण डाइण झूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आवि
 व्याधि अहतणी पीरुते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे
 नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय जाण करंत ॥
 ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण
 वनमठ एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिष्ठराज महिमा
 उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिष्ठंकर
 गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण
 गिरुनु नवकार ॥ १२ ॥ अरु संपय नव पय सहित इणसठ लहु
 अस्कर, गुरु अस्कर सत्तैव इह जाणो परमस्कर ॥ गुरु जिण वल्लह
 सूरि जणे सिव सुखइ कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु उक्क
 निवारण ॥ जल अल महियल वनगइण समरण दुवैइक चित्त, पंच

परमेष्टि मंत्रद्वय तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि
महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शक्ति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महापामिहेर जुत्ताणं ॥ सम
य खित्त ढियाणं । सरेमि चकं जिणं दाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय असिआ ।
पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेज सयल डुरियं । नवियाणं
नत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिं
दा ॥ गहन्नूअ रक्क साइणि । घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ ३ ॥ सत्तरि पण
तीसा विय । सढी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि
। चौरारि महाजयं हरउ ॥ ४ ॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नढी तहय
चेव चाळीसा ॥ रक्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५
॥ नै हरहुंहः सरसूंस । हरहुंहः तहय चेव सरसूंसः ॥ आलिहिय
नाम गप्पं । चकं किर सव्वज्जं नदं ॥ ६ ॥ नै रोहिणी पन्नत्ती । व
ज्जासंखला तहय वज्जाअंकुसिआ ॥ चक्रेसरि नरदत्ता । कालि महाका
लि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुद्ध तहय
अद्युता ॥ माणसि महमाणसिआ । विज्जा देवीज रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस
कम्मजूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो ।
वसोहिअं हरउ डुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसव जुआ । अठ
महापामिहेर कयसोदा ॥ तिठयर गयमोहा । जाए अवा पयत्तेण
॥ १० ॥ नै वर कणय संख विहुम । मरगय घण सन्निहं विगय
मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सव्वामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥
नै चुरणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि
उठ देवा । ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं
। फल हेलिहिज्जणखालिअंपीयं ॥ एगंतरगइमुग्गय । साइणि नृयं
पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं डुवार पत्ति

नन्ही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ
 गणोहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरोहिं ॥ वायव दिसि जाएह
 मंगलाणं च सबेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दि
 सि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु
 जानी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रज्ञाव धरणिंद हुन
 पायालह सामी, समलोकुप्रर उपन्न जिह्न सुर लोयह गामी ॥
 संवल कंवल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंठिय करे जोगी लियो मसा
 ण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके बैठो
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह
 नामी ॥ वाठरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही
 उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सबे सेरे इरत परत
 विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर
 धाम संकट टले राजा बसि होवे, तिठंकर सो होइ लाख गुण वि
 धिसुं जोवे ॥ साइण डाइण जूत प्रेत बेत्ताल न पोहवे, आवि
 व्याधि ग्रहतणी पीरुते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे
 नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय जाण करंत ॥
 ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण
 उठमठ एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सचुंजय तिठराज मदिमा
 उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिठंकर
 गणहर पणिय चवदह पूरव तार, इण गुण अंत न को कहे गुण
 गिरुनु नवकार ॥ १२ ॥ अरु संपय नव पय सहित इणसठ लहु
 अस्कर, गुरु अस्कर सत्तैव इह जाणो परमस्कर ॥ गुरु जिण वल्लह
 सूरि जणो सिव सुखद कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु डस्क
 निवारण ॥ जल अल मडियल वनगइण समरण हुवै इक चित्त, पंथ

परमेष्टि मंत्रं तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि
महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शक्ति जिन स्तोत्र ॥

॥ निजय पदुत्त पयासं । अठ महापामिहेर जुत्ताणं ॥ सम
य खित्त धियाणं । सरेमि चक्कं जिणं दाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय अस्मिन्ना ।
पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेन सयल डुरियं । नवियाणं
नत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिं
दा ॥ गहन्नूअ रक्क साइणि । घोरुवसगं पणासेइ ॥ ३ ॥ सत्तरि पण
तीसा विय । सवी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि
। चौरारि महाजयं हरण ॥ ४ ॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नवी तहय
चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिन्ना सिद्धा ॥ ५
॥ नुँ हरहुंहुः सरसूंस । हरहुंहुः तहय चेव सरसूंसः ॥ आलिदिय
नाम गप्पं । चक्कं किर सवणं जदं ॥ ६ ॥ नुँ रोहिणी पन्नत्ती । व
जासंखला तहय वज्जअंकुसिन्ना ॥ चक्केसरि नरदत्ता । कालि महाका
लि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुद्ध तहय
अद्युत्ता ॥ माणसि महमाणसिन्ना । विज्जा देवीन रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस
कम्मजूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो ।
वसोहिअं हरण डुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसव जुआ । अठ
महापामिहेर कयसोदा ॥ तिठयर गयमोहा । जाए अवा पयत्तेण
॥ १० ॥ नुँ वर कणय संख विदुम । मरगय घण सन्निहं विगय
मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सवामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥
नुँ चुत्तणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि
डुठ देवा । ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं
। फल देलिहिज्जणखालिअपीवं ॥ एगंतरगइमुगय । साइणि नूयं
पणासेइ ॥ १३ ॥ इव सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं डुवार पणि

विदियं ॥ डुरिआरि विजयतंतं । निघ्नंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥
॥ इति शतति जिन स्तोत्रं ॥

॥ अथ नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ दोसावहार दरको, नालियायरविद्यासिगोपसरो ॥ रयणत्तय
स्स जणउ, पासजिणो जयउ जय चरू ॥ १ ॥ कय कुंवलय प
मिघोहो, हरणं किय विग्गहो कला निलउ ॥ विहियारविंद मद्द
णो, दीयरानु जयउ पासजिणो ॥ २ ॥ कंतीइ निज्झिणंतो, सि
दूरं पुहवि नंदणो कूरो ॥ जय जंतुअमअबक्को, सुमंगलो जयउ
पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलं दल नीलरुइ, हरिमंमल संघुउ इलानंदो
॥ रयणियरदारउमद्द, बुहोपसीइज्झ पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय
वियटो, नायटो नागरायकय पूउ ॥ सिरि पासनाह देवो, देवाय
रिउ सुहं दिसउ ॥ ५ ॥ राया वट्ट समुज्जलं, तणुप्पहा मंमलो म
हांज्जूइ ॥ असुरेहिं नमिज्झंतो, पासजिणंदो कवी जयउ ॥ ६ ॥
तिमिरासि समारूढो, संतो डुखावहो जयंमि थिरो ॥ बहुलतमा
सरिस्स सिरी, जय चरू सुउ जयउ पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दो
सायर, मायंमरहं अहो तणु विमुक्कं ॥ लोआ जरण्णी जूयं, पास
जिणं सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ डुरिआइं पासनाहो, सिंहावमालीनहो
जवणकेउ ॥ दूरंतम रासीउ, सत्तम णाण णिउ हरउ ॥ ९ ॥ इअ
नवग्रह थुइ गप्पं, जिणपहसूरीहिं गुंफियं अवरणं ॥ तुह पास पढइ
जोतं, असुहावि गहा न पीमंति ॥ १० ॥ इति नवग्रह गर्भित
पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन गर्भित नवग्रह शांति स्तोत्रम् ॥

॥ जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सदुरुज्जापितं ॥ गृहशांतिं प्र
वक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्राः खेचराक्षेयाः, पूज
नीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैः, नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥

१८ मार्त्तन्, श्रृङ्गप्रज्ञस्य च ॥ वासुपूज्ये जूमिपूज्यो, बु
धोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माः, शान्तिःकुङ्कुर्नमिस्त
था ॥ वर्द्धमानो जिनेऽङ्गाणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ रुषजा
जतसुपार्श्वा, श्रान्तिनंदनशीतलौ ॥ सुमतिः संज्ञवः स्वामी, श्रेयांस
वृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्वरः ॥
मिनाष्ट्रे जवेऽराहुः, केतुः श्रीमद्विपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाँल्लये च
रौ च, पीरुयंति यदा ग्रहाः ॥ तदा संपूजयेद्दीमान्, खेचरैः स
हतान् जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पं गंधादिभिर्धूपैः, फलनैवद्यसंयुतैः ॥ व
र्णसदृशदानैश्च, वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्यसोममंगल,
बुधगुरुशुक्राः शनैश्वरो राहुः ॥ केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपुरतोव
तिष्ठन्तु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ स्तुताश्च पू
जिता ज्ञक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावहाः ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः
स्थित्वा, ग्रहाणां सुखहेतवे ॥ नमस्कारशतं ज्ञक्त्या, जपेदष्टोत्तरं
शतम् ॥ ११ ॥ जप्त्वाहुर्वाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रज्ञाव
तः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधिर्मतः ॥ १२ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनग
र्हित नवग्रहशान्ति स्तोत्रम् ॥

॥ सूर्यग्रह कूर होय तो १ पद्मप्रज्ञजीकी माला फेरणी.
चंद्र । २ चंद्राप्रज्ञजीकी ॥ मंगल । ३ श्रीवासुपूज्यजी ॥ बुध । ४ श्री
विमलनाथजी, अनंतनाथजी, श्रीधर्मनाथजी, श्रीअरनाथजी, श्री
शान्तिनाथजी, श्रीकुङ्कुनाथजी, श्रीनमीनाथजी, श्रीमहावीरस्वामी
॥ वृहस्पति । ५ श्रीरूपप्रदेवजी, श्रीअजितनाथजी, श्रीसुपार्श्व
नाथजी, श्रीअजिनंदनजी, श्रीशीतलनाथजी, श्रीसुमतिनाथजी,
श्रीसंज्ञवनाथजी, श्रीश्रेयांसजी ॥ शुक्र । ६ सुविधिनाथजी ॥
शनैश्वर । ७ श्रीमुनिसुव्रतजी ॥ राहु । ८ नेमनाथजी ॥ केतु
। ९ मद्विनाथजी, पार्श्वनाथजी ॥ रंग मुजव दान गुरुसुपात्रज्ञ

क्ति करणी मात्वा पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये उर
जावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यन्नेदि, जीताजयप्रदमनिंदितमंहि
पद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमज्जिनम्व जिने
श्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमावुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत
मतिर्न विभ्रुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्या
हमेव किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युगलम् ॥ सामान्यतोऽपि तव
वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश जवंत्वधीशाः ॥ धृष्टोपि
कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल वर्मरश्मेः ॥
३ ॥ मोहकयादनुजवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न
तव क्षमेत ॥ कलपांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन ज
लधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अच्युयतोस्मि तव नाथ जमाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ वालोऽपि किं न निजबाहुयुगं
वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांवुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिना
मपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं जयति तेषु समावकाशः ।'
जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिर्लो
ऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामर्चित्यसहिना जिनसंस्तवस्ते, नामाणि ऋअ
जवतो जवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपद्वतपांश्रजनान्निदाधे, रास पदं
पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्दर्शिनि त्वयि विरं गग्निं त
लोज्जवंति, जंतोः क्षणेन निविन्ना अपि कर्मबंधाः ॥ तयो
मया इव मध्यज्जाग, मज्ज्यागते वनशिखंकिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मु
च्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेऽ, रौडैरुपड्वजतेस्त्वयिव्रीक्षितेपि
॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चैरेस्त्वाशु पशवः प्रपला
यमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारकोजिन कथं जविनां त एव, त्वामुब्रह्मंति द

दधेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गतस्य म
 रुतः स किलानुज्ञावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रज्ञाव
 वाः, सोऽपि त्वयारतिपतिः कृपितः कृणेन ॥ विध्यापिता हुतभुजः
 पयसाश्च येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धवामवेन ॥ ११ ॥ स्वामि
 न्नतुल्यगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथकहो हृदये दधानाः
 ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा
 प्रज्ञावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रश्नं निरस्तो, ध्वस्ता
 स्तदा वत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोपत्यमुत्र यदि वा शिशिरा
 पिलोके, नीलझुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो
 गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांशुजकोशदेशे ॥
 पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संज्ञवि पदं ननु कर्णिकायाः
 ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश जवतो जविनः कृणेन, देहं विहाय परमा
 त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाहुपलज्ञावमपास्य लोके, चामीकरत्व
 मचिरादिव धातुज्जेदाः ॥ १५ ॥ अंनः सदैव जिन यस्य विज्ञाव्यसे
 त्वं, ज्ञव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि
 वर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुज्ञावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म
 रीपिन्निरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेऽ जवतीह जवत्प्रज्ञावः ॥
 चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रज्ञावः ॥ त्वामेव दीततमसं परवादिनोपि, नूनं विज्ञो हरिहर
 शांतिनामप्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिज्जिरीश सितोपि शंखो, नो गृ
 ॥ १७ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुज्ञा
 वा, दास्तां जनो जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अच्युजते दिनपतौ
 स महोरुहोपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १८ ॥
 चित्रं विज्ञो कथमवाङ्मुखवृतमेव, विष्वक् पतन्यविरला सुरपुष्पवृ
 ष्णिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छंति नूनमथैव हि

बंधनानि ॥ १० ॥ स्थाने गज्जीरहृदयोदधिसंज्ञवायाः, पीयूषतां
 तव गिरः समुदीरयन्ति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगजाजो, ज्ञव्या
 ब्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ ११ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमु
 त्पतंतो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते
 मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धजावाः ॥ १२ ॥ श्यामं
 गज्जीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह ज्ञव्यशिखंनिनस्त्वाम्
 ॥ आलोकयन्ति रजसेन नवंतमुच्चै, श्रामीकरादिशिरसीव नवांबुवा
 हम् ॥ १३ ॥ उद्गच्छता तव शितियुतिमंरुलेन, लुप्तदृढविरगो
 कतरुवज्ज्व ॥ सान्निध्यतोऽपि यवि वा तव वीतराग, नीरागतां
 ब्रजति कोन सचेतनोपि ॥ १४ ॥ ज्ञोज्ञोः प्रमादवधूय ज्ञजध्वमे
 न, मागत्य निर्धृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्र
 याय, मन्ये नदन्नज्जिनजःसुरडुंडुज्जिस्ते ॥ १५ ॥ उद्योतितेषु ज्ञ
 वता ज्ञवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताक
 लापकलितोच्चसितातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुवमज्युपेतः ॥
 ॥ १६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिमितेन, कातिप्रतापयशसामिव सं
 ख्येन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण जगवन्नज्जि
 तोविज्ञासि ॥ १७ ॥ दिव्यसृजोजिन नमतिदशाधिपाना, मुत्सृज्या
 रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयन्ति ज्ञवतो यदि वा परा
 त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ १८ ॥ त्वं नाथ जन्मरास पढश
 राड्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युद्धं विरं गर्भित
 निपश्य सतस्तवेव, चित्रं विज्ञो यदसि कर्मविपाक ॥ नद्यो
 विधेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाकरश्वदनस्य ॥ १९ ॥ सु
 मीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं ज्ञातस्त्वयिवीक्षितेपि
 श्वविकाशहेतुः ॥ २० ॥ प्राग्ज्ञारसंज्ञतनजासि स्वाशु पशवः प्रपला
 पितानि क्रमणेन शवेन यानि ॥ वायापि तैस्तैव, त्वामुद्धन्ति ह

ताशो, यस्तस्त्वमीजिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्जज्ञोर्जितं
 घनौघमदब्रज्जीमं, ब्रश्यत्तन्निन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त
 मथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥
 ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुं, प्रालंबञ्जृजयदवक्रविनिर्यदग्निः ॥
 भ्रेतव्रजः प्रतिज्वंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽजवत्प्रतिज्वं जवदुःखहे
 तुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति वि
 धिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ जक्तयोद्धसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः, पादद्व
 यं तव विजो जुवि जन्मजाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारजववारिनि
 धौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु
 तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्भिर्गहरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥
 जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानवकृ
 तम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवानां, जातो निकेतनमहं मयि
 ताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं वि
 ज्ञो सकृददि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामन
 र्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महि
 तोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि जक्त्या ॥
 जातोऽस्मि तेन जनवांधवदुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न
 ज्ञावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाश्र दुःखजनवत्सल हे शरण्य, कारु
 विमलं विवसते वशिनां वरेण्य ॥ जक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,
 शांतिना प्रपन्नं साधितरिपुप्रथितावदातम् ॥ स्वत्पादपंकजमपि प्र
 ॥ वृद्धं विविधवत्, वध्योऽस्मि चेज्जुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥
 वा, दास्तां जनोद्देशाखिलवस्तुसार, संसारतारक विज्ञो जुवनाधिनाथं
 स महोरुहोपि, किं करुणाहृद मां पुनीदि, सीदंतमद्य जयव्यसनांबु
 चित्रं विज्ञो कथम् ॥ यद्यस्तिनाश्र जवदंहिसरोरुहाणां, जक्तेः फलं कि
 षिः ॥ त्वद्गोचरे

मपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ज्ञूयाः,
स्वामी त्वमेव जुवनेऽत्र जवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहिताग्रयो
विधिवज्जिनेऽ, सांझेस्त्रसत्पुलककंचुकितांगजागाः ॥ त्वद्विबनिर्मल
मुखांबुजवद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विज्ञो रचयंति ज्ञव्याः ॥ ४३ ॥
जननयन कुमुदचंद, प्रज्ञास्वराः स्वर्गसंपदो ज्ञुक्त्वा ॥ ते विग
लितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ इति श्रीक
ल्याणमंदिरस्तोत्रं ॥

॥ अथ रुषिमंडल स्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं, मक्षरं व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा
लासमं नाद, विंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं, मं
नोमलविसोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, स
र्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हद्व्य ईशेभ्यः, ॐ सिद्धेभ्यो न
मोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः
सर्वसाधूभ्यः ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ नमः त्वद्विष्टेभ्यः । चा
रित्रेभ्यो नमोनमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्शदायकं शुभं ॥
स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां
रक्ते, त्परं रक्ते तु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्ते च त्रेदे, तुर्यं रक्ते च नासिकां
॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्ते, षष्ठं रक्ते च घंटिकां ॥ नान्यंतं सप्त
मं रक्ते, इहेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणयतः सांतः, सरेफोद्यन्धि
पंचपान् ॥ सप्ताष्टदशसर्थाकान्, श्रितोविंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥
पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातो ज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये
॥ ह्रीं सांतदसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हूः हं हं हूं ह्रौं
ह्रः अस्ति आनसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः । जंबुवृक्षधरो वीरः,
कारोदधितमावृतः ॥ अर्द्धदायकैरष्टः, काष्ठविंशत्यलंकृतः ॥ ११ ॥

सन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलकैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तारं, स्तारा-
 म्मन्दममन्तः ॥ १३ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥
 नमामि विंबमार्दित्यं, ललाटस्य निरंजनं ॥ १४ ॥ अक्षयं निर्मलं
 शांतं, बहुलं जाड्यतोद्धितं ॥ निरीदं निरदंकारं, सारं सारतर-
 घनं ॥ १५ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं, सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-
 चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १६ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं
 चिरसं परं ॥ परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १७ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च,
 त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १८ ॥
 संकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं त्रान्तिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं
 वीतसंश्रयं ॥ १९ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥
 ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ २० ॥ अर्हदारण्यस्तु-
 चर्णीतः, सेरफो विंडुमन्तः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-
 माहितः ॥ २१ ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, धूपजायां जिनो-
 त्तमाः ॥ वर्णैर्निजेर्निजैर्युक्ताः, व्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २२ ॥
 नादश्रंङ्समाकारो, विंडुतीलसमप्रज्ञः ॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाग्निः
 सूर्वतो मुखः ॥ २३ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥
 वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थरुन्मंरुलं स्तुमः ॥ २४ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतो,
 नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विंडुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ
 ॥ २५ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपुज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिडं स्थिति-
 संलीनौ, पार्थमह्वीजिनेश्वरौ ॥ २६ ॥ शेषास्तीर्थरुतः सर्वे, 'हर-
 स्थाने नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्रुतुर्विंशतिरर्द्धता ॥ २७ ॥
 गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवाजिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेऽपि, ते ज्ञवंतु
 जिनोत्तमाः ॥ २८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विज्ञा ॥
 तयाद्यादितसर्वाङ्ग, मामांदिनस्तुताकिनी ॥ २९ ॥ देवदेवस्य य०
 मामांदिनस्तुराकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० मामांदिनस्तुताकिनी ॥ ३१ ॥

देव० मामां हिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामां हिनस्तु-
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामां हिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०
 मामां हिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामां हिसंतुपसगा ॥ ३५ ॥
 देवदे० मामां हिनस्तुहस्तनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामां हिसंतुराक्षता
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामां हिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामां हिसं-
 तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामां हिसंतुडुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०
 मामां हिसंतुभूमिषा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुञ्ज, तस्या या
 भुविलब्धयः ॥ तान्निरन्युद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥
 पातालवासिनो देवा, देवाभूषीष्वासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे
 रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूत-
 वेत्तालाः, पिशाचामुद्रलास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रजा-
 वतः ॥ ४५ ॥ नैर्ही श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंमी सरस्वती,
 जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदङ्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-
 वाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौंडी, कला
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तन्ते या जग-
 त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कार्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुपिमंलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-
 त्राणकृतेनयः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले बन्धौ, जले दुर्गे गजे हरौ
 ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यत्र-
 ष्ठा निजं राज्यं, पदत्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीत्रष्टा निजां लक्ष्मीं,
 प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्यार्थी लज्जते ज्ञार्यं, पुत्रार्थी लज्जते
 सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णं
 रूपे पटे कांक्षे, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्थैवाष्टमहामिहिः,
 गृहे वसति शान्धती ॥ ५३ ॥ नैर्घपत्र लिखित्वेदं, गलके मुग्धि वा

जुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वजीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रे
 तैर्ग्रदैर्धैः, पिशाचैर्मुज्जैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्देहैः, मुच्यते नात्र
 संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्वयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥
 तैःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टैः, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्पं महा
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिश्रयात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्ब्यादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥
 अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं
 प्रातः, ये पठन्ति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रज्जवंति न चापदः ॥
 ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे
 तन्महातेजो, जिनविंशं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते विंशे,
 ज्ञवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥
 ६१ ॥ विश्ववन्द्यो ज्ञवेध्याता, कट्याणानि च सोश्रुते ॥ गत्वा
 स्थानं परं सोपि, जूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लज्जते पदमु-
 त्तमं ॥ ६३ ॥ इति रुषि मंजुल स्तोत्रं ॥ केयकश्लोकनिराकृत्य
 मूत्रयंत्रकट्यानुसारेण लिखितं गणि । श्रोक्त्वाकट्याणोपाध्यायै
 वदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वदे तस्यैव ना
 मानि । मौक्तसौक्तान्निलापया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि
 कट्वो निरामयः ॥ निःशरीरो निरातंकः । सिद्धसूक्तमो निरंजनः ॥
 २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोदो निर्मलोत्तमः ॥ निर्जयो निरहं
 कारो । निर्विकारोऽथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । नि
 ज्ञयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्म्मो निष्कलप्र
 जुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०
 मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपल्लगा ॥ ३५ ॥
 देवदे० मामांहिनस्तुहस्तनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराकसा
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-
 तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुडुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०
 मामांहिसंतुभूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या
 भुविलब्धयः ॥ तान्निरञ्ज्युद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥
 पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे
 रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूत-
 वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रज्ञा-
 वतः ॥ ४५ ॥ नैर्ही श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंकी सरस्वती,
 जयांवाविजया नित्या, कृत्ताजितामदङ्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-
 वाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौडी, कला
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा मदादेव्यो, वर्त्तते या जग-
 त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कार्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-
 त्राणकृतेनयः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले बन्धौ, जले दुर्गे गजे द्वरौ
 ॥ श्मशाने विपिने घेरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यत्र-
 ण निजं राज्यं, पदत्रणानिजं पदं ॥ लक्ष्मीत्रया निजां लक्ष्मीं,
 प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्थार्थी लज्जते ज्ञार्थी, पुत्रार्थी लज्जते
 सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णं
 रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,
 गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ नूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुग्धि वा

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्तिकः ॥ ११ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ।
 सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वज्ञूतहितंकरः ॥ १३ ॥
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानन्द ।
 चैतन्यश्चैत्यवैज्जवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह
 तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म
 हामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा
 शमकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महान्तिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा
 पूज्यो महाबन्धो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुण्यो ।
 महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोधः । एकानेकवि
 निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महासूरो
 महार्थीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह
 द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविह्वंशो । निष्कामो विषयाच्यु
 तः ॥ जगवंतामहाज्जातो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा
 परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा पगानन्द । परंपरमआ
 त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना
 कृतिं नाकरो वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त
 जसंबोधः । संसारवेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्
 धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्वन्द्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥
 स्वयंज्ञूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विज्जवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो
 महातातः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपणो । देवदेवेश
 नायकः ॥ ३६ ॥ वरेष्ठो जवविध्वंसी । योगिनी ज्ञानगोचरः ॥
 जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नदरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् जव्यसं
 बन्धः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र
 काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । इन्द्रवन्द्यः सुरर्चितः ॥ नि

प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो ।
 नैष्ठिकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो मन्त्रपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः ॥ ६ ॥
 निःशब्दो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोऽपि योगात् शुभ्रं
 प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अर्चितः अ-
 कथ्यो विभुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥
 अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो जवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः,
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान
 लोचनः ॥ अवेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवर्जितः ॥ १० ॥
 अजेयसर्वतो जडः । निष्कपायो जवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥
 वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस
 गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत
 विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्म्मार्जितो महात्मानः ।
 लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्यावायो वरः शंभुः । विश्ववेदी
 पितामहः ॥ सर्वज्ञतद्धितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं-
 दरूपचैतन्यो । जगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य-
 क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥
 गौरवादित्रयादूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अजयः प्राप्तकै-
 ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र-
 दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स-
 र्वेशः सतसुखावासः । जिनेशो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम
 ज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोजगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य-
 कारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौडः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो
 ज्ञानाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं ।
 विमुक्तो मुक्तिबद्धजः ॥ योगीशो नादिसंमिद्धः । निरीदो ज्ञानगोच-
 रः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्त्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्तिकः ॥ ११ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ।
 सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वज्ञूतहितंकरः ॥ १३ ॥
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानन्द ।
 चैतन्यश्चैत्यवैज्रवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह
 तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म
 हामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा
 रमकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महान्तिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा
 पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुण्यो ।
 महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोधः । एकानेकवि
 निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महासूरो
 महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह
 द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविहंसो । निष्कामो विषयाच्यु
 तः ॥ जगवंतामहाभ्रांतो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा
 परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा पगानन्द । परंपरमआ
 त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना
 कृतिं नाहरो वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त
 जसंबोधः । संसारवेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्
 धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्वन्द्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥
 स्वयंज्ञूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विज्रवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो
 महातातः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेश
 नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो जवविध्वंसी । योगिनी ज्ञानगोचरः ॥
 जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् जगत्सं
 वंद्यः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र
 काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । ईश्वर्यः सुरर्चितः ॥ नि

प्रपंचो निरातङ्गो ॥ निःशेषकेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक
संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाय
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः ।
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यन्ते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीन
द्वाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्णं ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥ महिम्नः पारन्ते परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम
पि गुणगुरौर्गंतुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिह नयैस्सर्वकल
। नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिवर्गमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोत्र
किल निरवकाशोप्यहमिहो । द्यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनधोच्चावच
वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुजुव इवेष्टार्थप्रतिज्ञूपदोपास्ते पार्थ्वीसन्
यजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकाशमासूनोधुततिधनमूनोयवसु
ना । सुनामन्नोदुनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोज्ञानो न
वनजवने नो वृषज्जरं । व्यथामोहादेनोरयमश्रनतेनोत्कटविपत् ॥ ३ ॥
सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । जङ्गन्नग्यारामेमरकुरुहवामे
यजिनपाः ॥ हतोयाकृग्रामे शितरसमकामेपुविजयो । त्वमर्काती
ज्ञामे दुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चिरतरमपारे
जुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ धुतारेकेतारे
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे छिद्वारे जवदहनवारे कुरुकप
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान
हिमिश्रुनमाराव्ययविज्ञो ॥ ज्वलद्यस्योदारान्विप्रधरकुमाराधिपतित
। मनुक्रौशागारावतुजिनमहाराजसज्जवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे
वत्रजविदितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥
तनालान्नोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदकेवव्यचलपदमेवस्तु
तिष्ठते ॥ ७ ॥ कजन्माहंकार्यकिरवगणदंकीर्तिवचनं, कुबेरेज्यं

कूडाव्रततिपरशुकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं
 ददानंकेकहोपमसुरमराजंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगार्त्रं
 जवकुशकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंघ्रात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रज्ञो पवित्रं
 सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्मित्रंस्तुतपुरुषवित्रंसरणकम्
 ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंदृगुदकजवैः पीतममलै र्निहावन्यांधन्याः स
 फलजनुपस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला ज
 चारण्येदन्तकथमपिज्जवंत्वंनदद्वसुः ॥ १० ॥ नजानेहंनैतः कुमतिमर
 प्रावृतदृशां गतिस्मीदृक्षाणादरहरज्जवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य
 ज्जिमत्तफलोत्सर्जनपरां त्वदाख्यांनोचिंतामणिमिवज्जन्तेस्तविधयः
 ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानीमयिवितनुतात्कामपिकृपां जवास्ताघोदत्व
 त्तलनिपतितं प्रोद्धस्ताराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर
 णः शरण्योमिश्रेयान्प्रज्जुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वा
 धरितंकनकाहार्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिज्जटगज्जोरत्ववि
 दितः दितःप्रत्यूहालिः शुज्जमन जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः
 कुमतिवसुधातीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविभ्रद्वेधंपरमपुरुषः सिद्धिन्
 गरीं गरीयः साम्रज्यंगणधरमहामात्रमदितः दितः कर्तुकर्माष्टकरि
 पुत्रलंघज्जयमहा मादतीर्थेशश्रीज्जरमतुलमाप्तः पृथुमहाः ॥ १४ ॥
 महाराज स्तुत्योडुरिततरुसिन्दुरनिलको लकोनः पालाकः सकलज्ज
 विनांमोदशमनः मनस्यश्रान्तं भेवरसरसिकादम्बइवसन् वसज्जजी
 चात्पार्थ्वप्रज्जरनघपार्थ्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीज्जोलोकोत्तरपद
 सुपेतःसकलवि । त्ववित्रंदोपालयवमलवनेप्राप्तविज्जवः जवध्वस्त्ये
 नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वग्यातैरनिशमवदातैर्गुण
 गणैः ॥ १६ ॥ पद्यत्रतुप्कंसिंहावलोकवंधुरम् ॥ जवन्तंमयोगं प्रश्नि
 तपदवीचाग्निनिवहा श्रज्जम्बविश्रामंप्रणिदधति विश्वेश्वरसमे इदंस्थाने
 यन्तिप्रसृमरसितोम्बखलुखनाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकञ्चरुप्रकाशोधतमसं हरह्लोकैकुर्ष
 न्नमलकमलोद्भासमयकम् प्रबोधंव्यातन्वनिततःकरतःपंकदलनौ ज
 गच्चक्रुः पार्श्वोदिशतुकुशलमैसमयज्ञः ॥ १८ ॥ नितान्तंसन्तापंस
 मतनुमताद्यन्नमृतगुःकलाग्निःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो
 पेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वताहामापुत्रः सपदिविपदस्तार
 कपतिः १९ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति र्महीजन्मातद्वा
 त्ययप्रभृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिदददविरतराजतनयौ वृ
 यातीतोलोकेतनुन्नवनमाप्नोतिवलवान् ॥ २० ॥ धरादित्येशानः शु
 न्नरुविज्जोगौरकरणः सदापायाघैमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्थिरः
 स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितोन्नानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशलकरः
 केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽयेन्यस्त्रिदसविसरेज्योवरतया सि
 लोकेशोनूनंत्रिजगदवनात्वंकमलज्ञः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज
 न्माधिवसना चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्युपदिशन् ॥ २२ ॥
 प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्परार्ध्यश्रीयोगात्कमलनिर्लापसौ
 सिन्नगवन् ननाकश्चिश्वातिशयन्नरवित्तस्त्रिभुवने जवाहकोगीतः
 परमपुरुषोतोहरिद्वयैः ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वंत्रिभुवनजनैकाधि
 पतया शिवःशश्वन्नृणांपरमपददानैकसुविधेः असित्वंसर्धज्ञः सकल
 जगदर्थौघकलना न्नशूलीनोचोग्रोनचपशुपतिर्ज्ञोविपमदृक् ॥ २४ ॥
 अवाप्तःश्रेयः श्रीप्रवितरणलोलाविदलिता दितेयाश्रकोणोरुद्धमहि
 मसारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसन्नःकृतकुमतन्नःसुमनसां दिताया
 शेपाणांसुकृतपदवीत्वंककथयन् ॥ २५ ॥ जिनेन्द्राद्वेरात्रं बहु विपदम
 प्रंघृतमरं कलत्रंयेनात्रकसहरिहरादिःसुरगणः सकर्मानाकसर्पामित
 चरितताधूर्तनिवद् प्रतारिःसद्वेयः मित्तसत्तरोपःस्थितिदतः ॥ २६ ॥
 समग्रामग्रामप्रजवज्रयदो बोधरदितः सरुग्जव्यष्टेपीपुरुडुरितकल्पा
 नकलितः पुरामोशान्नूतश्चिरमिदसदाज्ञानमहितः सदेवोप्राद्यत्वंकथ

मपिसमासादिमयकाः ॥ २७ ॥ प्रज्ञोकिंवाभैतैरज्जिमतविधानैलसतैरै
 रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोविर्मैत्वत्यदनजयुगले
 सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८ ॥ अदब्रंद
 स्नांसिन् इविणजरमडीसदृशं विहायेनाप्रतंधरसिकिलरत्नत्रयमहो
 दधत्सौवर्णानामुपरिनलिनानाक्रमयुगं पुनर्निर्लोज्ञानांधुरिसुमतिमन्त्रि
 स्त्वमुद्रितः ॥ २९ ॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी
 मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोष्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल
 क्त्वांणिदधत कुनस्तैर्नैराग्र्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं
 प्राज्यंराज्यंविदितविज्ञवापास्यलपतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व
 रतरम् कतेनिर्गैश्वत्वंप्रशमरसवादेस्त्यसुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित
 वेदंतुचरितं ॥ ३१ ॥ निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनदवृष्ट्यातिशयितं जगद्वा
 रिद्याग्निं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु
 ग्मं सुधादया नतर्पे स्वेष्टातैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग
 र्वेकाधारादितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि
 ल तवत्रातर्ज्जन्माजनिजननमुख्याकगणहृत् जवेवेशस्तोश्र्योपिचनिश
 पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अद्दीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना
 मनाक्यस्येद्रक्तोयदिश्वदनुगंमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुश
 तेतंस्वपसमं समाद्रव्यंवाग्रप्रज्ञवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र
 लापायावृद्धास्तवगुणगणान्जान्तिविशदा खिलोकीभूजानेसुरपयमणे
 ज्ञानवज्रव रसज्ञानांकोट्याप्यमलधिपणोनग्रधिपणो नतानीष्टेसख्या
 तुमदरपरार्थ्यंतुतरदां ॥ ३५ ॥ नमस्तुन्यंमंसृत्यतनुतटिनीतारणतरे
 नमस्तुन्यंजीमामयसमददन्तावलदरे नमस्तुन्यंसूक्तातिमधुरिमदात्ती
 कनमुया ससुद्धायामुद्भुदवतिततुन्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद्
 मदिमालयायसुमनः सन्दोदशुश्रूषितां ह्रिद्वन्हायकलिजिदेजगवते
 जव्यावलीदंतवे लेकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

कणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुन्यनमः ॥ ३७ ॥ सार्द्धलविक्रीमिंतं
 ठन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्ररमा चरनिर्जिततारकराजगणः कृतल
 कणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारब्धे ॥ ३८ ॥ तोटकठन्द ॥
 नवदमलपदाम्भोजन्यसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्रोज्जलिःप्रार्थये
 हम् वितरविततबोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य
 स्वरूपम् ॥ ३९ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा
 दप्रसादसन्तुष्टधुनाश्रदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती
 प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकुरुकुरुनामगर्भवसंततिलका
 वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रज्ञुस्तवः ॥ अहाय्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन
 यरे नञोमासकृष्णगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु
 नाथाहामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदन्नरतः ॥ १ ॥
 इतिश्री पार्श्वप्रज्ञोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्ञाऽ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंमरीउ मु
 निवो । वाली पङ्कज संवो नरदसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो
 कोमी पंच ड्विड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणोणे विम
 लगिरिमहं तिष्ठमेयं नमामि ॥ १ ॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिद्धं ॥

॥ अथ श्रीधंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, शंभुपुर ठाम ॥ सुरतरु सम
 सिरि पास सांम, राजे अन्निरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अन्नय
 देव संठवियाणं दिव्य धुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मं
 मिय ॥ २ ॥ सुर नर सुद कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥
 आराहन् जइ एग मण, पावो पद कड्यांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमाण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला
कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति
वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥
पूर्व विदेह विराजता ए, पुंररीकनी ज्ञाण ॥ प्रभु द्यो दरसन सं
पदा, कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरव दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिख
र समेतको । चाटूं दरसन चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम वारम प्रभु ।
बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर ण गिरवरे । शिव पुढता सु
जगीस ॥ २ ॥ सुणिये णपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥
जविजन जेटो जगतसुं । तीरथ करण कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेस्तर पदमनाज । समहं सुखकारी ॥ ज्ञावी
जिनवर जरदखित्त । मंरुण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह
मांन । श्रिति आयु प्रमाण ॥ परमेस्तर तिरि वर्डमांन । जिनराज
समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जाण ॥
ज्ञावी जिनवर जेटिये । कारण पद कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अत्रामा वामाहे सकलमुज्जयः कालघटना । द्विधा जूतं
रूपं जगद्वदन्निधेयं जवतिया ॥ तदंतमैत्रं मे स्मरहरमयं सेंडुममलं
निगाकारं शस्वक्लप नरपते सिन्धुतु सते ॥ १ ॥ अविरलशद्वधनोधा
। प्रकालितसकलजुतलकलंकाः ॥ मुनिजिरुपासित्चरणा । सर
स्वती दरतु मे डुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनैशाणां । साधूनां वंदनेन
च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । विद्महेस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अथ प्रका-
शितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनैश्च
तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ इत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर
पूज्या नही, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो,
सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनैसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥
॥ २ ॥ जीवमा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा
नमे परजा नमे, आण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे वागमें,
वेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंडमा, त्यूं सोजे महाराज ॥ ४ ॥
जगमें तीरथ दो वमा, सेतुंजो गिरनार ॥ उण गिरि रूपन समो
सरचा, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोदनी मूरत पासकी, मो
मन रही लोनाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय
॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज
हु न बावरे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते साइ पंखियां,
वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच जेरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार
॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि बुद्धि
मोदे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेशरियानाथके,
केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लामले, वसे पद्मा वीच ॥ १० ॥
इत रागको नांम कल्याण हे, प्रभुजीको नांम कल्याण ॥ सकल
सज्जा कल्याण हे, जव प्रगटी राग कल्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग
सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतमी, त्यूं त्यूं
मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोमियो, लाखां ऊपर कोरु ॥
मरती बेला मानवी, लियो कंदोरो तोरु ॥ १३ ॥

दया गुणारी वेळमी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव
मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु वेळमी, रोपी
आद जिनंद ॥ आवक कुल मंमन जई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत
संत आतम गुण जूप ॥ आचारज उवप्राय साधु समतारस धाम,
जिन ज्ञाखित सिद्धांत सुद्ध अनुजव अजिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज
गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद
अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परजव आणंद जगमांदि प्रसिद्धो, चिंतामणि
सम जास जोग बहु पुन्ये लखो ॥ तिहुअण सार अपार एह महि
मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संजारो ॥ ३ ॥ सिद्ध
चक्र पद सेवता ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कढ्याणनिधि
प्रगटे चेतन जूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिथीका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक
जगगुरु मुळ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहे विजय जलो पुष्कळा
वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजो धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥
धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण
धरे जिहां जिनवर ज्ञाण ॥ धन ते जविजन जे रदे प्रभु तादरे
परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव थंग ॥ २ ॥ सुगुरु
मुखे प्रभु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मिलवाने उलसे मन मा
हरुं धरुं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी ठे मुळ सधली
जोम, पण प्रभु लग पदुंचीजे तेद नदि पग दोम ॥ ३ ॥ आम्हा
हूंगर अति घणा विचवहे नदियां पुर, किम मुळग्री अवराये प्रभुजी
एढली दूर ॥ आंखमली उलजो करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

मली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटमली वहतो
 कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने दाष्ट
 ॥ जाणूं शशहर साथे कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि
 वामे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय,
 तो इण ज़रतना वासी ज़विजन पावन आय ॥ सादिवनी तो सुन
 जर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय
 ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना
 आवे हियमे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ठे माहरो आत
 मराम, नहिय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे
 दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि
 महिर अवेह ॥ दूसम काल तणो दुःख टालो दीन दयाल, पालो
 विरुद संजालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग
 थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर ठतां नवि आय
 निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें
 सकलने जाणे हजूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वा
 मि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजे
 एक पलक जो आये प्रभु तुऊ संग, लाज उदयजिन चंड लहे नित
 प्रेम अजंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह
 जगते जणुं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियमे घणो, करिय सुप
 साय जे वीनहुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुहशुं कूरु अरिहंत शुं राखिये,
 जिस्थो अठे तिस्थो कर जोमि करि जांखिये ॥ अति सबल मुऊ
 दिये मोह माया घणी, एक मन जगति किम करुं त्रिजवन धणी
 ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगढे, रीश चटको चंदे

लोन्न वयरी नमे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम
 अरिहंत तूं हीयमे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियमे
 अनेरो धरूं, मूढ मन रीऊवा वलिय माया करूं ॥ तूंदि अरिहंत
 जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥
 कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहूं, मन तणी वात अरिहंत कि
 एने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुख
 करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं,
 धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो
 नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्न सही ॥ ६ ॥ धण कणाय माय
 पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो वोढ्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो
 जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तह्न समोवरु नहिं अवर वा
 ब्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांजलुं, बारवर
 परपदामांदि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय उल्लगुं,
 किम करूं ठाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ ज्योतिमा जगति तूं चित्त
 हारे किये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन
 वयण तन उल्लसे, दूरथी दूकमा जेम हियमे वसे ॥ ९ ॥ जल
 जलो एणि संसार सहु ए अठे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पठे
 ॥ ध्यान करतां सुपनमांदि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त
 आरति टले ॥ १० ॥ साम सोढामणा नाम मन गद्गदे, तेदशुं
 नेड जे वात तुह्न जी कहे ॥ तुह्न पय जेटवा अति छणो टलवलुं,
 पंख जो द्योय तो सडिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी
 आज्ञा कागल करूं, कीरसागर तणां दूध खनिया जलूं ॥ तुह्न मि
 लवा तणा सामि संदेशमा, इंड पण लखिय न शके अठे एवमा ॥
 १२ ॥ आपणे रंग जरि वात मुख जेटवी, उपजे सामि न कदाय
 मुख तेटवी ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, लाम ने कोरु प्रभु

पूर सवि मादरा ॥ १३ ॥ पुब जवि मोह वश नेह हुवे जेहने,
 समरिये एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल जम
 रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं
 ध्यान दियमे वस्युं, वापहुं पाप दिव रदिय करशे किस्थुं ॥ ठाम
 जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके
 रही ॥ १५ ॥ पाप में कळ सावळ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा
 तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कदिये प्रभु पालशुं, दुःख जे
 नार संसार जय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही,
 एह में वात अरिहंत आगल कहो ॥ एवमी मारी जगति जाणी
 करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम रुद्धिवृद्धि,
 समृद्धि कारण, डुरित वारण, सुख करो ॥ उवजाय वर श्री, जक्ति
 लाजे, पुण्यो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी
 सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आ
 शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप
 जणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल
 न्यान दिणंद ॥ त्रिगमे गद्गह्यो ए, जवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥
 न्यान वहुं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,
 साचो सर्वह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविदास, लोकालोक प्र
 काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किस्थुं ए ॥ ४ ॥ अधिक
 आराधक जाण, जगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया
 देशतु ए ॥ न्यानी ग्वासोव्वाम, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही
 ए, कोरु वरस कही ए ॥ ५ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोदया

सूत्र मज्जार ॥ किरिया ठे सही ए, पण पाठे कही ए ॥ ७ ॥
 किरिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरों
 ए, शंख दूधें जरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मज्जार, पांचमि अकर
 सार ॥ जगवंत ज्ञांखियो ए, गणधर सांखियो ए ॥ ए ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥

श्रीअरिहंत इम उपदिशे, जवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥

मिगसर माह कागुण जला, जेठ आपाढ वैशाखो रे ॥ इण पढ

मासें दीजिये, शुजदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जु

हारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति

हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ वे कर जोमी जावशुं, गुरु मुख

करो उपवासो रे ॥ पांचमि पम्किमणो करो, पढो पंमित गुरु

पासो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन

आरंज टालो रे ॥ पांचमि स्तवन शुई कद्दो, ब्रह्मचरिज पिण पा

लो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी

रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उलालानी देशी ॥

॥ द्विज जवियण रे पांचमी जजमणो सुणो, घर सारू रे

वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां बलि दोहिलो, पुणव

जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो बलिय धन

पामतां पण धर्मकाज किडां बली, पांचमी दिन गुरु पास आनी

कीजायें काउस्मगरलो ॥ त्रण ज्ञान हरित्तण चरण टीकी देड

पुस्तक पूजिये, आपना पदिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥

१ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति बीटांगणां, पांच पूठां रे

मुखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे जेखण पांच

मजीसणा, वासकूपा रे कांवी वारू वतरणां ॥ उद्धालो ॥
 वतरणां वारू वलीह कमली पांच जिलमिल अति जली, स्थाप
 नाचारिज पांच छवणी मुहपत्ती परुपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच
 कोथल पंच नवकरवालिघां, इण परें श्रावक करे पांचम ऊजमणुं
 उजवालिघां ॥ १ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजि
 यें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल
 ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उद्धालो ॥
 जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश झुंगार ए, आरति मङ्गलथा
 ल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरु अंगलू
 हणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमानियें रात्रि जेणे
 रे गीत रसाल गवामीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें,
 ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ उद्धालो ॥ साधियें मारग
 एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञान
 वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे
 लहे, जे करे पांचमी तप अखंमि वीर जिणवर डम कहे ॥ ४ ॥
 कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेतरो ॥ में
 शुण्यो श्री अरिहंत जगवंत, अतुल वल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री
 जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय
 सुंदर, जगति जाव, प्रशंसियो ॥ ५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्त
 वन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥
 पहिलुं ज्ञान ने पठें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ १० ॥
 ॥ १ ॥ नंदिनूत्रमें ज्ञान बलाणुं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्वय, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २ ॥
 मति अठावीश श्रुत अवधि वीश, अवधि ठ अतंख्य प्रकार रे ॥
 दोय जेद मनःपर्वय दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥
 चंद सूरज यह नक्षत्र तारा, तेखुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान
 समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ
 प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण
 पामुं, ज्ञानभो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोमती पास ॥
 सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोजागी
 साद्वि मेरा धे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी ॥
 सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें
 पेखतां मानुं, नव नवि ठविय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥
 अब दुःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी
 गुण तादरा मादरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥
 दूरअकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पढ़िमे
 नहिं साद्विया, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु
 मुखचंद विलोडित हरपित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे
 रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥
 किसके दरिदर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें
 तुं वसें साद्वि, शिवमुखनोदी ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा
 ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वमेत नरेश ॥ जनमपुरी वणा
 बसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत
 रेश वादीशें, बदि वेशाख वखाण ॥ आठम दिन जले जावशुं,
 मारी नात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी स
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय
॥ गयवर बांध्यो वारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल
जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियनुं
हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खर
खावा जाय ॥ आदर साहिवनो लही जी, कुण लये रांक मनाय
॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न ठते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥
कुण सुरतरुयी जठिनें जी, वावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव
अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज जवो
जवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण वेढा जगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥
घारे परपदा वैठी जुमी, मागशिर शुद्धि इग्यारश वमी ॥ १ ॥ म
ह्विनाथना तीन कळ्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर
दीक्षा दीधी रूवमी ॥ मा० ॥ २ ॥ नभिने जगनुं केवलज्ञान,
पांच कळ्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवमी ॥ मा०
॥ ३ ॥ पांच जगत ऐरवत इमहीज, पांच कळ्याणिक हुवे तिम
हीज, पंचासनी संख्या परगमी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत
गणतां एम, दोढशें कळ्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ वे ए तिथि
जेवमी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाज अ
नंत उपवाता तणो ॥ ए तिथि महु तिथि शिर राखमी ॥ मा० ॥
६ ॥ मौनपणें रक्षा श्रीमह्वि नाथ, एक दिवस संयम अत साथ
॥ मौन तणी परि अत इम पमी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुदरी पोसो

लीजियें, चोविहार विधिगुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घमनी
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक
 उब्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावनी ॥ मा० ॥ ९ ॥ ऊजमणुं
 कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो कानसग
 गुरु पाये पनी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी
 पूजीजें मन रली ॥ सुगतिपुरी कीजें दूकनी ॥ मा० ॥ ११ ॥
 मौन इग्यारस महोदुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पञ्च
 र्काण करो आखनी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याश। समे,
 कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो व्याहनी ॥ मा०
 ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद यात नमूं सिरनामी, हुं गांनं त्रिचुवनके स्वामी
 ॥ संतहि संत जेपे सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख दोई ॥ १ ॥
 शांत जपीने कीजै कांसा, सोइ कांम हुवै अन्निरामा ॥ शांति ज
 पी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्जयकी
 प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति
 राणा गुण गावै, रुद्धि अचिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु
 शांति सुदाई, ता नरकूं कुठ आरति नांही ॥ जो कठु वंठे सोही
 पूरै, दाखिइ दोष मिरयामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति
 प्रकासी, घटर के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कहा नवि
 जावै, कहितां मो मन अचरज आवै ॥ ५ ॥ मार दिया सबही द
 थियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारितजी शिवसुं रंग राखै,
 राज तज्या पिण साहिव साखै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजै देवा,
 कायर कुंथु न एक दोषवा ॥ रुद्धि सहू प्रभु पास लहीजै, जिक्रा
 दारी नांम कहीजै ॥ ७ ॥ निंदक पूजक दे सम ज्ञायक, पिल

सेनगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह जए जग नायक, नाम
 अर्तात सवै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित गिणीजै,
 नाम देव अरिदंत जणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजै, सेवक
 जाण मदा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंजीरा, दूषण
 नहि इक मांदि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण
 न रहै प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखै,
 पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना वावीस परीसह, सैचा
 जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनावै, मा
 या विना सबसुं मन लावै ॥ लोचन विना गुणरास ग्रहीजै, जिहु
 जये त्रिगुणो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रंथपणै सिर वत्र धरावै, नाम
 जती पिण चमर ढुलावै ॥ अजय दान दाता सुखकारण, आगे
 चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजै, कर्म
 सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ आपै, लब्ध घणी
 देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कदावै, ना हिसही
 कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको विरुद्ध धरावै, पिण सोवन पंकज
 पगडावै ॥ १५ ॥ तजि आरंज निज आत्म ध्यावै, गिरमणीकूं
 साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा
 संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्विष्ट कहिये, तेरे गुणां छे पार
 न लहिये ॥ तुं प्रभु समरथ साहिव मोरा, हुं मनमोहन सेवक
 तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकगणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन
 दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक ठै वरवीरा
 ॥ १८ ॥ तुम जैसें वरुजागज पायो, नो मेरो कारज चढ्यो स
 वायो ॥ कर जोमो प्रभु वीनहुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं
 ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तागे, जवनायरथी पार उतारो
 ॥ श्रीदयणापुर मंरुण सोदैं, तिहां जिन शांति सदा मन मोदैं

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्रीगुणसागरके मन ज्ञायै ॥
जे भर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चे पावै ॥ २१ ॥
इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ दाढ ॥ बिलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोजा ताहरी संसार
सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस धणी, करवा सेवा तुम चरण
तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पने जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै
॥ आसातना चउरासी टालै, साधवता सुख तेहिज संजालै ॥ २ ॥
जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि
कला सीखण दूकै, कुरलो तंबोल नखै थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वनो
लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रु
धिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांमनियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये
कावो, खावे धांणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण वितरावै, अज
गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै,
नख गाल वपुपना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विह
चन अपणो कर धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसै पग ऊपर पग चढिया, थापै
साणा ठमै हुंदणियां ॥ सूकवै कप्पम पप्पम वनियां, नामीय ठिपै
नृप जय पनियां ॥ ७ ॥ गोके रोवै विकथा ज कहै, इहां संख्या
बैतालसि लडै ॥ हथियार घने ने पशु बांधै, तापै नांणो परखै रां
धै ॥ ८ ॥ जांजी निस्तही जिनगृह पेसे, धरै उत्र ने मंमपमे
वेसे ॥ पड़िरै वल्ल अने पनही, चामर बाँकि मन गंम नदी ॥ ९ ॥
तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, नृपण तज आप कुरुप धियै ॥
इसणयी सिर अंजली न धरै, इगसामे उनरामंग न करे ॥ १० ॥

गोगो सिरपेच मोरु जौमै, दमिये रमनै वेसे होमै ॥ सयणासुं
 जुद्धोर करे मुजरो, करे जंम चेष्टा कहै वचन बुरो ॥ ११ ॥ धरे ध
 रणो जगमे उल्लंघी, सिर गूँथै बांधे पालंघी ॥ पसारे पग पदरे धावनि
 यां, पग ऊटक दिरावै डुखनियां ॥ १२ ॥ करदम छूहै मैथुन मंमै,
 जू आवलि अँठ तिहां ठमै ॥ उघामे गुऊ करै वयदा, काढे व्या-
 पार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अंधोले
 पीवा ठाम जरै ॥ दूषण जिनजवनमै ए दाख्या, देववंदनजाप्यमै
 जे जाख्या ॥ १४ ॥ सुजानी श्रावण सगति ठतां, आसातन टालै
 चारसतां, परमाद वसै कोई आयै, आलोयां पाप सहू जायै ॥ १५ ॥
 तंत्रोल ने जोजन पांन जूआ, मल मूत्र सवन स्त्री जोग हुआ ॥
 जूषण पनही ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांझि वसै ॥ १६ ॥
 ड्यत ने जावत दोय पूजा, एहनाहिज जेद कहा दूजा ॥ सेवा
 प्रभुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥
 कलश ॥ इम जग्य प्रांणी जाव आंणी, विवेकी शुज वातना ॥
 जिनविंघ अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थ
 कर अरजै, नमै जेहने केवली ॥ उवकाव श्री अरविंद वंदे, जैन
 शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमं कृपज्ज जिनेतर पाय, धनुष पांचसैं उंची काय ॥ बी
 जो अजित जिन मुऊ मन वसै, मांन धनुष साढाचारसैं ॥ १ ॥
 तीजो संजव सुख दातार, उंची काय धनुष सो चार ॥ अजिनं
 दन जिनसुं मन लीन, देह धनुष नो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम
 सुमतिनाथ जगवांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पदम प्रभू पूरै
 मन आस, देह धनुष दोयसे पञ्चात्त ॥ ३ ॥ सामि सुपागत सत्तन
 दोय, देह प्रमाण धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रभु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमाण धनुष दोहते ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिसे सुविवेक, उंच प्र
 माण धनुष तो एक ॥ शीतलनाथ नमैं जग सवे, देह प्रमाण ध
 नुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं जल्लसी, उंच प्रमाण धनुष
 तनु असी ॥ वासपूज्य वारम जिन चंद, मान धनुष सित्तर सुख
 कंद ॥ ६ ॥ विमल२ गुणकर गंजोर, साठ धनुष जसु मान सरীর
 ॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमाण धनुष पञ्चास ॥ ७ ॥
 पनरम धरमनाथ जगदीस, मान धनुष जस पेंतालीस ॥ शांति
 करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोज्जंति ॥ ८ ॥
 सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मान धनुष पेंत्रीस जदार ॥ अर अ
 ठारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मल्लि
 नाथ जिन जगणीसमो, मान पञ्चीस धनुष पय नमो ॥ बीसम
 मुनिसुवत अरिहंत, बीस धनुष तनु मान कदंत ॥ १० ॥ इकवा
 सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बाबीनम
 श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपें जाल दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री
 पारसनाथ, नील वरण तोहे नव दाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री
 वीर, सात दाथ जगनाथ सरীর ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो
 बीन, प्रणमें प्रद शम धरिय जगीस ॥ तां घर ऊढि सिद्धि उठ
 रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन
 देहमान स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ ऋषभदेव प्रणमूं जिनराय, लाख चोरातां पूरव आय ॥ बी
 जो अजित जनु मूत्रे लाख, आठ वटुनर पूरव लाख ॥ १ ॥ नी
 र्धकर संजव तीसरो, आठ लाख पूरव साठरो ॥ अजिनंदन पू
 मन आन, आठ लाख पूरव पञ्चान ॥ २ ॥ मुसनिनाथ पंचम
 जगदीन, आठ लाख पूरव चानीन ॥ श्री पद्मप्रद्वनी ए वित्त

जाण, लाख तीस पूरव परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरव
 बीस, दस लख पूरव चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरव दोय,
 इक लख पूरव शीतल धित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी
 लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो,
 वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस,
 वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद,
 लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस्र श्रिति पञ्चाणवै,
 श्री कुण्डुनाथ तणी संज्ञवै ॥ सहस्र चोरासी अर जिनतणी, महि
 सहस्र पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण बीस हजार, मनिसु
 अत परमाउ उदार ॥ बीस सहस्र नभिजिन धित जणी, वरस स
 हस्र नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस
 बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुषजतणा तेरे अवतार, सात चंड शंती-
 सर वार ॥ ९ ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्ता-
 बीस ॥ त्रिहुंश् जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमृतीस
 ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन घन्न, गणधर चवदेसै वावन्न ॥
 सहुने मुनि लख अठावीस, सहस्र ऊपरै अमृतालीस ॥ ११ ॥ लाख
 चमाल ठ्याल हजार, परधिक सहु साधवी सो च्यार ॥ श्रावक
 लाख पचावन धुरै, अमृतालीस सहस्र ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोमि
 श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस्र अमृतीस ॥ ए संघ चतुर्विध
 सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें दित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री
 चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अय तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ दाल १ ॥ धरम महराय मास्य सारं ॥ ए देत्री ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रैलोक्य उत्तम नर अधिकारं,
 पञ्चणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लियै निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ रूपज अजित संजव अ-
 जिनंदन, सुमति पदमप्रभु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंड-
 प्रभू ने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,
 विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-
 थुनाथ अर महि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए
 जिन चोवीस ॥ जग वल्ल जगगुरु जगदीस, प्रणामीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम नृपनगज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम जतर नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मधवा तीजो
 उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्रोस, ठो
 कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संजूमि सनाथ ॥
 ५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिपेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय
 ताम, बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्रीसर वार, क्षेत्र जतर
 सिणगार ॥ मधवा सनतकुमार, पोइता सरग मजार ॥ ७ ॥ स-
 जूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते
 प्रणमुं सिरनामी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुरस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्ट वूत्तरो, तीजो स्वयंप्रभु जा-
 णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमाणिये
 ए ॥ ९ ॥ ठो पुरुष पुंमरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नामे
 आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह कठी ए
 पिण नभूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला
 पांच ठो गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो
 तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नै जइ, सुप्रभु सुदर्शन,
 आनंद नंदन शुभ मती ए ॥ रामचंड वल्लभ, वल्लभ देव ए नव,
 आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ वल्लभ ब्रह्म देवलोक,

काल उत्सर्पणी, जास्यै सिव रुष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक
नाम, तीर्थकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत जणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणै प्रभु रत्नां काल सुरै गणे ॥ ए देगी ॥

अस्वग्रीव नै तारक मेरुकवलि मधु तिलाए, निशुंज वलय
प्रदलाद, रावण जरासिंधु जिंसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक
गति गामिया ए, ते पिण ज्ञावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देगी ॥

शांति नै कुंथु अरि एह जव एकही, चक्रवर तीर्थकर दोय
पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत जव जूजूआ, देह तिणसाठ
पिण जीव गुणसठ अया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय वलदेव केरा
पिता, एकहिज आय नव एण लेखै ठता ॥ तीन चक्रधर तणा
मिलिय वारे टळ्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिळ्या ॥ १६ ॥
तीन चक्रवर्तणी ढाल दीजे इसे, माय सहुनी अई साठ लेखे इसे
॥ एह नररयणनो ध्यान नित ले घरे, तेह सुगपद लही मोक
पदवी वरे ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम शुण्या तीर्थकर चक्रीसर वासुदेव वलदेव ए, प्रतिवासु-
देव सुतेव जेहनी कर सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम
जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो
मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ शलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल तिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला
धर्म निवारणो, जव जंजण जगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुक्त मन क
लट अति घणो, सो दिन सफल गिणेत ॥ स्वामी श्री विमदेसर,
जव नयणे निरखेत ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम निरय विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोत्तरया, पूरव निन्नाणूं वाग ॥
 श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥
 इण गिरचनमासे रद्या, शिवर कोहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामे
 शिव सुख साधता, गणधर श्री पुंमरीक ॥ पुंमरगिरि तिल कारणें,
 जगति करो निरज्जीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू,
 विद्याधर वलवंत ॥ सेतुंज शिखर समोत्तरया, जे गरुआ गुणवंत ॥
 श्री० ॥ ६ ॥ आवच्चा मुनिवर सुक, सहस्र परिवार ॥ पंथग
 वयणे जागियो, मो मेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमव पांच
 महाबली, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सोधा सिद्धाचलै, सुर नर
 करै बखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इमसीधा इण मूंगेरै, मुनिवर कोमा-
 कोमि ॥ पाज चढंता सांजैरै, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ९ ॥
 जे बाधण प्रतिबूझ्यो, ते दरवाजै जोय ॥ गोमुख यक कवम मिर्ली,
 सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विवसुं यात्रा करै, सुर नर
 सेवक तात ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लाल विलास
 श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवने ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देवी गतानी ॥

श्री सिद्धाचल मंगल स्वामी रे, जग जीवन अंतर्जामी
 रे, एतो प्रणमूं हूं मिरनांमी, यात्रीमा यात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥
 श्रीकपज जिनंम राया रे, जिहां पुंम निनाणूं आया रे, प्रभु
 समवत्तरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्रो पूनम दिन बखाणो रे,
 पांच कोमिसुं पुंमरीक जाणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या०
 ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, वे वे कोमिसुं मापु संयाते
 रे, एतो पोटता पद लोकांन ॥ या० ॥ ४ ॥ कानी पुनन कर्मने
 तोनी रे, जिहां सीधा मुनि वन कोमी रे, ते बंदो वे कर जोमा

॥ યા ૦ ॥ ૫ ॥ ઇમ જરતેસરને પાટે રે, અસંખ્યાત સાધુ ચિર
 ઓટે રે, પાંચ્યા મુગતિ તણાં એ વાટ ॥ જા૦ ॥ ૬ ॥ વોય સદસ
 મુની પરવારે રે, આવજ્ઞા સુત સુખકારે રે, સય પંચ સેલગ અણગાર
 ॥ યા૦ ॥ ૭ ॥ દેવકી સુત સુજગીસે રે, સીધા વહુ યાદવવંસે રે,
 તે નમો રે નમો મન હૈંસે ॥ યા૦ ॥ ૮ ॥ પાંચે પાંચવ ઇણ ગિર
 આયા રે, સીધા નવ નારદ રૂપિરાયા રે, વલો સંત્ર પ્રજૂન કદાચ
 ॥ યા૦ ॥ ૯ ॥ એ તીરથ મહિમાવંતે રે, જિહાં સીધા સાધુ અનંતે
 રે, ઇમ જ્ઞાપ્યો શ્રીજગવંત ॥ યા૦ ॥ ૧૦ ॥ ઝઝાલ ગિર સમ નદી
 કોઈ રે, તીરથ સગલામે જોઈ રે, જે ફરસ્યાં પાવન હોઈ ॥ યા૦
 ॥ ૧૧ ॥ એકાદારી ને સચિત્ત પદારી રે, પદચારી ને જૂમિ સંચારી
 રે, શુદ્ધ સમકિત ને બ્રહ્મચારી ॥ યા૦ ॥ ૧૨ ॥ ઇમ ઝદરી જે નર
 પાલે રે, વહું વાંન સુપાત્રે આલે રે, તે જનમ મરણ જય ટાલે
 ॥ યા૦ ॥ ૧૩ ॥ ધનષ્ઠ તે નર ને નારી રે, જેટલે વિમલાચલ ઇક
 તારી રે, જશ્યે તેહતણી વલિદારી ॥ યા૦ ॥ ૧૪ ॥ શ્રીજિનચંડ
 સૂરિ સુપસાયે રે, જિનદર્પ દિયે હુલસાયે રે, ઇમ વિમલાચલ ગુણ
 ગાયે ॥ યા૦ ॥ ૧૫ ॥ ઇતિપદં ॥

॥ અથ શ્રી કૃપભદેવ સ્તવનં ॥

કૃપજ્ઞ જિનેસર દિનકર સાહિવ, વીનતની અવધારો રે ॥
 જગના તારુ ॥ મુઝ તારો જો કૃપાનિધ સ્વામી, જગ જસવાદ
 પ્રગટ જે તાદરો, અવિચલ સુખદાતારો રે ॥ જ૦ ॥ ૧ ॥ મુ૦ ॥
 નિજ ગુણ જોક્તા પર ગુણ લોભા, આતમ શક્તિ જગાયો રે ॥ જ૦ ॥
 અવિનાસ્તી અવિચલ અવિકારી, શિવ વાસી જિનરાયા રે ॥ જ૦
 ॥ ૨ ॥ મુ૦ ॥ ઇત્યાદિક ગુણ શ્રવણે નિસુણી, હું તુમ ચરણે આયોરે ॥
 જ૦ ॥ તુમ રીઝાવણ હેતે તતલિણ, નાટક ચેલ મચાયો રે ॥ જ૦ ॥ ૩ ॥
 મુ૦ ॥ કાલ અનંત રહ્યો એકેડા, તરુ સાધારણ પાંમી રે ॥ જ૦ ॥

वरस संख्याता बलि विकलेंडी, वेप घरया डुख धामी रे ॥ ज०
 ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंडीपणो
 धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंरुक मांदि जमियो, अब तो हूं पिण
 हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ अब नाटक नित करतो नव नव,
 हूं तुज आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिव सुरतरु सरिखो,
 निरखी तुजने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुज नाटक
 देखी रीज्या, तो मन वंचित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीज्या
 तो मुज ज्ञाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥
 लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं डुखमा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता
 सेती सुंम जखेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥
 तुज सरिया साहिव पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥
 तो मुज करमतणी गति अबली, दोसन कोइ तुमारो रे ॥ ज० ॥ ए ॥
 मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुख समकित सह नाखी रे ॥
 ज० ॥ सुगुण सेवकना वंचित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥
 ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसै, ज्येष्ठ मुदी सोमवारो रे ॥
 ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन जेट्या, वीकानेर मजारो रे ॥ ज०
 ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन शयनदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मेरो वीनती, करजोमी हो कहूं मननी बात
 ॥ बालकनी पर वीनहूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिभुवन तात ॥ वी०
 ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं जम्प्यो, जब मांदि हो स्वामी समुडम
 ऊपर ॥ डुख अनंता में सहा, ते कहिता हो किम आवे पार ॥
 वी० ॥ २ ॥ पर उगारी तूं प्रभु, डुख जंजे हो जग दीनदयाल
 ॥ तिण तौर चरणे हूं आवियो, सामी मुजने हो निज नयण निहाल
 ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊपरया, तैं कीधी हो करुणा मो

रा म्वांम ॥ हुंनो परम ज्ञक्त तादरो, तिण तारो हो नहीं दीलनो
 कांम ॥ बी० ॥ ४ ॥ मूलपाण प्रनिबूज्या, जिण कीथा हो तुज
 ने उपसर्ग ॥ मंक दियो चंमकोसिये, तें दीथो हो तसु आठमो सर्ग
 ॥ बी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोड्या हो तोरा
 अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र
 साद ॥ बी० ॥ ६ ॥ ए कुण वै इंडजालियो, डम कहता हो आ
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रभुतानो बर्जी
 र ॥ बी० ॥ ७ ॥ वचन उग्राप्या तादरा, ते ऊगज्या हो तुज साथ
 जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे जवे, शिवगांनी हो तें कीथो कृपाल
 ॥ बी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिग जेरम्बो, जल मांहे हो बाधी माटीनी
 पाल ॥ तिरती मूकी काठलो ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥
 बी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुपि दूइव्यो, चित चूको हो चारितथी
 अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीथो हो करुणा जंमार ॥ बी०
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥
 नंदियेण पिण ऊयरयो, सुर पदवी हो दीथो अति सार ॥ बी० ॥
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, अहवाने हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते
 पिण आङ्कुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एड जगीम ॥ बी० ॥
 १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेड
 ॥ समवसरण माधु साधवी, तें कीथा हो आराधिक तेड ॥ बी०
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखमी, नही पांशो हो नही आदर दीख
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीथो हो मामो आप मरीख ॥ बी०
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊयरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥
 सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मारमी वान ॥ बी०
 ॥ १५ ॥ सूयो संजम नडि पलें, नही तेडवो हो सुज दग्गण
 ज्ञान ॥ पिण आधार वै एतलो, डक तोरो हो धरं निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेढ़ मद्धितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी
 गंम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित
 कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो डख
 जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुऊ आनंद पूर
 ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंरुन, तीर्थकर
 ओवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंगन, संवतां सुरतरु समो ॥
 जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज
 समयसुंदर ॥ संश्रुण्यो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा
 चीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चौवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ दास १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देवी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करुं अरदास जी ॥ ता
 रण तरण विरुद तुऊ सांजलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥
 इण संसार समुद्र अथागे, जमियो जवजल मांहिजी ॥ गिलगिचिया
 जिम आयो गिरुतो, सादिय दाये सादि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं
 जानी तोपिण तुऊ आगे, बीतक कहिये वात जी ॥ चौवीसे दंरु
 फ हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न
 रकतणो इक दंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच आवर नैं
 तीन विकलेंडी ॥ उगणीत गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचे
 डी निर्यच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतपो
 नैं वैमाणिक, इम दंरुक चौवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेडी निर्यच
 अने नर, परयासा जे होय जी, ए चौविह देवांमें ऊपरै, इम देवां
 गनि होय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आऊये नर तिरि, निदवे
 देव ज आय जी ॥ निज आऊये सम के उरै, पिण अधिक ननि
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर नाई, समूर्जिम निर्यच

जी ॥ सरग आवमां तांइ पोहचै, गरजज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥
 ॥ ८ ॥ आज संख्यातै जे गरजज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर
 पृथ्वी नें बलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ए ॥ पर्याप्ता
 इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण
 आगे, अधिकांई कहुं देव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी
 मांसी सुर, एकैडी नवि आय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला,
 मानवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव जमै संसारादोय गति
 नें दोय आगत जांणियै, बलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-
 ख्याते आयु परजापता, पंचेडी तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-
 ज वे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग
 जाय असन्नियो, गोद नकुल तिम बीच ॥ गृह प्रमुख पंखी बीजी
 लगे, सींद प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सोमा सा
 पणी, ठठि लग ल्ही जाय ॥ सातमियें माणस के मावलो ॥ ऊप
 जे गरजज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे विहुं दंरुकै,
 तिरयंच के नर आय ॥ तेपिण गरजज ने परजापता ॥ संख्याती
 जमु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरघा, जे
 फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे जांगे करते कहूं, पिण निश्च नदी को
 य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवै, बीजी दरि
 धलदेव ॥ तीजी लग तीर्थकरपद लवै ॥ चोथीकेवल एव ॥ न० ॥
 ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सखविरति लवै, ठठि देसविरत ॥ सातमी
 नरकनो समकितहीज लवै, न हुवै अधिक निमत ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ कतम फीझा करण कुमर चल्पां रे ॥ ए देसी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नदी रे, एदनां इम अधिकार

॥आठ संख्यातै नर सहु दंरुके रे, आदी लहे अवतार॥मा०॥१०॥
 तेउ बाऊ दंरुके वे तजी रे, बीजा जे बाबीस ॥ तिहांथी आया आवै
 मानयी रे, सुख डाय कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच अलं
 खी आठवै रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरने मनुष्य हुवे
 नही रे, अरिहंत जारुयो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव
 तथा बली रे, चक्रवर्त्त ने अरिहंत ॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे,
 नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव अकी चवि ऊप
 जै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थकर ए हुवै रे, वैमानिकथी
 वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ टाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

द्विव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमे
 इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आठ संख्यातो जे नर तिर्यंच
 विचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण
 तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं
 हंव ॥ पंधेंडी तिर्यंच संख्यातै आऊखे जेइ, ते मरी चिहुंगतिमां
 जावे इहां नही संदेइ ॥ २६ ॥ आवर पांच तीने विकलेंडी आठ
 कहावे, तिहांथी आठ संख्याता नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवी
 लहे सरवधिरति पिण सुगति न पावै, तेउ बाउची आयो तेहने
 समकित नावे ॥ २७ ॥ नारक वरजीने सगलाही जीव संसार,
 पृथ्वी आठ वनस्पतीमांदि लहे अवतार ॥ ए तीने इहांथी चवि
 आवै दसे ठामे, आवर विकल तिरौ नरमांहे उत्पत्त पावै ॥ २८ ॥
 पृथ्वीकाय आद दई दस दंरुके एइ, तेउ बाऊ मांहे आवी ऊपजै
 तेइ ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ बाउ वै जावै, विकलेंडी ते
 दसमांदि जावै पूजाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितपो मित्र्यात्वी
 जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रदियों काल अनंत ॥ पुढवी

पाणी अगनि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांड
जीव रहाय ॥ ३० ॥ वेइंडी तेइंडी अने चौरिंदी मजारै, संख्याता
वरसां लगै जमियो करम प्रकारै ॥ सात आव जव लगि तां नर
तिरयंचमै रहियो, दिव मानवजव लहिनें साधुनें वेपमै रहियो
॥ ३१ ॥ राग छेप ठूटे नही किम हुवै ठूटकवार, पिण ठै माहरो
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अ-
रिहत लाधो, दिव संसार घणो जमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥
तूं मन बंठित पूरण आपद चूरण सांसी, ताहरी सेव लही तो में
नवनिष सिद्ध पांमो ॥ अवर न कांइ इछू इण जव तूंहिज देव,
सूधै मन इक होज्यो जवर ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥
संवत सतर जगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद
समान वाचक, विजय हरप सुखीस ए ॥ श्री पासना गुण एम
गावै, धरमसो सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंभक स्तवनं ॥

॥ अथ इरियावही मिछामिडुकुड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि
मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पम्किमी जिम इरियावही, श्री
वीरनी रे वाणी तदत्त कर सरदही ॥ उल्लाखो ॥ सरदही वांणो
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिछामिडुकुड तणी संख्या,
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ जू दग जखण तिम वाउ, वणसइ
विगल पण इंडी तणी ॥ करतां विरादण करम बंध्या, डुर ते क-
रिवा जणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुनवि दग रे वाउ तेउ वणस्मइ, पण
आवग रे वादर सुद्धम दसे अई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारद

अथा, वावीते रे पञ्जत्तग अपञ्जत्तया ॥ उल्लाखो ॥ पञ्जत्त अपञ्ज-
त्तग वखाण्या, विगल तिय ठह ज्ञाल ए ॥ जल धल खचर जुयंग
डुइ, पण इंडिय तिरि अरुयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुबी,
नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद जेदे करी जाणो, पञ्जत्तय अ-
पञ्जत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विय रे सुरगण परमा हम्मिया,
किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंनिय दस रे नव
लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥ उल्लाखो ॥
वखाणियै दस विध जुवनपतिना, तार रवि सशि रिसिगहा ॥ चर
धिर दसै विय जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ वारह
विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रिविके नव ज्ञाया ॥ पञ्जत्त अपञ्जत्तग
अठाणूं, अधिक सत संख्या गिएयां ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ मेव आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचजरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर जूमिका ए ॥ खेत्र
ए पनरह करम जूमि जाणायै अति कति मतिहि आजीविकाए ॥
हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरणवत सहीए ॥ मेरुपिण
पाखती चारि ९ खेत्र दस कुरु अकरम जूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिम-
गिर तिहरीय दाढ चीयारि लवण समुझमांहि विस्तरीए ॥ सात
१ अंतर दोय पाते दीप ठप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइतै जेद डुइ
आगला जांणी मणुय पञ्जत्त अपञ्जत्तयाए ॥ एक सौ एक समुर्द्धिम
जेद तीनतै तीनमणुआ घयाए ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ दिव जनम्या जगगुह ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेतविविय जीवत्तहू ठे एह अजिदय आदिक दस
गुणित करीजै तेह ॥ पणसदस ठसै वलि त्रीत अधिकते जाणि ॥
ते सगे दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ डुइ सदस इग्यारह डुइ-
सय साठि प्रमाण ॥ ए अवचन्वाणी जाणो दिनवर आण ॥ मन-

बच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात-
 असी निःतंक ॥ ७ ॥ बलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किङ्क ॥
 इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत
 वर्तमान बलिकाल जे अइयदिराधना तिणि त्रिगुण संज्ञाल ॥ ८ ॥
 तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख वड
 साखै उगुण जाय ॥ इम लाख अठारह बलि सहस चउवीस ॥
 इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ दाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ९ देशी ॥

॥ इण परि मिछामि डुक्कमंदेई जविक तरया जवजल नि-
 धिकेई ॥ तरै अठै बलि आगलि तरिती ॥ निरमल केवल लखमी
 बरिती ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम
 करि निरमल ॥ सें मुखजापै वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूणै ते शु-
 तधर ॥ ११ ॥ इम पन्तिकमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीत केव-
 ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम
 सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुइंकरो ॥
 तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंवरो ॥ उवजाय लक्ष्मी
 किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लछिवल्लज तवन करि
 इम संघुणयो ज्ञावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि डुक्कम
 संख्या स्तवनं ॥

॥ अय पंच समवाय स्तवन ॥

॥ शोदा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराजा ॥ वस्तु-
 तत्व भवि-जाणीण, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्यादादर्थी
 संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सस जंग रचना विना, बंधन

वेसे वात ॥ १ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे ठाम ॥
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह
 गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥
 धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रूप रे ॥
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥
 काले ऊपजै विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥
 काले गर्ज धरै जग वनिता ॥ काले जनमे पूत रे ॥ काले बोलै
 काले चलै, काले जालै घरसूत रे ॥ ८ ॥ काले दूधअकी दही आयै,
 काले फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावै, अंत करे बे
 वाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचमवीसै वार चक्रवै, वासुदेव बलवंत
 रे ॥ काले कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पणी आरा, ठै ठै जूजूये ज्ञाते रे,
 पट्ट रतु काल विशेष विचारो ॥ चिन्न २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री०॥
 काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुढपणे हुय
 बलि १ छर्वल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ दाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वज्ञाववादी वदे जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वज्ञावे
 नीपजे जी, विणसे तिमज निस्तंक ॥ १३ ॥ सुधिवेक विचारी जुओ
 १ वस्तु स्वज्ञाव ॥ ए आंकणी ॥ ठते योग योवनवतीजी, यांजणि
 न जणै बाल ॥ मूढ नही महिला मुखै जी, करतल जगै न बाल
 ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण तज्ञाव नवि संपजै जी, किमह पदारथ कोय ॥

अंब न लागै नींवमै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपंख
 कुण चीतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी,
 सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा वोर वंबूलना जी, कुणें अणि-
 चाला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस
 ततकाल, परवत थिर चल वायरो जी, ऊरघ अगननी जाल ॥ १८ ॥
 ॥ सु० ॥ मछ तुंव जलमां तिरै जी, बूमै काग पाहाण ॥ पंख जाति
 गयणे फिरै जी ॥ इण परै सड़िज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय
 सुंठ्यी उपशमै जी, हरमे करै विरेच ॥ सीऊ नही कण कांगमो जी ॥
 सकल स्वजाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,
 भुंयमां थायै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वजाव
 प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सड़ि सीयलो जी, जव्यादिक
 बहु जाव ॥ ठण्ड्य आपायणा जी, न तजै कोइ सुजाव ॥
 ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करै वापमो रे, वस्तु स्वजाव अकज्ज ॥ जो न
 होय जवतव्यता जी, तो किम सीजै कज्जा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म
 करो मन जंजाल, ए तो जावी जाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए
 आकर्ण ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोमि यतन करै कोय ॥
 अणजावी होये नही जी, जावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥
 आवै मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ खरघा केइ खांखटी
 जी, केइ आंवा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वाउल जिम जव
 तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥ परवस मन मानमतणो जी,
 तृण जिम पूछे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चिंतव्यं
 जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरमां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुजूमिते जी, समुद्र
 पन्थो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरै गोवाल रे ॥
 प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करै जी, किम राखीस रे प्राण ॥
 आदेसी सर ताकियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥
 आदेसी भागे मस्यो जी, बाण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊमी
 गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हणया
 संग्राममां जी, रात पन्था जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जी,
 राख्याही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ दाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वजाव नियत सति रूमी, करम करे ते प्राय ॥
 करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव जवंतरै जाय ॥ ३२ ॥
 चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें
 राम वस्या वनवासै, सीता पामी आल ॥ कमें लंकापति रावणनुं,
 राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कमें कीसी कमें कुंजर ॥
 कमें नर गुणवंत ॥ कमें रोग लोग दुख पीहित, जनम जायै
 विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कमें वरस लेगे रिसहेसर, उदक न पामे
 अन्न ॥ कमें जिननें जोउ निमा रै, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥
 ॥ चे० ॥ कमें एक सुखशाले बैसै, सेवक सेवै पाय ॥ एक हय
 गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम
 मांती अंधतणी पर, जग हीमै दाहूतो ॥ कर्म बली ते लदै
 सकल फल, सुखज्जर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके
 फीधो उद्यम ॥ करंमीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो नूखो,
 नाग रह्यो सममोलै ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूपक तनु
 सुखमां, दीये आपणुं देड ॥ मार्ग लड़ी वन नाग पथारधा,
 कर्म मर्म जेवो एद ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ शाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देखी ॥

दिव उद्यमवादी जणै ए, ए ज्यारे असमठ तो ॥ सकल
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरठ तो ॥ ४० ॥ उद्यम
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामे रयणायर तणी
ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ कर्म नियत ते अणुसरै ए, जेदमां
सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांदिथी तेल तो ॥
उद्यमथी उंची चढै ए, जोवो एकेइय बेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम
करतां इक समै ए, जेद न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि जरयां विना
ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पनै कोलियो ए, मुखमां हेषे
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म
तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र
हार इत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमथी खट मासमां
ए, आप थया अरिदंत तो ॥ ४७ ॥ टीपै२ सरवर जरै ए, कां
करे २ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलविंडुउ ए, करे पादाणमां ठाम तो ॥
उद्यमथी विद्या जणै ए, उद्यम जोमै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ शाल ६ ॥ ए छिडी किछां राखी ॥ ए देखी ॥

ए पांचेही वाद करतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ थमिय
रमै जिन वयण सुणीनै, आणंद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी
ममकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥
॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए
पांचे समयाय मिथ्यां विन, कोइ काज न सीजै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे वृजै ते रोजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आबह आणी
 कोइ एकनै, एहमां दिवै वनाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणंगण,
 जीते सुजट लगाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै,
 काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन
 घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जोकादिक, ज्ञान्य सबल
 सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी
 रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीक-
 लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे
 प्रा० ॥ ५५ ॥ जवधितनो परपाक थयो तब, पंक्ति वार्ध उद्ध-
 सियो ॥ जव्य स्वजावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे
 ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गा
 वो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्यादाद रतपावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संयुण्यो
 ॥ सय सतर संवत वहि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय
 देव सुरिंद पटधर, विजयप्रज्ञ मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक
 सीत इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स
 मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ यं वणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुव वारंवार,
 आणी ज्ञाव अवार ॥ चवदे गुण धानक सुविचार, कदिस्थुं सूत्र
 अरथ मन धार, पांमे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिश्रगत कह्यो
 गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणो ॥ चो
 थो अविरत नाम कहाणो, देशविरति पंचम परमाणो, उद्यो प्रमत्त

पिठाणूं ॥ १ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अहम अपुरव करण
कहीजै, अनिवृत्ति नाम नवम् ॥ सुखम लोभ दत्तम सुविचार,
उपशांत मोह नाम इग्यार, खीणमोह वारम् ॥ ३ ॥ तेरम
सयोगी गुणवांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम
विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणवाणै,
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देखी ॥

॥ जेह एकांतनय पढ़ थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती
ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय
मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प घणै, संस
यी नाम मिथ्यात चोथो जणै ॥ ६ ॥ समज नही काय निज
धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ
नंत अज्ञव्यनै, करिय अनादि श्रिति अंतसुज्ञव्यनै ॥ ७ ॥ जेम
नर खीर घृत खंरु जिमनै वमै, सरस रस पाय बलि स्वाद केदवो
गमै ॥ चौथ पंचम ठहै ठाण चढ़ने परे, क्लिणदि कपाय बस आय
पहलै अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि पट आवली, सहोय
सासादनै श्रित इसी सांजली ॥ द्विव इहां मिश्र गुणवाण तीजां
कहै, जेह उल्लूख अंतरमदुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ रे कर जोटी नाम ॥ ए देखी ॥

॥ पहिला च्यार कपाय, सम कर समकित, कैतो सावि
मिथ्यामती ए ॥ ए वेदिज लहै मिथ, सत्य असत्य जिदां, सर
दहणा वेजं वती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांदि, मरण लहै
नही, थाज बंधनपरै नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकि
त लहै, मति सरखी गति परजवै ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्याम,
उदय करी लहै, मति विन किदां समकिनपणो ए ॥ ते अविरत

गुणगण, तेत्रीस सागर, साधिक श्रिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥
 दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥
 सहु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै
 ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा जव
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद
 खदै ए ॥ १४ ॥ ज्यार कपाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते दय कीध, ते नर
 दायकी, तिणदिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ,
 तातैं तिहां थकी, तीजै चोथे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥ इण पुर केवल कोई न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचमदेसविरति गुणगण, प्रगटै चोकनी प्रत्याख्यान ॥ जेण
 तजैवा वीस अजक, पांम्यो आवकपणो प्रत्यक ॥ १७ ॥ गुण
 इकवीस तिके पण धारै, साचा वारै व्रत संजतरै ॥ पूजादिक पट्
 कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्त रौड ध्यान हे
 मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस ऊशी पुवकोरु, पंचम
 गुणगणे श्रित जोरु ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुणग्रान, इक २
 अंतरमहुरत मान ॥ पंच प्रमाद वसै जिण गाम, तेण प्रमत्त ठहो
 गुणधाम ॥ २० ॥ शिवरकलप जिनकलप आचार, सावै पट् आव-
 स्यक सार ॥ उद्यत चोथा ज्यार कपाय, तेण प्रमत्त गुणगण
 कदाय ॥ २१ ॥ रुधो राखै चित्त समाधे, धरम ध्यान एकांत
 आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै, अपरमत्त सनम
 गुण जातै ॥ २२ ॥

॥ दाल ॥ ५ ॥ नदी समुनाके तीर उडै होय पंखिया ॥ ए देसी ॥

पहिले अंसे महम गुणगणांतणें, आरंजे दोय अण संस्थेपै

ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कृपकश्रेणि
 क्रायक प्रकृति दस कय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम
 अपूरव गुण लवै, अघम नाम अपूरव करण तिणें कहे ॥ सुकल
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अदिग ध्याने
 धरै ॥ २४ ॥ दिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां जाव
 थिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलणा हणें,
 उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रदै सुखम
 लोअ कांइक शिव अजिलखै, ते सुखम संपराय दसम पंक्ति अखै ॥
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहे, मोह प्रकृति जिण ठाम
 सहू उपशम लवै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किलडी
 परै, तो आयै अहमिइ अवर गति नादरै ॥ चार वार समश्रेणि
 करै संतारमैं, एक जवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमैं ॥ २७ ॥
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पवै, मोह उदय उत्कृष्ट अरथ
 पुदगल रमै ॥ कृपकश्रेणि इग्यारम गुणवाणो नही, दशमयकी
 बारम चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ दाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागव आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणवाणो वारम जाण, मोह खपायो नेमो
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात,
 दिव आगे तेरम गुणधान तणी कहे वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकमी
 कय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिज्यामी जेदने जूना कप्पम
 जेम ॥ दरसन ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान
 प्रगट अयो विचरे श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी गानी
 परगट वात, सहिमावंत अढारै दोषण रदित विख्यात ॥ आठे वरसे
 ज्ञानी कही इक पुरवकोनि, उत्कृष्ट तेरम गुणवाणें ए अिति जोनि
 ॥ ३१ ॥ कर मेलैमी करण निरुध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरता जेदनी
मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चवदम गुणग्रान ॥ ३२ ॥ ब्रोजे
चारमें तेरमें मांहे न मरै कोय, पहिलो बोजो चौथो परजव साथे
होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाजै पहिला च्यार, धुरला पांच
तिरी मांहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहरु मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसाजलै ॥
गुणठाण चवद विचार वरणयो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतरैसै
ठत्तोसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजयश्री हरष सानिध,
कहे मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु
सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव
तत्त्वनी, गाथा ज्ञासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्युं
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ डाल ॥ १ ॥ सूस्ती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निऊर
धंध मोरु ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि धायाल,
सत्तावन वारै चौ नव क्रम जेदनी माल ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह
पणविह ठबिह जीव कहाय, चेतन प्रस आवर वेदै गई करले
काय ॥ एगेदो सुचम बादर ए दोच जिय ठाण, सन्नि असन्नि
पणिंदी वि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पऊता अपऊता चवदै
होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्रकृषा सोय ॥ नाण वंसण
चारित चीरज तप तिम उपयोग, ए पर लक्षण लकत जीव इव्य
इद जोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पऊती तीन, सामोसास

प्राणा मन पर ए अनुक्रम लीन ॥ चार ऐगेंदी पंच पञ्जती
 विगलें जोय ॥ पंच अतन्नि सन्नि तें पर पञ्जती होय ॥ ४ ॥ इन्दि
 पांच उतास आऊ वल ए दस प्राण, चार ठे सात आठ एगिंवी
 विगलें जाण ॥ अतन्नि सन्नि पंचेडी नें नव दस क्रम आय, प्राणाची
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तोनुना
 त्रिण २ जेद, काल दसम इग आगास पुग्गल चार विवेद ॥ खंधा देस
 पास परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नत्त काल ए पांच
 न जाव ॥ ६ ॥ चलय सदाई धम्मेश्वर संगण अयम्म, अवगाहें पूरण
 गललें नत्त पुग्गल धम्म ॥ समयाचलिय महुत्त दोइ पख मास नें
 साल पट्ठोपम सागर उत्तप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ पर इग दो सग
 सग सग पर इग अंक गिणाय, एग मुहुत्त आवलि संख्या सूत्र
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊनासें माण, केवलनाणी
 जणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उव गोय मणु सुर दुग
 पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति शरीर उवंग कहाय ॥ आदि
 संवेण संगण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उतास तेम वलि आ
 तप ने उजोय ॥ ९ ॥ सुजखगड निम्नाणत सादि दगु नीमाळ,
 सुर नर तिरि आऊ तिठंकर पुण्य वयाळ ॥ तस वाइर पंजत प
 नेय थिरं सुज सोय ॥ सुजग सुमर आइऊ जसैं वत्त दसको होय
 ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव वोजा नाचअसाय, मित्य आवर
 दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ निरियं च दुग एकेडी वि ति
 चौरिंदि तेय, कूळगई उपया अपत्तय वल चौ जेय ॥ ११ ॥ पट
 म संघयण विना संवेण तेम संगण, एम वयासी प्रकृति पाप त
 तनी ए जाण ॥ आवर सुद्धम अपळ नाडाण अथिरं नेय, असुज
 दुनग दू सरणा डऊ अजस दन लेय ॥ १२ ॥ एण चौ पण तिय
 इंदि कसाय अथय निम जोग वायालीस सेय पञ्जोस क्रिया संजो

ग ॥ कांड्य अहिगुणीया पावसिवा परिताप, प्राणातिपात आरं
 जकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मित्रादंसल वसी
 तेम,, अपञ्चखाणकी दिठ पुठ पाहुञ्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि
 य ने सत्थि सदत्थे जेद, आह्वापनकी बेयारण अणजोगा तेद ॥
 १४ ॥ अणव कंख पञ्चर्यना उवत्तंगी समुदाय, प्रेम द्वेष डरिवाव
 डी किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसदज ड धम्म ज्ञाव
 ए चारित्त, पणतिग वावीस दस वरै पण संवर तत्त ॥ १५ ॥ ड
 रिया ज्ञावा एपणा सुमतीना जेद होव, आदान जंम उच्चार नि
 स्केवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण, दि
 व आगे वावीस परिसद कहूँ हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा
 सीत जेसन मांसा निरवत्थ, अरति जोषा चरिआ नैदिया सिद्धा
 सत्त ॥ अक्कोसवदजायण अलाज रोग त्रिण फास, मल संस्कार य
 ज्ञा अज्ञाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मइव अज्जव मुत्ती तव
 संजम सम्म, सत्थं सौच अकिंचन वंजचेरज ड धम्म ॥ पढम अ
 नित्य असरण संगार एग अनत्त, असुचि आश्रव संवर निज्जर ज
 वि ज्ञावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोध डुरलज्ज इग्यारम नाम,
 धरम साधक अरिहंत ए वरै ज्ञावना ज्ञाव ॥ सापायक जेदोप
 स्थापन बीजो सोय, परिहार विश्रुठ सूखम संपराय चउत्थो जोय
 ॥ १९ ॥ तिम अइरकाय चरित्त सरव जिय लोग प्रसिद्ध, जेद सु
 विधि आचरण के जिय पांम्या सिद्ध ॥ वरै त्रिध निज्जर तत्त्व बंध
 ना ज्यार प्रकार, प्रकृति विदे अनुजाग प्रदेस जेदे निरधार ॥ २० ॥
 अणतण जणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस तल्लीनता
 बाहिर तप पम ज्ञाग ॥ पावच्छिन विनय बेयावच्च तेम सिद्धाय,
 ध्यान काज्जलग अरुपंतर तप पम जिय आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिमु
 ज्ञाव फाल अवधारण थित निरवंच, अनुजागे रत्त तेम प्रसेदे दस

नो संव ॥ पट प्रतिहार धार तग्वार मय वलि तेम, निगम चित्र
 कर कुंजकार जंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना ज्ञाप्या
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सज्ञाव ॥ इम संसेपे
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्पो वरण वस्युं हिव मोख
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूपण इव्य नै खेत्र प्रमाण, फरसन काल
 पांचमो ठठे अंतर जाण ॥ ज्ञाग सातमो ज्ञाव आठ तिम अलप
 बहुत्त ॥ ए नव जेवै ज्ञावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक
 पदवी ठै जे पदेअविनाज्ञाव, व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम
 नदीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मगल द्वार, विवरण
 कर वरणवस्युं सुणज्यो सुदुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै क्षायक सन्नी
 असन्नी येसन्ति, अणहारी आदारी अणहारी ऊपश्च छव्य प्रमाणे सिद्ध
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम ज्ञाग एग सिद्ध होय अणंत ॥
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती
 थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां ज्ञावै नहि सिद्धां अं
 तर जोय, मरव जीवथी ज्ञाग अनंतम सद्ध सिद्ध होय ॥ २७ ॥
 दंशण नाण जेहने बे ते क्षायक ज्ञाव, जीवत जेहने वलि परणाम
 क ज्ञाव समाव ॥ सहुथी घोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेदथी
 थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवाधिक
 नव तत्त तत्त सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सगवा नेरत्त ॥ सरख
 जिनेसर मुखथी ज्ञाप्या वयण जहत्य, ए बुद्धी जेहने मन संमत
 निञ्चल तत्य ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अ
 र्द्ध पुगल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उत्पणिय अणंतै इग
 पुगल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तद्गुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०
 ॥ इम नव तत्त जेद पन्तिजेदै विवरण कीव, आवक आयद कीन
 सदाय पूरण रस पीव ॥ कोटिक गुण मुज्ज सदन प्रकास नदी उपमान,

श्रीजिनदाज्ञचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक
करिवर सिंदे वधरो साख, रत्नराजमुनि ते वरसाखानी पमिस्ताख ॥
ग्यानसार ते पमिस्ताखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे
विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवच्चर निश्चय नय विगई प्रवचन
माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन
ससि वार मेरु तिथ परन कीध, ज्यार कथा तजि तत्वकथा ज्ञज
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व ज्ञापागर्भित स्तवनं ॥

॥ अय दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ रूपज्ञादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥
दंरुक रचनायें तबुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विजु अगन दीवो दही, दिसि पवणें
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्तइ काय ॥ बि
ति चौरिंदी गप्पथर, तिरि नर तिदां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस
वेमाणिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं दिवै, गणनाये
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ वीर जिणेशरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगादण संघयणेंसणा संठाण, कोदाई लेत्तिंदिय दो
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिछी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग,
उपपात वलि चयण ठिई पऊत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिमिनोआदार
सन्नि गई आगववेय, दार गाहा छगनो ए अरथ कह्यो संक्षेव ॥
दिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुचो हुं तेदयो
कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ जी ॥ देशी गूरती परीनानी ॥

चो गप्पय तिरि वाळु कायें ज्यार सरीर, मनुष्य तें पांच
दंरुक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ आवर ज्यारनें जयन्य उळोसे, देइ

प्रमाण, ज्ञाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरबनो
 जघन्य स्वज्ञावक अंगुल ज्ञाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने
 विज्ञात ॥ सुरनो सात हाथ गप्पय तिरि वणस्तय काय, जोयण
 सहस साधक इक सहस अनुक्रम आय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ
 वेइंदी जोयण वार, एग जोयण चउरेंडी देह उंचै आकार ॥ आरंज
 कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, ज्ञाग एक इग आंगुलनो संख्या-
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख,
 नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साज्ञावकणी डुगणो नारक
 वैक्रिय काय, एक मडूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥
 सुरनें पद एक उक्कोसविउषण काल, विगल संघवणी आवर सुर
 नारकनी माल ॥ गप्पय नर तिरनें पर विगलनें ठेवठ एक, सरब
 जीवनें च्यार दसेसणाये लेप ॥ ५ ॥ नर तिरनें पर सुरनें सम-
 चौरस संठाण, हुंरग इग नारग विगलेडी सूत्र प्रमाण, नाणाविह
 धयसुईमरनी चंड आकार, वणसइ वाऊ तेऊ नू बुदबुद अप्पा-
 कार ॥ ६ ॥ सहनें च्यार कसाय गप्पय पर नर तिरि दोय, वेमा-
 णिय नारग तेऊ वाऊ विगल त्रिक दोय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस
 रह्या ने च्यार, दार इंडियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥
 समुद्धात सग नरनें पण गप्पय तिरि देव, नरग वाचुनें च्यार
 भेसनें तीनूं जेव ॥ दिही दोय विगलमें आवरने मिथ्यात, सेसने
 तीन दिहि जिम प्रवचनमें विज्ञात ॥ ८ ॥ आवर यि ति नें एक अच-
 स्कू दंसण दोय, चौरिंडो ते चक्कू अचस्कू दंसण दोय ॥ मनुजनें
 च्यार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर
 नारगनें तीन ॥ ९ ॥ आवर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण,
 गप्पय मणुनें तीन अनाणनें पांचु नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें
 तेरे जोग, मनुजनें चार च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाक्कायने पाच तीन आवर संयोग, मनुजने वार नरग तिर देवने
 नव उपयोग ॥ विगल डुगे पण पर चौगिंडी आवर तीन, उववाय
 इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या
 चवण पपात, गप्पय तिरि विकलेंडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ
 अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असत्री असंख चवंत
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किठ,
 वणस्सइ च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पळय
 सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पळय अधिक लख वरस पळय
 जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें
 ऊणा दोय पळयनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणचास
 दिवस उम्मास ॥ अंतमुहुत्तजइनें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥
 जुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पळय तेना अमंस वेमा-
 णिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें पट आवरनें च्यार ॥ विग-
 लनें पंच पळ्ळती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय उए
 दिवसनो आदार ॥ होय ने होय पंचादिक दिस ए सब मऊार,
 दीड कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें डेउ पणसा
 सत्रि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गप्पय मणुजनें दीड कालकी सत्रा
 होय, केइक आचारज कडे दिठिवायथी होय ॥ निच्चय पळ्ळता पं-
 चिदि तिरि नर जेठ, चौविह देवां मोहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥
 संख्याउपज्जंत पंचेदी तिरि नर तेम, पळ्ळता जू दग पत्तेय वरास्सइ
 जेम ॥ ए तरवेनें निच्चे सुरनी आगति हुंति, पळ्ळत संख गप्पय
 तिरि नर तग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वगत्या नर तिर
 उपजै न दुवे सैग, जू अप्प वणस्सउमे नरग विण उपजै असेस ॥
 पुढवाई दस पयमे जू आज वणजंति, पुढवाई दस पयमे तेउ वाक्क
 उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाक्कनो गमण पुढवी पर नदमे हुंत, पुढ-

चाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति
 मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊग्री मरीने जीव मनुज नवि थाय
 ॥ २० ॥ थीपुरसे चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल
 नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पऊता मणु बादर अगन वेमाशिक
 तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम ॥ २१ ॥ वेइंड़ी तेइंड़ी
 पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥
 दे जिन ए सहु जावमें पांन्या वार अनंत, तेदनो अनुक्रम गिस्तां
 किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंरुगमें ते गति
 संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण
 दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सदावे देसविरत
 प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेइथी
 तुह दरसनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक
 दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥
 खरतर गह्वर जट्टारक श्रीजिनलान्न सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेदना
 पइ अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या
 तेवीस दार दंरुग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत्त सप्ति रस वारण तेम
 चंद निरधार, पोस मास पख उऊल सातमनें सोमवार ॥ आवक
 आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अछम चौमासो कज जैपुर नगर
 मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ डुडा ॥ ज्ञुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव स्वरूप ॥
 कदस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ दाह १ ली ॥ देसी मुरती मनीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव डु जेद, सत्ता जिनै सिद्ध अनं-
 तिरूप अजेद ॥ संसारी थावर डग तिम अस दोष प्रकार, नु अप वाउ

तेन वणस्सिंइ आवर धारा ॥ १ ॥ फिटकरयण मणि विड्म दिंगुल वलि
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी बन्नी
 अरणेढो पालेवो पापाण ॥ जोमल तूरी नल जूमि पाहण जे खाण
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विवेद ॥ जूमि आकास
 नल हिम करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अस्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥
 अंगारा ऊला जोजर तिम नलकापात, असणि कणग विद्युतादिक
 अगनि जीव विहात ॥ उग्रामगनकलिका मंमल वलि मुख वात,
 सुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ जेवें हात ॥ ४ ॥ साधारण पनेय
 वणस्सई जीव इ जेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं
 वा अंकुर कूपल फूलण वलि जंवाल, जूंफोमा अदत्तिय सरवे जे फ
 ल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ बाधलो थेग पालंको साग, गुपत
 सिरा सांधा गांठा जांजे सम जाग ॥ काटी माल जूमिमें रोप्यां पल्ल
 व आय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रे
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गल फल मूल काठ बीजै जिय एक ॥
 वण पसेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु
 दुर्जे आय ॥ ७ ॥ सूखमथ्री ते नियमा दिढी निजर न होय, लोका
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवनी संख गंमोला लडिगा
 लटनी जात, चंदन फाअलसीमेहरजोका विहात ॥ ८ ॥ माय वा
 हाक्रम पौरादिक वेडंडी होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी होय
 ॥ दोषक ईली धीवेल गोमीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर
 रुम नतपात ॥ ९ ॥ धनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेद, ईली
 कंधुक इवगोप तेडंडी एड ॥ बीवू दंकरण जमरा जमरी इंदी ज्यार,
 तीमा माखी मांत मडर कंसागी चार ॥ १० ॥ कवममोला मांक
 मिय पनंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचिंडी ज्यार विवेद ॥

ए चंद, अङ्गण केरो ए डंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥
 नवमें पूरण कूँज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,
 मनह अयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि
 इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥
 तेरम रतननी राति, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें
 ए दीघो, पातिक धूमथी नीगो ॥ ११ ॥ सुपन कहा सुविचार, हरख्यो
 नूप ऊदार ॥ पुत्ररतन दोस्यै ताहरै, आस्यै नदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,
 आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्य
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर
 पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ दाल ३ ॥

दिव जनम्या जगगुरुजगत्र अयो जयकार, खिण इक नारकिंये
 पायो सुरक अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध,
 कर आनक पोदती वंजित तेदनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणदीज निसि चोस
 डंड मिली तिहां आवै, लेइ निज जक्ते सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क
 री जनम मदोछव जननी पासै ठावै, तिदांथी सुर सब मिल ही
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ डम रयण विदाणी ऊगो दिवस ऊदार,
 घर गाउँजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,
 तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधे दिन २ कला
 करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देखिंद ॥ गुणकला
 विचक्षण विद्यातणो निधान, जोवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदै प्रज्जु रहैतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग
 संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणवै अवसरू ए, देह
 संवहरी दांन धाचक जैन सुखकरू ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय
 इंद्रादिक सब मिल्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदल्या
 ए, पांमीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, आपीय चौविह संघ
 मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गौमीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह
 परलोग सुवंचित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवमीपुर जावै,
 चोर धाम संकट दलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय
 पञ्चमावइ जास बहे सिर आण, सांमल वरण सुसोजित नव कर
 काय प्रमाण ॥ कळपवृक्ष चिंतामणि कामगवी सम तोलै, श्री गुण-
 शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

भंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु
 अजित जिएंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ विहुं जिनवर
 प्रणमेव ए, विहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यजंमार जरेसु ए,
 भानव जव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोरुहि लाख पचास ए, सागर
 जिनसासण जास ए, रिसइ जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर
 हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां
 गाजियो ए ॥ विजया तसु परनार ए, विहुं रमयति पासा सार ए
 ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो द्वार ए ॥ उयर
 वस्यो वस मास ए, प्रज्जु पूगी जननी आस ए ॥ ५ ॥ विहुं जण

मन आंगदियो ए, सुत नाम अजिय जिए तो दियो ए ॥ तिहुअण
 सयल उछाद ए, कमर बाधे जगनाद ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस
 तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चाले
 गेल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो सं
 सार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखो गज गद्गह्यो ए,
 लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो
 ए, तव वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साथै सब काज ए, प्रभु
 पाले पुदवी राज ए ॥ ९ ॥ द्विव दयणापुर ठाम ए, विश्व
 सेन नरखर नाम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे देव
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवख्यो ए, अचिरा उवरे सुत अवत
 र्यो ए ॥ मांतव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जाणियो
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिस नाम दियो आंगंत ए
 ॥ जिन गुण कुण जांणे कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नही ए
 ॥ १२ ॥ नयण मखूणो हिरणलो ए, वन सिंदूर बीहै एकलो ए ॥
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नणे लोक कुरंग ए ॥ तो उजग्यो स
 नि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग
 अति खलजल्यो ए, जय जंजण सांमि सांजल्यो ए ॥ आणदियो
 मन आरणा ए, पाय मेवे मिस लंछन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति
 परणे वणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल बल आ
 यण जोगये ए, पीय राज जल पर जोगये ए ॥ १६ ॥ कुमर त
 णे संमल समे ए, पंचास लक्ष्म वरतां गमे ए ॥ तो तेजे दिणप
 र जियो ए, ऊपतो चक्रयण तिसो ए ॥ १७ ॥ मारी जरद व
 खेन ए, वरतावा आण अखेन ए ॥ चवद खण नव निदि मही
 ए, वनु सोल गहन जसै अही ए ॥ १८ ॥ लक्ष्म बहुनर पुर

वरा ए, वत्तीस मौमवद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, विन्न
 वे नमै वे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख
 चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र धमधमै ए, वत्तीस
 सहस नाटिक रमै ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला
 वण्य लोला जरी ए ॥ जंगम सोदग देहरी ए, एसी चौसठ सह
 स अंतेजरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र
 यण जंरार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुवपु रे पुण्य प्रमाण
 ए ॥ २२ ॥ इम चक्रीसर पंचमो ए, चौथोदूसम सूसम समो ए ॥ वरस
 सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर विहुं
 तीर्थकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए
 सार ए, विहुं लोधो संजम जार ए ॥ २४ ॥ विहुं खम दम धीर
 ज धरी ए, विहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ विहुं जिन ज्ञाण
 समाण ए, विहुं पांभ्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ विहुं देवहि कोरु-
 दिमहि ए, विहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण विहुं ठाण
 ए, विहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेजरी ए,
 विहुं आगलि इंड अंतेजरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि
 गुण गावै सुरवहू ए ॥ २७ ॥ विहुं तिर ठत्र चमर विमल, विहुं
 पग तल नव सोवन कमल ॥ विहुं जिनतणै विहार ए, नवि रोग
 न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ विहुं उवयार जुवन जरी ए, विहुं
 सिद्ध रमणसुं परवरी ए, विहुं जंजी जव फंद ए, विहुं उदयो
 परमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणे चिंतामण सुर
 तरु समो ए ॥ शुणि अति संज विहाण ए, तिहां इह परजव नवि
 दांण ए ॥ ३० ॥ विहुं उन्नव मंगल करण, विहुं संघ सयल डुरिय
 हरण ॥ विहुं वर कमल नयण वयण, विहुं श्रीजिनराज जुवण
 रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते ज्योतिमतणी ए, श्रीअजिय शान्ति

जिण शुय जणि ए ॥ मरण विहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमस्सुन्दन
उवआय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पहिलेहण स्तवनं ॥

॥ बाल ॥ १ ॥ कगूर हुवं अति ऊजलो रे ॥ ए देगी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान
क्रिया जिण उपदिती जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन
धर श्रीजिनउपदेस, वृष्टे कर्मकलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पहिलेहण
मुहपत्ती तणी जी, ज्ञाखी ठे पचवीस ॥ तिहां ए जाव विचारिये
जी, इम ज्ञाखै जगदीन ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम वे पास बिलोकिये
जी, नूत्र अग्रणी दृष्टि ॥ ए पहिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित भिण्या मिश्रनी जी, मोदनी तीननो
त्याग ॥ कामगग न्नेहरागनें जी, तज बलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥
ज० ॥ सीप बधू टक गुरुश्रीकी जी, वाम दाथ करनाउ ॥ नव
अग्योसा आदरो जी, नव पग्योसा गमाउ ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व
गुरुनत्वम् जी, धर्मतत्व अह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी,
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरमण चाग्रिना जी,
मंत्रद तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अद-
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन बच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे
शुद्ध ॥ पण्डितिये बलि जाणनें जी, नाने दंस विगुह ॥ ज० ॥ ८ ॥
पहिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी नार ॥ दिव पहिलेहण
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ दास्य अरति
रति धोयनें जी, मुह करे नाम वाद ॥ तज जय शोक दुगंठना
जी, दक्षिण पिण करे नाद ॥ १० ॥ ज० ॥ युगली नैस्या तीन
ए जी, ते निरर्थी करि दूर ॥ रिद्धि रस माना गारवांजी, करि
मुखयो चक्रूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काद मध्य तीन उग्रही जी, मा

या निघाण मिच्छात ॥ च्यार कषाय वेव गलणी जी, क्रोधादिक करा
 घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विरावना जी, चरण विन्हे सुद्ध
 होय ॥ ए पमिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥
 इम पमिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै
 करै जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-
 वरतणा मुखणी, अरुण गणधर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-
 णी, सुणो नविषण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलङ्घिकीरत, मुख-
 थकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पमिलेहण तणी विध, लङ्घिकीरत गणि
 कह्यो ॥ इति श्रीमुहपती पमिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ बाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार
 थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित
 अमें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप
 करै, जिएथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागे जिके गुरुमुख
 आलोइयै, जीव निमल हुवै बख जिम घोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरुण ते धारणा ॥ किएही
 कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकष्य कहीजियै ॥ ३ ॥
 कीजिये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संझा धरी ॥
 कूदतां गर्वतां होय हिंता जिहां, दर्प इण नांम करि दोष तीजां
 तिहां ॥ ४ ॥ विणततां जीव जीवनेगिनर करै जिको, चोथौ आकु-
 टिया दोष ऊरजै तिको ॥ अनुक्रमे च्यार ए अधिक एक एकथी,
 दोष धर प्रायश्चित्त लेह विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागष आयो पुंरंदर नाम ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगरण-
तणी आसातन कीधी दोय ॥ जयन्यथी पुरमठ एकासणो आंखिल
उपवास, अनुक्रम पढ़ आलोयण सुगुरु बताई तास ॥ ६ ॥ ए
जो खंमिंत आयै अथवा किहांई गमाय ॥ तो बलि नवा करायां
दोय सहू मिट जाय ॥ आपना अणपमिलेह्यां परिमढनो तप धार,
गिरतां एकासणें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार
तिहां पुरमठ जयन्य, एकासण आंखिल अछम चिहुं जेद मन्न ॥
आशातन गुरु देवनी सादर्मासुं अप्रीति ॥ जयन्य एकासणनी
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ
प्रमिळ, वि ति चनेंई प्रतायां एकासणथी वृळ ॥ बहु वि ति चौरें-
दिव हणयां वि ति चउ उपवास, संकट्यादि चिहुं विधि डुगुणा
डुगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उदेडी कुलियावना कीनी नगरा जंग, बहुत
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन रुमि पातन
आंखिल इक एक, जीवांणी दोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥
संकट्यादिक एक पंचेडी उपडव दोय, दोड त्रिण आठ दसै उपवासै
आलोयण जोड, बहु पंचेडी उपडव ठठ अछनें दस बीस ॥ चिहुं
प्रकारे चढती आलोयण सुण ले सीन ॥ ११ ॥ पंचेडीनें लकमी
प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आंखिल उपवास नें ठठ विचार ॥ साथ
समठें लोक समठें राज समठ, कुमा आल दियां डुड चौथरु ठठ
प्रत्यक ॥ १२ ॥ उपवास दस दंभायां तेम मरायां बीस, इक लख
अनी सदस नवकार गुणो तजि गीस ॥ पख चौमास वरस लग
इक त्रिण दस उपवास, अधिको प्रोभ करे तो आलोयण नडि तास
॥ १३ ॥ मूआवना दोय कियां गुरु ऊपर गेस, जीव विराधन
कीयां बहु असर्ताने पेंस ॥ कमीय डुवाजम बार हजार गुणो नव-

कार, मिठाडुकरु देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी ताम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पञ्चखाण, विण दीधां वांदणा, पम्कमणा
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै जणया, इ
क१ आंखिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंखिल, ज्ञां
गै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच पट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवास, आंखिल ऊप
रां, अधिको दंरु वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, जंग कियां
वलो, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग,
चूले घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी
ठुरी, आंखिल चढता आदैरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री
जोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परडोह
चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनेर करमांदान,
नियम करी जंग, मद्य मांस माखण जरव्या ए ॥ आलोयण उ
पवास, संकम्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोड्या
मिरखावाद, अदत्तां दानं त्युं, जघन्य एकासण जाणोये ए ॥ अति
उत्कृष्टी एण, जाण आलोयण, उपवास दत्त२ आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ गुण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत जागे अतीचार, जघन्य ठठ आलोयण धार ॥
मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥
परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांदि जंग ॥ चार सिद्धा
व्रतने अतिचारे, आंखिल त्रिण प्रत्येके थारे ॥ २३ ॥ शीलतणी
नववामि कदाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस
हुआं अविवेके, एक आंखिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने आवक
पोसाध, एकैही सञ्चित सुंघटे कीध ॥ बीसर जौले सञ्चित जल पी

ध, देम एकात्मण आंवित्र दीध ॥ २५ ॥ विण धोधां विण लूह्यां
पात्रे, एकात्मण तिम पुग्मिह मात्रे ॥ गड मुदपत्तो आंवित्र सागे,
तिम जुवै अठम अववागे ॥ २६ ॥ ज्यार आगार ठीमो राखै, व्रत
पञ्चखांण कर पट् साखै ॥ दोवे मिठामिडुकम दाखै, आलोयण
लेतां अज्जिलाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता
नावै पार ॥ तोपिण संकेव तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि
स्तार ॥ २८ ॥ इय श्रीवीर जितेसर स्वांमी, जसु आगम वचने
विधि पांमी ॥ जीतकछप ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २ए

॥ कल्य ॥

॥ इम जेठ धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयने ॥ ए
कांत पूछे गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयने ॥ विध एइ करली
तेइ तिरसी, धरमवंततणे धुरे ॥ ए तवन श्रीधरमनिंदं कीधो, चौ
पने फल बयी पुरे ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अय नंदीश्वर द्रोप स्तवनं ॥

नंदीसर वाचन जिनालय, सत्त्वता चोमुख सोदरे रे ॥ ऊप
ज्ञानन चंडानन वारिषण, बह्ममान मनमोदरे रे ॥ नं० ॥ १ ॥
आठमो ठाप नंदीसर अदन्नुत, बलयाकार विराजै रे ॥ तेहनेमध्य
विहुं दिस नोन्नित, अंजन गिरिवर ठाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण
मदन चोराती कुंचा, कुंचणगे अज्जिगमा रे ॥ मूलेप्रथुल मदस
दम जोयण, चववि सदन कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रामाद
प्रलूना, अति उन्नंग उदाग रे ॥ माधू जंया विद्याचारण, बांदे वि
विध प्रकार रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चेत्येइ उकमो चोवीस, धिव संख्या
मव दाखी रे ॥ ध्यावो मेवो जविजन जगते, सुध आगम कर ना
न्ही रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ कुंचणगे महुं जोयण बहुतर, सो जोयण
आयामा रे ॥ विहुनपणे पचास जोयणना, प्रलूप्रामाद नुगामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रज्जुनी, विविध रतनमई कार्या
 रे ॥ जिन कल्याणक उद्यव करवा, सुरपति जेके आया रे ॥ नं०
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं नवरै, चोमुख द्वार विसाला रे ॥
 वावश् विच डकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो
 सठ सहस जोयण उत्तंगै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि
 सि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥
 ९ ॥ वावश् नैं अंतर विदसैं, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोयश् संख्या
 जगदीसै, कहा नही ए कूमा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मानदस
 जुंवा, दसश् सहस विस्तारारे ॥ ऊल्लरिसम संठाण जगत गुरु, नि
 श्रय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण,
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपनिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिन
 राज वखाणै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रज्जुना वावन, नंदीतर
 वर दीपे रे ॥ इय ज्ञाव विधि पूजा करतां, मोह महा जम जापै
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जीवांनिगमें जा
 णो रे ॥ इम अधिकार ठै ग्रंथ अनेकै, इहां संका जत आयो रे ॥
 नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुजव इहा
 ल्यावो रे ॥ घ्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाड छोपै बीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वेंड मनसुध विहरमाण जिणेत看 बीस, द्वीप अढीमें विचरे
 जयवंता जगदीश ॥ केवलग्यानने धारे तरै कर उपगार, किय २ ठामे
 कुणश् जिन कदसुं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषकेअ
 प्रमाण, बलवाकारे आधि पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुंद तोह
 द्वीप अढाई तार, तिणमें पनरै कम्भाज्जुमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥
 पदिलो जंबूद्वीप नमै विच आल आहार, लांको पिहुलो डक लख

जोयणने विसतार ॥ मोटो तेदने मध्य सुदरसन नामें मेर, निणथी
 विसि विदमानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथको दक्षिण विसि
 एद जरत सुज केत्र, पांचमे वधीस जोयणठ कला तेदनो केत्र ॥
 उत्तरखंभे एदवो एखत केत्र कढाय ॥ ५ ॥ चिहु करमांजूमी ठए
 थरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सदस ठसे चोरासी जोयण जाण,
 च्यार कला ए मढाविदेद विखंज वखाण ॥ बावीसमै तेरे जोयण
 एक विजय पढुलाण, एदवो वत्तीस विजय विराजे जेदने ठाण ॥
 ॥ ५ ॥ मेरु विच कर पूरव पश्चिम दोय विजाग, सोलै २ विजय
 तिहां विचरे श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे थारे तारे श्रीथरिदंत,
 एदवे मढाविदेद करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेद विजय
 पुष्कलावता आठमी ठांम, पुंमरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंथर-
 रुवामि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नाम, पश्चिम विदेद
 बीजो युगमंधिर कीजे प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वज्रविजय
 वलि पूरव विदेद, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेद ॥
 नलिनावत्त चोर्वातमी पश्चिम विदेद वखाण, बीतसोका नगरी
 तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेड जिणवर जंबूद्वीप
 मऊार, मढाविदेद मुग्गन्नण मेरुतणें परकार ॥ एदवो जंबूद्वीप मढा
 गढ जेम गिरिंद, खाई रूपे दोय लग्य जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ इल ॥ २ ॥ दिवानी दिन आयियो ॥ ए चाल ॥

दीपे बीजो द्वीप ए, धन२ धातकी खंभ ॥ पिहुलो चिहुं
 लग्य जोयणे, मंमल रूपे मंभ ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय जरत दोय
 एखत, दोय वलि मढाविदेद ॥ करमजूमि खट ठे जिहा, जण-
 द्विज नामें एद ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरव पश्चिम धातकी, खंभ गिणोजे
 दोय, विजयमेरु पूरव दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥
 उक २ मेरुते अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांमिने,

लेखो चिहं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो,
 उधो स्वयंप्रभु ईस ॥ रूपज्ञानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस
 ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥
 पूरव धातकी खंरुमें, मदाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पद्मिनी
 विहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नामे अनुक्रमे,
 विजयभेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो मूर प्रभु नमूं, दसमो
 देव विताल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥
 दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंडानन जिन, पछीम धातकी मांहि ॥ विचरै
 च्यारुं जिणवरा, अचलभेरु उछाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी
 खंरु ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-
 वधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पद्मिनी प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींठ्यो चूनी जेम विचाल ए ॥
 सोलह लख जोयण विततार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥
 उलालो० सुखकार पुष्करछीप त्रीजो, तेहनें आधे पंगै ॥ विच पड्यो
 परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहा लगे ॥ तिण आधिकर अठ लाख
 योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमी ठ ए कहीजै, धात-
 की खंरु जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधे पुष्करनें पूरव दिसै, मंदिर
 नामे मेरु तिहां वसे ॥ पडिम विजुनाली मेर ए, इहां किण इतरो
 नामे फेर ए ॥ २० ॥ फेर ए इतरो इहां नामे, अवर ठामे को नही ॥
 एक २ भेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कदा ॥ इम जरत एरवत
 मदाविदेहे, नाम लखो देत ए ॥ तिणदाज नामे विजय सगली,
 लागता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंरु तिम पुष्कर
 मदी, इहां क्षेत्रानी रचना विधकही ॥ बार २ कइनां ए विततार ए,
 पद्मिनी पर लेख्यो सुविचार ए ॥ २० ॥ सुविचार वाकी तेद सगली,

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पछिम जेइनी ते, तेइ तिमहीज
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंडवाहु जुजंग ईतर नेम च्याग तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर
 अग्रध मांढे, मरवा जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन बंदू जिन
 मतेरेमो, श्रीमदाज्ज अठारम नित नमो ॥ वेवजता उगणीसम
 देव ए, जमो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण च्याग पुष्कर
 अग्रध मांढे, कट्या पछिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि विहुं
 दिमि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासो पूरव लाख वरसा, आज इक
 २ जिण तणो ॥ पाचमै धनुष सरीर लोहे ॥ सोवन वरण सुहामणो
 ॥ २३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ४ ॥ दिव उरुष्टे
 जेद कदीन ए ॥ ॥ एकनो सत्तर तिहां जिनकर कहै, पांचे
 जग्गे जिम पांचे लहे ॥ ३० ॥ जिण लहे पांचे तेम पांचे,
 पारवत मिल दस हुवा ॥ इक २ दिंदहे वत्तीस विजया,
 तिहा पिण ठे जूजूआ ॥ एकनो सत्तर एम जिनवर, कोमि
 नवसय केवली, नव सइस कोसी अवर सुनिवर, बंदिऐ नित ते
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एगवते आज ए, पंचम आगे
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे मडाविंदह म, विचरे वीस जिन
 गुणगेद ए ॥ ३० ॥ गुणगेद दोय अठार वरजित, अतिसयां चौतीन
 ए ॥ चौगठि इंद नरिंद नेवित, नमुं ते तिमदीन ए ॥ तिहां आज
 तागण तगण विचरे, केवली दोय कोरु ए ॥ दोय सइस कोसी सुसापु
 रीजा, नमुं वेकर जोरु ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अही ठीप पनर करमा
 जूमी केव प्रमाण ए, निहान प्रकरण तेइ जाह्या रीत विहरमाण
 ए ॥ श्रीनगर जेमलमेर संवत सतर गुणनोस नमै, मुन्यविजयदख
 जिनंद सानिय नेद धरि प्रमती नमै ॥ २६ ॥ इति अही ठीप
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंहुदीप २ धानही खंड ३ आधेपुष्करदीप एवं
 २ ॥ ठापते ॥ जगत ए एगवन ए मडाविंदह १ ॥ कर्मदूरीति विच-

रता साध्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाझाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र जणी ऊ
महेज्यो, तुम्हे नरजव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीर्थो
मांहे ठाजे, आबू मारूमै देस विराजे रे ॥ जा० ॥ स्वरगथी वादे ला
गो, नुंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास
कहावै, निरखंता त्रिपति न आवे रे ॥ जा० ॥ एतो मुंगरियानो राजा,
एहनी ठै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ वह ऋतु वास वणायो,
एतो चंपला अंबला ठायो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा ऊऊा, जिहां
तिहां वनवेढ्या आऊा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ नार अढोरे वणराई,
एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू
लमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर जूमि विसाला, देवल
दीठा रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरबाई, चक्केसरि देवी सहा
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवारु वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जो
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाइण आरास मंमायो रे ॥ जा०
॥ ६ ॥ जीणी२ कोरखी ऊेरयो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा०
॥ नवी२ ज्ञांति वणार्ड, जिहां तिहां कोरणिया जिणार्ड रे ॥ जा०
॥ ७ ॥ उत्तरे पाइण जेतो, जोखीजे पाइण तेतो रे ॥ जा० ॥
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी द्वितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥
उगणिस कोम सोनइया, इव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा०
॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागे रे ॥ जा० ॥ ९ ॥
पुठै चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल
समवम कोई, जूमंमल माहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति
ण वंस विगताला, वस्तुपाल अने तेजवाला रे ॥ जा० ॥ देव नरो
ऊहि पाई, इहां नियां पिण सुफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥

हवो जिणद्धर पासैं, वार कोरुनी लागति जायै रे ॥ जा० ॥ देरा
 णी जेठाणी, आलानी अलव कदाणी रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ इहा देव
 ल मोह बधागी, नमनाथजी बाल ब्रह्मचागी रे ॥ जा० ॥ कस
 वट पादण केरी, मूरत मुरमा रंग डेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल
 बामो दीठां, ने तो लागै नयणै मीठारे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल
 पासैं, लोक जेवे घणो तमासैं रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गाउ आ
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा
 चारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते
 घाते, जिनमिग ग्ही दिनने गतो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसैं चरमा
 लो, जिण बिंवनो जाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली
 ज्ञोम मोक्षागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६
 ॥ षड्गती कण्णी वादवाडो, इहां लीथो लखमी लाडो रे ॥ जा०
 ॥ १७ ॥ इण हुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन चावी रे ॥
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥
 ॥ १८ ॥ गर्तीजोगो दियगवो, जिनवन्ना जम गुण गावो रे ॥
 जा० ॥ सादमी बछल कीज्यो, जानमलीनो जगलीजो रे ॥ जा०
 ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, बातां केइ अवगज बाली रे ॥
 जा० ॥ मुणिये ठे जे कोई, अदिनांण जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥
 ॥ २० ॥ ए तीम्वना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावै रे ॥
 जा० ॥ ॥ ए तीम्वर लमनोले, कृण आवै रूपचंद बोलै रे ॥ जा० ॥
 २१ ॥ इति आचूर्जी स्तवनं ॥

॥ जय नवल मानवता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ स्मिन्नानन व्रथमान, चंचानन जिन, वाग्गियण नांय जि
 णा ए॥ १ ॥ तेद नणा प्रामाद, त्रिजुवन सामता, प्रणमुं बिंय मोहा-
 मणा ए ॥ २ ॥ चैड्डर मग कोमि, नान्य वडुवर, चैड्डर प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर,
 जुवनपती मांदि मन वसी ए ॥ ४ ॥ वारे देवलोक प्रासाद,
 चौरासी लाख, सहस बिन्नू नै सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

द्विवै नवग्रीवैकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा
 सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अरुत्रीस सह
 स सत साठ अठै गुण पाण ॥ ६ ॥ नंदीसर वावन कुंमल रुचक
 वखाण, चउ९ चेईहर साठ सवे त्रिहुं ठाण ॥ इकसो चोवीसै गुण
 प्रतिमा चिहुं नाम, ज्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥
 नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कु
 रु गजदंते वीस ॥ मानुपोत्तर परवत ज्यार२ इखुकार, असो अति
 सुंदर वक्त सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी इह सुजगीस ॥ कंचन गिर
 वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत्त दीरघ बैताढ्य, वीस सत
 रसो आढ्य ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥
 जेवु प्रमुख दस रुक्क, इग्यारसै सत्तर सुक्क ॥ कुंम त्रणसय असी
 ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,
 वीस सो ए अंक गुणिये रे, तीर्थंकर प्रतिमा शुणियो ॥ १२ ॥ त्रिण लाख
 सहस बलि ज्पासो रे, प्रतिमा आठसो नै असी ॥ मग्वाले सब
 मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि मत्तावन
 लम्का रे, दोवसे निव्यासी कदकम्का ॥ द्विव प्रतिमा ग्यान कदीजै

रे, जिनवरनी आण वहीजे ॥ १४ ॥ पनेरै वेतालीस कोमी रे,
अमृत लम्ब अधिके जोमी ॥ वनीस मदस अधिक कहीवै रे,
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ बाळ ॥ ५ मी ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥
पायकमल तेढना नित प्रणमिधै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥
विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सारूपो जी, पूजै प्र-
तिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥
जिनप्रतिमा बोली जिन सारपी, दित सुख मोक्ष निवानो जी ॥
जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रवानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥
जीवाजिगम प्रमुख मांदि जाखीयो, ए सहू अरय विचारो जी ॥
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हिये दरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कल्या ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संभुण्या जिनवर तणा, चिहुं
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज
समयसुंदर गुण जणें अजिराम ए, चिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो
सदा मुळ परणाम ए ॥ ५ ॥ इति सायवता जिन चैत्य जिनविंव
मंग्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत महर सीनल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे श्रीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥
प्रभूजी विराजै रे सूरत विंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥
जगदितकारी रे जिनजी अवतग्या रे, श्रीहृदय नृप गेद ॥ श्रीवज्र
मोह रे लावन सुंदर रे ॥ कनक वर्ण प्रभु देद ॥ २ ॥ ज० ॥
निश्चय निवारी रे संजम संग्रहो रे, लायें केवलनाण ॥ तघन घना-
घन जिन भव नरसता रे, विन्दरघा त्रिजुवन नाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, ज्यार अघाती कर्म ॥ दूर
 निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥
 संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिविंव ॥ प्रतिदिन
 लहियै रे प्रभु सुप्रसादघी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥
 श्रीजिनवरनो विंव बिलोकतां रे, उरुत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रह
 सुग्रह संपजै रे, समकित पिण ठह आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसङ्ग-
 रुता मुखघी सांजलडा रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे
 निज चित्तमें धरबा रे, नेमी सुत जाईवास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य
 कराव्युं रे सुंदर सोजतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो
 रे विंव जराबियो रे, सदसफणा बलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस
 अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-
 वसे आबियो रे, विंव अनेक उवार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी
 लहु मेले अया रे, विंवाहिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-
 दनी रे, विधि पूर्वक जन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सृरी-
 थ्वर दीपता रे, श्रीखरतर गठ जाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन
 थुण्वा रे, विबुध कृपा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ धारे हूं तो भरवा गइथी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

द्वारे मारे धरम जिनंठसुं लागी पूरण प्रीन जो, जीवरुलो
 ललचाणो जिनजीनी उजगे रे लो ॥ द्वारे मुने आस्ये कोइयक
 मर्म प्रभु सुप्रमन्न जो, वातरुली तब आस्ये मझारी सवि बगे रे
 लो ॥ १ ॥ द्वारे कोड दुर्जननां जंजेरयो माझरो नाथ जो, उज-
 वस्ये नडी क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ द्वारे मोर स्वामी सरि-
 खो कुण ठे उनियां मांन जो, जईय रे जिन तेहने धर आस्था

करी रे लो ॥ २ ॥ दारें मारे जल सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध
 जो, बावी रे सी करवी तेइथी गोठनी रे लो ॥ दारें कांड कुटूं खाई
 ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतनी रे लो
 ॥ ३ ॥ दारें प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, बायो रे नवि
 जाण्यो कलियुग बायरो रे लो ॥ दारें मोरा लायक नायक जगत
 बज्रल जगवंत जो, बारु रे गुण केग नादिव मायरु रे लो ॥ ४ ॥
 दारें प्रभु लागी मुजने ताहरी माया जोर जो, अलग रे रक्षांथी
 होइ नृनांगलो रे लो ॥ दारें कुण जाणें अंतरगतिनी विण मादा-
 राज जो, डेजे रे दसी बांलो ठंसी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ दारें तारे
 मुखने मटेरु अटक्युं माहरो मन्न जो, आंखमली अणियाली का-
 मगगारीयूं रे लो ॥ दारें मारे नयणा खंपट जोये खिण ० तुऊ जो,
 राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ दारें प्रभु अलग
 ते पिण जांलज्यो करीनें डझू जो, ताहरी रे बखिदारी हुं जाडें
 वारणे रे लो ॥ दारें कवि रूप विद्युवतो मोहन करै अर्दास जो,
 गिरुआ अइ मन आंलो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ गणपुग स्तवनं ॥

गणपुं गजिचामणो रे लाल, श्रीआदीनर देव, मन मोह्युं
 रे ॥ उन्नंग तोरण देहरं रे लाल, निखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥
 ग० ॥ १ ॥ चौवीन मंनप चिहं दिते रे लाल, चौमुख प्रतिमा
 न्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहगे रे लाल, समवस्त नही
 संसार ॥ म० ॥ २ ॥ ग० ॥ देहरी चोगनी दीपती रे लाल,
 मांनयो अष्टाष्ट मेर ॥ म० ॥ जनें जुद्धतया जोगग रे लाल, नृतां
 ऊत संवर ॥ म० ॥ ३ ॥ ग० ॥ देव जाणीतुं देहं रे लाल, सेठो
 देव संवार ॥ म० ॥ लख नवानुं लगानिया रे लाल, धन धनो
 पोखान ॥ म० ॥ ४ ॥ ग० ॥ अंतर मनई संतर्जुं रे लाल, निर

खेता सुखं थाय ॥ म० ॥ पांच प्रालाद बीजा बली रे लाल,
 जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतार्थ हुं थयो
 रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे
 लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल ठियं-
 तरे रे लाल, मिगसिर मास मजार ॥ म० ॥ राणपुरै यात्रा करी रे
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री
 राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित छार गुंजारै पैसतां जी, पाप पमल गयां दूर रे ॥
 मोहन मारुदेवीनो लामलो जी, दीठो मीठो आनंद पूर रे ॥ स० ॥
 ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोमी हीण
 रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, वीरज अपूरवनो घर
 लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ जुंगल ज़ांगी आदि कपायनी जी, मिण्घात
 मोदनी सांकल साय रे ॥ वार ऊघामा तम संवेगना जी, अनुजव
 जवनें बेढो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं
 जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना
 जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग
 पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रुची
 भृगमद मदमदे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ स० ॥
 ज्ञावपूजाने पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥
 कारण जोगें कारज नीपजें जी, कृमा विजय जिन आगम रीत रे
 ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवनं ॥

आदि जिनेसर अरज सुर्णजै, मोहन महिर धरीजै रे ॥
 दिगंजन प्रभु दरसन बीजै, इदारी मनमो रीकै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलज, विन दरसन नहीँ किरिया रे ॥
 जे दरसन विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥
 नय एकांते दरसन थापै, पिंम जरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति
 आलापै, ते जूला जव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्या-
 द्दादने संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगै,
 सिद्धमणने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोमाकोमीमें जमतां, तुज
 दरसन नहीँ पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज जले
 हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटकौ, जो
 जगगुरु हुं पाजं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण
 उपजाजं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्वामी दर-
 सण दीजै रे ॥ लान्नउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं ॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांजलतां
 ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥
 तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जे-
 हनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय
 प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहि का-
 रण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिळ्या रे, दोय निमित्तम जोग
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ३ ॥ अज कुलगत्त केसरी लहे रे, निज पद सिंद नि-
 हाल ॥ तिम प्रभु जेके जवि लहे रे, आतम शक्ति संजाल ॥
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणें रे, करि आरोप अज्ञेद ॥ निज
 पद अर्थी प्रभुप्रकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥
 अहवा परमात्म प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्यादाद सत्तारसी रे,

अमल अखंन अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख ब्रम
 टड्यो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अजिताखीपणो रे, कर्ता
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ आदकता स्वामित्वता रे,
 व्यापक ज्ञेता ज्ञाव ॥ कारणता कारज वसारे, सकल ग्रह्युं निज
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा ज्ञासन रमणता रे, दानादिक परिणा
 म ॥ सकल अया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामिक मादणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंड
 सुख सागरू रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ वे कर जोमी वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूरु
 कपट मूंकी करी जी, वात कहुं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मु
 ऊ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिभुवन धणी जी,
 मुऊने उत्तर तार ॥ क० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी,
 दीठां डुख अनंत ॥ ज्ञागसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत
 ॥ क० ॥ ३ ॥ जे डःख ज्ञांजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुस्क ॥
 परडुख जंजण तूं सुणयो जी, सेवगनेथो सुस्क ॥ क० ॥ ४ ॥ आलोयण
 लीधां परखे जी, जीव रुखे संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह
 सुणयो अधिकार ॥ क० ॥ ५ ॥ दूपमकालै दोहिलो जी, मूयो गुरु
 संयोग ॥ परमारथ पीठै नही जी, गरुडप्रवाही लोक ॥ क० ॥ ६ ॥
 तिण तुऊ आगल आपणा जी, पाप आलोडं आज ॥ माय
 बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ क० ॥ ७ ॥ जि
 न प्रमथ सद्गुरु कहै जी, आपे अपणी जी वात ॥ सामाचार
 जुड जुड जी, शंसय परुषां मिच्यात ॥ क० ॥ ८ ॥ जाण
 अजाणपणे करी जी, बोद्ध्या उन्मूत्र बोल ॥ रतने काग

जमावता जी, द्वारयो जनम निटोल ॥ क० ॥ ए ॥ जग-
 वंत ज्ञाप्यो ते किहा जी, किहां मुऊ करणी एह ॥ गज पाखर
 खर किम सदे जी, सबल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप
 परंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनंतें में लह्या जी,
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पामिया जी, किहां जइ करूं
 पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥
 सहज पड्यो मुऊ आकरो जी, न गर्में जूंमी वात ॥ परनिंथा क-
 र्गता अकांजी, जायै दिन नें रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम परै धंदे पड्यो जी,
 नरकै करती रीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहूंत गुण को कहे जी, तो
 हरखूं नितदीप्त ॥ को हितसीख जली दिवै जी, तो मन आणूं
 रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश
 ॥ मन संवेग धरयो नहीं जी, किम संसार तरेस ॥ क० ॥ १७ ॥
 सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक
 मनमांहे ऊपजै जी, मुऊ मरकट वैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध
 २ कर उच्चरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञाजू वली जी,
 वूटकशरो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा
 आरंज कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जो, देवदया पर ठेम
 ॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंभ ॥
 कूरु कपट बहु केलवो जी, व्रत काधा सत खंभ ॥ क० ॥ २१ ॥
 अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादांन ॥ ते दूषण लागा घणा
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नदी
 जी, राचै रमणी रुद ॥ काम विटंदन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सहप ॥ क० ॥ १३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको
 लोभ ॥ परिग्रह मेळ्यो कारमो जी, न चढी संजम सोभ ॥ क० ॥
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीजो जन दोष ॥ में मन
 मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इण जव
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिळामिडकमं
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या
 जी, प्रगट अगरे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, वगस २ माड
 वाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार वै एतलो जी, सरदहणा वै शुद्ध ॥
 जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ क० ॥ २८ ॥
 रिपनेदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया
 आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिळामिडकमं जी, देतां
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साद्वि
 तूं देव ॥ आण धरुं सिर तादरीजी, जव २ तादरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सैत्रुंज चरण जेळ्या नाजिनंदन जिन तणा,
 करजोमि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद
 सुतीस वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३२ ॥ इति आलोचण वृद्ध स्त०

॥ अथ जानंदघनजो वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री कृपज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्तो रे ॥ ए चान्द ॥

कृपज जिनेतर प्रीतम मादगे रे, उर न चाहूं रे कंत ॥
 रीज्यो साद्वि संग न परिदरे रे, जागे सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥
 प्रीत सगई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥
 कोइ कंत कारण काष्ट जकरण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए
 मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो ठाम न वंष ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ
 पति रंजन अति धणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति
 रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥
 चित प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंभित एह ॥ कपट रहित
 थई आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ ग्राहं मन मोहं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥
 जे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किश्युं मुऊ नांम ॥ पं० ॥
 ॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, जूजो सयल संसार ॥ जेणें
 नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥
 पुरुष परंपर अनुजव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क
 विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य
 नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधारा ॥ तरतम लोणे रे तरतम वासना रे,
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं
 रे, ए आस्था अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे,
 आनंदधन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवन ॥

॥ शतही समिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभू जेद ॥ सेवन
सेवन कारण पदली भूमिका रे, अजय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥
अजय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद
प्रवृत्ति हो करतां धाकिथे रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥
चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, जव परणति परिपाक ॥ दोष टले
बली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन वाका ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय
पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेता ॥ ग्रंथ अभ्यातम अ
वण मनन करी रे, परिशीलन नय देत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण
जोये हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण
कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ सुगंध सु
गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित से
वक याचना रे, आनंदघन स्वरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसण दुर्लभ देव ॥
॥ भतर जेदे रे जो जइ पूढिये ॥ सह्यु थापै अहमेव ॥ अ०
॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिस्सण दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥
मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥
२ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥
आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥
३ ॥ घाती हुंजर आमा अतिघणा, तुज दरिस्सण जगनाथ ॥ धो
ठाइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस्
सण रटतो जो फिरूं, तो रणरोज समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे
हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन डले
ज सुलज कृपाश्रकी, आनंदधन मादाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सु
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत
मा, वहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर
मातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक अ
हो, वहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र
हो, अंतर आतम रूपा ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंदिय गुण गण मणि
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ वहिरा
तमतज अंतरआतमा, रूप सुग्यानी अइ थिर ज्ञावा ॥ परमातमनू हो
आतम ज्ञाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम
पदारथ संपति संपजै, आनंदधन रस पोष ॥ सु० सुम ० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गृणह विमान्ता मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोदे रे ॥ शी०
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥
दानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २
॥ परदुःख वेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण पण्डित रीजे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
 ज्ञेयदान ते मख कय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरण
 विगु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
 शक्ति व्यक्ति त्रिभुवन प्रभुता, नियंत्रता संयोगे रे ॥ योगी जोगीवक्ता
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु ज्ञ
 ग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
 आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज
 तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज
 नी वासर वसती ऊजम, गयण पायाले जाय ॥ सांप खायने मुखमुं
 धासुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा
 अजिजाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अज्यासें ॥ वयरीमुं कांइ एहवुं
 चितै, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
 धरनें हाथे, नावै किण विध आंरू ॥ किहां कणे जो इठकरीइटकूं,
 तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो ठग कहूं तो
 ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांइ ने सहुथी अ
 लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
 कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंरित जन समजावै,
 समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए
 लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ ठै नर,
 एहने कोई न जेजे हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
 गलूं सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,
 ए कहि वात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं डराराध्य तें

चस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो,
तो साचूं कर जाणुं दो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्कमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ कुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै, जवना संक्षित पाप परा सब
मेटियै ॥ मन घर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहुंते एक
कोमि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरुं प्रभु दूरधकी में ताहरो,
जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ जव २ तुमहीज देव
चरण हूं सिर धरुं, जवसायरथी तार अरज आहीज करुं ॥ ३ ॥
जुख त्रिपा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम जार त
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत धणी,
एहिज ठै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ४ ॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम
जवोदधि हूं फिरयो, सदीया डुस्क अनेक न कारज को सरयो ॥
मिलिया हिव प्रभु मुज सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत
जस लीजियै ॥ ५ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो,
जयधंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ कुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जुवन सिरताज ॥ आठेलाज,
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल
सुगुण निधान ॥ आठेलाज, वामासुत वरुज्जागीयाजी ॥ २ ॥ सेव-
कनी संजाल, करिय खरी ततकाल ॥ आठेलाज, संकट सहु प्रभु
परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रयट्यो आनंद पूर ॥
आठेलाज, बाट विदमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आठेलाल, मन वंछित मुर्ज सहु फट्या जी
॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी आप, मिलिया ठो प्रजु आप ॥ आठेलाल,
देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस कमा-
कट्याण ॥ आठेलाल, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसांवाणी रे ॥ वामासुत वरदाय,
निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रजु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥
तीन कमल मुज संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख,
चंद लजाणू रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंशू रे ॥ ३ ॥
सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविदास,
आल ज्युं ठाजै रे ॥ ४ ॥ प्रजु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे ॥
ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार,
श्रीजिन राया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साहिव पाया रे ॥ ६ ॥ प्रजु-
गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पातिक पंक, आतम संगे रे
॥ ७ ॥ वरस अठार चोतीस, वदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम दीस,
सहु संघ साखै रे ॥ नगर मंहेवा मांदि, पास जुडारया रे ॥ श्री
जिनचंद मुर्णिद, वांछित सारया रे ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुज वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमी
चाराय ॥ प्रगट थई पातालची गोमीचा, सेवक जिन साधार हो
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसन देखण
काज हो ॥ गो० ॥ पाणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसन महा-
राज हो ॥ गो० ॥ वाण ॥ २ ॥ तूं साहिव सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो
ठै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-
रवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवमो, गो० ॥ सगली

प्राति सदीव हो, गो० ॥ उंची नीची वातमें, गो० ॥ अथे मति घालो
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीठां ते
न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां
ऊलहाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाढहै माहरे, गो० ॥
कीधी खरी सजीम हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥
पाणीबलि पिण दील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं
करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ बलि अवसर
संज्जारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ सुं ॥

अरज सुर्णाजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अथ-
सेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवन जन विस्तरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अ-
टवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥
दीनदयाल दया कर दीजै, अनुजव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल
सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अथजेन
वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें
महिमां जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेव-
गकी येही अरज हे, जवडुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ सुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजव सुरंग अनूप ॥ सवाऽ प्रनू
जी, घांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन
वांदवा, चित्तामें लागी ठे चूप ॥ सवाऽ प्रनूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखनी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ आं०
 ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उडहास ॥
 स० ॥ आं० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा
 निधि करतार ॥ स० ॥ आं० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीवो, दिल
 रंजन दीदार ॥ स० आं० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो
 य घनी सुप्रमाण ॥ स० ॥ जगतवञ्चल जल जेटियै, जिनवर चतुरसु-
 जाण ॥ स० ॥ आं० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगद जयो, श्रीचिं
 तामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पूरो जी
 आस ॥ स० ॥ आं० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम
 विन देख्यां एक घनी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे
 अमारा हीयमलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास ठियै निर-
 धार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०
 ॥ चंद चकोरा जलधर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधोजिम तिम करि
 नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥
 आपो जवर चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-
 नें आवे जे तुह्म पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास
 म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थायै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणि-
 ने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो मुऊ ऊ-
 पर निवर सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी ठिटक न देख्यो ठेह ॥
 म्हारा जि० ॥ खरतर गठपति श्रीजिनलाज सूरिंद रे, जि० ॥ तासु
 पसार्ये पज्जळें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ सुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने
 मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं वै प्रभुजी म्हारो अंतर
 जामी, पूरव पून्यै थांसी सेवा में पांमी राज ॥ साहिव में तो तु-
 ऊनें जाण्यो वै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज
 ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलमुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभु
 जीस्थुं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताह-
 रो दिलमांहे वसियो, रांत दिवस थारा गुणनो वूं रसियो राज ॥
 सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर वूं खासो, कदिय न मेळूं
 प्रभुजी पलजर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरें राज मोटा क-
 हीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहोजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥
 पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाई मारा दिलमांहे
 रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीव रंगाणो, नदिय विसरस्थुं
 प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुखि२ हूं तुम पाये
 जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजिं-
 नचंड सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० सुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीठा
 आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रभु, तिम२ वाधे प्रीत ॥
 तन मन मारा नलसै कांइ, रुमी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण
 कमलदल पांखमी प्रभु, सुखनो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका
 काइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ काने कुंरुल जिगमिगे प्रभु,
 कंठे नवसर द्वार ॥ चंपकली सोहे नली कांइ, मुखमै ज्योत अपार
 ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं वै जगतो बालहो प्रभु, थारे सेवग कोरु ॥ म्हारो

तूँहिज साहिबो कोइ, बंदू बे कर जोरु, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज
मनोरथ सब फलया, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा
कोइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसन वहिलो दीजै ॥ दीजै
२ जी माहाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरणी ॥ मुऊ मन
जमरतणी पर मोह्यो, बोझायो नचि बूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण,
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने,
नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जाणूं जइ
मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यथकी में पायो, ए अवसर
आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सखूणो
॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग ठै बहुला, मो सरिषा लख ग्याने,
माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥
आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही ज्ञाखूं ॥ अमृत जेम
लही तुऊ गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन
ए मुझानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालाने
गिणतो, कहो कुण मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणै किंचित
गुण ज्ञाखूं, हूं म्हाारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुऊ गुण
लायक, त्रिजुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अठार वली
इकताले, भिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे,
यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंध जुगतसुं,
मेलो तिहां मंझायो ॥ लाज उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पलशमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा कहं छिनश्में ॥ तूं० ॥ १ ॥ का
हूको मन तरुणीसैं राज्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु
तुमहीसे राज्यो, ज्युं चात्रक चित्त धनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर
तेरी गति जांणै, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर
तूंही, साहिव तीन जुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव
दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध
अया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण जरतमां ॥ कुण करशे उप-
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे
संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अग्रमाय ॥ वीर विहूणा
जीवना रे, आकुल व्याकुल आयो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय
वेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे,
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुझनो रे,
जव अटवो सववाह ॥ ते परमेसरविण मिट्यां रे, किम बाये उत्साहो
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुत तणो रे, हुंनो परम आधार ॥
हमणां श्रुत आधार ठे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥
इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि-
जना रे, जिनपद्मिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचा-
रिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव-
चंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रूपज समोसरथा, जला गुण जरया रे ॥ सिद्धा
साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां अयां, मुग्तें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,
 गिरिसेहरो रे ॥ नरते नराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति
 नजो, त्रिजुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥
 समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थकर वीश
 ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये, हैये हरखीये रे ॥ सिद्धा श्रीवा-
 सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, रुद्धे नरी रे ॥ मुक्ति
 गया महावोर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीये, दुःख वारीये रे ॥
 अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीये, चिर नंदीये
 रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो
 रे ॥ फलोधी अंजन पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ
 भीऊरो रे ॥ जीराबलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,
 जात्रा करो रे ॥ राणभुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनामुलाई जादवो,
 गोमी स्तवो रे ॥ आवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,
 बावन नलां रे ॥ रुचक कुंमल चारु चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती
 अशाश्वती, प्रतिमा ठती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीर्थ
 जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालोसहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-
 चलगिरि जईए बहेनी, विमलाचलगिरि जईए रे ॥ आ० ॥ सुण
 बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम ज्ञाखी ॥ नरतादिक
 नरपतिने आगल, इडादिक सद् साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणां गि-
 रिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीया ॥ जन्म मरणनां दुःख
 गोमीने, अमल अखय गुण लीया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-
 न्मुख पगलां नरतां, आतम शुद्ध सुजावें ॥ कोमि नवांरां पातक
 कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीर्थ ए शेरु

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ
न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आंगें नलग क-
रस्यां ॥ अन्नत आदि जिनसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥
॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, द्वार सुगंधा गूंथी ॥ प
हिरावी प्रज्जु कंठें लहिस्वां, शिव मारगनी सूधी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥
गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करिये ॥ मन गमती
जमती विच जमतां, जवसायर निततरिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव
नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूखे आया ॥ ए तीरथ शुज्ज जावें
फरसी, करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज नदे ए गिरि
वर लहिये, कदे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल,
प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥
मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनु
मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आवक अच्युय गति लदे, नवथैवेका
देठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशा
लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ
ग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या
श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, जले में जेव्या श्री
जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे जाग्य अनोपम माय
॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो वे देहरो जी, तिहां प्रज्जु काउसगं ली
ध ॥ पञ्चक्राण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥
जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले आवकधर्म ॥ आकारे तिण ठंज
रव्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठ उपवा
सीया जी, स्वामी धीवर्द्धनान ॥ काले सखी प्रज्जु जीमस्ये जी,

से हथ देख्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेव इम चितवे जी, हो
 सी सफल मुज आस ॥ पढ़ मांस गिणतां थकां जी, पूरी थइ चो
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तेइ
 चार ॥ प्रजूनो मारग देखतो जी, बेगो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥
 घर आवे वे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रजुजी कां न
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्युं
 पारणो जी, हूं प्रजूनै पमिलान ॥ होथ मनोरथ एहवो जी, तोथ
 विन वरसे आज्ञ ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतरे ऊक्या गोचरी जी, श्री
 सिद्धारथपुत ॥ वेसाळापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत ॥ ज० ॥
 १० ॥ मिश्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेमी प्रते
 इम कहे जी, कांश्क जिहा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू जरने वा
 कला जी, प्रजूनै आंणी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्र
 जू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुजि जी, जै बो
 ले कर जोनि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढोवारे कोनि ॥
 ज० ॥ १३ ॥ कहे सेव तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥
 लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा
 दिक सहूए कहे जी, धन९ पूरणसेव ॥ नंची करणी तेंकरी जी,
 अवर सहू तुज देव ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेव सुणे तवे जी, वा
 जित डुंडुजिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रजु पारणो जी, मनमें थयो
 विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अज्ञागियो जी, मेरे न आया
 सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमरुले ठांम ॥ ज० ॥
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांदि ॥ निर
 धन जिमर चितवे जी, तिमर निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास
 संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकास्थुं आणंद ॥ राय प्रभू पूवे इस्यो जी, सुगुरु
चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु
न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥
२१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो
जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे
केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न
कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण
घाट्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०
॥ २४ ॥ घन्नी एक सुर डुंडुजि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि
तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥
राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुकनगरमें था
पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियो सु
पात्रने जी, तें निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,
जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना
जी, दांन सुपात्र रसाव ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मु
नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ द्विव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो ज
ग दोहिलो, इण बेला आवे ॥ ते मुऊ मिच्छामिडुक्कं ॥ १ ॥ अ-
रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु०
॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते
ज्जायना, साते बलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव-
दे लाख साधार ॥ बि ति चउरेंडी जीवना, बे बे लाख विचार ॥
ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यच नारकी, च्यार प्रकाशी ॥ चवदे लाख
मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणजव परजव से

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध करवोसरूं, डुरगति दातार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोड्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादां
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो, की
 धो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, बलि राग ने द्वेष
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूमा कलंक ॥ निं
 द्या कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चामी की
 धी चोतरे, कीधी आंपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं
 एयो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने जव जे किया, जीवना
 वध घात ॥ चिमीमार जव चिरकला, मारया दिन ने रात ॥ ते०
 ॥ ११ ॥ माढीगर जव माठला, जाड्या जलवात ॥ धीवर जील कोली
 जवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुछ्छाने जवे, पढी
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कांधा पाप अघोर ॥ ते० ॥
 १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंरु ॥ वंदीवान मराविया,
 कोरमा ठनी दंरु ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार
 की डस्क ॥ वेदन जेदन वेदना, तामना, अति तिस्क ॥ ते० ॥ १५
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल पि
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख
 रुया, फाड्या पृथ्वी पेट ॥ सूमाने दान किया घणा, दीधा बलध
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल
 पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही
 आंगमी, जरया अधिका जार ॥ पोठी छंट कीमा पड्या, दया ना
 वी लिंगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ तीपाने जव वेतरयो, कीधा रांगणपास
 ॥ अगनि आरंज किया घणा, धातुरवाद अज्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर
 पणे रणजुंजतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण जरया,
 खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणार् धातुनी, पाणो

जलेंच्या ॥ आरंज कीया अतिघणा, पोते पाप ते सेंच्या ॥ ते० ॥ २२ ॥
 अंगारकर्म किया वली, धरमें दव दीधा ॥ सुत लेइ वीतरागना,
 कूना कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ विछ्नी जव ऊंर गिळ्या, गि
 लोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे जवे, में जूं खीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥
 जामजूजातणे जवे, एकेंडी जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पामंता
 रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांरुण पीसण गारना, आरंज अनेक ॥ रांघण
 इंधण अगनिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार
 कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमानिया, रोदन वि
 खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने आवकतणा, व्रत लेइने जागा,
 मूल अने उत्तरतणा, मुज दूषण लाग ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विडु
 सिंद चीतरा, तिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे जवे, हिंसा
 कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवमे दूषण घणा, वलि गरज
 गलाया ॥ जीवाणी ढोळ्या घणा, शीलव्रत जंजाया ॥ ते० ॥ ३० ॥
 जव अनंत जमतां थकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध २ कर वो
 सरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणजव परजव इण परे,
 कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, कलं जनम पवित्र ॥
 ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरामी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर
 कहे पापथी, वूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इति आलोयण सिद्धाय सं० ॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विहात ॥ पासतणा गुण
 गावतां, मुज सुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणदिलपुरे, अद
 म्मदावादे पास ॥ गोमीनो धणी जागतो, सडूनी पूरे आस ॥ २ ॥
 शुज वेला शुज दिन घमी, मधुरत एक मंमाण ॥ प्रतिमा तीने
 पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥
 धण कण कंचण मणि माणक दे, गोमीनो घणी जाचो जी ॥ गु० ॥
 ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूँती जी ॥
 अश्वनी जूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी वाल विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥
 जागंतो जकां जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि
 नेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुज संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहज
 ठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे उगो
 मले जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मा
 रीस मुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन हय गय हाथी,
 लाठ घणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुजने मिल
 स्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढ्या, वस्तु
 वेहे तसे पोठी जी ॥ ९ ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं बिहतो तुरकनो, माने वचन प्रमाण ॥ बीबीने सुह
 णातणो, संजलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वना
 देव हे कोइ ॥ अथ सताव परगट करो, नहितर मारे सोय ॥ ११ ॥
 पाठलीरात परोमिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेवने, संज
 लावे यकराज ॥ १२ ॥

॥ दाल २ ॥

एम कही यक आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी ॥ पास
 तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥
 पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारूं जी ॥ जतन करी
 पहुँचाडे धानक, प्रतिमा गुण संजारूं जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुजने
 होसी बहु फलदायक, जाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना
 पाया, प्रहजनीने गुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुहणो देहने सुर चाढ्यो,

आपणे आनक पढुतो जी ॥ पाटणमांहे सारश्रवाहू, हींमे तुरकने
 जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जानो दीठो गोठी, चोखा तिल
 क निलामे जी ॥ संकेत पढुतो साचो जाणी, वोलावे बहु लामे
 जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुज घर प्रतिमा तुज्जने आपूं, श्रीपास जिने
 सर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुज आपे, तो मोल न मांगू फेरी
 जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, आनक पढुतो रंगे जी,
 केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी
 रूनी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या
 पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उज्ज्व दिन
 अधिका आये, सत्तर जेइ सनात्रो जी ॥ ठामरना दरसन करवा,
 आवे लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन करूं
 प्रतिमातणो, तीरथ अठे अजंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेवने, थल,
 अटवी ऊजार ॥ महिमा आस्ये अतिवली, प्रतिमा तिहां पढुचामा ॥
 ॥ २३ ॥ कुशल हेम तिहां अठे, तुज्जने मुज्जने जांण, संका ठोमी
 काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषेज जोतरे ॥ पार
 करश्री परियाणो करे, इक थल चढ वीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ वारे कोडा
 आधां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ,
 पास जवन मंमावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम कहुं प्रयाण, कुट
 को कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंमानं कि
 म घरथे विलो ॥ २७ ॥ जल दिन ओसंव रहस्ये ऋदा, सिद्धावटो
 किम आवे इहां ॥ चिंतातुर ययो निज लहे, यद्वराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूंदली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहा ॥
 स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी जलटस्थे खांण ॥ २९ ॥
 श्रीकल सजल तिहां किण जुन, अमृत जल नितरिस्थे कूड ॥ खा
 राकूआनो इह सहनांण, जूमि पड्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सि
 लावटो सीरोही वसे, कोढ पराज्जवियो किसमिसे ॥ तिहांअकी तूं
 इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन
 थिर आपियो, शिलाचटाने सुहणो दियो ॥ रोग गंमानं ने पूरुं आस,
 पासतणो मंमे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मांन्यो ते वेण, हेम
 वरण देखाज्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया
 तेमवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखाम धृत चूरमो ॥
 घमे घाट करे कोरणी, लगन जले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज २
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रखी ॥ रंगमंरुप रलियामणो
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाइ, स्वर्ग
 समो मंमे आवास ॥ दिवस विचारी इमो घज्यो, ततखिण देवल
 ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुज लगनं शुज बेला वास, पद्मासण वेठा
 श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समान, एकलमल वगमे रहे वान ॥
 ॥ ३७ ॥ बात पुराणी में सांजली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥
 गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विमारण जह जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे
 श्रीसंघने, देखामे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरठ गौमीपास जिन ॥ आपे
 अरथ जंमार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्था पूरणहार ॥ ४० ॥
 नील पलाणे नील हय, नीलो अइ असवार, मारग चूकां मांनवी,
 चाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ बाल ४ ॥

वरण अढारतणी लहे जोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ ४१ ॥
 वित्र अइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निर
 धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरूपणो
 धरे, पार उतारे लढी वरे ॥ ४३ ॥ दोजागीने दे सोजाग ॥ पग
 विहूणाने आपे पाग ॥ ठांम नही तेहने थे ठांम ॥ मन वंछित पूरे
 अजिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने थे आधार, जवसायर ऊतारे पार ॥
 आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां
 साद दिये जकराज, जेहना मोटा अठे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि
 प्रकाश ॥ गुंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दा
 तार, जयजंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेनीतणा, श्रीपार्श्व
 नाम अकर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूरा ॥

श्रीपार्श्व नाम अकर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध
 दूरे टले, डुकर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चौरतणा जय चूकवे, विष
 अमृत उरुकार ॥ विषधरना विष ऊतारे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥
 रोग शोग दाविइ दुख, दोहग दूर पूलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-
 हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ बाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

जैजततू २ जैज उपशम घरी, जै ह्रीं श्री श्रीपार्श्व अकर ज
 पंते ॥ जूतने प्रेत जोटिंग वितर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते
 ॥ ५१ ॥ जै ० ॥ डुकरा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा डु
 नपंते ॥ गर्जबंधन ब्रह्म सर्प विहू विपं, चालिका बाल मेवाऊखंते
 ॥ ५२ ॥ जै ० ॥ साइणी माइणी रोडणी रंकणी, फोटका मोटका
 दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ ग्यान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ धरणीं पद्मावती समर सोजावती, वाट
 आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस बेला वले ॥
 सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ अष्ट महाजन्य हरे
 कानपीना टले ॥ ऊतरे शूल शीसग जणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं
 प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नांम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति
 श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्खिं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं
 संनि, जस्त धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्त पुप्फेसु, जमरो
 आवि अइरतं ॥ तय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
 एव मेए समसा बुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु,
 दाणज्जे सणेयया ॥ ३ ॥ वयं ष वि तिं लभामो ॥ नहि कोइ उव
 हम्मइ ॥ अहाग्गे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार
 समा बुद्धा, जे जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिं रयोंदिता, तेण बुच्चं
 ति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, सर्व कळ्याण
 कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणं जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मंगलं जगवान्वी
 रो, मंगलं गौतम प्रभु ॥ मंगलं स्थलज्जाया, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म
 रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥
 शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सच्चिदाणं, मुखे मुखपटवरं ॥ २ ॥
 ॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव
 झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सच्च साहुणं,
 मोचके पादयो सुजे ॥ एसो पंच नमोक्कारो, शिवा वज्रमई तले
 ॥ ४ ॥ सच्च पावण्यासणो, वप्पो उज्जमयोवहि ॥ मंगलाग्रं व स-

ब्रह्मसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं हेयं, पढमं
हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा
प्रज्ञावात् रक्षेयं, कुडोपड्व नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता
पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यथैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य
नस्यान्नयं व्याधि, राधि आपि कदाचनः ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षा०
स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारण ज्ञवियण समरो मित नवकार, जिनशाशन
आगम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं
पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव
मानव सेव करे कर जोरु, ज्ञयमंरुल विचरे तारे ज्ञवियण कोरु
॥ सुरवंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये, अरिगं
जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत, पंचमि
गति पुढता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कलं अकल सरूपी पंचानंतक
जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छजार
धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण वृत्तीसे थोम
॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गंजरी, तीजे पद नमिये आ
चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र जणावे सार,
तप विध संयोगे ज्ञाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुक्ता ते क
दिये भवझाय, चोथे पद नमिये अद्विज तेदना पाय ॥ ५ ॥ पं
चाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार
॥ त्रस आवर पीहर लोकमांदि ते साव, त्रिविधे ते प्रणमुं परमा
रथ जिण लाव ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण माइख जूत वेताल,
सव पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर ट
ले ततकाल, जंणे जिण गुण इम सुरवर सीत रसाल ॥ ७ ॥

॥ અથ શ્રી સંલેશ્વરા પાર્શ્વનાથ સ્તવનં ॥ (છંદ)

॥ શેવો પાસ સંલેસરો મન સુદે, નમું નાથ નિશ્ચે કરી એક
 વુધે ॥ દેવી દેવતા અન્યને શું નમો ઓ, અહો જીવ્ય લોકો જુલા
 કાં જમો ઓ ॥ ૧ ॥ ત્રૈલોક્યના નાથને સું તજો ઓ, પઠ્યા પાશ
 મે જૂતમાને જજો ઓ ॥ સુરાધેનુ ઠંમી અજાને અજો ઓ, મહાપંથ
 મૂંકી કુપંથે વ્રજો ઓ ॥ ૨ ॥ તજે કોણ ચિંતામણી કાચ માટે,
 અહે કોણ રાજાજને હસ્તિ સાટે ॥ સુરડુમ ઝપામને આક વાવે,
 મહામદ તે આકુલા અંત પાથે ॥ ૩ ॥ કિહાં કાકરોને જે કિહાં મેરુ
 શ્રુંગ, કિહાં કેશરીને કિહાં તે કુરંગ ॥ કિહાં વિશ્વનાથ કિહાં અન્ય
 દેવા, કરો એક ચિત્તે પ્રજુ પાર્શ્વ સેવા ॥ ૪ ॥ પૂજો દેવ પ્રજ્ઞાવતી
 પ્રાણનાથ, સદૂ જીવને કરે સદ સનાથ ॥ મહાતત્ત્વ જાણી સદા
 જેહ ધ્યાવે, તેહના હુલ્ક દાલિડ દૂરે ગમાવે ॥ ૫ ॥ પામી માનુષોને
 વૃથા ક્યુ ગમો ઓ, કુશીલે કરી દેહને કાં દમો ઓ, નહિ મુક્તિ
 વાસં વિના વિતરાગં ॥ જજો જગવંતં તજો દૃષ્ટિદરાગં ॥ ૬ ॥ નદય
 સ્તન જાણે સદા હેત આણી, દયાજ્ઞાવ કીજે મોહિ દાસ જાણી
 ॥ મોરે આજ મોતીઅમે મેહ ટૂઠા, પ્રજુ પાસ સંલેસરો આપ તૂઠા
 ॥ ૭ ॥ ઇતિ પદં ॥

॥ અથ લઘુ ગૌતમ રાસ લિખ્યતે ॥

॥ વીર જિનેસર કેરો શીશ, ગૌતમ નાંમ જપો નિશ દીશ
 ॥ જો કીજે ગૌતમનો ધ્યાન, તો ઘર વિલશે નવે નિધાન ॥ ૧ ॥
 ગૌતમ નાંમે ગિરવર ચઢે, મન વંઠિત લીલા સંપજે ॥ ગૌતમ નાંમે
 નાવે રોગ, ગૌતમ નાંમે સર્વ સંજોગ ॥ ૨ ॥ જે વૈરી વિરુદ્ધા વંક
 મા, તસનાંમે નાવે ઢૂંકમા ॥ જૂત પ્રેત નવિ મંમે પ્રાણ, તે ગૌતમ
 નાં કહું વચ્ચાણ ॥ ૩ ॥ ગૌતમ નાંમે નિરમલ કાય, ગૌતમ નાંમે
 વાધે આવ ॥ ગૌતમ જિનશાશન સિણગાર, ગૌતમ નાંમે જયચક્ર

॥ ४ ॥ शालं दाल सदा धृत घोळ, मनवंठित कप्पस तंबोळ ॥
घरे सुधरणी निरमल चित्त, गौतम नांमे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ
तम उदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नांम जपो जगजाण ॥ मोटा
मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगळ
घोमानी जोरु, वारू विलसे वंठित कोरि ॥ महियल माने मोटा
राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम
सरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे वाधे वान
॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे वहू ॥ कहे ला
वण्य समय कर जोरि, गौतम तूठा संपत कोरि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये
ए ॥ प्रजात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजिये ए ॥ १ ॥
वालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी जतरनी वहिनमी ए ॥ घट २
व्यापक अकररूपे शोल शती मांदि जे वमी ए ॥ २ ॥ बाहुवल
जगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नांमे रूपज सुता ए ॥ अंग स्व
रूपी त्रिभुवनमांदि, जेइ अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला
वालपणेशी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उरुदना वाकला वीर प्रति
लाज्या, केवल लहि व्रतजाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी
नंदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशे कामने जीती, शंजम
लेइ देव डल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जतरारी पांरुव नारी, दुपदा नांम
वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि
ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंडिका ए,
शीवल सलूणी रांम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौश
विक ठामे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घ
रणी मृगावती नांमे मुग्धुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां पाप-
 पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनी का
 मण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जाणो धीज करंता अनल
 शीतल अयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी कू
 वायकी जल काढियो ए, कलंक ऊतारवा शतिय सुज्जझ चंपा बार
 उघामियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद
 गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल अइये बलिहारी तसु नांमनी ए
 ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांरुवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांरुव
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील
 वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जप
 ता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पनियां शीलज राख्यो,
 त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विद्धाता कामित दाता, शोलमी
 शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र ठे साखी, उदयरत्न
 आपे मुदा ए ॥ प्रह ऊर्गने जे नर जणसे, ते लहिस्थे सुख संपदा ए ॥ १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ दृष्टवीकूख
 रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ चार वेद चतुरवीर मन्मथ अ
 चतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥
 करत धरत ठात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत
 प्रभु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शंशय
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेखा ॥
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय
 अंग बार, स्वना रुत अति अपार, बोधन जग जीव तार, जये गुरु

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम
लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुंदन खुतिसारी ॥ ज० ॥ ६ ॥
सिद्धियोग नंद चंद, कार्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कटप
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इन्द्रजूति
जगधणी ॥ कुशल निधान सुख जणी, पाठक रुद्धिसारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे ठे जी मुनिवर जेस ॥ म्हांने० हाथ
लकन्या कांधे कंवलिया, शिर शोजित तनु केश म्हां० ॥ १ ॥
चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्ज्वल रहत हमेश ॥ म्हां० ॥ २ ॥ ज
यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३ ॥ थि
वरकलप जिनमुझधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥
दे उपदेश जिविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥ ५ ॥
करतरामरुद्धिसार बंदना, निरखत एसो जेस ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जवसे सरधा शुद्ध जई, मन अरिहंत२ ध्याते हे ॥ अरि
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय
२ जय२ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत
उधारण, सुरनर चरण लुजाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगट स्याते,
अपवर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवडुंडुजि नाद बजाते हे, धर्म के
ते हे सुख देते हे ॥ जिविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें
लाते हे ॥ रामजठार कहे रुद्धसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सभाय ॥

॥ चोपाड ॥ श्रावक तुं ऊठे परजानत, चार घडी ले पावली
रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेस पामे जव सायर पार ॥ १ ॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अ
 मारो ठे व्यवसाय, एवं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक ले
 ले मन शुद्ध, धर्मनी हेम धरजे बुध ॥ पन्तिकमणुं करे रखणी तणु,
 पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ते करे पञ्चस्काण सूधि पाले
 जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सज्ञाय, जिणहुंती निस्तारो
 आय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम
 ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोपाले
 गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित लाय ॥ निर्दूषण सूर्जतो
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां,
 सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, क
 रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं
 म करे अज्जिमान ॥ गुरुने मुखे लैजे आखनी, धर्म न मूकीश ए
 के घनी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उग अघिकानो परिहार ॥
 म जरिशकेनी कूनी साख, कूना जनशुं कथन म ज्ञांख ॥ ९ ॥
 अनंतकाय कहिये वत्रीश, अज्जद्वय बाविशे विश्वावीश ॥ तेज्जकण
 नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो
 जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी सावू लोह ने गु
 ली, मधु धावनी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण
 पास, दूषण घणां कल्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे वेवे वार, अणगल
 पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ठंसी
 करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप
 न होय ॥ १३ ॥ घृतनी पेरें वावरजे नीर, अणगल नीर
 म धोइश चीर ॥ ब्रह्मवन सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे
 ॥ १४ ॥ कल्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं
 म लेजे अनरथ दंरु, मिश्या मेल म जग्जे पिंरु ॥ १५ ॥ समरि

त शुद्ध हैमे राखजे, बोल विचारीने ज्ञांखजे ॥ पांच तिथि म करो
 आरंज, पालो शीघ्र तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध
 ने दहिं, ऊघासां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर
 उपगार करो शुज्जचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहा;
 चारे आहार तणों परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम ज्ञां
 जे सवला संताप ॥ १८ ॥ संध्याये आवश्यक साचवे, जिनवर च
 रण शरण जव जवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अण
 सण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जा
 यवा ॥ समेतशिखर आवू गिरनार, जैटीश हुं धन धन अवतार ॥
 ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एहथी थाये जवनो ठेह ॥ आठे
 कर्म पमे पातलां, पाप तणा छुटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें
 अमर विमान, अनुक्रमे पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनदर्ष घणे सस
 नेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेंसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि प
 ज्जणिसुं सामी साव गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंद कर
 वि निसुणहु ज्ञां ज्ञविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह
 गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिज्जरुखित्त खोणी तल मंरुण, मगददे
 स सेणियनरेस रिउदल वलखंरुण ॥ धणवर गुह्वर गाम नाम जि
 हां गुणगणसज्जा, विप्य षसे वसुज्जू तच्च तसु पुद्दवी ज्ञज्जा ॥ २ ॥
 ताणपुत्त सिरिइंद ज्ञूय ज्ञूवलयपसिज्जे, चवदह विज्जा विवडरुव ना
 री रत्त लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सा
 त द्वाथ सुप्रमाणदेह रुवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण
 लणवि पंकज्जलपामिय, तेजहिं तारा चंद सूर आकास ज्ञमामिय
 ॥ रुवहि मयण अनंग करवि मेढयो निरधामिय, धीरम मेरु गंज्जी

र सिंधु चंगम चयचामिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण
 जंपे किंचिय, एकाकी किल ज्ञीत इव गुण मेढया संचिय ॥ अह
 वा निच्चयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पनमा गवरि गंग
 रतिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुर कविण कोय जसु
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र ठात्र हींमे परवरियो ॥ करय
 निरंतर यज्ञ करम मिश्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण,
 दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदोव जंबूदोव जरह वासमि
 खोणीतल मंरुण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुवरगाम तिहां,
 विप्प वसे वमन्नूइ, र तसु पुहवि ज्ञा, सयलगुणगणरूवनिहा
 ण, ताणपुत्त विज्ञानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ जास ॥ चर
 म जिनेसर केवलनाणी, चोविहसंध पइछा जाणी ॥ पावा पुरसामी
 संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहिं समवसरण
 तिहां किजें, जिण दंठे मिश्यामत बीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहास
 सन वेठा, ततखिण मोह दिगंत पइछा ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया म
 दपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डंडुजि आगासैं वाजि,
 धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा,
 चउसठ इंज मागे सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जि
 नवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसन्नर वरवरसंता, जोज
 नवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर
 किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण
 विमाणहिं रणरणकंता ॥ पेखवि इंजन्नूइ मन चिंते, सुर आवे अम
 यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीस्तरंरुफ जिम तेवहिता, समवसरण पुहता
 गहगहिता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांड
 मोले ॥ मो आगल कोइ जाण ज्ञणीजें, मेरुं अवर किम उपम दी

जें ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पांवापुरसुर
 महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवऽ निम्महिय, समवसरण
 बहु सुख कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन
 कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुन तो जयजयकार ॥ १६ ॥ ज्ञास
 ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंद्रूय जूयदेव तो ॥ हुंकारो करसं
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन जूमि समोतरण, पे
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंरु ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरवि
 वर्जितजंगुण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर,
 इंड इंडाणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चितव ए, सेवंतां प्रजु पाय
 तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल
 तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंड जाल तो ॥ तो बोला
 वइ त्रिजग गुरु, इंडजूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे,
 फेरु वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, जगतहिं ना
 म्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो
 ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिजूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आज्ञास
 करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररण, आप्या वीर
 इग्यार तो ॥ तो उपदेसे जुवन गुरु, संयमजुं व्रत वार तो ॥ विहुं उपवा
 संपारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय
 कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंडजूइ इंडजूइ चढियो बहुमान
 हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पढुतो तुरंतो ॥ जें संसा सामि स
 वे, चरमनाह फेरे फुरंततो ॥ बोधबीज सज्जायमनें, गोयम जवहि
 विरत्त ॥ दिरक लेइ सिस्का सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ ज्ञास
 ॥ आज हुन सुविहाण, आज पंचेलिमां पुण्य जरो ॥ दीठा गोमय
 सामि, जो नियनयणें अमिय जरो ॥ समवसरण मजार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूवे मुनि पवरो ॥ २३ ॥
 जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कर्ने अणहुंत, गो
 यम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा
 पद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम
 सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर
 संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीगो आवतो ॥ २५ ॥ त
 पसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ
 काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुन ए अजिमान, तापस
 जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न, दंरु कलस ध्वज वरु सहिय ॥
 पेखवि परमाणंद, जिणहर ज़रतेसर महिय ॥ निय निय काय प्र
 माण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंव ॥ पणमवि मन उल्लास, गो
 यम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजुं
 जकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंरुरीक, कंरुरीक अध्ययन जणी ॥
 वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ,
 चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांरु घृत आण, अमीय
 चृठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचस
 यां शुज्ज जाव, उज्जज ज़रियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, क
 वल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे ज
 णवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण
 पन्नरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिडुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग
 गुरु दयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम जणे,

गोयम मं करिस खेव, ठेह जाय आपण सही, दोस्यां तुल्ला वेव
 ॥ ३१ ॥ ज्ञास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल
 सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव
 तो ए कणय पञ्चमेण, पायकमल संघे सहिय ॥ आवियो ए नय
 णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर
 मपए ॥ बलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥
 तो मुनि ए मनविखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु
 अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो
 सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा
 केरें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोलें
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥
 साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो
 यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट,
 रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज
 उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे
 ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पञ्चास, गिहवासें सं
 वसिय तीसवरससंजम विजूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस
 तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसान, सामी
 गोयम गुणनिलो, दोसे सिवपुर ठान ॥ ३७ ॥ ज्ञास ॥ जिम सह
 कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल मढके, जिमचंदन सो
 गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरयां लढके, जिम कणयाचल ते जें ऊ
 लके, जिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हैसा, जिम सुरतरुवर कणायय तंसा, जिम महुरर राजीववने ॥ जिम
 रयणायर रयणं विलसे, जिम अंवर तारागण विकसे, तिम गोयम गु
 रु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महि
 मा जिम जगमांहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गि
 रिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि प
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम
 उत्तम मुख मधुरी ज्ञाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जू
 मीपती ज्ञुयवल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधे
 गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे
 धंठिय काज, कामकुंज सह वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन
 कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥
 ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पजणी जे, माया बीजो श्रवण सुणीजे ॥
 श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजे, विनय पहु
 नवझाय अणीजे, इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां
 काय करीजे, देस देसांतर काय जमी जे, कवण काज आयास क
 रो ॥ प्रह ऊगी गोयम समरीजे, काज समगल ततखिण सीजे,
 नवनिधि विलसे तिदां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय वारोत्तर वरसे,
 गोयम गणहर केवल दिवसे, कीयो कवित उपगारपो ॥ आदहिं
 भंगल ए पजणीजे, परव महोच्चव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि क
 ढ्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण जयरें धरियो, धन्य
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीस्कियो ए ॥
 विनयवंत विद्या जंनार, तसु गुण पुहवी न लअइ पार, वरु जिम
 साखा विस्तरा ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजे, चउविह संघ
 रतियायत कीजे, रिद्धिवृद्धि कढ्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन
 उमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासन बेस

षो ए ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सरेसो,
नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो
रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ जूख्यां जोजन
संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा जं
मार ॥ जे गुरु गौतम समरिये, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुं
रुरीक गोयम प्रमुहा, गरावर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊगीनें प्रणमता,
चवदसे वावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सबलहि सं
पल्लं ॥ वीरस्त पढम सीसं, गोयम सामो नमंतामि ॥ ४ ॥ सर्वा
रिष्टप्रणाशाय, सर्वाजिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वा
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ श्रीरिसदेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास ज
णूं रलियामणो, सेत्रुंजनो मुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, तु
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहातम कियो, शिवादैत्य दजूर
॥ २ ॥ वीर जिशंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इंदादिक आ
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो,
नदी ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तेरथ सगला जोय
॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीठा डुरित पुलाय ॥ जेटंता जव
जय टखे, सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण
जरन मजार ॥ सोरठ देस सुदामणो, तिदां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ दाल पहिली ॥ राग गमगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंरुरीक, सिद्धकेत्र कहूं नदतीक ॥ विम
लाचलने कहूं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

ने महागिरि पुण्यरांस, श्रीपदपर्वत इन्द्रकांस ॥ महातीरथे पूरवे
 सुखकांस ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो
 तिण कीजे जक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगंम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृ
 थ्वीपीठ सुजङ्ग केलास, पातालमूज अकर्मक तास ॥ सर्व काम
 कीजे गुणगंम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बे
 ठा अपने ठांम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर जगवंत
 हम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोगण परिमाण ॥ पिहुलो
 मूल उंचपण, उवीस जोगण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोगण जांणवो, बीजे
 अरे विस्तार ॥ वीस जोगण उंचो कह्यो, मुज वंदना त्रिकाल ॥
 २ ॥ साठ जोगण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोगण
 उंचो सही, ध्यान धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोगण पिहुलपण,
 चोथे अरे मजार, उंचो दस जोगण अचल, नित प्रणामे नर नार ॥
 ४ ॥ बार जोगण पंचम अरे, मूलतणे विसतार ॥ दो जोगण उंचो
 अठे, सेत्रुंजो तीरथ तार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेठे अरे, पिहुलो पर
 वत एह ॥ उंचो दोस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ दाढ बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा ऽण ठांम रे ॥
 अनंत बली सिऊस्थे ऽण ठामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं
 जसाधू अनंता सीधा, सीऊसी बलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती
 रथ नही जेठ्यो, तेगरजावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि
 आठमने दिवसे, रूपनदेव सुखकार रे ॥ रायणरुख समोसरथा
 स्वांमी, पूर्य निनाणू वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जतरपुत्र वैत्री पुनम
 दिन, ऽण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोमीसुं पुंमरीक सीधा, ति

षष्ठ पुंनरीक कदाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर,
 वे वे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिस्र
 प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमास वदि चौदसने दिन, न
 मीपुत्री चमलदि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी
 धा एकदि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, झावरु ने
 वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी
 मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांनव इण गिर सी
 धा, नव नारद रुपिराय रे ॥ संब प्रज्जुन्न गया इहां मुगते, आवू क
 र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तीर्थकर, समवस
 रया गिरिभृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरंग
 रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस्र साधु परिवार संघाते, आवञ्चासुत साध
 रे ॥ पांचत्ते साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०
 ॥ १० ॥ असंख्याता मुनिसैत्रुंज सीधा, नरतेसरने पाट रे ॥ रा
 म अने नरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥
 जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन
 ता सैत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ दाल वीमी ॥ बोपाइकी ॥

॥ सैत्रुंजना कहुं सोल उत्तर, ते सुणज्यो सहुको सुविचार
 ॥ सुणतां आणव अंग न माय, जनमश्ना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु
 षन्नदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ नरत गयो
 वंदणने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांदि मोटा
 अरिदंत देव, चोसठ इंड करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कदाय,
 जेदने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, नर
 त सुणीने मन गढ़गह्यो ॥ नरत कहे ते किम पांमिये, प्रज्जु कहे से
 शुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ नरत कहे संघवीपद मुज्ज, ये आपो

हूँ अंगज तुझ ॥ इंद्रे आण्या अकूतवास, प्रभु आपे संघवीपद ता-
 स ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकांज, ज़रत सुजडा बिहुने माव ॥
 पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष
 ज़देवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रखी ॥ ज़रते गणवर
 घर तेमिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहीं किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू
 की सहु देस, ज़रत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघे अयोध्यापुरी,
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिथणी, सं-
 घ चलायो सेत्रुंज ज़री ॥ गणवर बाहुबल केवली, मुनिवर कौम
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रुद्र, ज़रते साथे ली
 धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नाथे पार
 ॥ १० ॥ ज़रतेसर संघवी कदवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥
 संघ आयो सेत्रुंजा पाल, सहुनी पूंगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे
 निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि मालिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठामे
 रही महोच्चव क्रियो, ज़रते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ
 सेत्रुंजा ऊपर चढ्यो, फरसंता पातिके ऊर्म पड्यो ॥ केवलग्यानी
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरुख वे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी
 छात्र निमित्त, ईशानेइ आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोदामणी,
 ज़रते दीधी कौतुक ज़री ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंद्रे
 वलि दीधी आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, ज़रत करायो गुरि
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन
 रंग ॥ ज़रते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोदामणी ॥ १६ ॥
 मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूतम थापी रखी ॥ ब्राह्मी सुंदरि
 प्रमुख प्राशाद, ज़रते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इन अनेक
 प्रतिमा प्राशाद, ज़रते करायो गुरु सुप्रशाद ॥ ज़रततणो पहिलो
 बदार, सुगलोदी जाणे संसार ॥ १८ ॥

रास चौथी ॥ राग सिंधुदो आसाजरी ॥

॥ ज़रततणे पाट आठमे, दंरुवीरज थयो रायो जी ॥ ज़र-
ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कदायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज
उछार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा
वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपात-
णो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब जंमारीयो, पछिमदि-
सि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल
कियो अवतारो जी ॥ दंरुवीरज राजातणो, ए बीजो उदारो जी ॥
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंरुवीरजणी जिवारो जी,
इशानेंड करावियो ॥ ए तीजो उदारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा
देवलोकनो धणी, माहेंड नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा-
वियो, ए चोथो उदारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचना देवलोकनो धणी,
अहेंड समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो
उदारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इंडनो कियो, ए ठठो उदारो
जी ॥ चक्रवर्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उदारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥
अजिनंदन पासे सुणयो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरेंड का-
वियो, ए आठमो उदारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीनो
पोतरो, चंडखेर नाम मल्हारो जी ॥ चंडशराय करावियो, ए
नवमो उछारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो
उदारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्यां
मी वारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उदारो जी ॥
से० ॥ १२ ॥ पांरुव कदे अमे पापिया, किम वूटां मोरी मायो
जी ॥ कदे हुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से०
॥ १३ ॥ पांचे पांरुव संघ करी, सेत्रुंज जेठ्यो अपारो जी, काष्ट चै

त्य विंव लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी
 पाखाणीनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी,
 आपी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अठोतर सो वरसां गया,
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावरु करावियो, ए तेरमो
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत बार तिमोतरे, श्रीगाली सुविचा
 रो जी, वाइरुदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥
 से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स
 त्यासिये, वेसाख वदि शुभ दारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए
 वरतेवे उद्धारो जी ॥ नित२कीजे वंदना, पांमोजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दूहा ॥

॥ बलि सेत्रुंज महातम कहूं, सांजलो जिम ठे तेम ॥ सूरि
 घनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेप मानता, लाज हुवे तह-
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण
 समो लहे, पढ्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो
 नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥
 रितर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई,
 शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप
 वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती
 परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक इ
 त्या, पापथी नाखे गेरु ॥ ७ ॥ सहस्र लाख श्रावक जणी, जो
 जन पून्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलानां, अधिको जेहथी देख ८

॥ दाल पांचमी ॥

॥ सेतुंज गया पाप वूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप
जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जि
ण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुं
ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी
करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुंज चढी, एक करे
उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी
कीधी जेशो जी ॥ सात दिवस पुरिमह करे, तो वूटे गिरि एणो
जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरिया नर नारो
जी ॥ आंखिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥
से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते जेठे सिद्धकेत्रो जी ॥ सेतुंज
तलहटी साधुने, पस्त्रिज्जे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राजरण
जिणे हरया, ते वूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह
ऊठी बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुध्व
आये एमो जी ॥ अधिको ड्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो
जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय जैस घोमा मही, गज ग्रह चोरणदारो
जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अग्रिहत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥
पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नांमो जी ॥ वूटे बम्मासी
तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परि
ब्राजका, सधव अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत जांजे तेदने कह्यो, ब
म्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक रुपि,
पुद्गनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, वूटे तप कर
तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ दान सही ॥

॥ संप्रति काले सोखमो ए, ए वरते वे उदार ॥ सेतुंज यात्रा

करुं ए, सफल करुं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ ठहरी पावतां चालिये
 ए, सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पाखीताणे पोहचिये ए, संघ मि
 ल्या बहु आट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, बलि सत्ता
 नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, वरुने चौतरे आवि ॥ ३ ॥
 से० ॥ पाखीताणे पाजनी ए, चढिये ऊठ परजात ॥ सेत्रुंजनदिय
 सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगलाजने हरे
 ए, कलिकुंरु नमिये पास ॥ वारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग
 उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहर ए, गज चढी मरुदेवी
 माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥
 ॥ ६ ॥ वंस पोरवामे परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ
 वी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा
 चरचिये ए, जमतीमांहे जला विंव ॥ पांचे पांमव पूजिये ए, अदन्तु
 आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, विंव जुहारुं
 अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥
 धरमडुवारमांहि नीसरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आडें आदिनाथ
 देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमूं मुवां
 ए, आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, जमतीमांहे जमंत
 ॥ ११ ॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल
 श अठोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥
 प्रथम आदीसर आगले ए, पुंरुरीक गणधार ॥ रायण तल पग
 ला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तल प
 गला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी जूमि बिं
 चावली ए, पुंरुरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंरु नि
 डालिये ए, अति जली उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध
 शिला ए, अंग फरमूं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर वा

ज उतरुं ए, सिद्धवरुं विसराम ॥ चैत्यप्रवारुं इण पर करी ए, मी
धा वंछित काम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल
कियो अवतार ॥ कुतज केनसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से०
॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोदाभणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर
वेगं जणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव
त सोल वयासिये ए, आवग वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत
णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गढ खरतर
तणो ए, श्रोजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल
चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जाणिये ए, सम
यसुंदर जवझाय ॥ रास रच्यो तिण रुवमो ए, सुणतां आणंद था
य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दूर ॥

॥ वादी बीस जिनेसरु, रचस्युं रास रताल ॥ तीरथ शि
खरसमेतनी, मदिमा बनी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ मदियले,
प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरु, सिद्ध गए इह खेत ॥
२ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्या पाप पुलाय ॥ जविजन जे
टो जावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ मदिमा शिखरसमेतनी,
कदि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए नी
रथ होय ॥ ४ ॥

॥ दाल १ ॥ चोईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नदि कोय, पढ़नी मदिमा सब
जग होय ॥ बीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी
ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोव्यानगरी जली, तिहां जितशत्रु

नरेसरे बली ॥ विजयाराणीने सुत जाण, अजितकुमरे सहु गुण
नी खाण ॥२॥ जसु इंदादिक सेवा करे, इंदाणी अति उच्चव धरे ॥
तीर्थकरनी पदवी लेही, अंतर धरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु
क्रम इम जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिटवो सहु जोग ॥ अवस
र दे संवत्सर दान, संजम लीनो आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपावा
पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुढवीमंलमांहि,
अव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥५॥ सिंहासेनादिक गणधर जया, पं
चाणवे संख्या सहु थ्या, एक लाख मुनिवर परिवरथा, श्रावक
श्रावकणी सहु करथा ॥६॥ तीन लाख बलि तीस हजार, साधव
था जाणो सुविचार ॥ श्रावक संहस अठाणु सही, दोय लाख
संख्या गढगही ॥७॥ पांच लाख पेंतालीस हजार, श्रावकणी सं
ख्या सुविचार ॥ बहुतर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर
सुहाय ॥८॥ साहीज्यारक्षे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं
जोर ॥ गज लांठन प्रभुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण
॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत
सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥
चेत्री सुदि पूनंमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ नूचर खेव
र किन्नर सुरी, इंदादिकसहु उच्चव करी ॥११॥ आप्पो तीरथ मोटो
मही, थळाव महीउव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते
निवियण अक्यसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दहा ॥

॥ श्रीसंजव जिनराज जी, गण इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे
त सुदामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ दाल बीजी ॥ मुगण सनेरी साजन श्रीसीमंथर स्वाम ॥ ए देसी ॥

॥ सावणीनगरी नरी धन संपद बहु शोक, जैतारि नृप

રાજ કરૈ સુખિયા સવ લોક ॥ સેનારાણી મીઠી વાણી ગુણની સ્વા
 ણ, જેહને સુત શ્રીસંજવ જનમ્યા સકલ સુજાણ ॥૧॥ કંચનવરણ
 સરીર મનોહર પ્રજુનો જાણ, લંઠન અશ્વતથો સોદે પ્રજુનો પરધા
 ન ॥ સાઠ લાખ પૂરવનો પ્રજુનો આયુ પ્રમાણ, ધનુષ વ્યારસૈ ઝજ
 પણે પ્રજુ દેહ વચાણ ॥ ૨ ॥ એકસો દોય સંખ્યાયે પ્રજુને ગણધર
 દોય, દોય લાખ મુનિ જેહનૈ ગુણવરતા જગ જોય ॥ ત્રીન લાખ
 શ્રમણી વલી ઝપર સદસ ઠતીસ, જૂમંબલ વિચરે પ્રજુ શ્રીશંજવ
 જગદીસ ॥૩॥ ત્રીન લાખ વલિ સદસ ત્રયાણું શ્રાવકલોક, પટ
 લાખ સદસ ઠતીસ શ્રાવકણી સંખ્યા થોક ॥ ત્રિમુખચક્ર અરુ ડ
 રિતાદેવી સાનિધકાર, વિચરંતા પ્રજુ સકલ સંધમેં જયશ્કાર ॥૪॥
 સદસ શ્રમણ પરિવારે પ્રજુજી સિશ્વરસમેત, એક માસ સંલેખણ
 કીની નિજપદ દેત ॥ ૬૧ ગિરિ ઝપર પાયો પ્રજુજી પદ નિરવાંણ,
 તીરથ મહિમા મહિયલ મોટી ઘડ્ય સુજાણ ॥૫॥

॥ ઢહા ॥

॥ અન્નિનંદન જિન વંદિયે, પાયો પદ નિરવાંણ ॥ શિશ્વરસ-
 મેત સોદામણો, જેટો તીર્થ સુજાણ ॥૧॥

॥ ઢાલ ત્રીજી ॥ સદસ શ્રમણસું સુક સંજમધરો ॥ ૧ દેશી ॥

॥ નગરી અયોધ્યા સુરપુરિ સમ જલ્લી, સંવર રાજા સોદે
 મન રલી ॥ સિદ્ધાર્થો રાણી પ્રજુ તસુ નંદ એ, અન્નિનંદન જિન પ્રગ
 ટ્યા ચંદ એ ॥ ઝહાલો ॥ ચંદ એ સોવન વરણ સોદે, ધનુષ સાઠી
 ત્રીનસે ॥ સુંદર શરીર પ્રમાણ ચુતિકરા, કપિ લંઠન તે નિત વસે ॥
 પૂર્વ લાખ પચાસ આયુ, ગણધર એકસો સોલ એ ॥ ત્રીન લાખ મુનિ
 ઠલાખ આર્યા, સદસ ત્રિસત્ સોલ એ, ॥૧॥ ચાલ ॥ સદસ અઠ્યાસી
 દો લાખ શ્રાદ્ધની, સંખ્યા ચૈ લાખ સત્તાવીસની ॥ શ્રાવકાપારી સંખ્યા
 જાણ એ, નાચકચક્ર કાલિકા વાણ એ ॥ ઝહાલો ॥ ઢાણ એ શિશ્વરસ

मत ऊपर मास एक संलेखणा, इक सहस्र साधू परवरया प्रजु
 मुक्ति पहुँचे पेपणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं
 गला, श्रीसुमति जिनवर ज्ञानंदनसदा होतसुमंगला ॥३॥ चाला ॥
 सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंठन क्रौंच सोहै सुजगे हसै ॥
 पूरव लाख पञ्चासी आज ए, इकसौ गणधर गुणगण आज ए ॥
 उल्लाखो ॥ आज ए मुनि त्रिण लाख सोहै सहस्र वीस प्रमणां
 ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी आवक दोय लक्ष जाण ए ॥
 संख्या इक्यासी सहस्र ऊपर आवका इम आणिये, पण लाख
 सोहै सहस्र तुंवरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात
 संख्या सहस्र साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रजु मुक्ति
 पुढता चंग ए ॥३॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात
 सुतीमा मात ए, पद्म प्रजु तसु अंगज नाथ ए, लंठन कमलत
 णो सुज हाथ ए ॥ उल्लाखो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई
 से त. ७ कदौ, तीन लाख पूरव धित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥
 लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस्र लख च्यार ए, साधवीं
 दोय खल सहस्र विदतर आवक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच
 लाख बलि पांच हजार ए, आवकएयारी संख्या सार ए ॥ कुसम
 देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रजु सोहै सही ॥ उल्लाखो
 ॥ सोहए शिखरसभेत ऊपर, आवसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं
 लेखन प्रजुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपद्म प्रजुजी मुक्ति पहुता,
 गिर शिखर महिमा जई, ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनं
 द गहजही ॥ ए ॥

॥ इरा ॥

॥ श्रीसुपासु जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ जविजन ब्रह्म
 रसु सेवतां, पांमे चंगित काम ॥ १ ॥

॥ दाल चौथी ॥ श्रीसीमंवर साहिवा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सौजता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ दे
वी पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंगन सिष्ट लालरे ॥१॥ श्रीसुपार्थ
जिनंद जी, बीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसे देहनो, कं
चनवरण मुहाय लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कहा, सा
धू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस सा
धवियां जोय लालरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लहनी, श्रावक
संख्या आय लालरे ॥ च्यार लाख बली त्रेणवै, सहस श्रावकणी
जाय लालरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक शांतासुरी, पांचसे मुनि पर
वर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार ला
ले ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर इण परे, राजा नात महेम लालरे ॥
देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडाप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंडाप्रभु
बंदिये, चंडवरण तनु जेह लालरे ॥ लंगन चंडतणो जलो, धनुष
दोढसे देह लालरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधता, मेवे
मुर नर बह लालरे ॥ दस लाख पूरव आठगो, तेणवे गणधर
दह लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि अ
भणी तीन लह लालरे ॥ असी सहस संका कदी, श्रावक बलि
दोय लह लालरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर बली, आ
विका चउ लह धार लालरे ॥ सहस इकाणव ऊपर, प्रभुजी
नो परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव जृकुटीगुरी, स
हस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासना, पुइता
मुक्ति मऊार लालरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ वृत्त ॥

॥ जय श्रीनुविद्ध जिनेसरु, जगपति दनदयाल ॥ तमे
तशिखर मुगते गया, जविजनेके प्रतिपाल ॥१॥

॥ बाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा
माता सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु
सुजाण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ ल
ख दो मुनि विंशति सहस, इक लाख श्रमणी जाण ॥ ३ ॥ दोय
लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकचर चौ लाख सहस,
श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा
निधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥
मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा म
हियलै, प्रगटी ब्यारुं नर ॥ ६ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, हिव सु
णज्यो अधिकार ॥ जहिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥
७ ॥ लंगन सुज श्रीवचनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेत्र
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु
प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजाण ॥ ९ ॥
एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या नर ॥ सहस तयासी
दोय लाख, श्रावक संख्या जेर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ष चौ,
श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सह संघ सानि
धकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधुने परिवार ॥ मुक्ति
गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ बाल छठी ॥ धनर संपति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंदपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कं
चनवरण श्रेयांस प्रभुजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो
रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, खरुग लंगन प्रभु पाव जी ॥ धनुष अस्त्री

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर
 बहुतर सदस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सह
 स बलि सदस गुण्यासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥
 अमतालीस सदस बलि चौ लाख, श्राविका जाणो सार जी ॥ ज
 क अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥
 न० ॥ सदस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मा
 स संलेखण कर प्रभु पोदता, मुक्तिमदल सुख हेत जी ॥ ५ ॥
 ५ ॥ दिव कंषिलपुर तात नृपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्या
 मादेवी अंगज कृपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सू
 कर लंठन सोवनकाया, साठ धनुष द्वेहीमांन जी ॥ साठ लाख व
 डरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सदस
 मुनि अरु सय इक लाख, श्रमणी श्रावक जाण जी ॥ आठ सदस
 दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ प
 ण्मुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ पट हजार
 साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम
 अयोध्या नरवर, सिंदमेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत
 जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंठन श्येन सो
 वन सम काया, धनुष पच्चास प्रमाण जी ॥ तीस लाख वडरनो
 आयु, गणधर पचवीस आण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ वासठ सदस
 मुनीसर सोदे, वासठ श्रमणी हजार जी ॥ ठ हजार लाख दोय
 श्रावक, श्रावकणी ५० धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ चार लाख व
 लि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके
 सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनि
 वरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि
 ऊपर, पुदता पद निरवाण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ ऐसे धर्म जिणेसरू, पुढता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत
गिरिद पर, नमोश् जगज्जाण ॥१॥

॥ दाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, जानुराय सुजाण ॥ राणी
सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिने
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंठन सुखकार
॥२॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सदस प्रमां
ण ॥ श्रमणी वासठ सदसस्युं जी, आवक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥
ज० ॥ च्यार सदस वलि ऊपरां जी, चौ लेख एक हजार ॥
आवकणी संख्या कदी जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥
किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सदस परिवार ॥ समेतसिखर मुं
गते गया जी, वांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ द्युणापुर विश्वसेनना
जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिजुवन
जयकार ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग लांठन सौवन
समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, ठ
त्तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सदस मूनि ठसै जी, इगसठ
श्रमणी हजार ॥ दोय लाख आवक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार
॥ ८ ॥ ज० ॥ सदस त्रयाणूं आविका जी, तीन लाख परिवार ॥
गस्मयक देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥९॥ नवसै मु
नि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमणकर मुगतिमें
जी, पुढता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ ऐसे द्युणापुर जलो
जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंशुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन त
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंशु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ गग
खंडत पैंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सदस पंचाणव वरस

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीस गणधर दीपता
 जी, साठ सदस मुनि जान ॥ उसै साठ सदस बली जी, भ्रमणी
 संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सदस गुणियासी लक्षनो जी, आव
 क संख्या होय ॥ सदस इन्द्रयासी तीन छाखनी जी, आविका सं
 ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरचा जी, देवी व
 ला गंधर्व ॥ कुंथुनाथ मुगते गया जी, माख संलेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिखुं अब अधिकार ॥ श्रो
 ता सुणज्यो प्रेम धर, आस्यै लाज अपार ॥ १ ॥
 ॥ दाढ आठ्ठी ॥ देसी विछियानी ॥ हारै लाला श्रीजिनकुशल मूरीमरु ॥ देसी ॥
 ॥ हारै लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरु, तिहां नगरो अयोध्या
 चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला
 ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंगन नंदावर्त्तनो, तीस धनुषदेहीनो मान रे
 लाला ॥ कंचनवरण सुदामणो, आयु सदस चौससी प्रमाण रे लाला ॥
 ॥ २ ॥ श्रीअ० ॥ एक लाख आवकछपरे, बलि संख्या अधिकी जाण रे
 लाला ॥ सदस बहुतर ताननी लक्ष आविका संख्या आंखरे लाला ॥
 श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, एक सदस मुनि परवार
 रे लाला ॥ मुक्ति गए इग गिर प्रभु, कर मास संलेखण सा
 रे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रजावती, भात पिता श्री
 कुंज राय रे लाला ॥ लंगन कलस पचोसनो, वपु धनुष सोवन
 सम कायेरे लाला ॥ श्रीमह्विनाथ जिनेसरु ॥ ५ ॥ सदस पचा
 वन वर्षनी, अित गणधर अवाहीत रे लाला ॥ जविक कमल प्रति
 बोधता, जगनायक श्रीजगदीश रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ चा
 लीस सदस मूनसरु, भ्रमणी पचावन सदस रे लाला ॥ सदस
 त्रयासी लक्षनी, आवकनी संख्या सार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म० ॥

श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सहस्र
 मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ १० ॥
 राजेग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव
 रण तनु शोभता, जे कपिल लंठन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत
 स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वर तीस हजार
 रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस्र मुनिसर सार रे
 लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस्र पचवीसनी, संख्या ब
 हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प
 चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी जली,
 नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस्र मुनि परवारसे, गए मुक्ति
 महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा
 मातजी, तोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंठन
 कह्यो, वपु धनुष पन्नैर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने
 सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरततणो, गणधर सित्तर परिमाण रे
 लाला ॥ वीस इकतालीस सहस्र क्रम, साधु साधवी संख्या जाण
 रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल
 क्ष सहस्र वलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम
 करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमंमले,
 आया सिखर समेत मजार रे लाला ॥ जूकुटी यक्ष गंधारी सुरी,
 इक सहस्र मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि
 रोमणि सहस्रफल, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ बाल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जय१ परम पुरुष पुरुषोत्तम; पारस पारसनाथ जी ॥

सौविरियों साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥
 जयंश सिखर समेत सिरोमणि, श्रीतांवरिया पास जी ॥ ध्यावे
 सेवे जे नर तेहनी, पूरै बंठित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी दे
 स वणारसी नगरी, श्रीअश्वत्तेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या
 ता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंठन नील
 वरण ठवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आधू इकसो वरस प्रमाणे,
 गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर
 अरु श्रमणी, कही अमृतीस हजार जी ॥ जूमंजल विचरे जवि
 जनक, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस लाख इ
 क आवक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी सं
 ख्या, पार्श्वयज्ञ सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनेसर मुगते
 पुहता, महिमा अइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जग
 में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ ठहरी पाले जे नर
 जावै, जेठे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनबंठित फल पावे, ए सु
 रंतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करै जक्ति, सं
 घपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो
 सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पामे, जा
 धा करे गहंगाट जी ॥ साधर्मि वञ्चल मुनिजक्ति, पूजा उजव था
 ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक २ पर चरण प्रभूना, पूजा जविज
 न जाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उ
 जाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणता
 नवनिध आय जी ॥ तिण ए जविजन जाव धरीने, सुणज्यो म
 न थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गद्यपति महिमाधारी,
 कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौजाग्य सूरेश्वर, अमृत
 बचन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पताये रास रच्यो ए, अ

मृतसमुद्गने सीत जी ॥ बालचंद्र निज मति अनुसारे, सोधो बिबु
ध जगीत जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत जगणीसे सितमोत्तर, सुदि
वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल
माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

रुषज प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह
उद्भास ॥ पुंरुरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल वि
कास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, जावै श्रमण सुगुरु
जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसं
त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जगत महासुनि प्रयम चक्रीसर, बाहुबल उप
शम जंरार ॥ सूरयसादिक आव मुनिसर, पांभ्यो विमलाचल ज
चधार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषजवंत जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमो
लाख असंख, श्रीसेजुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूकी कं
ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्ति, साधु महा
बल संजम सहि ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषीसर न-
वन अवीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख व वसुंदर, श्रीमद्वि
नाथ पूरबजव नित्र ॥ पहुंता परम रुषीसर शिवपुर, पाली श्रीजि
न आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंड विष्णुकुमार लवधि निधि, खं
दक सूरीना सीस सय पंच ॥ कार्तिकसेठ सुसाधु कीर्तिधर, श्रम
ण सुहोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडुवंत अहोन्नसु सा
गर, प्रमुख आव अणगार प्रधान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव,
निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालिने
जवयालो, पुरतसेण वारितेन प्रजुत्र ॥ संव अने अनिरुद्ध रुषीसर,
सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक
षट् मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ दंडण रुषि श्रीआवधा

सुत, सहस्र साधु संजतसु ऋपात् ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ दाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस्र श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलग मुनि
वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंरगिरिवरो, करुणाकर प्रशम्यां संपदकरो ॥
उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिपीसर साधु सारण सोह ए, अं
तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध
नारद मुनि प्रमुख पैताल ए, दमदंत महाकृषि कुंजवारे साधु नमुं
त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिपजदत्त रतनत्रय मुणी, स,
मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांरुव प्रणमुं मुनिपती, केसपएली
बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती बालक पूत्र मेइल शिवर
आणंद रक्षियो, अणगार कासव धर्म ज्ञाख्यो सोधि सिवपुर स
क्षियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुं
रुकीक महामुनीसर प्रणमिये शुज संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंड
बलकलची रांकेवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू
हुमइ नमि निगया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लाखो ॥ श्री
जुवा ए वृषजादि देखी थया वरु वइरागिया, संजमतिरि जज मो
हनिज तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया
गकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रद समे ॥ १३
॥ चाल ॥ खंतै कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोइजा मुनि चरणे लय ला
इये ॥ काल उवाई प्रमुख महामुणी, संजम सुठ जयंत। साहुणी
॥ उल्लाखो ॥ साहुणी, जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया
॥ श्रीश्रमणजइ सुजइ सुंदर अचल आतमगमिया ॥ थं:सुप्रतिष्ठ
सीस सुवत, साधुसुवत सेहरो ॥ चारित्र रिप गुणवंत गोचइ गरुड गरि
मा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ तिरि सिवराय कृपासर वंदिये, दसारण
जइ तमुं डख वंदिये ॥ अर्जुननाली मुख संजमधरो, मुट्टप्रदा

री सिवरमणी वरो ॥ उल्लाखो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगमू कमावते
 प्रसिद्ध, कोमिन्न दिन्न अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो
 तम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥
 गरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंड प्रणम्यां सुख पाइये ॥ खं
 वकुमार सदा अजिनंदिये, नमिह जरह मित्र मन आणंदिये ॥
 उल्लाखो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुप इ
 लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्रीइंड नाम निर्ग्रथ निर्मम
 धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी
 सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि १ जसतणो, श्रमण सु
 दंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आइकुमार ए, चित्त चतुर
 नर चित चमकार ए ॥ उल्लाखो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर
 देवतांनिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पालत हि
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥
 श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषै जुन, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुन ॥ श्री
 इखुकार नृपति कमलावती, रांणी जूगुसुं प्रोदित सुजमती ॥ उल्ला-
 खो ॥ सुजमती जेहनी जसाजार्या पुत्र दोय बखाणिये, ए बहूं
 लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ कृत्रिय मुनिसर साधु
 संजम धर्मरुचि महाव्रती, नियंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसं
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्पो, विधसुं शीतल
 सिवकमला मिढ्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं
 स्यो तप गुण वीर ए ॥ १९ ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुवाहुजड नं
 दकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख वियाक उदार ए ॥
 श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग कमानिधि कहिये इण कलै, कुरुदत्त सुत
 तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

सुख रिप च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अन्नैकुमार
मुनि अन्नयंकरो, हस्त विदहस्तु आतम हितकरो ॥ उद्धातो ॥
हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधियै, सुनह्र
नै सर्वानुज्जति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने
उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसावजनइ सुधन्न मुनिवर समर
मंगलकरो ॥ १० ॥

॥ बाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

ब्रह्मवेशागी बर नमूं, युगवर जंवूसांमि ॥ प्रज्जव सिध्यंजव
परगमो, सुजस जसोजद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी,
नामे घर नवनिध्व वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ मद्रा० ॥ ११ ॥ जग संज
विविजय जयो, जद्रवाहु कृतजद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर
श्रीधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य
मुनीराय ॥ सीत परीपह जिणसह्या, सारथा२ आतम काज ॥ म० ॥
॥ १४ ॥ अज्जमहागिरि जांगिये, अज्जपुद्गि विसाज ॥ संप्रति नृप
मनिबोद्धियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ १५ ॥ आरिजसांमि
यसंसियो, अज्जसुजद्र मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निलो, सींहगि
री समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि शिवर महामनी, श्रीवयर
स्वामी मुनिराय ॥ अरददिस मुनि अपहरयो, जद्रगुपति निरमाय
॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन वियावरू, श्रीरक्त गुरु दक्ष ॥ पुस
मित्र गुण गहगह्यो, प्रभु डरवलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विंज सा
धु सुविधइ जरयो, श्रीमंजिल सुविह्व ॥ सूत्रअरय रतने जरयो,
हमाश्रमण देवह्व ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री
हुपसै सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आझा प्रतिपाल
॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मजूमि जिके, दुआ होस्यै अपांत
॥ वर्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रय गुणवंत ॥ न० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि रायने, साधुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, अकि
रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल उत्तीस ए, श्री
विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कट्याणक दिने, गुंथी श्रीमुनिमाल
॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रलिआमणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥
सूरि विजय राजै सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री
मतिज्जड सुगुरुतणै, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंध वखाणीधि,
सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग
ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिने, पामे सुख नरपूर ॥ म० ॥
३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम
हासिद्ध घरे फले, सदा२ कट्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल
का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नं जिन स्तवन लि० ॥

॥ दो० ॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई ॥
रुषज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई ॥
॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंड प्रभु प्रणमूं, सुविध शीतल श्रेयांस री
माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंशु परसंस री
माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी
पास जिनंद री माई ॥ चौवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा
जंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ प्रह सम सूषा साधु नमूं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चौवीसी नमियै, जेहना नाम प्रगट ए जाण ॥
केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥
॥ नि० ॥ सर्वानुज्जति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वा
मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नाम
॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति सुजगीस, तिवकर स्यंदन संप्रति नामे, वंदीजे जिनवर चौवी
स ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफल संसारनी ॥

जे जविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविसं प्रणमीस त्रिहु
काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज प्रण
मीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुंसी
जिन वीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए,
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो
साव ए, चौथो स्वयंप्रभू नाम आराधि ए ॥ दृढायुष जीव सिद्धां
तमें जाणियै, पंचम सर्वानुभूति प्रमाणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण नाम
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते ठगो स्वांमि सलहीजियै ॥ संख
आवक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पैढाल जिन
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिणं, सतक आवक
शतकीर्त्ति दसमो जणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्य
कीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषाय
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निर
मम देव सुलता कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥
समाध जिन सतरमो आवका रेवती, अठारमो शंखजीव संवर
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव
ते विजय जिन बीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो,
देव बावीसमो अंबन आवक जणूं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत
वीरज नमो, स्वतचुयजीव ते जड चौवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम
चौवीस जिन जाणिया, प्रवचन सारजद्वारथी आणिया ॥ केइ पर-
सिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कहा, साख अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ए॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहलो ए देशी ॥

विहरमांन जिन बीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर
शुगमंधर वाहुजो, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु
रूपज्ञानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंडानन
चंडवाहुजी, जुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा
प्रह नमुं वली, देवयसा यसरिद्ध अढीढीपमे विचरे आज ए, नाम
लिपां नचनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थकर सासता, इणहिज अजिधान ॥ रूपज्ञानन चं-
डानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार० ॥ ९ ॥ अठ कोमि उप्पन्न
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे गयासी देहरा, त्रिहुं लोक मजार
॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोनिया, बिंव त्रेपन लाख ॥
सदस अठावीस च्यारसै, अठयासी जाल ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विभू
जिणवर, नाम ए, समरया सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम
कित सुद्ध आय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चोवीसी बीस विहरमाण चक्र जिणवर सासता,
संघुण्या सतरैसै वयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता
मणितणी पर प्रबल वंछित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण श्रुद्ध प्रणमै
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री ठिन्नूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिध्दाय लि० ॥

जग चूमामणिचूच, उसजो वीरो तिलोय सिरि तिलठ ॥
एगो लोणाइजो, एगो चस्कू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवहरमुसज जिणो,
उम्माते वद्धमाण जिणचंडो ॥ इह विहरिया निरसणा, जए ऊएउव
माणेण ॥ २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसदइ बहुचाई असरिसज

एस्स ॥ इय जीयंतकराई, एस खमा सबसाहूण ॥ ३ ॥ न च
 ऊह चालेन, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं
 वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जेहो विणीय विणन, पढम
 गणदरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमन्नं, विम्हिय दियन
 सुणइ सब ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइन तं सिरेण इच्छंति ॥
 इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउमेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ जइ
 सुर गणाण इंदो, गइगणतारागणाण जइ चंदो ॥ जइय पयाण
 नरिंदो, गणस्स वि गुरु तद्दाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति मदीपालो, न
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरन काजं, विहरंति मुणी
 तदा सोवि ॥ ८ ॥ पनिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवको
 ॥ गंजीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिण ॥ ९ ॥ अपरिस्तावी
 सोमो, संगहसीलो अज्जिगइमई य ॥ अविकञ्जणो अचवलो, पसं
 तहियन गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
 पइं दानं ॥ आयरिणहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयजा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करे इ
 माणं, परिय छइ तं तदा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिस्सियस्स वमग, स्स
 अज्जिमुहा अऊचंदणा अजा ॥ नेछइ आसणगइणं, सो विणन सब
 अजाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिस्सियाए, अजाए अऊदिस्सिणं साहू ॥
 अज्जिगमण वंदण नमं, सणेण वणएणसो पुजो ॥ १४ ॥ धम्मो
 पुरिसप्पन्नवो, पुरिसव रदेसिण पुरिसजिणो ॥ लोएवि पडू पुरिसो,
 किंपुण लोभुत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाइणस्ससरणो, तइया वाणा-
 रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किरूववंतीणं ॥ १६ ॥
 तह वि य सारायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं ॥ उयरणिणं
 डेके, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिवाणसु बहुयाण वि, म
 जाणइ इद समत्त घरसारो ॥ रागपुरिसेहिं निऊइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नहिं ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सस्कियं
सुकयं ॥ इह जहचक्कवट्ठी, पसन्नचंदो य दिहंता ॥ १९ ॥ वेसो वि
अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं
न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्कइ वेसो, संकइ वेसेण दिस्सिंतं
मिअहं ॥ उम्मग्गेण पमंतं, रक्कइ राया जणवत्तं य ॥ २१ ॥ अप्पा
जाणइ अप्पा, जहव्विं अप्पसस्किंतं धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह,
जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ
जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥
॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविच्चरिंतं ॥ संव
हरमणसीत्तं, बाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग
प्पिय चिं, तिएण सच्चंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपास्तद्वियं, कोरइ गुरु
अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणीत्तं गव्विंतं निरवणा
मो ॥ साहुजणस्स गरहिंतं, जणेवि वयणिज्जयं लइइ ॥ २६ ॥
ओवण वि सप्पुरिसा, सणकुमारु व्वेकेइ बुद्धंति ॥ देहे खणपरिहाणी,
जंकिर देवेहिंसे काइयं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण
वासीवि परिवर्तंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे स्सासयं कयरं ॥
॥ २८ ॥ कहंतं जन्नइ सुक्कं, सुचिरेण वि जस्स उक्कमद्विद्वियए ॥
जं च मरणा वसाणे, जव संसाराणुवंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह
स्सेहिं, बोद्धिज्जंतो न बुद्धइ कोई ॥ जइ वंजदत्तराया, उदाइनिव
मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिवत्ताइ रायलब्धीए ॥
जीवासकम्म कलिमल, जरिय जरातो पमंति अदे ॥ ३१ ॥ वोत्तू
णवि जीवाणं, सडुक्करा इति पावचरियाइं ॥ जयवेजा सा सासा,
पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पन्निवज्जिज्जण दोसे, नियए सम्मं
च पायवन्नियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥
इति पोसइ सिखा० ॥

॥ अथ राईसंधारा पोसह सिंधाय ॥

॥ निस्सिद्धी निस्सिद्धी नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥
महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिज्जंते ३, कहिये, अणुजाणह जि
विजा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेदिं मंनिअसरीरा ॥ बहु
पन्निपुन्ना पोरिसि, राईसंधारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधारं,
वाहुवदाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुर पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए
जूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमांसं, उवट्ठंतेय काय पन्निहेहा ॥ दवाई
उवज्जगं, कसासनिरुज्जणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमानं, इमस्स
देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आदार सुवहि देहं, सबं तिविहेण वोरिसि
॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा जस्काण परपरीवानं ॥ अरइ
रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंसु, स्कम
ग्ग संसग्ग विग्घ जूआइ ॥ डग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं
॥ ६ ॥ एगो हं नच्चिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण
मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासनु अप्पा, नाण
दंसणसंजुज्ज ॥ सेसा मे वाहिरा ज्ञावा, सव्वे संजोगलस्सका ॥
॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डस्सपरंपरा ॥ तम्हा संजोग
संबंधं, सबं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं
सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलि
पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्ध
लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ च
त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव
ज्जामि, साहुसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥
अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता किन्तिअत्ता
णं, वोसिरामित्ति पावर्ग ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावणं ॥ १ ॥ आ
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,
 वोसिरामि त्ति पावणं ॥ ३ ॥ उवझाया मंगलं मझ, उवझाया मझ
 देवया ॥ उवझायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावणं ॥ ४ ॥ सा
 हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,
 वोसिरामि त्ति पावणं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अणणि मारुय, इक्किक्के सत्त
 जोणि लस्कानं ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लस्कानं ॥
 ॥ १ ॥ विगलेंदिणसु दो दो, चउरो चउरो य नारुय, सुरेसु ॥ ति
 रिणसु हुंति चउरो, चउदस लस्का यमणुणसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वज्जणसु, वेरं मझ न
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंठिअ, सम्मं ॥
 ति विहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा
 विअ मझ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणह,
 मझह वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज
 जमंतु ॥ ते मझ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति
 संधारा गाथा स० ॥

॥ अथ निदावारक सञ्चाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोढ्यां महा
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय
 वाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हें रे, पगमा बलती
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगनां रे, कहो केम ऊ
 जला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो, सहुको आपणो रे,
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोमे घणो अवगुणें सहु जरयां रे,
 केइनां नलीयां चुए केइनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते
 आवे नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम लुटकवारो आय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण प्रदजो
सहुको तणो रे, जेइमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जाल अपार रे ॥ सु
जाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैरअद्धार रे
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परि
माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो
राण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक
पासैं आय रे ॥ सु० ॥ ऊजो जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊजा
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म दुशी इण आगमें रे लाल, राम
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बांढयो हुवे रे लाल,
सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो रे
लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आग
में रे लाल, तुरत अगन अयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलगुं
जस्यो रे लाल, जीवे धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम
वरदा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊ
तरी रे लाल, साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रत्नियायत स
हुको थयां रे लाल, सघले थया नवरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम
खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग
मांहे जस जेइनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क
हे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥
॥ ए ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिधाय ॥

॥ श्रेणिक रयवामी चढयो, पेखियो मुनी ए वं त ॥ वर रु
पकाते मोहियो, राय पूठे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं
रे अनाथी निर्गैथ ॥ निणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए
आकणी ॥ इण कोसंबी नगरा वसे, मुऊ पिता परि गल धन्न ॥
परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ
क दिवस मुऊ वेदना, कपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु
जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न आय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी
गुण मन उरमी, उरमी अबला नार ॥ कोरमी पीमा में सही,
नहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवेद्य बुलाइया,
काधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाद
नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुऊ उपशमे, तो लेउं सं
जमज्जार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, त्रत लीधो रे हरष अपार ॥
॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते ज्ञानी हुं रे अनाथ ॥
चीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥
॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे
णिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥
॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि समय
सुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिधाय ॥

॥ कर पन्तिकमणो ज्ञावसुं, दोय धनी शुज जाण ॥ लाख
रे ॥ परजव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाख रे ॥ १ ॥
कर पन्तिकमणु ज्ञावसुं ॥ ए आकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे
णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंमी सोना तणी, दीये दिन
प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते वली, एम

दीये इव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुल्यो, नावे तेह लंगार
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक धनविसत्रो, जलुं वंदन दोय
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारो रे आपणां, ते जव कर्म नि
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काजसग गुजध्यानथी, पञ्च
 स्काण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सद्या ये ते बली, टालो टालो
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, जहिये
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिद्धाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह जगोने समरिजे हो ॥ जवियण मंगलिक सरणा चार
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियमे रा
 खिजे हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ ज० ॥
 केवलि ज्ञाख्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां थकां हो ॥ ज० ॥ दूटे
 आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारुं सुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए चारु
 मङ्गलिक ॥ ए चारुं उत्तम कथां हो ॥ ज० ॥ ए चारुं तहतीर
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वारं
 वार ॥ गामे नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघन निवारणहार ॥
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ साकण साकण जूतनां हो ॥ ज० ॥ सिंह चित्ताने
 सूर ॥ बैरी हुसन जोरटा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा
 खो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरते
 आनंद सुख सदा हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥
 निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कर्मी
 नहिं कोइ वेस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनर्चिता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोम कल्याण ॥ शुद्ध
 मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चै पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥
 ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर
 णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मजार ॥ हि० ॥
 ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥
 चोखमल्ल इम वीनये हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥
 ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिंहाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुषीनी सझाय ॥

॥ ढंढण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूं वा
 री लाल, अजिग्रह दीधो एइवो हूं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हूं०
 ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हूं० ॥ न मिलै शुद्ध आहार
 रे ॥ हूं वा० मूल नलै अणसूऊतो हूं० ॥ पंजर कीधो गात रे हूं०
 ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूवै श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सदस अढार रे ॥ हूं
 वा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूं० ॥ मुऊनें कही विचार रे ॥ हूं वा०
 ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अविको दाखियो हूं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद
 रे हूं वा० ॥ कृष्ण कमाल्यो वांदवा हूं० ॥ धन जायव कुलचंद रे हूं
 वा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिळ्या हूं०, वांढ्या कृष्ण
 नरेतर रे हूं वा० ॥ किणही मिळ्यात्वी देखने हूं०, आणखो जाव वि
 सेसरे हूं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुऊ घर आवो साधजी हूं०, ल्यो मोदक ठै
 शुद्धरे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरया हूं०, आया प्रभुजीने पास रे
 हूं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुऊ लवधै सोदक मिळ्या हूं०, कहीने तुम्हे
 किरपाल रे हूं० ॥ लवध नही बड ताहरी हूं०, श्रीपति लवधि
 निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ एलेवा जुगतो नही हूं०, ज्याळ्या पर-

न काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० चूरे करम समाज रे
हुं० ॥ ७ ॥ ठं०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांभ्यो केवल नाण रे
हुं० ॥ ठंढण रुषि सुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं०
॥ ए॥ ठं० ॥ इति ठंढण रुषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धनारुषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन,
मनमै तो मांनी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना,
धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनमो रे किम परचावसुं
॥ २ ॥ दस दिस्ती दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनु
मति देतां रे जीझ वहे नही ॥ ३ ॥ वत्तासै नारी हो धन्ना,
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥
बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले
रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो० ॥
कोरु वत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांलो रे धन्ना, वय
पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो, रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत
अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधुक
हावणो ॥ ८ ॥ घर १ जिहा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥ कहाणी
रे रहणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आ
गम ज्ञणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग वै ॥ १० ॥
वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसद् सहणो मो० ॥ कोमल
केता रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें ज्ञारख्यो हे अम्मा,
जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥
सुख अजिवापी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमार
थि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सद् सुण्यो ॥ १४ ॥

मैं इस जाण्यो हें अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जो-
वन आयु शिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजै
मोरी अम्मा, जो खिशा जावे सु किर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो
रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ ठठ्ठ पारणे हे अम्मा, विगय निवा-
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरमर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-
जम पावे हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ
रूमा जणै ॥ १९ ॥ संजम पाव्यो हे अम्मा, नव पखवाने मोरी
अम्मा, मास संधारे सरबारसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना-
रुषि सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिद्धाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम
तणे वस सुख डख पाया, सवल हुआ महा निवला रे प्राणी, कर्म
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिव
स रह्या जूखा ॥ वीरने वारे वरस डख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी-कूखै
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध
जुवान नर जैसा ॥ सगर हुं महा पूत्रनो डखियो, कर्मतणा फल
एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ वत्रीस सहस देसारे साहिव, चक्री
सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म कीयो तनु ठार रे
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्मइवाल किया हरचंदने, बेची सुतारा रांणी ॥
वारे वरस लग माथे आय्यो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥
॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनवाला ॥ चौपद ज्युं
चहुटामें बेची, करमतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे
आठमो चक्री, कर्म सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जह उजा देखे,
पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्म कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी,
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उदन्न को न जा
 दवरो साहिब, कृष्ण महावत जाणी ॥ अटवी मांहि गूढ एकलनो,
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांनव पांच महा
 जूझारा, दारी डोपदा नारी ॥ वारे वरस लग बन रमवनिया, ज
 मिया लेख निरूपारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस जुवा वस
 मस्तक हूँता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलनै जग सह नर जीत्या,
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांन्या,
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी
 श्रेणिक राजा, वेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥
 कर्मसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिय तिरोमणी डौ
 पदि कडियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी,
 पुरुष कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे
 स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकनो, कर्म नारन्यो
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क
 रता पुरुष कहावै ॥ अदनि स महिल मसांणमे वासो, त्रिका जो
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सदस किरण सूरज परतापी,
 रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंन्या नर कर्म,
 ज्ञान्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिरप कर जोनीने विनवै, नमो २
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंहाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिंहाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेदनो सुविचार वि
 वेकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै डुक्क अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पर्यायकां, फामव पांच
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पण्यो, खोइ सहू रा
 जरि० दि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस ज्ञान अवगुण घणा, करे
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकली नारी रेवती, नरक गइ
 निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन
 तजी, चित घरी वलि चाह वि० ॥ दीपायण रिषि दूहव्यो जा
 ववे, द्वारकानो थयो दाह दि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने जे
 स्याघर वसै, लोकमें न रहे लाज दि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आदेने
 कुविसन साचवै, प्राणी इणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठे
 चोरीने विसने करी, जीव लदे डसक जोर दि० ॥ मुंजदेव रा
 जायें मारियो, चावो हुंरुक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥
 इम जांणीने ज्ञव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण
 ज्ञव परज्जव आणंद अतिघणा, कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ॥
 ॥ सा० ॥ ए ॥ इति सात विसनकी सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिद्धाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथ ॥ राति वन
 मांदि कान्तसंग रह्यो रे, साधतो सुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर बखा
 णी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेन्नाराजानी
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत
 ंगार सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे
 वस्यो जी ॥ सौमि बाहर रह्यो दाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ ऊबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो दुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण
 वस्यो जो ॥ श्रेणिक पळ्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो
 जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ जगवंत सांसो जाजियो
 जी, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां घकां
 जी, पैसतां नगर मज्जार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे
 अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत
 लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत
 णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिंहाय ॥

॥ झूलो मनजमरा कांइ जमै, जमियो दिवस ते रात ॥
 मायारो लोत्री प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ झू० ॥ कुं
 ज काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे
 नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ झू० ॥ केहना ठोरू केहना
 वाठरू, केहना माय नै बाप ॥ उं जीव जासी एकलो, साथे पुन्य
 नै पाप ॥ ३ ॥ झू० ॥ आस्या तो मूंगर जेवनी, मरवो पगला रे
 हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ झू०
 ॥ लखपति ठत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी
 गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ झू० ॥ जवसायरजल
 डुख जरयो, तिरवो ठे रे जेह ॥ वीचमें बीह सबलो अठै, करमें
 वाय ने मेह ॥ ६ ॥ झू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो
 पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वांणियो ॥ संवल लेज्यो रे लार
 ॥ ७ ॥ झू० ॥ मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न आय ॥
 वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकरु माय ॥ ८ ॥ झू० ॥ मंद
 मंद कहे वस्त वोरीयै, जे कुठ आवे रे साथ ॥ अपणो लाज उवा
 रियै, लेखो सादिव हाथ ॥ झू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिंहाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, जरत बाहूबल जूँ रे ॥ मूँ
उपामी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूँ रे ॥ १ ॥ वीरा म्दारा गजध
की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी ज्ञासै रे ॥ रुपन जिनेसर मोकली, बा
हूबलनेँ पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढयां केवल न होई रे ॥
वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अजिमानो रे
॥ लघु बांधव बांदू नही, कानसग रह्यो शुज ध्यानो रे ॥ ३ ॥
वी० ॥ वरस दिवस कानसग रह्यो, बेलनियां वींटाणो रे ॥ पंखी
माला मानिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व
चन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मजारो रे ॥ हय गय रथ में प
रिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन
वालियो, मूंक्यो निज अजिमानो रे ॥ पांव उपामी बांदिवा, ऊप
नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखवा, बाढ
बल रुपिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे
पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिंहाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाढया गोचरी, तमके दाजे सीसो जी ॥
पाय उवराणा रे बेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर०
१ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊनो गोखने हेगो
जी ॥ खरै डुपहरै रे दीगो एकलो, मोही माननी मीगो जी ॥ २
॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नवणे वेधियो, रुपि थंज्यो तिण वारो
जी ॥ दासीने फहे जाय ऊतावली, उ रिपि तेनी आंणो जी ॥
३ ॥ अ० पावन कीजे रुपि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी
॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥
४ ॥ अ० ॥ चंदावदनी रे चारित चूकगो, मुख बिलसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगवै, तब बीगो निज मातो जी ॥
 ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलिबैर मज्जारो जी ॥ क
 हि किए दीगो रे मादरो अरणलो, पूवै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥
 अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नभे, मनमें लाज्यो तिव
 रो जी ॥ धिग्२ पापी रे मादरा जीवने, एद में अकारज धारयो
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिद्धा उपरै, अरणक अणस
 ए कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरु, मन वंछित फल
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिंहाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिंहाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जांणियै, धनदरसेठनो पूत ॥ नटवी देखी रे मो
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न ठूटे रे प्राणिया, पूरब नेद
 विकार ॥ निज कुल ठंमी रे नट धयो, नाणी सरम लिगार ॥
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचया, छंयो वंस विवेक ॥ तिहां
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ शोय
 पग पहरी रे पावनी, दस चढयो गजगेज ॥ निरकारा छपर नाचतौ,
 खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल जजावे रे नाटको, गावे किन्नर
 साद ॥ पायतल घूघर घगधन, गाजै अंबर नख ॥ क० ॥ ५ ॥
 तिहां राय चिंते रे गजियौ, लुब्धो नटवी रे साथ ॥ जो एमै नट
 वो रे नाचतो, तो नटवी मुज दध ॥ क० ॥ ६ ॥ वान न आपै
 रे नूपती, नट जाणै नूप वात ॥ हूं धन वंतू रे रायनो, राय वंछै
 मुज घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियौ, धन२ साधु
 नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवना, मन आयो वैराग ॥ क० ॥
 ॥ ८ ॥ संवरजावे रे केवली, ततखिण कर्म खयाय ॥ केवल मदि
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिंहाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै
 रागीयौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो मुऊ आज ॥
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वठ तूं केणे जोव
 व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किय दूहव्यो रे, हूं नवि
 हुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस जार रे
 जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुढ्यो जी, सहिया डस्क
 अणंत ॥ सासोश्वासैं जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ दिवणां तूं वालक अठै जी, जोवन जरयो
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डस्क न
 सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कांन हे
 मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वठ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस
 आहार ॥ जुंइ पाला नित हीमणो जी, जाणसि तुऊ कुमार रे जाया ॥
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जम्हो जी, धर्म डहेलो होय ॥
 जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तव किम करणो होय रे मायमी ॥
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ युगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो
 वनजर ठोरु नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥
 ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेंजमी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि
 सुंहाली देहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरख पखे सहु कोय ॥ विषय
 विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥
 १० ॥ खमिश् मान पसाय करी जी, में दीधुं तुऊ डस्क ॥ दिन आदेस
 जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें व्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥
 तन फाटे लोयण ऊरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वठ सुखी हुमो

तिम करो जी, में दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥
 मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी
 आठै रमे जी, हिव अह्न कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥
 कुमर जणै सुकुली प्रिया जी, बहु डख ए संसार ॥ नेह तुमारो
 जांणियो जी, जो ड्यो संयमजार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ
 सिविका तब सजी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय न
 छव करै जी, चारित्र ड्यो रिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम
 जांणी वैरागियो जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोरी पूनो जणे जी,
 ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाई निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिगसर मास, पडिली पम्वा तीन विमास ॥
 चौथी पम्वा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिझाई जाख ॥ १ ॥ जां
 लगि होली जमे वार, धुंवर पम्ती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो
 जय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने
 केस पाखांण, वरसै तां लग असिझाई जांण ॥ जूजै मल्ल मांदोमांदि
 जांम, तां लग असिझाई तिण ठांम ॥ ३ ॥ जूपति परजव पोहतो
 होय, जां लग पाट न वैसै कोइ ॥ तां लग बोली वै असिझाई, स
 हुको सरदहज्यो मन मांदि ॥ ४ ॥ जलकापात अने दिगदाह, एक
 पोहर असिझाई आय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहर
 सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनशुकी, पम्वा लग
 असिझाई वकी ॥ पम्वा बीज तीज चांदणी, समीतांज असिझाई
 गिणी ॥ ६ ॥ आझ नक्षत्र न लागै जांम, गाज बीज असिझाई ताम ॥
 गाज बीज जो हुवे अकाल, असिझाई वे पुहर संजाल ॥ ७ ॥ चंडग्रहण
 असिझाई जणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारे आठ वि
 चार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्यै वार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखै जविषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ,
 आठ पुहर असिझाई होय ॥ ९॥ वसतीशकी सातां घर मांहि, नर
 विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां
 असिजाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, वेटी
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांहि कही असिझाई, नारी रुतु दिन
 तीन कदाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन
 गइ ॥ असिझाइ सो कर मांहि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥
 असाढे चौमासै दिने, पन्निकमणा गायंथी गिएँ ॥ बार पोहर
 असिझाई कही, काती चौमासै इण पर सही ॥ १३ ॥ इण पर
 असिझाई ठै बहू, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही
 संखेवि, हरखै पय प्रनू कीजै हेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेह,
 ब्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तव कवि नाम
 कहियो इण परै ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व
 ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सदि पालो
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित
 शुद्ध पालौ, टालो दोषदया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,
 ब्यार सिद्धाव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो जवि
 यण मनरली ॥ दाखविइ गुण परइ केरा, दोष सम काहौ बली ॥
 ॥ २ ॥ मम काहो रे लोन्नी नर कूमो करौ, जांणी सावध रे अ
 नक बावीसे परिहरौ ॥ वन पीपल रे पिलखण नें कहुंवरो,
 ऊंवरफल रे रखे तुमें नकण करो ॥ ३ ॥ उज्जालो ॥ रखे
 तुमें नकण करौ मांखण, मद्य मधु आमिय तणो ॥ विष हेम
 करदा ठंनि परदा, दोष मूल नाटी यणो ॥ परिहरो सज्जन र

यणीजोजन, प्रथम डुरगति बारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति अ
 सूरौ, रविउदय विन पारणौ ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब
 नांम ए, काचागोरस रे मांदि कठोल न जिमिये ॥ एह वेंगण
 रे तुछ फला सवि ठांरु ए, आपणपुं रे व्रत लीधो नविखंरु
 ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंरुए व्रत नियम लेइ, बेइ फल
 व्रत जंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चलित रस होय
 जेहनो ॥ संवर आणी अन्नक ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥
 गुरु वयण विगतैं वली पूठ्यौ, अनंतकाय बत्तीस ए ॥ ६ ॥
 अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु ज्ञकण रे पातिक वोढ्या
 ठै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आदूं वली ॥ वजचूरण रे कंद
 बहूं कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै
 चतुर नर आंविनी ॥ रतालू पिंमालू थेग थोहर, सतावरी लसण
 कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवन्तुलौ, पढ्यंक
 सूरण वाल वीली मौथ नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे
 कूपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी
 रे जमरवृक्षनी ठालमी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलमी ॥ ९ ॥
 वेलमी तानु ताजा खिलोमा ने खरसुआ, जूय जूंफोमा ठत्रा
 कार जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसिद्ध वोढ्या
 लक्ष्मीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी
 ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अन्नक सिंहाय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सिंघाय ॥

॥ संवेगरसमे जीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोइग
 टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धनं गजसुक
 माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंफणी ॥ प्रज्ज
 पास संयम आदरयौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ १ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा
 यवा अलजयो, परुपैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो,
 पिण दिन जावे रे तो ठेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय
 कानसग रह्यो, तिण सांजि प्रज्जुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चिं
 तवै, एहनै साची रै ठै मुंह मूंठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुऊ सुता विन
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगमी रचि सिर ऊपरै,
 चिहुं दिसि वांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ
 धिक वधै, तिम वधै मन परिणांस ॥ चवदमै गुणगारें चढ्यो, मु
 निवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने अई,
 ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे
 प्राणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रज्जु मांमी करी, रातिनी वी
 तग वात ॥ हरि देखी हियमो फूटसी, तेणें कीधो रे रुपिजीनो
 घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अवेचलरा
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रणचंद्र सिखाय ॥

॥ राज ठंमी रलियामणो रे, जांणी अशिर संसार ॥ वैरागै
 मन वालियो, कांइ लीधो संजम ज्ञार ॥ प्रणचंद्र प्रणमूं तुमारा
 पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे कानसग रह्यो
 रे, पग ऊपर पग ढाय ॥ बांह वेजं उंची करी, सूरज सांमी इटी
 लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन
 जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डुरमु
 ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां
 मियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूठियो रे,
 एहनी सी गति आय ॥ जगवंत कहे द्विवणां मरे तो, सातमी नर-
 के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक् अंते पूठियो रे, सरवारअसिद्धि वि

मांन ॥ वाजी देवती डुंडुजी, मुनि पांभ्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥
 ॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावारना शिष्य ॥ रिद्ध
 रप कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पति सिद्धाय ॥

॥ उत्पत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरजा
 वासे जीवमो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाजी
 तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नाविका, तिम नामी ठै
 दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥
 आंवतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर
 श्रवे तिण मांसश्री, रुतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,
 तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित
 डुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥
 नामी वांसतणी जरिये घणी, रूघाल ॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले
 ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, ठै नव लख जीव
 ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी
 मिढ्यां, पांचेंडी जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥
 उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टी वार ॥ जीव ज
 घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य
 तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी श्रिति तिहां, उत्कृष्टी
 जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवमो, जंपै जग
 दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चौवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥
 महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरवीज ॥ पिचदत्तर वरसां
 पठै, आयै पुरुष अवीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूवै नर वसै,
 तिम वांमे नारि ॥ बीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥
 १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणै इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ व
 रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्ट काल ॥ गरजावासै जोगव्या, इम बहु
 जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कर्मण काये कर लियो, पहिलो आहार
 ॥ शुक्र अने सोणिततणो, नही जूठ लिगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ पर-
 जापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा-
 रिक मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन अठै उदैर तिको, उपजायै अंग
 ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाढ़ अकास ॥ पांचजूत सरीरमें, इम करै प्र-
 कास ॥ १९ ॥ उ० ॥ वारै महुरत तां पठै, विलसै नर नारि ॥ गर-
 जतणी उत्पति तिहां, नही अवर प्रकार ॥ २० ॥ उ० ॥ कलल हु-
 वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदथी पेसी बधै, घन मांस
 कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी वोटी हुवै, अमृतालीस टांक
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सु-
 थिर मास बीजे हुवै, दिव तीजे मास ॥ कर्मतणै वसि ऊपजे, मा-
 ता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चौथै मासै मातना, प्रणमै सहु अंग
 ॥ द्वाथ्र अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ उ० ॥ पि-
 त्त रुधिर ठठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे-
 सी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि
 ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २६ ॥ उ० ॥ आठमें मा-
 सें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ उंघै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥
 ॥ २७ ॥ उ० ॥ सोणित शुक्र सलेपमा, लघु ने वमनीत ॥
 वात पित्त कफ गरज्जथी, आयै नर नीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ मात-
 तणी सूंटि लगै, बालकनो नाव ॥ रस आहार करे तिहां, आवै ततकाल
 ॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी द्ये आहारते, जाय नामोनाम ॥ रोम इंडी नख
 चख बधै, तिम मीजी ने द्वाथ्र ॥ उ० ॥ ३० ॥ सबद्रू अंगे ऊज

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरजै सुविचार ॥
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किये जीवने, थाये ज्ञान विज्रं
 ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥ ३० ॥ ३२ ॥
 कटक करे वैक्रियपणें, जूझी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी
 करी, मरी सुर पिण थाय ॥ ३० ॥ ३३ ॥ जंघै मुख गोमां
 हिये, सहितो बहु पीर ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी
 जींच ॥ ३० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिकै, ऊपजै आ
 धान ॥ अथवा विहुं नारी मिल्हयां, कह्यो गरजविधान ॥ ३० ॥
 ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी डुखावास ॥ पुन्य करी तिम
 नीकलूं, नाउं गरजावास ॥ ३० ॥ ३६ ॥ ऊंठ कोमि चांपे सुई, कोइ
 समकाल ॥ तिणथी गरजै अठ गुणौ, सहे वेदन बाल ॥ ३० ॥
 ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ ३० ॥ ३८ ॥ गरजथकी डुख लख
 गुणो, जांमैं जिण वार ॥ जन्म थयां डुख बीसरै, धिगुं मोहं वि
 कार ॥ ३० ॥ ३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥
 पिरुं अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ ३० ॥ ४० ॥ तु
 रत रुदन करतो थको, जांमैं जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवै,
 पीयै दूध तिवार ॥ ३० ॥ ४१ ॥ दिन१ दीसे दीपतो, करै रंग अपा
 र ॥ लाम कोरु माता पिता, पूरै सुविचार ॥ ३० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र
 इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण ॥ रात दिवस बहिता रहै, चैतो चतुर
 सुजाण ॥ ४३ ॥ ३० ॥ सात धातु साते त्वचा, ठै सातसे ना
 रि ॥ नवसे नामी पिरुमें, तिम तीनसे हारु ॥ ४४ ॥ ३० ॥ संधि
 एरुसो साठ ठै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसे,
 ठांकी ठै चरम ॥ ३० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेटाव
 सरीष ॥ सेर पांच चरवी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ ३० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै, वीरज वत्तीस ॥ टांक वत्ती
स सखेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणयकी
यदा, उठो अधिको आय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥
॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोरख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान
पान नूषण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै
दसके ज्ञायो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाग्यो
कांम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आनक तूं ऊपनो, तिणमें
मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम ऊपाय ॥ ५१ ॥
उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ वेटा वेटी पोतरा,
परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ ठठे दसके प्राणियो, बले परवस
थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥
उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल ज्ञागो बूढो
अयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो,
खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिर धुलैं, करे फोगट वात ॥
॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ साखै
वचन बहुआंतणो, दिन जुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपञ्चो
खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हुकम हाले नही, बीयो परिजन
देह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुरु मिले, पैमै मुंहमे लाल ॥
वेटा वेटी ने बहू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा
ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो
जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निर
मल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥
उ० ॥ कोन्नि रतन कवमो सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै
पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया
कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संज्ञार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण ए, वै लोक महंत ॥
 जनम मरण कर फरसियो, ते बार अणंत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप
 सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै,
 सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां
 लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥
 ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो दिवै, लाधो गुरु संयोग ॥
 अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० ॥ श्रीनमि
 रायतणी परै, चेतो चितमांदि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ
 किरारो नांदि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहु, यथा जे
 अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥
 सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति
 वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलवेयाली अठै, एह
 नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनें कह्यो, नही जूव लिगार ॥ ७० ॥
 उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांजलि लिये संजमज्ञार ए,
 परि सिंद केरा सदा पालै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख
 सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनदर्प सुसीत रंगै इम
 कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उत्पति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिंद्या लिख्यतै ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुट्टष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें
 प्रवृत्ति, यह रसगृहीणणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोय घनी
 मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,
 कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने
 हरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुगुरुमें, कज्जी तूं कु
 देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन
 विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदंभमें, कज्जी व

चनदंममें, कज्जी कायदंममें, कज्जी हास्यमें, कज्जी रतिमें, कज्जी
 अरतिमें, कज्जी ज्ञयमें, कज्जी सोकमें, कज्जी डुंगामें, कज्जी
 रुष्णलेस्यामें, कज्जी नीललेस्यामें, कज्जी कापोतलेस्यामें, कज्जी तुं
 रुद्धिगारवमें, कज्जी तुं रसगारवमें, कज्जी तुं सातागारवमें, कज्जी तुं मा
 यासद्वयमें, कज्जी तूं नियाणासद्वयमें, कज्जी तूं मिथ्यादर्शनसद्वयमें,
 कज्जी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कज्जी तेरे बाहिर कर अ
 ठारे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा डुष्टो, महा
 डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुत्रिया, अरे तूं
 हीणदृष्टी, अरे तूं अयोद्धा कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ठ जीव,
 प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानु
 बंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोचनरी चोकमो, विचारा तेरे स्वपी
 नही, गुणठाणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा
 दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव
 जेसा कल्लोल तेरे उठल रहा है, तैं जो धर्मक्रिया करता है सो गून्य
 मनसैं करता है, धीरजगुणसैं करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसैं
 करी जो क्रिया सो राख पर लीपले जेसा है, अरे चेतन ! सोगन
 नही लेवे सो पापी, उर लेकर ज्ञांने सो महापापी, तैं अनंतकाय,
 अन्नक, शीलव्रत, जरदा, ज्ञांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन
 लेकर खेटा किया, तेरा कहां बूटकबारा दोगा, रे चेतन ! तैं पुज्जारे
 वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,
 मेरे नवनिधान, मेरे रसकूपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ
 मृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, वादस्याह दो जानं, राजा दो
 जानं, प्रधान दाकम सेनापती दो जानं, किली तरे धन उपोर्जन
 करूं, ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणठाणेवालेकेही लोचनका
 त्याग नही, तो तेरी गरज तो कैसे सरे, है चेतन ! तूं मनमें विचारता

हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कवत्र मेरा पुत्र
 ल, अरे चेतन ! चौरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,
 संसारमें न किसीका तूं हे, नहि कोई तेरा हे, रे चेतन ! तूं
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणें, केइ वखत पूत्र
 पणें, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसैं ठगकी बेटी
 नैं अपणी मांसे पूवा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण ज्ञो
 गेगा ? मा बोली-बेटी, करेगा सो ज्ञोगेगा, तबतो उसने कहा धिक्
 हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,
 आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका
 धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, नर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसैं क
 नएकूं उमाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसैं तैं चिंतामणि
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि किया आ-
 मंवरि कुगुरुनके उपदेससैं चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म
 आज्ञाप्रमाण जो था सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसैं
 होय, विष्टामें ठमिपणें तैं अनंती वार पेदा ज्ञया, मानरूपी गज
 पर बाहुबल चढ़ा नर संज्वलनमान था, नर बाह्मी सुंदरी बहिना
 जैसी समजाणेवाला श्री जब समजै, नर तेरे सो ऐसा मान, अरे
 चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं नरतमादाराजा जिणोके
 केसीक राजरुद्धि सो केसीक ज्ञावना ज्ञावतां, धिःकार राज्यनैं, धिः
 कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं,
 धन्य श्रीतार्थिकर मादाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य
 जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो दांन देते हे, धन्य जो
 सील पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो ज्ञावना ज्ञाते
 हैं, एसैं ज्ञावना ज्ञावतैं नरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन
 पाया, इस तरें रे जीव तूं उनोही वगवरी मतकर, बढ़तो तेसठ

सदाका पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका जरतकेत्र-
 का कीमा उनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-
 ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों
 करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि
 राया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव जुवनजानु केवलीजी, कमलप्र
 ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योक्तुं मिगाय दिया तो तेरी तो
 विसायतही क्या, आठ करम अछावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता
 जाय, मोहकर्म पीठै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-
 की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आझांमें रह सदागमसुं परि-
 चय रख, संनोपगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीठी मार, जेसेंते तिर
 जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तोने गुप्ते गुप्ता,
 ठकायका पीयर, सात महाजन्यका टालणहार, आठ मदका ज.प-
 क, नवविध ब्रह्मचर्यको वारुका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका
 उजवालक, इग्यारे अंगका जणणेवाला, वारे उपांगका जणणेवाला,
 कुरकीसंवल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि
 प्रभूकी आझा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुजै कब नुँदै आवेगा, रे
 चेतन तेरे उदय कहांसें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसत्र-
 ती पाले जिके प्रभुजीकी आझा पाले, जिके प्रज्ञात उठ सामायक
 करे, पन्निकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रभुजीकी दादसांगी वाणी
 सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दान, तपस्या, सील, पर्वतिथी
 पोसा, संध्याकूं देवसी पन्निकमणा जिनाझा प्रमाणै पमावश्यक कर,
 मुजेन्नी कच्ची उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा
 इवाज होगा, बुरे परणामोंसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-
 मायक मनसुद्धै करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पदण गुलना वां
 चनेकी खप कगे, जेसें जवसायर लीला तुरो, सामायकवन्दके यह

लक्षण है, नर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप है, तुझे पदों गुणनेकी लगन नहीं, तेने तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नहीं किया, जो श्रुतज्ञानकी जक्ति करते है उनोको ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती है, केवलज्ञान नर केवलदर्शन पाता है वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका जर्त्तार होता है. दिवस प्रते वै कोई सुजाण सोना खंरी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन तूं इस नरोसे मत झूल, यह तेरी सामायक वो नहीं, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंडावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो ऐसी है काम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै; आरत रौड्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण ऐसे है अपना पराया सरपा गिणै, कंचन पत्थर समवरु धरै, साचो ओमो आगम जणे, ते सामायक शुद्धे करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपना जला चाहता, वो पराया बुरा या नहीं चाह्या वो तेने अपने आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे गती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा है, तूं अपने आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है, अधाती है, अलेसी है, अविनासी है, तें दिलमें विचारता है यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन नर कोण तेरा दुस्मन है, आठ कर्मरूपिया सत्रु है जिनोको तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल जस्म कर जिस्से तेरो गरज सरे, अहोहो में जव्य हूं अजव्यहूं अथवा दुरजव्यहूं, मेरे मंसार पोते बहोत दिखता है, प्रायेतो में अजव्यही दिखताहूं पीठे तो ज्ञानीबोने जाव देखा सो सही, है रे जाइ तें तो एमी सामायक करता है, खुणे खाज मोमे

करमका, उंघतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सिन-
कारेगा जब लेखे लगेगा, उदा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मु-
नि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥
इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववन्दनभाष्यादिकसं मंदिर
जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहा-
निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकव्यसूत्रमें ऐसा लिखा हे ठती शक्ति साधु जिनमंदि-
रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका मंम उर श्रावककूं बेलैका
मंम ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घन्टी रात रहे पिठली तब ऊठके
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या
मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासैं दिलको
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदेरासरकी पूजा करे,
पीठे यथाशक्ति अञ्जा वस्त्र आभूषण पहरेके घोमा हाथी रथ पाल-
खी सिपाइ नोकर चाकर ज्ञाई बंधु परिवार समेत पूजाके लायक
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर ज्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञावना करता थका जिनमंदिरमें जावे,
जिन मंदिरमें प्रवेश करके डोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार
१० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पदिला त्रिक—३ बेर निस्तही कहणेका, जिसमें १ निस्तही
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर संबंधी कुठजी
कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्तही प्रदक्षणा तीन दियां पीठे
कहे, जिनमंदिरमें फूटा दूटा मरम्मत कराणेकी जो सार शंजाव
रस्कीथी सोजी गोमे २; (इसमें डव्यपूजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्सही कहे पीठे निकेवल ज्ञावपूजाही करे, लेकिन इव्य पूजा नही करे, यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. ?

दूसरा त्रिक—ज्ञान त्रिककी आराधना करणोंको प्रज्ञाके दक्षिणावर्त्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक—मूलनायकजीके बिंबको पंचांग मिलाके तीन बेर नमस्कार करे. ३.

चौथा त्रिक—प्रज्ञाकी अंग १ अग्र २ उर ज्ञाव ३ ऐसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे, अथ निस्सही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसे लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोंकूं वसमे रखे, चलणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुठनी देवकार्यकों ठोरेके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ठोरे, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया जया खोटे कार्य कों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आधिको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले, निस्सही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसने मन वचन कायाके खोटे व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासे किया हे उस जीवके ज्ञावसे निस्सही होय, उर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र इव्यनिस्सही होय उस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आव तहका उज्जल वस्त्रसे मुखकोस बांधे, धूपादिकसे अंग अपना शुद्ध करे, ज्ञावसे उत्तरा निस्सही कहते मूलगुंजारमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे, प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमल अन्ना कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसे
 जगवानका अंग लूदे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसे
 विलेपन करे, शुद्धवर्ण शुद्धगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोष गुला-
 ब चंपा चंपेली केवला जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे,
 अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्ज्वल
 अकृतोत्तम प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लाखे—दर्पण १ ज्ञासण २
 धर्द्धमानसरावतपुट ३ श्रीवत्स ४ मलयुग ५ कलश ६ स्वस्ति
 क ७ नंद्यावर्त ८ ऐसे अष्ट मंगलकी रचना करे. पंचरंगे फूलोंसे
 अष्टमंगलीककूं पूजे, अष्ट केशर चंदनके हवा देवे, उत्तम नैवद्य
 चढावे, अष्ट खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती
 पर्यंत रायपरोषी ज्ञाताधर्मकथा जीवाग्निगमादि सिद्धांतोमें लिखे
 सुजव करे. पीछे अंतरंग ज्ञातिसे प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जैसे
 देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाहराजाकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण
 प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टा-
 पदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया जैसे शंकारदिन
 जव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे
 करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नैवद्यादिक चढावाजावे
 सो अग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक
 करे सो ज्ञावपूजा ३. इव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक—तीन अवस्था विचारणी. पिंस्र १, पद-
 स्त्र २, रूपातीत ३, इसमें पिंस्र अवस्थाके तीन जेद हे. ज-
 न्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवल अवस्था
 को विचारणा सो पदस्त्रावस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था
 सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब उदा त्रिक—तीन दिशा ओम्के प्रभूके मानने नजर रखे.

उर्द्ध १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३४ बांइ पिठानी निजर नही करे. ६.
अब सातमा त्रिक—तीन वेर धरती प्रमार्जके नुस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रखे तो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ७.

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहिजे, इस योगमुद्रासँ शक्रस्तव कहे १, कान्तसंग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसँ हाथ रखणा सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासँ प्रणिधान जयवीरराय कहे. ८.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चे इयाई इह संतो तठसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविताहू ति विहेण तिदंरु विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीररायसे लेके आज्ञवमखंदा तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३. एसँ दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अग्निगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं, सचित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे जोगमें होय नसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट वत्र खरग चमर पाडुका अञ्जितवस्तुनकाजी ठोरणा आचूपण वगेरे पढ़रे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनत्रिवंकूं देखतेही नमोऽनुवणवंशुणो एसँ नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बैठके नगवंतकूं बांदे, स्त्री बांइ तरफ बैठके नगवंतकूं बांदे.

अब चौथा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देववांदशामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन जेद हे. एमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोभूणंसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंरुक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब ठठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोभे. दो हाथ, नर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रज्जुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित १, दध २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाइण ८, सयण ९, विलेवण १०, वंज ११ दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संज्ञावे दिनमें जो चीज अपने अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका वेदन जेदन, तरकारी फल परबल जीमी तोरी केला मतीरा ककनी खरबूजा नींबू आंव नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण, तहां घातु वस्तुकी शली तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें मालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर दोणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे, जेसैं गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कह लाता हे. इस तरे ज्ञात दाल रोटी कढ़ी मांझिया कट्ट तरकारी सब जात पापरु खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकेमेंसं सब द्रव्यमेसं जो चड़िये सो रक्के वाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नाम लेकर रक्के सो एकही द्रव्य कहलावे. जेतेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी जई हे तोजी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोमेंसं आवककूं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मरकण ३ नर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण रक्के. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूनी खमान मोजा अपना इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रक्के. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंत्रोल नियम ॥ पांचवीमा सुपारी लोंग डला यची मोटी नर वसी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारण प्रमाण रक्के. इति तंत्रोल नियम ॥ ५.

अथ ठठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ वूटा वस्त्र ५ तथा ३ मोकला रक्के, पोसाख १ में पवनी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरात्तण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहेजे. ऐसंइ स्विके स्व। मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपमा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र झूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अथ सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवला केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गान्धी वहली इक्का बग्घी कोच पालखी घोडा हाथी ऊंट तामजांम न्याना इत्यादिक सब थलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक घुमदोम लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी ठालका चममेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वाश्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोमे परमलम प्रमुख आंखोंमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाया सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०.

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ मोरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेही मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरव १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४
अधिकूल ५ नैऋतकूल ६ वायव्यकूल ७ ईशानकूल ८ अश्विदि
शि ९ उर्ध्वदिशि १० यह दश दिशिका अपने जाणे आणिका
प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी जेजणा देशांतरकी चिठी
वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम, तहां आज दिनमें स्नान २ बेर
अथवा ४ बेर मोकला लेकिन पाणीका तोल रक्के, घने प्रमुख
का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा
नही गिराऊं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा ज्ञात नियम. दिनमें ज्ञात २ सेर तथा २
बेर जीमूंगा अथवा चार बेर उपरांत डुविहार या चोविहार
धारणा प्रमाणे रक्के. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका
प्रमाण रक्के तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल वारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र
पद्मके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढ़ावे, पीठे अखंड
तंडुल मु ६ ३ थालमें रक्के उस पर नारेल रुपया या मोहर
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पश्चिममें इच्छाका० सम्य
क्त सामाज्यारोहणार्थं चेइयाई वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवं
वण करे. बाये पासे चावलांको साग्रियो करे श्रीफल धरे पीठे
गुरु वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासुदेव
करे, वर्द्धमान स्तुतिसे देववंदन करावे पीठे सतरे शुद्धमें नवकार १
एकेकका कान्तसंग करे पीठे शासनदेवता निमित्त चार लोगस्त
का कान्तसंग करे, पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ नवकार
गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्द्धतु० कहेके वमा स्तवन कहे पीठे जय

धीयराय कहे इति नंदी विधिः । पीठे स्वमासमण देइ श्रुतसा
 मायक सम्यक्तसामायक आराहणार्थ काउसगं करावेह, गुरु कहे
 करावेमो सम्यक्तसामायक आरोग्यनार्थ करेमिसाउसगं. ४ लोग
 स्तका काउसगा करे पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ वेर नव
 कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंमक उच्चैर गुरु पाठ
 बोले उसकी मनने धारणा रके. सूत्रं अहन्नंजते तुह्याणं सम वे
 मिच्छताउ प.मेकमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पन्निइ
 अन्नतिष्ठिवा अन्नतिष्ठिदेवयाणिवा अन्नतीष्ठिपरिगहिय अरिहंत
 चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुर्विअणादित्तएणं आलवित्त
 एवा तेसिअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पानंवा
 तेसिगंधमत्ताइं पेसिउंवा नन्नञ्जरायान्नियोगेणं गणान्नि योगेणं वला
 न्नियोगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविहं तंजहा
 दवउं खित्तउं कालउं जावउं तच्चदवउं दंसण दवाइं अहिगिच्च खित्तउं
 जाव न्नरहमज्झिमखंमे कालउं जावज्जीवाए जावउं जावउलेणं नउ
 विज्जामि जावसन्निवाएणं नज्जविज्जामि जावकेइ, उम्माइवलेणं
 एसो दंसण पावण परिणामो नपरिवरुइ तावमे एसो दंसणान्निग्ग
 हो अन्नञ्जणान्नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति
 यागारेणं वोसिरइ. पाठे नुं ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एते अकर श्रीगुरूके
 पाससें हाथमें लिखाके जिन प्रतिमाकूं वासकूप चढावे, नवकार
 पढतोअको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वांदे, पीठे श्रुतसामायक
 थिरि करणार्थ सत्तावीस उत्तास प्रमाणे एक लोगस्तका काउस
 गं करे पीठे प्रगटलोगस्त कहे पीठे सम्यक्तरूप कट्ठपवृह पायके
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुसा
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १. पाठे गुरु
 घर्मदेशना देवे, मिश्रयात्वरूप सम्यक्तेक पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवन्दन इतनी बेर कलंगा, इतना नवकारं नित्य गुणूंगा, फल
केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चा
रित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वनिश्रिमें पा
लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब कलंगा, दिनकी नवकारसी आ
दिक रात्रिकों डुविहार तिविहार चउ बेहार नर बावीस अन्नक
वत्तोस अनंतकाय विदल वगेरे ठोदूंगा इत्यादिक अपनी धारणा
प्रमाण सब वस्तुका करे नियम, गुरुके सामने वारे व्रतकी टीप
सुणे अतीचार नहि लगे ऐसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंरुक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं स
मीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पिउ निरवराहं पञ्चस्कामि जावज्जीवाए
एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं
नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पक्कमामि निंदामि गरिहामि अ
प्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंरुक तीन बेर उच्चारवे ॥ १ ॥
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहायेयाइहेउअं
कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं थापणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं
पञ्चस्कामि दस्किन्नाए अविसए दधुउं खित्तउं कालउं जावउं सधुउं
मुसावायं खित्तउं इच्छवा अणववा कालउं जावज्जीवाए जाव
उं जावगहेणं नगहेज्जामि जावउलेणं नगलेज्जामि अण्णेणकेणवि
रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ तावअज्जिग्गह डुविहं तिविहेणं
अन्नत्थगाज्जोगेणं सदस्मागारेणं मइत्तगागारेणं वोसिरइ ॥ २ ॥
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं
रायनिग्गहकारयं सच्चित्तचित्त वज्जुविसयं पञ्चस्कामि वधुउं खित्तउं
कालउं जावउं दधुउं अदिन्नादाणं खित्तउं इच्छवा अणववा का
लउं जावज्जीवं जावउं जावगहेणं नगहेज्जामि जावउलेणं नग
लेज्जामि अण्णेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ ताव अ

जिग्गहं डुविहं तिविहेणं अन्नत्थं सहस्सां मद्दत्तं सब्बं वोसि
 रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंजंतुम्हाणं समीवे तुदारिय वेक्खिय ज्ञेयं थूलमेहुणं
 पच्चस्सामि अद्वागहियजंगएणं दिवंतिरिडं माणसियं एगविहं एग
 विहेणं पच्चस्सामि दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं मेहुणं खि
 त्तत्तं इत्थंवा अन्नत्थंवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेणं
 नगहेज्जामि अन्नं सहं मद्दं सब्बं वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
 जंतं तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पमुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चस्सामि
 धणभन्नाइ नवविहवहु विसयं इच्छापरिमाणं उवत्तंपज्जामि अद्वाग
 हियजंगएणं तंजहा दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं नवविह
 परिग्गहं खित्तत्तं इत्थंवा अन्नत्थंवा कालत्तं जावज्जीवं जावत्तं
 जावगहेणं नगहेज्जामि अन्नं सहं मद्दं सब्बं वोसिरइ ॥ ५ ॥
 अहन्नंजंतं तुम्हाणं समीवे दिसिपरिमाणं पच्चस्सामि तंजहा दव्वत्तं
 खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं दिसिपरिमाणं खित्तत्तं धारणाप
 माणं कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव
 त्तं तावअजिग्गहं अन्नं सहं मद्दं वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंजं
 ते तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगयेजोयणत्तं अनंतकायवहुवीया राइ
 जोयणाइं परिहरामि कम्मत्तं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
 इं बहुत्तावज्जाइं खरकम्माइयं रायाज्जियोगंच परिहरामि तंजहा दव्वत्तं
 खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं जोगाव जोगवयं खित्तत्तं इत्थंवा अन्न
 त्थंवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्नं
 सहं मद्दं सब्बं वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंजंतं तुम्हाणं समीवे
 अन्नत्थदं पच्चस्सामि अववज्ज्जाण पापोपदेशं हिंसोपकरणं
 दांणं पमायचरितं चत्तविहं अन्नत्थदं जहासत्तीए परिहरामि तंज
 हा दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं दव्वत्तं अन्नत्थदं खित्तत्तं इत्थं
 वा अन्नत्थंवा कालत्तं जावज्जीवाए जावत्तं जावगहेणं नगहेज्जामि

अन्न० सह० मह० वोतिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे
 सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिअसंविजागवयं जहा स
 तीए पन्निवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुच्चयं सत्तसिरकावयं उवा
 लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह०
 सबस० वोतिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख ठ ठंमी ज्यार आगार संयुक्त
 पालुं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथानकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थानक रे
 गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं
 गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी शुणउ ॥ त्रुटक० ॥ शुणउ
 ज्ञविआं बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी
 स जिननी, पूंमरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण
 स्स, प्रज्ञावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थानकि,
 आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिवर
 पूजा करो, नमो उवझायाणं रे ठठइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंवल
 रं बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ
 पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी जगति
 करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमें ते
 नमो विनयकारीणं विनय वनानो कीजिए, डग्यारमे नमो क्रिया
 कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थानक रे नमो वंज
 धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय
 धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाद्धिग्रणं रे रात्रइ गीत गान
 वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दान ते
 पनरमे, नमो वायगस्स विगयनउ त्याग करो थानक सोलमें ॥
 सतरमे नमो वेवावचकारीणं, उरध गुरुनइ आपिये ॥ अठारमे

नमो नाण धराणं, नवूं ज्ञणवूं आपिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्जतीणं
 रे उगणीसमे ज्ञविआ मुण्ड, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं
 सुणो ॥ वीसमे आनक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघज्जगती रे
 यथासक्ति कीजे सही ॥ त्रू० ॥ सही कीजे वीस नदी एक षठ
 भासि कीजीये, उपवास करिये वे सहस्स गुणिये पन्तिकमणे
 लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये,
 आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु
 साधवी रे आवक आविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेणे नामकर्म
 बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणां रे
 सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ त्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा
 सुपास उदाई नृप बलि, पोष्टिल मुनिवर अने द्दढायुष शंख
 शतक आवक रुली ॥ सुलसा रेवती आविकाये एह आनक
 फरसिआं, सेवकजन कट्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥
 इति वीसआनक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥
 वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कै, जेठे सहु जवि चित्त सुख
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वंश कर लीनो, जिनवर प्रभु
 पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखनिया, मुख सुंदर जास ॥
 मे० ॥ १ ॥ कानें कुंमल दोय ऊलके, शशि सूरज सम जास ॥
 मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिभुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लावचंद
अरज सुनीजें, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ तुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हारे में
खमी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में
पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन
अवगुण क्युं तजो मेरे साहेव, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥
॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं जव जवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसैं आंखमली, मोरी रेन
दिवस नित लग रहीर ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय उन
दोस्ती कीनी, ले पीठें छिटकाय दर्ई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया
करीने, सिवरमणी तें वर लेई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केहू
जविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन जयो मेरे, आनंद चित्त अब
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन नर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभु
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोये
जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घमी तरुको अब रहियो, ऊठ धरममें
लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी नरबीच धार ले, नर जरम
सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए
सृधो शिवभाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ ब्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेढो जव दी फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जव जवके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड़्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ करुखानी देशी ॥ जाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर जरि विमल गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥ पग पग नमंग धर पंथ नित पूठतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यजंमार पोतें जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, रूपजजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥ परमात्म परमेस्वरु, आत्म परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, जांगे सादि अनंत लाल रे ॥ जासक लोकालो कको, हायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंड चंड चक्रा सरु, सुर नर रहे कर जोम लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणदूते एक कोम लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुऊ मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, जवजव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण गो तुमें, दूर दरो जवहुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्प मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि
दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन
चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरे जी, पावम
शाळा आठ जी ॥ आठ जोजन उंचुं देहरूं जी, दुःख दोहग
जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ जरतें जरायां जलां देहरां जी,
सो जोंयरां शूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने
ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली
जागीरय गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे
ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊने पांखमी जी, आवुं केम
हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्थ्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा
राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपना दासा, दीजें कवुक दिवासा
राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चामी चटकी जवमांहि जटकी, नाच्यो में
विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी,
लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत
संजाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हयाली
वाजे ताली, वात अचंजा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परजपगारी
पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी
मन शुद्ध धारी, श्रीधमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, मदिमा त्रिजग तुमारो ॥
सांजलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक
अरज करे वे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ २ ॥ आंकशी ॥ सहु

कोना मनवाँत पूरो, चिंता सहनी चूरो ॥ एह बिरुद ठे राज तु
 मारुं, किम राखो ठो दूरो ॥ सेवक० ॥ १ ॥ सेवकने बलबलतो देखी,
 मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार
 न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही ठे, परतक
 दरिसण दीजें ॥ धूंवासे धीजुं नहीं साहिब, पेट पछ्या पतीजें ॥
 ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंरुण साहिब, वीनतमी अवधारो ॥
 कहे जिनहर्ष मया करी मुऊने, जवसायरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयाश जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥
 जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मऊ ॥
 ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आम्हो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु
 मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लामला, कागल थुं किण
 हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें
 दश दश वार ॥ जि० ॥ केशक दिन लग जीहो एकठा, मिलता
 घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो
 अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण कण कण
 जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥
 मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रखी, फलशे ते दिन आश ॥
 ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, बसजो प्रभु सुखवास ॥
 ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ जिनराज, वधाई वाजे ठे ॥
 नगर अयोध्यामांहे, मेघ घर आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ॥
 मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जइ
 सहु देशमें रे, प्रगट जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इंद्रादिक सह

सुर मढ्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मऊन पूजन बहुविधै रे,
धिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे,
घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख
कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोदध रंग रलो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत
त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥
सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥
आवत सिद्धार्थजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥
आ० ॥ २ ॥ इंझणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी
री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, वेना वीन मोचंग वली री ॥
आ० ॥ ३ ॥ इंदु कुम कर धरणीं पठावो, सब वसुधा धन,
धान्य जरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विलेरत
गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार ज्यो जिनशासना
व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद्र जनम्यो प्रभु मेरो,
मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुन, वचनातिशय जुन ॥ सो परमैसर
देख जवि, सिंहासन संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासन बेठा जग
जाण, देखी जविजन गुणमणि स्वाण ॥ जे दीठे तुज निम्मल
जाण, लहिथे परम महोदय ठाण ॥ २ ॥ कुसुमांजलि मेलो आ
दिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोजागी चो
वीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ ३ ॥
(इतना कह कुसुमांजलि चढाईने चरणोके टीकी दाजे) ॥ गाथा ॥
जोनिअगुण० ऊरम्यो, तसुअनुजवएगत्त ॥ सुदपुगलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु-
 ग्गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो
 न्नव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह
 गोमे टीकी दीजे) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु-
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, ज्ञविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर-
 मानंदतणी नीसाणी, तसु ज्ञयते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कु-
 सुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे)
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन
 ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह
 त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा-
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा
 तोरा च० ॥ (एसा कह खांद्योके टीकी दीजे) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म-
 दिद्धिदेसजय, साहूसानुणीसार ॥ आचारजन्वझायमण, जोनिम्मल
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघै जे मन धारयो, मोक्षतणो
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण-
 मंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह
 मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पोठे स्नात्रिया चमर ले के प्रजुजीकूं
 हुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर २ नमिय मनरंग, कट्ठाणक वि-
 हि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर,
 इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥
 जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज-
 गीस ॥ ढाल ॥ ज्ञव तीजे समकित गुण रम्या, जिनज्जत्ती प्रमुख
 गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय मुख आसंसना, कर आनक वीसनी
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रज्ञावता, मन जावना एहवी

ज्ञावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, ऐसी ज्ञावदया मन उल्ल
 सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम
 लूं ॥ आनुबंध विचे इक जव करी, श्रद्धा संवेग ते धिर धरी ॥ ३ ॥
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवर्तेज सार ॥ म
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥
 ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेषे ॥ गजवर
 उज्जल सुंदर, निरमल वृषज मनोहर ॥ निरजय केसरितिह, लख
 मी अतिह अवीह ॥ अनुपम फूलनी माला, निरमल शशि सुकमा
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश
 पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण
 सायर ॥ वारमें जुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥
 इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य
 उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तव रयणी समे, देख सुपन
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले
 सो ज्ञागी ॥ त्रिजुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंद्र
 दिक जसु पाय नही, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥
 चंडाउलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ-
 णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, जवजल तारण
 प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविय पारग सत्रवाड, केवलना
 णाड्य गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल-
 ट्यो आसाह मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, बलयादिकमां
 निज तनु न माय ॥ सिंहासनथी ऊठ्यो मुनिंद, प्रणमंतो जिन
 आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुद्रा आवि नत्र, कर अंजलि

प्रणमिय मढ सत्य ॥ मुख ज्ञावे ए कण आज सार, तिय लोय
 पहु दीवो नुदर ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल
 तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या
 विष चूरण गरुडवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समढ, प्रगट्यो
 तसु प्रणमी हुन सनत्य ॥ इम जंपी सकठव करेवि, तब देव
 देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तवरंजा गीत गांन, सुरलोक हुन मंग
 लनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस गांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥
 ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उठव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥
 सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥
 गुन वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंझादिक हर्ष साथ ॥ सुख
 पांम्या त्रिजुवन सर्व जीव, वधाइ अई अतीव ॥ ९ ॥ (एसा पढ
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साधिया करणा पीठे कलस पंचामृत
 का लेकर खप्ता रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख
 कार, नरखित मंरुण उह विहंरुण नविक मन आधार ॥ तिहां
 राव राणा हरख उठव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि वि
 शेष जांणी लहो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु
 मरी गावती गुण वंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आ
 एंद ॥ हे माय ते जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म
 निम्मल करण कारण करिस सूर्यकम्म ॥ २ ॥ तिहां नूमिसोधन
 दीप दर्पण वाय वींऊणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज
 ननि मज्जणकार ॥ वर राखली जिन पांण बांधी दिये इम आसी
 स, जुग कोमिकोमी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उला
 लानो ॥ जिन रयणीजी दस दिसि उज्जलता घरे, मुन लगनेजी
 ज्योतिसचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे,
 तिण अवसरजी इंझासण पिण घरहरे ॥ नूटक ॥ घरहरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उद्यवकाल जांणी अतदि
 आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण जगते ऊ
 मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥
 ॥ ढाल ॥ तब सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह
 दिराव ए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुत्त अठे, तसु जगतेजी सुरप
 ति मंदिरगिर गठे ॥ तूट० ॥ गठे मंदिर शिखर ऊपर जुवन जीवन
 जिनतणो, जिन जन्मउद्यव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥
 तुम शुद्ध समकित आस्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पा
 तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज
 लजी सुरवर कोमि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांझमी
 चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी
 स्वामि वधाविया ॥ तू० ॥ वधाविया जिनवर दर्प बहुले धन्य हूं क
 तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीगो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे
 जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उद्यंग तुमचे वलिय
 थापिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज
 करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक
 विधिजी तब वस्तीस आगलि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ
 महे ॥ तूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा
 वती, अठपरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो
 २ तूं जिनराज जगगुरु एम ये आसीस ए, अम त्रांण सरण आ
 धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां
 रुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥
 तिहां आणीजी शोके निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति
 आवी रह्या ॥ तूट० ॥ आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणि व
 णाव ए, सिद्धार्थ पमुदा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अचु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर
 ल्यावो सबे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव
 कोमी हसी, उद्धसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पञ्चमदह आदि
 दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति
 अरु कलश कर सहस्र अठोत्तरा, उत्त चामर सिंहासण सुन्नतरा ॥
 उपगरण पुष्प चंगेरी पमुहा सबै, आगमे जासिया तेम आणी ठवे
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता
 धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम
 सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म
 आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे
 सर्व आख्या वही, शक्र उठंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥
 हंद्देदेवा अणाइकालो अदिठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥
 मिच्छत्तमोहविद्वंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिठ्वो २ हि
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पन्नणंति वण जवण जोईसरा, देव
 वेमाणिया जत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमिन्ताणुगा, केवि
 वररमणो वयणोण अइउठगा ॥ १ ॥ वस्त ॥ तत्थअच्चुयइ इइ आ
 देस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदन्नुत
 रूप सरूप जुय कवण एह पुठंति सामिय, इइ कहे जगतारणो पा
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अज्जिपेस ॥
 ॥ २ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे
 न्हाभे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वयते सुन्न परिणामे ॥ अ
 च्युत्तादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंझणी
 पमुहा, इम अज्जिपेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाथा ॥ तवईसा
 णसुरिंदो, सक्कंपज्जणेइकरिसुपसान ॥ तुम्हअंकेमहतान, खिणमि
 त्तअम्हअप्पेइ ॥ १ ॥ तासकिंदोपज्जणइ, साहमीयवज्जलम्भिवहुला

हो ॥ आणाएवंगेणं गिएहह दोउकयत्प्राप्नो ॥ १ ॥ (कलस ढाले)
 सोहन सुरपति वृषज रूप करि, न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय वि
 लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आनरण अन्नंग ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु जय
 रव कर, नञ्चे धरि आणंद ॥ मोक्षमार्ग सारथपति पांभ्यो, ज्ञांज
 सु हिव जवफंद ॥ २ ॥ कोम बत्तीस सोवन उवारी, वाजंते वर
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥
 आणी थापे एम पयंपे, अह्य निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्यारो
 धणी अह्यारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख
 ज्यो एहने, तुम सुत अह्य आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीस
 र, करे जिन जक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर,
 कहता प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळ्याणक, इच्छा चित्त
 मऊार ॥ ६ ॥ खरतर गच्छ जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुप्रसाय ॥ ७ ॥ देवचंद
 जिन जगते गायो, जनम महोच्चव वंद ॥ बोधवोज अंकूरो जल
 स्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो,
 आतम हित काज ॥ तजिय विज्ञाव निज ज्ञावमा, रमता सिव
 राज ॥ ६० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, दोस्ये जेह जिणंद ॥
 संपइ सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ ६० ॥ २ ॥ जन्ममहोच्चव
 इण परे, आवक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन
 खंत ॥ ६० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन
 प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मऊार ॥ ६० ॥ ४ ॥ इतिस्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महो
 दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनाः स्तपयामि वि
 सुद्धये ॥ नै ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमङ्गिनेन्द्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चं-
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव युतं
 जिनै ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्त्व विकास कृतेर्च्चयेः ॥
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं० केसरचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विक-
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विंशद चेतन ज्ञाव समुन्नवेः ॥ सुप. रणा
 म प्रसून घनैर्नवैः, परम तरव मयं हिय जाम्बुदं ॥ ॐ ह्रीं
 प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म
 मर्हधन दाहनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुभ पु-
 ञ्जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुदर्पतः ॥ ४ ॥
 ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ जविक नि-
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि-
 शुद्ध समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प०
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ षष्ठी अकृत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि-
 केतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ श्रयति नव्यजना इति दर्श-
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अकृतं
 यजामहे ॥ सातमी नैवद्य पूजा ॥ सकल पुञ्जल संग विवर्जनं, स-
 हज चेतन ज्ञाव विलासकं ॥ सरस जोजन नव्य निवेदनात्, पर-
 म निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफल व्रज ढोकनं ॥
 विहत्त मोक्ष फलस्य प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥
 ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं नक्तिः पूजयं-
 ति, सकल गुणनिवानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व
 मुद्रावयंति, परम सहज रूपं मोक्षं सौक्ष्मं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं ॐ
 प० अर्थं यजामहे ॥ (वस्त्र) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यकृते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वार्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५० वस्त्रं
यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सत्तरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रक्केवीमें कुंकुम तथा
केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें
ढालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन बेर नमस्कार कर हाथ
के धूप देकर रक्केवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खड़ा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ ज्ञाव ज्ञलै जगवंतनी, पूजा सत्तर प्रकार ॥ पर
सिद्ध कीधी डोपदी, अंग ठहै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदी ॥ ज्योति
सकल जग जागती, हारे अइयो जा० सरसति समरि सुज्जिंद ॥ सत्तर
सुविध पूजातणी, पञ्चगणिसु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विलेवण
२ वत्थयुगं ३, गंधारुहणंच ४ पुष्परोहणयं ५ ॥ मालारोहण ६ व
न्नयं ७ चुन्न ८, पद्मागय ९ आञ्जरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय
वंसुधरं ११, पुष्पं पगरंच १२ अठमंगलयं १३ ॥ धूव उखेवो १४
गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तहा ज्ञलियं ॥ ३ ॥ सत्तर सुविध
पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मज्जार ॥ डुपदसुता डोपदि परै, करियै विधि
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि इसन पावनं, अइत धोती धरी उच्चि
त मानी रे, अइयोउ० ॥ विइत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुज्जित
मणिकलस कर विविध बांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं,
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ ज्ञणिय कुस
मांजली, कलस विधि मन रखी, नवति जिन इंड जिम तिम अ
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ डुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण सुगति
सोपान ॥ धरमरूप तरु सींचया, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

लौ पूजा सांचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु
 तणै, करइ सुकृत हितकांस ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र
 कारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण उढ्योरी सुधारस, तप-
 त बुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रभूकुं विलोक नमि जतन
 प्रभारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-
 म निज वृजन पुलावत, पंककु वरष जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि
 तरणि जवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥
 शिवपुर पंथ दिखावन दोषी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥
 ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिढ्योरी सुमति संग, जागी सुदिता शुभ
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सारंगजरकरतां, आस फली
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पद पंचामृतसुं न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुठै जलधार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणैसँ अंग जिताविंका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)

रामनिरोमै राग ॥ गात्र लूहै जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससुं हारै देवा वा०, गंध कसायसुं मेलियै
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारै देवा नं० ॥ मांहे मृग-
 मद कुंकम जेलियै, कर लीयै हारै दे० क०, रयण पिंग्गणि कचो-
 लियै ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंघै सिरै रे देवा, जाल कंठ उर
 उदरंत रै ॥ डाल हारै हारै देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजोयै ॥
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम
 सुरगिरै, तिम करै हारै देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन,
 श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे जवोदधि तीर
 ॥ १ ॥ भिटे ताप तसु देहको, परम शशिरता संग ॥ चित्त खेद सम
 उपसमै, सुखमै समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउट ॥ विलेपन कीजै

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमंद
 यक्ष कर्दम, अंगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर
 खंधै सिर जाल कंठ, उर उदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर
 त विलेपन, तपति वुजित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव
 १ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि
 करो सुललित पूजा, जैसै गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय
 विलेपन पूजा ॥ २ ॥ ऐसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्ज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥
 लाज ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गौरी ॥
 कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हारै
 अश्यो० ॥ कनक मंमति हय लाल पद्मव शुचि, वसन युग कंति
 अधिवासिया ए ॥ हारै अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो
 यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो दे-
 वनें, वस्त्रयुग पूज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरामी ॥
 देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥
 तूही हे सबहि दितु तूही है मुगति दाता, तिण नमि१ प्रभुजी कै
 चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण,
 देवदुष्य मिस देहु उत्तम वागूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत
 पीतां, सब राम दुख संसय घुरम जांगूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृति-
 य वस्त्रयुगल पूजा ॥ (ऐसा कह प्रभुजाकिं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासनापूजा ॥

॥ गोरी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण
 वास ॥ कुमति कुगति दूरै हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग
 सारंग ॥ हां हो रे देवा वावनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो
 अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजै जिन अंग
 उवगू ए ॥ हा० लाठि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अर्ज
 गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौमी ॥ भैरै प्रभुजीको पूजा आ-
 नंदमेळै, पू० ॥ वासजवन मोह्यो सबलो ए, संपदा जेळै ॥ पू० ॥
 ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण
 तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन
 राजें तत्ताथेइ, चतुर गति डुरक गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥
 इति चतुर्थी वासकेप पूजा ॥ (एसा कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगै पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुढप अनेक प्रकार ॥
 प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥
 चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई
 जूहिका, वज्रलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण नवरि धरै ए,
 अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन
 पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानमो ॥ सोहे री माई व
 रणें, मन मोहे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसम जिनच
 रणें ॥ सो० ॥ विकसी इसीय जंपै साहिवकुं, राख प्रभु हम सर
 णै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी, कु० ॥ पंच
 विपै हां० पं० डुख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग
 वंतकी, जविक नरां हारे ज० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ठाी पूजाए ठती, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण
 गुंथी थापे गळै, जेम टळै डुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज
 री ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोम पारिध कली

ए ॥ जला पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल
 गुलाब पामल जिली ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-
 गरा वेजला मालती, पंचवरणै गुंथी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ दे
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालनी ए ॥
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसानरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक
 एधतिनंदै, चकोरकुं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदै ॥ दे० ॥
 ॥ २ ॥ ठढी रे तोरुपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरियण हारे स०
 होइ तिम ठंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधूकीरत सकल आस्था सुख,
 जविक जगत हारे ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठढी
 तोरु पूजा ॥ ६ ॥ (एसा कह फूलमाला प्रभुकुं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसैं अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवमा, सोजै तेम सुगात ॥ चाटो
 जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौमी ॥
 कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारे अ० ॥ कुंद
 गुलाबसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी
 अलंकीयै, अंग आलंक मिस माननी सुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥
 कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पामल अरविंदो, अंस जुई वेजलवाती ॥
 पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी ज्ञांती ॥ पं० ॥
 ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, जैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेव्हारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु जावसैं ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥
 कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥
 सुरजि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुभ करम चूरीजै जी ॥
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तब
 सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र
 तीर्थकर बांधइ ॥ जलाश गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-
 ष्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर जाव घन वरषत, सामेरी
 मति जागै ॥ जला सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूहव गीत समूल ॥ दीजै
 तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौरी ॥ वस्तु ॥
 सहस्रजोयण, हेममय दंरु ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत
 घुग्घरीय बाजै ॥ मृड समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद
 ल सयल जाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥
 आपै दांन अजंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नटनारायण ॥ जिनराज
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सवद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधवधू
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ जांति वसन पंचवरण वन्यो री,
 विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू जणत नवमी पूजा नव, पाप
 नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कटी ध्वजा चढ़ाईजै ॥ पहली बाजित बाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें
 धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुहली कर धजा पर गुरु
 पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारै ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खड़ा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारमे ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथाश्र-
नेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे
जिनवरतणै, रयण मुगट ऊलकंत ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण
कुंरुल अति जंति ॥ २ ॥ राग अथजास गुंममळहार ॥ आसावरी ॥
पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणिक लाल रसणिबा, हीरा
सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अं-
जना, मनमोहे रे ॥ ३ ॥ मौलि मुगट रयणै जड्यो, काने कुंरुल
हारै अति जुगतै जुड्यो नर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक
वादे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, दुखहारू
रे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ प्रजु सिर सोहै मुगट मणि रयण जड्यो,
रय० ॥ अंगद बाहु तिलक जालस्थल, यहुनीको कवण घड्यो ॥
॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंरुल शशि तरुण मंरुल जीपे, सुरतरुसै
अलंकरयो ॥ दुखकेदार चमर सिंहासन, उत्र सिर नवरि धरयो,
अलंकृत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक इयाभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोजतो, फूंदै लहकै फूल ॥ मढके
परिमल फल मढा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥
कोज अंकोल राय बेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू
ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध
पारुलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुचै, कुश
मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हारै अ० ॥ गुन्न चंडोदयं ऊंवकानन्नयं,
जालिका गोख चित्तचोरणूं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो
मन मोह्यो माईरी फूलघर आलंद जिलै, फू० ॥ असत नसत दांम
वधरी मनोहर, देखत तवही सब उरित खिलै ॥ फू० ॥ ३ ॥

कुसुम मंरुप अंन गुष्ठ चंदोदय, कोरणी चारु विनाण सजै ॥ इग्या
रमी पूजा वली हे रामगिरी, विबुध विमान जैसें तिपुरि जजै ॥
॥ १ ॥ फू० मे० ॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरसै बारमी पूजमें, कुसुम वादलिया फूत्र ॥ हर
ण ताप डुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग ज़ीम
मढहार करुखेकी जाति ॥ मेघ वरसै ज़री पुष्प वादल करी, जानु
परिमाण कर कुसुम पगरं ॥ पंचवरणें वणयो विकच अनुक्रम चिणयो,
अधोवृंत नही पीर पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास मढ़के मिलै ज़मर
ज़मरी ज़िलै, सरस रसरंग तिण डुख निवारी ॥ ज़िणप आगै करै
सुरप ज़िम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥
राग ज़ीममढहार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-
जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥
गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह ज़िनको अतिसय सुगुणें ॥
गुंजतर मधुकर इम पज़लै, गुं० ॥ मधुर वचन ज़िनगुण गुणइ ॥ पु०
॥ २ ॥ कुसुमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणें, पु० ॥
समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥
॥ ३ ॥ बारमी पूज ज़विक तिम करै, कुसुम विकस हस उचरै ॥
तसु ज़ीमबंधन अधरा हुवै, जे कराहिजे ज़िन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥
इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै
सुमति सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल
मिढया, अखंर गुणै ज़िढया, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लयण
समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ज़जला ए ॥ १ ॥
अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, ज़िनप आगै सुआनक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टमिद
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वणी ते रसमें,
रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण जडासन नंदावर्त पुर्णकुंज, मञ्जुग
श्रीवत्त तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सैद्धारस घनसार ॥ कर
प्रज्ञ आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलाउल ॥
कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सैद्धारस सार, गंध
वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस जैलियै,
श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरजि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंरु
कनक मंमि धूपधाणो कर धैरै, जववृत्ति धूप करंति जोग रोग
साग अशुज हरे ॥ २ ॥ राग मालवी गोम ॥ सब अरति मयन
मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर,
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म
धूमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे ॥
आरती मंगल माल रे, मालवीगोमी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति
चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढेके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥
जावो अथकी जावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें
आर्या ॥ यद्दन्त केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण
वर्ण तान वायै, मात्रा जापालैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः,
स्थानैर्जयतांदि ताल करणैश्च, चंचुर चारोचारी गीतं गानं सुधीयुषं
॥ २ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंडादि अ
नादत तानं, केवल जिव तिस फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमार कुमरी आलापै, मुरज उंपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र
धंध धूयो प्रतिमानं, आयति वंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ १ ॥ सबद
समान रूयो त्रिजुवनकुं. सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर
मौन शिव श्रीगीतं, पनरमो पूज हरै डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करै ॥)

॥ दूहा ॥ करजोमी नाटिक करै, सऊ सुंदर सिणगार ॥
जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट
काव्यं ॥ ज्ञावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानता, सपिम्मा
रम रूव वेत वयसो मत्तेन कुंजत्थणा ॥ लावणा सगुणा पिकस्त
रवई रागाईआ लावणा, कुम्मारी कुंमरावी जैन पुरज नच्चंति सिं
गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अहसयं कुमारिकुमरीन सूरियाजे
एंदेचेणं संदिछा रंगनंवेपविछा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति
॥ २ ॥ राग नट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, डागरुदि तत्ताथेइ
॥ अ० ॥ डागरुदिश्क थौंगिश्न, मुखेतत्ताथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे
ण वीणा मुरज बाजै, सोलही सिणगार साजै ॥ तनन्नन्नेईय ॥
अईयो० ॥ घणण घणण घणणण घुग्यरु धमके, रणससससेईय ॥
॥ अईयो० ॥ १ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेकार क
रणी ॥ सोजंती कुमरीय ॥ अईयो० हस्तकं हावादिजावै, ददन्ता
जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमो नाटिकतणी, सूरियाजे
रावन्न कीनी ॥ सुगंय तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगत्ते जविक
लाणा, आणंद तत्तेथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ मतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततवन सुखिरै आनधै, वाजित्र चौविव वाय ॥
जगत जली जगवंतनी, सतरमियै सुखदाय ॥ १ ॥ गाढा ॥ सुर
मदल कंतालो, महुवर मदल सुवज्जाण पणवो ॥ सुरनारि नंद तुरो,
पक्षणइ तूं नंद जिणनाद ॥ १ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ

नंद बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्मल
 ल वावन मुखवेदी, तिवल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥
 जेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन
 शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ परपरिघ वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥
 सेव जविक मधुमाधव फेरी, जवनी फेरी नप्पजणंती ॥ कहे
 साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥
 तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग घन्यासिरी ॥

॥ जवि तूं जण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै
 ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ धुणत शक्रस्तव, धुय रंगे हम ठाजै
 ॥ जवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि मि
 छ आवाजै ॥ सतर सुपूज सुविध आवककी, जणी में जगति हि
 त काजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम
 वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अठार आवण धुर, पंचमि दिवस
 समाजै ॥ ज० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिव्यवर, तासु
 पसायै सुविध हुय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब
 लीला सुख साजै ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरेकर उत्तरासण करकै तिलक करके रक्तेधीमें
 स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति जांत तुमारी, तोरा
 चरणकमलकी में जानं वलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी
 केनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष
 सोवनमें काया, मृग लंठन प्रभु चरण मुदाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ च
 क्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सह मोहे ॥ जै०
 ॥ ४ ॥ मंगल आरती जोरहिं कीजै, जन्म को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ वरजोम्नी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिथ्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रवा धूप चावल गहुं चणोकीदाल मूंग उडद
नव प्रकारका नैवद्य नवतरका फल नव प्रकारकी पक्वान्न खजली मिथ्री पतासा
ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते रवेतवज्र वासक्षेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे
नवनालीकेकलस ॥ १ ॥ रकेड़ी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप
नामैं रोकनाणा रु?) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसैं जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम संत्र प्रणमी करो, तास धरी नर ध्यान ॥
अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ काव्य ॥ ७ ॥ पन्न
सन्नाण महोमयाणं, सप्पामि हेरा सणसंठियाणं ॥ सहेसणाणं
दिय सज्जाणाणं, नमोश् होन सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत
प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ अथा जेइना
ध्यानथी सौख्यज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपातराजा ॥ २ ॥ क
र्या कर्म दुममर्म चरुचूर जेणें, जला ज्ञव्य नवपद ध्यानेन तेणें
॥ करी पूजना ज्ञव्य ज्ञावे त्रिकाले, सदा वासियो आत्मा तेण
कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म नदधे करीनै, दिधे देसना ज्ञव्य
ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाणिहारे समेता, सुरेसैं नरेसैं स्त
व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म ज्यारे अलग्गा, ज्ञवोप
अही ज्यार ठे जे विलगगा ॥ जगत्पंचकल्याणके सुख पांमै, नमो
तेइ तीर्थकरा मोहकामै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं,
धरम धुरधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वर
वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लाखो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व
ज्ञाव प्रकासता, निज शुद्ध अक्ष आत्म ज्ञावे चरण थिरता वास

ता ॥ जिन नांमकर्म प्रज्ञाव अतिसंय प्रातिहारज सोज्जता, जगजंतु
करुणावंत जगवंत जविकजनने शोज्जता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी
मंधर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर आनक तप कर, जि
न बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंदै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र
णाम रे जविका सिद्धक पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै नं
दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीनो वंदो रे
॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे
हने होय कळयाणक दिवसे, नरके पिण उजवाळूं ॥ सकल अधि
क गुण अतिशयधारी, तेजिन नमि अष टाळूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग उपना, जोग करम खिण जांणी ॥ लेइ
दीक्षा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्यवाह ॥ उप
मा एहवी जेहने गजै, ते जिन नमिये उवाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥
१० ॥ आठ प्रातीहारज जसु गजै, पेंत्रीस गुणयुत बांणी ॥ जे प्रतिबो
ध करे जगजनने, ते जिन नमिये उवाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥
॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दबद गुण पर्यायै रे ॥ जेद छेद
करी आत्मा, अरिहंतरूपी थायै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सां
जलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आत्मा, रुद्धि मिले सब
आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान
शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धक्राय अष्टाव्यं
यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीमिदपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अ
शुज्ज करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण
माणंद रमालयाणं, नमोऽंशंत चउकयाणं ॥ सम्मग कम्मस्सकका

रगाणं, जन्मजरा दुःख निवारणां ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय
 पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि ज्ञय जेण वाम्या ॥ निरावरण
 जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रि
 ज्ञागोनेदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत
 सारैव्याश्रिताज्योतिरूपा, अनावाधअपुनर्नवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥
 ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल हय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ
 व्यावाध प्रज्जुतामई, आतम संपत ज्ञूपो जी ॥ उद्धालो ॥ जे ज्ञूप
 आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्व्यक्षेत्र स्वका
 लज्ञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वज्ञाव गुणपर्याय परणति, सि
 द्दसाधन परज्जणी, मुनिराज मानसरहंस समवरु, नमो सिद्ध महा
 गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिज्ञाग
 विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुढता, सिद्ध नमो ते असेस रे
 ॥ १८ ॥ ज० ॥ पूरव प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग
 ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ज० ॥
 ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लो
 कंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥
 ॥ २० ॥ ज० ॥ जाणै पण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम
 गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवमांदे, ते सिद्ध दिउ उद्धास
 रे ॥ ज० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम,
 विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स
 हज समाधि रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वज्ञाव
 जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु
 ण खाणो रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ ॐ ॥ ह्रीं ॥ इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ वृत्तिय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दिव आचारज पदनगी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै दूरै, सूरै जाव असेप ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरिणदूरीकय
 कुग्गहाणं, नमोरसरिस्समप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अ
 स्कंमवत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंज्ञा
 में प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ पट्त्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारनें पा
 लवे सावधाना ॥ २ ॥ ज्ञविप्राणिनें देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो
 शुब्जल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवत्तीति
 धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परजावे निक्कामो जी उल्लाखो
 ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर
 ज्ञान दरसन चरण बारज, साधना व्यापारथी ॥ ज्ञविजीवबोधक
 तत्त्वसोधक, सयलगुण संपतिवरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, उ
 विवत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै,
 मारग जाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या
 चो रे ॥ ज्ञ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वत्तीसगुणैकरि सोजै, युगप्रधान
 जगबोद्धै ॥ जगमोद्धे न रहे खिण कोद्धे, सूरि नमूं ते जोद्धे रे ॥
 ज्ञ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे
 ज्ञ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पन्निचो
 यण वलि जनने ॥ पटधारी गच्छुंज आचारज, ते मान्या मुनिम
 नने रे ॥ ज्ञ० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्यमिये जिन सूरज केवल, वंदी
 जे जगदीवो ॥ ज्ञुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो
 रे ॥ ज्ञ० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज जला, मद्दामं
 त्र गुप्त ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ जे ह्रीं आचार्यपदे अष्ट ङ्गं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चौथी पाठरूपद पूजा ॥

॥ दूदा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

उवझायापद अरचियै, अनुत्तवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतत्प
 वित्थारणतप्पराणं, नमो२वाचगकुंजराणं ॥ गणस्सतंधारणत्ताचरा
 णं, सवप्पणावज्झियमञ्जरणं ॥ १ ॥ नदी सूरि पिण सूरिगुणे सु
 दाया, नमूं वाचकात्यक्त मदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादिसूत्रार्थदा
 ने, जिके सावधाने निरुद्धाज्जिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्गवर्गितगु
 णौघा, प्रवादिद्विपोष्ठेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंजपूता,
 उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रज्ञूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ सुत्तीजुआ;
 अज्जव मदवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥
 उल्लावो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुमता शुभधरा ॥ स्या
 द्वादवादं तत्त्वसाधक, आत्मपरविजंजनकरा ॥ जवज्जीरुसाधनधी
 रसासन, बहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धंतवायनदांसमरथ, नमोपाठ
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिद्धाय करे जे, पारगधारण
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रतिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥
 ज० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांसविज्ञाणे, आचारज उवझाय ॥
 जवत्रिएइ जे लहे शिवरूपद, नमियै ते सुपसाय रे ॥ ज० ॥ ३५ ॥ सि०
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रभु, पादरणे पल्लवआणे ॥ ते उवझाय स
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजाणे रे ॥ ज० ॥ ३६ ॥ सि० ॥ रा
 जकुमार सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, ते उवझाय सदा ते
 नमतां, नावे जवज्जय सोग रे ॥ ज० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ वावनाचंद
 नरस सनवयणै, अद्वितताप सवि टाले ॥ ते उवझाय नमिजे जे
 वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ ज० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥
 तपसिद्धायै रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते
 आतमा जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ नै ह्रीं श्रीपा
 ठकपदे अष्ट इव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचवी माधुषट पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमार्ग साधनज्ञानी, साधनं अया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदतां, निरमल आये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण स
 साह्यसंजमाणं, नमोऽशुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं,
 मुणीणमाणंदपयडिआणं ॥ केरसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवणीन
 तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुसैनहाकाम
 जोगेपुलिता ॥ ४१ ॥ बलीबाह्यअज्यंतैरैग्रंअटाली, हईमुक्तिनेयो
 गचारित्रपाली शुज्जष्टांगयोगैरमैवित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा
 प टाली ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निका
 मी निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी
 जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,
 काउसग्गमुझ धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै
 कर्म जीपै नैव ठीपै परज्जणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र
 णमो हितज्जणी ॥ ४३ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूजै जमरो वेसे, पीना
 तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोपे, तिम मुनि गोचरी जाय
 रे ॥ ज० ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचंडीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, बंदू दीनदयाल रे ॥ ज० ॥
 ४५ ॥ सि० ॥ अठारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च
 रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज०
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुत्त जे पाले, वारे विध तपसूरा ॥ ए
 हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ ज० ॥ ४७ ॥
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढ़तै वानै ॥ संजम
 खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुयातै रे ॥ ज० ॥ ४८ ॥ नि०
 ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हग्नै नवि सोचै रे ॥ साधु सु
 धा ते आतमा, स्युं मुंनै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ छै ॥
 साधुपंद अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छद्दी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर ज्ञापित शुद्ध नर, तत्त्वदृशी परतीत ॥

सै सम्यग्दर्शन सदा, आदरिषै शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु
 चतत्तेरुखरकणस्त, नमोऽ निम्मलदंशणस्त ॥ मिहत्तनासाइसमु
 पगमस्त, मूलस्तसथम्ममहाडुमस्त ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिच्छा,
 टलेजेअनादीअठैजेकुपण्या ॥ जिनोकैहुइंसहजथीशुद्धध्यानं, कहि
 बैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानंमज्ञानरूपं, चरित्रंवि
 चित्रंजवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमेकयतेहहोवे, तिहांआपरूपैस
 दाआपजोबै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दर्सण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू
 पी जी॥जसु निरधार स्वप्नाव ठै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥
 जे अनूप अद्वा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टले, निज शुद्ध सत्ता ज्ञाव प्रग
 टै अनुजब करुणा उठलै॥अहु मांन परणित वस्तु तत्वे अहव सुखकारण
 पणै, निज साध्य दृष्टै सरत्र करणी तत्त्वता संपति गिलै॥५२॥ढाल॥शुद्ध
 देव गुरु धर्म परीक्षा, सदहणा परिणाम॥जेह पांमीजे तेह नमीजै,
 सम्यग्दर्शन नाम रे॥ ज० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम कय न
 पशम जेहथी, जे होइ त्रिविअ अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश
 म लहीजै, कयउपसमीव असंख ॥ एक वार कायक ते सम्यक्,
 दर्शन नमीइ असंख रे ॥ ज० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र
 माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे
 विण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ ज० ॥ ५६ ॥ सि० ॥
 समसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श
 न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज० ॥ ५७ ॥ सि० ॥
 ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते
 हिज आत्मा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ठै ह्री
 प० दर्शनपवे अष्ट द्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धक तपमाद ॥ अ

राधीजै गुन मनै, दिन २ अधिक उछाह ॥ १ ॥ काव्य ॥ अज्ञान
 सम्मोहतमोहरस्त, नमो २ नाण दिवाचरस्त ॥ पंचपयारस्सुवगा
 रगस्त, सत्ताणसवत्थपयासगस्त ॥ होइजेहथीज्ञानगुणप्रबोधै, यथा
 वर्णनासैविचित्राविवोधै ॥ तिणैजाणीयेवस्तुपट्ठव्यज्जावा, नहोवै
 विकञ्चानिजेञ्चास्वज्जावा ॥ ५९ ॥ होइपंचमत्यादिसुग्यानजेवै, गुरु
 पासथीयोग्यतातेहवेदइ ॥ वलीकियहेयाउपादेयरूपै, लहैचिचमांजे
 मध्यानेप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ जठर नखो गुण ज्ञानने, स्वपरप्र
 काशक जावै जी ॥ परयाक धरञ्ज अनंतता, जेदाजेव स्वजावै धी
 ॥ चाल ॥ जे मोह परणति सकल ज्ञायक कोधवास विलासता,
 मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंठना ॥ स्यादावसं
 गी तत्त्वरंगी प्रथम जेद अजेदता, सवि कल्प ने अशिकल्प वस्तु
 सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जह अजह न जे विण ल
 हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान
 ते सकल आधार रे ॥ ज० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान ने पीठे अहिंसा,
 श्रीसिद्धातै ज्ञाख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान न निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चा
 ख्युं रे ॥ ज० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते अध्या, तेहनुं मूल
 जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित ७ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये
 रे ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाश
 क तेह ॥ दीपकपर त्रिजुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह
 रे ॥ ज० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरय अथ तिर्यग्ज्योतिष, वैमानि
 क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुऊ गुठी
 रे ॥ ज० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानाचरणी जे कर्म ठै, कय
 उपशम तसु आवे रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अवोधता
 जायै रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ नै ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट इव्यं यजा
 महे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊमेद ॥ पूजत
अनुन्नवरस मिले, पातक होय उछेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराधिया
खंनिअसक्खियस्स, नमोऽसंजमवीरिअस्स ॥ सप्पावणासंगविवट्ठिअ
स्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ बलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरा
संसताघाररोधेप्रसंगै ॥ नवांनोभिसंतारणेयानतुल्यं, धस्तेइचारित्र
अप्राप्तमल्यं ॥ ६८ ॥ होइजासमहिमाथकीरंकराजा, बलिछादशां
गीज्जणीहोइताजा ॥ बलिपापरूपोपिनिप्पापथायै, अईसिठतेकर्मने
पारजायै ॥ ६९ ॥ बाल ॥ चारित्रगुण बलिइ नमो, तत्त्वरमण
जसु मूलोजी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकलसिद्धिअनुकूलो जी ॥
उल्लाखो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व धिरता दममयी, शुचि
परम खंति मुनीद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक जे
द धरमै यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल काम
कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ विसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही
यतिने अजिरांम ॥ ते चारित्र जगत अयवंतो, कीजे तास प्रणाम
रे ॥ ज० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे पट्खंन सुख ठंणी, चक्र
वर्त पिण वरिन्, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरि
न्त रे ॥ ज० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद
नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिन् ज्ञान आनंद रे ॥
ज० ॥ ७३ ॥ सि० ॥ वारमास पर्यायै तेइने, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥
शुक्ल अजिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ ज० ॥ ७४
॥ सि० ॥ चय ते आव करमनो संचय, रिक्त करे जे तेइ ॥ चारित्र
नांम निरुक्ते जाख्युं, ते वंदू गुणगेइ रे ॥ ज० ॥ ७५ ॥ सि० ॥
॥ ढाल ॥ जांशि चारित्र ते आनमा, निजस्वप्नावगांहि रमतो रे
॥ लेत्या शुद्ध अलंकस्यो, मोदवने नवि जमतो रे ॥ वी० ॥ ७६
॥ उँ ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट इव्यं प्रजामदे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ट प्रति जालवा, परतिख अगनि समां
॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्
हुमोन्मूलनकुंजरस्त, नमोऽतिव्रतवोवरस्त ॥ अणोगलक्ष्मीनिबंध
स्त, दुसङ्गात्थाणयसादणस्त ॥ ७७ ॥ इयनवपयसिद्धिद्वि, विज्ञा
मिदं, पयमियसरवगंहीतिरेहसंमगं ॥ दिसिवइसुरसारंखोणिपीढाव
यारं, तिजयविजयचक्रं सिद्धचक्रंनमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म
कषाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप
वाह्य अन्त्यंतर दु जेदे, कमायुक्ति निर्हेत दुर्घ्यान ठेद ॥ ७९ ॥ हो
जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांठकपणे कर्म आवरण शुद्धि
॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतै, होइ सिद्ध सीमंतनी ज़िम संवे
ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवजन्म सिव
जावै देव नर जवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रज्ञा
वै, सवि डुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इच्छा
रोधन तप नमो, वाह्य अन्त्यंतर जेदै जी ॥ आत्म सत्ता एकत्व
ना, पर परणति उछेदे जी ॥ १ ॥ उल्लाखो ॥ उछेद कर्म अनादि
संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टालो ज्ञाव अ
क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करी, निज आ
त्मसत्ता प्रगट जावै करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न
वपद गुणमंमलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स
श्वगुज्ञान जाणै जी ॥ उल्लाखो ॥ निरधारसेती गुणे गुणनो वरइजे
बहुमान ए, जसु करण ईहा तत्त्वरमणें थायै निरमल ध्यान ॥ ८३ ॥
इम शुद्धसत्ता जलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अक्षय अनंत म
हंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ८४ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख
कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लब्धिविज्ञा सिद्धि मंदिर न
विक पूजो मत रखी ॥ उवज्ञाय वर श्रीरजसाग्नद ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र मुशोजता ॥८४॥ ढाल ॥
जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म
खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि
काचित पिण कय जायै, कमासहित जे करतां, ते तप नमियै ते
ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही
पमुहा बहु लद्धि, होवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र
गटै, नमियै ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव
सुख मोहुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो
बंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां
हि पहलो मंगल, वर्णवियो जे अंग्रै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न
मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद
श्रुणतो तिहालीनो, हुजं तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोप्र
खंमै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ
छारोधन संवरी, परणित समता योगै रे ॥ तप ते एहिज आतमा,
वरते निजगुण जोगे रे ॥ बी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,
जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै थिर हूज, परजावै मत
राचो रे ॥ बी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांदे रुद्धि दा
खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणज्यो, आतमराम वै साखी रे ॥
बी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य वै जिन कह्या, नवपद मुख्यते जाणो रे
॥ ए इतणो अविलंबने, आतमध्वानं प्रमाणो रे ॥ बी० ९४ ॥ ढाल
वारमी एहवी, चोथै खंमै पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोश्य
न रही अधूरी रे ॥ बी० ॥ ९५ ॥ जै हौ प० तपपदे अष्ट उच्यं
यजामदे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव स्तात्रिया केसरसैं निचक करे, हाथकं कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साधिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढ़ावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढ़ावें ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढ़ावे, आचार्यपदमें चिणोकी ढाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, वाकी च्यारपदमें चावल चंदनलेपित गोटा चढ़ावे, श्वेतयजा चैत्रीपूनाम आसोजीपूनाम वगेरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदों के न्यासेर कह के चढ़ावे, गटे मुजब पटे पर नव साधिया कर बीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजब यथाक्रम चढ़ावै ॥

॥ ओली करणवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उल्लाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदों की चाल ओर उल्लाला पद वासक्षेप चढ़वाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल डुङ्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्रवणां वजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि वुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसरवारिण, निखल जाज्यरुजातं पहारिणा ॥ सकल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु ० ॥ २ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत् पद्मद वृंदकै ॥ सकल मं ० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलै, प्रवर मौक्तिक पूंज वडुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं प ० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहुविधैश्चरुर्जिर्वटकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखर्जकै ॥ सकल मं ० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचनज्ञाजन संस्थितै ॥ सकल मं ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि ० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिक्षुसुधूम्रकः ॥ सकल मं ० ॥ ॐ ह्रीं श्री ० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटे, सुमुखदैः

किल श्रीफल चिर्जटै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री० फलं यजामहे
स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्रुप्रदीप
क धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि० अर्घ यजा
महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरी
जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब
दूर दरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमंती धारा, जयवारण तूही सुख
कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर दरीं सब दुर्म
ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चौथी सुगलपूत जियदायक, सुरवर दुक
म धरै जुं पायका॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिए तारी, संव स
कलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ ठी घांजोवज विदारी, विद्या
पोथी परगठकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साथी,
सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती
कीजै, मनवंगित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलान्न खर
तर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥
इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० दस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो
नेसे दिन १२ बार सूतक ॥ घर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके
एक मासको सूतक ॥ पुत्र होके मरण पामे, तो दिन १ एक सूतक ॥
पग्देंगे मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैय, घोमी,
सांड, घरमांहे बियावे. तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कले
वर घर बाहिर लड़ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी
नेष्टाये रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ उर जितना महिनाको गर्ज गिरे, तितने दिन सूतक ॥
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १९ बार
 दिन देवपूजा न करे. उर मृतकके सूतक में घरका जो
 मूल कांधिया होवे सो १० वस दिन देवपूजा न करे ॥
 उर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. उर जो मृत
 कको ठूवा होवे, सो १४ चौबीस प्रहर पक्कमण न करे ॥ जो
 सदाका अखंड नियम होवे, तो समताजाव रख के संवरपणामें
 रहे. परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापना
 जीके हाथ लगावे नहिं. उर जो मृतकको ठुवा न हो तौ मात्र
 आठ प्रहर पक्कमण न करे ॥

जैसेके जब वच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीठें दूध पीणो
 कढ्ये. गायके वच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीठें दूध पीणो कढ्ये.
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणो कढ्ये ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन ज्ञानादिकको न ठुवे. ९चार दिन
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक का
 रणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीको रक्त चलता दीसे, जिसका
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें
 स्थापना पुस्तक ठुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा
 न करे, साधुको पस्त्रिजाते. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल
 होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमण. दिक क्रिया सफल न
 होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सू
 तक होवे, उहां १९ बार दिन तक साधु आहार पाणी न बढ़ारे.
 सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ घारा दिन तक देव
 पूजा न करे. निशीथमूत्रके जोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत
 कवालेका घर उर्गुनिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीठें, जैपके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीठें, गाम्बर, गधेना, घोमीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीठें, नर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीठें, संमूर्ध्नि न जीव न पजे. इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा हे विशेष विचार शास्त्रातरसें जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अथ असञ्चायकी विगत कहते हे ॥

१ धूंआरी पमे, तासोम असञ्चाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती ठाया तथा अरण्य संवंधी रज उमे, निरंतर पमे तो दिन ३ तीन उपरांत असञ्चाय.

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असञ्चाय.

४ नाना गंडा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे, अने न रहे तो असञ्चाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जांलगें होय, तां सीम असञ्चाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असञ्चाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असञ्चाय होय.

७ चैत्र शुद्धि पांचमहंती पक्षिवा लगें असञ्चाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजज्जावणठं काउस्त ग करुं ? इठं. अचित्त रज्जु ज्जावणठं करेमि काउस्तगं. पवी लोगस्त उद्योयगेरेना चार काउस्तग करवा.

८ आशोशुद्धि पांचमने दिने छिप्रहरत्री आरंजीने पक्षिवा लगें असञ्चाय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असञ्चाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे सीम असञ्चाय.

११ अकालें बीज उलकापात होय तो प्रहर १ असञ्चाय.

१२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पन्वो, बीज, त्रीज, इयारी असञ्चाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असञ्चाय.

१४ जूमिकंपें प्रहर ८ आठ असञ्चाय,

१५ चंड्यदणें प्रहर १२ वार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असञ्चाय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ वार असञ्चाय.

१७ आसाढ चउमासा पक्कनण वायाहूँती प्रहर १२ वार असञ्जाय.

१८ कार्तिक चउमासे पण प्रतिक्रम्या पीठें पक्किवा लगे प्रहर वार असञ्जाय.

१९ मांढोमांढे मद्धादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असञ्जाय.

२० कलह युद्ध जां लगे हुवे, तां लगे असञ्जाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत असञ्जाय.

२२ फागण चउमासे रजपर्वी ज्यां लगे रज उमे, अने उपशमे नहिं, तां लगे असञ्जाय.

२३ दंरुको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असञ्जाय.

२४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगे उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांढे प्रधान पुरुष विदमे, तो अहोरात्र असञ्जाय.

२६ उपाश्रयथी सात घरमांढे जो कोइ पुरुष विदमे, तो अहोरात्र असञ्जाय.

२३ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणजळरे एटले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असञ्चाय.

२८ तिर्यचना रुधिर पम्वाथी हाथ १०० सो माहे अहो-
रात्र असञ्चाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पम्वाथी हाथ १०० सो माहे अहो-
रात्र असञ्चाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पमे हाथ १०० सो माहे
सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे अके दिन ३ त्रण असञ्जाय.

३२ आर्जा नक्षत्र आव्या पीवें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,
बीजे, मेह वरसे, तो असञ्जाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असञ्चाय. अने दीकरीने प्रस
वे दिन ८ आठ असञ्जाय.

३४ कालग्रहण विणकी त्रणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ वार
असञ्जाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्तिकवदि १, मागशि
खदि १. ए चार दिवसें सदेव असञ्जाय अने सूत्रनी असञ्जाव
तो प्रहर १२ वार सूधी जाणवी.

॥ अथ माधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राव प्रहर १२, घीत प्रहर २०, गार्गी
प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवमां प्रहर २४,
घोमवमां प्रहर ४, तड्यां वमा प्रहर ४, पूनी प्रहर ८, रोटी प्रहर
४, तथा ६. बाजरा ऊष्ण प्रहर १२, जवार ऊष्ण प्रहर १२, बा
जरीकी खीचमां प्रहर ८, जवारकी ग्वीचमां प्रहर ८, चावलकी

स्वीचमी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी ज्ञीजोइ प्रहर ८, पाणीकीउसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४. वमी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन ओर पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली उर कांकणमोरा मंत्राय के बांधै ॥ (ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावै. पीठै एक थालीमें १०, एक थालीमें ए, फेर एक थालीमे फेर ए, ऐसें १८ नागरखेलका पान रखै, जिसपर पुष्प अक्षत नैवेद्य फल रोकड्य यथाशक्ति धरै उरज्जी पंचामृत फूल पुष्पमाला अक्षत नैवेद्य तरेर के गीले उर सूकेफल अतर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखै. फेर स्नात्रपूजा की आपना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीठै दसदिग्पाल के पठे ऊपर जलका गीटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढाके फल नैवेद्यादि समेत नागरखेलका पान चढावै ॥

॥ अथ दत्त दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ नैऋत्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इदमस्मिन्जं
 वृद्धीपे दक्षिणज्जरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो
 छवे आगच्छ १ वलिगृहाण २ नदयमन्युदयं कुरु २ स्वाहाः नैऋत्याय न
 मः इति ईश्वरपूजा ॥ (पूर्वदिशि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य च
 दावै) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायुधाय सवा
 हनाय सपरिकराय अस्मिन्जं वृद्धीपे दक्षिणज्जरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे
 अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो छवे आगच्छ २ वलिगृहाण २ नदयमन्यु
 दयं कुरु २ स्वाहाः नैऋत्याय नमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ नैऋ
 त्याय सायु० सवा० सपरिच्छदा अस्मिन्जं वृ० दक्षिण० अमुकन०
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजा० आग० वलिगृ० नदयम० स्वाहा नैऋ
 त्याय नमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋत दिग्पाल पूजा ॥ नैऋताय
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहो छवै
 आग० वलि० नदय० स्वाहा नैऋताय नमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि
 ग्पाल पूजा ॥ नैऋताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू०
 आ० वलि० नदय० स्वाहा नैऋताय नमः ॥ पश्चिम० ॥ ५ ॥ अथ वा
 यव दिग्पाल पूजा ॥ नैऋताय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द०
 अमुकचैत्ये० अमुकपूजामहो छवे० आ० वलि० नदयम० स्वाहा
 नैऋताय नमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ नैऋतेरा
 य सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमु
 कपूजामहो छवे आ० वलिगृ० नदय० स्वाहा नैऋतेराय नमः उत्तर
 दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु०
 सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० वलि० नद० स्वाहा
 नैऋत्याय नमः ॥ ईशानकूल ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥
 नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्ये

अमुक पू० आ० वलि० उदय० स्वाहा नैवह्यणेनमः ॥ उर्ध्वदिशि०
॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ नैनागाय सायु० सवा० सप०
अस्मिन् दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्यै अमुकपू० आ० वलि०
उदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ १० ॥ अधोदिशि अष्टङ्ग्य चढावै ॥
ऊपर कमूल वस्त्र बांधै मौलीसे, पीठै ॥ नैदशदिग्पालायनमः
॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकमङ्ग्य समेत नागरवेलका पांन आदि
सर्व ङ्ग्य चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक
दीपक आगै धरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ नैनमोआदित्याय सायुधाय सवाहना
य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणजरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक
चैत्यै अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ वलिपूजांगृहाण२ उदयमन्युदयं
कुरु२ अत्रपीठेतिष्ठ२ स्वाहा नैसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि
अष्टङ्ग्यचढावै) ॥ १ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ नैचंदाय सायु० सवा० स
प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० प०
उदय० अष्टपाठेति० स्वाहा नैचंदायनमः ॥ २ ॥ अथ मंगल पूजा ॥

नैनमोजोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु०
अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे उदय० स्वाहाः नैजोमायनमः ॥ ३ ॥
अथ बुधपूजा ॥ नैनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ
मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० वलि० उदयम० अत्रपी०
स्वाहा नैबुधायनमः ॥ ४ ॥ अथ वृहस्पति पूजा ॥ नैनमोवृहस्पतये
सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक
पूजाम० आ० वलि० अत्रपी० उदय० स्वाहाः नैवृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥
अथ शुक पूजा ॥ नैनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं०
द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्र

पीठे उदयम० उँशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनिं पूजः ॥
 उँनमोशनिश्रयाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन०
 अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ१ उदयम०
 स्वाहा उँशनैश्वरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ उँन
 मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै
 त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० उँराहवेनमः॥८॥
 अथ केतू पूजा ॥ उँनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि
 न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे
 तिष्ठ२ उदय० स्वाहा ए उँकेतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपर लाल
 चस्त्र मोलीसे बांधे पीठे नागरवेलके पान आदि अष्टद्वय रोकन द्वय
 समेत सांमने जेट धरे फेर एसा कहे ॥ उँनवग्रहायनमः ॥ च्यारों तरफ
 नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह आपन पूजनविधिः
 ॥ बाये तरफ मंरुलके नवग्रहकी आपना करे दहिणे बाजू दस्तदिग्पाल
 की आपना करे ॥ जिस महीनवमें इनोकी पूजा करानी उस मही
 नवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसे सीखणी ॥ शुद्ध जल
 से पवित्रपणे बणायाजया सधवस्त्रीके या पुरपके हाथसे पांचरंग
 के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा
 मालपूवा पांचरंगके लहसु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें
 सब द्रव्य एकठो करै उँर घृत खांस अत्तर गुलाबजल पंचरंगे फूल
 चदनी बाकलोंमें मिलावे पीठे गुरु ३ तीन बार मंत्रके तीन बेर
 बाकुओ पर वासक्रेष माले.) अथ वासक्रेष मंत्र ॥ उँहांहीतवोप
 द्रंविंवरुयरक्षस्वाहा उँणमोअरिहंताणं उँणमोनिदाणं उँणमोआ
 चरियाणं उँणमोउवझायाणं उँणमोलोएमवसादूणं उँणमोआगात्त
 गामीणं उँणमोचारणलदीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड
 गंधर्व जम्बू रक्षस पिशाच भूय माइणप्पन्नइत्त जिणयग्निवामि

णा सन्निधियाय तेसवेविलेवण धूवपुष्पफलवश्वसणार्हिं वलिपद्मि
 छंता तुष्किराज्जवंतु पुष्किरा संतिकराज्जवंतु सबंजणंकुर्वंतु सबजि
 णाणं संहणप्पजावन्तु पसन्नजावतणे सबत्थरक्कंतुकुर्वंतु सबडुरियाणी
 नासंतु सबाशिवमुवसमंतु सैतितुष्पिपुठिसिवसत्थयणकारिणोज्जवंतु
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासुदेवकूं मंत्रके बलवाकुलमें
 मालके सुद्धकरे ॥ पीछे आधा बलवाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखठोमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर
 इग्यारे स्त्रात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खो-
 लकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खना रहे, २ दूसरा केसरकी
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा अ्रेता, ५ पांचमा धूप
 धाणा, ६ ठंठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा
 जलका कलश, १० दसमा बलवाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग
 लवाजित्र. इस तरे सब स्त्रात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खना रहै.
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल चंदन फूल वा
 कुलादिक चढ़ावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ
 बलवाकुल चढ़ावै) (अग्निकूणके सामने) ॥ सदावह्निदिशो
 नेता पावकोमेपवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥
 (एसा कह वाकुलादिद्रव्य चढ़ावै) (दक्षिणदिशकी तरफ) ॥
 दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥
 (बलवाकुल चढ़ावै वाजित्र बजावै) (नैऋतकूणकी तरफ) ॥
 यमापरांतरालोको नैऋतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥
 (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयाहनयस्य
 वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि)
 ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥
 (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य०
 वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म
 चाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ (अथ उर्ध्वदिसि) ब्रह्मलोकवि
 ज्ञोयस्तु राजदंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ ओर बलवाकूलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ नैनमोईंझाव पूर्वदिग्अधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र
 नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्धे अमु रुन
 गरे अमुकचैत्ये अमु रुमहोत्रवे सर्वोपद्रवाद्वलिरक्ष१ गच्छ१ स्वाहा ॥
 पूर्वदिशाकी तरफ नैऋत्यायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ नैनमोअ
 ग्निमूर्त्तये शक्तिदस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०
 सर्वोपद्रवाद्वलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) नैन
 मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण
 मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्वलिरक्ष१ गच्छ१ स्वा
 हा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेरुतकूणे) ॥ नैनमोनेरुताय खरुगदस्ताय
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्वलिरक्ष२ गच्छ२ स्वा
 हा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ नैनमोवरुणाय पश्चिम
 दिग्धिष्ठायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०
 सर्वोपद्रवाद्वलिरक्ष१ गच्छ१ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायव्यकूणे) ॥
 नैनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजदस्ताय हरिणवाहनाय सायु०
 सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाज्जि० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ नैऋतमौधनदाय उत्तरदिग्धिष्ठायकाय नरवाहनाय
 गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्दलि० गच्छ१ स्वा
 हा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूणे) नैऋतमौःशानाय त्रिसूलहस्ताय
 ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्द
 लि० गच्छ१ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (उर्ध्वलोके) नैऋतमोत्रह्मणे रा
 जहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०
 अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके)
 नैऋतमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०
 अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि१ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इस
 तरे पढे बाद सर्व देवतोके विसर्जनका श्लोक पढे ॥ यथा ॥ शक्राद्या
 लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसङ्गर्मशक्ताः, आयातास्त्रात्रकाले क
 लुपहृतिरुते तीर्थनाथस्यजक्त्या; न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसु
 खाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्त्रात्रेपूजामवाप्यस्वमतिरुतमुदोयांतुकळ्याण
 ज्ञाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वकम
 तंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि
 पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठे यथाश
 क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश
 दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्त्रात्रिया मंत्रितजलसे स्नान
 करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृतेश्वराय नमः अमृतवर्षणी अमृतंश्राव
 य१ स्वाहा (इस मंत्रसे जलमंत्रे, पीठे) ॐ ह्रीं अमलेविमले वि
 मलोन्नवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाग्रशुचिशुचिज्जवामिस्वाहा (इस
 मंत्रको सातवेर पढता हुवा स्नान करे, पीठे ॥ ॐ ह्रीं आँ काँः॥ (सा
 त वेर इस मंत्रसे वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीठे ॥ ॐ आँ ह्रीं काँ अर्द्धते

नमः) इस मंत्रसे सात बेर गुरु पाससे केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीठै) ऊँ ह्रीं अवतर २ सोमे २ कुरु २ वटगु २ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे उँकवलीकः कः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसे मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै उर जब मंमलजीके च्पारुं तरफ मोलीमेंढल बांधे सोज्जी इसी मंत्रसे मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोम्के बैठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससे तीन बेर पढ़के गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन बेर नवकारमंत्रसे मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूँक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंमलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहिये. पीठै मंदिर्जीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टङ्ग्य चढ़ावै. पीठै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढ़ावै, अतर चढ़ावे, फूल धूप नेवद्य फल जल रोकङ्ग्य इत्यादि सर्वङ्ग्य (उँक्षेत्रपालाय नमः) ऐसा बोलता हुवा चढ़ावै. पीठै मंमलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी प्रापना करे. अफेक दिग्पालकी पूजा पढ़के जल चंदनादि सर्व ङ्ग्य चढ़ावै. नागरबेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढ़के ऊपर लालवस्त्र मोलीसे बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढ़ाके दीपक करै. पीठै बायें तरफ नवग्रहके पट्टेकी प्रापना कर पूर्वोक्त काव्य पढ़के इसी मुजब पूजा करै.) पीठै सर्व स्नात्रिया कुं १७ स्तुतीसे देववंदावै.

अद्वारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पम्किमें च्पार नवकार का कात्तसग्न कर लगेस्त कहे. नीचे बैठके दहिणागोमा वरतीपर रख के नावागोमा नर्मीजूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोऽनु० कहके अरिहंतचेऽयाणं० वंदणवत्ति० अन्ननु० १
 एक नवकारका काजसग्ग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंहीन
 मनादेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्ननु० एक
 नवकारका काजसग्ग इस शुईकी दूसरी गाथा कहे. पुक्क
 रवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काजसग्ग० शुईकी तीसरी
 गाथा कहे. सिद्धाणं बुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका
 काजसग्ग शुईकी ४थी गाथा कहे. पीठै वेठके नमोऽनु० कहके स्वप्ना
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाजसग्गं वंदण
 व० अन्ननु० १ नवकारका काजसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिजिदोपै रं
 जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ (ततः
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तं करेमिकाजसग्गं० १ नवकारका काजसग्ग)
 ॥ श्रीशांतिजिनज्जाय ज्ञव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति
 मपनीयते ६ (ततः श्रीशुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालनीदेयात्
 द्वादशांगीजिनोप्पवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥ (ततः श्री
 ज्ञवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णावकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासां क्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ए ॥
 (ततः श्रीअंभिकादेवतानिमित्तं०) अंभानिहितमिंवामे सिद्धबुद्धसम
 न्विता सितोसिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्री
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुड्जे
 पद्मवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदे
 वतानि०) चंचक्यराचारु प्रवालदलसन्निप्ता चिरंचक्रेश्वरीदेवी
 नंदतानिवज्जाञ्चमां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअनुतादेवतानि०) स्वर्गवे
 टककोदंरु वाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगगमनाच्छ्रुता कट्याणानिकरो
 तुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुवेरदेवतानि०) मथुरापुरीमुपार्थ्य श्री
 पार्थ्वस्तूपरदृक्का श्रीकुवेरानगरारुढा सुतांकावतुवोजयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया
द्वीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥

(ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-
दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्रा

दिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः
देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धाधि

का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको कान्ठस्सग्गकर स्तुति
कहे) श्रीमद्विमानमारुढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धाधिकापातु

चक्रेचापेपुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके वेठे चैत्यवं० नमोत्तु०
जयवीरराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी वत्ती जगाके घृतका दी
पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै (पीठे) सो
ने चांदी वगेरे के कलसमें अबोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें
कलस लेके सात नवकार गुणै ॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु
स्वाहा ॥ इस मंत्रसे सात बेर जलको मंत्रके मंजुलजीके चारों तर
फ धारा देवे, ऊपर जरा ठींटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीठे)
नवतारी मौलीसूत्रका साढ़ातीन आंटा मंजुलजीके बाहर करदेवे,
पूर्वोक्त मंत्रसे मंत्रके मौली तथा मंडल मरोमाफली चारों तरफ
वांघे (पीठे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ ॐ आं ह्रीं श्री अर्हते नमः ॥
इस मंत्रसे मंत्रके मंजुलके ऊपर केसरका ठींटा देवे (ऊपर) चा
वलोकों साग्रियो करै, टीकीदेवे, मंजुलके अगामी साग्रिया चाव
लोक वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर जेट धरै, (पीठे)
केशरचंदन लेकर मंजुलजीके चारों तरफ तीन गेया आलेखन क
रै ॥ (पीठे) वासकैप पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ॥

धारै नमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंरुलजूमे तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरुवासकेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्द्ध त्पीठाय नमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंरुलपीठकी पूजा करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन बेर मंरुल कों वधावे. नीचे चावलोंका साधिया करके रुपिया नाखेर थापना कों धरे (पीठै) स्नात्रिया मंदरके भीतरसे प्रतिमाजी लायके त्रि गमेके सिंहासन पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ नमो अर्द्धपरमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय चतुषष्टिसुरासुरेण्डसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति श्रुत्वा स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंरुलप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सुरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्कतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अकृत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान् आविर्ज्जुनोद्धतसद्बोधा नाव्रतः स्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषैष धूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजै समस्ता तिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानां बुज कर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्द्ध त्रयो नमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्द्धत्पदकी पूजा करै. अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीठै रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लाल वस्त्र, ८ मांणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्य पुर्वदले सिद्धान्तसम्यक्तादिगुणात्नकान् निःश्रेयसंपदं प्राप्ता न निदधे न क्तिनिर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेऽतितः प्रणष्टः दुष्टाष्टकर्मामधिगम्य शुद्धिं प्राप्तान्नरान्तिस्त्रिंशत्तन्त्राणां सिद्धान्तयजेशां तिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री सिद्धे त्रयो नमः स्वाहा (पूर्व दितकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै, सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रक्तेषीमें पीला गोटा,
 पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि
 सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण
 स्मिन्इलेमले चरतःपंचधाध्वारान् पटत्रिंस्त्युणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू-
 रीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैकानवा-
 रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीज्योनमःस्वा-
 हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीठै)
 हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालहु, ४ इंद्रनील, १५ मरकतप-
 न्ना, सर्व द्रव्य लेके खरुा रहे. उपाध्याय पद पूजा पढे (यथा)
 द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्
 पवित्रेष्वभिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशान्त्यै पठंतियेन्या-
 न्यपिपाठयंति श्रध्यापकस्तांनपराण्जपत्रै स्त्रितान्पवित्रान्परिपूज-
 यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्योनमः स्वाहा (पश्चिमदि-
 शाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीठै)
 स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्वामधजा, उमदकालहु, ५ राजपट्ट, २७
 अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढे (यथा)
 व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुज्जध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान्
 साधुवासीसमुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा-
 दशधाशरीरे येषामुदञ्चवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प-
 रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुज्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥
 (उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥
 पीठै) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व डव्य
 दाग्रमे ले के खरुा रहे काव्य पढे (यथा) जिनेदोक्तमनश्चक्षा, ल-
 क्णेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसहजे ॥ ११ ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं सम्पद्दर्शनायनमः स्वाहाः (ईशानकूपमें दर्शनपदकी

थापनापूजा करै इति ॥ पीठै) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,
 श्वेतवस्त्र, चावलोकालक्षु, आदि सर्व द्रव्य ले खमा रहै ॥ काव्य
 पढ़ै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाप्तेयप
 चस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १९ ॥ नै ॥ श्री सम्यग्ज्ञानायनमः
 स्वाहा ॥ ३ ॥ (अमिकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै ॥
 इति ॥) फेर) रकेवीमें ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे
 तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खमा रहे. काव्य पढ़ै (यथा) सामायि
 कादिजिज्ञैदै, आरित्रंचारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैर्दुनैरु
 तेक्रमात् ॥ १३ ॥ नै ॥ श्री सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा (नैरु
 तकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥)
 पीठै) रकेवीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व
 द्रव्य लेके काव्य पढ़ै (यथा) द्विधाद्वादशधाजिज्ञं, पूतेपत्रतपस्व
 यं ॥ निधाययामिज्जत्तयात्र, वायव्यांदिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ नै ॥ श्री
 श्री सम्यग्तपसेनमः स्वाहाः (वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी था
 पनापूजा करै इति ॥ अथअर्थ) निःस्वेदत्वादिविद्यातिशयम
 यतनन्श्रीजिनेद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टगुणजृदाचार
 साराध्वसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञं,
 स्तत्सिद्धयेपाठकानांयतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्यं
 अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्ददादिजिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त
 ये ॥ १६ ॥ नै ॥ श्री अर्ह असिआजसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चा
 रित्र तपसेज्यो ॥ श्री अर्ह परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव
 परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुच्यंनमः (इति मूलामंत्र)
 इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पदिले वलयमें एक तो बीचमें चार दिशिमें चार विदि

सोमे ऐसे अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंजलके मध्य जाग
 में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै (पीठे) दूसरे बलयमें
 चूनीके आकार १६ कोठा होय (जिसमें) एकेक कोठाके अनं
 तर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे (ओर) एकेक
 कोठा बीचमें खाली रद्दा दे उसमें अनाहतपद नै हौं एमो अरि
 हंताणं) ऐसा पद स्थापन करै (पीठे) एक रकेवीमें मिश्री ल-
 वंग (तथा) एक रकेवीमें मोटी दाखां ले के खसा रहे. अनादन
 पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै (यथा)
 (नै हौं एमो अरिहंताणं) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई
 उ ऊ रु ऋ नृ ए ऐ न औ अं अः (नै हौं स्वर वर्गायनमः)
 (इहां) १६ दाख चढावै २ (नै हौं एमोअरिहंताणं) मिश्री
 लोंग ३ क ख ग घ ङ (नै हौं व्यंजनकवर्गायनमः) १६ दाख
 चढावै ४ (नै हौं एमोअरिहंताणं) ५ च ठ ज ञ त्र (नै हौं
 चवर्गायनमः ॥ ६ (नै हौं एमोअरिहंताणं) ७ ट ठ न द ण
 (नै हौं टवर्गायनमः) ८ (नै हौं एमोअरिहंताणं) ९ त थ द
 ध न (नै हौं तवर्गायनमः) १० (नै हौं एमोअरिहंताणं) ११
 प फ ब ज म (नै हौं पवर्गायनमः) १२ (नै हौं एमोअरिहंता
 णं) १३ य र ल व (नै हौं यवर्गायनमः) १४ (नै हौं एमो
 अरिहंताणं) १५ श ष स ह (नै हौं शवर्गायनमः) १६ पहिले
 अ वर्गमें प वर्ग तक वर्ग प्रति सोलै २ दाख चढावै सब ए६
 (उर) य र ल व १ ज प म द २ इण दो वर्गोंमें ६४ चोसठ
 दाख चढावै इति ॥ दूसरा बलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अब तीसरा बलयमें) चार दिशा चार त्रिदिशिमें आठ
 परमेष्ठिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करे इस आठ कोठाके
 बीचमें बजाका तीन २ देवे तीनु बजाकामे २४ खाना होय एक

के खानेमें ९ दोय ९ दोय लब्धिपद स्थापन करणैसैं चोबीस धरो
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें (नै ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा) एसा
८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावै, नुर लब्धिपदका नाम बोलके खा
रका ४८ चढावै (यथा) नै ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ नै ह्रीं
अर्हणमोउदिजिणाणं ॥ २ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोपरमोदिजिणाणं ॥
॥ ३ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोसबोदिजिणाणं ॥ ४ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोअ
णंतोदिजिणाणं ॥ ५ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोकुब्बुदीणं ॥ ६ ॥ नै ह्रीं
अर्हणमोवायबुदीणं ॥ ७ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥
नै ह्रीं अर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥
॥ १० ॥ नै ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोस
यंसंबुढाणं ॥ १२ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोपत्तेयबुढाणं ॥ १३ ॥ नै ह्रीं अ-
र्हणमोबोदिवुदीणं ॥ १४ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥
नै ह्रीं अर्हणमोविनलमईणं ॥ १६ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोदसपूवीणं ॥ १७ ॥
नै ह्रीं अर्हणमोचउदसपूवीणं ॥ १८ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोअंगनिमत्तकु
सलाणं ॥ १९ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोविनवणइद्धिपत्ताणं ॥ २० ॥ नै ह्रीं
अर्हणमोविज्जादराणं ॥ २१ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोचारणलदीणं ॥ २२ ॥
नै ह्रीं अर्हणमोपसासमलाणं ॥ २३ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोआगासगामी
णं ॥ २४ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोस-
प्पियासवाणं ॥ २६ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ नै ह्रीं अ-
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोसिद्धावणाणं ॥ २९ ॥
नै ह्रीं अर्हणमोज्ञयवयामहाइमहावीरवदमाणबुद्धरितीणं ॥ ३० ॥
नै ह्रीं अर्हणमोउगातवाणं ॥ ३१ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाण-
सियाणं ॥ ३२ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोवढमाणणं ॥ ३३ ॥ नै ह्रीं अर्हण

मोदित्तवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोतत्तवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रीं अ
 र्द्धेण मोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ-
 ह्रीं अर्द्धेण मोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोघोरपरिक्रमाणं ॥ ३९ ॥
 ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोघोरवन्तवारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोआमोसहि
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रीं अ
 र्द्धेण मोजह्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोविष्णोसहिपत्ताणं ॥
 ४४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोसत्रोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोम
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धेण मोषमणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धे
 ण मोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्द्धे अमयाललब्धिपेदत्र्योनमः ॥ इत
 तरे लब्धिपदका नाम बोल २ के नीचे चोथे पांचवें बलयमें ४८ खारका
 चढ़ावे ॥ (पाँचवें) मंगलजीके गलेमें -ह्रींकारजी स्थापन किया है
 (जहाँमें) साढ़ातीन नवजाका मंगलजीके चोतरफ देके नीचे
 (कों) एना अक्षर लिखा है- (जिसके) प्रथम बलयमें आठ दि-
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दानिमफल चढ़ाव
 (यथा) ॐ-ह्रीं अर्द्धेण पादुकात्र्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढ़ावे ॥ ॐ-ह्रीं सि
 द्धपादुकात्र्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं आचार्यपादुकात्र्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ-
 ह्रीं गुरुपादुकात्र्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं परमगुरुपादुकात्र्योनमः ॥
 ५ ॥ ॐ-ह्रीं अष्टगुरुपादुकात्र्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतगुरुपादु
 कात्र्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतानंतगुरुपादुकात्र्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ-
 ह्रीं अष्टगुरुपादुकात्र्योनमः स्वाहा ॥ इत तरे ठेके बलयमें ८ दा
 रुम चढ़ावे (पाँचवें) सातमा बलयमें आठों दिशामें जयादिक ८
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढ़ावे (यथा) ॐ-ह्रीं जयायै नमः
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रीं जंज्ञायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं विजयायै नमः
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रीं व्रंज्ञायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं जयंत्यै नमः
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अपराजिता

येनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अं धायै नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इसी
 तरे) सातमें बलयमें ८ नारंगी चढ़ावै (पीठे) आठमें बलयमें
 १६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्ग लपेटी १६ सुपा
 री चढ़ावै (यथा) ॐ ह्रीं रोहण्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यै नमः ॥ २ ॥
 ॐ ह्रीं वज्रशृंगलायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ
 ह्रीं चक्रेश्वर्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं
 काट्यै नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं माहाकाट्यै नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं
 गौर्यै नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्यै नमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वात्म
 महाज्वालायै नमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यै नमः ॥ १२ ॥
 ॐ ह्रीं वैरोद्याय नमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अत्रुत्तायै नमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं
 मानस्यै नमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं माहामानस्यै नमः ॥ १६ ॥ इस तरे
 आठमा बलयकी दोलके बरक समेत सुपारी चढ़ा के पूजा करै पी
 ठे नवमें बलयेके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ १४ की स्थापना
 कर पूजा करै ॥ १४ पुंगीफल चढ़ावै (यथा) ॐ चक्रेश्वर्यै नमः ॥ १ ॥
 ॐ अजितबलायै नमः ॥ २ ॥ ॐ उरितायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ काट्यै नमः
 ॥ ४ ॥ ॐ महाकाट्यै नमः ॥ ५ ॥ ॐ श्यामायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ शांतायै नमः
 ॥ ७ ॥ ॐ नृकुट्टियै नमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतारकायै नमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायै नमः
 ॥ १० ॥ ॐ मानव्यै नमः ॥ ११ ॥ ॐ चंद्रायै नमः ॥ १२ ॥ ॐ विदि
 तायै नमः ॥ १३ ॥ ॐ अंकुशायै नमः ॥ १४ ॥ ॐ कंदर्पाययिनमः
 ॥ १५ ॥ ॐ मिर्वाण्यै नमः ॥ १६ ॥ ॐ वलायै नमः ॥ १७ ॥ ॐ धार
 ण्यै नमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायै नमः ॥ १९ ॥ ॐ तरदत्तायै नमः
 ॥ २० ॥ ॐ गंधार्यै नमः ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायै नमः ॥ २२ ॥ पद्माव
 त्यै नमः ॥ २३ ॥ ॐ सिद्धायिकायै नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दक्षिणे त
 रफ २४ यक्षराजकी स्थापना करै बरकलपेटी २४ सुपारी चढ़ावै ॥
 (यथा) ॐ ब्रह्मशांत्यै नमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्थिव्यै नमः ॥ २५ ॥ ॐ गो

मेघायनमः ॥ २२ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ २१ ॥ उवस्त्रायनमः ॥
 २० ॥ नैऋतवेरायनमः ॥ १९ ॥ नैऋतगजायनमः ॥ १८ ॥ नैऋत
 वीर्यायनमः ॥ १७ ॥ नैऋतरुद्रायनमः ॥ १६ ॥ नैऋतकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥
 नैऋतपातालायनमः ॥ १४ ॥ नैऋतपण्डितायनमः ॥ १३ ॥ नैऋतकुमाराय
 नमः ॥ १२ ॥ नैऋतवह्मराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥
 नैऋतश्रितायनमः ॥ ९ ॥ नैऋतविजयायनमः ॥ ८ ॥ नैऋतमातङ्गायनमः
 ॥ ७ ॥ नैऋतकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ नैऋततुङ्गुरायनमः ॥ ५ ॥ नैऋतवह्मनाय
 कायनमः ॥ ४ ॥ नैऋतत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतमहायज्ञायनमः ॥ २ ॥
 नैऋतगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ द्वारपालकी
 स्थापना कर के पीला बलवाकुल चढ़ावे (यथा) नैऋतकुमुदायनमः
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ नैऋतअञ्जनायनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ नैऋतवामनाय
 नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ नैऋतपुष्पदन्तायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥
 पीठे चार विदिसकी तरफ चार वीरपदमें काले बलवाकुल चढ़ावै
 (यथा) नैऋतमाणज्ज्ञायनमः ॥ १ ॥ नैऋतपूर्णज्ज्ञायनमः ॥ २ ॥ नैऋत
 पिलायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ (इस तरे दक्षमें बल
 यमें आठ दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल
 सके आकार ऊपरसे कियाजया तिलचक्रकी गलेके ठिकाणे ठि
 काणे नवनिधान पढ़े, तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति
 शोकराणा मालके स्थापन करै) (यथा) नैऋतसर्पकायनमः ॥ १
 ॥ नैऋतपांडुकायनमः ॥ २ ॥ नैऋतपिंगलायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतसर्वरत्नायनमः
 ॥ ४ ॥ नैऋतमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ नैऋतकालायनमः ॥ ६ ॥ नैऋतमहा
 कालायनमः ॥ ७ ॥ नैऋतमाणवायनमः ॥ ८ ॥ नैऋतज्ज्ञायनमः ॥
 ९ ॥ (इस तरे मुख्यस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे
 कोठलेका फल दाग्रमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पाममें बंगली
 का लपार लगावे (यथा) नैऋतविमलस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ एसा

कहके चढ़ावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के बांयेनेत्रके पास बंगलीमें (उँक्तेत्रपालायनमः) ऐसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठै तीसरा कोइलाफल) हाथमें ले के नीचै पीँहिके दक्षिणे तरफ बंगलीमें (उँचक्रेश्वर्यै नमः (ऐसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ (पीठै) चौथा कोइलाफल हाथमें ले के नीचे पीँदेके बांये तरफ बंगलीमें (उँअप्रसिद्धसिद्धचक्राधिष्ठायायनमः) ऐसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ (पीठै) दसूँ दिशामें इँडादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै. बणसकेतो अण्णा २ वर्ण मुजव वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इव्य चढ़ावै अथवा सर्वकों एक इव्य सर्व समान चढ़ावै (यथा) उँइँडायनमः ॥ १ ॥ कनक वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकइव्य आदि सर्व इव्य चढ़ावै १॥ (अग्निकूले) उँअग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्ण का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) उँयमायनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि इव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ (नैरुतकूले) उँनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै (पश्चिमदिश) उँवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व इव्य चढ़ावै ५ (वायव्यकूण) उँवायवनेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) उँकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) उँइशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ (अघोदिसि) उँनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावे ॥ ९ ॥ (उर्द्धदिशि) उँब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्थापन पूजन करै ॥ (पीठै यंत्रके पीँदीके स्थानक नव कोठा किया जया दे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) उँसूर्यायनमः लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ उँसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ उँनोमायनमः ॥ ३ ॥ लो
 खरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ३ ॥ उँवुधावनमः ॥ ४ ॥ भृंगेरंग
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ४ ॥ उँवृंदस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीत्रिवर्ण
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ५ ॥ उँशुक्रायममः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंदोल
 वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ उँरादवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग
 का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ उँकेतवेनमः ॥ ९ ॥ ठीटरंग व
 स्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ९ ॥ इस तरे नीचे नवग्रहकी स्थापनपूजा
 करै. पीठै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढ़ावै चैत्यवंदन कर शुभ क
 इकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर
 चासकेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साथ
 भी वात्सेंढव करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चादिये
 (जव) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करै तब तो ठए महीने मं
 मल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण
 जये बाद उँछव के साथ मंगलपूजा कराके नव२ उपगणोसे उ
 थापन करै. जलजात्रादि अठाईमदोछव कर धर्मशालातिणगारे
 (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च
 ढावै, रुठिरहित भावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढ़ावै (उँर) पंचा
 यती संघकी तरफसें मंगलकीके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा
 अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउथापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सप्त सों कों गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जेवृद्धीदिमें प्रथम पदादिदे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणान्नइस्वामीसर्वज्ञाय
 नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्वज्ञाय
 नमः ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञाय ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञाय ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञाय ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञाय ॥ १० ॥
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञाय ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञाय ॥ १२ ॥
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञाय ॥ १४ ॥
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञाय ॥ १६ ॥ श्री
 अमरकेतुसर्वज्ञाय ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तम्भेन्द्रनाथसर्वज्ञाय ॥ २० ॥
 श्रीशांतिकृतसर्वज्ञाय ॥ २१ ॥ अनंतरुतसर्वज्ञाय ॥ २२ ॥ गजेंद्र
 प्रज्ञसर्वज्ञाय ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञाय ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त
 सर्वज्ञाय ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञाय ॥ २६ ॥ रूपज्ञनाथसर्वज्ञाय
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय ॥ २८ ॥ नेमिचंद्रसर्वज्ञाय ॥ २९ ॥
 अजितचंद्रसर्वज्ञाय ॥ ३० ॥ महीवरसर्वज्ञाय ॥ ३१ ॥ श्रीराजे
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविंदे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञाय ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञाय ॥ २ ॥ नीलकांति
 सर्वज्ञाय ॥ ३ ॥ पूंजकेलीसर्वज्ञाय ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञाय ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्वज्ञाय ॥ ७ ॥ मुनिमू
 र्त्तिसर्वज्ञाय ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञाय ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञाय
 ॥ १० ॥ उक्तितनाथसर्वज्ञाय ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञाय ॥ १२ ॥
 महत्तनाथसर्वज्ञाय ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय ॥ १४ ॥ चलंमृत
 सर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञाय ॥ १६ ॥ पूर्णमेन्द्रसर्व
 ज्ञाय ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञाय ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञाय
 ॥ १९ ॥ श्रीनलमीदत्तसर्वज्ञाय ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञाय ॥
 २१ ॥ श्रीमुपार्थनाथसर्वज्ञाय ॥ २२ ॥ श्रीजानुनाथसर्वज्ञाय ॥

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५ ॥
 श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥
 श्रीरूपिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुमंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री
 वज्रवरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीभूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीती
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ३ ॥ ओम् ३ प्रातःकीर्तये महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीभूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥

श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीप्रेम
 नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व
 ज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा०
 ॥ ९ ॥ श्रीभूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिप्रेमसर्वज्ञा० ॥ ११
 ॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥
 श्रीतीर्थभूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीधरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसमा
 धिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहोदनाथ
 सर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशंकाकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर
 सर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २४ ॥ श्रीकपिनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥
 २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीनकलनाथसर्वज्ञा० ॥
 ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रवरसर्वज्ञा० ॥
 ॥ ३० ॥ श्रीमहामातृसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओम् ४ ॥ पुष्करार्द्रपद्माकरविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमधवादनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजगद्विक्रमसर्वज्ञा० ॥

॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥
 श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीभूमिदत्तसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीज
 गत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम

हेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरजूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलज्जद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०
 ॥ २१ ॥ श्रीचंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा
 यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीउमोकनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ श्रीपुष्पकेतु
 सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसंमतकेतुस
 र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र
 नाभसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्री
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुजङ्गसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजङ्गुप्तसर्व
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुद्दयसदसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥
 ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०
 ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मजूनसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीदितकरसर्वज्ञा० ॥
 २४ ॥ श्रीवरुणदनसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥

नागेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीमद्दीधरसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ कृतव्र
ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमद्देवनाथसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीवर्ह
मानसर्व० ॥ २७ ॥ श्रीसुन्दरनाथसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥

॥ थोली ६ ॥ पांच भक्त पांच परवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेऽनन्तरिक्षे जिननामानि) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०
॥ १ ॥ (धातकीखंभेऽप्रथमचरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥
(धातकीखंभे द्वितियचरतेजिननाम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥
॥ ३ ॥ (पुष्कराद्वेऽप्रथमचरतेजिननाम) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४
॥ (पुष्कराद्वेद्वितियचरतेजिननामः) प्रज्ञावकनाथसर्व० ॥ ५ ॥ (जं-
बुद्वीपेऽनन्तरिक्षे जिननाम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धात
कीखंभेऽप्रथमचरतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ (धातकीखंभे
द्वितियचरते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्कराद्वेऽप्रथमचर
तेजिनना०) आग्रहादिकसर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ (पुष्कराद्वेद्वितियचरतेजि०)
श्रीवल्लभनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका
गुणना संपूर्ण ॥ १६ स्याम, ३० लाल, २७ नीला, ३६ पीला, ५०
श्वेत, सर्व संख्या १३० ॥

॥ अथ सत्तर सौ जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूदा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैलोक्य जिनचंद ॥ त-
त्पद नामी कंधरा, कागण सिव सुखकंद ॥ १ ॥ वार्धकासरदातणो,
उर धरि समरण शक्ति ॥ सद्युत्तर सत जिनतणी, रचख्युं नुति सु
वि जक्ति ॥ २ ॥ वे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाक्ष ॥
पूर्वापर जवि तेडने, विजय नामको लाक्ष ॥ ३ ॥ मूलविजय वगु
प्रतिदिना, कयनामं युगतीस ॥ जीतोद्वा तरणीतणो, कागण वि
शार्चन ॥ ४ ॥ खंभ धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेद ॥ कंचन
गिरि युग वे निहां, मन धारो धर नेद ॥ ५ ॥ अथतम पुष्कर जां

शिवे, द्वीप सकल गुणखान ॥ अर्थ ज्ञाग जसु उत्तम, गिरि युग
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो वत्तीस
 ॥ धारो गणित अनुक्रमे, पष्ठ्युत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढाश
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्ध्र तिहां सदा, ज्ञाप्यो
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचर्या जे जिनरा
 य ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञाणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (हाल
 पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञविकजन घ
 रज्यो धर्म सनेह ॥ १० ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नरसुर ईस ॥
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि
 चर्या महियल बोधता जी, विजय मजार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥
 पंचर ज्ञरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता
 रता जी, समर्यां संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन
 चरू जी, अतुल सकल गुणखान ॥ श्यामवरण सोले कहा जी,
 अकल कला युतिवान ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कहा जी,
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊललह ज्ञाधरू जी, कनकवर
 ण वत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित
 विमल प्रकाश ॥ ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासणी जी, बीस प्रमित
 जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुजातमां जी, धरिये ज्ञाव विशाल ॥
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण दुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सद्गुनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ
 नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंड ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि
दिमे हितवल्लभ कथनधर चूर ए ॥ गुरु ग्वरतरांवर तरणि सन्नि-
भ जैनचंड मनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवम् ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री
सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसि
द्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावरणकर्मकी नव
प्रकृती ए)—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण
र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निद्राकर्म
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचला० १२, प्रचलाप्रच
ला० १३, श्रीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकृति २)—सातावे
देनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोदनी
कर्म की प्रकृती १८)—सम्यक्तमोदनीर० १७, मिश्रमोदनीरहिताय
१८, मिश्रयात्वमोदनीर० १९, अनंतानुबंधीकोषर० २०, अनंतानु
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोत्तर०
२३, अप्रत्याख्यानीकोषर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोत्तर० २७, प्रत्याख्यानीको
षर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,
प्रत्याख्यानीलोत्तर० ३१, संज्वलनकोषर० ३२, संज्वलमानर०
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोत्तर० ३५, हास्यमोद
नीर० ३६, रतिमोदनीर० ३७, अरतिमोदनीर० ३८, जयमोद
नीर० ३९, नाहमोदनीर० ४०, दुर्गममोदनीर० ४१, ग्रीविशर०
४२, पुण्यवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ (आयुर्कर्मकी प्रकृति ।

४)-देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३)-देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, ऐकेंद्रीजातिर० ५३, वेइंड़ीजातिर० ५४, तेइंड़ीजातिर० ५५, चौरेंड़ीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीर० ५८, वैक्रियशरीर० ५९, आहारकशरीर० ६०, तेजसशरीर० ६१, कर्मणशरीर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्किबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आहारकबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियेतजसकर्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकार्पणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररूपज्ञनाराचसंघयणर० ८६, रूपज्ञनाराचसंघ० ८७, नाराच ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुञ्जसंस्थानर० ९६, हुंमकसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, तीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरज्जिगंधर० १०३, डुरज्जिगंधर० १०४, निक्तरसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुररसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उश्नफरसर० १११, ज्वारीफर

सर० ११२, इलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुक-
 मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितवा०
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्येचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुजविद्वायोगति १२२, अशुज-
 विद्वायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, उक्तासनामकर्म
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ-
 गुरुत्वयुनामकर्मर० १२८, तीर्थीकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम
 कर्म १३०, उपघातनामकर्मर० १३१, व्रतनामकर्मर० १३२, वाद-
 रनामकर्मर० १३३, पर्याप्तिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुजनामकर्म १३७, सौजग्यनाम
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,
 यज्ञनामकर्म १४१, आवरनामकर्म १४२, सूष्टमनामकर्म १४३,
 अपर्धातिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर-
 नामकर्मर० १४६, अशुह्यनामकर्मर० १४७, दौर्ज्ञग्यनामकर्मर०
 १४८, उस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयज्ञ
 नामकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृति २) उच्चैर्गोत्र १५२, नी-
 चैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर०
 १५४, लाज्जांतरायकर्मर० १५५, जोगांतरायकर्मर० १५६, उप-
 जोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायत्रीतिष्ठायनमः ॥
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयसीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयसी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ भेनामात जितारि सुन, श्रीसंनय जिनराज ॥
 मूलकरम उतर पगड, कणी चहे निवपाज ॥ १ ॥ अष्ट कर्मकुं
 दाय करी, गुण अष्टक निप्यन्न ॥ नादि छनंत म्प्रति लदी, चिदा
 नंद विदपन्न ॥ २ ॥ तानु नगण प्रणनी करी, कम्मपयसि विस्ता

र ॥ वरणं जविजन हितजणी, प्रवचनने अनुसार ॥ ३ ॥ (ढाल ॥
 ॥ रामचंदके वाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नामे जिन कल्या
 री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आतमगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण
 आवर्ण, वेदनी मोह बूरो री ॥ आनखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो
 री ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय,
 तीस कोनाकोनि जणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, बीस को-
 नाकोनि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, हिव मोहनीय युवे री ॥
 ॥ ४ ॥ सत्तर कोनाकोनि सागर मान जणयो री ॥ ए उत्कृष्ट
 श्रिति जोरु, केवली काल गण्यो री ॥ ५ ॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म,
 अंतरमुहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री ॥
 ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म वदे री ॥ वारे सहूरत
 मान, शास्त्रानुसार मुदै री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंचश् जेद
 जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो जेद उदारी ॥ ८ ॥ दर्शना
 वरण नव जेद, आयु च्यार विवे री ॥ मोह कर्म अमवीस, सौ त्रिक
 नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अठावन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥
 अष्ट करमना जांण, सर्वे विकल्प सही री ॥ १० ॥ ढाल ॥ नण
 दल चुमले जेवन जिव रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण
 ठे, दर्शनावरण प्रतीहार, जगियण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु
 लिता असिधारानी परे, वेदनी कर्म सुदार ॥ जविय० ॥ १ ॥ म
 दिराठाक समान ठे, मोह सुजट महराण, जवि० ॥ खोमे बंदीखान
 सारखो, आयुकर्म प्रमाण ॥ ज०क० ॥ २ ॥ चीतारे सम नाम कहीजे,
 गोत्र कुंजार समान, ज० ॥ श्रीवर जंमारी सम दाख्यो, अंतराय
 कुल्यान ॥ जवि०क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए जावना, वीर वदे व्या
 ख्यान, ज० ॥ कर्म संसार स्वरूप ठे, अकरम सिद्धि सुत्रान ॥ ज
 वि० क० ॥ ४ ॥ मिष्ठ सासादन मित्रा मिनि, देसविरति प्रमत्त,

ज्ञ० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सखीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज० क०
 ॥ ५ ॥ अपूर्व अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत बंध, ज० ॥ सुदुर्म
 संप्रदाय दशम ठाणें, वित मोदायु पट खंड ॥ ज० क० ॥ ६ ॥
 उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज० ॥ अयोगी गुण
 चवदमें, नदी बंधत कर्म द्वार ॥ ज० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु
 कष्टा, मिश्रयात अविरत जोय, ज० ॥ क्रोध प्रमुख कषायथो, यो
 ग युगत चार होय ॥ ज० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म
 स्थिति पद लेय; ज० ॥ कर्म बंध पणवीतमें, कर्म प्रकृति बंध होय
 ॥ ज० क० ॥ ९ ॥ कर्मपयनी कर्मबंधमें, कर्मतणो निरधार,
 ज० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ ज० क०
 ॥ १० ॥ इकसो अठवन अया, चउत्थजत तप सार, ज० ॥ त
 प उद्यापन इन करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ज० क० ॥ ११ ॥
 अष्ट ज्ञानोपकरण जला, अष्टगंगल वृद्ध आल, ज० ॥ वात्मद्वय
 चउनिद संवर्नी, यथाशक्ति सुविज्ञात ॥ ज० ॥ क० ॥ १२ ॥ उच्चा
 रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज० ॥ सुरनर मुख अनुक्रम
 लदी, शिवरमणी जरतार ॥ ज० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-
 चंद सूरि मुनिंद गवर गण ख जशि सम युगवरा, तानु वचने
 स्तवन कीथो नवर श्रीवाचूचरा ॥ चंद्रानुयोग निखेक वरये विशद
 फाट्युन वावरी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित
 नित बशी ॥ १४ ॥ इति श्री कर्मपयनी स्तवन ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दृढा ॥ चोर्वीने जितवर नमी, पंच परमेश्वर नार ॥ परम
 मंत्र नवतारनी, मडिमा जणुं उदार ॥ १ ॥ टाल १ ॥ मुनिवर
 नार सुदुर्म ॥ २ ॥ देवी ॥ समरो श्री नवकार, मार पुण्यतणो,
 नव निधि सिद्धि आप नश ॥ मडिमा मोटी जाल, मंडुट स

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्यात,
 सात गुरु अकर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,
 जाये अकरे, संपूरण पांचसै मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपार्द्ध,
 सिद्धावट गांम, पासे परवत कंदरा ए ॥ चोमासी पञ्चस्काण, करने
 तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ जील जीलणी वेअ,
 मन सुध जावसुं, नवकार मुनि पासे जणी ए, बीजे जव राज-
 सिद्ध, रतनवती राणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत
 नपुरी यसोज्जड, सेवतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति
 आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुण बहु जणूं ए ॥ ५ ॥
 एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धर्यो ए ॥
 नवकारने परजाव, सबल संकट टळ्यो, सोनापुरतो तिण कर्यो ए ॥
 ॥ ६ ॥ ढाल २ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री
 नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज्ज ठामो जी ॥ सेव सु-
 ज्ज तणी सुता श्रीमती, आविका धर्मनोकामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥
 मिश्यामते किए एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम
 न मूके दणिये मन धरी, कलसमें मूक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥
 साप फीटीने फूलमाला अई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने
 कुटंव सहू प्रतिबूज्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥
 क्षितिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन बूखो मेहो जी ॥ नदीपूर
 बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद
 लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर जह करे
 नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी
 जिनदाससेवनी, आवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार जण बीजोरो
 ग्रह्यो, बूज्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी
 खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वनंतपुर जितशत्रु राया,

ज्ञज्ञ नामे नारि सुहाया ॥ चंरुपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिका
 ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूली
 दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पठतावे, चोर समीपे
 ठानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंठित
 सीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥
 ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिरादाससेठ, तिहां किण हुंरुक पापनी डेठ ॥
 एकदा चोरी करतां जाळ्यो, राजा हुकमें सूली घाळ्यो ॥ ४ ॥
 हुंरुक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार
 दीधो उपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणो ॥ ५ ॥
 चंपानगरीमें जे कीधूं, सुजज्ञ सती निकलंक प्रसीधूं ॥ श्रीनवकार
 प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥
 भरतनृप जावसुं ॥ ए वेशी ॥ अमावति पुनिम करी ए, बीजलो
 बांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृद्ध उपानी चलावियो ए,
 अनुपम मदिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूया एक चारतो ए,
 नदिव प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो
 ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली कर्या पाप
 अनेक, न० ॥ तुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥
 ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ ती
 र्थकर पद ते लढे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन २
 अधिकी संपदा ए, मनयेंवत तुख आय, न० ॥ दयाकुसल वाचक
 वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाथ ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका
 चौढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अय नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुजदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे, जिस पदका
 जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका १२०००१

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंतारणं ॥ उपवास ७ ॥
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आचरियाणं ॥ उपवा
 वास ७ ॥ ४ । एमोउवझायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । एमोलोए
 सबसाहूणं ॥ उपवास ६ ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ७ ॥
 ७ । सबपावप्पणासणो ॥ उपवास ७ ॥ ८ । मंगलाणंचसवेसिं ॥
 उपवास ७ ॥ ९ । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ६ ॥ १० । एते नवकार
 मंत्रका ६७ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वमानवत्तार अथवा ऊपर
 लिखा सो स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेंसें यथाशक्ति नवपदका
 उठव करे, चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावसें अनेक
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुज्जनाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण
 दिण जणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणें पस्सि पंचमि दिणें,
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण
 सुरज्जवणथी वारसै, पउमपइ जम्म वलि दिक्क तसु तेरसै ॥ वीर
 सिवमां वसै पस्सि दिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज वार
 ति मिले ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि
 यो, सोइ ठेँ रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-
 यम आदर्यो, इग्यारसि रे उपमप्पइ सिवसिरि वर्यो ॥ सिर वर्यो
 मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति
 पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसैं वलि
 मल्लिजिणने जम्म दिक्क सुनाणीया, वलि मल्लि दिक्का नाण ठेँ
 अंग पोसि वखाणिआ ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संज्ञा
 विवै, कइ कोइ रे अवर देतु पिण ज्ञाविवै ॥ ते परि नवि रे गीता-
 रय तद्गुरु जइ, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सहदे ॥ सहदे

सहूयै ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितलौ, श्रीनाण कळयाणक
 चउदसि जनम संजवनों शुणौ ॥ पूनिमें संजव दिस्क पांमी दया
 धरि जगजोवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिस्का
 पासनी ॥ ४ ॥ वारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेर
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशोतल थयो के-
 वली, पोसह सुदि रे ठठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसैं, चवदसैं अजिनंदनैं केवल पूनि
 में धम्मैं वसैं ॥ माहाइ ठठे पउम चवियो वारसैं शीतल थयौ,
 वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥
 अम्मावसि रे दिवसैं नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुद्धे हिव
 अनुक्रमैं ॥ सित बीजे रे अजिनंदन वामुपूजनों, कळयाणकरे ज
 नम ठांण अनुक्रम मनो ॥ अनुक्रमैं मानों विहू बीजे विमल धरम
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथि अठमि अजित उतपति पांमि
 या ॥ नवमियें दिस्का अजित पांमी वारसैं अजिनंदनैं, श्रीधर्मनाथैं
 सार संयमसिर वरितेरसि दिनें ॥ ६ ॥ ज्ञास ॥ फागुण वदि ठठे सुपास
 केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंडप्रभु नाणें जुत्तो ॥
 नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, वारस सुवय नाण
 जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिज्जंत तणो चवदस वसु
 पुज्ज, जम्म हुत्त अम्मावसैं ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकज बीज चउथि
 अठमियें अर मल्लि संजव, चवण सुवारसि मल्लि मुगति सुवय वय
 उव्व ॥ ८ ॥ (ढाल फागनी) चैत्र पढम पस्कि चउथि नाण च
 वणं पासस्त, पंचमि सत्तिपह चवण जम्म अठमि रिमहस्त ॥
 वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव
 कुंयुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने सं
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना
 ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ जास ॥ दिव वैसाख वंदेपमिवा दिन,
 कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ ठठे, श्रीशी
 तल अवतरियो, दशमें नमिजिण सितसिरि वरियो, तेरसि जनम
 अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतद, जनम हुं श्रीकुंथु
 जिणंदद, वंदद सितपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध
 रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम
 तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सामे पायो, गायो धरि आ
 णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, वारसि चव्यो विमल जगस्वा
 मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पस्कि
 ठठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि सुमति
 सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सित वय हुं ए ॥ धरमनाथ
 सित पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुऊ अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास
 जिण जम्म, वारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥
 जास ॥ दिवै असाढ वदि चउथि रिसदेस, चवण सत्तमिदि सिरि
 विमल ॥ मुक्क नवमि नमि वय गहण, सेय ठठे चवण ॥ वीरनो
 अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुऊ जिणंद, ठ सय वर साधु
 कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरे, करमदणि मुग
 ति रमणी वरयो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि दिव तीज सु
 गति सेयंसद पामिय, सत्तमि चविं अणंतनाह अठमि नमि जा
 मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुं अह निम्मल बीजे, सुमति
 चवण पंचमिद नेमिजिण जम्म जणीजे ॥ १६ ॥ ठठे सुनिवर ने
 मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिमुवय पूनिमरयणि, चविं गु
 णमणि वास ॥ १७ ॥ जाव वदि सत्तमें संति मसि चवण जव
 रक, अठमि चविय सुपास नवमि सुदि सुविय सितंगय ॥ दिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर मप्र ॥ हरण अम्मावसी
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १७ ॥ पूनिम नमि जिणवर चविय, इण
 पर धारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळ्याणक रासि
 ॥ १८ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दि
 ने, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मने ॥ कळ्याण नीते
 कोमि पांमी अनुक्रमे सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी
 एह कळ्याणक कहे ॥ १९ ॥ इम पांच जरते ऐरवत करि एक
 दिन जिनवरतणा, दस कळ्याणक हुवे इण दिन सुर करे उच्चव
 घणा ॥ जिम दूआ ते तिम वली होस्ये पंच कळ्याणक सदा, श्री
 पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २० ॥ इति श्रीपंच
 कळ्याणक स्तवनं ॥

॥ अथ रूपिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ अथम आद्यंताकर संलक्ष० यह रूपिमंडल स्तोत्र धूप
 दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रज्ञात समय सुणें. रूपिमं
 ढलमें जो मूल मंत्र दे सो शुद्ध दिन शुद्ध घटी हाथमें फल
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ७००० आठ हजार जाप
 आठ महीनेमें करे. आंखिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो
 आठम चौदस दो आंखिल जरूर करे. आठ महीने वाद ऊजमणा
 करै. ऊजमणेके दिन एकसो आठ वर सुणै. पीठै शक्ति होय तो
 विधि संयुक्त रूपिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष जक्ति
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुजत्ती करे, साहमी वञ्चल करै.
 विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रूपिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा
 ले जव्यजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उन्नाइ रहै ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट यत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

शृङ्ग चरण अंगूठमो, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का
 नसग रह्या, विचर्या देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यो, पूजो
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥
 कर कंमे प्रजु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय
 अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, जुजावले जवजल तर्या, पूजो खंध म
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना
 जिकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल
 उपशम बले, बाढ्यो राग ने छेप ॥ हेम दहे वनखंमने, हृदयक
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल,
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तथैकर पद
 पून्यथी, त्रिजुवन जन सेवंत, त्रिजुवन तिलक समा प्रजु, जाल
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिखा गुण ऊजली, लोकांतिक जगवंत ॥ व
 सिया तिण कारण विजु, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव
 तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुज
 वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन उदा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमैं
 परजा नमैं, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,
 जल विन कुंज न होय ॥ ज्ञानि बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे
 गुरुवाणी वेगला, रसवमिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,
 जावे दीजे दान ॥ जावे जायता जाविये, जावे केवलज्ञान ॥ ४ ॥
 पांच कोमनि फलमे, पांम्या देश अहार ॥ राजा कुमारपालने, व
 रत्या जैजेकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदों के नव चैत्यवन्दन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवन्दन ॥

जय२ श्रीअरिहंत ज्ञानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कय
कत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसै, जयो वर अविन्यासी ॥
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-
तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवन ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री
तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होये हीन ॥ म० ॥ १ ॥
चादरकार्ये मन वच जोग, तनुरसै फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुद्ध
मकार्ये मन वच रोक, निज वीर्य ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥
संझी मात्रके मन व्यापार, वेइंढीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि
समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥
॥ ३ ॥ एयां योगथी समयें एक, होना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥
समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥
वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें
गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥
इति अरिहंतपद स्तवन ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ ताजै जव
थानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, वारे गुणां करि एइवा अ
रिहंत आराधी गुण जूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत जागी ॥ पुब पञ्चपसंग
सैं, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण
निरागी ॥ चेतनजूपें आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल
दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वज्ञाव ॥ सिद्ध ज्ञये तसु हीरधर्म,
वंदे धरि शुभ्र ज्ञाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थारें महिलां ऊपर मेह झरोलैं बीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मात हीना कोनी पूर्वमें, म्हा० लाल ही० ॥
उत्कृष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलैं गुण श्रेणिता,
म्हा० दलैं० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे
नगरऊलैं अक्रिय होयनें, म्हा० अ० ॥ पुब पयोग असंग स्वज्ञाव
अवंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लहैं
कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाज्ञासु निरालंबन सही, म्हा०
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मही प-
कथी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपगारा नाम
सिद्धासैं जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें जाग अलोककुं स्प-
र्शनैं, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल वत्तीस प्रमाणऽवगादणा, म्हा०
प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासैं हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥
मिलिया एकमेंनंत अवाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि
रम्य सिरिही जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म
नगेदमें, म्हा० ध० ॥ कुशल ज्ञये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा०
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद श्रुति ॥

अष्ट करसकूं धमन करीनें गमन कियां शिववामी जी, अ-

व्यावाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमात्मपद पूर-
ण विलासी अथ घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव
पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद शुद्ध ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यवन्दन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥
प्रबल सबल घन मोहंकी, जिणतें चमुहारी ॥१॥ रुज्ज्वादिक जि
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ ज्वकूपें पापें पस्त, जगजन
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं
वंदे हीरधर्म, अष्टोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदलें बौदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खमगथी जेणे, हणयो क्रोध सुन्नट सम देणे हो, गण
पति गुणपेखी ॥८॥ मान महा गिरि वयेरे, अति शोचन महव वयेरे
हो ॥ ग० ॥१॥ ईश्वरूप विसवेली, वर अङ्गवकीलै ठेलो हो ॥ ग० ॥
मुर्छावेलथी जरियो, लोहसागर मुक्त तरियो हो ॥ ग० ॥२॥ मदन
नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा
मंछ ताळ्यो, पुण वैराग मुगरे पाळ्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गयंद
वस कीनों, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेद्या,
सुरवर पिण जिण पिपेद्या हो ॥ ग० ॥४॥ रस कृति गुणथी लीणो,
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद शुद्ध ॥

॥ पंचाचारकुं पालें उजवालें दोष रहित गुणधारी जी, गु
ण वृत्तीसे आगमधारी हादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, कमा सहित जे संज
म पालें आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति शुद्ध ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री नवजाय राय । सठता घन जंजन । जिन
वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण जं
जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंघ लोय लोयणें ।
जत्यय सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद
तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्ध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने३ दूरी हुयने, चेतन जापै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं
मुऊ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुऊनें कुण बतलावे, दू० ॥ ए आंकणी
॥ तो संगै निज पंचेंडीनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी
खयवसमसें, जावेंडी मंमाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ ड्यै ते परजासे
कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क
में उपदेश ॥ दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला
गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में ज्यो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥
उप कहिये हणियो जवियानो, अधियां लाजत आय ॥ आधीनांमन
पीमानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर
आगम, सूत्रसें ते नवझाय ॥ तत् सेवातें हणि सठताकूं, चेतन
कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद शुद्ध ॥

॥ अंग इर्यारै चवदे पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र
अरपघर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर
आगम पूरा नय निह्येपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद शुद्ध ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवंदनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्र
शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्तें,

ज्ञये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनज्ञूत, समदम अजिरामी
॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण जरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥
तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकपाया जगजन कहे, धारे चञ्चुगति वसनसें रोस हो,
मुनिंदजी ॥ राग हीण जय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो
मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० ठै पूरब कोरु हो
मु० ॥ शत लोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो
मु० ॥ २ ॥ स्त्यानहीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच
लानिझमें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि
ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो
पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥
॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपर्ये, सा० साधन पर वर जीव हो मु०
॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु जवतु जगतीव हो मु०
॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद सुद्ध ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बघालीस टालै जी,
पट काया गोकुल रखवाले नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म
हाव्रत सूधा पालै धर्म शुक्ल उजवाले जो, कृपकश्रेणि कर कर्म
खपावै दसपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परियट, अट परमित संसार ॥ गंविजेद
तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्लायक वेदक जशि असं
ख, उवसम पण बार ॥ बिना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव
दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लजन अजिराम ॥
दरसनकुं गणि हीरधर्म, अद्वित करत नणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अयं दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंको मोहि रक्षो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध ज्ञायो री ॥ धर्म जिने
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सप्तम
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तार्ते अधिक बुरो री ॥ २ ॥
मिथ्या तापे तप्त, बोधही ठांइ लहेरी ॥ उपशम कायके वेद, ई
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुण अस्ताधि क
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अयं दर्शनपद युई ॥

॥ जिनपणत्ततत्त सूया सरधै समकित्त गुण उजवाले जी,
जेद वेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्या-
ख्याने सम तुळ्य ज्ञाख्यो गणधर अरिहंत मूरा जी, ए दरशनपद
नित २ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अयं ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ किंश्रुदिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि
लापसें जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पज्जवि
उहिं दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, इके के
वल जाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अयं ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अनि डछंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर ज्ञापित आगम जणिया, तत्त्व यथास्थित गमिया
जी ॥ म्हारे जगजन तारु ॥ ते उत्तम वर नाण कहावै, जविजन
अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ ज्ञाज्ञाज्ञ कुपंथ सुपंथा, पे-
यापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें
जेश विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुते मनि होय ठे इंडी तारु,

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उद्दी मण केवल हे वारू, जीव
प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्त वलें जग जालें,
लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिजुवन पूजै जासु पसायै,
धारी शुभ्र अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी जयशम
क्षयशी, चेतन नाणकुं त्रिलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि
जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद पुरे ॥

मति श्रुति इंडी जन्तित कहियै लहियै गुण गंजीरो जी,
आतमधारी गणधर विचारी दादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि म
नपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकुं वंदो
पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति पुरे ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्त पसायें लाहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुभ्र
जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिदंतराय, करि
कर्म निकंद ॥ सुमति पंचतीन गुप्ति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इच्छु
कृति मान कसायशी ए, रहित लेस सुचिदंत ॥ जीव चरितकूं हीर
धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निस्तंग ॥ सुग्यानी
साजलो ॥ टेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०
॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जो
गसुधामता, लब्धा संख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो
गर्भ, वृद्धि लदे जगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समये लहे, अंते दौते
जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥
सु० ॥ प्राप्ता धम्य प्रकाशना, नम एनृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तडो
धन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर धन मिल पद

॥ अयं दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंको मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साथ जण्यो री ॥ धर्म जिने
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सप्तम
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥ २ ॥
मिथ्या तापे तप्त, बोधही ठांइ लहेरी ॥ उपशम कार्यक वेद, ई
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुल अस्ताथ क
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अयं दर्शनपद शुद्ध ॥

॥ जिनपसुत्ततत्त सूधा सरथै समकित गुण उजवाले जी,
जेद वेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्या-
ख्यानै सम तुल्य ज्ञाख्यो गणधर अरिहंत मूरा जी, ए दरशनपद
नितर वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अयं ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रत्त राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि
लापसैं जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पऊवि
उद्दि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, इक के
वल ज्ञाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अयं ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जापित आगम जणिया, तत्व यथास्थित गमिया
जी ॥ म्हारे जगजन तारु ॥ ते उत्तम वर नाण कहावै, जविजन
अदनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जकाजक कुपंथ सुपंथा, पे-
चापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अद्वित दिनथारी, जाणें
जेश विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुते मति दोय ठे इंदी तारु,

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उही मण केवल हे वारू, जीव
प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्त वलें जग जाणें,
लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजै जासु पसायें,
धारी शुभ्र अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उग्रशम
कवणी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें नवि
जन हरखे, निसदिन कुदालता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद धूर्ध्व ॥

मति श्रुति इंडी जन्मिंत कहियै लहियै गुण गंभीरो जी,
आतमधारी गणधर विचारी दादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि म
नपर्यव केवल बलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो
पूजो नविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति धूर्ध्व ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्त पसायें लाहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ गमन करै शुभ्र
ज्ञाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि
कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इच्छु
कृति मान कसायथो ए, रदित लेस सुचिबंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर
धर्म, नमन् करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निस्तंग ॥ सुग्यानी
साजलो ॥ ठेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०
॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण ज्ञाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जो
गसुधामता, लब्धा संख स्वज्ञाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो
गर्भे, वृद्धि लदे जगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समयें लहे, अंते द्वाते
जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वक्षेण ॥
सु० ॥ प्रामा घस्य प्रकारता, सम एनृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तदे
धन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

ધર્મમે, કુશલ જવતુ અજિરામ ॥ સુ ॥ ૫ ॥ ૬૬૬ ॥ ચારિત્રપદ સ્તવનં ॥

॥ અથ ચારિત્રપદ શુદ્ધ ॥

॥ કર્મ અપચય દૂર રાખાવૈ આતમ ધ્યાન લગાવે જી, બોરે
જાવના સૂચી જાવૈ સાગર પાર જીતારૈ જી ॥ રાટ રાજકૂં દૂર
તજીને ચક્રો સંજમ ધારૈ જી, એવો ચારિત્રપદ નિત વંદો આતમ
ગુણ દિતકારૈ જી ॥ ૧ ॥ ૬૬૭ ॥

॥ અથ તપપદ ચૈત્યવંદન ॥

॥ શ્રીરૂપજાદિક તીર્થનાથ, તજવ સિવ જાણ ॥ વિદિ અ
તેરપિ વાહ્ય, મધ્ય દ્વાદસ પરિમાણ ॥ ૧ ॥ વસુકર મિત આમો સ
હી, આદિક લબ્ધિ નિદાન ॥ જેવે સમતા યુત સ્વિણે, દુઘન કર્મ
વિમાન ॥ ૨ ॥ નવમો શ્રીતપપદ જલો એ, સ્થિરોધ સરૂપ ॥ વંદનસે
નિત હીરધર્મ, દૂર જવતુ જવકૂપ ॥ ૩ ॥ ૬૬૮ ॥

॥ અથ તપપદ સ્તવન ॥

॥ વારસ જેદ જાણ્યા જિનરાજે, વાહ્ય મધ્યતણા જગ કાજે
રે ॥ મ્હારે શિવપદથ્રેણિ ॥ એ આંકણી ॥ તિણ જવ સિદ્ધિતણા
વર ગ્યાતા, જિનવર પિણ તપના કર્તા રે ॥ મ્હારે શિવ ॥ ૧ ॥ સ
મતા સદિતે જિનતે જારી, જલો કર્મચમુ પિણ હારી રે ॥ મ્હારે
શિવપદથ્રે ॥ ૨ ॥ જીવકનકસે કર્મ કચોરા, દે તપ પાવકકા જોરા
રે ॥ મ્હારે શિવ ॥ ૩ ॥ તપ તરુવરના કુસમ દે રુદ્ધિ, દેવ નરની
ફલ તે સિદ્ધિ રે ॥ મ્હારે શિવ ॥ ૪ ॥ પાપ સકલ દે તમની રાસી, તપ
જાનુસે જાયે નાસી રે ॥ મ્હારે શિવ ॥ ૫ ॥ જસ પસાર્યે લલિયે
વારુ, લબ્ધિ સગલી જગદિતકારુ રે ॥ મ્હારે શિવ ॥ ૬ ॥ અતિ હુકર ફુન
સાધ્યતા હીના, કામ તારે વારુ કીના રે ॥ મ્હારે શિવ ॥ ૭ ॥ સ્થિર
રોધન રૂપી કહિયે, તપપદહી ચૈતન વદિયે રે ॥ મ્હારે શિવ ॥ ૮ ॥ પાઠક
આદીરધર્મ કૃપાસે, નવપદ કુસલાકું જાસે રે ॥ મ્હારે શિવ ॥ ૯ ॥ ૬૬૯ ॥

॥ अथ तप पद धुर्य ॥

इन्द्रारोधन तप ते ज्ञारव्यो आगम तेहनो साखी जी, इय
जावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण
परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लवधि सकलनो कारण
देखी ईश्वर सैं मुख ज्ञाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ जय श्रुतिविशति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्वृषभ सर्वज्ञ, वृषभांक सुवर्णीरुक् ॥ जय देवाधि देवदा,
नाग्निराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ जुगस्यादौ त्ववायेन, ज्ञानत्रय युते न
यत् ॥ जनन्या मरुदेवाबाः, बावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषभ
स्तुति ॥ अर्द्धताजितनाथेन, गज लांठन शालिना ॥ जितसत्रु
महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-
स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोवेन, यंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥
इत्यजित स्तुति ॥ जितारि नृपतेर्वयात्, संजवः संजवान्निधः ॥
सेनाया नंदनो हेम, वर्णो गंधर्व लांठनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य,
ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पूंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥
॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्धं, वीतरागं जग-
त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, ह्रस्वांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन
नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्तया, सनालोकेजि
नंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेवाज्जिव धरि त्रौत, तन
चो मंगलप्रदः ॥ कौश लक्षण जूडेम, मरीचिर्मगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं
सुमतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृगां, स्वर्ग
सौख्या बलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुमीमापुत्र
सत्कोक, नवद्युति धरावर ॥ धराजिव नृपोद्भूतः, पद्म लक्षण
धारकः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव नंकीर्ण, दुस्तरे पततां नृणां ॥
त्राणाय सनतं देव, पद्मप्रभ जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रभ

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वान्निघोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकजृत् ॥
 प्रतिष्ठ नृप संजात, श्रामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र
 इव गंज्जीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं
 नोमि सदा विजृम् ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंडप्रज्ञ प्र
 ज्ञोकांत, चंड लक्षण संयुतः ॥ तमापतिष्ठ विज्ञान, तमोव्यूह वि
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलयेनांघ्र, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा
 पुत्रमां स्वामि, न्नव केवल बोधजृत् ॥ १६ ॥ इति चंडप्रज्ञ स्तुति ॥
 (अत्रायश्चत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तुतेबोददत्वाश्रु, सुरासुरनरेश्वरैः
 ॥ सुविधिर्वीरितशर्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीकननीरा
 मा, माननीयादिवौकलां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांविनः
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमौ) ॥ श्री
 मञ्जीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवदेह, श्रीवत्सांद्वां
 कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांजोन्न, सेवकानांवपुर्जृतां ॥ प्राक्क
 तंवृंजनव्यूहं ॥ उपृंशंजोयदेविज्जो ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु
 तिः ॥ विष्णुर्वशार्कवदेवो, विष्णुपुत्रोद्दिरण्यजः ॥ श्रेयोवृद्धिरुज
 स्त्रं, खड्गलांविनजृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्ध, श्रेयांसश्रे
 यसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदं परं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां
 स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवार्त्तिरामीहा, जवतांश्यदि ॥ ऊटितिष्ठे
 दितुंचिते, ज्ञोन्नव्याः प्राप्तुमहारं ॥ २३ ॥ तदाज्जजध्यमेनंहि, वासु
 पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तजं ॥ २४ ॥ इ
 ति वासपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमहिमलनाथेड, कृतवर्मसमुन्नवः
 ॥ गूकरांकधरस्यामा, पूत्रकट्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंड्याद्विमलज्ञान,
 त्वदायस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयज्ञाःसिंह
 सेनयोः ॥ देवस्यश्वेनचिह्नस्य, वर्यानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्राद

योऽप्यस्यांतं, गुणानालेजिरेनहि ॥ अनन्तस्य गुणान्तस्य, कमोवक्तुं
 नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक,
 ज्ञानुदंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाथान्निधेश्वरः ॥ २९ ॥
 तवागोपिपुरधारी, जूतलेयात्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सतां
 संगतयोऽपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी
 सं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥
 ॥ ३१ ॥ तंश्रीमच्छांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां
 वृष्टिं, विबुद्धाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्री
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करदिरण्यज ॥ सूरिज्ञूपतिसंजात, छागल
 क्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंशुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं
 पापतंदोदं, ज्ञवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंशुनाथ स्तुतिः
 नुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्तिकसंयुतं ॥ श्रंजोजदन्निरालेपं, देवीपुत्रसु
 वर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, ध्रुव्यैप्रज्जुतयाजिनं ॥ चरी
 कर्मिनमस्तमा, श्रयायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८
 ॥ कुंजप्रज्ञावतीपूत्रौ, नीलवर्णौघटांकनृत् ॥ जगन्मित्रश्चवध्वान्त,
 नात्तनाह्नितःसदा ॥ ३७ ॥ वज्रत्रयशुतोन्नाति, देवयोविष्टपत्त्रधे
 ॥ तस्यश्रीमद्विनाथस्य, स्मरणेत्सुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्ररुत् ॥ कुर्मल
 क्षणजृल्लर्म, दायकस्यामलज्ये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक
 र्मरिमंरुल ॥ देहित्वंमेव्ययीक्षावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयनृपाल, कुलोत्तंसदिर
 ण्यरुत् ॥ वप्रास्तनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकनृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते
 पंचजनोदेव, निन्दाचक्रुस्तेश्वरं ॥ स एतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव
 र्ये, समुद्विजयोद्भवे ॥ हरिवंसदरांशंजी, शंखकिंकमलप्रजे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथैजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाता, प्र
त्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेना
कञ्जूपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनहितायेन, कमठस्यान्निमान
ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास
नचिन्दाय, नीलवर्णायसंज्ञवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥
श्रीमत्सिद्धार्थवंशर्क, त्रिशलेयजगत्तमणे ॥ महानादध्वजार्हत, क
ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थरुद्धीर, मोहेज्जहनेनेमृगात् ॥
त्वन्नक्तिदत्तचित्ताय, कमलादेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः
॥ २४ ॥ इति श्रीकृमाकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः ॥

अथ नवपदजाके नलीके देववन्दनमें कहणेका चैत्यवन्दन प
हली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी तम सहु मंत्रमां, नवपद अन्निरामी रे लोय ॥
अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥
अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी
रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उद्धासी
रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, अया सिद्ध
नरूपी रे लोय ॥ अहो अ० ॥ सिद्ध नमो ज्ञवि ज्ञावश्री, जे आगम
अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण वृत्तीमे सोज्जता, सुंदर
सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, बंदू अधिकारी
रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप पु विध
आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवग
नमाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पावण परा,
पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरानी मुनि पांचमें, प्रणमं
चरुजागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनं नवल्ले,
श्रुत अक्ष आवे रे लोय ॥ अ० शु० ॥ ठेके गुण दरसन नमो, आ-

तम शुभ्र ज्ञावि रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ३ ॥ ग्यान नमो गुण
 सातमें, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक
 दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ४ ॥ आठमें चा
 रित्रपद नमो, परज्ञाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक
 दस धर्मनो, जेह ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ५ ॥ नवमे
 वलि तपपद नमो, बाह्यान्धंतर जेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या
 काल अनंतना, जे कर्म उछेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए
 नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुभ्र ज्ञावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप
 श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥
 आसू चैत्रुक मासमां, नव आंखिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥
 नव जुली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥
 ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ०
 व० ॥ श्रीजिनलान्न कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ०
 अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध
 अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ ज्ञाविक मन धारज्यो रे ॥
 धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण
 धरू रे, गुण ठत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दा
 यक सुविलान ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोचिता जी,
 साधू समतायंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥
 ज० ॥ ३ ॥ संवर लावना चरण ठै रे, नप नूतन विधि दोय ॥
 ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख दोय ॥ ज० ॥ ४ ॥
 अमृत नम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविच्छन्न अनु
 जव कारणे जी, नितप्रति नमत कल्याण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, जलिका न० ॥ मन वच काया कर
एकंते, विकथा दूर दरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जनी अरु तंत्र घणे
रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जप्ते, पुण्य ज्ञ
कार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अमसिद्ध नवनिधि मंगलमाता, संपति
सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी बलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो
अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ कर्म
निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इय
जिन ज्ञे आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत
सिद्ध नर आचारज, उवजाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व
साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान
चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज
जज नवपदकुं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कदे यही सार
जगतमें, नर द्वार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र मुज्ज जाव, दिव कारज सि
द्धि तो लायो एइ ऊपाय ॥ तुज नाम पसार्ये आरति व्याधि पुताय,
इग तुज अनुग्रहथी सुख संपति मुज्ज थाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न
मिथै सिद्ध सूरि उवजाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुदाय ॥

डुग विधि चारिन्हें वुध विष तण मन जाय, ये नवपद ध्यावता नि
रुषम शिवसुख लाय ॥ १ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री
गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे जाण्यो एह विचा
र, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ २ ॥ जिनधरम अ
जुरागी चक्केसरि मुखकार, सेवकन्हें आपे सुख संपति परिवार ॥
दिव निहि उदय करि चारित्रनंदी मन जाय, जिनचंद सूरिसर
खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ जैतीसंगुक्त नवपद उलो करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ३ अथवा चैत्र सुदि ३ सें उली सरू
करे, कच्ची तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, बढी होय तो ८ सें
सरू करे, लेकिन आंविल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध
करके मांझणादिकन्हें चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र आपके त्रि
काल पूजा करै. प्रजातसमें राईपम्किमणा करके पीठे वस्त्रोंका
पमिलेदणा करै. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयकें पांचे
शक्रस्तवे देव बांदे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव
चैत्यवंदन करै, वासक्षेप पूजा करे, पीठे केसरचंदनसें पूजा करै.
गुरु पास आयके अष्टुविंशतिके पाठसें राई आलोवे, आंविलका प
चस्काण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसैं
उर गरमपाणीसैं आंविलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु
णोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोंमें इच्चा
मिखमासमणो वं० पाठ कइके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गूणाः ॥

- १ अमोक्तवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
- २ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ६ ज्ञानमंजुल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ७ डुंडुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ८ वज्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादश अ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नचूससियेणं कहिके १२ लोगस्तका काउसग्न करै. एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चखाण पार के आंवल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. गुणनो (१०००) ॥ ऊँ ह्रीं एमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूण पहर दिन रहणैसे तीसरी बेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. पीठै फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पञ्चखाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रति कमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीठै पस्किमणा करै. (सोणे के वखत) पहले इरियावही परक्रमके चैत्यवंदन करै, फेर राउ संवारा गाथा सुणै ॥ निज नही आवे जहां तक नय गुल स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधि निव्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रज्ञान समे की सब कर्मा पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग के डल वास्ते गेहूंकी रो-

टीसैं आधिल करै ॥ उँ हँ ही एमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हज़ार गुणना करै, सिद्धपदका ८ गुण हे, ८ नमस्कार गुरु करावे सो लि० ॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

- १ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
- २ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
- ३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
- ८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नवृत्ति ८ कहेके आठ लोगस्त का काउसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रज्ञात कर्तव्य करै, आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दातका आंघिल करै ॥ उँ हँ ही एमो आयरि आणं ॥ इस पदका दो हज़ार जाय करै, आचार्यके ३६ गुण हे, उर्त्तीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

- १ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
- ४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ५ गान्धीर्धगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

- ७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ कृमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ मृडगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९ द्वादश विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
२६ अस्मरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
२७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
२८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
२९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
३१ आश्रय ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥ इतिपटत्रिंशत् आ०

॥ यह वृत्तीस नमस्कार करके अन्नभूससि० कढ़के वृत्तीस
३६ लोगस्तका काउसग करे, प्रगट लोगस्त कहे. पूर्वोक्त करणी
क्रमसें करै. इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं एमो नवज्ञायाणं ॥ इस पदका २, द्वाजार जाप
करै. हरेमूंगका आंघिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके
नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

- १ श्रीआचारंगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
- २ श्रीसुयगमांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ३ श्रीगणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०
- ४ श्रीतमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ७ श्रीउपामगदत्तामूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ८ श्रीश्रंतगदत्तामूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ९ श्रीश्रणुत्तरोववाडसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- १० श्रीप्रभव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- ११ श्रीविपाकमूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥
- १२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१३ आश्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥

१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥

१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०

२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२२ अविन्ध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२३ प्राणाधामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥

२४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥

२५ लोकविस्तार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः ॥

इस तरे २५ नमस्कार करें, खम्हा हो के अन्नतृ० कदके २५ लोगस्तका कान्तसग करे, प्रगट लोगस्त कदके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं एमो लोए सव साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करें, साधूपद काले वर्ण दे इस वास्ते उमद के बाकलोंसे आं धिल करें, सर्व साधूपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करें ॥

॥ अथ साधूपदके २० गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीतायवे नमः ॥

२ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीता० ॥

३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीता० ॥

४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीता० ॥

- ५ परियद्विरमणव्रत युक्ताय श्रीता० ॥
 ६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीता० ॥
 ७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 ८ अग्निकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 ९ तेजकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 १० वायुकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 ११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 १२ व्रसकाय रक्षकाय श्रीता० ॥
 १३ एकैन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १४ वैश्वेन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १५ तैश्वेन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १६ चोश्वेन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १७ पंचैन्दीजीव रक्षकाय श्रीता० ॥
 १८ लोभ निग्रहकाय श्रीता० ॥
 १९ क्रमागुण युक्ताय श्रीता० ॥
 २० शुभज्जावना जावकाय श्रीता० ॥
 २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीता० ॥
 २२ संजमयोग युक्ताय श्रीता० ॥
 २३ मनागुण युक्ताय श्रीता० ॥
 २४ बचनगुण युक्ताय श्रीता० ॥
 २५ कायगुण युक्ताय श्रीता० ॥
 २६ स्त्रीतादि द्वाविंशति परीतद्व सङ्ग तत्पराय श्रीना० ॥
 २७ मरणांतनुपतर्ग सङ्ग तत्पराय श्रीना० ॥ इति साधुगुणा॥

इति वजे २३ नमस्कार करै, २३ लोगस्सका काउमग करै,
 प्रगट लोगस्स कडिके पंग. पंगि धूवोंक करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाएसें १०८ होता है, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हैं ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं एमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै, दर्शनपद सपेद वर्ण है इस वास्ते चावलौंका आंबिल करै, सम्यक्तके समस्त गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सबसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसदर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थ ज्ञानृत्सेवनारूप सद० ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद० ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सद० ॥
- ५ शुश्रूपारूप सद० ॥
- ६ धर्मरागरूप सद० ॥
- ७ वैयावृत्तरूप सद० ॥
- ८ अर्द्धविनयरूप सद० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सद० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सद० ॥
- १३ साधूवर्ग विनयरूप सद० ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सद० ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सद० ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सद० ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सद० ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद० ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूप सद० ॥

- १० संसारे जिनमत स्थित साध्यादि सारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादूषण रहिताय सद० ॥
 २२ कांक्षादूषण रहिताय सद० ॥
 २३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद० ॥
 २४ कुट्टप्रशंसादूषण रहिताय सद० ॥
 २५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद० ॥
 २६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 २७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 २८ वादीप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 २९ नैमित्तिकप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 ३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 ३१ प्रज्ञायादिक विद्यानृत्प्रज्ञावक सद० ॥
 ३२ चूर्णग्रंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद० ॥
 ३३ कविप्रज्ञावकरूप सद० ॥
 ३४ जिनसासने कौसलता नूपण सद० ॥
 ३५ प्रज्ञाविनानूपणरूप सद० ॥
 ३६ तीर्थसेवानूपणरूप सद० ॥
 ३७ स्त्रैर्यतानूपणरूप सद० ॥
 ३८ जिनसासने जक्तिनूपणरूप सद० ॥
 ३९ नपशम गुणरूप सद० ॥
 ४० संवेग गुणरूप श्रीत० ॥
 ४१ निर्वेद गुणरूप श्रीत० ॥
 ४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीत० ॥
 ४३ धार्मिका गुणरूप सद० ॥
 ४४ पद्मतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद० ॥

- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद० ॥
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद० ॥
 ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
 ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
 ५० राजाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥
 ५१ गणाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५२ बलाज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥
 ५३ सुराज्ञियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥
 ५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
 ५६ सम्पत्तचारित्रधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सद० ॥
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्कारमिति चिंतन श्रीसद० ॥
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद० ॥
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद० ॥
 ५९ चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद० ॥
 ६० चारित्रधर्मस्य ज्ञाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
 ६१ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतनरूप स० ॥
 ६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्यानयु० श्रीसद० ॥
 ६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्यानयु० सद० ॥
 ६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्यानयु० स० ॥
 ६५ सचजीव कृतकर्माणि वेद्यतीति श्रद्धानस्यानयु० स० ॥
 ६६ जीवस्यास्ति निर्घाणमिति श्रद्धानस्यानयु० श्रीस०
 ६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्यानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥
 ॥ इति वजे नमस्तु नमस्कारकर गवमा दोके अन्नबू० कदके

६७ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कइके पारे. पीठे
पुर्वोक्त करणी करै. इति षष्ठ दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै.
ज्ञानपद उज्ज्वल वर्ण, तंडुलका आंघ्रिज करै, इकावन जेद ज्ञानपद
के चिंतव के समस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदको ५१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंदी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनैंदी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंदी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंदी व्यंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनैंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंद्रीईदा मति० ॥
- १२ रसनैंद्रीईदा मति० ॥
- १३ घ्राणेंद्रीईदा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंद्रीईदा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंद्रीईदा मति० ॥
- १६ मनेकरीईदामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १८ रसनैंद्रीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

- २० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
 २१ श्रोतेिंद्रीअपाय मति० ॥
 २२ मनैनापाय मति० ॥
 २३ स्पर्शनेिंद्रीधारणा मति० ॥
 २४ रसनेिंद्रीधारणा मति० ॥
 २५ घ्राणेिंद्रीधारणा मति० ॥
 २६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
 २७ श्रोतेिंद्रीधारणा मति० ॥
 २८ मनोधारणा मति० ॥
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३० अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
 ३३ सम्बक् श्रुत० ॥
 ३४ मिथ्या श्रुत० ॥
 ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
 ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
 ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
 ४० अगमिक श्रुत० ॥
 ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
 ४२ अतंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
 ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
 ४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ बह्ममान श्रवधि० ॥

४६ दीयमान श्रवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती श्रवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती श्रवधि० ॥

४९ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥ इति पं० ज्ञा० ॥

इस तरे ५१ नमस्कार करे, गुरु होके अन्नबू० कढ़के एका
वन लोगस्तका काउसग करे, एक लोगस्त प्रगट कढ़के पारे, पीठे
पूर्वोक्त करणी करे, इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करे,
चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण दे, इसाँसे तंजुलका आंखिल करे, सत्तर
जेव चारित्रपदके चित्तवके नमस्कार करे,

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राथ नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ श्रद्धादानविरमणरूप चारि० ॥

४ भेषुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूप चारित्रेच्यो नमः ॥

७ आर्यधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृदुताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥

- ११ संयमधर्म्यरूप चारि० ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ अकिंचनधर्मरूप चा०
- १५ वंजधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रश्वीरकासंयम चारि० ॥
- १७ उदगरकासंयम चारि०
- १८ तेजुरकासंयम चा० ॥
- १९ वाजुरकासंयम चारि० ॥
- २० वनस्पतिरकासंयम चारि० ॥
- २१ वेङ्दीरकासंयम चारि०
- २२ तेङ्दीरकासंयम चारि० ॥
- २३ चौङ्दीरकासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेङ्दीरकासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरकासंयम चारि० ॥
- २६ प्रेकासंयम चारि० ॥
- २७ उपेकासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रज्ज्जादि परवत्न त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ उपाध्याय वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३५ तपस्वी वेद्यावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥

- ३६ लघुशिष्यादि वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा०॥
 ३७ मिलाणसाधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३८ साधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥
 ३९ श्रमणोपासक वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा०॥
 ४० संघवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४१ कुलवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४२ गणवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥
 ४३ पशुपंरुगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४४ स्त्रीदास्यादि विक्रयावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
 ४६ स्त्रीश्रंगोपांग निरीक्षण वर्जनरूप चारि०॥
 ४७ कुरुयंतरसहित स्त्रीदावन्नाव सुणन वर्जन ब्र०
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञेग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५१ श्रंगविज्ञूपावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
 ५२ श्रणसण तपोरूप चा०
 ५३ उणोदरी तपोरूप चा० ॥
 ५४ विनसंखिवरूप चा० ॥
 ५५ रसत्वाग तपोरूप चा० ॥
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥
 ५७ ननेखणा तपोरूप चा० ॥
 ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप चा० ॥
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥
 ६० वेद्यावृत्ति तपोरूप चा० ॥

६१ सिञ्जाय तपोरूप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरूप चारि० ॥

६३ उषसर्ग तपोरूप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रज्ञेदाः ।

॥ इत तरे ७० नमस्कार करै, खमा हो के अन्नवूससि०
७० लोगस्तका काजसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पूर्वोक्त क
रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नैं हँ। एमो तवस्त ॥ इत पदका २ हजार गुणना करै,
तपपदका उज्ज्वल वर्ण इत वास्ते चावल्लोका आंविज करै, पञ्चास
ज्ञेद तपपदके चितव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपज्ञेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यजणोदरी तपज्ञेद तपसे नमः ॥

४ अर्च्यंतरजणोदरी तपज्ञेद त० ॥

५ इयतपवृत्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

८ जावतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

- १० कायकिलेस तपजेद तप० ॥
- १० रसत्याग तपजेद तप० ॥
- ११ इंद्रिकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
- १२ स्त्री पशु पंरुकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त० ॥
- १३ आलोयण प्रायश्चित्त तप० ॥
- १४ पम्क्कमण प्रायश्चित्त तप० ॥
- १५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ॥
- १६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥
- १७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥
- १८ तप प्रायश्चित्त त० ॥
- १९ जेद प्रायश्चित्त त० ॥
- २० मूल प्रायश्चित्त त० ॥
- २१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥
- २२ पारंचिय प्रायश्चित्त त० ॥
- २३ ग्यान विनयरूप तप० ॥
- २४ दर्शन विनयरूप तप० ॥
- २५ चारित्र विनयरूप त० ॥
- २६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥
- २७ वचन विनयरूप त० ॥
- २८ काय विनयरूप त० ॥
- २९ उपचारक विनयरूप तप० ॥
- ३० आचार्य वेयावच्च त० ॥
- ३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥
- ३२ साधू वेयावच्च त० ॥
- ३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥

३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥

३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥

३७ संघ वेयावच्च तप० ॥

३८ कुल वेयावच्च त० ॥

३९ गण वेयावच्च तप० ॥

४० वायणा तपसेनमः ॥

४१ पृच्छना तपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥

४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त तपः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥

४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥

४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥

४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥

५० अन्त्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद ज्ञेयाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै. खना होके अन्नवूससि० इत्यादि कइके ५० लोगस्तका कानसग करै. एक लोगस्त प्रगट कहे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घनी देखेके अन्ना वस्त्र आभूषण पहरेके तिलक करेके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करेके दायेके मौली बांवेके अक्षत सुपारी श्रीफल नवद्य यथाशक्ति रोकड़्य लेके नवकार गुणता जया गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करेके ग्यानपूजा करै

धीठै प्रमोदवत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करनेकी विधि आगे लिखी है ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थं गुरु पास जानेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंजल करै. सिद्धचक्रजी के चो तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे. पहिले गढ़में अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद९ के रंग सुजव गुण प्रमाणसें रत्न चढावे नर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणेश रंग सुजव धीठुरेसे नरके चढावै पंचरंगी ए धजा चढावै, दूसरे बलयमें सोले श्रीफल अथवा सु-पारी चढावै. तीसरे बलयमें ४० ठूहारा चढावै, नव निधानोंकी जगे नव बने फल चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्कान्न रंगरं गके चढावै. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. नर जिनमंदिरमें बाहिरले मंरुपमें ५ ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंजल रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करै, नवपद जीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलबंगल गीतग्यान गावै, बाजि न वजावै, महा महोत्सव उदार चित्तसें करै, मंगलदीप आरती प्र मुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंजल विधिः ॥ अब यत्नमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणकी विधि आगे लिखी है तथा उद्यापनमें ग्यानज्ञातिके कारण ए पूजा ए बीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव जिल मिल ए रुमाख ए सोरा ए मिजासणा ए थापना ए चंद्राया ए पू गीया ए आरती ए कलग ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रति मा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नवर चीज वणवावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुप दका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुभसंस्कारमें स्वरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ३ से लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम है. उत्तमताका कारण ऐसा है—वारे महीनेमें तीन अष्टादश महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अष्टादश तो सास्वती है. आठमसे पूनम तक इन दोनों महीनोंमें व्यास निकायके देवता नर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर छीपमें जाते हैं, (पुन्याहंर) कहते जये अष्ट ऽव्यसे पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसे अनेक तरेसे नक्ति करै, पीठै नवमें दिन अणेर जन्मकूं स फल मानते जये अणेर देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अष्टादश आसाढ चोमासेकी (१४) पंडितै (४९) दिन जाणैसे संवत्सरी पर्व साचवणेकूं (७) दिन तक अष्टादश महोत्सव करै. लेकिन यह अष्टादश सास्वती नहीं कही, कोइ वखत व्यास निकायके देवता ए कठे होकर नहीं जाती जावै, पड़ली पीठै जाती करलेवै ॥ यह नवपदजी की नुली शाश्वती अष्टादशमेंही की जाती है, नवपद माहात्म अधि कार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसे उठार करके जयजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जगद्वाहूस्वामीने इसको प्र सिद्ध करा, इस वास्ते जयजीवोंको यह तप प्रमाण है, नर जो अ जवी अपनी अपनी कुशुक्तिये लगाकर खंमन करते हैं सो तीर्थ-करका वचन उत्थापणैसे अनंतसंतारमें जमेंगें. सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया है, हे गौतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं नर उन सूत्रोंमेंसे एक हरफकेली वयार्थ अर्थकूं तोमके नया कटपन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगड सो अनंतसंतारी होगा (सूत्रनाम किसका है) ॥ सुनंगणदररड्यं, तडेवपत्तेयबुद्ध ड्यंच ॥ सुयकेवलिनारड्यं, अजिन्नदसपूषिणारड्यं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधमेका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियों का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा जयेकूं जगवानने सूत्र कहा है. सूत्र १, पयत्रा ९, आगन ३, सिद्धांत २, ग्रंथ ११, इत्यादिक

॥ एक कोटि पुनः शतैकैव शतैकैव शतैकैव शतैकैव ॥

॥ የክፍሉን ኢየሱስ ጠላቱ ጭፍ ኃሳብ ክፍ ॥

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीता (८) अष्टमोऽध्यायः ॥

(कृतयुक्त गद्यगोचर) अष्टादशशतिकां प्रणीतः (विमल)
पद्मिनी, प्रवर्तन, प्रवर्तन, प्रवर्तन, प्रवर्तन, प्रवर्तन, प्रवर्तन, प्रवर्तन

वर्ग प्रथम क्र. (१) श्री अष्टावर्ग गीताय नमः

(३२५ पृष्ठ) २००० गुण (४१) वीस वर्ष के. आर. आर.

२३ : २ गुणका नमस्कार करे, १९ गुणात्मकता काजसमा करे, आ

उत्तर (ब) : प्रस्तावित नवीकरण, १०० करोड़ रुपये के

॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

የዘደገበ 'ከጠላት' ጋር ጋር

‘१३६ १२ ०१६ ॥ ५१५६३६

॥ १ ॥ अथ भगवत्पदं

५. एतच्छ्रुत्वा ॥ हृद्यते हृद्यते ॥

ਜਲਦੀ ਹੀ ਮੁਕਤੀ, ਭੀਖ ਭੋਜਨ

(॥ २ ॥ एतद्विषयं विस्तृतं, '३

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ਭਗਤ ਰਾਮ ਅੰਗਦ ਸਿੰਘ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

சுருத்திச் சிறுவர் குழுவைப் பற்றி

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

የደብዳቤ ስም ይጻፉ

ತೆಚ್ಚಿನ ಹೀಗಿರುವ ಸ್ಥಳದ ಪು. 26 ಹರಿಸಿ

1212

此

出生到成年

കുറുകിലെ

三

५।५।५।

一一一

[illegible]

॥५॥

hkh

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर बरक चढा सुपारी चढावे,
 एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाम्नेयजिनेशत्वं, नंदायत
 सितांशुकः ॥ यथाकुमुदतीनेता, नंदायतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं
 श्री अर्ह ऐ श्रीरूपज्ञदेवस्वामी वेदिकार्पणं तिष्ठस्वाहा ॥ १ ॥
 उपाध्वमजितं ज्ञत्वा, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्धेधितं ज्ञान, कंद
 धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥
 श्रीशंजवंप्रपन्नाये, समयं ते सदादरात् ॥ ते संसारवनान्मुक्ति, समं
 ते सदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीसंजवस्वामी० ॥ ३ ॥
 ये जिनंदनते तीर्थे, राजपादसन्नाजनाः ॥ विलसंति चिरं तेत्र, राजपा
 दसन्नाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीअज्नि० ॥ ४ ॥ पूजि
 तां ह्रीं द्यौमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमते तव लीलादः, कांतारा
 जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री ऐ श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ
 सुदृष्टीनां, जूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसि पूषेव, जूरिशोभात
 पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीपद्मप्रज्ञ० ॥ ६ ॥ सुपार्थ
 तत्श्रुतं श्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंति जंतवः शान्ता, दर्पकोप
 क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीसुपार्थ० ॥ ७ ॥ जवांश्चंद्र
 प्रज्ञेदेण, यैरज्ञाजिसमुन्नतः ॥ यैरज्ञाजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥
 ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ आचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधे त्वन्निविप्राप्य, प्रमाद्यंत
 समाहितः ॥ ये ते श्रेयः श्रवंशस्त, प्रमाद्यंत समाहितः ॥ ९ ॥ ॐ
 ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवते शीतलत्वाये, देवसंपन्न
 केवलं ॥ अपि मुक्तिर्न वै तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री
 अर्ह ऐ श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूज्जाज्ञां, परमोक्तगतिर्न वा
 न् ॥ अनंतान्तत्वविश्रान्तं, परमोक्तगतिर्नवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्री
 अर्ह ऐ श्रीश्रेयांस० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्णी, नीरजा रुदनक्रमः ॥ द
 त्त्वं दिरहं मोदं, नीरजा रुदनक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह ऐ श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वये, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ अपि
 दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीवि
 मल० ॥ १३ ॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र
 यीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीअनं
 त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि
 न०, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीधर्म० ॥
 ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनादेहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेस्कं,
 सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥
 कुंभुनाश्रस्तुपंथानं, विधुतारोवृषादृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि
 धुतारोवृषादृतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीकुंभु० ॥ १७ ॥
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनाश्रकुधीर्जव्या, व
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीअर० ॥ १८ ॥ नां
 ह्रिपद्मसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेजियतेमल्ले, प्रतिपन्न
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥
 श्रीगुव्रतजिनाधीश, मक्षमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मक्ष
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥
 देव्योपित्वद्गुणोज्ञाना, सद्दामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेन्नक्त्या,
 सद्दामांदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्रीनमि० ॥
 ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावपै, शंमितादानवारणा ॥ श्रीने-
 मेजनताराध्व, शंमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं
 ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकृत, महाद्वारतरंगिताः ॥
 नाट्यंतिचरित्रंते, महाद्वारतरंगिता ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं ऐं श्री
 पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ वि
 ब्रन्नमेरुनिम्सीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्धं
 ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठस्वाहाः ॥ २४ ॥ पीठे

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीठै बलवाकुल दैके दिग्पाली
को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चैत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वालीका जन्मकल्याणक
जया हे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसँ समझके जल
जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एतैही शक्तिवंत
श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवंतके कल्याणक जो जो
होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधी-
श्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसँ लेकर नि-
र्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महो-
त्सव पूजन करणा चाहिये, इससँ धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें
परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रोपूनमपर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हे॥

प्रथम चावलके पूंजसँ सेतुंजयपर्वतको स्थापन करै (तिस-
पर) पट्टा रखके श्रीपुंमरीक गणधर (वा) श्रीरूपनदेवस्वामीका
त्रिव स्थापन करै, अकृत मोतियोसँ पर्वतको बधावै, केसरचंदनसँ
पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रद-
क्षिणा देवे (पीठै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) बीस (२०)
तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणलदर्श ॥ चउठठठअठम,
दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अथ प्रथम १० प्रकारसँ पूजनका
अधिकार लिखते हैं, एकाग्र चित्तसँ अष्टमंगलीक आगे रखके
श्रुद्धोदकसँ मूलप्रतिमाको न्दवण करावै, पीठै श्रीसंघ स्वप्ता होके
(१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला
चढ़ाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि
सब चीज उत्कृष्टसँ दस २ जघन्य नारेल १ सुपारी १० तर फल

फूल यथासंज्ञव चढावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध
 गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदै, १० ख
 मासमण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः) इस पदका
 १० वेर नमस्कार करै. पीठै (श्रीसेतुंजय पुंमरीक आराधनार्थ करै
 मि काउसगं अन्नबूससि०) कहके १० लोगस्तका काउसग करे
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उछव होय वखत कम रहे तब
 एक लोगस्तका काउसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका
 स्तवन कहे) पीठै अनेक प्रकारका वाजित्र बजावै ॥ इति प्रथम
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै (बीस । तीस । चालीस । पच्चास ।
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा (इतनाहो विशेष हे) दूसरी
 पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०
 की जगें ३० की विधि करै. चौथी पूजामें १० की जगे ४० की
 विधि करै. पांचवी पूजामें सब विधी ५० की करै. तथा (सिद्ध
 क्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणनो करै. उ-
 त्कृष्टें पांचूं पूजामें जुदी २ धजा चढावै, जघन्यसे पांचूं पूजा किये
 पीठै १ धजा चढावै । यह तप गुरुके मुखसे लेके जघन्य १ वर
 स, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त
 तपस्या करै. गुरुके मुखसे उपदेस सुनै, संपूर्ण तप हुआं पीठै
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुभक्ती करै, सा-
 हमीवचन करै (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरूपजदेवस्वामी
 के प्रथम गणधर श्रीपुंमरीकजी पांच कोटी साधू साथ अक्षय
 सुखको प्राप्तजये. (इसवास्ते) जरत प्रथम चक्रवर्तीने चैत्री
 पूनमको आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि
 या. यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसें इत जन्ममें अनेक सुख
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पूत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परमंभमें देवादिक ऊँछि प्राप्त होय, कीलकर्मों होणेंसे अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति त्रै मास पर्वधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(द्वाज) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसानलै, पुंमरगिर रे गार्हस हूं सुज जाजलै ॥ मति सुरगिर रे संहस जीज जो मुख दु वै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ (उल्लाखो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां सुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण वै अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण जापियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरैराखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्ति नरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंमरीक गुणगण निलो, समदम रत रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ (उल्लाखो) गुण जलो अनु क्रम आदि जिनवर पास मंजम शिवपुरी, पुंमरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुपेंते संचरी ॥ पण कोमि साथे विमलगिरिवर मुग ति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंमरीक कदाव ए ॥ २ ॥ (चाल) दिव चैत्री रे पूनम पर्व सुदामणो, मेरुंजे रे आरा ध्यां फल हुवे यणो ॥ मनसुंदे रे आपणपे थानक रहीं, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सहो ॥ (उल्लाखो) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म ध्यान मने धरै, बहु जाव जतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ जावना जावै तेण दिवसे पंचकोमि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ (चाल) दम बीता रे तीत चालीस पूजा कही, पन्नास्ता रे आवक तिरती मग्दही ॥ चउथउठे रे अठम दमन डयालसे, पूजा कल रे अनुक्रम एमुक मन वसै ॥ (उल्लाखो) मन वसै पूजकपूरयूपे मासखमण फलै बली, सामन्न

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जेम
 गुरुमुख सुणीअवै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंणी सुणो जवि
 थण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि आपी, तसु
 ऊपर पद्मादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी
 आपी निवेरो ॥ ५ ॥ लेबुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय बधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा
 वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरै करि आठ ॥
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥
 ऊजा अई नवकार गुणंता, दसर जैती तिलक करंता ॥ माला
 पुष्प पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप नखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल)
 शक्रस्तव पांचे देव बाँदै, जघन्यना वंदण पाप ठैदे ॥ दसे नमस्का
 र करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनैइ सेती ॥ ९ ॥ आराधिया
 काजे कानसग, जिणे किये जाजै कर्मवग्ग ॥ लोगस्सज्जोय दसे
 चखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज
 एह, इसी परै बीज। च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,
 एक चित्त सूधै शुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी
 जै, एकेरू पूठे अथवा गिणिजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पर्वा
 प्रभु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा
 योगै संवपूजा आदरो, साहसावच्छल करो जविका जवतमुइ ला
 लावरो ॥ संपदा सोइग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहु लवै, आश्रमर
 माणिक सीस सुपरे साधुकोरति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त० ॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करग विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहली वने स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुज
 धनी शुजदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपत्रदशकरे. नंदीश्वरद्वीपके च्यारु
 दिनि नरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षावै अमावस ९ (५२) यावन उपवात

करै, जिस दिन जो मादाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीस्यन्ताननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) चार नामकुं ४ बेर ऊलटा, ४ बेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणसें एक उली होय, ४ उली करणसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै, नंदीश्वरद्वीपका मंरुल वणावे, पूजा करावे, इत्यादि महोच्चरकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीच्छल करै, मंरुलकी विधि एकेक दितीमें (१३) तेरे २ पदामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, चारुं दिसा में चार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, चारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे, इनको पूजामें ५२ आपना, ५२ नारेख, ५२ पान नागरखेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ वावन लेवे, क्रमसें एकेक काव्य पदके जल चंदनादि अष्ट इ व्यसें अंगपूजा तथा अन्नपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैशाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके मर्दानेमें मिति वैशाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध है, इस दिन श्रीजयदेव स्वामीके चारित्र्य ग्रहण किया पीठे वारे मासीका पारणा सोमयशगजाके पुत्र श्रीश्रेयानकुमरजीके द्वापरसें इक्षुरससेती ज्ञया, उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साहीवारे कोमि सोनड्योकी वर्षा ३, आका समें अदोदान २ ऐसी उदघोषणा ४, देवडुंडुनी वाजित्र ५, एमे पांच व्य प्रगट किये, श्रेयानकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालम जई. इस दानके प्रज्ञावसे श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंधमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणेसे वस्त्र आभूषण पहरेके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पीठे गुरुके मुखसे एकासणादिकेक पञ्चस्काण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको बहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, नर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जो जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उनोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंध एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें ढाँटे. इस शांतिपूजाके कराणेसे मारी, देजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कञ्जी श्रीसंधमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहनी होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. (इससे) आवि व्याधि ग्रहादिककी पीना सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आपाद मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ आपादसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रतिष्ठित है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्थकपोषणानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्रनुर्मासकर्मनानि ॥ १ ॥ (अथ) जौनआएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंमलानि अलंकारभूतानि विद्यन्ते ॥ अहो जग्य प्राणी जीवो यह
सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य दे सो चोमासेके मंमल दे, अ
र्थात् अलंकार समान दे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव
सामायक पम्कमणा पोसा करे, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना-
प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पावै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ
नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसँ वण
आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोइजी प्रकारसे धर्मका
उद्योत करणा चाहिये. जिससे सब श्रीसंघमें कट्याणमाला प्रगट
होय, उर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों
जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववाँदै, पीछे गुरुके पास जाके चोमासे
पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका लोगन
लेवै, सांझकूं चोमासी पम्कमणा करे. इस सुजब काती चोमासे
फागुण चोमासे कोंजी सेवन करै ॥ इति चतुर्मासपर्वधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ जग्यजीव मम्मार्ड आदि क्षेत्रोंमें तरे
की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते
हैं, इस माफक सब जगे तरे की पूजा कराणी चाहिये. उर देस
देसमें श्रावणमास इन महीनेमें केइ तरेकी तपस्यायें करती हैं.
जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथमें
उल्लेख करके संक्षेपविधिसँ इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ वृद्धक तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुष्पिष्ठ १, एकाक्षण १, नीवी १, आश्विन १, उपवास १,
(यह १ उन्नी) इस तरे पांच उन्नी करे. तपोदिन २५. उजमणें
२५ लाडू चढ़ावे ॥ इति इंद्रिजयतप ॥ १ ॥

एकाक्षण १, नीवी १, आश्विन १, उपवास १, इस तरे

उन्नी च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लहू चढावै ॥ इति कपायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंविल १, उपवास १, इसी तरे उन्नी ३ करै. तपो दिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें झा नपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतपः ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठस १, उठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलठाणो १, दति १, नीवी १, आंविल १, यह एक उन्नी. इसी तरे उन्नी आठ करै. तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहामा करायके ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूत्रतपः ॥ ७ ॥

जाइवा यदि चउयसैं लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकास णा अथवा विआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल मदा कलसमे जरै, संवत्तरीके दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंविल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनमः) उस पदका २००० गुणना करै, गुरु के पाम स्त वन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेंगे) ऊजमणें ज्ञानके उपकरणसैं ज्ञानज्ञकि गुरुज्ञकि करै. इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुदिपक्षके पांचमके दिन श्रीनिमि अंबिका पूजापूर्वक पांच

एकासणादिक तप करै, अंत्रिकादेवीकृंवेस चढ़ावै॥ इति अंधिकातपः ॥

सुदिपक्षके अग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै, इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंविल ८, एवं दिन १६, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, इति सर्वगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०, ऊजमणें सोनेका अथवा रूपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-
आग्यकलरवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पमिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसे पूनम पर्यंत (१५) उप-
वास करै, जो तिथि जूले सो तिथि नर करै, ऊजमणें एकसो बीस
लक्ष मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः ॥ १४ ॥

वरसातका अग्यार मास नर पोष, चैत्र, यह पट मास टा-
लके ठोटी पांचमतप सह करै, अंधारी उजवाली पांचम मास ५
लग एकासणादि तप करै, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति ठोटी
पांचमतप ॥ १५ ॥

सुदि पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै, उपवास
के दिन देव वांछणादिक क्रिया करै, ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोप-
गरण पक्षान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा
करावै, साहमी बगल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पमिवा, बीज, तीज, चाथ्र, पांचम, एकाश-
णादि तप करै, अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै, इस
तरे वरस १ तप करै, ऊजमणें चावलसें अशोगवृक्ष लिखके पूजा
करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ यदि ३ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण
यदि ३ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ कार्ती यदि ३ श्रीअ-

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक
उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलेंसे लोकनाल बणाके, ता
ते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसकों) सोनेरत्न
का मुगट चढ़ावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी
पूजा करै, नैवेद्य चढ़ावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इ
स तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रभरी पूजापूर्वक आराधिय,
ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चौबीस चढ़ावै ॥
इति अष्टापदपावनीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंवल करै,
ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लहु देव आगे चढ़ावै ॥ इति
अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास
अथवा बीस एकाशणा करै, ऊजमणें अखंमिit घी धारपूर्वक ती
ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंमितदशमीतपः ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक
एकाशणा, नीवी, आंवल, वा उपवास ११ करै, ऊजमणें ११ अं
गकी पूजा करै ॥ इति आङ्गारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकाशणादि १४ तप करै, ऊजमणें
ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढ़ावै ॥ इति १४
पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसैं
पारणा (दूसरे तेले) तारेका पारणा (तीसरे तेले) लापशीका
पारणा (चौथे तेले) लहूलें पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पार
णा, पाणें प्रथम माधुर्गें बहिराके पारणा करै ॥ इति पंचानृतते
सातपः ॥ २४ ॥

करै १, लोच करावै २, तेलका तप करै ३, सर्व मंदिरोंमें जगवंत की जावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५. यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्यूपणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवत्तरी पर्व आराधन करणोकूं आठ दिन अठाइ महो छव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके राज्ञीजागरण करावै, प्रज्ञातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीठै पुस्तकआदिक पुरुषसर्वसें उत्तम वस्त्र आचूषण पहरके सुगट ठत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बनाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीकरचित आलमें पुस्तक धरके अपने दोनुं हाथमें आल धरके दोनुं तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आचूषण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिणखना होके विनयसंयुक्त पुस्तकको ममस्कार करके आगे रखै. श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपदह वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ थोड़ी नक्षत्रंजा इत्यादिक सबका आरंभ ठोमावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी नालेरादिक की प्रज्ञावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिले पूजा करै, चौदसके दिन संवत्तरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकोठ होकर सर्व मंदिर दरसन करणोको जावै ५, सचित्तका परिहार करे ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चनुठ, ठठ, अठमादिक तप करै ८, अपने चित्तके अनुसार जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवत्तरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघसें खमावै १२, पारणोके दिन पोतह पन्निक्मणोवाले साधमीजाइ;

थोंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवहरी दान देवै, साहमी वक्त करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसे आराधन करनेसे आठ जवसे मोक्षस्थानकू प्राप्त होता है (नर) केइयक जवज्जीव अत्यंत शुद्ध जाव भरतेजये अठमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीकों बांचते है नर सुणनेवाले प्रमाद निडा वि कथा ठोसके अठमादि तप करके एक चित्तसे शुद्धजाव रखके इक बीस बेर सुणते है, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जव सि द्विस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूपणपर्वका महात्म जो जव्य जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रजावीर्य है, अपनी लक्ष्मीसे धर्मका उद्योत करते है, उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है नर नमस्कार करते है ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसे उद्धार कियानया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्याय है. सर्व श्रीसंवके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीनद्रवाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय है, जेसे सर्व मदीके बालू के कण होय उससे जी एक सूत्रके अनंते विषय है. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीन करके कहे तोजी महात्मका एक ग्रंथ जी कह सकता मदी. ऐसा इस पर्वका महात्म जान जो जव्यजीव शुद्ध जावसे सेवन करेंगे सो अनेक तरे से इहि वृत्ती सुख सोभाष्य कों प्राप्त होंगे, नर परजवमें देवादिक इहि पावके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूपणपर्वधिकारः ६॥

॥ अय आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ३ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की उन्नी तथा अष्टापदजीकी उन्नी विधिसंयुक्त करै, सो सब विधि पढ़ली लिखी है उसी माफत करै॥

॥ अय कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिती कार्तिक वदि अमावस है सो दी-

यमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कबसे ज्ञया
 सो लिखते है. चौबीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु
 साध्वी साथ विचरते थे अंतकी चौमासी मध्यमपावापुरीमें आ-
 यके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व वांत ज्यजीवोंके सामने निरू-
 पण किया, फेर अपना अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शु-
 कशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख
 के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेंकुं जेजा. पि
 ठानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते
 जये बहुततर वरसका आयु पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि
 ठली दो घन्टी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये. जिस समय
 जगवंतका निर्वाणकल्याणक ज्ञया उस समय चौसठ इंद्र देवताग
 णके आणे जाणेसें वना उद्योत ज्ञया, नर जो राजा पोषयमें बैठे
 जयेथे सो ज्ञावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके उद्य-
 उद्योत किया. एकमके प्रज्ञात समें देवतोका आणा जाणा नर व
 चन सुणके श्रीगौतमस्वामीकुं केवलज्ञान उत्पन्न ज्ञया. दूजके दिन
 सुदर्शना बहिन अपने ज्ञाई नंदिवर्द्धनराजाकुं घरमें बुलाके जीमा
 था, शोक दूर कराया जिससें ज्ञाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह
 दीवाली पर्व वना उत्तम है. इस दिवालीकी रातकुं जो गुणना
 करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥
 श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः
 ॥ इस एक २ पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागर
 ण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण
 कल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै, इत्यादिक उदार
 चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उद्यव करणा चाहियै ॥ दिवा
 लीका स्तवन्त पूर्व लिखा है सो पढ़ै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन राय ज्ञानजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ ज्ञी नहीं है. सर्व तत्त्वमें ज्ञानके समान कोई तत्त्व नहीं. मोक्षमार्ग साधनके ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिकरोग सर्व दूर होय. अतुक्रमें ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होऐसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जैसे वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चौकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रमुख चढ़ावै, पांच बत्ती का दीपक चढ़ावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढ़के वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढ़ावै तथा पूजा विटांगणादि चढ़ावै. (ज्ञानपूजा लिखते है) नमंतिसामंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविदेयपूर्वि ॥ जनीयचित्तमणिदामएहिं, मंदारपुष्पंपसवेहिं नाणं ॥ १ ॥ तदेवसद्वामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेदिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतितनमंतिनाणं, नाणस्तत्ताज्ञायज्जवरकथाय ॥ २ ॥ यह गाथा पढ़के ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीठे ज्ञानपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के । डरियावही पनिकर्म । लोगस्त कडे । घेठके । मुंडपत्ती पनिलेदे । अणूजाणह मेमिजगदं (इत्यादिक) के वादणा देवै, पीठे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञात ज्ञान

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु जवजलनिधि तारण ॥ सं-
 यमतप आनंदकंद अज्ञान निवारण, मार विकार प्रवर्द्ध ताप तापि-
 त जिन तारण ॥ १ ॥ स्याद्वाक् षण्णाम धर्म्म परलति धम्मिञ्चोद्धण,
 साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोद्धण ॥ मोह तिमरविध्वंससूर
 मिथ्यात्व पणासण, आत्मशक्ति अनंत शुद्ध प्रज्जुता परमासण ॥
 ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, जेद प-
 चास कायोपसमिक एक कायिक निरमल ॥ दोष परोक्ष प्रथम तिहां
 डुग परतक्क दीसत, सकल प्रतक्क प्रकाश ज्ञास भुव केवल अपर-
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञाशै, बाहिर
 अंग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखाश्रीमिर्युक्ति ज्ञाप्य पन्नि-
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां-
 गो सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदो अनुयोगद्वार शाख मा-
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव उपगारी, अज्यासो आग-
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत
 अवाधै, देवचंड आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोहा-
 मणो सकल मोक्ष सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा-
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । एमो
 त्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत्तु सिद्धा० । कह-
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवी-
 यराय० कहै, वंइणव० अन्नबू० कहके एक नवकारका कानसगग
 करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरूवि-
 याणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपं-
 चमोए, पूयातवोगुणरवाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके
 (ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि कानसगगं) तस्सुत्तरी० अन्नबू०-
 कहके १ लोगस्सका कानसगग करै, (पारके) बोधागाधं० (इत्या-

दिगायापढके) पीठै ॥ आज्ञाशिखोद्विधनाणं । सुयनाणंचेवतु दिना
 णंच ॥ तहमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा
 कहके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,
 स्वस्त लोकालोकाज्ञास्करश्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरै पांच
 नमस्कार करै, धिरता होय सो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार
 करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिखया है ॥ उस माफक करै
 ॥ पीठै (उँ ह्रीं एमोनायस्स) इस पदका २००० गुणना करै. कम
 धिरता होय तो इधारे अंगकी सिझायों पढै वा सुणें, सो लिखते है॥

॥ प्रथम आचारंग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल इठीलादी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ
 चरांग रे ॥ सुगणनर ॥ वीर जिनंदे जाणियो रे लाल, नववाई जास
 नवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाअं वारंदार रे ॥ सु० ॥
 बिनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०
 व० ॥ १ ॥ सुयखंध दोष नै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०
 ॥ नद्वैशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे ॥ सु० व० ३ ॥
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अटार हज्जार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप
 दने ठेइसे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० व० ४ ॥ गमा अनंता
 जेइमां रे, बलिखि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो नै इहां
 रे लाल, आवर अनंत कहाय रे ॥ सु० व० ५ ॥ निवद निकाचित
 सासता रे, जिनप्रणीत ए ज्ञाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम नवसे
 रे लाल, प्रगटे सहज स्वज्ञाव रे ॥ सु० व० ६ ॥ सुगुण आवक
 वारू आविका रे, अंगे धरिय नव्वास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वक तुमे सां
 जलो रे लाल, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० व० ७ ॥ ए सिद्धांत
 सहिना निलो रे, ऊतारे नव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कट्टे माहरे

रे लाल, एहिज अंग आधारे रे ॥ सु० ब० ८ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांजलो, मनोहर
श्रीसुगमांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रिणसे तेसठ पाखंमीतणो, मत खंज्यो
धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे
हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरै, मानु सुधा रे
समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र
गंजरी ॥ मो० ॥ बहुश्रुत अरुण जाणे सद्गुरु, कीर नीर धनु तीर ॥
मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंख दोय ठे, बलि अध्ययन तेवीस
॥ मो० ॥ उहेसा समुदेसा जिहां जला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो०
मी० ४ ॥ नव निक्षेप प्रमाण जरया, पढ़ ठसीस हजार ॥ मो० ॥
संख्याता अकर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग
मा अनंता पर्याय बली, जेद अनंत जिए मांहि ॥ मो० ॥ गुण
अनंत त्रस परित्त कह्या, आवर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥
निबद्ध निकाचित्त जे सासय कमा, जिन पणजा रे जाव ॥ मो० ॥
जाणी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी०
मी० ७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चै लहिये रे मुक्ति ॥
मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणानी रे शक्ति ॥
मो० मी० ८ ॥ इति सूयगमांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ढाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ बीजो अंग
जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीढाणांग ॥ मोरो मन भगन थयो ॥
हारे देखीर जाव, हारे जीवाजीव स्वजाव ॥ मो० ॥ सखल जगत
करी गजतो रे जि०, जीवाजिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह
अंग मुज मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंव ॥ मो० ॥

सुहिर ज्ञाव करे जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २ ॥
 ॥ कूट शैल सिखरी शिखा रे जि०, काननमें बलि कुंरु ॥ मो० ॥
 गह्वर आगर इह नदी रे जि०, जेहमें अगे रे उदंरु ॥ मो० ॥ ३ ॥
 दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त
 जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि
 लोक निजुत्तुं रे जि०, संगहणी पस्वित्त ॥ मो० ॥ ए सह सं-
 ख्यातां जिहां रे जि०, सुखातां नलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय
 खंध इक राजतरे जि०, दश अध्ययन उदार ॥ मो० ॥ उद्देशादिक
 बीस ठे रे जि०, पद बहुतर इकार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशां
 सन तणो रे जि०, सुणे सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहै
 ते हुवे रे जि०, परमारअरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिद्धाय ॥

॥ ढाल ॥ आरा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजली ॥ एचाल ॥
 चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा
 उपांग करी सोजा वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागधी ज्ञावा
 साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित ज्ञाव कुसुम परि-
 मल व्यापो घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव
 समासयी, हो लाल जी०, लहीयै एहशी ज्ञाव विरोध कांड नथी,
 हो लाल वि० ॥ ज्ञांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल
 यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥
 एकयकी ठे सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्र
 माणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकत
 णो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि ठे एहना
 सही, हो लाल ठे० ॥ ३ ॥ सुयखंड अध्ययन उद्देशादिके जला, हो
 लाल उ०, संख्यायें एक एक प्रत्येक गुण निजा, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमास सहस्र तेजतरा, हो० स०, पदनें अग्रजदग्र सं-
ख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ जाण्य चूर्णि निर्युक्ती करी सोहे सदा,
हो० करी०, सुणतां जेद गंजीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥
जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर
कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं
माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिच्छात सुत्र जाण्यो खरो, हो०
सू० ॥ जिम मालती लहे जूंग करीनेन विरहे, हो० क०, इश्वर
शिर सुरगंग तजी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-
अंथतणो जुगते वमो, हो० त०, साकर सेलमी डाख थकी पिण
मीठमो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो,
वि०, एहना सुणने जाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंथोमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणिये रे, जिहा जिन
वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकड्या रे, मानुं पर
तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नती नामे परगमी रे, जेहनी
वै उदाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांदिजा
अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंय एक अति
जलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हज़ार उद्देशा जेह
ना रे, जिहां किण प्रश्न ठत्तीस हज़ार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय
लाख अरथे जरया रे, ऊपर सहस्र अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो
क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥
करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥
सुणिये सूत्र जगवती रागसूं रे, तो होय जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०
५ ॥ गोतम नामे इव्य चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम
रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, जगति युगति मन आणो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विधसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण जव
सीजे वंठित काज रे ॥ परजव विनयचंड कहे ते लहे रे, मोहन
सुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिंहाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागी राजाजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥
ठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना बै अरथ अनेक नई
रु हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिंहांतनी वातनी जी ॥ श्रवणे
सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंरु हो ॥
म्हा० १ ॥ जंबुदीवपन्नत्ती उपांग बै जेहनो जी, इण मांहे जिन
पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अ
नुजवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ
द्यान चैत्य वनखंरु सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने
तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह
लोक परलोक रुद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परि
त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥
म्हा० ॥ संलेहण पञ्चस्काण पादपोषगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ
कुल उत्पत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलान्न वलि तंत ते अंतरु
त्या कही जी, धर्मकथाना दोय बै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना
जगणीस अध्ययन ते आज बै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबं
ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उठकोमि तिहां सकल कथानक ज्ञापिया जी,
ज्ञाप्या वलि जगणीस नदेस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार जला
पद एहना जी, एह अकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥
विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल
होय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंडने जी, सो मांहे
मिलै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि० ॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिंज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विठियानी ॥ हिबै सातमो अंग ते सांजलो, उपासकदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो ज्ञव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक ठै, अध्ययन उद्देस विचार रे ॥ दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाव रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वांचतां, गीतारथ पामे रीऊ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां ज्ञापिया, पिण सूत्र जणयो नही कोय रे ॥ ते मोटे शुद्ध श्रावक जणी, एक अरथ नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपियै, निस्संक्रपणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्युं थयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिंज्ञायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिंज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड के वली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञासता जी, सासता अर्थ सुविदास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप नय जंगथी जी, अंगना ज्ञाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तट्टिका जी, कट्टिका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग ठै आठ अजिराम ॥ आठ उद्देसा ठै वली जी, संख्याता सहस पद गम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ ठे रे मीठास ॥ सरस अनुभव रंस
ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे
हुवे जी, निरविषयी सुण्यां आय, जिम माहा विष विषधरतणो
जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती
जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंड इण सुत्रना जी,
तुरत लहै अग्निप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतर्गमदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग
अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ श्रायक सूत्र सुणो
॥ सूत्र सृणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥
श्रा० १ ॥ जसु कळयाणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥
श्रा० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥
श्रा० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति जीजै
हो ॥ श्रा० ॥ प्रगटे नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥
॥ श्रा० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया
हो ॥ श्रा० ॥ नगरादिक जाव वखाण्या, ते तौ ठढे अंगे आण्या
हो ॥ श्रा० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोदारू
रे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संखशात सहस पद पूरा हो ॥
श्रा० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेइनें हो ॥
श्रा० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगानं हो ॥ श्रा० ॥
६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ठोर हो ॥
श्रा० ॥ कवि विनयचंड कहे साचो, श्रुत रंगै सदुको राचो हो ॥
श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिंहायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिंज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विठियानी ॥ हिंवै सातमो अंग ते सांजलो, उपा
सगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नती
उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो जव वैराग तरंग
रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म०
२ ॥ इण अंगे सुयखंध एक ठै, अध्ययन नदेस विचार रे ॥ दस
संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनं
दादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे
मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वां
चतां, गीतारथ पामे रीऊ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो
करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां ज्ञापिया, पिण
सूत्र ज्ञायो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक जणी, एक अरथ
नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपियै, निस्संक
पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्युं अयो, जो कुमती क
रस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिंज्ञायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिंज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आ-
ठमो अंग अंतगरुदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगरु के
वली जे अया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म क
ठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञा
सता जी, सासता अर्थ सुविदास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप न
य जंगथी जी, अंगना ज्ञाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तळिप
का जी, कळिपका जास नवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध
इण अंगनो जी, वर्ग ठै आठ अजिराम ॥ आठ नदेसा
ठै वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ ठे रे मीठास ॥ सरस अनुन्नव रस
ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे
हुवे जी, निरविषयी सुण्यां आय, जिम माहा विष विषधरतणो
जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती
जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंड इण सुत्रना जी,
तुरत लहै अन्निप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतर्गदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग
अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ श्रायक सूत्र सुणो
॥ सूत्र सृणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥
श्रा० १ ॥ जसु कड्याणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥
श्रा० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥
श्रा० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति जीजै
हो ॥ श्रा० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी नलसे मोरी देहा हो ॥
॥ श्रा० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया
हो ॥ श्रा० ॥ नगरादिक छाव वखाण्या, ते तौ ठढे अंगे आण्या
हो ॥ श्रा० ४ ॥ इहां एक सुवखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू
रे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥
श्रा० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेइने हो ॥
श्रा० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगानं हो ॥ श्रा० ॥
६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण दोर हो ॥
श्रा० ॥ कवि विनयचंड कहे साचो, श्रुत रंगै सहुको राचो हो ॥
श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिज्ञायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पवारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रणव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि
दानंद फल पामे ॥ आवो९ गुणना जाय तुमने सूत्र सुणाउं ॥
पुष्पकली ज्युं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु
ष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रण्णादिक अति रूमा ॥ ते है अष्टोत्तर सत
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूमा ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां
आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लबधि जेद
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुखबंध एक है दसमे अंगै, पणयालीस
अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥
सूत्र मांहि तो मारग दोयहै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कमखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो,
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलि
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किंपाक सम
डुक्तफल जोगवी, नरकमें गरक अया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जोग
वी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० २ ॥ दोयश्रुत
खंधने बीस अध्ययन वलि, बीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल ब्रमर चित्त गुंजै ॥
सु० ॥ ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि
माटै ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-
चल खाटै ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोक्षना वेउं कारणअवै, डुक्तने
सुकृत जोवो विचारी ॥ डुक्तने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

घन धारियै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निंथा नि-
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज
सहज संतोष जज, लाग श्रुत सांजली धरमबंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख
ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें बीतरागै ॥ चिरजयो
वीर शासन जिहांसूत्रथी, कवि विनयचंद्र गुण ज्योति जगै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में शुण्या, सहेली ए ॥
आज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥
ज्ञाव्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-
णी ॥ पसरि अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू
ते हरखे करी, स० ॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी
जे सांजलै, स० ॥ कुण बूढा कुण बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू
टरा, स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी
हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ ज्ञास करी ए अंगनी,
स० ॥ वरत्या जय२कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,
स० ॥ वरषाशुतु नजज्ञास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥
पूरण अई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,
स० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥
तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रहखनिधान जो, स० ॥
ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग
इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप
गारी सुगुरु वताई, पांचु जेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन
पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूस दंसनकी,

करमें धन ल करी ॥ सक्रिय संजम करतामुं मिल, सिद्धि रसान
धरी ॥ मे० २॥ पूरुष पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी,
बाल कहै अब विसरत नांही, पल दिन एक धरी ॥ मे० ३॥ इति पद ॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलो, संघ सकल आधार नमूं त्रीजुवन तिखो
॥ आंकणी ॥ अरथें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रें श्रीगणवरगुरु
ज्ञाष्यो, तडुजयथी जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग
जाव सकल जाणें, नय एकांत मुनिजन नवि ताणें, निश्चय विवहार
ते मन आणें ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग वै अति रूना, ठ छेद
पयना नहि कूना, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूना ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां
निरयुक्ती सूत्रें संगी, बलि ज्ञाष्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै,
संवेगपखी बलि सरदहियै, ए त्रिण विन जवमारग कहियै ॥ श्रु०
५ ॥ जेहन्ती अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै,
आराध्यां निज अनुभव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे
गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते कृमाकट्याण सदा पावै ॥
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महानेमें मिति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब
मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाठ चोमासे मुजव
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सैं सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा
एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं ठंक् पत्तिकमणा करै, देववंद

नादि करै, (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धिगिरी जात्रा करणेंको जावै, कातिपूनमेके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धिगिरीकी पूजा करावै, अठाई महोत्सव करै, विस्तारसैं देववंदनादिक विधि करै, (११) बेर सेत्रुजरास सुणे (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इस पदसैं २१ जेती देवै, (कदास) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धिगिरीका पट्ट मंमा होय उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करणेकूं जावै, पूजादिक सब विधि करै, उच्चनत्त कर के वा चञ्चल्यनत्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुनक्ति करै, साहमीवृत्त करे, इत्यादिक विधि संयुक्तसिद्धिगिरीकी सेवना करणेंसैं सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाता प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावन् वारखिल्ल प्रमुख दस कोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त जाए, जिससैं इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका निश्चे दशकोमि गुणा फल होता है ॥ इस नरतक्षेत्रमें सिद्धिगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही, संवत् १९३२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था, जहांसैं कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोंके दरसन करके गिणती देखणेंमें आई सो बारे हज़ार तीनसैं अठावनकी संख्या मिली, नर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अनन्त साधू अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत जय्यी जीव होंगे सो शुद्धज्ञावसैं इस तीर्थकों सेवेंगे, जो सेवते हे सो धन्य हे, गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तार्थिआसातनाकारी देवद्वयनक्षक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके देखी ऐसी वक वृत्तिसैं जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके वाहनेसैं अन्य देसांतरी जात्रार्थी जय्यजीवोंका धन उगणेंकी वृत्तिसैं तीर्थ सेवन अनन्त संसारका जवन्नसण समझके वर्जना, एसैं डरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगन्नीन
करणा. शुद्धजावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरवानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी
॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं
हे, जो रे बहिनी ॥ गाइये गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते
दि० १ ॥ अदञ्जुत जंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आ
दिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ ज़ोली जगत ज़ली परे हे, जो रे ब०
॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० १ ॥ नाही निरमल नीरसुं
हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर ज़रिय कचो-
लमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रूमी
रायणवांढमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां
जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरव निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥
इण गिरवरिये ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥
चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० ॥ अजित जिनेसर शांती
॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदञ्जुत
जलकाजोल, मो० ॥ सिद्धवर सेत्रुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये
नित रंगरोल ॥ मो० ६ ॥ इण मुंगर दीगा थकां हे, जो रे० ॥
ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर वांढमी हे, जो रे० ॥ कहे
नित जिणचंद ॥ मो० ते० ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंझप्रज्जु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से-
त्रुंजगिरी रे, त्रिकरण श्रुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तूटे
करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरव निनाणू समोसरया रे, प्रथम
जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसरया

तेवीस रे ॥ नमो० २ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए-
 हिज ठोम रे । काल अनंत बलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोमि
 रे ॥ नमो० ३ ॥ अनंत कढ्याणक जूमिका रे, महिमावंत महंत
 रे ॥ सास्वतो तीरंथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०
 ४ ॥ कोमि जवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से-
 ङ्गुंजै सनमुख चालतां रे, पगर ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥
 धन दिन तेहिज जाणसूं रे, बहिस्थुं सेङ्गुंजे केरी वाट रे ॥ बहरी
 यथाविध पालस्थुं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पगर
 उच्चव अतिघणा रे ॥ पगर याचकदान रे ॥ प्रेम जगत साहमीतणी
 रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-
 द्दती मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयमे वधावस्थुं रे, रजत सोवन जर
 थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्थुं रे, करस्थुं पाव-
 न मोरी काय रे, जगति जुगति जुहारस्थुं रे, नाजिनंदन जिनराय
 रे ॥ नमो० ९ ॥ द्रव्य जाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥
 जावै जावना जावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥
 रत्नत्रयी जमती जली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ जवजव ब्रमण
 निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन
 मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो
 रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नाथ धूलेवा सुपसा-
 यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरप सूरिसरू रे, हो-
 यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिघणो, जेटवा
 विमलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नाजिराया कुज चंदलो, जिहां वसै मरु-
 देवानंद रे पंथीमा ॥ बहिसुं बोले रे पंथी म्हारा बहिसुं बोले रे ॥

सेत्रुंजो वै कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर
 सोहामणो, रुनी ललतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंबला रे
 वरुला घणा, फुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वहि० २ ॥
 धन ते पंखी पारेवमा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ ऊमा
 हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीमा ॥ वहि० ३ ॥
 सेत्रुंज वाटे जी चालतां, जीणी२ ऊहे खेह रे पंथीमा ॥
 मैला आवे संघना कापमा, निरमल आयै देह रे पंथीमा ॥ वहि०
 ४ ॥ उंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा ॥
 जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीमा ॥ वहि०
 ५ ॥ घस केसर ज्वर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा ॥
 फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलारी ज्योति अन्नंग रे पंथी-
 मा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे
 पंथीमा ॥ मोने जेटणरो जी कोरु वै, प्रेम घणो जिनचंद रे पंथी-
 मा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरव निना
 णूं वार सेत्रुंज गिर, रुषन्न जिनंद समोसरियै, सेत्रुंजगिर यात्रा० ॥
 कोमिसहस जव पातक तूटै, सैत्रुंज सामे रुग ज्वरेये ॥ विम०
 जात्रा० १ ॥ चोथ ठठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥
 विम० जा० ॥ पूरुकीक पद जपियै हरषै, अध्यवसाय शुद्ध धरियै ॥
 वि० जा० २ ॥ पापी अन्नवी निजर न देखै, हिलक पिण ऊधरि
 यै ॥ वि० जा० ॥ जूमिसंधारी ने नारितणो संग, दूरथकी परह-
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आदारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे
 पद चरियै ॥ वि० जा० ॥ पक्कमणा दोय विधसुं कीजै, पापफल
 विप हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकावै ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम जवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवता, पदम कहै
जव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ जाव धर धन्य दिन आज सफत्रो गिणयो,
आज में सजन आनंदपायो ॥ जा० ॥ हर्य धर निजर नर विम-
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वयायो ॥ जा०
॥ १ ॥ पगर नमंग धर पंथ नित पूछनां, धन्य दोय चरण जिहां
चलत आयो ॥ जा० ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज
धन दीह में सुजस गायो ॥ जा० २ ॥ डुर डुरगति टरो जात्र
विधसुं करी, पुन्यजंजार पोते नरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-
रगिरतिखर, रुषज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भिगसर महीनेमें मिति भिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन मेढसें कट्याणक जये हैं सो
लिखते है. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कट्याणक श्रीमद्वि-
नाथस्वामी के जये, श्री अरयनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया. एसें इस नरतक्षेत्रमें वर्तमान
चोवीसीके पांचकट्याणक जये. इस तरे पांच नरत, पांच एरवत
में, चोवीसीके पांचर कट्याणक मिलाएसें पच्चास कट्याणक जये.
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसें कट्याणक जये.
इस वास्ते यह दिन वरुा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास
करै, अठ पहरा पोसा करै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह
की शक्ति नहीं होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. ऐसे
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

सेतुंजो वै कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नग
 सोहामणो, रुमी ललतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंबला
 वरुला घणा, जुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वहि० २
 धन ते पंखी पारेवमा, सेतुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ ऊम
 हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ठोर रे पंथीमा ॥ वहि०
 ३ ॥ सेतुंज वाटे जी चालतां, जीणीर ऊमे खेह रे पंथीमा
 मैला आवे संघना कापमा, निरमल आयै देह रे पंथीमा ॥ वहि
 ४ ॥ उंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा
 जिहां मिले घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीमा ॥ वहि
 ५ ॥ घस केसर नर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा
 फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सैहरो, दिवलांरी ज्योति अन्नंग रे पंथ
 मा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीगं माहरै, ऊपजै परन आनंद
 पंथीमा ॥ मोने जेटणरो जी कोम वै, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथ
 मा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरव नि
 णूं वार सेतुंज गिर, रूपज्ज जिनंद समोसरियै, सेतुंजगिर यात्रा०
 कोमिसहस जव पातक तूटै, सैतुंज सामे रुग जारेये ॥ विम
 जात्रा० १ ॥ चौथ ठठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै
 विम० जा० ॥ पूंमरीक पद जपियै हरपै, अध्ववसाय शुभ धरियै
 वि० जा० २ ॥ पापी अन्नद्वी निजर न देखै, हिलक पिण ऊध
 यै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंधारी ने नारितणो संग, दूरअकी परह
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु सा
 पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पद्मिकमणा दोय विधसुं कीजै, पापप
 ल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकालै ए तीरथ मोटो, प्रवद

सम जवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवता, पदम कहै
जव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ जाव धर धन्य दिन आज सकत्रो गिण्यो,
आज में सजन आनंदपायो ॥ जा० ॥ हर्ष धर निजर जर विम-
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ जा०
॥ १ ॥ पगर उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण जिहां
चलत आयो ॥ जा० ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज
धन दीह में सुजस गायो ॥ जा० २ ॥ डर डरगते टरो जात्र
विधसुं करी, पुन्यजंकार पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-
रगिरतिखर, रूपज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ भिगसर महीनेमें मिति भिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन मेढसें कढयाणक जये हैं सो
लिखते है. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कढयाणक श्रीमद्वि-
नाथस्वामी के जये, श्री अरधनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया. एतें इस जतरक्षेत्रमें वर्तमान
चोवीसीके पांचकढयाणक जये. इस तरे पांच जतर, पांच एरवत
में, चोवीसीके पांच२ कढयाणक मिलाएसें पञ्चास कढयाणक जये.
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसें कढयाणक जये.
इस वास्ते यह दिन वरुा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास
करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. ऐसे
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग ज्ञा-
वसैं सुणै, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढ़णेवालोंको सहाय देवै,
तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसैं
करै. (समवसरण बैठा जगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे
लिख्या हे सो पढ़े वा सुणै. पीछै उद्यापनमें पेंतालीस आगमकी
पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवृत्त करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत

२४ जिन पंच क-

२४ जिन पंच कल्या

ल्याणक नमः ॥

णक नमः ॥ ४ ॥

॥ प्रथम ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिअर्हतेनमः

६ श्रीशुजंकरअर्हतेनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिनाथायनमः

६ श्रीशुजंकरनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुजंकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

७ श्रीसप्तनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४

चिन पंच कल्याणक ॥२॥

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

११ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

२१ श्रीब्रह्मेन्द्रसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमल्लिअर्हतेनमः

१९ श्रीगुणनाथअर्हतेनमः

१९ श्रीमल्लिनाथायनमः

१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः

१९ श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअरिनाथायनमः

१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिन पंच कल्याणक ० ॥३॥

जिन पंच क० नाम ॥६॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः

६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः

६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनृदयनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतोते २४ जि
नपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥

४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः

६ श्रीव्यक्तनाथायनमः

६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः

७ श्रीकलाशतनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन
पंचकल्याणक । ८ ।

२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः

१ए श्रीयोगनाथअर्हतेनमः

१ए श्रीयोगनाथनाथायनमः

१ए श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन
पंचकल्याणकनामः ९

४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः

६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः

६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः

६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः

७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतोत
२४जिनपं०ना०द्वितिया॥१०॥

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः

६ श्रीहरिज्ञअर्हतेनमः

६ श्रीहरिज्ञनाथायनमः

६ श्रीहरिज्ञसर्वज्ञायनमः

७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान
२४पंचकल्याणकना० ॥११॥

२१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीअक्षोजअर्हतेनमः

१ए श्रीअक्षोजनाथायनमः

१ए श्रीअक्षोजसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-
त २४ जि०पं०क० १२

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः

६ श्रीधनदअर्हतेनमः

६ श्रीधनदनाथायनमः

६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः

७ श्रीपौषनाथायनमः

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग ज्ञा-
वसैं सुणैं, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढ़ेवालोंको सहाय देवै,
तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसैं
करै. (समवसरण बैठा जगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्व
लिख्या हे सो पढ़े वा सुणै. पीछै न्यापनमें पैंतालीस आगमकी
पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवञ्चल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

२४ जिन पंच क-
ल्याणक नमः ॥

॥ प्रथम ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिअर्हतेनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४

चिन पंच कल्याणक ॥२॥

११ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीमद्विअर्हतेनमः

१ए श्रीमद्विनाथायनमः

१ए श्रीमद्विसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

जिनपंचकल्याणक ० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत

२४ जिन पंच कल्या
णक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुजंकरअर्हतेनमः

६ श्रीशुजंकरनाथायनमः

६ श्रीशुजंकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीसतनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते वर्त्तमान २४

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेन्द्रसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीगुणनाथअर्हतेनमः

१ए श्रीगुणनाथनाथायनमः

१ए श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीगंगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिनपंचक ० नाम ॥६॥

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतग्रहतेनमः

६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः

६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनृदयनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतोते २४ जि

नपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥

४ श्रीमृडुसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्यक्तग्रहतेनमः

६ श्रीव्यक्तनाथायनमः

६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः

७ श्रीकलाशतनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन

पंचकल्याणक । ८ ।

२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः

१ए श्रीयोगनाथग्रहतेनमः

१ए श्रीयोगनाथनाथायनमः

१ए श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन

पंचकल्याणकनामः ९

४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुद्धार्तिग्रहतेनमः

६ श्रीशुद्धार्तिनाथायनमः

६ श्रीशुद्धार्तिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथग्रहतेनमः

६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः

७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतोत

२४जिनपं०ना०द्वितिय॥१०॥

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः

६ श्रीहरिज्ञग्रहतेनमः

६ श्रीहरिज्ञनाथायनमः

६ श्रीहरिज्ञसर्वज्ञायनमः

७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान

२४पंचकल्याणकना० ॥११॥

२१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः

१ए श्रीअक्षोन्नग्रहतेनमः

१ए श्रीअक्षोन्ननाथायनमः

१ए श्रीअक्षोन्नसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-

त २४ जि०पं०क० १२

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः

६ श्रीधनदग्रहतेनमः

६ श्रीधनदनाथायनमः

६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः

७ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत २४जिन
पंचकल्याणक ॥१३॥

- ४ श्रीप्रबंधसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

- २१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीविपरीतअर्हतेनमः
- १ए श्रीवीपरीतनाथायनमः
- १ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत
२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

- ४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीअमणेंडअर्हतेनमः
- ६ श्रीअमणेंद्रनाथायनमः
- ६ श्रीअमणेंडसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरिपन्नचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअतीत २४जिन
पंचकल्याणकनाम ॥१६॥

- ४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअतीत २४
जि०पंचक० ॥१६॥

- ४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीअग्निमंदनअर्हतेनमः
- ६ श्रीअग्निमंदननाथायनमः
- ६ श्रीअग्निमंदनसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेवर्त्त० २४
जिनपंचक० नाम ॥१७॥

- २१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
- १ए श्रीमरुदेवनाथायनमः
- १ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअना० २४जि
नपंचकल्याणकनाम ॥१८॥

- ४ श्रीनंदिपेणसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
- ६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
- ६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअतीत २४
जिनपंचक० नाम ॥२२॥

- ४ श्रीअष्टादिकसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
 ६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेवर्त्तमान २४
 जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २० ॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
 १ए श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
 १ए श्रीसंतोषितनाथायनमः
 १ए श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअनागत २४
 जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २१ ॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीचंडदाहअर्हतेनमः
 ६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
 ६ श्रीचंडदाहसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएरवतेअतोत २४
 जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
 ६ श्रीअवबोधनाथायनमः
 ६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीविक्रमेष्टनाथायनमः

६ श्रीवणिकुनाथायनमः

६ श्रीवणिकुसर्वज्ञायनमः

७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेवर्त्तमान २४
 जिनपंचक० नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
 १ए श्रीसायकाहअर्हतेनमः
 १ए श्रीसायकाहनाथायनमः
 १ए श्रीसायकाहसर्वज्ञायनमः
 १८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअना० २४
 जिनपंचक० नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
 ६ श्रीरविराजनाथायनमः
 ६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत २४
 जिनपं०क०ना० ॥ २८ ॥

४ श्रीअश्वघुंदसर्वज्ञायनमः
 ६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
 ६ श्रीकुटिलनाथायनमः
 ६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
 ७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत २४जिन
पंचकल्याणक ॥१३॥

- ४ श्रीप्रबंधसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

- २१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीवीपरीतअर्हतेनमः
- १ए श्रीवीपरीतनाथायनमः
- १ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत
२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

- ४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीअमणेंडअर्हतेनमः
- ६ श्रीअमणेंद्रनाथायनमः
- ६ श्रीअमणेंडसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरिपज्ञचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअतीत २४जिन
पंचकल्याणकनाम ॥१६॥

- ४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअतीत २४
जि०पंचक ॥१६॥

- ४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीअजिनंदनअर्हतेनमः
- ६ श्रीअजिनंदननाथायनमः
- ६ श्रीअजिनंदनसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेवर्त्त० २४
जिनपंचक० नाम ॥१७॥

- २१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
- १ए श्रीमरुदेवनाथायनमः
- १ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअना० २४जि
नपंचकल्याणकनाम ॥१८॥

- ४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
- ६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
- ६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअतीत २४
जिनपंचक० नाम ॥२२॥

- ४ श्रीअष्टाहिकसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेवर्त्तमान२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीसंतोषितग्रहतेनमः

१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः

१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअनागत२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचंद्रदाहग्रहतेनमः

६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः

६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः

७ श्रीद्विजादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएवतेअतीत२४

जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअवबोधग्रहतेनमः

६ श्रीअवबोधनाथायनमः

६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः

७ श्रीविक्रमैश्वरनाथायनमः

६ श्रीवणिकूनाथायनमः

६ श्रीवणिकूसर्वज्ञायनमः

७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएवतेवर्त्तमान२४

जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीसायकाक्षग्रहतेनमः

१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः

१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअना० २४

जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीरविराजग्रहतेनमः

६ श्रीरविराजनाथायनमः

६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४

जिनपं०क०ना०॥२८॥

४ श्रीअश्वघुंदसर्वज्ञायनमः

६ श्रीकुटिलग्रहतेनमः

६ श्रीकुटिलनाथायनमः

६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः

७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत २४जिन
पंचकल्याणक ॥१३॥

- ४ श्रीप्रबंधसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

- २१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीविपरीतअर्हतेनमः
- १ए श्रीवीपरीतनाथायनमः
- १ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत
२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

- ४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीत्रमणेंड्रअर्हतेनमः
- ६ श्रीत्रमणेंद्रनाथायनमः
- ६ श्रीत्रमणेंड्सर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरिषन्नचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअतीत २४जिन
पंचकल्याणकनाम ॥१६॥

- ४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअतीत २४
जि०पंचक० ॥१६॥

- ४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीअजिनंदनअर्हतेनमः
- ६ श्रीअजिनंदननाथायनमः
- ६ श्रीअजिनंदनसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेवर्त्त० २४
जिनपंचक० नाम ॥१७॥

- २१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
- १ए श्रीमरुदेवनाथायनमः
- १ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएवतक्षेत्रेअना० २४जि
नपंचकल्याणकनाम ॥१८॥

- ४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
- ६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
- ६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअतीत २४
जिनपंचक० नाम ॥२२॥

- ४ श्रीअष्टादिकसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेवर्त्तमान२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीसंतोषितग्रहतेनमः

१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः

१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअनागत२४

जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचंद्रदाहग्रहतेनमः

६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः

६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः

७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएवतेअतीत२४

जिनपंचक० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअवबोधग्रहतेनमः

६ श्रीअवबोधनाथायनमः

६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः

७ श्रीविक्रमेष्टनाथायनमः

६ श्रीवणिकुनाथायनमः

६ श्रीवणिकुसर्वज्ञायनमः

७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएवतेवर्त्तमान२४

जिनपंचक० नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकेन्दनसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीसायकाक्षग्रहतेनमः

१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः

१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएवतेअना० २४

जिनपंचक० नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीरविराजग्रहतेनमः

६ श्रीरविराजनाथायनमः

६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए० अतीत२४

जिनपंचक० नाम॥२८॥

४ श्रीअश्वगुंदसर्वज्ञायनमः

६ श्रीकुटिलग्रहतेनमः

६ श्रीकुटिलनाथायनमः

६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः

७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४	पुष्कराद्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त०
जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥	२४जिनपंचक०ना०२९
११ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः	११ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीहरअर्हतेनमः	१ए श्रीधर्मचंडअर्हतेनमः
१ए श्रीहरनाथायनमः	१ए श्रीधर्मचंडनाथायनमः
१ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः	१ए श्रीधर्मचंडसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः	१८ श्रीविवेकनाथायनमः
धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४	पुष्कराद्धेपश्चिमएर०अना०
जिनपंचकल्याणकनाम॥२७॥	२४जिनपं०क०॥३०॥
४ श्रीमहामृगेड्सर्वज्ञायनमः	४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः	६ श्रीविसोमअर्हतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः	६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः	६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मेद्रनाथायनमः	७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें मेढसें माला होती है. जो ज्ञव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो थोमे जवोंमें अनंतसुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशार्प मास मध्ये प० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिति पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पञ्चकाण करे, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जात्रा करणेंको जावै, जो कच्ची यात्रा करणेंको नही जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोत्सव संयुक्त दरसन करणेकों जावै, जलयात्रादि महोत्सव करै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसैं अनेक तरैके उत्सव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी० आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणे. इस पर्वका सेवन करेसैं आधिव्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरैसैं रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणे वा पढ़े सो नर (वाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखाहे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मित्ती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सैं पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुपनदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक हे, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगे चढ़ावै, बीचमें १ वना मेरु, च्यारुंदिस ठोटा च्यार मेरु, एसैं पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंधावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीठै श्रीरुपनदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हज़ार गुणना करै, नर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिशिसंविज्ञाग करै पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब उत्सवसैं ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवञ्चल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसैं अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र पिंगलरायकुमार गंगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणकै

तपस्या करी. तपस्याके करणसे पांगलापणका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण ज्ञयां पीछे तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिष्ठा स्थापन करी. १३ वेर संवसमेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, बहोत तरेसे ज्ञान ज्ञप्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमे चवदे पूर्वकों पढके सर्व कर्मोंका क्य करके अनंतसुखकों प्राप्त ज्ञया. जो ज्ञव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस ज्ञव ज्ञर पर ज्ञवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ काल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाळगुनमहानेमें मिती फाळगुन सुद १४, सोतीसरे चोमासेकी चौदश नामसे पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामी वारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, १ तुली, १ पर्यूपण. जिसमें तुली २ का ज्ञर पर्यूपण का एवं ३ अठाईका महोत्सव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें ज्ञी जेसा वीकानेरमें खरतर गजवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उत्सव हाथीके होदे वने आमंवरसे होता हे वा वरघोमा पुस्तकका मुंघइमें ज्ञी होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नही. ज्ञर कार्तिक महोत्सव अन्यत्र ज्ञी बहोत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जेसा महोत्सव स्वमतमें तथा परमतमें कहांइ ज्ञी ज्ञारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षिणमें मछेवार तक हम गये, पूरवमें दिल्ली लखनेउ आगरा कासी पटना तक में नही देखा. जगणीसे वावनके वर्षमें हमने यह उत्सव कलकत्तेमें देखा था, ज्ञर फागुणमहोत्सव सकसूदावादका बहोत अछा होता

हे, जगणीससँ सुसुतालीसमें देखा था. दुसरी जगे नही कहाँ ज्ञी देखा, लेकिन किसीज्ञी धर्ममहोच्चवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अज्ञा नही. एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञाग्यवानलोक धूपके मरसँ रेतीके मरसँ आप तो जाते नही फकत बेसमज अदम्योंको जेजदेतेहैं, वो लोक कूदते नाचते ज्ञागते समवसरणकों उठालादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्पत्तीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसँ धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनुं जव सफल हे. वोही महोच्चव लायकतारीफके हे इस वास्ते आत्मार्षी धर्मज्ञ पुरुष हे सो जेसका चोमासापर्वीजाणके सर्व जगें जगवंतके धर्मका उद्योत करतेजये शुद्धध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्मरूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, पीठे सुबोधजलसँ स्नान करके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हैं. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हैं. इव्यें नर ज्ञावै. सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥

॥ उस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमासी के दिन केइयक अज्ञानीजीव विवेकविकल जयेष्के नीचजातिके परंपराको प्राप्त जयेष्के लकम ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमासा धर्मपर्वका विराधना करते हैं. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसँ क्रीड़ा करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढ़ते हे, अनेक जीवोंकों दुःख देते हैं, ऐसे जीव बीतरागकी आज्ञा ठोमके ज्ञासँ नरसँक्री कुलमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध ठोम पेसाव पीते हैं, ऐसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके दुर्गतिकों उपार्जन करते हैं, अनर्थदंरुसँ अनंत जव संसारकी स्थिती वांचते हैं. इसवास्ते आत्मार्षी जव्यजीवोंकों ज्ञावहोली करणा चाहियै. सो इस मुजव-प्रभुके गुणयाम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-

ए करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोत्सव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवहल करै, साधमीजाई आपसमें नाना-तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक जी वसंतरुतु आणैसैं मदन महोत्सव करणैकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अवीर गु-लालसे सहरके लोक बगीचोंमें क्रोडा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें बहोत जगे वांचणेंमें आया हे, लेकिन मलमूत्र राख धूमसैं खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद ठोरणा, बनेरोकी लज्जा ठोरणी, ऐसा कृत्य उत्तम पुरु-षोंके करणे लायक नही. यह क्रीडा वाममार्गीयोकी चलाइ जई हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो हज़ार वर्ष करीब जया. पीठै स्वामी शंकराचार्यकूं यह बात सम्मत जई तवसैं धीरेश अज्ञानी जीव ए-ककी देखादेख बहोत लोक करणे लगगये, लेकिन ऐसी कर्तव्यता किसी जी शास्त्रमें नहीं देखणेंमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी बात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोत्सवका काम होता हे उस वख-त तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, नर होलीके दिनोंमें मा-तापिता जाई बहिन सबोंकी लज्जा ठोरुके बहोत दिलमें खुसव-खती मानताजया पागलके माफक ज्ञानोंकी तर बकते फिरता हे. कोइ वैस्याउंका नाच होता होय उहां तो हज़ारूं रुपे खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हैं हमने ब्रमा नाम किया. तत्व नजरसे देखे नर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुजगतीके पाये पूरे-मजबूत बंध करणेंमें आये. ऐसी लज्जाठोरुके जिनमंदिरका महो-त्सव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, ऐसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्य नर जावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, नर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें नर

सच्ची वातकूँ कुयुक्तियोंसें जूठी ठहरावेंगे, नर मध्यस्थ विचारवंत तो
 ऐसा कहेंगे यह वात सच्च है. कितका पर्व किसका खेल, निकेवल
 इसमें अनर्थ दंभ लगता है, लेकिन हम इकेला क्या करें, ज्ञाइवं-
 धोंकोँ ऐसा करते देख हमज़ी करते हैं, हमसें रहा जाता नही.
 परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अच्छा है. इस वास्ते हे ज्ञव्यजी-
 वो इसमें समुदाणी कर्म बंधता है. ठोमे सो धन्य है. नरकके जाते
 का संग नही करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरो
 करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत नर वात तक नही करते
 नस मुजब एकका अनर्थ खेल देख डसरेकोँ वचना चाहिये.
 काम वो करणा जिस्में दोनों ज्ञवमें लाज होय. इस ड्यहोलीके
 खेलमें वनीर लमाइयां होजाती है. मेमता सहर हालीके ख्या-
 लसें पुष्करणे नर नोजकोंकी लमाइमें तमाम नजाम होगया.
 नर परजवमें अरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है.
 इस वावत जो जो कठोर लवज लिखा है उसकूँ वांच विवेकी मेरे
 पर गुस्ता नही लावेंगे. जो कुठ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-
 नुसार लिखा है. हितोपदेश समजके ठोमणेका प्रयत्न करेंगे. मेरे
 तो नवकारमंत्रके अमसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है. जि-
 समें ज्ञी सर्व जीवायोनिसें मित्रता है. कम या ज्यादा जो कुठ
 अपशब्द लिखा होय तो मित्रामिडुकमं ॥१॥ इति फा० ॥ ५० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव
 ॥ हो० ॥ दयामिगई अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-
 थालो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मा-
 दल ज्ञाव रुफ रे, क्रोध मान दोय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी
 नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० १॥ सुमताकेसर घोलियै रे, दमवाको

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी
॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥
तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी नरी—मदन महा रिपु
तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं बरस विन देखे, रहि हे मुख
कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसें, विनती करै काजोरो-
लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे नविक जन धिर करकै, हो०
॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर अनावो जोली नरकै ॥
हो० १ ॥ ग्यान ध्यान मफ ताक बजावो, गुण गावो प्रभु हित धरके
॥ हो० २ ॥ अनुभव अतर फूलल मंगावो, वास दिसोदिस महम
हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रजधूम उमावो, ज्युं तेरा पाप सब-
ल धरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रभू नज विलं-
ब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विजय संजारी नर पिचकारी, हारे तूं
तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल नर
जोरी, हारे तूं तो खेल वसंत घर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग
आभूषण अंगै, हारे तूं तो जावना वाधा पहिर रे ॥ हो० ४ ॥ नी-
रंजन प्रभुना गुण गावो, हारे तूं तो आतम अनुभव वर रे ॥
हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारे तूं तो गूंजत मन
मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हारे तूं तो ज-
गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रीजिनलाज कहै प्रभु संगै,
हारे तूं तो अनुपम नव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमतासंग
खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिनशासन बतरंगमहिलमें, दीपकबोध बनाई
॥ आ० वा० १ ॥ सरधासखी कृपा मृडना मिल, रुजुता मुक्ति सुदाई ॥

जुर अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुभव रंग रंगार्ई ॥ आ० वा० १ ॥
 जाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सदाई ॥ जिन गुण
 गान संगीत निरत धुनि, जक्ति जिणंद वढाई ॥ आ० वा० २ ॥
 खेलत संजम फाग मिलै सन, बाल आणंद बधाई ॥ अब कुमता
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित दिन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चउरा
 सी जव जमतां२, नरजव पायो सो दिख खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर
 जावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥
 पुन्य संजोग मिट्यौ कुल आवक, ग्यान प्रकाश ज्यो घटको ॥
 स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासैं तेरो मन अट
 क्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूयो शिवपु
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रजु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ विसरे मत नाम प्रजुजीको, वि० ॥ प्रजुजीको ना
 म चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना-
 ज कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जुवन सिर हे टीको ॥ वि० २ ॥
 चतुर कुशल चित घोसुं राव्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥
 बहुत ह्वासुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥ व० ने० १ ॥
 सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोरै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०
 ने० ३ ॥ जनवरजूषण कहै जविजननै, सहु जगमें जस लीनो रे
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ़ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेले ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जरयौ, दिशि दूजी गिर
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतौ, तिण माहे खेले नेमकु
 मार ॥ ग० १ ॥ फूल्या केवमा केतकी, विच फूल्या मरुआमचकुंद
 ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहै खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥
 आंवा मोर्या बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै
 पवन दक्षिणतणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आं
 व पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमर अजुं
 नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलधर गोपि मिली,
 विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलजरी, मुख ऊपर ठां
 टे यडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जोरें य-
 डुनाथ ॥ रिद्धरप वाचक कहै, वात सांजलो शिवादेवी मात ॥ ग० ६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो जाग री, नेमनाथ वर
 पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रूपजिणंदा, जिण
 मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको ठत्र धरयो सिर ऊपर,
 गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ,
 फूल चढाजं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख
 बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि वीनती, जव
 दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंगानगरमें, फा-
 गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंरुपमें, होय रही
 हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रभुजीके अं-
 गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल
 जमाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध जांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित
 लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, व० ॥

निबिड डुरित नर शिखर नि डुरकी, नवसागर तारण तरकी ॥
 व० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी
 ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी
 ॥ व० २ ॥ परमात्म पद प्रतिबिंब ननको, बंठित पूरण सुरतरु-
 की ॥ व० ॥ वर सोरठ मंरुल मंरुनकी, सकल करम रज जल-
 धरकी ॥ व० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाम्नेय जिनेसर-
 की ॥ व० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, डुति दीपै जेम्
 दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-
 रुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सद्गु, तीन जु-
 वन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषज
 लंठन सोजाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रजुकी मोहनमूरति, देखत
 परमानंद नरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रजुकी निरंतर, पदतल
 नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, नव
 एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रजु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ० ॥
 त्रिगढ़में विराजमान, डुंडुनि सुणत कान ॥ अपठर मिल करत
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासन विराजै साम, जीत
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥
 ऐ० २ ॥ तीन ठत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्प धार ॥ गहिर अ-
 सोक सार, जामंरुल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी बिली चंग,
 द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥
 हारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला
 ॥ सं० ॥ बाता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विधारी ॥ ताता
 दीजै सादिव मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात नयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज
 लंगन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लावा ॥ सं० २ ॥ साठ
 पूरव लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण
 सेवे डुरितारी, सावन्नी नमरी सारी हो लावा ॥ सं० ३ ॥ समेत
 सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्राक्षिक मिल
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लावा ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण
 सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होष्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा
 चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलावा ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस बिखावो रसिया,
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसि
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा,
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया
 ॥ सा० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जव हारो रे ॥
 जि० ॥ रथ पानधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पिहारो ॥ जि० क्या०
 १ ॥ पूरण पुन्य नदयथी पायो, नरजव सकल जमारो ॥ जवि
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥
 जवडुख जंजन नाथ निरंजन, नाम लीये निततारो ॥ ममता तज सम
 ता संग जेली, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें
 रंग बधाई, घर ९ मंगलाचारो ॥ रथ महोदव रचना रची दद, मुख

जयर सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद्ध विचारी,
सेवक सुगुण संज्ञारो ॥ प्रभु पंकजकी द्विज सरणा ग्रही, जवसा
यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर
सैल जेसैं चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो;
मोसैं प्रीत लगाइ आमनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि ठोमी,
कोन चूक मोपै काढी जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजुंगी
नव जव केरी, प्रीत वली जेसी इच्छु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-
जुल पदली प्रीतमसेती, बाल कहै जई सुमति गामिनी ॥ आ०
म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥
हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो०
रं० ४ ॥ सुमति अवीर उमाय जगतमै, वैठै शिवपुर आन ॥ हो०
रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर आन ॥
हो० रं० ६ ॥ ऐसा खेल जविकजन धारै, वंछित पावैदान ॥ हो०
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥
मनमृदंग बजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान
गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित
केसर चीर रंगानु, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-
मत ठांमी, ज्यारुं गतिसें जाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

सेनामात जयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज
 खंगन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ
 पूरव लख आयु अवगाहन, अनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण
 सेवे डुरितारी, सावन्नी नमरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत
 सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण
 सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होष्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा
 चित चाहत; सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस बिखावो रसिया,
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिखवा ग्यानकेवल रसि
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमोसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा,
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया
 ॥ सा० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या वैठे जव हारो रे ॥
 जि० ॥ रथ पानधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० कथा०
 १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरजव सफल जमारो ॥ जवि
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चितधारो ॥ जि० २ ॥
 जवडुख जंजननाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम
 ता संग जेळी, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें
 रंग वधाई, घरघूं मंगलाचारो ॥ रथ महोच्चव रचना रची इद, मुख

जय२ सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद्ध विचारी,
सेवक सुगुण संजारो ॥ प्रभु पंकजकी द्विव सरणा ग्रही, जवसा
यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर
सैल जेसैं चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो,
मोसैं प्रीत लगाइ जामनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि ठोमी,
कोन चूक मोपै काढ़ी जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजुंगी
नव जव केरी, प्रीत वली जैसी इच्छु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-
जुल पहली प्रीतमसेती, बाल कदै नई मुनति गामिनी ॥ आ०
म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥
हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो०
रं० ४ ॥ सुमति अवीर उमाय जगतमै, वैठै शिवपुर आन ॥ हो०
रं० ५ ॥ अनुजव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर आन ॥
हो० रं० ६ ॥ ऐसा खेल जविकजन धारै, वंछित पावैदान ॥ हो०
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥
मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान
गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित
केसर चीर रंगान, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-
मत ठांमी, ज्यारुं गतिसें जाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ ऐसा खेल जविकंजन
धरै, पावै जवजल आग ॥ हो० ॥ चेतनता सुख होय जगतमें,
समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, डुरजनकी लाज
मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अवीर उमावो, कमा
करो रंग लाय २ ॥ डु० हो० १ ॥ शील संजमव्रत पान मिठाई,
ध्यान धरुंगी में गाय गाय२ ॥ डु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह
उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ डु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अ-
रज वीनती, सरण गही में तेरी जाय२ ॥ डु० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरी घटकी गांगरिया रंगसे जरी, शिवपुरकी
वात पूठूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर,
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग जरयो रंग शी-
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रूपज बेठै अलबेसर, मारो गुलाल
मुठी जरकै ॥ बावो० ॥ मुठी जरकै पसली जरकै, बावो० ॥ चू-
आ२ चंदन नर अगरजा, केसरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥
रतनजन्त शिर ठत्र विराजै, अंगी जमाव जमी जरकै ॥ बावो०
२ ॥ बांहै वाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०
३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये जवि आदीसरसें ॥ बा०
४ ॥ आदिखान हेदास तुमारो, तार लीओ अपणे करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टण्णो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ जवःडुख वारण शिवसुख कारण,
देखत जवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंद-
न, प्रणमुं रूपज जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान
तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कदै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥
देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे वै अति नीको ॥ द० १ ॥ बी-
स कोसथा दरसन दीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥
बीसे टूँके बीस गोमटनी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब
जितवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ ५०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-
घयात्रा करणसैं पाष कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि
सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रूपन जिनेश्वरजीको
दरशन, शुद्ध आत्म पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै
नाथ निरंजन, नवशका डख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि
जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूही रंग रे ज तूही है, संजम रंग
मोहि रंगदै ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अना-
दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-
दि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सज्जदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥
ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥
जुवरदास कहे समकितदे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रभुजीके रंगमंनषमें, खेलत संत
वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अवीर विलसंत ॥
॥ मे० १ ॥ प्रभुगुण प्रेम पिचरकी छूटत, समता सखिय मिलंत
॥ आगम लहर फूली फुलवामी, मुनिवर ब्रमर गुंजंत ॥ मे० २ ॥
अंग आनूयण पंचेद्रिय बस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना ग-
हिर कसूंवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदभूत पंच माहा
व्रत वागा, पहिरे तन सोदंत ॥ कहै जिनबंध प्रभुसी कृपामें, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी,
रं० ॥ पास प्रभु दरवार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा०
कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥
कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥
लाल गुलाल अवीर नुमावत, पासजीके दरवार रे ॥ चा० ३ ॥
जर पिचकारी गुलाबकी ठिठको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥
ताल मृदंग वीण रुफ बाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥
सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत संगल सार रे ॥ चा० ६ ॥
॥ रत्नसागरं प्रभु ज्ञावना ज्ञावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसैं कहियो मोरी, सामरेसैं कहियो
मोरी ॥ तोरण आए किण जरमाए, गेरु चलै अजिमानि ॥ हां
रे लाला गो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-
दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीसो मुंहसैं कहियो,
ना करिये सोधाणी ॥ आठ जवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं
ज्यानी-श्याम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें
भेद लागी, राजुल गुलकी वामी ॥ वीनती सुणकै अमर पद दीजै,
रंग विजय सुख दानी-आवा नर गमन ठिदानी ॥ सा० ३ ॥ ६०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन०
॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अवीर अरगजा,
सुमता चीर सुबंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फु-
लवामी, दिन२ बढ़ते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा
धंग अनोपम, शुद्ध ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद
चिंतामणि चित धर, तुझसुं अविहम रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ ६०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रभूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी ज्ञाव
 अज्ञंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी ज्ञांत ज्ञानी हे, वुंढिया
 नव७ रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवना
 संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ महत्क मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध
 सुबंध ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिभुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥
 श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग
 ॥ श्रीचिं० ॥ ज्ञावना ज्ञावो जिनगुण गावो, अमर धनै नवरंग
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंठित फल पा-
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण
 गावो रे ॥ वंठित० १ ॥ अवीर गुलाल लाल संग लावो, जर२ सु-
 ठियां नमावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिककावो, ज्ञा-
 व शुक्ल जल ज्ञावो रे ॥ वंठित० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप व-
 नावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ दरस सरस
 करके सुख पावो, पुण्य जंमार जरावो रे ॥ वंठित० चिं० ३ ॥ वा-
 जित्र वाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंठित० चिं०
 ॥ अमरसिंधुर आनंद दबावो, जिनजीसें लयलावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांदि, गावत आगम राग ॥
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति
 सोदाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगानं, पहिरूं मन
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोगूं, ध्यारों गति
 सोदाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै,
इण विध खेले फाग ॥ पिया में ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-
जी, नेम ० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥
हो ० ने ० १ ॥ हम हे केतकी तुम हो २ जमरा, फिर वासना लीजीये
॥ हो ० ने ० २ ॥ मैं हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना
कीजीये ॥ हो ० ने ० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद
दीजीये ॥ हो ० ने ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ आत्म तत्त्व विचारो ज्ञानसें, कर्म कटै ज्युं शुक्ल
ध्यानसें ॥ आ ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाएयो, ममता मिट
गई सारी जानसें ॥ कर्म क ० आ ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार
सम, नास जयो सब ज्ञानज्ञानसें ॥ कर्म क ० आ ० २ ॥ परमात्म
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल आनसें ॥ कर्म ० आ ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते ० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,
नयन जये अविकारी ॥ निडा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण
निवारी ॥ लाल ते ० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, वहोत
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे दुसिया-
री ॥ लाल ते ० २ ॥ ऐसा लठ्ठन हे नयनोंमें, क्युं पामे जव पारी,
योही विचार करो दिल अपने, होत कर्मसें जरी ॥ लाल ते ० ३ ॥
धर्म विना कोई सरणा नही हैं, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहे
प्रभु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जम्यो, द ० ॥ चो-
रासी लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव गुंही गम्यो ॥ द ०
१ ॥ पुन्य उदय आवक कुल पायो, यटमें ज्ञान उद्योत जयो ॥ द ०

१॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥
 द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो
 ॥ द० ४ ॥ कहत कमाकल्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप
 शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठोमो मोने गूंदी रे, कोइ चूक बतावो
 ॥ म० । अवीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढ़िया गढ़ गिरनारी
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊजी अरज करत है, एक बार
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए,
 पढ़ली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिव, जिनवर प्राण आधारो
 री ॥ जि० अ० १ ॥ साता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवज्र लंछन जनम जदिलपुर, कुल
 इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुतोजित,
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरव आयु
 कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत
 प्रतिपालक, अब मोहि पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके
 साहिव सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपस्ती विच सार ॥
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३
 ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जेपे, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासै संग्रही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करतां ज्ञव्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंड विक्रम माष सुदि पूनम सही, श्रीवृद्धत्वरतर गह पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंत के कल्याणक रहे सो सर्व ज्ञव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य है, लेकिन कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही (और विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्वा करणेवाले ज्ञव्यजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चखता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासै पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ १ ॥

५ श्रीसंज्ञवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

११ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्थनाथजीअर्हतेनमः

१२ श्रीसंज्ञवनाथजीअर्हतेनमः

१५ श्रीसंज्ञवनाथजीनाथायन०

- ११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥
- १२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्द्धतेनमः ६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
- १३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः ७ श्रीशान्तिनाथजीसर्वज्ञा०
- १४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय० ११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
- माघकृष्णपक्षे ॥ ५ । १४ श्रीअजिनंदनजीसर्वज्ञा०
- ६ श्रीपद्मप्रभुजीपरमेष्ठिने० १५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०
- ११ श्रीशीतलनाथजीअर्द्ध० माघशुक्लपक्षे ॥ ७ ॥
- १२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः २ श्रीअजिनंदनजीअर्द्ध०
- १३ श्रीरूपप्रदेवजीपारंगता० २ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
- ३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन० ३ श्रीविमलनाथजीअर्द्ध०
- फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ३ श्रीधर्मनाथजीअर्द्धतेनमः
- ६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ४ श्रीविमलनाथजीना०न०
- ७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता० ७ श्रीअजितनाथजीअर्द्ध०
- ७ श्रीचंद्राप्रभुजीसर्वज्ञायन० ७ श्रीअजितनाथजीनाथा०
- ७ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने० ११ श्रीअजिनंदनजीनाथा०
- ११ श्रीरूपप्रदेवजीसर्वज्ञायनमः १३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०
- १२ श्रीश्रेयांसजीअर्द्धतेनमः फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५
- १२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः २ श्रीअरमाथजीपरमेष्ठिने०
- १३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः ४ श्रीमह्विनाथजीपरमेष्ठि०
- १४ श्रीवासुपूज्यजीअर्द्धतेनमः ७ श्रीसंज्ञवनाथजीपरमेष्ठि०
- ३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः १२ श्रीमह्विनाथजीपारंग०
- चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ १२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०
- ४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने० चैत्रशुक्लपक्षे । ७
- ४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ३ श्रीकुंभनाथजीसर्वज्ञा०
- ५ श्रीचंद्राप्रभुजीपरमेष्ठिने० ५ श्रीअजितनाथजीपारंग०

- ८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः
 ८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०
 वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९
 १ श्रीकुंभुनाथपारंगतायनमः
 २ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
 ५ श्रीकुंभुनाथजीनाथायनमः
 ६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०
 १० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०
 १३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०
 १४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०
 १४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
 १४ श्री कुंभुनाथजीअर्हतेन०
 ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥
 ८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
 ए श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
 १३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०
 १३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०
 १४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०
 आपादकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥
 ४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
 ७ श्रीविमलनाथजीपार०
 ए श्रीनमिनाथजीनाथा०
 श्रावणकृष्णपक्षे । ४
 ३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०
 ७ श्री अनंतनाथजीपर०

- ५ श्रीसंज्ञवनाथजीपारंग०
 ५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०
 ए श्रीसुमतिनाथजीपारंग०
 ११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
 १३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
 १५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०
 वैशाखशुक्लपक्षे ८
 ४ श्रीअज्जिनंदनजीपरमे०
 ७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
 ८ श्रीअज्जिनंदनजीपारंग०
 ८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
 १० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
 १२ श्रीविमलनाथजीपारंग०
 ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥
 ५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
 ए श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०
 १२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०
 १३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०
 आपादशुक्लपक्षे ३
 ६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०
 ८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
 १४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०
 श्रावणशुक्लपक्षे ५
 २ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
 ५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

- ८ श्रीनमिनाथजीअर्ह०
 ९ श्रीकुंभनाथजीपरमे०
 भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥
 ७ श्रीचंडाप्रभूजीपारंग०
 ७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०
 ८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०
 आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २ ॥
 १३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०
 ३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०
 इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण । गर्भापहार पष्ठमप्पस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घण्टी गुरुके पास पंच कल्याणक
 तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंवील एकासणादिकका पञ्चक्राण
 करै, तीन टंक देववंदन करै, पन्निमणा करै, जिस दिन जो मा-
 हाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, उर पड़ली
 लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुनै या पढ़ै, जहां ज-
 गवंतकी कल्याणक जूमि होय उहां वरु महोत्सवसैं संघ समेत
 यात्रा करणैको जावै, उहां विधी संयुक्त सर्व जगवंतको पंच क-
 ल्याणकका उत्सव करै, जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीम-
 हावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उत्सव करै ॥ अब २३ जगवंतकी
 अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उत्सव
 विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्टिनेनमः) कहियै, इस
 दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करावै च्यवन कल्याणादिकका
 उत्सव करै, हीरा चढ़ावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककुं (अर्हतेनमः)
 कहणा, इस दिन जन्मजात्रादिकका महोत्सव करके अष्टो-

त्तरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कट्याणककों
 (नाथायनमः) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृ-
 क्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उछव करै, घृत गुग्गु वस्त्रा-
 दिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कट्याण-
 ककों (सर्वज्ञायनमः) कहणा. इस दिन समोसरणमें जगवंतकों
 विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उछव करै,
 वस्त्र आभूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ नि-
 र्वाण कट्याणककों (पारंगतायनमः) कहियै. इस दिन निर्वाण
 कट्याणकके ज्ञावगर्भित उछव करै, लहू चढावै ॥ ५ ॥ और ठग
 गर्भापहार कट्याणकका उछव करणा होय तो ज्यवनकट्याणकके
 उछव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कट्याणकका उछव करै,
 तपस्या पूर्ण होणोसैं पंच कट्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुभक्ति
 करै, साहमीवञ्जल करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो
 ज्यजीव करेंगे सो अनंत सुखको प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकट्याणक
 तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप सोहामणो,
 दक्षिणन्नरत उदार ॥ राजग्रही नगरी जली, अलिकापुर
 अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय
 ॥ मनवंठित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राजकरै
 तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, गील-
 गुणै अन्निराम ॥ श्री० ३ ॥ आवण उज्ज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश
 ॥ माताकुक्षि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पदम
 पक्ष अठमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोत्सव सुर करै, त्रिजुवन
 हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंठन काठवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री०
 ६ ॥ परणी नार प्रज्ञावती, जोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख
 जोगवै, पूरै वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तव लोगांतिक देवता, आ-
 वि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम जार
 ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥
 च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९ ॥ (हाल १ ॥
 सुख कारण जवियण ॥ एदेशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया च-
 लिया सुरनर कोमि, प्रभुना पदपंकज प्रणमै बेकर जोमि ॥ बेकर
 जोमी मछर गोमी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रि-
 गमो ठत्रत्रय ऊलकंत ॥ सिंहासन बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म
 प्रकासै, वारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उद्धासै ॥ १० ॥ त-
 पने अधिकारै पखवासो तप सार, पनवाथी कीजै पनरह तिथी
 ऊदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन दुवै उप-
 शम, श्रीमुनिसुवत नाम जपोजै वांढी देव उद्धास ॥ तप ऊजमणै
 रजत पालणो सोवन पूतली चंग, मोदकआल देहरै मूंकी जिन
 वर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अदुरव दर्शनो जेम, म-
 नवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति व-
 ह्वज नरतार, जस कीरत सोजाग वमाई महियल महिमा जाण
 ॥ परजव मुगति फल लहियै, ए तपने प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी
 चतुर्विध संवतणो अधिकार, जरुवठ प्रमुख नगरादिक करिया वि-
 हार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्तिक-
 सेठ जितशत्रु तुरंगम सुवत नाम कुमार ॥ तीस सदस वरप आ-
 ऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्मेतशिखर परमेसर पुढ़ता मुग-
 ति मजार ॥ १३ ॥ ६म पंच कट्याणक शुणिया त्रिजुवन ताय,
 मुनिसुवतस्वामी बीसमो जिनवर राय ॥ बीसमो जिनवर राय

जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस, वाचक समयसुंदर इम पन्नणै पुरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुद्धदिन गुरुके पास तप ग्रहण करकै सुद (१) प-
निवासें पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं
होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पनिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, ऐसे
अनुक्रमसें पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी
के पांच कट्याणक ज्ञावगर्भित स्तवन पढ़ै. गुरुका संयोग होय
तो गुरुके पास सुणै. (श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस
पदका १००० दो हजार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी
तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी हे उस मुजब विवेकी
जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणसें उत्तम फल
मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पञ्चस्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ त्रिगद्गै
धैवा जिनवरू, परपद वार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिल
समे, पूवै श्रीजिनराय ॥ दस पञ्चस्काण किंसा कहा, कीयां कवण
फल आय ॥ २ ॥ (हाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥
श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांजल गोयम ताम ॥ दस पञ्चस्काण कियां
अकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी
१, साढपोरसी पुरिमद्ध ४ ॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवठि ॥
श्री० ४ ॥ दात ७ आंखिल ए उपवास १० ही, एदिज दस पञ्च
स्काण ॥ एदना फल सुण गोयमा, जूजूवा करुं वखाण ॥ श्री०
५ ॥ रतनप्रज्ञा १ सर्करप्रज्ञा २, बालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रज्ञा

४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतम ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम
 बस ते सही, ऊपजै तिणहीज गोर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन
 तामना, जूय तृपा वलि त्रास, रोम२ पीना करै, परमाहम्मो
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिय जर नहीं जिहां
 सुख ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥
 एक दिनरी नवकारसी, जे करै ज्ञाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो
 आनखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी,
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवे
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (ढाल १ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो
 ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥
 ज्ञावसुं जे पोरसी करै, डुरगति वेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांदि
 जै नारकी, वरसैं एक हज़ार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु-
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥
 करम हणैं सहस्र एकना, निद्वैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति
 मांदि नारकी, दस हज़ार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, सा-
 द्दपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद्व करै नित जीव जे, नरके
 ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद्व करम खपाय ॥
 ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा
 करम एकासणैं, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां
 लगैं, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां ज्ञावसुं, डुरगति हणै
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम
 दूर ॥ तीतरो एकलगाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात
 करंता प्राणियो, सो कोमि परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,
 वेदै चतुस्सुजाण ॥ सु० २० ॥ आंघिजनो फल बहु कह्यो, कोमो

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, ज्ञाव आंखिल अधिकार ॥ सु०
 २१ ॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मज्जार ॥ उपवास
 करै इक ज्ञावसुं, तो पामे मुगति मज्जार ॥ सु० २२ ॥ (हाल ३॥
 केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके क-
 रता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ ठठम तप करतां अकां, सही
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही,
 जीव लहै तिहां डुक्क रे ॥ ते डुख अठम तपहुंती, दूर करी पामे
 सुक्क रे ॥ गो० २४ ॥ वेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ
 रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर
 करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय वि-
 शेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे ज्ञला,
 करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिंसुं
 करै, चवदह पूरव होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां
 वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै
 जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै जव पार रे ॥
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनं
 त ज्ञवाना पापश्री, ठूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती
 पापी तरया, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें,
 शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कह्या,
 पञ्चस्काणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण ठै घणा, करतां ठेठे
 त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चस्काण दस विथ फल
 परुप्या महावीर जिएदेवए, जे करै जविअण तप अखंनित तासु
 सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अथ्व शशि वलि पोस सुदि
 दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंद्र तप विधि

जले ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पञ्चकाणके स्तवनमें खुलासा दस पञ्चकाणके जेद नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजव उत्तम पुरुषोने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनको पढ़के तपस्या करणमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश पञ्चकाण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजव १० पञ्चकाण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञावसें डुरगतिबंध दूर करके अच्छी गती पावे, महा एवम्वरवंत होय, जाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल जेठियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवि-
यै, धर कर शुभ परिणाम लाल रे ॥ तीजै जव सेव्यो थको, बां-
धे तीर्थकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही,
जाताअंग मजार लाल रे ॥ सुणजो जवि तुमे ज्ञावसुं, चित्तसें करिय
उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक
तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुभ महुंरते, उचरोजै सतनेह लाल
रे ॥ वी० ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ शिवर ५ उच-
झाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंतण ९ अरु, विनय १० नमूं
उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ वंज १२ क्रियापदे
१३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७
जातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीज लाल रे ॥
वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर सेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, बीसे पद गुण भेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥
 एक उली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर
 नवी करणी पकै, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥
 ठठ अठम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर
 आराधियै, देव वांदै निज जक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर
 पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही,
 सात आनक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ परिकमणो दोय टंकही, करियै
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उली करो
 बीस लाल रे ॥ बीसाबीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित
 धार लाल रे ॥ काउसगने परदक्षणा, मुख जणियै नवकारलाल
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद जक्ति
 लाल रे ॥ पूजन शुज मन साचवै, दिन२ बढती शक्ति लाल रे
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम रूतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०
 १४ ॥ सावज्ज त्यागपणो करै, सोक न धारे चित लाल रे ॥ शील
 आचूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जेठ
 आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए पट् मासे
 मांहिनें, व्रत ग्रहिये वरुजाग लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण
 हुवां अकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारोनें,
 उठव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ बीस२ गिराती तणा,
 पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै इववाद

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित
 लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा जणी, उद्दिज मोक्ष उपाय
 लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आझा धार
 चित मऊर ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार
 ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी
 शशि गच्छ खरतर जणी स्तवना मनदरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुद्ध मधुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि
 दित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दो
 महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नही कर
 सके तो वो उली गिणतीमें नही, उर फेर नइ करणी पमती है.
 एक उलीके वीस पद हे (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद
 जुदार गिणते हे, कोइयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरै
 वीशों दिनमें दूसरा पद, ऐसे वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां
 पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधै. वीश
 अठमसे एक उली होय (ऐसे) वीस उली १०० से अठममें आ
 राधै. और उससे कम शक्ति होय तो ठहलें आराधै. उससे कम
 शक्ति होय तो चोविहार उपवास करिके आराधै. उससे हीन शक्ति
 होय तो त्रिविहार उपवास करिके आराधै. उससे हीनशक्ति आंविद
 (तथा) त्रिविहार एकाशना करिके आराधै. उसमें जो शक्तिवान
 होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पदरी पोसद करै. हीनशक्ति
 दिनपोसद करै. वीसों पद पोसदसेती आराधै. जो पोसद शक्ति
 सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, त्रिवर
 पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपद-
 में ७, यह सात स्थानक पद तो पोसद करिकेही आराधै. जो इतनी

अथवा दिन विसा लगे, बीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥
 एक उली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर
 नवी करणी पनै, पिठली निष्कल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥
 ठठ अठम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर
 आराधियै, देव वांदै निज नक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर
 पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही,
 सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पनिकमणो दोय टंकही, करियै
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उली करो
 बीस लाल रे ॥ बीसाबीसी धारसै, तप संख्या कही एम लाल
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित
 धार लाल रे ॥ काजसगने परदक्षणा, मुख नणियै नवकारलाल
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद नक्ति
 लाल रे ॥ पूजन शुज मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे
 ॥ वी० १४ ॥ मृतक जनम रुतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०
 १५ ॥ सावझ त्यागपणो करै, सोक न धारे चित लाल रे ॥ शील
 आज्ञापण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ
 आसाढ वैशाखमें, मिंगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए पट मासे
 मांहिनै, व्रत ग्रहिये वरुजाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण
 हुवां अकां, कजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारीनै,
 उन्नव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ बीस२ गिणती तणा,
 पुस्तक पूजा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै इववाद

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवन्धी नगरनी आविका, कीधी विध चित्त
 लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा ज्ञानी, उहिज मोक्ष उपाय
 लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आझा धार
 चित्त मऊार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार
 ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद्र वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी
 शशि गच्छ खरतर ज्ञानी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ बीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ्र मधुर्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि
 दित गुरुके पास बीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दो
 महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदात ठ महीनेमें पूरी नही कर
 सके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पमती है.
 एक उलीके बीस पद हे (तहां) कोइ बीस दिनमें बीस पद
 जुदा२ गिणते हे, कोइयक बीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरें
 बीसों दिनमें दूसरा पद, ऐसे बीसों पदकी बीस उली करै. तिहां
 पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिकै आराधै. बीस
 अठमसैं एक उली होय (ऐसे) बीस उली २०० सैं अठमसैं आ
 राधै. और उससैं कम शक्ति होय तो ठठसैं आराधै. उससैं कम
 शक्ति होय तो चोविद्धार उपवास करिकै आराधै. उससैं हीन शक्ति
 होय तो त्रिविद्धार उपवास करिकै आराधै. उससैं हीनशक्ति आंविद
 (तथा) त्रिविद्धार एकाशना करिकै आराधै. उसमें जो शक्तिवान
 होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पढ़री पोसइ करै. हीनशक्ति
 दिनपोसइ करै. बीसों पद पोसइसेती आराधै. जो पोसइ शक्ति
 सर्व पदमें नही होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, त्रिवर
 पदमें ३, साधुपदमें ४, चारित्र्यपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपद-
 में ७, यह सात स्थानक पद तो पोसइ करिकेही आराधै, जो इतनी

ज्नी शक्ति नहीं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार
 वगैरे, सो शक्ति ज्नी नहीं होय तो यथाशक्ति तप करै आराधै,
 अपणी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप
 नहीं गिणै जावै, स्त्रियां ज्नी रुतुसमयका तप नहीं गिणै, तथा तपके
 दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो
 सके तो तपके दिन उज्जय टंक पम्कमण करै, तीन टंक देववन्दन
 करै, दो हज़ार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन
 करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नहीं करै, असत्य नहि बोलै,
 सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे
 तो पारणेके दिन जिनज्जति करै पारणा करै, जो तपके दिन पो-
 सह नहीं होय तो उसी दिन श्रीजिनज्जति करै करावै, जावना
 जावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संग्यासैं काउ-
 सग्न करै, इतनाही तज्जुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै,
 उस पदका गुण याद करै उदात्त स्वरसैं स्तवना करै, हर्षित रहै॥
 ॥ अथ बीस स्थानक गुणना और काउसग्नका प्रमाण लिखते हैं॥

(एमो अरिहंताण) १००० गुणना लोगस्त १२ का काउ-
 सग्न ॥ १ ॥ (एमो सिद्धाणं) २००० गुणना लोगस्त १५ का का-
 उसग्न ॥ २ ॥ (एमो पवयणस्त) २००० गुणना लोगस्त ३
 का काउसग्न ॥ ३ ॥ (एमो आचरिआणं) दो हज़ार गुणना
 लोगस्त ३६ का काउसग्न (एमो थेराणं) दो हज़ार गुणना
 लोगस्त १५ का काउसग्न ॥ ५ ॥ (एमो उवझायाणं) दो ह-
 ज़ार गुणना लोगस्त १५ का काउसग्न ॥ ६ ॥ (एमो लोए सब
 साहूणं) दो हज़ार गुणना लोगस्त २३ का काउसग्न ॥ ७ ॥
 (एमो नाणस्त) दो हज़ार गुणना लोगस्त ५ का काउसग्न ॥
 ॥ ८ ॥ (एमो दंसणस्त) दो हज़ार गुणना लोगस्त १७ का

कान्तसग ॥ ए ॥ (एमो विणयसंपप्साणं) दो हज़ार गुणना
 लोगस्त १० का कान्तसग ॥ १० ॥ (एमो चारित्तस्त) दो ह-
 ज़ार गुणना लोगस्त ६ का कान्तसग ॥ ११ ॥ (एमो वंजवय
 धारीणं) दो हज़ार गुणना लोगस्त ए का कान्तसग ॥ १२ ॥
 (एमो किरियाणं) दो हज़ार गुणना लोगस्त २५ का कान्तसग
 ॥ १३ ॥ (एमो तवस्तीणं) दो हज़ार गुणना लोगस्त १५ का
 कान्तसग ॥ १४ ॥ (एमो गोयमस्त) दो हज़ार गुणना लोगस्त
 १७ का कान्तसग ॥ १५ ॥ (एमो जिणाणं) दो हज़ार गुणना
 लोगस्त १० का कान्तसग ॥ १६ ॥ (एमो चरणस्त) दो हज़ार
 गुणना लोगस्त १९ का कान्तसग ॥ १७ ॥ (एमो नाणस्त) दो
 हज़ार गुणना लोगस्त ५ का कान्तसग ॥ १८ ॥ (एमो सुयना-
 णस्त) दो हज़ार गुणना लोगस्त १० का कान्तसग ॥ १९ ॥
 (एमो तिष्ठस्त) दो हज़ार गुणना लोगस्त ५ का कान्तसग करै
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों नुलीमें सर्व पदके उच्चव मद्दो-
 छव प्रज्ञावना ऊजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक नुली तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त
 करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथमें वीश स्थानक सेवनविधि
 संक्षेप मात्रसें लिखी है. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें
 वीशों पदकी जुदीर विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरुका
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीस स्था-
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, वीस
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अपनी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोप-
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते
 लगावै, गुरुपदका गुरुखाते लगावै, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी वज्रल कैर, इत्यादिक इवै नर जावै विधि संयुक्त शुद्ध
जावसैं जो जव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगे सो
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकै तीसरै जव अनंत सुखकों प्राप्त
होंगे. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप उलो विधि सं० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोएंतविन्नाणसदंसणाणं, सद्दाणंदियासेसजंतूणाणं ॥
जवज्जोवविच्चयणेवारणाणं, एमोवोदियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनैङ्गूजा ॥ अथ
सिद्धपूजा ॥ लोगगज्जागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणि-
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मस्सकयकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुक्कंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-
णदयागिहस्स, एमो२ संघचउविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूंसिंधुराणं, सुरीसरारणं-
मुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-
त्तसंघमपतितज्जविजन अतिदधिरकरताज्जला ॥ अवगुणअडुपित
गुणविज्जूपित चंडकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादस्ससद्दससीलांगरथ
रुचिरधाराधरा, जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोधिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ षष्ठा पद ॥ सबोद्धिजंजंकुरुकार-
णाणं, एमो२वायगावारणाणं ॥ बुद्धोद्धिदंतीदरिणेसरारणं ॥ दिग्घो-
घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसद्दाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-
णं ॥ सत्ताण पज्जावतरुवणाणं, एमो२दोउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं सम्प्रज्ञाधुच्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उदवपज्जा

यगुणाकिरस्त, सयापयासीकरणोधुरस्त ॥ मित्रतत्राणतमोदरस्त,
 एमो२ नाणदिवायरस्त ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥
 ७ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्त, अणंतसंसारवि
 दारणस्त ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्त, एमो२निम्मलदंसणस्त ॥
 ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ८ ॥ अथ दशम विनय-
 पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्त, कुंदिंडुपादामलताचणस्त ॥ सुध-
 म्मजुत्तस्तदयासयस्त, एमो२श्रीविणयालयस्त ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं
 श्रीं सम्यग्विनयै नमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-
 म्मोषकंतरदवानलस्त, महोदयानंदलयाजलस्त ॥ विन्नाणपंकेरुह
 कारणस्त, एमोचरित्तस्तगुणापणस्त ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-
 सुद्वप्पयस्त, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्त ॥ सव्वयाज्जूपणजूपणस्त,
 नमोदिशीलस्तअदूतणस्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचर्यै नमः ॥ १२ ॥
 अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविजूपणस्त, सुलळितंपत्तिसु
 पोपणस्त ॥ एमोसदाणंतगुणप्पदस्त, नमो२सुद्धक्रियापदस्त ॥
 १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥
 लद्धीसरोजावलितावणस्त, सुरूवसंलग्नसुपावणस्त ॥ अमंगलानो
 कुदुद्धवस्त, नमो२निम्मलसत्तवस्त ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तव-
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविज्ञाकर
 रस्त, हुवालसंगीकमलाकरस्त ॥ सुलळवासाजयगोयमस्त, नमोग
 णाधीस्तग्गोयमस्त ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौत्तमाय नमः ॥ अथ
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुणसव्वतिसयासयाणं, सुरा२धी सर-
 वंदियाणं ॥ रवींउविंवामजसग्गुणाणं, दयाधणाणंदिनमोजिणाणं
 ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेज्यो नमः ॥ अथ सत्तमें चारित्तवारीपद
 ॥ सच्चिंदियापारविकारदारी, अकारणासेनजयावगारी ॥ महात्त-

वातंकरणापहारी, ज्योत्सदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १४ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्त, संदेहसंदोहविवंरुणस्त ॥ मुत्तीउपादा
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १५ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव
 स्त्रीवनवारणस्त, सुबोहिवीजांकुरकारणस्त ॥ अणंतसंसुद्धगुणाल-
 यस्त, नमोदयामंदिरसठयस्त ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्श्रुतयै
 नमः ॥ १६ ॥ अथ बीसमें तीर्थपद ॥ तुज्यंनमःसकलविश्ववशं
 कराय, तुज्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुज्यंनमःऋवनमंरुल
 मंरुनाय, तुज्यंनमोस्तुजिनपंकविवंरुनाय ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स
 म्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥ १७ ॥ ध्वजासमेत अष्ट इच्छ चढावै (पीठै)
 ६४ इंड्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंझायनमः १ ॥ ॐ इशारे
 झायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंझायनमः ३ ॥ ॐमाहेंझायनमः ४ ॥
 ॐब्रह्मेंझायनमः ५ ॥ ॐलांतकेंझायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंझायनमः ७
 ॥ ॐसहस्रारेंझायनमः ८ ॥ ॐप्राणतेंझायनमः ९ ॥ ॐअ-
 ध्युतेंझायनमः १० ॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ११ ॥ ॐसूर्येंद्रायनमः १२ ॥
 ॐचमरेंद्रायनमः १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः १४ ॥ ॐधरेंद्राय
 नमः १५ ॥ ॐभूतानेंद्रायनमः १६ ॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥
 ॐवेणुदालेंद्रायनमः १८ ॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः १९ ॥ ॐहरिस्त
 हेंद्रायनमः २० ॥ ॐअग्निशिलेंद्रायनमः २१ ॥ ॐअग्निमाण
 वेंद्रायनमः २२ ॥ ॐपूरेंद्रायनमः २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः
 २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः २५ ॥ ॐजलप्रज्ञेंद्रायनमः २६
 ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः २८ ॥
 ॐवेलवेंद्रायनमः २९ ॥ ॐप्रज्ञजनेंद्रायनमः ३० ॥ ॐवोषें
 झायनमः ३१ ॥ ॐमहावोषेंझायनमः ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ नमो महाकालेन्द्राय नमः ॥ ३४ ॥ नमो सरूपेन्द्राय नमः ॥ ३५ ॥
 नमो प्रतिरूपेन्द्राय नमः ॥ ३६ ॥ नमो पूर्णानन्देन्द्राय नमः ॥ ३७ ॥ नमो माणज्येन्द्राय
 नमः ॥ ३८ ॥ नमो ज्योतिर्देव्याय नमः ॥ ३९ ॥ नमो महाज्योतिर्देव्याय नमः ॥
 ४० ॥ नमो किन्नरेन्द्राय नमः ॥ ४१ ॥ नमो किंपुरुषेन्द्राय नमः ॥ ४२ ॥ नमो सत्पुरुषे
 द्राय नमः ॥ ४३ ॥ नमो महापुरुषेन्द्राय नमः ॥ ४४ ॥ नमो अमितकार्येन्द्राय नमः ॥
 ४५ ॥ नमो महाकार्येन्द्राय नमः ॥ ४६ ॥ नमो गीतरतीन्द्राय नमः ॥ ४७ ॥ नमो गीत-
 यज्ञेन्द्राय नमः ॥ ४८ ॥ नमो सन्निहितेन्द्राय नमः ॥ ४९ ॥ नमो सामानि-
 केन्द्राय नमः ॥ ५० ॥ नमो धात्रेन्द्राय नमः ॥ ५१ ॥ नमो विधात्रेन्द्राय नमः
 ॥ ५२ ॥ नमो रुषिन्द्राय नमः ॥ ५३ ॥ नमो रुषिपालतेन्द्राय नमः ॥ ५४ ॥
 नमो इश्वरेन्द्राय नमः ॥ ५५ ॥ नमो महेश्वरेन्द्राय नमः ॥ ५६ ॥ नमो त्सरेन्द्रा-
 य नमः ॥ ५७ ॥ नमो विसालेन्द्राय नमः ॥ ५८ ॥ नमो हास्येन्द्राय नमः ॥
 ५९ ॥ नमो श्रेयसेन्द्राय नमः ॥ ६० ॥ नमो हास्यस्तेन्द्राय नमः ॥ ६१ ॥
 नमो पद्मगेन्द्राय नमः ॥ ६२ ॥ नमो पद्मपतेन्द्राय नमः ॥ ६३ ॥ नमो महाश्रे-
 येन्द्राय नमः ॥ ६४ ॥ इति चोत्तरेन्द्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-
 देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ नमो रोहिण्यै नमः ॥ १ ॥ नमो
 प्रज्ञप्त्यै नमः ॥ २ ॥ नमो वज्रशृङ्खलायै नमः ॥ ३ ॥ नमो वज्राकुशायै नमः
 ॥ ४ ॥ नमो चक्रेश्वर्यै नमः ॥ ५ ॥ नमो पुरुषदत्त्रायै नमः ॥ ६ ॥ नमो का-
 ल्यै नमः ॥ ७ ॥ नमो महाकाल्यै नमः ॥ ८ ॥ नमो गौर्यै नमः ॥ ९ ॥ नमो
 गंधार्यै नमः ॥ १० ॥ नमो महाज्वालायै नमः ॥ ११ ॥ नमो मानव्यै-
 नमः ॥ १२ ॥ नमो वैरोद्याय नमः ॥ १३ ॥ नमो अगुप्तायै नमः ॥ १४
 ॥ नमो मानस्यै नमः ॥ १५ ॥ नमो महामानस्यै नमः ॥ १६ ॥ इति षो-
 णश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ अथ १४ यक्षपदे सो-
 पारी चढावै ॥ ॥ नमो ब्रह्मशान्त्यै नमः ॥ १४ ॥ नमो पा-
 र्श्वयक्षाय नमः ॥ १५ ॥ नमो गोमेधाय नमः ॥ १६ ॥ नमो नृकुट्यै नमः
 ॥ १७ ॥ नमो वरुणाय नमः ॥ १८ ॥ नमो कुबेराय नमः ॥ १९ ॥ नमो य-

कैलायनमः ॥ १८ ॥ उँगधर्वायनमः ॥ १७ ॥ उँगरुमायनमः ॥
 १६ ॥ उँकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ उँपातालायनमः ॥ १४ ॥ उँप-
 ण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ उँकुमारायनमः ॥ १२ ॥ उँयक्षराजाय-
 नमः ॥ ११ ॥ उँब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ उँअजितायनमः ॥ ए ॥
 उँविजयायनमः ॥ ८ ॥ उँमातंगायनमः ॥ ७ ॥ उँकुसुमायनमः ॥
 ६ ॥ उँतुंगुर्यैनमः ॥ ५ ॥ उँरुक्तायकायनमः ॥ ४ ॥ उँत्रिमुखा-
 यनमः ॥ ३ ॥ उँमहायकायनमः ॥ २ ॥ उँगोमुखायनमः ॥ १ ॥
 इति १४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ १४ यक्षणी नाम लि० ॥
 उँचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ उँअजितवलायैनमः ॥ २ ॥ उँडुरितायैनमः
 ॥ ३ ॥ उँकाजिकायैनमः ॥ ४ ॥ उँमहाकाष्ठ्यैनमः ॥ ५ ॥ उँश्या-
 मायैनमः ॥ ६ ॥ उँशांतायैनमः ॥ ७ ॥ उँनूकुट्यैनमः ॥ ८ ॥
 उँसुतारकायैनमः ॥ ए ॥ उँअशोकायनमः ॥ १० ॥ उँमानव्यैनमः
 ॥ ११ ॥ उँचंमायनमः ॥ १२ ॥ उँविदितायैनमः ॥ १३ ॥ उँअंकु-
 शायैनमः ॥ १४ ॥ उँकंदपार्यनमः ॥ १५ ॥ उँनिर्वाण्यैनमः ॥
 १६ ॥ उँवलायैनमः १७ ॥ उँवारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ उँधरणप्रियायैनमः
 ॥ १९ ॥ उँनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ उँगांथार्यैनमः ॥ २१ ॥ उँअं-
 विकायैनमः ॥ २२ ॥ उँपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ उँसिद्धायकायै-
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ उँनैसर्पका-
 यनमः १ ॥ उँपांडुकायनमः २ ॥ उँपिंगलायनमः ३ ॥ उँसर्वरत्नायनमः
 ४ ॥ उँमहापद्मायनमः ५ ॥ उँकालायनमः ६ ॥ उँमहाकालायनमः
 ॥ ७ ॥ उँमाणवायनमः ॥ ८ ॥ उँशंखायनमः ॥ ए ॥ इति नव
 निधान पदे ए कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥
 उँविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ उँक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ उँचक्रेश्व-
 र्यैनमः ॥ ३ ॥ उँवरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ उँपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥
 उँइंद्रायनमः ॥ ६ ॥ उँअमयेनमः ॥ ७ ॥ उँयमायनमः ॥ ८ ॥

नैऋत्यायनमः ॥ ४ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ५ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ६ ॥
 नैऋत्यायनमः ॥ ७ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ८ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ९ ॥
 नैऋत्यायनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ नैऋत्यायनमः ॥ १ ॥
 नैऋत्यायनमः ॥ २ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ३ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ४ ॥
 नैऋत्यायनमः ॥ ५ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ६ ॥ नैऋत्यायनमः
 ॥ ७ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ८ ॥ नैऋत्यायनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह
 नाम ॥ इहां बीस स्थानक मंत्र पूजनकी विधि विशेष लिखी
 है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी है, इस उपरांत मंत्र प्रतिष्ठा
 बलवाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवग्रह मंत्र पूजामें लिखआए
 है उस मुजबदी करणी । फेर विशेष विधि कराणी होय तो वि-
 ष्णुजीन गुरुकों पूठके करणी ॥ इति बीसस्थानक मंत्र पूजा वि० सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शशिन देवत सामग्री ए मुज सानिध कीजै, जुलो
 अक्षर जगति जणी समझाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणी ए
 जिनरा गुण गांठ, जिम सुख सोहग संपदा ए बंठित फल पांठ ॥
 १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेस ठै चंपानयरी, मधवा राजा राज्य करै
 तिण जीता दयरी ॥ पाटतणी राणी रूवनी ए लखमी इण नामै,
 आठ पुत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पामै ॥ २ ॥ रोहिणी नामै
 कन्यका ए सबहुं सुखकारी, आठ पुत्रां ऊपरां ए तिण लागै प्यारी
 ॥ बाधै चंडतणी कला ए जिम पख कुजवालै, तिम ते कुमरी धाय
 माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवनी ए घर अंगण वैठी,
 दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विच एहवी
 ए नही दूजी नारी, रंजना पञ्चमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥
 ॥ पुरुष न दीषै कोइ इसो जिणनें परणानं, आख्या आगल साल
 बधै तिण चयन न पांठ ॥ देशरना राजवी ए ततखिण तेमाया,

संवल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक
 राजातणो ए वै कुमर सोजागी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती
 लागी ॥ ऊजा देखै सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार,
 रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक ब
 खत कन्यारो जामो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर
 लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥
 घर आया परणी करी ए हरखयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस
 लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल-प्रजु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंजणो ॥ ए
 देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुख मांही रे
 केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा जला,
 चढते पख रे चंद्र जिंसी चढती कला ॥ (उछालो) चढती कला
 हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै क्री
 मा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ (चाल)
 इक कामण रे गोख चढी छे पनी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूथो, हुं एकज रे तिण
 अधिकेरो छुख हुं ॥ (उछालो) छुख हुवो देखी रोहिणी हिव
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कदो किम मोटा
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांई में कदे देख्यो नही, मुऊने त-
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनै
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए
 छुखणी रे पूत्र मुथे तरुपन करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥
 (उछालो) जाणै तरै तूं वात छुखनी गरवगदली कामनी, इम

कही राजा हाथ जाल्यो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूयथी
 तलै नारख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै
 करी, थयो मुरबित रे रोवै अति आंख्या जरी ॥ पन्तो सुत रे
 सासणदेवत जालियो, कंचनमयरे सिंहासण वैसारियो ॥ (उल्लाखो)
 वैसारियो कर जोम आगे करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो जूपतने अचंजो देख ए कारण
 किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूगियै सांसो इसो ॥ १३ ॥
 (चाल) चिंतवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुढतो
 वंदणने तिसै ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी
 रे पूरवज्जव बालकतणो ॥ (उल्लाखो) बालकतणो जव जूप पूछै
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो वली
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठलै जव रोहणी तप आदस्थो, तपतणे सगते
 साधुजगते तुम्ह जवसायर तस्थो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे
 रोहणितप किम कीजियै, विधि जाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै
 ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन
 राजाजणी ॥ (उल्लाखो) राजाजणी विधि एह जंपै चंड रोहणतप
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे
 कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ (ढाल-वीर सुणो मोरी वीनती
 ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो
 एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृद्ध अशोक ॥
 गुणनो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त०
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आवे मंगलीक ॥

विधसुं पुस्तक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतिक ॥ त० १७ ॥
 सेवा कीजै साधुनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजै
 सादमी, मनरंगे हो करष पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूं-
 ठना, मिस लेखण हो जिलमिल सुजगीस, तवकरवाली वीटणा,
 गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण
 दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणी आदरै,
 तें पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल-धरम करो जिनवर
 तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे
 रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थकर पासे रे ॥ ५० २१ ॥
 इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने
 रोहणी, मन सूयै संजम लीधो रे ॥ ५० २२ ॥ आठै पूत्रे आदगी,
 दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी
 मति जागे रे ॥ ५० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल
 शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रजु चरणां चित
 लाया रे ॥ ५० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिव-
 पुरगामी रे ॥ मन मान्या सादिवतणी, हिव पुन्यै सेवा पामी रे
 ॥ ५० २५ (कलश) ॥ इम गगन डुगमुनि चंद्र वरसे (१७२०)
 चोथ आवण सुदि जली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु सु
 ख जिम सांजली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रशन चितनी चिंता
 हली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्था फली ॥
 २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी न-
 कत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन
 करै, अगि अष्ट संगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढ़ावै, देव वंदना-

दिक करकै धर्मोपदेश सुणै (श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः)
इसका दो हजार गुणना करै, एसें सात वरस तप करणेंसें सुख
शोभाय बधेगा, पुत्रादिकका शोक संताप न होगा, विशेष अधि-
कार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्माशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय
॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ वलि
वांडु वीरजी सुदामणा ॥ १ ॥ ज्ञावठ जंजण सेव्यां सुख करै,
गातां नव निधि आय ॥ बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै
सहु पाप ॥ व० २ ॥ ब्रे कर जोनी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन
राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजै, दरिशाण डरित पुलाय ॥
व० ३ ॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणियै, एक कीयो ठम्माश ॥
पांचे ऊणा ठ वलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुतर
माशखमण जग जीपता, ठ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो
दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ जइ महाजइ शि
वगति जाणिये, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि
कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रति
मा वारमी, कीधा बारे जी माश ॥ दोयसें वेला जिनजीरा जा
णियै, इण गुणतीस विलास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिन
जीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पा
मिया, पाम्या सुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जि
नवर सयल सुखकर अतहि डुकर तप करी, संयमसु पाव्री कर्म
टाव्री स्वामी शिव रमणी वरी ॥ सेवक पन्नणें वीरजिनवर चरण
वदित तुमतणा, संसार कूप पमंत राखो आपो स्वामी सुख घणा
॥ ९ ॥ इति ठम्मासी स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसँ उत्कृष्ट छम्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संधयण बल पराक्रम के हीनपणोंसँ इकसार छम्मासी तपनहिं कर सकतेहैं तोनी छम्मासीके १०० उपवास करणेंसँ जघन्य छम्मासी तपके फलकों जीव प्राप्त होता है. उर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन छम्मासीतपका सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रभूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है. (श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः) इसका २००० गुणना करै, वीरप्रभूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणेंकों जावै, शुद्ध ज्ञावना जावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञाव लघुकर्मों जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति छम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ वारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उल्लट धरी दीजीयै ॥ ए देशी ॥ त्रिजुवन नायक तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुज पदपंकज सेव रे ॥ त्रिजु० १ ॥ प्रथम जूपाल प्रभु तूं थयो, इण अवसरपणी काल रे ॥ तुज सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल रे ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथमतूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें हएया, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ छादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एइ उत्कृष्ट तप वरणओ, आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसै साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे ॥ अवसर आवरै कम विना, ते पिण जवि सुविसाल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पम्कि
मणादिक जावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स
माधि शुद्ध जावथी, धरे ताहरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै,
कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ९ ॥ काल अनादि संसारमें, ज
न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम
हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरजव पुन्यथी, बलि ल
ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि थइ हे मुकै, हिव मिढ्यो म
नतणो जर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ जव२ एक जिनराजनो, सरण हो
ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परिहार
रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमार्ग सुविशाल रे
॥ जव२ जे मुज संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥
श्रीजिनशाशन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ धन२ जे नर
आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना
जिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में शुण्यो धन दिन
आजनो मुज मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि
नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौजाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि-
मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारै माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर श्रीरुषभदेवस्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तप
स्या करी. इस वास्तै जव्यजीव बारै माशी तपस्याका जाव लायकै
(३६०) तीनसेसाठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन
देववंदनादि क्रिया करै, बारै माशी तपका स्तवन सुणै ॥ (श्री
रुषभदेवस्वामीनाथायनमः ॥) इसका २००० गुणना करै.
तपस्या पूर्ण होनेसे सिद्धगिरी यात्रा करणैको जावै. शक्ति माफक
उद्यापन उम्भव करै. इस तपस्याके प्रशाद जव्यजीवोके कज्जी दुख

द्वौजाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज बढ़ता रहै ॥ इति चारैमा
शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ हुहा ॥ प्रणसुं प्रथम जिनेसरू, श्रुद्ध मने सुखंकार ॥
लवधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रभ्रव्याक
रणे प्रगट, जगवतीसूत्र मज्जार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारू लवधि
विचार ॥ २ ॥ आंखिल तप कर ऊपजै, लवधां अठावीस ॥ ए
हिव परगट अरथसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ संफल
संसारनी ॥) अनुक्रमे हेव अधिकार गाथातणे, लवधिना नाम
परिणाम सरिपा जणे ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां सही,
प्रथम ते लवधि ठै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उपध
समा जाणियै, वीय वप्पोसही लवधि वखाणियै ॥ श्लेष्म उपध
सारिखो जेहनो, तीजी खेद्धोसही नाम ठै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना
मैलथी कोढ दूरे हुयै, चोथी जद्धोसही नाम तेहनो छवै ॥ केश
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहैनही रोग सब्बोसही ते कही
॥ ६ ॥ एक इंडिय करी पांच इंडियतणा, जेद जाणे तिगि नाम
संजिहना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातथी लवधि
ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए
चाल ॥) हिव आगुल अठियै ऊणो मानुपक्षेत्र, संज्ञा पंचेडि तिहां
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंतित जाणे थूल प्रकार, ते रुजू
मति नामे अठम लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुपक्षेत्रे संज्ञा
वंत, पंचेडिय जे ठै तसु मन वातां तंत ॥ सुखम परजायै जाणे
सहू परिणाम, ए नवथी कडियै विपुलनती सुत्त नाम ॥ ९ ॥
जिण लवधि प्रज्ञावै ऊनी जाय आकाश ॥ ते उ थाविजाचारण
लवधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापे खिणमं खेहं आयै, ए लवधि

इग्यारिमी आसी विस कहिवाय ॥ १० ॥ सहू सुखम बादर देखै
 लोकालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहू थाक ॥ गणधर पद ल
 हियै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण
 ॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र
 वर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठारमी आखा
 वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृतकीरै मेढया जेह सवाद, एहवी
 लहै वाणी नगणीशम परसाद ॥ जणियो नबि जूलै सूत्र अरथ सुविचा
 र, ते कुष्ट कबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एके पद जणियां आ
 वै पद लख कोर, इक्कीसमी लबधी पयाणुसारणी जोर ॥ एके
 अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक
 ॥ १४ ॥ (ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सो
 लह देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस-
 मी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥
 आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी
 ॥ १५ ॥ चवद पूरबयर मुनिवरू रे, उपजंता संदेह ॥ रूप नवो रचि
 मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेस्या अगननी
 रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले
 श्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै
 रूप ॥ सदगुरु कहै ठावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८
 ॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीजामै केइ लाख ॥ तेह अस्कीणम
 हानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्कोसनी
 रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठ्ठावीशमी
 नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेस्या त्रिहुं रे, तेम पुलाक विचार
 ॥ जगवतीसूत्रमें जणियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥
 पन्नदणा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीनश इकर मिला रे,

वारु आठ विचार ॥ च० २२ ॥ प्रश्रव्याकरणे सही रे, बाकी ल
वधां वीश ॥ साजलतां सुख ऊपजै रे, दोलत दुवै निशदीस ॥
च० २३ ॥ (कलश) संवत सत्तरैसे ठवीसे मेरुतेरस दिन जलै,
श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसाजलै ॥ वाचना
चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन
जलतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ २४ ॥ इति २८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठ्ठाईस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन
क्रमसँ २८ उपवास करै, स्तवन सुणे, जिस दिन जो लब्धिका उ
पवास होय उसही नामका गुणना करै, तप पूर्ण होणसँ शक्ति
मुजब उद्यापन करै, इस तपस्यासँ निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा
आनंद रहै, इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोमी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री
वर्द्धमान, चरम तीर्थकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री
गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदैं पूर
व नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे जापिया ए ॥ ते दिव सुगुरु पसा
य, वरणविस्थुं इहां, आगममें जिम उपदिस्थाए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व
उत्पाद १, दूजो अथायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति
नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥
॥ ३ ॥ ठठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणो
ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमों
कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कढ्याण ११, प्राणायु बारमो
१२, क्रियाविशाल तेरम जणो ए १३ ॥ विंडुसार १४ इण नाम,
चवदे ए कह्या, साख्य प्रकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ (ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥) उत्पाद पूर्व सोहामणो,
 कोटी पद परिमाण ॥ षट ज्ञाव प्रगट ठै ते जिहां, त्रिपदी ज्ञाव
 विनाण ॥ १ ॥ सर्व इव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो
 पूर्व अग्रायणी, विन्नुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी,
 संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, ज्ञाषी तीजै तेह ॥ ३ ॥
 चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाख-
 नी, सप्तजंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आयो
 जोरु ॥ मत्यादिक पण जेदसुं, पद संख्या इक कोरु ॥ ५ ॥ सत्य-
 प्रवाद षष्ठो कहूं, ज्ञाषुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोरुनी,
 ज्ञाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम इव्य
 सुज्ञाव ॥ षष्ठीस पद कोरु जेहना, सूत्रे आयया ज्ञाव ॥ ७ ॥ कर्म
 प्रवादतणो द्विवै, प्रगटपणें अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना,
 कोरुनी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहूं द्विवै, नामे प्रत्याख्या-
 न ॥ लाख चौरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ९ ॥ अति-
 शय गुण संयुत ज्ञणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम
 सातसै, कोरुनी वरस लख जान ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारमो,
 षष्ठीस कोरु प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव क-
 ल्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, षप्पन्न लख इग कोरु, प्राण
 निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आययो जोरु ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक
 जे क्रिया, उंद क्रिया सुविस्तार ॥ पद संख्या नव कोरुनी, तेरमी
 क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारविंडु चवदमो, नामे अरथ नि-
 हाल ॥ पद संख्या इग कोरुनी, लाख पचवीस संज्ञाल ॥ १४ ॥
 लोकप्रत्यय देखण ज्ञणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सहस्र अरु
 तीनसै, उर त्यासी जाण ॥ १५ ॥ पूरव संख्या ए कही, गुण-
 मालाथी देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, वाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

(दाल ॥ बीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल) सूत्रे गुंथे गणधरा,
 अरथै अरिदंत ज्ञाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिम
 नासै रे ॥ १ ॥ वाणी रे जिएंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत्व
 रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय
 तजी करी, ग्यान जगत जर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै,
 प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप तंजम आदरी,
 श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग
 प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अकृत लेइ ऊजला, गुंहली सुंदर कीजै रे ॥
 नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद
 पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै,
 धित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण अथां, ऊज-
 मणो हिव कीजै रे ॥ घर सारु धन खरचने, नरजव लाहो लीजै
 रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरव नाम प्रमाणो रे ॥ नव-
 करवाली कोथली, लेखण ठवली जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव
 जुहारने, आरती मंगल कीजै रे ॥ सनात्रपूजा बलि साचवी, तत्व
 सुधारस पीजै रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, डुरगति का-
 ग्या वेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अक्यगति वेदै रे ॥
 ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि जणी, आगम वचने जोइ रे ॥
 धनवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं जवन्नमण न होई रे ॥ वा० ११ ॥
 (कलश) इम सवल सुखकर गव खरतर तपे रवि जिम क्रांत ए,
 सौंजाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृत्तंत ए ॥ संवत अठारै
 नरस ठिन्नूं नचेर श्रीबालूचरै, ए स्तवन जणतां श्रवण सुणतां स-
 यल मनवंडित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १२ पूरव तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवद पूर्वकी तपस्याके १२ उपवास करे, जिस दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे (२०००) गुणना करै,
स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी
है इस मुजब विवेकी जीव गुरुसे समझें करै. यह तपस्याके कर-
णसे ज्ञानावरणादि कर्मका क्षयोपशम होय, शुद्ध ज्ञानका उदय
होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बाल-
क हित ज्ञानी बगसियै, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन
पूजतां, मन लहि शुद्ध परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये,
द्वंदंती गुणधाम ॥ २ ॥ (दाल ॥ वीर जिणेश्वर उपदिसै ॥
ए देशी) कमला जिम कुंभपुरै, नृजवल नरपति नीमो रे ॥
पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम०
१ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना, प्रसन्नी सुता पूरै माझै रे ॥ द्वंदंती
नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ
कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंजना रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती,
व्रतधारी दृढ बंजना रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी
त्रिकाक्षो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमाक्षो रे ॥ प० ४ ॥
सुवर्णायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलामै रे ॥ आनंदसु-
पंथ आवतां, पूरब पुन्य उघामै रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम
जरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि जाले तेज दिनमणी, जा-
ग्रंत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै,
पूठियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसह जीत
मदनो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, टालता दुस्सह स-
बला रे ॥ संजम शुद्ध संजालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प०
८ ॥ डूहा ॥ मणि तेजें मुनि तरुण्ये, रथ अकी स्त्री जरतार ॥

द्वै तीन प्रदक्षणा, विधिमुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पा-
 वन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परजव तिलक है, कहि
 वै श्रीमुनिराय ॥ १० (ढाल-जरत नृप जावसुं ए ॥ ए देशी) ॥
 मधुर स्वैर मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना
 ए ॥ कर्म शुजाशुज परजवै ए, इह जव फल निपजाय, करम
 गति वंकमी ए ॥ ११ ॥ उहिनाण जव प्रागनो ए, नृप सुणे निर
 मल जाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जा
 एयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२ ॥ चोथ प्रमुख
 नृप चूंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह, जलै चित जावसुं ए ॥
 ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवोस, रयण कंचण ज
 ष्या ए ॥ १३ ॥ तिलकरसें पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम
 सफलो गिणे ए ॥ जगवन तप विधि जापियै ए, नल कहै बोध
 वरीस, पीहर षट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए,
 षट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए ॥ चोथ दोय जिन वीरना
 ए, अजितादिक बावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषथ
 त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥
 उद्यापन संघ जक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, सूधै मन साधियै
 ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहै ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त
 ऊमाहीयो ए ॥ इण पर जे जवि आदरे ए, थायै चरम शरीर, मूज
 सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता जविक
 ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस बाध्यो
 शिवधरां ॥ आगमे आखै सूरिय साखै मुगुरु जापै सुण थया, शुद्ध
 ध्यावै जविक जावै विजय विमल जिनवर कया ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास तिलकतपस्या ग्रहण करके तीस

उपवास करै. प्रथम श्रीरुषभदेवस्वामीके ७ उपवास करै, जब
(श्री रुषभदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका १००० गुणना
करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब (श्रीमहावी-
रस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका १००० गुणना करै. और श्री
अजितनाथस्वामीको आद लेकै (२२) बाईस जगवंतोका बाईस
उपवास करे. जब उन २ जगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना
करे, नर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर ज्ञाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, जवि
प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जा-
य ॥ ज० वी० १ ॥ कोरु वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै
फल तास ॥ ज० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें
न सुहाय ॥ ज० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो
पायो मद्धिनाथ ॥ ज० ॥ रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आ-
षाढजूति गणिका साथ ॥ ज० वी० ३ ॥ च्यार कषाय ठे मूलगां
रे लाल, उत्तम सोले जेद ॥ ज० ॥ इम जव २ जमतो थको रे
लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ ज० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे
रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ ज० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे
लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ ज० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बंधु
कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ ज० ॥ उपवास करतां ज्ञा
वसुं रे लाल, पामे जवनो पार ॥ ज० वी० ६ ॥ इम दिन शोले
तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए घाय ॥ ज० ॥ देव गुरु पूजा करै
रे लाल, मन वंगित फल आय ॥ ज० ॥ नर सुर रिद्धि पिण ज्ञो-
गवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ ज० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कषायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कषायके च्यार १ जेद करणसे १६ होते हे, इनको दूर कर एको प्रथम एकासणा १, निवि २, आंविज ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसे १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणसे यथा शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरुके पास शुद्ध दिन पैतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसे उपवास वा एकाशणा करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणे, पढ़नेवालोंको साहाय करै, अपनी शक्ति मुजब सर्व ठिकाने ज्ञानकी वृद्धि करै (प्रणमुं श्रीगुरु पाय) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, ऐसे तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणसे पैतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण चढ़ावै. इस तपस्याके करणसे सुखपरा दूर हो के श्रुत आत्मज्ञानकी प्राप्ति होय ॥

अथ ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

- | | |
|------------------------------|-------------------------------|
| १ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः | २ श्रीसुयगर्गांगजीसूत्रायनमः |
| ३ श्रीगणगंगजीसूत्रायनमः | ४ श्रीतमवांगजीसूत्राय० |
| ५ श्रीजगवतीजीसूत्रायनमः | ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा० |
| ७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा० | ८ श्रीअंतगदशाजीसूत्रा० |
| ९ श्रीअणुत्तरोववाङ्गीसूत्रा० | १० श्रीप्रश्नव्याकरणजीसूत्रा० |
| ११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥ | |

॥ अथ वारै दशांग नाम ॥

- | | |
|-------------------------|---------------------------|
| १ श्रीउचवाईजीसूत्रायनमः | २ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन० |
|-------------------------|---------------------------|

- ३ श्रीजीवाग्निगमजीसूत्राय० ४ श्रीपन्नवणाजीसूत्रायनमः
 ५ श्रीजंबूद्वीपपन्नतीसूत्राय० ६ श्रीचंदपन्नतीसूत्रायनमः
 ७ श्रीसूरपन्नतीजीसूत्राय० ८ श्रीकष्पियाजीसूत्रायनमः
 ९ श्रीकष्यवर्गिसियाजीसूत्राय० १० श्रीपुष्पियाजीसूत्रायनमः
 ११ श्रीपूष्पचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्दिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छे छेदका नाम गुणना ॥

- १ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृद्धकल्पजीसूत्रायनमः
 ३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः
 ५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयसा नाम गुणना ॥

- १ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन० २ संधारपयन्नाजीसूत्रायनमः
 ३ श्रीतंडुलपयन्नाजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदाविज्जियासूत्रायनमः
 ५ श्रीगणविज्जियासूत्रायनम० ६ श्रीदैवविज्जियासूत्रायनमः
 ७ श्रीवीरश्रुवोजेसूत्रायनमः ८ श्रीगन्धाचारजीसूत्रायनमः
 ९ श्रीज्योतिष्करंजीसूत्राय० १० श्रीमहापञ्चकाणजीसूत्राय०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

- १ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०
 ३ श्रीनुधनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्राय०
 ५ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय० ६ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोधीसे श्रीतीर्थश्रुति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ
 प्रकाशै गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति
 रचै, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥
 ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचांगी युत वि-
 स्तरै, नथ निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ उपम काल दुर्जिहसे, नूले बा-
 रम अंग ॥ कंठ पाठसे लिखत कर, रचना रची अजंग ॥ ४ ॥

खंडिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आगम
 लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषलैं अव मिलै, आगम
 पैतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥
 (ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसखा नंदनजी ॥ ए देशी) ॥ आचारांग पहि-
 लो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगमांग दूजोअठै जी,
 पापंकी निरधार ॥ जगतगुरु ज्ञाखै वीर जिनंद ॥ ७ ॥ दस ठाणा
 ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस वत्तीस जल प्रश्नो
 जी, जगवई अंग विज्ञात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता ज्ञानी जी,
 दस आवक व्रतधार ॥ दसानुपासक सातभो जी, अंग कह्यो निर-
 धार ॥ ज० ३ ॥ अंतगरु केवली जे अया जी, वरणन अष्टम
 अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥
 अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल
 ज्ञापिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अठार सहस आ-
 चारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी,
 ठाण डुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक
 अंबरु रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांजल जविजन चूंप ॥
 ज० ७ ॥ सूरियांज पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ इय
 ज्ञाव त्रिहुं जेदसूं जो, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो
 अज्जिगम सही जो, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाज्जिगम तीजो कह्यो
 जी, सुर कृत बहु विध ज्ञाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणामें जाणज्यो
 जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण
 धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नत्तो त्रिहुं जाण ॥ कप्पिया
 कप्पवमिसिमाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया
 जाणीये जी, वन्दिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिठाणज्यो
 ज्ञां, सांजलना सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ ख्याली ढाल

અણવટ રંગ લાગો ॥ એ દેશી) ॥ ઝેદતણા પ્રાયશ્ચિતનાં જી, ઝેદ ઠાં એ
 જાણ ॥ વૃહત્કલ્પ વિવહારમેં જી, જ્ઞાપ્યો જગવંત જ્ઞાન ॥ સુજ્ઞા
 ની લાલ ફણસું નિત રાચો ॥ રાચો ૨ રે જીવિક વિલદાર, ફણસું
 નિત રાચો ॥ સુજ્ઞા ૦ ૧ ॥ મહાનિશીથે જ્ઞાપિયો જી, જિનપૂજા
 બિહું જેદ ॥ શ્રાવક ઇચ્છે જ્ઞાવસું જી, મુનિવર જ્ઞાવ ઝમેદ ॥ સુ
 જ્ઞા ૦ ૨ ॥ જીતકલ્પ વલિ નિસીત ઢે જી, ઝર દશાશ્રુતસ્કંધ ॥
 દશ પયજ્ઞા જાણિયે જી, ચૌસરણ સંચાર પ્રબંધ ॥ સુ ૦ ૩ ॥ તંડ
 લવયાલી ચંદાવિજ્ઞયા, ગણવિજ્ઞા અજિધાન ॥ દેવવિજ્ઞયા વીરયુવો
 જી, ગજાચાર નિધાન ॥ સુ ૦ ૪ ॥ જ્યોતિકરંરુ મહા પચ્ચસ્કાણ
 જી, ચ્યાર સૂત્ર ઢે મૂલ ॥ શ્રાવક દશમીકાલિક જી, ઉત્તરધ્યયન
 અમૂલ ॥ સુ ૦ ૫ ॥ ચ્યારે અનુયોગે કરી જી, રચના સૂત્રે જાણ ॥
 તેદ ન્યાય નિકેપથી જી, અનુયોગદ્વાર પ્રધાન ॥ સૂ ૦ ૬ ॥ દ્રવ્યાનુ
 જોગ ઠાં દ્રવ્યની જી, ચર્ચા વિધિ વિસ્તાર ॥ ચરણ કરણ અનુયો
 ગમેં જી, મુનિ શ્રાવક આચાર ॥ સૂ ૦ ૭ ॥ ગણતાનુયોગ ગણના
 કરી જી, પૃથ્વી નિરી વિમાણ ॥ વર્ગમૂલ ઘનમૂલથી જી, જાણો
 ચતુરસુજાણ ॥ સુ ૦ ૮ ॥ ધર્મકથા અનુયોગમેં જી, ધર્મકથા દૃષ્ટાંત
 ॥ એ ચ્યારોં વિસ્તારીયા જી, પેતાલીસ સિદ્ધાંત ॥ સુ ૦ ૯ ॥ (ઢાલ
 તીસરી ॥ સાંગાનેર વિરાજે ॥ એ દેશી) ॥ સુણ ૨ ગોતમવાણી,
 હમ વીર વેદે ગુણખાણી રે, જીવિયાં આગમસું મન લાવો ॥ મન
 કલ્પિત વાત મ ગાવો રે ॥ જ્ઞ ૦ આ ૦ ૧ ॥ નંદીસૂત્ર ચિરનંદો, યામે
 પંચજ્ઞાનને વંદો રે ॥ જ્ઞ ૦ આ ૦ ॥ જ્ઞાનના જેદ વચાણ્યા, મતિ
 અઠાવીસે આણ્યા રે ॥ જ્ઞ ૦ આ ૦ ૨ ॥ શ્રુત ચવદે વીસાં જેદે, એ મિ
 થ્યામતને ઢેદે રે ॥ જ્ઞ ૦ આ ૦ ॥ અવધિહ અસંખ્ય પ્રકારે, મનપર્ય
 વ હુય જેદ ધારે રે ॥ જ્ઞ ૦ આ ૦ ૩ ॥ કેવલ એક પ્રકાસે, એ સબ
 વિધિ નંદી જાસે રે ॥ જ્ઞ ૦ આ ૦ ॥ એતો સહુ આગમની નંદ, સ્યા-

द्वाद गंगनी वृंद रे ॥ ज० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्ताने
 नमूं निरुज्जीका रे ॥ ज० आ० ॥ प्रथम शीलांगचारी, श्रीअन्नय
 देव बलिहारी रे ॥ ज० आ० ५ ॥ मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि
 कने सिर नामी रे ॥ ज० आ० ॥ सामान्य विशेषे ज्ञाखी, निश्चय वि
 वहार वै साखी रे ॥ ज० आ० ६ ॥ उत्सर्ग वचन ठेकेइ, अपवाद
 वचनने लेइ रे ॥ ज० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंठित स
 गला साथो रे ॥ ज० आ० ७ ॥ (ढाल ४ ॥ मंगल कमला कंद ए
 ॥ ए देशी) ॥ पैतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो
 द्वित जणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म
 जाय खती ए ॥ १ ॥ शक्ति ठते उपवास ए, आंखिल निविथी उ
 द्वास ए ॥ एकासण अश्रवा करै ए, इम पैतालीस दिन आचरे ए
 ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक
 मण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३ ॥ उजमणो
 हितचित करै ए, गुरुज्जक्ति चित्तसुं आवरे ए ॥ जक्ति करै साहमीतणी
 ए, जे पढय पढावै ते जणी ए ॥ ४ ॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए,
 तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमआ
 छदै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ (कलश) शुभ नंद सर निधि चंद्र
 वरपै माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर बीकानेर सुंदर वृद्धखरतर
 गण घणे ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक रामगणि रुद्धिसार ए, इ
 म करिय स्तवना सुव महोदय सदा जयशकार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै. ११
 दिन उपवास वा एकासणा करै. जिस दिन जो गणधर मादारा
 जका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीइन्द्रनीलगणधरायनमः २ श्रीअग्निभूतीगणधरायनमः

- ३ श्रीवायुजूतिगणधरायनमः ४ श्रीव्यक्तजूतिगणधरायनमः
 ५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय० ६ श्रीमन्तिस्वामीगणधराय०
 ७ श्रीमोर्यपूत्रजीगणधरायननः ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०
 ९ श्रीअवलजीगणधरायनमः १० श्रीमेतार्यजीगणधरायनमः
 ११ श्रीप्रज्जवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर जगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान द्वादसांगीके रचना करनेवाले ज्ञेय, इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै. गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेसे गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी जक्ति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे साहमी बढल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साधिया करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढके शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियाबड़ी पन्किने, एक लोगस्सका काउसग करै, पार कै प्रगट लोगस्स कहै, नीचा बैठकै मुंहपत्ती पन्किने है, दो बांदणा देवै, स्थापनाजी हो खमासमण देई (जगवान अमुक तप गहणत्थं चेश्यं वंदावेहं) एसा कह चैत्यवंदन करै, एमोत्तुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नत्तु० कह ४ घुई कहै, चौथी गाथा कहकै नीचा बैठके एमोत्तुणं कहै, फेर खमा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थ करेमिकाउसगं अन्नत्तु०) कहकै १ लोगस्सका काउसग करै, पार कै नमोईतसिद्धा० कहकै (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ स्वैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाञ्जलिर्चितां ह्ये ॥ १ ॥ यह घुई कहकै (शांतिदेवताआराधनार्थकरेमिकाउसगं अन्नत्तु०) कहै, एकेक नवकाराका काउसग करै, घुई पढै, (शांतिःशांतिकरःश्रीमान्, शांतिदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेषा,

येषां शांतिर्गृहे २ ॥१॥) पीठे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी जुवनदेवता-
 की स्तुति काउसग एकैक नवकारका करके अनुक्रमसें कहे. पीठे
 शासनदेवताका काउसग एक नवकारका करे (यापातिशासनं जैनं,
 सद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ साज्जिप्रेतसमृध्यर्थं, जूयाञ्चासनदेवता ॥१॥)
 पीठे समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थं करैमि काउसगं अन्नहु०
 एक नवकारका काउसग करै, पार के (श्रीशक्रप्रमुखाय क्ता, जिन-
 शासनसंस्थिताः ॥ देवान्देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षंत्वपायतः) यह
 भुई कइके नीचा बैठके नमोत्पुणं कहे, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन
 करै. फेर खमासमण देके (जगवन् अमुक तप गहणत्वं करैमि
 काउसगं) एक लोगस्तका काउसग करै, पार के प्रगट लोगस्त
 कहे, खमासमण देके ३ नवकार गुणे. फेर खमासमण देके
 (इच्छकार जगवन् अमुक तप गहण दंरुक उच्चरावो जी) गुरु कहे
 (उच्चरावेमो) पीठे (अहसंजंतंतुह्माणंसमीवे अमुकतवंउपसंपज्जा-
 ताणंविहरामि ॥ तंजहा दवउ कालउ जावउ दवउणं अमुकतवं
 खिसउणंइच्छावा अन्नउवा कालउणं जावपरिमाणं जावउणं जाव-
 गदेणंतगहिज्जामि जावउलेणंतव लिज्जामि सन्निवाएणंतजविज्जामि
 जावअसेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेयरिणामोनप-
 रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नउरायाज्जियोगेणं गणाज्जियोगेणं वल्लज्जि
 योगेणं देवाज्जियोगेणं गुरुनिग्गदेणं वित्तेकंनारेणं अन्नत्थणाज्जोगेणं
 सदस्सतागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वेसिरानि॥)
 जो तप गहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ बेर यह
 पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो आपनाचार्यजी समझै तीन वार यह
 पाठ पढ़ै, पीठे गुरु कहे (हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तडुज्जयेणं सम्मं-
 धारणीयं गुरुगुणेदिंबुद्धादि नित्यारगपारगाहोदि) एसो गुरु कहे.
 पीठे खमासमण देके गुरुमुखे पञ्चखाण करै अथवा गुरु नदि होय

तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करै इरियावही पन्निक्कमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पन्निक्कहै २ वांदणा देवै (इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तुप्पेअम्हं अमुक तप पारावेह) गुरु कहे (पारावेमो) इच्छामिख-
मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्कमणत्तं
करेमि कानुसग्गं अन्नबू० कहके ? नवकारका कानुसग्ग करे, स्तु-
तिकी गाथा कहै, पीठै एमोबूणं कहै, बैठकै जगवन् अमुक तप
करतां अविधि आशातनार्ये करी जो कोइ दूषण लागो होय सो
मन वचन कायार्ये कर मिच्छामिडुक्कमं. और ज्ञानज्जत्ति इव्वसें
जावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु कहे (नि-
त्तारगपारगाहोह) पीठे पच्चरकाण करै, अमुक तप आलोयण नि-
मित्तं करेमि कानुसग्गं अन्नबू० कहके ४ लोगस्सका कानुसग्ग करै,
प्रगट लोगस्स कहै, पीठै उपगरण पात्र जत्त पानादिकसें साधुज्ज-
त्ति करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढेवाले तथा पढा-
एवाले विद्यागुरूकी जत्ति करै, साहमी वज्जल करै, पहरावणी करै,
पीठै याचकोंका दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, बैठी परखद बारजी ॥ अमृ-
त वचन सुणी अति मीठा, पामे हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणो२
रे श्रावक उपधान वह्या विन, किम सुजै नवकार जी ॥ उत्त-
राध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह जण्यो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २ ॥
महानिशीत सिद्धांत मांहे पिण, उपधान तप विस्तार जी, अनु-
क्रम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गढ आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥
तप उपधान वह्यां विन किरिया, तुम्ह अलप फल जाण जी, जे

उपधानं बह्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥
 तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-
 नी आण विराधै, जमस्यै जव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अवज्या
 घाटे समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता
 आदेश निरदेश, कामे सरै नहि कोय जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ इक धेवरने
 खांते जरियो, अतिघणो मीठो आय जी ॥ एक आंवक उपधान वदे
 तो, धन३ ते कहिवाय जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो
 तप पहिलो वीसम जाण, इरियावहीनो तप बीजो वीस
 म आण ॥ इण त्रिहुं उपधाने निश्चै नाण मंमाण, वारे उपवासै
 गुरु मुख वे वे वाण ॥ ८ ॥ पैत्रीसम त्रीजो णमोत्रुणं उपधान;
 त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चो
 थो चोक्रम एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ए ॥ पांचमो
 लोगस्त तप अठावीसम नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रि
 ण ठाम ॥ पुस्करवरदी तप ठणे ठक्रम सार, साढात्रण उपवासे
 वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान म
 ल, उपवास करै इक चौविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै बल
 गुरुमुख सरस रसाल, गञ्जनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥
 माल पहरण अवसर आणी मन उग्रंग, घर सारु बारु खरचै धन
 बहु जंग ॥ अति उछव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवा
 वे पावे अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान-
 विधिसौं जे वदे, ते सूयो किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद,
 जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां जरे ए ॥ १३ ॥ न करै
 क्रोध कपाय, ह्म३ हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥
 नाणे घरनो मोह, उत्कृष्टी करै, साधुतणी रदणी रदै ए ॥ १४ ॥
 पटुर सीम सिझाय, करि पोरसि जणी, उंचे स्वर बोले नही ए ॥

मन माँहें जावै ऐम, धन२ ए दिन, नरजव माहि सफल सही ए
॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती बहै, पहिरै माल सोहामणी
ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अति-
घणी ए ॥ १६ ॥ परजव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध
नाटक पमै ए ॥ लानै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती
पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ (कलश) इम वीर जिनवर जुवन
दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम जवि-
य जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी
सरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥
इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्तके पहिले दिन मध्याह्न समें सु-
हागणस्त्री चांदी आदिके आलके अंदर कुंकुमका साधिया करकै
ऊपर चावलौका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरकै माला पधराके
सुहागणस्त्री अपणें हाथसैं सिर पर धरै, पीठें सब संघ समेत गीत
गाते बाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सबवस्त्री गुंढली करै, नर-
स्त्रियां गुंढली गावै, पीठें गुरु उर्ध्व साससैं वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर
वासकेपसैं माला प्रतिष्ठित करै, यथा ॥ नैहोणमोअरिहंताणं ।
नैहोणमोसिद्धाणं । नैहोणमोआयरियाणं । नैहोणमोउवझायाणं ।
नैहोणमोलोएसबसाहूणं । नैहोणमोअरहणं जगवणं वद्धमाणसा-
मिस्स ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सबघसिद्धिए नैहो वः वः वः
स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीठें बाजित्र वाजते स्वस्थानके
आवै, बाजेठ पर आल रखै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै,
श्रीफलादिककी प्रज्ञावना करै, पीठें मालामाहक प्रज्ञात समें प्रति-
क्रमण करकै पमिलेइण देववंदनादि करकै जिनपूजा करै, पीठें

उपधानें वहरा नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥
 तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-
 नी आण विराधै, जमस्यै जवर तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अघड्या
 घांट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता
 आदेश निरदेश, कामें सरै नहि कोय जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ इक घेवरने
 र्यांने जरियो, अतिघणों मीठो आयि जी ॥ एक श्रावक उपधान बदे
 तो, धन ७ ते कहिवायें जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ (टाल २) ॥ नवकारतणो
 तप पहिलो वीसम जाणें, इरियावहीनो तप बीजो वीस
 म आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चै नाण मंमाण, वारे उपवासै
 गुरु मुख बे बे वाण ॥ ८ ॥ पैत्रीसम त्रीजो एमोवुणं उपधान,
 त्रिण वायण उगणोस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चो
 थो चोकम एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ए ॥ पांचमो
 लोगस्त तप अठावीसम नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रि
 ण ठाम ॥ पुस्करवरदी तप ठो ठकम सार, साढात्रण उपवासे
 वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान म
 ल, उपवास करै इक चौविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि
 गुरुमुख सरस रसाल, गजनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥
 माल पहरण अवसर आणी मन उठंग, घर सारु बारु खरचै धन
 बहु जंग ॥ अति उछव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गथा
 वै पावै अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (टाल ३ ॥) ए साते उपधान,
 विधिसों जे बदे, ते सूयो किरिया करै ए ॥ खिल न करै परमाद,
 जीव जतन करइ, पूंजि २ पगलां जरै ए ॥ १३ ॥ न करै
 क्रोध कषाय, इम ७ इसै नही, मरम केहनो नवि कइ ए ॥
 नाले घरनो मोह, उत्कृष्टी करै, साधुतणी रहणी रई ए ॥ १४ ॥
 पंदुर मीम सिझाय, करि पोरसि जणी, उंचे स्वर बोलै नही ए ॥

मन माहि जावै एम, धन २ ए दिन, नरजव माहि सकल सही ए
 ॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती वडै, पहिरै माल सोहामणी
 ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अति-
 घणी ए ॥ १६ ॥ परजव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध
 नाटक पमै ए ॥ लानै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती
 पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ (कलश) इम बीर जिनवर जुवन
 दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम जवि-
 य जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी
 सरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥
 इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्तके पहिले दिन मध्याह्न समै सु-
 हागणस्त्री चांदी आदिके आलके अंदर कुंकुमका साधिया करकै
 ऊपर चावलौका करै, पांच सुपारी १ नाखेर घरकै माला पधराके
 सुहागणस्त्री अपणें हाथसैं सिर पर धरै, पीठें सब संघ समेत गीत
 गाते बाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सववस्त्री गुंढली करै, नर
 स्त्रियां गुंढली गावै, पीठें गुरु उर्ध्व साससैं वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर
 वासकैपसैं माला प्रतिष्ठित करै, यथा ॥ नैहोणमोअरिहंताणं ।
 नैहोणमोसिद्धाणं । नैहोणमोआयरियाणं । नैहोणमोउवज्जायाणं ।
 नैहोणमोलोएसवसाहूणं । नैहोणमोअरहणं जगवणं वद्धमाणसान-
 मिस्स ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सबवसिद्धिए नैहो वः वः वः
 स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीठें बाजित्र वाजते स्वस्थानके
 आवै, बाजेट पर आल रखै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै,
 श्रीफलादिककी प्रज्ञावना करै, पीठें मालाआदिक प्रज्ञात समै प्रति-
 क्रमण करकै पमिलेइण देववंदनादि करकै जिनपूजा करै, पीठें

मुहुर्त्तकी वखत वाजिप्रावि उज्ज्व संघ समेत गुरु पास आवै, पाच श्रीफल रोक ड्य हाथमें लेके पहले जो नांदकी थापना करी दे. नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वनी ठवली पर मोलीसे लपेटके थापे सो उस नांदके च्यारों खूणों पर च्यार साधिया कुंकुं उर चावलोका करके नारेल उर रोक मोहर वगेरे जेट करै. साधियों पर अछे विदामादि फल चढ़ावै. पीठे मालाग्राहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरुके संग श्रियावही पम्किमे. पीठे आवक खमासमण देके आवकमुहपत्ती पम्किलेहै, फेर खमासमण देके इच्छकारजगवन् तुझे अम्मं संघपति मालाआरोहावणि देववंदा मणि वासनिक्षेप करो. तब गुरु वासक्षेप करै. पीठे फेर खमासमण देई तुझे अहं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेह, आवक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम खमासमण देके इच्छा० जगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेह. पीठे गुरु चैत्यवंदन बोलै. आवक एमोत्रुणं कहे अरिहंत चैत्र्याणं क० कहेके एक नवकारका काउसग करै, नमोर्दत्तु सिद्धा० कहेके गुरु स्तुति कहै. यथा ॥ अहंतनोतु सश्रेयः । श्रियं यध्याननो नरैः । अप्पेडीसकला त्रेहि । रहंसासहसोच्यते ॥ १ ॥ पीठे लोगस्सज्जो० सबलोए० वंदणव० अन्नत्रु० कहेके १ नवकारका० स्तुति कहै. उमितिमंतायं । शासनस्यनतासदायदंहीच । आश्रियंते श्रियांते । जवतो शजिनापातु ॥ २ ॥ पीठे पुस्करवर० वंदन० कहेके १ नवकारका० स्तुति कहै. नवतस्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकी र्तिविद्या । नयास्वाज्जनगीजीयात् ॥ ३ ॥ पीठे सिद्धाणं बुद्धाणं० ततः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थ करेमि काउसगं वंदणव० अन्नत्रु० कहेके एक लोगस्सका काउसग करै, नमोर्दत्तु० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदा ।
 सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं०
 एक नवकारका० पारके नमोर्दत्तसि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो
 पांगासदास्फुरदुपांगा । जवतादनुपहतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥
 ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काउसगं अन्नबु० कहकै
 १ नवकारका० नमोर्दत्तसि० ॥ वदवदतीवागवादनी । जगवतिकःश्रु
 तगमेबु । रंगसरंगमितिवर । तरणीस्तुच्यनमश्तिदः ॥ ६ ॥ ततः
 शासनेदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नबु० १ नवकारका० स्तुति॥
 उपसर्गविलयवियन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । हतमिहसमिही-
 तत्कृते । स्युशासनेदेवताजवतु ॥ ७ ॥ पीठै समस्त वेयावञ्चकरा-
 णं शंतिकराणं सम्मदिद्विसमाहिकराणं अन्नबु० १ नवकारका का-
 उसग स्तुति० ॥ संघत्रयेगुरुगुणोपनिधोसुवैया । ब्रत्यादिकृत्यकरणैक
 निवदकहा । तैशांतयेसहजवंतुसुरासुरीजिः । सधृष्टयोनिखिलविघ्न
 विघातदहा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोर्दत्तं जावंतिचे०
 नमोर्दत्तसि० कहकै स्तवन कहै ॥ उँमितिनमो जगवन । अरिहंत
 सिद्धाचारियजवजाए । वरसवसाहूमुणिसंघ । धम्मतिज्जयपवयण
 स्स ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतदजगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिव
 संतिदेवयाय । सिपवयणवेदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया ।
 वरुणोवायुकुवेरईसाणा । वंजोनागुत्तिइशम । मवियसुदिसाणपाला
 ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतहयपंचण्हं । तदलोगपा-
 लयाणं । सुराई गदाणयनवन्हं ॥ ४ ॥ साहंतस्ससमरकं । मज्झमिणंचेव-
 धम्मणुछाणं । सिद्धिमविग्गंमज्जु । जिणाणंनवकारज्जणियं ॥ ५ ॥ इति
 स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीठै जगवान आगे प्रमदा करके मालाआइ
 क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनार्थे वांढे, पीठै खमा होके कहै इच्छकार
 ज० तुझे अहं संघपति मालाआरोडावणी उदैसावणी नंदीसुत्र

संज्ञलावणी काउसग्न करावो. गुरु कहे करेह. इष्टं. संघपतिमाला
 आरो० उद्दे० करेमि काउसग्नं अन्ननु० कहके ? लोगस्सका का०
 प्रगट लोगस्स कहे, गुरुजी काउसग्न करै, पीठै मालाग्राहक खमा
 समण देइ इच्छाकार जगवन् नंदीसूत्र संज्ञलावो, तब गुरु खमा
 होकर हाथमें वासक्षेप लेके तीन नवकार सुणावै, नित्यारगपार
 गाहोह कहके मस्तक पर वासक्षेप करै, पीठै श्रावक खमासमण
 देके इच्छा० संघपति माला उद्देसज, गुरु कहे उद्देसज, फेर श्रावक
 इच्छामि० इच्छाका० किंजणामी, गुरु कहे वंदित्तापघेह. खमासमण देके
 इष्टं तुहो अहं संघपति मालाउदिज इच्छामो अणुसठि उदिठि२ ख
 मासमणाणं इत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तडुज्जयेणं जोगकरीजाहि गुरु
 गुणबुद्धीजाहि नित्यारगपारगाहोह. फेर खमासमण देई तुह्माणं
 पवेश्णं संदिसह साहुणंपघेमी, गुरु कहे पघेह, पीठै खमासमण
 देके तीन नवकार गुणता जया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासक्षेप
 चढ़ावै. गुरु ? प्रदक्षिणा देवे. पीठै मालाग्राहक मूढपत्ती पस्सिखेहै,
 खमासमण देके इच्छाका० तुह्माणंपवेश्यं संदिसहजगवन् काउसग्नं
 करेमी इच्छामी० इच्छाका० जगवन् तुहो अहं संघपति माला उद्दे
 सामणी आरोहावणी करेमिकाउसग्नं अन्ननु० कहके ? लोगस्सको
 काउसग्न प्रगट लोगस्स कहे पीठै खमासमण देके वेस्सणो संदिसाजं,
 दूजै खमासमण वेस्सणो ठाजं, पीठै खमासमण देके जो विधि करतां
 अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायार्थे करी मि०
 इति नांदकी क्रिया ॥ पीठै मालाग्राहक जगवानके नव अंग नव रु
 पिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुहुर्त्तकी वखत मंदरजीके
 बाहिर जमीन खुली होय तो जगवानके सनमुख सर्व संघ आयके
 खमा रहे, पीठै मालाग्राहक गुरुके पास आके नव अंग पूजा करे, नव
 रूपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्ते जेट धरै, पीठै गुरु उर्ध्वधासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीठै जो माला पहिरावै जिसको माला पहिराएवाला यथाशक्ति पहिरामणी करै. माला पहिराएवाला उर्ध्व-श्वासें करी संघपतिकों माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सञ्चित कुशीलादिकका गुरु पास पञ्चखाण करै, पीठै मंदरजी पर चढ़ाणे-की धजा सो संघपति आलमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्रदक्षणा देकर गुरु पास वासकेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढ़ावै, पीठै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधर्मी वात्स-ल्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुठ तो शास्त्रोके लिखतसें कुठएक दे-देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखते हैं ॥ उपधानवाला श्रावक विगयोमेंसें एक घीहीज लेता हे नर विकृती नहीं लेता १, उपधानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसें एकही नीवीता लेणा का-रणयोगसें खांम वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट इव्यादिक नही लेणा ३, घी तेलका वधारया साग ज़ी नहीं लेणा धुंगारया हुवा लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा पापम सीरा वमे वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरषणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसें स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नही ७, अन्न पुरषणेवाली स्त्री फटावस्त्र अथवा कारीजगावस्त्र नहि पहरे ८, नोजन करणेकी जगा ऊमू वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित्त करै अखंमित वस्त्र रखे तो शुद्ध ९, जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रखे हैं वो सब नोगानोगकीदोनों वखत पमिलेहणा करणी १०, जीमणके ठिकाणे जो जो आली कटोरा वगेरे रखेहे वो सब नोजन करे जिस दिन पादोनपोरसीमें पमिलेहणाकी वखतही पमिलेहणा दूसरी वखत अन्यदा नही ११, कदाचित् हार कुंरुलदिक गहणा अपणे

शरीरसें उतारिके अण्णो घरादिकमें रखा होय तब विना उपधान-
चाखी जो खी अठपहरि पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें
रातको दिनको नही वह उपधानवाहीकूं देवै नर दोही खी प्रजात
समें उनैके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवै १२, उपधानमें सर्व वस्त्र
अण्ण अथवा मालकणके हाथसें पमिलेह्यां शुद्ध होय १३, सब
क्रिया अनुष्ठानादिक आदेस निर्देसादिक मालकणके आदेससें शुद्ध
होय १४, क्रिया अनुष्ठानकी कराणेवाली मालकण जी दोनुं वखत
पमिकमण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात बेर देव वांटे तब शुद्ध
होय अन्यथा नही १५, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नही गिणे
जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी
सातम अठम नवम दिन तीन तपस्थानमें नही गिणे जाय १७,
प्रतिक्रमणमें प्रजात समें नवकारसीकाही पंचस्काण करै पीठे
क्रिया करती वखत गुरुके पास उपवास १ अथवा आंबिल
२ नीवी ३ अथवा एकसिलैकी ४ करै १८, पंचस्काण पारती
वखत पहली नवकारसी पारै पीठे उपवासादिक पारै १९, पहले
ही उपधान तप ग्रहण करणेके दोनो दिन नंदीके आम्रबरसें ढेरी
ही जाती हे इत वास्ते अठपहरि पोसा वण नहि आता इत
वास्ते तीसरे पहरकी पमिलेहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पमि-
लेहके रातकूं निश्चै पोसा लेण २०, प्रजातसमें उपधानवाही गुरु-
के पास आयके इरियावही पमिलेहके पोषय वपुन सामायक लेके
वस्त्र पमिलेहणा नर अंग पमिलेहणा करै, पीठे मुहपती पमिले-
हके (नहीपमिलेहणसंदिस्सानं नहीपमिलेहणकरूं) ऐसे खमासण
होय देवे पीठे ठव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसका
क्रम ऐसे हें बहुवेलंसंदिस्सानं १ बहुवेलंकरूं वैसणोसंदि० वैसणो-
गं० सिंहायसं० सिंहायक० पांगरणोसं० पांगरणोपमिगहुं

कठासणोसं० कठासणोपनिगहूं) एवं १० ॥ २१, पीठे वंदन दिया
 बाद सुख तप पृष्ठा २२, सांजकूं जी यही क्रिया करणी लेकिन
 इतना विशेष हे पट, पमिलेहणा उर अंग पमिलेहणा तो करै परंतु
 उपधि पमिलेहण नही करै, पीठे गुरुवंदन अब दिये बाद खमासमण
 वस देवै (उहीपमिलेहणसंदिस्ता० उहीपमिलेहणकरुं सिझायसं०
 सिझायक० वैसेणोसंदिस्ता० वैसेणोठाउं) बाकी पहलीकी तरे २२,
 न्यारा पमिकमणा होणोसैं पाकीअंडना सुखतपपूठना पर्वत क्रिया
 सब करदेना २३, माला पहरणोमें सांजकूं माला संत्रायके अपने
 घर रात्रीजागरण करैके प्रजातसमें आचार्य पास माला पहरणी
 तिसके बाद दिन दश तक दशाहिका करणी उहां पोसा नही
 लिया हुआ जी हे तो जी तिविहार एकासणा करताजया निरा-
 रंजी होकर रहै २४, सजी उपधान उत्कृष्ट विधिसें बहना, उसके
 अज्ञावमें श्रावक एकांतर उपवास उर साधुओंने उपवास आमल
 निवी एकासणा करैके उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन
 दिन संख्याका नियम नहीं हे ॥ इति नित्यकर्तव्यता समयसुंदरो-
 पाध्याय कृत संस्कृतोपरिश्रमद् कृत ज्ञाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान बहणेवाला बारे
 उपवास अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अमतालीस एकासणा
 करके १९ उपवासकी पैठ पूर कर पीठे पांच अध्ययनकी वाचना
 नमो अरिहंताणोंसें लेके नमो लोएसवसाहूणं तक्रकी १ वाचना
 एक दिनमें लेवे, तिसके बाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमो-
 कारो १, सबपावप्पणासणो २, मंगलाणंचसवोसिं पढमंहवइमंगल ॥ एवं
 ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आव
 अध्ययनोंकी एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो बबतो आंबिल करै,

फेर तेलो करे, तेलोके पारणे आंबिल करे, फेर तेलो करे, फेर आंबिल करे, फेर तेलो कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तेलो मिलाएसे उपवास १२ जये. यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसे करे तो पोसा २० बीस करे उपवास १२ करे, विधिसुं वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला बीसमत्तप २०॥ अब दूसरा इरियावहीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें जी अंगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीठे इच्छाकरेणसंदिस्सहसुं लेकर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेदियासे लेकर गमिकानुसंग तक दूसरी वाचना देणी, नर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तेलो करके लेवे ॥ इरियावहिया श्रुतस्कंधका तप बीसम नामका अविधिसे पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥ अब तीसरा जावारिहंतका तीसरा उपधान नगणीस उपवासकी पैठूरकर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तेलो करे पीठे नमोत्रुणसे लेकर गंधद्वीण तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंबिल करे, लोगुत्तमाणसे लेकर धम्मवरचानुरंतचक्रवटीण तक दूसरी वाचना लेवे २, पीठे सोले आंबिल करके अप्पमिहयवरणाण से लेकर सबेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवे ३. यह तीसरा उपधान नमोत्रुणका पैत्रीसरु नामका जिसमें उपवास १ए विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा उपवास ॥ ॥ अथ चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन. जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन करे. अरिहंतचेइयाणं इहांसे लेकर वंदणवत्तियाए अन्नउत्तसीएणं अप्पाणं वोसिरामि तक १ वाचना लेणी, यह आपनारिहंतका

चौथा उपधान चतुर्कर्म नामका जिसमें पोसा ४ उपवास १॥
 अठाई ॥ ॥ नामारिहत चतुर्वीसत्येका पहले तेला करै, पीठे
 लोगस्तनजोयगरे इहांसे लेके चतुर्वीसंपिकेवली तक पहली वाचना
 लेवै, फेर बारे आंबिल करके उत्तजमजियंचवंदे इहांसे लेकर पास-
 तदवदमाणच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तरे आंबिल करके एवम-
 एअजित्युआसे लेकर सिद्धासिद्धिममदिसंतु तक तीसरी वाचना
 लेवै, ए नामारिहत चतुर्वीसत्येका अठावीसनाम तप विधिसुं व-
 दतां दिन २० पोसा २० उपवास साढापनरे एकांतर करै, अवि-
 धि करता दिन अठाईस पोसा २० उपवास साढासतरे ॥ ५ ॥

सुत्रार्थश्रुतस्कंध पदली १ उपवास पीठे ५ आंबिल पीठे पुस्कर-
 वरदीवहेसे लेकर सुयस्तजगवनकरेमिकानुसर्ग तक एक वाचना
 देणी. यह ठठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम ठक्कन पोसा ६ उपवास
 साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान
 पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीठे सिद्धाणंबुद्धाणसे ले-
 के तारेइनरिंवनारिवा तक एक वाचना देणी. यह सातमा उपधान
 मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अथ उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब वहेत आवक अथवा वहेत आवकएया उपधान
 वहे तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखणा, संघकी कुंजरासी
 हे. अगर एक आवक अथवा एकही आवकणी उपधान वहे तो
 अपने नामसे चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांजकूं वाचनाचार्य
 के पास आयके इरियावही पतिक्रमके खमासमण देके कहे (अमुक
 उपधान तपे पवेसह) गुरु कहे (पवेसामो, नवकारसी करणा अंग
 पमिखेदण संदिस्ताणा) तब उपधानवाही कहे (तदत्ति) इहां इमा
 श्रमण दिये वाद चोवीहार करै, चाहेपाणी पीवै वा अथवा जोजन

करो व्यवस्था नही है, अथ किसी ज़ी कारण करके सांजकूं खमासण नही दिया होय तो तब पम्किमणोके वखतसे पहली पिठली रातकूं ज़ी खमासण देणा काल वखत पम्किमणा करणा नवकारसीका पञ्चक्राण मालकण पास करणा पीठै सूर्य उदय जये वाद वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके उर इरियावहीके) तो प्रारंभमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी उर उत्क्षेप ज़ी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नही हे. तिसके बाद प्रज्ञातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके बाद पोसा सामायक लेणा, पीठै दो वांदणा देके पञ्चक्राण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पृष्ठा वांदणा दोय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पम्किमणके मूहपत्ती पम्लिहके दो वांदणा देवे, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयस्कंध तवंउरिक्वह) गुरु कहै (उरिक्वामो) पहले पंच मंगलउपधान महाश्रुतकंध उखेवावणियं नंदीपवेसावणियं कानुसगं करावेह, गुरु कहै करावेमो. पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उरकेवावणियं नंदिपेदसावणियं करेमिकानुसगं अन्नउससिएणं इत्यादि कानुसगमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चितवै, पार के प्रगटलोगस्त कहै, पीठै खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उरके वावणियं चेइयाइवंदावेह, गुरु कहै वंदावेमो. वासकेपकरावेह, गुरु कहै करेमो. पीठै वासकेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै. ऐसे सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो उपधानोंका उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोंके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नही थापे तो प्रातसमें प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन जो जो उपधान वहे उसर का ना मोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांजकूं पहिले चोविहारका पञ्चस्काण कर इरियावही पम्किमके मुहपत्ती पम्लिदेहके दो वांदणा देवै पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि का उसगं अन्नतू० कहेके काउसग सागरवरगंजोरा तक लोगस्त विचारे, पार के प्रगट लोगस्त कहे, दोष खमासमण देके इच्छाकारेण संदिस्सह प हिलै उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेप करावेह, करावेमो. पीठै गुरु वासक्षेप करै, पीठै चैत्यवंदन करै, पीठै खमासण देके उपधानवाही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांककर अर्द्धवनतगात्री होयके वार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिञ्चामिडुक्कमं एसें सब जगे वाचनाजिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनकों सांजकूं चोविहार करके अथवा प्रजातसमें इरियावही पम्किमके मुहपत्ती पम्लिदेहके दो वांदणा देके उपधानतपवाही कहै—इच्छाकारेण तुषे अम्हं अमुक तवंनिस्किवह, गुरु कहे निस्किवामो. फेर खमासण देके कहे—इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्किवणत्वं काउसगं करावेह, गुरु कहे करावेमो. इञ्चामि० अमुक तप निस्किवणत्वं करेमि काउसगं अन्नत्थू० कहेके एक नवकारका काउसग करकै खमासण देवै, अमुक तप निस्किवणत्वं चेइयाइ वंदावेह. वंदावेमो गुरु कहै. पीठै संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधि ॥

॥ अथ षड्विपुष्ठा विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रजातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण किया इत्त

वांस्ते मुहपत्ती पन्निहके वंदन ठव देवे (दो वांदणा देवै इसी कूं
ठव वंदन कहतै हे) गुरूके साथ पन्निमणा कीया होय तो वा-
दिणा दोयही देवै, पीठै गुरु कहे पवेयणं पवेह ऐसा कहके कहे प
नपुसो विगय पारणयं करेहति, पीठै अपनी इच्छानुसार पञ्चस्काण-
को पीठै गुरूके सामने कहे उपधानमें अन्नति आसातना करी
होय तस्त मित्रामिउक्कमं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रज्ञातसमें गुरु पास आयके गुरूकी
आंक्षासैं इरियावही पन्निमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक
लेके दोय खमासणपूर्वक पन्निहणा उर अंगपन्निहणा करै, पीठै
मुहपत्ती पन्निहके पहिले खमासणसैं उही पन्निहणसैंदिस्ताएमि,
दूसरी खमासण देके उही पन्निहणकरूं, पीठै मुहपत्ती पन्निहके गु-
रू कूं ठव वंदन देवै पीठै गुरु कहे—पवेयणं पवेह. उपधानवाही कहे.
इच्छा अमुक उपधान निमित्त निरुद्वंवातवंकरावेह. गुरु कहे उप-
धासे आंवले निरुदेति एकाशणे, ऐसा कहे, पीठै दश खमासणसैं
अनुक्रमसैं कहे—बहुवेलंसंदिस्तावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं
संदिस्तावेमि ३, वइसणं वाएमि ४, सझायंसंदिस्ताएमि ५, सझा-
यंकरेमि ६, पांगरणोसंदिस्तानं ७, पांगरणोपनिगहूं ८, कठासणो-
संदिस्तानं ९, कठासणोपनिगहूं १०. पीठै मुहपत्ती पन्निहके दो
वांदणा देवै. गुरु कहे सुखतप. उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥
इति प्रज्ञात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पन्निहणा जये वाद
स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसैं इरियावही पन्निमके पहिले
खमासणसैं पन्निहणा करूं १, दूसरी खमासणसैं पोसहसाला
प्रमाज्जू २, ऐसा कहके मुहपत्ती पन्निहके, एसैं दो खमासण देणे-
पूर्वक अंग पन्निहणा उर मुहपत्ती पन्निहके. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट (अर्थात् कणधोरा जानना) ऐसा गीतार्थ कहते हैं. पीठे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन जोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पमिलेहे, थाकाके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकत्री वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीठे गुरु पास आयके इरियावही पमिक्रमके पमिलेहणा १, अंगपमिले हणा २, फेर गुरूके सामने करे. पीठे सिझायसंदिस्साएमि सिझायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीठे मुहपत्ती पमिलेहके ठव वांदणा देवै. पीठे त्रिविहार अथवा चोविहारका पञ्चस्काण कर इस खमा सण अनुक्रमसँ इस मुजब देवे—उहीपमिलेहणसंदिस्सानं १, उही पमिलेहणकरं २, सिझायसंदिस्सानं ३, सिझायकरं ४, बइसणो संदिस्सानं ५, वैसणोगानं ६, कढासणोसंदिस्सानं ७, कढासणोप निग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्सानं ९, पांगरणोपनिग्गहुं १०. पीठे मुह पत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूवै, पीठे सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका (पालसिया) प्रमुख पमिलेहै, तथा जिस दिन जोजन करै उस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत थाली क टोरादिक सर्व उपजोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपमिक्रम णामें असिझाईका कानसगग नही करे तो आवती पस्की तक सर्व सिंहांतकी असिझाई होय, इरियावहीका पाठ त्री गुण्या नहीं सूजै. इस वास्ते असिझाईमें त्री असिझाईका कानसगग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागर चंडगणिकूं पूछा तब एसाही जबाब दिया योगारंजकी यह विधी हे ॥ इहां चउमासीमें योगारंजमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहु र्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडधुवचरक्षिपेः । वारेजोमं शनिंविना ॥ आद्याटनंतपोनंद्या । लोचनादिसुजं २ ॥ १ ॥ इति

वास्ते मुहपत्ती पन्निहके वंदन ठव देवे (दो वांदणा देवै इस्के
ठव वंदन कहतै हे) गुरूके साथ पन्निहमणा कीया होय तो वा-
दिणा दोयही देवै. पीठै गुरु कहे पवेयणं पवेह एसा कहके कहे प
रुपुणोविगयपारणयंकरेहति, पीठै अपणी इहानुसार पञ्चक्राण-
करै. पीठै गुरूके सामने कहे उपधानमें अजक्ति आसातना करी
दोय तस्त मित्रामिउक्कमं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रज्ञातसमें गुरु पास आयके गुरूकी
आज्ञासे इरियावही पन्निहमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक
लेके दोय खमासणपूर्वक पन्निहणा नर अंगपन्निहणा करै, पीठै
मुहपत्ती पन्निहके पहिले खमासणसें नहीपन्निहणसंदिस्ताएमि,
दूसरी खमासण देके नहीपन्निहणकरूं, पीठै मुहपत्ती पन्निहके गु-
रूकूं ठव वंदन देवै पीठै गुरु कहे—पवेयणं पवेह. उपधानवाही कहे.
इहाण अमुक उपधान निमित्तं निरुदंवातवंकरावेह. गुरु कहे उप-
धासे आंबले निरुदेति एकाशणे, एसा कहे. पीठै दश खमासणसें
अनुक्रमसें कहे—बहुवेलंसंदिस्तावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं
संदिस्तावेमि ३, वइसणं ठाएमि ४, सझायंसंदिस्ताएमि ५, सझा-
यंकरेमि ६, पांगरणोसंदिस्तानं ७, पांगरणोपनिगहूं ८, कवासणो-
संदिस्तानं ९, कवासणोपनिगहूं १०, पीठै मुहपत्ती पन्निहके दो
वांदणा देवै. गुरु कहे सुखतप. उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥
इति प्रज्ञात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पन्निहणा जये वाद
स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसें इरियावही पन्निहमके पइले
खमासणसें पन्निहणा करूं १, दूसरी खमासणसें पोसहसाला
प्रमार्ज्जु २, एसा कहके मुहपत्ती पन्निहके, एसें दो खमासण देणे-
पूर्वक अंग पन्निहणा नर मुहपत्ती पन्निहके. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट (अर्थात् कणदोरा जाणना) ऐसा गीतार्थ कहते हैं. पीठे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन भोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पमिलेहे, आकाके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकजी वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीठे गुरु पास आयके इरियावही पम्तिकमके पमिलेहणा १, अंगपमिले हणा २, फेर गुरुके सामने करे. पीठे सिझायसंदिस्साएमि सिझा थंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीठे मुहपत्ती पमिलेहके ठव वांदणा देवै. पीठे त्रिविहार अथवा चोविहारका पञ्चस्काण कर इस खमा सण अनुक्रमसँ इस मुजब देवे—उहीपमिलेहणसंदिस्साउं १, उही पमिलेहणकरुं २, सिझायसंदिस्साउं ३, सिझायकरुं ४, बइसणो संदिस्साउं ५, वैसणोठाउं ६, कवासणोसंदिस्साउं ७, कवासणोप म्निग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्साउं ९, पांगरणोपम्निग्गहुं १०. पीठे मुह पत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूवै, पीठे सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका (पालसिया) प्रमुख पमिलेहै, तथा जिस दिन भोजन करै उस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत आली क टोरादिक सर्व उपभोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपम्तिकम णामें असिझाइका कानसग नही करे तो आवती परकी तक सर्व सिद्धांतकी असिझाई होय, इरियावहीका पाठ नी गुण्या नही सूजै. इस वास्ते असिझाईमें नी असिझाईका कानसग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागर चंडगणिकुं पूठा तब एसाही जबाब दिया योगारंजकी यह विधी हे ॥ इहां चउमासीमें योगारंजमें वर्षकी महीनेकी शुद्धि मुहु र्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडधुवचरक्षिपेः । वारेभोमं शनिंविना ॥ आद्याटनंतपोनंथा । लोचनादिसुजं २ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपत्रासं । अठारसआसणम्मिपमिलेहा ॥ दंमे
पत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु
कंबलतदयचेवसंअरे ॥ कढासणेअठारस । जपेदंमेअपंचेव ॥ २ ॥ इति ॥
प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणउववासायाम । अठयंकुणहअठमंअंते ॥
नवकारउवहाणं । इत्तियमित्तंइरियाए ॥ १ ॥ सकळयंमितहएणं ।
अठमंअंबिलाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयअए । चउत्थमायामतियगं
च ॥ २ ॥ चउवीसअएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण
अयंमिचउठं । आयामापंचउवहाणं ॥ ३ ॥ चउवीसंउववासा । ए
गासीअंबिलाणसवंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । सुवहाणेसुजाणेसु ॥
४ ॥ बारसबारसएगो, पणवीसअठ्ठाइयाणपन्नरस ॥ अठयउववासा
। सवंगंसठ्ठचउसठी ॥ ५ ॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठ्ठअवठ्ठएणउ
जंतेहिं ॥ इगढाणयनिविगई । विलेहिंअठं विलेणंच ॥ ६ ॥ पणया
लाचउवीसं । सोलसचउइहिअठहिकमेणं ॥ चउइडुहियएणेणय ।
आयरणाहोइउववासे ॥ ७ ॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थंकरोंके नामकी चिठियां लिखके बीच मं-
रुलमें २४ कोठोंमें धरे. इति चतुर्विंशति तीर्थंकराः ह्रीं नमः १ क्रों-
नमः बबबबबबबबबबबबबबबब १, बबबबबबबबबबबबबबबबबबबबब २, बबबब-
बबबबबबबबबबबबबबबबबबबबबबबबबबब ३, बबबबबबबबबबबबबबबबबबबबब ४, ॐ ह्रीं अर्हज्योनमः
ॐ ह्रीं सिद्धेज्योनमः ॐ ह्रीं आचार्येज्योनमः ॐ ह्रीं उपाध्यायेज्योनमः
ॐ ह्रीं सर्वसाधुज्योनमः ॐ ह्रीं ज्ञानेज्योनमः ॐ ह्रीं दर्शनेज्योनमः ॐ हः
चारित्र्येज्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १ ॥ दूसरी वलयमें दश दिग-
पालोंके नामकी दस चिठी दश कोठोंमें धरे ॥ इति द्वितीय वलय २ ॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोके नामकी नव कोठेमें नव चिह्नियां ॥ इति
 तृतीय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोले स्वर उकारादिक
 तेतीस वर्ण इंद्रजुति आदि इग्यारे गणधरोके नाम उँह्नी युक्त लि-
 खे. पीठै अमृतालीश लब्धिपद उँह्नीअर्द्ध एसा आदिमें देकर लिखे
 ॥ अमृतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंरुलपूजामें लिखे हे उस
 मुजब लिखे. पीठै चोवीस तीर्थकरोके पिता उँनाज्जयेनमः १ इ-
 त्यादि लिखे. पीठै उँमरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थकरोके
 माताका नाम लिखे ॥ पीठै उँह्रियैनमः १, उँश्रियैनमः २, उँघृत्यै
 नमः ३, उँलक्ष्म्यैनमः ४, उँगोर्ध्वैनमः ५, उँचंरुयैनमः ६, उँतरस्व
 र्यैनमः ७, उँजयायैनमः ८, उँअंवायैनमः ९, उँविजयायैनमः
 १०, उँक्लित्रायैनमः ११, उँअजितायैनमः १२, उँनित्यायैनमः १३,
 उँमदद्रवायैनमः १४, उँकामांगायनमः १५, उँकामबाणायैनमः
 १६, उँसानंदायनमः १७, उँनंदमालियेनमः १८, उँमायात्यैनमः
 १९, उँमायावित्त्यैनमः २०, उँरौज्यैनमः २१, उँकालायैनमः २२,
 उँकाल्यैनमः २३, उँकालप्रियायैनमः २४. एसें श्रीदेव्यादि चोवी
 सोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष उर २४ यक्ष-
 णीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीठै
 नव निधानोंके नाम लिखे, फेर चोसठ इंद्रोके नाम लिखे. पहली
 वीशस्थानक मंरुलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके
 अष्ट सिद्धिका नाम लिखे उँअणिमसिद्धयेनमः १, उँगरिमसिद्धये
 नमः २, उँजघिमसिद्धियैनमः ३, उँप्राकाम्यसिद्धयेनमः ४, उँमहि-
 मसिद्धियैनमः ५, उँईसित्वसिद्धयेनमः ६, उँविसित्वसिद्धयेनमः
 ७, उँप्राप्तसिद्धयैनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ उँश्रीधरणे
 डोरकतुः १, श्रीपद्मावतीरकतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवै
 रोव्यारकतु ४. इति श्रीरुपिमंरुल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंजल वीस स्थानक मंजलपूजा मुजब चढ़ावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहुर्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावै, आगे पंचपरमेष्ठीपट्ट स्थापन करै तथा जगवनाके दहिणे पासे दश दिग्पालपट्ट उर बांधे पासे नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै, पीछे एक बरुा एक गेटा मट्टीआदिकका हंसा ऊपर खन्नी सपेदमट्टी पोतके चार२ केसर कुंकूका साधिया करै, पीछे उंची नीची दोय टिवची काठकी धरावै, नीची टिवची पर मोटा हंसा धरै, उंची पर गेटा हंसा धरै, गेटे हंसेके तले एक बिड़ करै, दोनुं मटकाके अंदर साधिया करै, वन्ने मटकेकी टिवची नीचे चावलका साधिया करै, ऊपर नालेर रुपिया आपनाका धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र बटके पंचरंगी खजली एकेक खूणे २१ इक्कीस२ पोकरी ब्यारों कोणोंमें ८४ खजली पोके तली बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्रके दमो नीचला मोटा हंसामें लटकतो रखके ऊपरकी मोली गेटा हंसाके बिद्रमें पोकरी ऊपर जो चौ स्तूणी तली बांधीदे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसे शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै उर एक जलेकी तरफसे होय तो शांति कराणेवालेके घरसे-ती सथवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अष्टा वस्त्र आचनूपण पहिरायके कलसके अंदर कुंकूमकेसरका साधिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नारेल ढकणे माफक खन्ना धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके ब्यारों तरफ चार साधिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजित्रादि अनेक उद्यव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

मुख चावलोंका साधिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीठे
 पाच दश जणा इये नर जावे अपना अंग शुद्ध करै, गुरुके पास
 से केसर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधी इहाँसे आगे नव
 ग्रह दश दिग्पालका आह्वान अठारे स्तुतिसे देववन्दन वगेरे करे सो
 सब विधि पूर्वे लिखी हे, सो सब करके बलबाकुल सब देके पीठे
 सुंदर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपूत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक
 आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन२ नवकार गुणे, जिसमें दो
 स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनों तरफ
 खम्हा रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन
 वासहोप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोंमें जल नरके दोनों तरफ
 धारा देणेवाले कलशोको पूरता रहै, दो जणे दोनों तरफ चमर हु
 लता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात२ नवकार गुणे, स्ना-
 त्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, एसे सात धारा दे
 चूके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसे नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके
 अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें, पीठे ज्ञानामर वमीशांति
 ओटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशां-
 ती आती होय तब तो गुरुके संग अपने मनमें गुणता रहै, नर
 नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते
 स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंड ऊपरले छोटे कलशमें
 धारा देता रहै, ठीक कोई नही करै, आपसमें दूसरी संसारी
 विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणे पीठे तीन नवकार
 गुणके कलस धरे, पीठे नीचेके हंसेमेसे जितप्रतिमाकुं निकालके
 अच्छी तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसे पूजा करै, जगवान-
 की अच्छी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवेद्य फल चढाके
 आरती उतारै, मंगलदीपक करै. पीठे शांतिजल सर्व संघ लगावे,

अपने घरोंमें ठाटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखनी बांधे. इससे संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसे रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीछे आधा बलबाकुल परातमें रक्का या सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्त्रात्रियोंसे दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूर्व लिखी हे उस मंत्रोंसे विसर्जन करै ॥ इति शांतिक पूजा विधि सं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंरुण रुषन्न जिणंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ दूसरी आरती मरुदेवी-नंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रि-भुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चौथी आरती नित्य नई पूजा, देव रुषन्नेदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥ पंचमी आरती प्रभुजीने जावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावै ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रभु शांतिजिनंदकी, मृग लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय२ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचि-राजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति कीजै प्रभु नेमजिनंदकी, शंख लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ५ ॥ आरति कीजै प्रभु पाशजिणंदकी, फणिंद लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ७ ॥ आरति कीजे चोवीश जिनंदकी, चोवीस जिणंदकीमें जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कमल नित सेवित इंदा, चोवीश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥

करजोनी सेवक इम बोले, नहि कोइ माहरा प्रभुजीने तोले ॥ इति ॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय१ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमं हुं तुम चरणारी

॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्रेश्वरी जग सौ-
ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गङ्गानी शासनदेवी, सकल संघने
सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टोलनी रत्न विराजै, काने कुंरु
ल दोय रवि शशि ठाजै ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध वोरखा सोहे,
नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूनी
खलके, पाये घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुड चढ्या
बहु प्रेमे, तुऊ गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूननी जमामां
देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित१
मानी आरती ऊतारे, रोग सोग जय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु
घर पूत्र पुत्रादिक ठाजै, मन वंठित सुख संपद राजे ॥ ज० १० ॥
देवचंड मुनि आरति गावे, जय१ मंगल नित्य वधावै ॥ ज० ११ ॥ इति

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपड इण
विध खेल रे ॥ अशुभ करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग
रे, वसीय विठायत वैस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे ॥
अरे० १ ॥ दान शील तय ज्ञावना च०, चोपड एह पसार रे ॥
आठ दाव इक बोलमें च०, आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥
देव गुरु धर्म तीनुं जला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर
हाथे लिया च०, उझाल लेइया आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसण ज्ञान
चारित्र जला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्व सात हिरदे
घरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ पन्था अठारे रहण
दे च०, पोवारा व्रत धार रे ॥ दश लक्षण दश धरम हे च०, हित

कर हियै विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया ठकनी पनी च०, हिर-
दे दया विचार रे ॥ पुन्य नदय पंजनी पनी च०, पंच महात्रन धार
रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पड्या च०, सातुंर विसन निवार
रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ०
७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डख सहा जरपूर रे ॥
करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सेतुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेतुंज खेल खिलारी, सब समझ देख सेतुंजकी घात,
लख दोउं दल अपणो परायैकी जात ॥ काज विध कर मोह बाद-
स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥
आतुं कर्म पियादे आगे फुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत अंज
त नहीं अंजै ॥ लोअ जंठ चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान
माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो वजीर वीर
वाकै ढंग ठामो, वाके मारवैकों दल अपणो संजार ॥ हे से० २ ॥
तेरे ग्यात सो वजीर वीर तेरे ढंग ठामो, आठों अंग समकित
के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको
मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ कृमा शील दोय
फील राखो दलकै अगामी, पर दल कर मारो ठिनमें संहार ॥
हे से० ३ ॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं जर, जब वाकै चल-
नेकी काइ रहै नही ठोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो
खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर बंधेगो मोर, ठामे इंद्र धरणेंद्र
तेरे दोलेंगें चवर, तेरो अजन अजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥
इति सेतुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण ॥ टक निजर महरदी करणा हो, ट० ॥ भैं

हूं अंधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ तु० १ ॥ अ-
 ष्ट जवनकी प्रीत हमारी, नवमे जव निरवाहना हो ॥ तु० ॥ १ ॥
 रूपचंद जगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ तु० ३ ॥
 इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-
 का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिख्रा, फिटक
 रतन जुजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजै साहिब,
 ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ पंच वरणकी घजा
 फरुके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन
 नाम तुमारो, उरनकी क्या आसा है ॥ लो० २ ॥ चौसठ इंच ख-
 मे बाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा है ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं-
 जन, चरणकमलका दासा है ॥ लो० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥
 सखि सष बनठन, सखी० ठाढे नाजि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥
 रिषजकुमरको जनम जयो हे, मंगल मुक्त उच्चरै री ॥ स० १ ॥
 ताल मृदंग रबाब मधुरी धुनि, वीणा बाजे सुर तारे ॥ नाचत हा
 व जाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २ ॥ सुरवनिता
 मिल गई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर-
 खत, आनंद हर्ष अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः
 हो जिन तेरे दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन जव मे
 जटकंदा, अब मेरी उर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेरे
 लार लगे हैं, उनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु
 साहे, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥
 म्दारा रिषज जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंवेली चंपा गु
 लाव लाऊं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा०
 १ ॥ अगर चंदन अकृत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पु
 ण्य पाऊं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ जाव जावुं रे ॥

रुषज्जदास पूरो आस गुण गाजं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ मन लीमो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि जवतर
 णा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन
 हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाज्जि तात मरुदेवी माता, नंद रुषज्ज सु
 खकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांगन
 दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अंग
 कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरीश्वर जंपै, जिन
 समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जिंजोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्या
 न, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत
 ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जगतारन टारन अघको रे, वारुं तन धन
 ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल
 निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, निवृ
 त्ति पुरंदर म्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यह
 अरजी मोरी सहियां, मोहे तारलो गहवहिया ॥ य० ॥ में नांदि
 जाणूं सहियां, य० ॥ में तारण तरण सुणयो ठै, में यातें शरणो ग
 हियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० मो० १ ॥ इन करमनके वश
 हुयकै, में नटक्यो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित करकै
 दाश निहारै, करजोमि पमि हुं पइयां, शिव देति क्युं न सहियां
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजै, हो गोमीराय अरज सु
 णीने, म्हारो मु० ॥ किरपा काज करी सेवगने, दिलज्जर दरशण
 दीजै ॥ हो गो० १ ॥ गुणनिध गवमी दरसण दीजै, सकल करम
 दल ठीजै ॥ हो गो० २ ॥ रूपविबुधको मोहन पज्जणे, प्रहज्जगी प्रण
 मीजे ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेंना प्रभु ण दिल

वसणावे, तेंना तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर
 गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो ते
 त्वज्ञानके दाता, जविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जि
 नचंद ऐसे प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त ल्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥
 इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहें तुम तारोगे, हम० ॥ ना-
 जिराय मरुदेवीकों नंदन, मेरी नर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि
 जिनेसर अंतरजामी, खामी कबुन विचारोगे ॥ हम० २ ॥ जगजीवन
 जगतारक तुमहो, एही विरुद संजारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौजा
 ग्य सूरिंदके साहिव, जवजल पार ऊतारोगे ॥ हम० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ पंथीमा पंथ चलेगो, प्रभु जजले दिन चार ॥ पं० ॥ जूठी
 काया जूठी माया, जूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो,
 जेवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृढापण आयो धरम न पायो, पीठै
 करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पु
 ण्य दोय लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पास एवंची, अब तेरोही
 आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज,
 जोमे थारे कोण जुमेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता,
 तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विमारण नागकूं तारण, सं
 जलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोमीने वीनवै,
 जव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंजायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, कैसें०
 ॥ अमत२ लख चौरासीमें, सुख दुःखसें जीया रुतत फिरै ॥ म०
 कैसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी जटकावत, जाहीसें मेरो प्राण मरै
 ॥ म० कैसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांछा चाहै, प्रभु सेव्यासें
 काज सरै ॥ म० कैसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राजरी वधाई
 वाजै वै, महा० ॥ सरणाई सरै नोवत वाजै, घन ज्युं अंगर गाजै

है ॥ महा० १ ॥ इंझानी मिल मंगल गावै, मोतियन चोक पुरावै
 है ॥ महा० २ ॥ सेवग प्रजुजीसैं अरज करै है, चरणारी सेवा
 प्यारी लागे है ॥ महा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अमाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे,
 मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंमल लागत वाला ॥
 ॥ जि० १ ॥ जजोरी जजो तुम लोक सहरके, नहिय जजै सो
 काला, माणक पर प्रजु महिर करो तो, अपणा विरुद संजाला ॥
 जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय, रहे
 ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ र० १ ॥
 अविरत घुंघट पट नगारी, अनुजव मुख निरखाय ॥ र० २ ॥
 ॥ जव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ र०
 ३ ॥ अति आयइ सब ग्यानसारकुं, जीवन कंठ लगाय ॥ र०
 ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकनी करमगति जाय ना
 कही, चिंतत और बनत कबु औरै, हौनहार सो होय रही ॥ हे माय
 वां० १ ॥ सकल साज सजियौ, व्याहनकुं, राजकुं तव चाह
 जई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरझाय रही ॥
 हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिजगता, जानत सकल
 मही ॥ फूठो दोस दियो जब रूपपति, पावक कुंममें धीज दही ॥
 हे माय वां० ३ ॥ क्लायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक
 बंध ठई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात
 लही ॥ हे० वां० ४ ॥ ठिनमें रंक ठिनकमें राजा, अकल कथा
 किम ज्ञाण कही ॥ नलट पलट वाजी नटसीकी, नवल सरबमें
 व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो
 लागे है जी प्यारो उपदेस, म्हांनु० ॥ ग्यान जगावण नुगुण

भैटण, संशयन रहै न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर डुख
दूर करणकुं, जगत बढावत हेत ॥ चंद फतै नित एही चाहै,
समकित सुखको खेत ॥ म्हा० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥
मेरो पिया पर संग रमत हे, में कैसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन
संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत
सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति
डुसह पिया विन, कोन बुझावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अ-
नुजव आयो, सब परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारी दोहं हिल-
मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरषित वचन जरी, हो सुगुरु
मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतहान गगनतैजमटी, ग्यानघटागहरी ॥ हो सुगु०
१ ॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति करी ॥ हो सुगु०
॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक धरी ॥ हो सु-
गु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुजाव धरी ॥ सु-
जरजरयो सुमतारससागर, समकित जूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥
प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर वप-
इया जविजन, बोलत जक्तिजरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत
संजम खेती, जविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी,
सहज स्वजाव फली ॥ हो सुगु० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या
धरीमें रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा
धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध जेटे, हरख
जयो अंग अंग ॥ व० या० २ ॥ एसी विध जवश् मांहे मिलियौ,
धर्मप्रसाद अजंग ॥ व० या० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागमलार चिहुं नर दरिया बरसै, अब बरर घरर
घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रजु गिरनार सिधाए, देखणकुं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन ज्ञेय धन
 जरसै ॥ चि० २ ॥ ढूँढत ढुँढ सकल वनशमें, कबहुं पिया ना दर
 सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेंगे सजनी, दिवस घरी जिन
 फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले
 पीउर धनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी
 कारी विजुरी मरावै, दूजी विरह व्याकुल नई तनमें ॥ मो० १ ॥
 फिरमिर वरषित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥
 मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल नई विरागण बि
 नमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग विहाग ॥ समऊ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो
 ॥ स० ॥ पल २ आयु घटत बिन रही, गलत जात जेसैं उरो ॥ स० १ ॥
 या तनको कहो कोन नरोसो, बिन मासो बिन तोरो ॥ जो कहु
 करै सो अवही करलै, पुनपरहो जिम मोरो ॥ स० २ ॥ तन धन
 आदि सकल सामग्री, गरज २ धन थोरो ॥ रूपचंद त्रसनाको बांध्यो,
 जानबूझ नयो नोरो ॥ स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मत कर मा
 न गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म० ॥ वेलूकी नीत उसको मोती,
 कोइ घमी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुरा
 णी, तारणद्वारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल
 घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोजं थारी वाटनी, घर आवोनी
 दोला ॥ नि० ॥ मुऊ सरिखा तुऊ लाख है, मेरे तूँही अमोला
 ॥ नि० १ ॥ जोहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥
 जिसके पटंतर को नहीं, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे
 किसपे कहूं, किसपे मांडू खोला ॥ तेरे मुख दीवै टलै, मेरे मनका
 जोला ॥ नि० ३ ॥ मित्त विवेक कहै हितकर तुं, सुमतासु न बो

ला॥ आणंदधन प्रभु आवसी, सेजमी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम्॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे ज्ञाग, वीरप्रभु आए
हैं ॥ आ० ॥ चंदना खमी डवार, चित्तै कैं विचार ॥ देखत दी
दार हीया, हरख जराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली,
अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥
आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म जेरो ॥ सुकृत बहु
तेरो, जगवान दिल जाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत
सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥ आ० ४॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥
आप रंगीला वाकी रंगीली, नर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ०
१ ॥ आपन आवै वारी न लिख जेजै, प्रीत करणकूं उतावरो रे ॥
आ० २॥ आनंदधन पिया निजघर आवै, मिट गयो मोहसंतावरो
रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रुषज विहारी, थारी तो ठवि न्यारी हों
॥ रु० ॥ प्रथम तीर्थकरप्रथम जिनेसर, प्रथम यती व्रतधारी हो ॥
रु० १ ॥ धनुष पांचसैं मान मनोहर, काया कंवन वानी हो
॥ रु० २ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी
हो ॥ रु० ३॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु ठो पर ऊपगारी
हो ॥ रु० ४॥ केवल पाय प्रभु सुगति सिधाए, आवागमननिवारी
हो ॥ रु० ५ ॥ आनंदधन प्रभु एती वीनती, तुम पर जानं बलि
हारी हो ॥ रु० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार
न टैरे रे, सु० ॥ चित कबु नर विचारत है नर, नरही नर बने
रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै, चिन्धिया कैं बचे रे ॥
सु० २॥ होणहार वश मस्यो हे पारधी, सर सींचाण मेरे रे ॥ सु०
३ ॥ होत पदारथ जावी जइया, क्युं जग चाह धरै रे ॥ सु० ४

॥ हृदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न ज्ञै रे ॥ सु० ५ इति पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चाखो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ ॥ श्रेणक नूप चेलणाराणी, जक्ति करत हे आज ॥ स० २ ॥ निज श्रद्धा लिये पुर के जन, जमंगल गुन साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ चा जिनजीके दरस सरसतें, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद्गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ जब श्रमें तोकुं सुखदाई, आनंद वंछित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको, राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे बाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण सरण जिनेसर लखके, जेटै सहु जवि चित सुख पाय ॥ च० २ ॥ गंगा दरस ऊमाहो लागो, कब फरसुं बाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखूं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे ॥ हो ० १ ॥ जाके प्रज्ञाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, ज्ञागा ज्ञया जजेरा ॥ हो ० २ ॥ सूरत तेरी रागै, पेख्या विज्ञाव स्यागै, अध्यात्मरूप जागै ॥ हो ० ३ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रूपजे सजू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो ० ४ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम हे अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो ० ५ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जिनहर्ष सूरि ज्ञाखै, दिल मांज याही राखै ॥ हो ० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लख्यो, सखी क्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकुं द्वार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब कैसें विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धनर राजुल,
 प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः आरे
 मुखमारी हो वारी राज, प्यारी ठवी वरणी न जाय ॥ था० ॥
 शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने आरे कुंमल सोहाय ॥ था०
 १ ॥ मोहनगारी सूरत आरी, देख्या म्हारो मनमो लोनाय ॥ था०
 २ ॥ उरऊत नेण जए दोउं निरखत, आंसु प्रभु प्रीतनी लगाय ॥
 था० ३ ॥ जव२ पाशजिनंदजी की सेवा, ऐसी म्हारे दिलमेमें
 चाव ॥ था० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय
 ॥ था० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ ऐसी विध तेने पाइ रे, कबु कर-
 नी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरजव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सु-
 खदाई रे, जसु पातिक ऊरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ ऊठ पर
 तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥
 तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुदाई रे, जवजल
 निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगमो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी
 मो० ॥ में मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि ठानो ॥ राग
 द्वेष अरु मोह महा मद, बाधयो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥
 ए रिपु कर्म पम्यो मुऊ केने, किस विध ठूटै पानो ॥ कुमति क-
 दाग्रह मांहि अलूझ्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं
 जववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो
 साम संजारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ जक्ति
 सदाई शिवसुख दाता, संजवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौनाथ
 सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रधानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागजैरवी ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखा

मेहरवान जई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पठावै, तेरी
सूरत कुरवान जई रे ॥ वी० १ ॥ साशरनायक एही अरज हे,
दाजै दरस वनो वैर जई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण
कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विजास ॥ जोर जयो अब जाग बावरे, जो० ॥ कोन
पुन्य तें नरजव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दावरे ॥ जो० १ ॥ धन
वनिता सुत तात आतकों, मोह मगन ए विकल जाव रे ॥ जो०
२ ॥ कोइ न तेरो तूं नही काको, इह संजोग अनाद सुजाव रे ॥
जो० ३ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रजाव रे
॥ जो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं मूबै अब पाय नाव
रे ॥ जो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट्वा ॥ जाग रे सब रैन विहाणी, जा० ॥ उदयो उदयाच-
ल रविमंजल, पुन्यकाल क्यूं सोबे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंर
वन २ विकसानी, अजुअ न तेरी दृग उघराणी ॥ जा० २ ॥ चेत-
न धर्म अनादि तुमारो, जम संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥
तुम कुल दोष अवस्था पड़्यै, नीद सुपन ए जम नीसाणी ॥ जा० ४
आतम रूप संजार आपणो, कब तुमरे घर कुमति घराणी ॥ जा०
५ ॥ सुध बुध जूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी
॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जधा
नी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग बेलाउल ॥ सांवरो सखी सखी मेरे मन जावनो,
रूप देखाय मैरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर च-
ले पिया, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १ ॥ नव जव नेह
निजादो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डुरावणो ॥ आनंद राजुल
याकी प्रीत कपटकी, जयो पीया मुगन सखीको पावनो ॥ सां० २ इति

राग ललित ॥ आज रुषज्ञ घर आवै, देखो माई आ० ॥
 रूपमनोहर जगदानंदन, सबहीके मन जावै ॥ दे० १ ॥ केइ मुगता
 फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय मय
 रथ पायक केई कन्या, ले प्रभु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-
 कुमर दानेसर, इकुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल,
 साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई
 अं० ॥ रुद्रि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिढ्यो
 री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे वरास
 मिढ्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग ट-
 ल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख रुपा कर साहिव, ज्युं पारे
 वो पढ्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी रुपासै, हुंरहिसुं सुहलो री
 ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊगेने मोरा आतमराम,
 जिनमुख जोवा जश्ये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसन वै अति
 दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवजव एहवो,
 जुरुवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ ज्यार दिवशनो चटको म-
 टको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागै, कायाघ-
 ट वै काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें जरियो हे जिनवर, पूरव
 पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो
 रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणै मत गमजो
 रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥
 ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥
 लाजऊदै जिनचंद लदीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ जज मन नाजिनंदन देव, ज० ॥ ध्यान
 मुनिजन अरुग धारै, सुरनर करत हे सेव ॥ ज० १ ॥ चकी जू-

पति वने सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शैब
मणिधर सेव ॥ ज० २ ॥ असरण शरण हे विरुद जाको, जक्ति-
वञ्जल जेव ॥ राजसिंह प्रभु रुषज सिर पर, नाथ हे नितमेव
॥ ज० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नैम रहजावो सदन, हँमकों न सँ
तावो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सऊके सजन, पशुवनको सुन देख
रुदन ॥ गिरनारी चलै निज ठांमी वतन, तकसीर बतावो रे ॥
आ० १ ॥ पूनम जेसे चंदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥
मेरी नीकी लगी नव जवकी लगन, मत बेह दिखावो रे ॥ आ०
२ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन ॥ सब
ऊठे पमेगें कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर
कहै प्रभुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेउं दोरु नेम
जिनजीकी शरण, शिवपुर तो बतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीबाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥
की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशिवंदन
॥ दरसणसैं नयणानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अं-
ब कंदब मालती निरमल, चंपक बेल सधन तरु परिमल ॥ वीच
भुवन हिय हरख धरै, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली
सूरत अधिक विराजै, वासुपूज्यकी महिमा ठाजै ॥ प्रभु अतिशय
तन मकरंद ऊरै, पदकज बलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुजग
दरसकुं आवै, निरखै प्रभु सहज स्वभावै ॥ जीव जमी मन प्रे-
म धरै, जगपति रुदसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम जये अगीवान,
हे ना निकला मुखसैं कजी जगवान ॥ थार नहीदेखा समोसरणा,
किया जवदधिमें ऊदर नरण ॥ दोरु जो लेते प्रभु सरणा, दूर

डुख होतैं जैनमें मरणों ॥ बैठ जववरमें लगायो नही ध्यान, राज
शिवपुरमें हुवा अपमान, करो अब देख काल खगवान, ना नि० १
॥ नाम जो जिनके दान देते, आहुं मद तुमसैं दूर रेतें ॥ यार जो
तिनके चरण सेते, शशी सुमताकों तुमें देतें ॥ रहें तप जपमें सदा जो
सूर, वरें वो जव जव सुख जरपूर ॥ करै कपूर करम चकचूर, देखयां
जिन नूर हुवैं डुखदूर, करो जवपार सुणौ महरवान ॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रभु तेरी सूरतिया लगे जलो, नेणां हमारी
प्रभु तुमसैं मिली ॥ प्र० ॥ अनुजव रंग मगन तेरी अखियां, खु
ल रही सईजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम
प्रभु आनन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम
अगोचर तेरी महिमा, आप विसंजर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥
सुज्जुं आश दीनपति तेरी, उर न चाहुं देव ठली ॥ ने० प्र० ४ ॥
लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर
सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र०
५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जमी रुद्धतार फली
ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलू ॥ आयो सही अब जान कहां, शरणागतकों
शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिढ्यो नही कोई, हूं
फिरयो धरती सब हैरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रभुजी अ
ब, आन जई तुमसैं जट जैरी ॥ आ० २ ॥ दास कढ्याण कैर
वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांवाज ॥ घनी२ पल२ तिन२ निशदिन, प्रभु
कों समरण करलै रे ॥ घ० ॥ प्रभु समरण सब पाप कटत है, अ-
शुभ करम सब हरलै रे ॥ घ० १ ॥ मनवच कायलगी चरणन नित,
ज्ञान हियेमें धरलै रे ॥ घ० २ ॥ दोलतराम प्रभु गुण गावैं, मन

वंगित फल वरलै रे ॥ घ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सौरभ ॥ सुमताने क्या कर मारा रे, जिन मोह्या
स्याम हमारा ॥ जि० सु० ॥ शखी दोस नही सुमतामें हे, आली अपना
नेम ऐसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण जई देहमारी, बस किया प्राण
पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम, ठोम
चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० २ ॥ जादव जात कठिन निर
मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम तो ने-
म तजे हो हमकूं, में न तजू पद थारा रे ॥ जि० सु० ४ ॥ लग-
न हमारी तोरी नही तूटै, कर बांधी इक तारा रे ॥ जि० सु० ५ ॥
सब जग जो तुमसे हो जइयै, तो क्युं चलत संसारा रे ॥ जि०
सु० ६ ॥ रुद्धसार राजुल प्रनुजीसैं, पोहची मुगति मजारा रे ॥
जि० सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो जलै विराजो जी, सांवलिया महाराज शिखर
पर जलै विराजो जी ॥ तेरे घाटे चौकी लागै, आवक जाण न
पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, बांह पकम लै जावै ॥ तु०
१ ॥ उंचा नीचा परवत सोहे, तलै जीवनका वासा ॥ पैरु२ पर
सींह दमूकै, जिहां लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंक२ पर धजा
विराजै, जालररे ऊणकारै ॥ जालररेऊणकारै सेती, वाजा अविच-
ल वाजै ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवै, पूजा आण रचावै ॥
अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वंगित फल पावै ॥ तु० ४ ॥ सुरनर
मुनिवर वंदन आवै, महा परम सुख पावै ॥ चंद खुसाल चरणको
सैवक, हरखर गुण गावै तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारौ, निज पातिक दूर नि-
वारो रे ॥ नवियां शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, में देखा सहू

जग जोई रे ॥ ज० १ ॥ वीश जिनेसर आया, इहां मुक्तिपुरी सुख
पाया रे ॥ ज० ॥ कोमाकोमी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद
लीधा रे ॥ ज० २ ॥ वीश चरण जिन सोहै, जविजन चात्रक मन
मोहै रे ॥ ज० ॥ भ्रुवमठ मंदिर ठाजै, जिहां पाशप्रभु महाराजै
रे ॥ ज० ३ ॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धखो न केहवो
रे ॥ ज० ॥ तीर्थ आसातन टालो, जविजन ठहरी व्रत पालो रे ॥
ज० ४ ॥ नरजव लाहो लीजै, इण तीरथ महिमा कीजै रे ॥ ज०
सय जगणीस तेतीसै, अगहन सुदि पंचमी दीसै रे ॥ ज० ५ ॥
दूगम गोत्र सुहावै, जवि चंदगोविंद गुण गावै रे ॥ ज० ॥ जात्रा
करी मन रंगे, चंद शिखर जणै अति चंगे रे ॥ ज० ६ इति पदं ॥
पुनः ॥ (सांवरियां जेसैं वणै जेसे तारो, सां० ॥ इस चालमें) सां
वरियामें दीगो दरस तिहारो, मेरी जव जय बाधा टारो ॥ सां० ॥
अश्वशेननंदन जगबंदन, जगबंधव जग प्यारो ॥ नीलवरण युति श्री
जिनवरकी, वामा उदर अवतारो ॥ सां० १ ॥ कमठ विमारण शिव
सुख कारण, तारण तरण निहारो ॥ अलख अगोचर अगम अरूपी,
निर्यासक सत्प्रवारो ॥ सां० २ ॥ शिखर गिरी मंरुण जिनवरजी,
अदभुत महिमावारो ॥ कर जोमी दोऊं वीनती करतहै, बुधसिंह
अरजी धारो ॥ सां० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं ॥

(श्रीचिंतामणि पासजी ॥ ए चाल) ॥ त्रिजुवन नायक
वीरजी, दरशण अतहि सुरंग ॥ वधाई प्रभुजी ॥ थारी मोहनी मृ
रती म्हारो मन लागो राज ॥ मुख ठवि चंदनै निरखवा, लगन
चकोर अजंग ॥ वधा० १ ॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज ऊलामल
जाण ॥ व० ॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण ॥ व०
था० २ ॥ आस धरी जिनचरणनी, आयो हुं त्रीजुवन नाथ, म-

हिर लहिर कर वगसीयै, आनंद निज गुण साथ ॥ व० आ० ३ ॥
 ॥ धन२ बेला जी आजनी, सँमुख मिलिया ठो आप ॥ व० ॥ हूँ
 स घणी कहिवा तणी, वीतक डरक संताप ॥ व० आ० ४ ॥ जो
 नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न आय ॥ व० ॥ जगतव-
 छल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय ॥ व० आ० ५ ॥ किरिया
 जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो बलिहारी श्री
 नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० आ० ६ ॥ गुनहीतांरथा जी ब
 हु विधे, विबुध कहे तुम नाम ॥ व० ॥ हूँ तो जी अनुचर चरणनो,
 किम नवि सारो जी काम ॥ व० आ० ७ ॥ अतिशय झानि जी इण
 अरै, नहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुझसुं मन रमें,
 के तुम वचन प्रमाण ॥ व० आ० ८ ॥ मुऊ तन मन मंजूसमें, ज
 तन करुं जगनाथ ॥ व० ॥ तुम गुणरतननी मूँधमी, प्रेम जमो निज
 हाथ ॥ व० आ० ९ ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण सुवा
 स ॥ व० ॥ सरवर बीच सुहामणो, जुवन रमण केलास ॥ व०
 आ० १० ॥ पावापुर उगलीशमें, अमृतालीश उदार ॥ व० ॥ का
 र्तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि रुदितार ॥ व० आ० ११ इति ॥

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

(नैणा सफल जयें, प्रभु दरसन पायो आज ॥ ए चालमें)
 निरख दिथा दरख जरे, प्रभु वासपूज्य महाराज ॥ नि० ॥ अन्नि
 क्षाषा दरशणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज नीपजै
 रे, आप गरीबनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा रे, समं
 रथ को नलि हाल ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, जक्त सुधारण का
 ज ॥ नि० २ ॥ डुखजंजन दाता सुण्यो रे, जस कीरत मुख संत ॥
 अंतर राख्यां नवि बनेरे, तार२ जगवंत ॥ नि० ३ ॥ कल्पवृक्ष
 पुत्थे लह्यो रे, वंछित पूरण नाथ ॥ जाग्रोदय अब माहरो रे, शि

वपुर दायक साथ ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जमी रे, अनु
 जव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेज
 ॥ नि० ५ ॥ जगणिले अमृतालमें रे, कार्तिक सुदि निधि सार ॥
 चंपापुर अधिपति मिल्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥
 कुशल निधान विबुधतणो रे, कलीअली जिम लीन ॥ रुद्रसार जिन
 ध्यानमें रे, अंतरंग गुण चिन ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ में मुख देख्यो गोमी पारसको, मेरो ज
 नम सफल ज्यो आज ॥ में० ॥ अन्य देवकूं बहुत में ध्यायो, तो
 य न सरयोजी मेरो काज ॥ आजरे में० १ ॥ जवश् जटकत शरणो
 हुं आयो, अबतो रखोजी मेरी लाज ॥ आजरे में० २ ॥ कमठ हरा
 वण नागकूं तारण, संजलाव्यो नवकार ॥ आजरे में० ३ ॥ रूप
 चंद कहै नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे में० ४ ॥
 इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोमी पाश जिनेसर, तुम
 स्वामी अंतरजामी ॥ कि० ॥ नंचे२ गढ़ पर पाश विराजै, चारो तरफ
 ज्ञानी ध्यानी ॥ कि० ॥ नीलवरण तेरा अंग विराजै, वदनोकी जाज
 वलिहारो ॥ कि० २ ॥ बांहे बाजुबंध वेरखा विराजै, कुंमलकी ठंवि
 हेन्यारी ॥ कि० ३ ॥ ठूंढतश् में प्रभु पायो, पूरण पदयो अब पाई ॥
 कि० ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति ॥

मुजरा साहिव मुजरा साहिव, साहिव मुजरा मेरा रे ॥
 मु० ॥ साहिव सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥
 मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढाऊं सेहरा रे ॥ घंटे
 वजाऊं अगर जखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द
 वाजित्र वजाऊं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत
 हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

घंट वाजै घननननन, इंड्रीक हरख नयो ॥ जनमे वर्द्धमानकुंवर,
 चीतराग तननननन ॥ धं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, ऊलरी
 नाद ऊननननन ॥ धं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान
 मगनननन ॥ धं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांझां रे, सांझ
 मेरा टुकसा सुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा
 गोल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करूं रंगरोल ॥ नि० १ ॥
 तुम अंबरदा मेहला प्रजु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमजुमर मेहला
 वरसे, ठमर नाचै मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण काली कोयली जी,
 प्रजुगुण आंवा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांड़, करवा लागी मोर
 ॥ नि० ३ ॥ तुम हो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण ऊंठा मोर ॥
 रूपचंद दिलदार मयाकर, तुम बिन देव न नर ॥ नि० ४ ॥ इति॥

राग कल्याण ॥ एते सहर विच कोनसा दिवान है ॥ पा-
 नीके कोट पवनके कांगरे, दस दरवाजै मंमान है ॥ एते० १ ॥
 पांचइंडीके तेवीस तस्कर, नगरकूंकरत हेरान हे ॥ एते० २ ॥ प्रजा
 सुकार सुणी जन्न जाग्यो, चेतनराय सुजाण हे ॥ एते० ३ ॥ ज्ञान
 को षाण वचनरस नेहे, हाथमें लाल कबाण हे ॥ एते० ४ ॥
 रूपचंद कहे तेने वारो, दुस्मन मान गुमान हे ॥ एते० ५ ॥
 इति पदं ॥ आय रहो दिल बागमें, सुण प्यारे जिनजी, आ० ॥ चुनर
 कलिया तोरे चरण चढाउं, गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सु० १ ॥
 मरुदेवी नंदन आद जिनेश्वर ॥ खेल अनंता तोरा बागमें ॥ सु०
 २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, जाउं विकसित वन फागमें ॥
 सु० ३ ॥ इति पदं ॥ रहीश रे यादव दोष घनियां, दोष घनियां
 रे अब ब्यार घनियां ॥ २० ॥ प्रेमका म्याला बहोत मसाला,
 पीवत मधुरी सेलनियां ॥ २० १ ॥ हाथसुं हाथ मिलाय दियो
 सांझ, फुलफा विठाउं सेजनियां ॥ २० २ ॥ राजल ठोकि चले

गिरनारी, दीपत मोहन वेलमियां ॥ २० ३॥ रूपचंद कहै नाथ नि-
 रंजन, मुक्तिवधू गुण वेलमियां ॥ २० ४॥ इति पदं ॥ विराजो
 वंगलामें, विराजो मंदिरमें, प्रज्जु गोमीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥
 चंदाश् चंदन और अरगजा, केशरमें गरकाव ॥ वी० १ ॥ शिर
 सोनेको ठत्र विराजै, मोतियमें तपे रे निताम ॥ वी० २ ॥ जव
 सागरमें आण पमाहुं, बांह पकरु मुज तारि ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद
 कहै नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥
 किण देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥
 आठ जवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥
 सहसावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥
 आप चलै गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३ ॥
 कहै नधू प्रज्जु नेमनगीनो, कहुंवू आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥
 राग आसानरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा, उस पदका
 करे रे निवेसा ॥ अ० ॥ तरुवर एक मूल विन ढाया, विन फूटै
 फस लागा ॥ शाखा पत्र नही कर ननकूं, अमृत गगने लागा ॥
 अ० १ ॥ तरुवर एक पंढी दोउं बैठै, एक गुरु एक चेला ॥ चेलेने
 जुग चुण२ खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ० २ ॥ गगनमंजलमें
 अधविच कूआ, उहां हे अमीका वासा ॥ सुगरा होय सो जर२
 पीयै, निगुरा जात पियासा ॥ अ० ३ ॥ गगनमंजलमें गजआ वि
 आणी, धरती दूध जमाया ॥ माखण था सो विरला पाया, ढाढ
 जगत जरमाया ॥ अ० ४ ॥ थरु विन पत्र पत्र विन तुंबा, विन जी
 ज्या गुण गाया ॥ गावनवालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही बताया
 ॥ अ० ५ ॥ आतम अनुजव विन नही जाणे, अंतर ज्योति जगा
 वै ॥ घट अंतर परखै सोही मूरत, आनंयन पद पावै ॥ अ० ६ ॥
 इति पदं ॥ पुनः ॥ अबधू एसो ज्ञान विचारी, वामें कोण

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्रह्मनके घर नाती धोती, जोगीके
 घर चेली ॥ कलमा पढ़े जई रे तुरकनी, आपही आप इकेली ॥
 अ० १ ॥ सुसरो हमारो बालोजोबो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी
 हमारो पोढे पालणे, मेंहुं जुलावनहारी ॥ अ० २ ॥ नहि हुं पर
 णी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारी ॥ कालोदाढीको में कोई
 नही गोमयो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीढीपेमें खाट
 खुटली, गगन नुसीकूं तलाई ॥ धरतीको ठेसो आज्ञकी पिगोमी,
 तोय न सोरु जराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंरुलमे गाय वियाणी,
 वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो ज्ञाई विलोवणा विलोवै, कोइ-
 यक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाहीं जानं सासरीये नहि जानं
 पीहरियै, पीयुजीकी सेज विठाई ॥ आनंदधन कहै सुणो ज्ञाई सा-
 धो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हं-
 सा तूं मानसरोवर वासी, वामे जूजो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥
 नीर अगाध जस्यो ओ करदम, पसरौ बेल जरासी ॥ आंकी बांकी
 कबहू न सीधो, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चं-
 माल जूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ नृप पठतावै पर आंग-
 णमें, जटके गया नर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी जूगो फैल म-
 चावै, जागो माहावत जासी, डिनियां चढ़े नीचै गिरती, पस्तै
 ही मालै फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावै
 इक दासी ॥ रुद्धसार इनकूं जत्र देखै, तत्रही प्यासी रे ॥ हं० ॥
 ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ बेर बेर नहीं आवै, अवसर बेर नही
 आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले जलाई, जनम सुख पावै ॥ अ० १
 ॥ तन धन जोवन सबही जूगो, प्राण पलकमें जावै ॥ अ०
 २ ॥ तन बूटे धन कोण कामको, काहेकूं रुपण कहावै ॥ अ० ३ ॥
 जाके दिलमें साच वसत है, नाकूं जूग न जावै ॥ अ० ४ ॥

आनंदघन प्रभु चलत पंथमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥
 इति पदं ॥ पुनः ॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो
 ॥ ये० ॥ आठोइ जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रे ॥
 तोने० ये० १ ॥ प्रभुजी प्रीतम विन कोइ नही प्रीतम, प्रभुजीनी
 पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ जवका फेरा वारी करो जि-
 नचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ चितमें धरो रे प्यारे चितमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे
 चितमें धरो ॥ ओम्नासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं ठल परपंच
 करौ ॥ एती० १ ॥ कूरु कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परजव-
 थी न मरो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम
 मरणके दुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अवधू निर-
 पढ़विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥ अ० ॥ समरत ज्ञाव ज्ञाव
 चित्त जाके, थाप उत्थाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वा-
 तां, जाणगे नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें जेद न जाणे, कन-
 क उपल सम लेखे, नारी नागणको नहिं परिचय, तो शिवमंदिर
 देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणने, हर्ष शोक नवि आणे
 ॥ ते जगमे जोगीसर पूरा, नित चढ़ने गुणगणे ॥ अ० ३ ॥ चंड
 समान सौम्यता जाकी, सावर जेम गंजोरा ॥ अप्रमत्त ज्ञारंरु परे
 नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४ ॥ पंकज नाम धराय पं-
 कसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एसा जन उत्तम, सो
 सादवका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रज्ञाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोचणा ॥
 च० ॥ जया जव प्रातकाल, माता धवरावे बाल ॥ जगजन करत,
 सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरजीके बंध टुटै, धूमर जये
 अपूवे ॥ ग्वालवाल मिलके, विलोवत विलोवणा ॥ च० २ ॥ तज

परमाद जाग, तूं ज़ी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साध पाय, वृथा
नही खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

कैरवा राग ॥ समझ परी, मोहे समझ परी, जगमाया अब जुठी
॥ मोहे समझ० ॥ काल२ तूं क्या करे मूरख, नही ज़रोसा पल
एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल बिनजर नांदी रहो तुम, शिर पर घूमें
तेरे काल अरी ॥ ज० स० २ ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो
तुम चित मांहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥
जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार, इकेली जानसें मेरो ने० ॥ रा
जुल ज़ुज़ी अरज करे बै, जलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥
इके० १ ॥ तोरण आय चलै रथ फेरी, जलांजी वांतो पशुवनकी
सुणी बै पुकार ॥ इ० २ ॥ सदसावनकी कूंजगदनमें, जलांजी
वांतो महाव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल बिनवै, ज
लांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः
रसना सफल जई, मँतो गुण गाये महाराज ॥ रसना० ॥ परम
आनंद प्रगट ज्यो मेरो, जब देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति उ
ज्वल जस सुण जिनजीको, संज्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ ना
क नमन करतां प्रभुजीकूं, सारथा आतमकाज ॥ र० ३ ॥ पदपं
कज प्रभुके फरसतही, दूर गई डुख दाऊ ॥ कहत कृमाकळ्याण
सुपाठक, अब मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी
॥ मुँजे ठोरुके चले हो चूक, हमसें क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई
आशकी निराश, उदाशीनता घनी ॥ प्यारा वश नही हमारा, प्री
तम पीरमें पनी ॥ रा० २ ॥ हमसें रह्यो न जाय, प्रीतम तुम
बिना घनी, संयम लीजिये दयाल, दयाधर्म आदरी रा० ३ ॥ नि
शदिन तुमारा नाम, देते ज्ञानकी ऊरी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको मित्त, जगतमें कोन कि
सीको मित्त ॥ ज० ॥ मात तात जुर जात सजनसें, कांइ रहत
निचित ॥ ज० १ ॥ सबही अपने स्वारथके है, परमारथ नहि
प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होली, मिता मनमें चित ॥ ज०
२ ॥ ऊठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीसुं सुबिदीत ॥ ज० ॥ को नहीं
तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एक ज
गवान जननकी, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहै एह
धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥ आदी-
सर जिनराज, त्रिजुवनके महाराज, आज हो आयो रे, में शरणें
प्रजुजी तुम तणे जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकूर, प्रगट्यो पुण्य
पूर ॥ आज हो जागी रे, मुज मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥
लगन लगी जरपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो ओरूं रे, नहीं
तुम पद सेवा सुखकरु जी ॥ ३ ॥ नाजिराय कुलचंद, मरुदेवीके
नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रजु मुजकूं निज चरणे सदा जी ॥ ४
अमृत धर्म सुजाण ॥ शीश कृमाकढ्याण ॥ आज हो रागे रे,
प्रजु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोमीगाइयैमन रंग, गो० ॥ एक ध्याने
एक ताने, कर केशरो संग ॥ गो० १ ॥ जात्र कीजै अमृत पीजै,
नीर बहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासै, आलस नावै अंग ॥ गो०
२ ॥ पोटतां प्रजु नाम लीजै, आणी मन छवरंग ॥ अजय तेहने
उंध मांदै, कदिय न होवे चित्त जंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥
पुनः ॥ हारे हूं तो मोह्यो रे लाल, जिन मुखमार्ने मटकै ॥ न
यण रसावा ने वधण सुखावा, चित्तनु लीधुं चटकै ॥ प्रजुजी केरी
जक्ति करंता, करमतणी कस तटके ॥ दां० दूं० १ ॥ मुज मन

लोनी जमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि में,
की राचै, कहां कुण काचतणे कटके ॥ हारे हूं० १ ॥ ए जिनशुग
तां क्रोधादिक सहु, आसपासथी हटके ॥ केवलनाणी वह सुख
दाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हारे हूं० ३ ॥ ए जिनने जे
दिलमां न आणे, ते तो जूला जटके ॥ जाव जक्तिसुं उलग करतां
वंगित सुखमे सटके ॥ हारे हूं० ४ ॥ मूरत संजव जिनेश्वर केरी,
जोतां दिथुं हटके, नित्यलाज कैह प्रभु ए मोठो, गुण गांठ हूं
लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रभुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब कैसें
कर वूटे री ॥ प्र० ॥ धिगर जगमें बाको जीयो, अथवा प्रभुजीसे
रुसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रभुजीसे नेह करेगो, शिवपुरना सु-
ख लहस्ये री ॥ प्र० २ ॥ सेवाराज प्रभु गांठ रेसमकी, लगी प्रीत
नही तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा डुर
करना, डू० ॥ एक ध्यान प्रभुका धरणा, खतरा दूर करना० डू० ॥ जब
लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥
१ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥
खत० २ ॥ संवर जाव सदा मन धरना, आतम डुरगति हरना ॥
ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मर-
णा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानउद्योत प्रभु पाये परना, शिवसुंदरी सुख
धरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्र-
कार ॥ दान शीयल तप जावना, जगमे ए तंत सार ॥ रे० १ ॥
वरस, दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इकुरस दान वहरावि-
यो, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा वार उघामिया, चलणी
कादयो नीर ॥ शतीव सुजज्ञ जस थयो, शीखे सुरगिर धीर ॥

रे० ३ ॥ तप कर काया सोपवी, अरस निरस आहार ॥ वीरजि-
नंद वखाणियो, धन धनो अणगार ॥ रे० ४ ॥ अनित्य जावना
जावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ जरत आरीसा जुवनमें, पाभ्यो
केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु शमो, जेहनी शीतल
ठांह ॥ समयसुंदर कहै सेवतां, मुगतितणा फल त्यांह ॥ रे० ॥
६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सोइ२ सारी रैन गमाई, वैरन
निद्रा तूं कहांसैं आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मेंतो बाली रे जोली,
वहे२ मुनिजनकूं नाखूं रे ढोली ॥ सो० १ ॥ निश कहे मेंतो ज
नमकी दासी, एक हाथमें मूंकी डुसरे हाथमें फासी ॥ सो० २ ॥
समयसुंदर कहे सुनो जाइ वनिया, आप मूवै सारी रूब गई डुनि
या ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रज्जुजीसैं ध्यान रे,
मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागी लगनवा गोमी नहि वूटै,
जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप जावना
जावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोरुके अरज कर-
त है, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः

ते शिवपुर गये रहै रे, वारी सकल करम दल खयकर ॥ शि०
॥ अविनाशी अविकार विराजित, परमात्म शिवधाम रे ॥ समा-
धान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसे२ रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध
अविरुद्ध है, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रज्जुके आगे गौतम, अमृ-
त पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥

गरवाकी चाल ॥ म्हारे जले रे जगो छैद्यामो आजनो रे, मेंतो
मुखमो दीगो जिनराजनो रे ॥ म्हारे ज० ॥ म्हारे सुत सिद्धारथ
महाराजनो रे ॥ जिन लंठन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥
म्हाने पागी मिट्यो शिवराजनो रे, मोने साधन मिट्यो शुज
काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कटपवृक्ष फट्यो काजनो रे, म्हारो

मद्दीयल वाभ्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाज सूरिद
महाराजनो रे, फढ्यो वंठित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥
इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेंतो ठवि
निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पदरी अंगी अलोकिक जातनी
रे, मांहे बूटी दीसे ज्ञांत२नी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-
मा जम्या बहु रे, काने कुंरुलनी शोजा शी कहुं रे ॥ धन० २ ॥
मुने किरपा करी ते कहुं कसी रे, मारे वाहले मुऊ सामो जोयुं
हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रजु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, थई सूर
शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो ज्यो सो-
हामणो रे ॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रजुने चरणे नभ्यो रे, जिनराज
ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आ
जथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां
ते डुख सरबे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युं रे ॥ ध० ३ ॥
आपी सेवा ते शुद्ध मनषी खरी रे, सूरशशी ऊयेर करुणा करी
रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे आज आनंद वधाम
णा रे, हुंतो लेउं रे वाहलाजीना जामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास
पोतानो जाणियो रे, आग्रता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १ ॥
आप्युं दरशन ते डुर्वेज देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव
में रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो जरोसो साचा गुरू रे, प्रजु
विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म
नमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥
इति पदं ॥ पुनः ॥ सवालाख टकानी जाये एक घन्टी, स० ॥
ए संसार जेसा सांजेला, घरुपण आया घोमे चढी ॥ मांगी तूंगीने
उत्र थरायो, केहनो कंदोरो केहनी कमी ॥ स० १ ॥ साधो जार्ड

जिनने संजारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे बीबो जज
तूं जगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ आवोशनी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम जगत
वञ्चल जगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रभु केहवी थइ तकसीर कही
ने सुणावो रे, इम विन गुनेहे दीनानाथ मूंकी न जावो रे ॥ आ०
१ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रूठो ठबी
खो कंत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता हंस
के लंघन राचे रे, सखी आंबातणी जे रुद्राम, आंबलिये न माचे रे,
आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुज दीदार नहीं तुज जोमे रे, इण जग
में जोतां कंत कहुं वूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ठीलरिया मि
त ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥
आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न जावे रे, जो मांदरो
साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६ ॥ इम करतां बांधीप्रीत
राजुल साची रे, जे नेदनो नावै ठेद इक चित राची रे ॥ आ० ७
॥ इम रुद्धसारनी बाण चित्तमें धरजो रे, प्रभु नेम राजुल सी प्री
त मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारु ॥ ऊजो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमो
हन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा वागमें
रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल विन धनी रे,
मत मन प्रभुकुं जूल रे, चि० म० १ ॥ स्वाम घटा तन शोजता
रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन
अजंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम
जयदेव ॥ वेपरवाही बालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥
श्रीफलवधीपुर तिलक ज्युं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण वा
स पर साहिवा रे ॥ दित कर दीजै दास रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

महीयल वाभ्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलान्न सूरिंद
महाराजनो रे, फढ्यो वंठित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥
इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेंतो ठवि
निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी
रे, मांदे बूटी दीसे ज्ञांत२नी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-
मा जरुया बहु रे, काने कुंमलनी शोजा शी कहुं रे ॥ धन० २ ॥
मुने किरपा करी ते कहुं कसी रे, मारे वाहले मुज सामो जोयुं
दसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, अई सूर
शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो ऊयो सो-
हामणो रे ॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नभ्यो रे, जिनराज
ते म्हारे मन गभ्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आ
जथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां
ते छुख सखे गयुं रे, वाळानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युं रे ॥ ध० ३ ॥
आपी सेवा ते शुद्ध मनषी खरी रे, सूरशशी ऊपेर करुणा करी
रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे आज आनंद वधाम
णा रे, हुंतो लेउं रे वाहलाजीना ज्ञामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास
पोतानो जाणियो रे, आग्रमता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १ ॥
आप्युं दरशन ते दुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव
में रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो जरोसो साचा गुरू रे, प्रभु
विना जगत मिळया सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म
नमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गभ्या रे ॥ म्हा० ४ ॥
इति पदं ॥ पुनः ॥ सवालाख टकानी जाये एक घडी, स० ॥
ए संसार जेसा सांजेला, घरुपण आया घोमे चढी ॥ मांगी तूंगीने
बत्र थरायो, केहनो कंदोरो केहनी कमी ॥ स० १ ॥ साधो जाई

शंकर रमणविहारी, प्रभु महिमा अंगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता
धारी ॥ सां० ४ ॥ सुंगर सिंह विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये
ताजा, जिननुवन करावण काजा ॥ सां० ५ ॥ शिववामी सुंदर ठा
जै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६
॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसे प्रे
म लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अजिनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन
खामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगलीसे उग
णपचासे, सुवि पांचम यतन विलासै, प्रभु माधव माश हुलासै
॥ सां० ९ ॥ हितवद्वज प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत
रंगी, रुद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववामी सुम
तेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ रुषभदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे ठोरु चला विणजरा ॥ ए चाल ॥ तुम जो रुष
भ प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकजर
न्यारा, लग रही लेंगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिधारी, कंद
रपदप विषयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी,
प्रभु जए जगतसे न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पी
यूष सहज सुखजीने ॥ माया बाया तज दीने, आगम गम अंतर
लीने, जया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विनूपा
त्यागी, अध्यात्म रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपागी, घर
ध्यान धरै अनुरागी ॥ शैलेसी करणकुं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रम
धर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर
चंदा, दील रंजनमें तुम बंदा, प्रभु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४
॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपे कुशलनिधाना ॥ रुद्धसार
करत गुण गाना, प्रभु कीजै आप समाना ॥ अब किंगमिग ज्योतिस
तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

नचंड शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश ॥ निधि इंडु शित सप्तमी रे,
 रुद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन जाव
 नकी, ठवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चाहूं,
 लागी लगन गुण गावणकी ॥ ठ० १ ॥ सांमली सूरत लटक चटक
 पर, वरसे घटा जेसैं सावणकी ॥ ठ० २ ॥ बालपणे प्रभु हम संग
 खेले, अब तो जइ विसरावणकी ॥ ठ० ३ ॥ याद करो जिन पू
 रब प्रीती, वखत बनी हे दिल लावणकी ॥ ठ० ४ ॥ मोहे ज़रों
 सो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ ठ० ५ ॥ सहजानंदी
 एक लहरमें, दीजै सुख दुख जावनकी ॥ ठ० ६ ॥ पारस जेट रहे
 जो लोहा, होवै लोक हसावणकी ॥ ठ० ७ ॥ राम निवास आश
 प्रभुजीसैं, रुद्धसार पद पावनकी ॥ ठ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेम जिनंदजीसैं आंखरुली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुगुण
 सुपारससैं, मेरी अजब अनोपम प्रीत जइ रे ॥ सा० ॥ जिन मुख
 चंड चंद्रिका निरमल, चंचल नैण चकोरमई रे ॥ सा० १ ॥ डुर न
 कीजै निज चरणसैं, सुरतरुकी गंध गही रे ॥ सा० ॥ दिखनर
 प्रभुसैं अरस परस अब, वतिया दुखकी आण कही रे ॥ सा० २ ॥
 विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूध क्युं विसार दई रे ॥ सा० ३
 ॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, रुद्धसार लय लाग रही रे ॥
 सा० ४ ॥ इति पदं ॥

रूपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सांवरिया पास
 जी सुख दीजै, प्रभु अरजी दिखनर लीजै ॥ सां० ॥ मनमोहन
 मूरति थारी, आतम अनुभव उपगारी, सुध लीज्यो नाथ हमारी ॥
 सां० १ ॥ करुणारस अनृत कूंपी, लयलीन सुवानंद रूपी ॥ तन मन
 पद पंकज सूंपी ॥ सां० २ ॥ जब पारस नाम उचार्यो, रघुपति
 को कारज सार्यो, प्रभु धरणीधर निततार्यो ॥ सां० ३ ॥ शिव-

शंकरं रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता
 चारी ॥ सां० ४ ॥ मुंगर सिंह विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिवे
 ताजा, जिनजुवन करावण काजा ॥ सां० ५ ॥ शिववामी सुंदर ठा
 जै, जिनमंदिर शरत् विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६
 ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसे प्रे
 म लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अजिनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन
 वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ जगणीसे जग
 णपचासे, सुवि पांचम यतन विलासै, प्रभु माधव माश हुलासै
 ॥ सां० ९ ॥ इतिवद्वत्त प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत
 रंगी, रुद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववामी सुम
 तेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ रुषज्ञदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे ठोम चला विणजरा ॥ ए चाल ॥ तुम जो रुष
 ज प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकजर
 न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिवारी, कंद
 रपदप विषयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी,
 प्रभु ज्ञान जगतसे न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पी
 धूप सहज सुखजीने ॥ माया ठाया तज दीने, आगम गम अंतर
 चीने, जया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विचूपा
 त्यायी, अध्यात्म रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपागी, धर
 ध्यान धरै अनुरागी ॥ शैलेसी करणकुं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रम
 धर नयर जिनंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर
 चंदा, दील रंजनमें तुम बंदा, प्रभु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४
 ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपे कुशलनिधाना ॥ रुद्धसार
 कृत गुण गाना, प्रभु कीजै आप समाना ॥ अवजिगमिग ज्योतिस
 तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अग्रमुंडं१ वाजै चोधमा, सवाइ रुंका साहेबका ॥ उननं२
अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ ना
मका, नित२ वाजै चोधमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्व
नाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता
वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोजे, जैसा सरद पूनमचंदा ॥
स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोरु देवता
मिलकर, ओठव करणकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ
नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंड सूरज करता सेवा
॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको
पार न पावै, जिनका गुण हे सबसैं वमा ॥ ३ ॥ दूर देससैं आया
जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वमे२
जोके खाता, बारे वरसकी उमर प्रज्जुकी, ठोटेपनमें व्होत कला
॥ बरोवरीके लिये सोवती, तपशीकुं देखण चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देख
के बोले जोगीसैं, एसी तपस्या कुं करता, उ जोगी तेरे वमे लक
मेमें, वमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता,
तोवी जोगी नहिं सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमा
सा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, वमा नागकुं जला
दिया, दिया सार नवकार नागकुं, धरणीधर पदवी पाया ॥ वमी
उमेदसैं आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी
आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज ठोरुके चले जं
गलमें, जुगतीसैं कानुसग्न किया ॥ वमे धीर गंज्जीर प्रज्जुने, तीन
लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निराका
र खमा, कमठासुरने किया कमाका, नज्जमंरुल बादल चमा ॥ ७

॥ उसी दिन्नको कमठासुरने, पिठला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी
 सेना लेकर, जलकूं जलदीबुलवाया ॥ वरुा किया घनघोर जोरसें,
 पवन चलाया मतवाला ॥ करुकर कर हुआ कमाका, चमक बी
 जका उजवाला ॥ ७ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता
 चौताला ॥ सात खूटकी वरुी ऊनीमें, प्रभु खमा है मतवाला ॥
 नाक बरोवर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वरुा, पराजय नहिं
 होय जिनूंका, एसा प्रभुका ध्यान चढा ॥ ८ ॥ संकटसें सिंहासण
 मोला, हुवा घंटका आधाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धातु
 धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया,
 पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने ठत्र किया ॥ १० ॥
 क्रोरु ऊपाय तो किया कमठनें, कुठबी इलाज नही चलता ॥ तर
 एवाला साहिव उनकूं, ठलणेवालाक्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज
 द्वारके, कमठ हाथ दो जोरु खमा ॥ धरणीधर साहिवके आगे, अरजी क
 रता खमा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचै, पार्श्वनाथ शुभ्र
 मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला
 ॥ बीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वरुे देवलमें
 इंदर सोहै, घंट वाजता चौताला ॥ १२ ॥ वरुी जुगतसें सिंहा
 सण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगोंर पर शिखर चढाया,
 दरवाजा शुभ्र केवलका ॥ जामंरुलके आगे शोभता, मूल गुंजा-
 रा आरसका ॥ पीठे पञ्चीस देरिया सोजित, सिरे काम सिंहा-
 सणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहै, सदसफणा प्रभु पार
 सका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, वदू काम है सारसका ॥
 अठारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त फागण मास जला ॥ सुदी तीजकूं
 तखते बैठै, जगोष पर नाम चला ॥ १४ ॥ देशर के संघ बहु
 मिलकर, तेरे दर्शनकूं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वरुी

तेरी अकलमाया ॥ धर्मचंद जोरता सवाईने, वरु साहमी वा-
स्तव्य किया ॥ सकल संघकी आज्ञा लेकर, वरु शिखर निशान
दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥
पारसनाथकुं तखत बैठाकर, जगोर पर नाम किया ॥ कीर्त्तिवि-
जय गुरुराजकुं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वरु ॥ गुलाबचंद साहेब
के आगे, जिनसासनका काम वरु ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंग
में, ग्यान ध्यानसें खरुआ, हाथ जोरकै अरजी करता, पारसनाथ
जी तूही वरु ॥ वरु काम तेरे है साहिब, मुखसें नहि कहणे
आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी, जिविजनकुं सुखके
दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

रुषज तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा ॥
वंश इहवाकू नरुचंद, नूमिपति नात्तीके नंदा ॥ मात मरुदेवा
सुखकंदा, प्रगट जये जगजन आनंदा ॥ (उहा-साखी) रेणु पूंज पर
घापकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप जयो सचिपतिको,
आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ जये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥
मौलि पर कनक मुगट राजै, मालगल मोतियनकी ठाजै ॥ श्रवण
शुग कुंमल अति साजै, निरख ठवि कोटि ज्ञानलाजै ॥ (उहा-साखी)
हीर वीर सोजावणी, आप ताप ऊलकंत ॥ युगल अलंकृत देख
प्रभूकुं, चरण नीर वरसंत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥
सुनंदा सुमंगला राणी, जोगसें योग प्रीत ठानी ॥ जये शत पूत्र
सुगुण खाणी, प्रभूने दिया राजधानी ॥ (उहा-साखी) चौसठ विद्या
तारकी, पुरुष बढ़ोत्तर ग्यान ॥ जग विवहार चलाया प्रभूने, प्रजा-
पती अग्निधान ॥ मुनि हुय तजै जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लाज
अंतराय ऊदै आया ॥ वरसदिन जोजन नहि पाया, जेटमणिकंचन

सब लाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ (उहा—साखी) हस्तिना-
गपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इकुरस प्रभुकुं वहिराया, देव कर-
त जयकार ॥ अक्षयतृतिया जई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम इन
केवल चिदरासी, नाथ जये अविचलअविनासी ॥ शिखर केलाश-
आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु ज्ञासी ॥ (उहा—साखी) ॥
कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जमी
घनी मनमोहन सुरति, लखमी धरत आनंद ॥ फूल रही
मीना उजियासा ॥ ल० ५ ॥ कश्च घनस्याम मूरति नीकी, सजल
घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरिर्विंद जमरकीकी, जक्तिरस कुंम-
ल पुर सीखी ॥ (उहा—साखी) ॥ उगणीशय अमृतालमें, ज्ञानपंच
मीरंग ॥ कूरु कपटतज जेट जई जिन, सुंदर कमलासंग ॥ कुशल
रुहसार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस बलिहारी, प्रभु पावापुर
निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल ज्ञान प्रकाश तत्व दरसाये,
प्रभु चउद सहस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय
निज देख पावापुर आये, तब सुरवर सुखकर समवसरण विरचाये
॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण ठदि वाये, जामंरुल धजवर
डुंडुनि नाद सुणाये, मणि कनक रतनका बीच सिंहासण ज्ञारी
॥ प्रभु पावा० १ ॥ तब हस्तपाल नरपति सुरपतिके आगै, प्रभु
शोले पहर भुनि अमृत नपम लागे ॥ पंचम आरेके ज्ञाव प्रगट गे
त रागे ॥ ज्ञापै सिद्धारथदंद सुणत भ्रमजागे ॥ तिहां नरपति सु-
रपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरत रस जागै
॥ गौतमकुं जेजा प्रतिबोधन उपगारी ॥ प्रभुपा० २ ॥ अम्मावश पिठली
रैन सुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोद्ववकीने ॥ गौ

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तव जगत प्रकाशन ग्यान सुधा
 रस पीने ॥ मेरी धन्य धनी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हि
 यरा हरष न माय फरकता सीने ॥ जई दीवाली जग वीच तजीसे
 जारी ॥ प्र० ३॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज ऊ
 ठा लिया नरानरी ॥ तहां जया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधन
 ने किया जुवन विस्तारी ॥ प्रजु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रजु
 दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल ठवि जविकूं लागत
 प्यारी ॥ प्रजु० ४ ॥ प्रजु धरमचंड हो आप आप जस राजा ॥
 क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसे जमाव
 अंगिया साजा, प्रजु मुन्नी चुन्नी अविचल वाजत वाजा ॥ सन
 जगणीसे अमृताल कृष्ण पख गाजा, जये कार्तिक दिन निर्वाण
 जेट मादाराजा ॥ प्रजु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुख्तारी ॥
 प्रजु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजै, प्रजु रहम नजर
 कर दिलजर दरसण दीजै ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी
 लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करूं नाथ
 तुम दूर वसे वरुजागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी
 ॥ नहि इस दुनिया दरम्यान पंथका आगी ॥ मेरे रात दिवस इक
 ध्यान जया अनुरागी ॥ जो पल जर पाजं संग अमृतरस पीजै ॥
 प्रजु रह० १ ॥ मैं जरखणीके वीच सुपन प्रजु पाया, प्रजु अर
 स परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोमर आनंद हरख जर
 आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख
 देखूं नाथ चरणकी ठाया, मेरा जनम सफल हो जाय करूं दिल
 चाया ॥ तुम जाणत हो घट वान ढील नहि कीजै ॥ प्रजु २० १॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजै, धन२ वो नर नर नार सुण-
त धुन साजै ॥ जो पर पातं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आनं
जिन तुम पाश देख डख जाजै ॥ ये सुण जिन मेरा स्वाल कुटि
लता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढ़ा शिव पाजै ॥ तुम वचनं
मालती फूल जमर मन रीजै ॥ प्रभु र० १ ॥ क्या समवसरण
सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥
प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर
मीन खुसियाला ॥ अब दीजै कुशल निधान सदा सुविशाला, में
चाहुं संग अजंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन जक्ति जमी रुद्धसार
नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामवाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख धन वरसण, श्रीसांवरिया म-
हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस वाजै, जहां
अथशेन वरशैल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै,
प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद जाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उप
देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज जोग अचलपद साजै ॥ पा
रसके संगत लोह कनक जयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-
णूं साद्वि तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि
प्रकाशी ॥ श्रीअन्नयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल
सैं गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी,
श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम मूरत निरखण लग
रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुथिर
सुचितासी, नित आनंद उज्जव होतधर्म उजियासी ॥ प्रभु रामवाग
विच भुवन वायो केलासी, क्या अदभुत महिमा चंडकिरण
परकासी, जिन ध्यान तरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु उरजन

फंदा तोम मोहकी फासी ॥ जिनचंड सूरेश्वर विजयराजके सर
सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवल्लभ चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री
संघ सदा कल्याण प्रीति बुध दीनी ॥ सन् उगणी सय अमताल
माघ सुद लीनी, सुज वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल
हमी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्रसार कहै सुखकार प्रीतिरस
पीनी ॥ जइ कंधन काया प्रभु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४ इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोकी, तोरण
आये फेर मत जाडु, तुमकुं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान
लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ ठप्पन्न कोरु जादव
मिल आए, ए अवसर नही फिरणेकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-
वरकुं सिधाए, हमकुं ठांणी नव जवकी ॥ मेरे सामरे श्याम सखू
णे, में इहां नही अब रहणेकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी में तो-
कुं कहतहुं, देखूं शोभा गिरवरकी ॥ मातापिता बाधव सब ठंणी ॥
जासुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके बीनवै राजुल,
बात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकुं ठोरु चलै निरधारी,
अब हे पीतम सरणेकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सु-
ण हो राजुल, विषयारस हे विप सरपी ॥ यह संसार असार निरं-
तर, कर करणी यह तरणेकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम
लीयो, जिनसें कारज सरणेकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह
जव पार ऊतरणेकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहलां राजुल नारी, पो-
हता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोभा
हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनमें
काया उदरणेकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल माहै, फिर फेरा नहिं
फिरनेकी ॥ ने० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अर्थ जिनदासजी कृत १० घन तथा लावणीओ ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे ज़ब पार

॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपना अवन-

तार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाए डुख की एहे संसार

॥ करो प्रभु निहाल अजी जिनदास, रखो प्रभु मुझ चरणोंके पा-

स ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली ॥ सोवत

समताकी में टाली, आत्मा तपमें नहिं घाली ॥ अनंत ज़ब बीतगया

खाली, वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्र-

भुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाजिनंदन, चरण पर चढ़ै

केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे कर्मोंका फंदन

॥ साधयो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद-

गुण जिनदास गावै, शीश चरणोंसें नमावै ॥ ३ ॥ बोलत हे हि-

या मेरा इसकर, चढ़ावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पैठामें धर्मोंमें धं-

सकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खमा कमर कसकर,

हटाया कर्मोंका लसकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज खासा, शरण जिनदास

लिया वासा ॥ ४ ॥ समझ मन मेरा मतवाला, तुजें नहिं कौइ हट

कणवाला ॥ वरया तेरे हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिहुं ता-

ला ॥ फेर तो ममताकी माला, बाल तो जगवंत पर जाला ॥ द-

यासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में

गणवर प्रेमपती, मुझे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्ध-

मपती ॥ पूठ पर खमे जागता जती ॥ मुझे बलवंत जई शोल सती,

मिटि मेरी दुर्गतिकी सब गती, ऐसा घन जिन दास गावे, अवल

पद जक्तिमें पावे ॥ ६ ॥ विकट घट दुर्गंतिका ज़ारी, नीर

ज्यां ज़रनी कुमति नारी ॥ बरठी उन नेणोंकी मारी, मुब्या केइ

कामी संसारी ॥ इनोकी हो रहिये खुआरी, जीता कौइ सत्य

धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आ
या ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी ॥
कुमतिकी पत्नी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे नदासी ॥ कुमतिकी
वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकुं मासी ॥ हियो
खोल अरिहंतकुं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया
नही गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन
रं गया पानी, गती तेरी डुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास
वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ९ ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी,
शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें
लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी
सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही
काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी॥ चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये॥
कीसीकी झूमी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी
का जेटो रे च०, जव२ संचित पाप करम सब तन मनका मेटो
॥ सुरुत कीजै—महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण नज लीजै, सम
कित अमृतरस पीजै ॥ लाज जिनजत्नीका लहिये रे—लाज० ॥
चल० १ ॥ करो मत मुखसे बढाई, करो०, तज तामस तन मनका
सुमति कर घर रहणा जाई ॥ रीतसे बोलो—मेरी जान री० ॥
आतम समतामें तोलो, मत जरम पारका खोलो ॥ मौनकर तन
मनसें रहियेरे—मो० ॥ च० १ ॥ जोवन दिन च्यारतणा संगी रे,
जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाढ्यो, काया पत्नी नंगी ॥ प्रीत सब
तूटी—मेरी ज्या० प्री० ॥ आजखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया
रूठी ॥ सुख दुःख आप किया सहियैरे—सुख दुः० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता नुदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर
गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा—मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख
पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चाहिये
रे—मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे—मु० ॥
अब अचल अखंमित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ में रुढ्यो चोरासी
मांदि नूढ्यो में जरम, नूढ्यो०॥ महारे उदय अनंता डुख बांध्या
जब कर्म ॥ में कदियक हूनु रंक फिर्यो तज शरम, फि०॥ अरु
कदियक राजा ज्यो गरग्रको गरम ॥ जब गरब आणकर बोढ्यो
पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनु
ष्य जनममें चेत धनी शुज आई रे, घ० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर
का सुख वार अनंती पाया, अन० ॥ मारे शिव समताका सुख
दाय नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव जजा कर ध्याया, जला०
॥ में जलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग ज्ञाया ॥ में पन्था
लोजके फंद जोम्तो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय
कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०
अ० २ ॥ अब दुर्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥
अब दानशील तप जाव दीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट
पाप परिहर रे, पा०॥ अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं
निर्मल नयणे देख जगतसें सर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान
अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बैन अर जाई रे ॥
वे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुज मन ज्ञायो सदा गुण गांठ,
सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जांठ ॥ अब जवर
मांड़ी देव जिनेसर पांठ ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण
चित्त ज्ञापंठ ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चांठ ॥ स० ॥ ए

घोरासी के माहि फेर नही आनं ॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत
एगाई रे ॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी ॥ हारे तूं कुमति कलेसण
नार, लगी क्यूं केमे, ल० ॥ चल सरक खमी रह दूर तुजें कुण
वेमे ॥ हारे तूं सुमतीको जरमायो, मुजे क्युं ठोमी, मुजे० ॥ मेरी सदा
शाश्वती प्रीत विन कमें तोमी ॥ तुज विन मूनी मेरी सेज, कहं करजोमी,
क० ॥ जब चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी ॥ यूं फुर१ कुमति
आंसु आंखसे रेमे, आं० च० १ ॥ हारे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति
में रुवो, सेति० ॥ पकमयो साचो जिनराज, संग तेरो दूटो ॥ तेरी
मूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया० ॥ में सहज हुवो हुं दूर
तार तेरो दूटो ॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेमे, आ० च०
२ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल० ॥ सुमती
के लागो संग मुजें क्यों टाली ॥ तूं सुमतीको सिरदार, सुणावे
गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं है नार गोरो नर काली ॥ तूं हम
कूं ठेले दूर सुमतिकुं तेमे, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लल
चायो, रती नहिं निगियो, र० ॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय
जगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं जगियो, दू० ॥ जिनराज
घचनको ग्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तूं वात खोटी
भन खेमे, खो० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसकका गाना, इस०
तेरी अलप जमर खूट जाय, नरक जब जाणा ॥ तें दिना चार
जुग बीच लिया दे वासा, लि० ॥ तेरे सिर पर वैरा काल, करे
दे दासा ॥ में बोलूं साची वात, जूव नहिं मासा, जू० ॥ तूं सूता
दे कुण तिंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज खलक
में खासा, खल० ॥ तेरे जीवन पतंगका रंग, जूव सब

आता ॥ अब दिये धरो मेरी सीख, समझ रे दिवाना, स० तु० ॥
 १ ॥ अब बुरी ज़ली सब बात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी
 ठा संसार जेद नहीं दीजै ॥ कर बीतराग विसवास्त, दिये धर ली
 जै, दिये० ॥ पण नीच नारका संग मांहे मत जीजै ॥ अब सात
 बिसनको संग, प्रीत मत कीजै, प्री० ॥ तोहे डुरगति दे पोहचाय
 तेरो तन बीजै ॥ तुं सुख डुखका सिरदार, रंक नह राना, रं० तुं० २
 ॥ तुं विसरगया जुग बीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कु
 टंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धरम बिन खोया, जनम
 सब नरका, ज० ॥ तेरे पछे बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लि
 या नहीं तें लाज, बखत पर करका, व० ॥ तेरी बीती बात सब जा
 य जनम थुं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे
 रयाना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद
 दिल आया, आ० ॥ मेरी ज़गी जूख सब प्यास सुधारस पाया ॥
 मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनैसर राया, जि० ॥ में चाहुं चर
 णकी सेव सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसनकी, मेरे ए
 हि माया, मे० ॥ थूं अरज करै जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब
 बुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार,
 सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस
 असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर गजै ॥
 ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्ञान, जगत सब लाजै ॥ एसो नेम
 नवल इक बीद, अनोखो बाजै, अ० ॥ सुरनर सब गावै गीत, गनन
 में गाजै ॥ अब दोसर सब डुनियां, देखणे आई, दे० ॥ दे०
 १ ॥ अब चढा नेम तोरणकूं, आनंद दिल धरकर, आ० ॥ सज
 आयै सुंगा साज, फिलोवां करकर ॥ में पायो परमानंद, हरख

दिया जरकर, ह० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥
 सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब
 इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, श्या० ॥ पशुअनकी सुणी
 पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्या-
 गी, शिवरमणीके शिर वींद, वणयो वैरागी ॥ अब मढ़ल चढ़ी रा-
 जुलकूं, खमी बिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके
 नही पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी ॥
 अब कठन जीव डुरगतको, बन्यो मेंदानी, व० ॥ जिनदास करो
 जव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी
 गई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक बीच मगसी पारसका बाज रह्या मंका, मुगति गढ
 जीत लिया वंका रे, मु०॥ मुल०॥ करमदल बलकूं कय कीया रे,
 क० ॥ मुगतिमढ़लमें केलि करै, अनुजव अमृत पीया ॥ शाशता
 जीया, महाराज शा० ॥ कळ्याणक कारज कीया, अमरापुर पद-
 वी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥ मुल० १ ॥ प्रभु
 पारसजजले ज्ञाईरे, प्रभु पा०॥ ज्ञाव जमरकामेट जोत तेरी जगमें
 सवाई ॥ टेककूं टालो, महाराज टे०॥ चंचल चितसे मत चालो, गुमान
 गरबकूं गालो, गरबसे धूम मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे
 शुभ ज्ञाग्य नदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांदि प्रभु
 मगसी पाया, पापसे मरता, महाराज पाप० ॥ जवि जीव ध्यान
 दिल धरता, आवक नित समरण करता, मरण दुख मिट्या मेरे
 अंगका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ सहिमा मगसीकी अब जाणी रे,
 म० ॥ नहि ऊधनी मेरी आंख विलोया परव विना पाणी ॥ मैं
 जिनवर जाव्या, महाराजमें जि० ॥ जिनदास जिनंदसें राव्या, म-

गस्तीपारश हे साचां, करों मत मनमें कोइ संका रे ॥ क० सु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही
रे, पुदगलमें मान्यो सुक कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे
जैन निम्न सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वैगो,
विषय गुण गावै ॥ अमृतकूं अलगो ढोल, विसन विष खावै, वि० ॥
मुगतीको मारग मेट, नवटमें जावै ॥ थारी तुष्ट जिंदगानी मांहे, विक-
ल बुध जई रे ॥ पु० १ ॥ थारे धन दोलत जंमार जरया हे मोती, ज-
रया० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसले तेल
फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख नठ आवै, अबला तेरो मुख
जोती ॥ एसी संपत विन मांहे सरब क्य जई रे, स० ॥ पुद० ॥
२ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सु-
खजर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सजिया शोले सणगार, नारिसें
मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक नि-
गोदकी वाट, पकर कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो
आठ मद मांहे, गरबसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको नाथ,
मेरे कुण तोले । डुर्वल करता पोकार, पलक नही खोलै, प० ॥
चाकर हुय रह्या इजूर चमर सिर ढोलै, अब अवसर आ
यो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासें कीयो लाम बना
इ चंगी, व० ॥ पलजर परवारयो पुन्यतणो तिहां जंगी ॥ पकसी
परजवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो हंत गयो आकाश
काया पसी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोंसें जोर तेरा नही रे, जो०
॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥

तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥
में नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर
पछे लागी, तुम त्याग चले चनखं जये वैरागी ॥ अब राजुलसी

सत्त्ववन्ती जावसैं त्यागी, जा० ॥ थारे अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी
जागी ॥ यूं रोती राजकुल नार नेण जर रे, ने० ॥ में० १ ॥ में अरज
करुं करजोरु, करो मन परसन, करो० ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार,
देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन,
लं० ॥ मेरे आवै नयणमें नीर लग्यो नित वरसन ॥ मेरे नेम मिल-
नकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ में० २ ॥ में नहि कीनी त
कसीर, चले क्यूं रुठै, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस
चूटे ॥ में रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूटे, जो० ॥ में चहुं
पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें वर
रे, ज० ॥ में० ३ ॥ तुम तारी राजकुल नार, सुगतमें मेली, मु० ॥
पीठै नेम गधे निरवाण, करम सब ठेली ॥ में नित ऊठे परजात,
नसुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहि उर जगतमें बेली ॥ यूं
अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ में० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहि पाया, दूजेकुं क्या
समझावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, होयो हाथमें नहि आवै ॥
दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रिका
परवसमें पनियो, ग्यानकला कहो कैसें जगे ॥ तृष्णाने जग लूट
लियो हे, कपट करी परधनकुं ठगे ॥ खायर लोही मांस बथायो,
प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपत्तकी करै चूंअणी, चरचासैं
चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकुं नही देखै,
दूजाका अवगुण जाखै ॥ हिंसाहीमे हूंआँ हजुरी, दया दूर दिससैं
नाखै ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकुं चाखै ॥
तीनूही प्रणमें राग धरामें, सरणे जिनवर किम राखे ॥ ठग फा-
सीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥
२ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजै ॥

नही गाममे रुख अंबको, एरुं अंब सरिखो सूजै ॥ पारख नही
 हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुजै, गामर देख कहै मुज
 धरमें, कामधेनु इतनी दूजै ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा, अव-
 गुण किम गाया जावै ॥ वं ० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें
 मातो, लोभ मांहे छपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी,
 पीर पारकी नहिं सहतो ॥ जगति नही गुरु देव धरमकी, कठन
 वचन मुखसें कहतो, अंतर आंठ न खुलै दियाकी, पूठ परमपदकूं
 देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥
 वं० ही० आप० ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निग्रंथकूं, वे जिन
 सुझधारी हे ॥ पुलक ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे
 ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे, गत निग्रंथकी न्यारी हे ॥
 कनक कामनीके नही जोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ
 कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर के-
 वल पावै, ज्ञानगरथ गुण जारी हे ॥ न० ३ ॥ शुध्व श्रद्धासें सुम-
 ती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै,
 उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ कहुं२ में ऐसे सदगुरु, धिवर कटप जिन धारी हे ॥
 सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, जिविजनके उपगारी हे ॥ कहुं२
 में० १ ॥ न्यार निक्षेपे सप्त जंग नय, देश काल आचारी हे ॥
 विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ कहुं२ में० २ ॥
 सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु
 पाखरु खंरुते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ कहुं२ में० ३ ॥ संवेगी
 अरु संवेगपही, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद
 साथै, कहे पाठक रुद्धसारी हे ॥ कहुं२ में० ४ ॥ इति पदं ॥

सत्त्ववन्ती जावसें त्यांगी, जा० ॥ आरें अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी
जागी ॥ यूं रौती राजुल नार नेण जर रे, ने० ॥ में० १ ॥ में अरज
करुं करजोरु, करो मन परसन, करो० ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार,
देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन,
ल० ॥ मेरे आवै नयणमें नीर लग्यो नित वरसन ॥ मेरे नेम मिल-
नकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ में० २ ॥ में नहि कीनी त
कसीर, चले क्यूं रूठै, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस
चूटे ॥ में रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूटे, जो० ॥ में चलूं
पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें वर
रे, ज० ॥ में० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, सुगतमें मेली, मु० ॥
पीठै नेम गेधे निरवाण, करम सब ठेली ॥ में नित ऊठे परजात,
नसुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहि उर जगतमें बेली ॥ यूं
अरज करे जिनदास सुखो जिनवर रे, सु० ॥ में० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहि पाया, दूजेकुं क्या
समझावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, होयो हाथमें नहि आवै ॥
दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रिका
परवसमें पनियो, ग्यानकला कहो कैसें जगें ॥ तृणाने जग लूट
लियो हे, कपट करी परधनकुं ठगै ॥ खायर लोही मांस बधायो,
प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करै चूंअणी, चरचासैं
चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकुं नही देखै,
दूजाका अवगुण जाखै ॥ हिंसाहीमे हूओ हजूरी, दया दूर दिलसैं
नाखै ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकूं चाखै ॥
तीनूही प्रणमें राग धरामें, सरणो जिनवर किम राखे ॥ ठग फा-
सीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकूं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥
२ ॥ अवगुणकी मेरी खान आत्मा, अजान होय सो मोहि पूजै ॥

नही गाममें रुख अंबको, एरुं अंब सरिखो सूजै ॥ पारख नही
 हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुजै, गामर देख कहै मुज
 घरमें, कामधेनु इतनी दूजै ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा, अव
 गुण किम गाया जावै ॥ वं ० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें
 भातो, लोभ मांहे छपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी,
 पीर पारकी नहिं सहतो ॥ जगति नही गुरु देव घरमकी, कठन
 वचन मुखसे कहतो, अंतर आंठ न खुलै हियाकी, पूठ परमपदकूं
 देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥
 वं० ही० आप० ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निग्रंथकूं, वे जिन
 मुझधारी हे ॥ पुलक ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे
 ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवै, गत निग्रंथकी न्यारी हे ॥
 कनक कामनीके नही जोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ
 कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर के-
 वल पावै, ज्ञानगरथ गुण जारी हे ॥ न० ३ ॥ शुद्ध अज्ञसें सुम-
 ती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै,
 उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ करूं२ में ऐसे सदगुरु, धिवर कल्प जिन धारी हे ॥
 सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, जिविजनके उपगारी हे ॥ करूं२
 में० १ ॥ ब्यार निक्षेपे सप्त जंग नय, देश काल आचारी हे ॥
 विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २ ॥
 सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु
 पाखंड खंभते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी
 अरु संदेगपही, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद
 साथै, कहे पाठक रुद्धसारी हे ॥ करूं२ में० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ कुगुरूकी लावणी ॥ तजुं१ में उन कुगुरूकुं, कनक का-
मनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी बात न जाणे, अष्ट करमसें ज्ञारी
हे ॥ तजुं० १ ॥ करी कपाल वज्रूत लपेटी, शिर पर जटा वधा-
री हे ॥ कान फामकर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजुं०
२ ॥ जोग लेइ जग जीव विणसै, वे मद मांस आहारी हे ॥
कूना पंथ जगतकुं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजुं० ३ ॥
कहूं उगुण कुगुरूकां कब लग, साध नही संसारी हे ॥ आप मुखै
उरनकुं सुबावै, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजुं० ४ ॥ समकित
श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकुं प्यारीरे, जिनवरकुं जिनदास बीन-
वै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजुं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास जूठो रे जूठो, येने
लेइ लाकनी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं जरतो, ग्यान
दियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही धरतां, जैसो लकमको ठुंगो
॥ यो० १ ॥ जणवा गुणवाका गुण नहिं आया, कोरोही पक-
रयो पूठो ॥ गपोना सुणकर लोक पूजता, ए अलग मालको ठुंगो
॥ यो० २ ॥ पंक्ति गुरूकी सोबत, पाई, चेत्यो ना दीयाको फूटो,
साचा नरको संग न करतो, कूम कपट नहीं ठूटो ॥ यो० ३ ॥
जूठोही बोले जूठोही चालै, कपट करे एक मूठो ॥ साचो एह अ-
सार देखके, जिनदास सबसुं रूठो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह म-
स्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिव, आन घटे
तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो क-
रले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंजल रवी चंडमा,
सज्जी चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां
जलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी माया, उस

बूंद जलकी ॥ विणस जावता वार न लागै, डुनिया जाय
 खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी है मंगल-
 की ॥ हंसा ठाम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥
 मनमावत तन चंचलहस्ती, मस्ती है बलकी ॥ सदगुरु अंकुश
 दीया आनके, वार्ता जई बलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बं-
 धव जई, सब जन मुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए
 तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ ऊठ कपट कर माया जोमी, कर वार्ता
 बलकी ॥ बोजकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय हलकी ॥ ख०
 ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष ऊ
 पजै नही भिनकूं, वीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन ज्ञांत तिरणा ॥
 हम डुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति
 को० इ० १ ॥ घोराघोर तरकके जीतर, नानाडुख जरना ॥ मा-
 रन तामन बेदन जेदन, नर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक
 तिरयंच जोनि पायकै, गलै फास परना ॥ कृपा तृषा अरु शीत
 उष्णता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर,
 देखै जूरना ॥ जब माला मुरजावण जागी, सोच किये मरणा ॥
 दीनप० ४ ॥ मनुष्या जन्म पायके जक्यो, कहूं नांही धिरना ॥
 साहिब तुम सरणागत राखो, जन्म मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून
 प्ररुप्पा है दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप
 ज्ञावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्यो
 मुगति मजार ॥ २ ॥ चवदै सहस साधु दुआ, आर्या वत्तीस द-
 जार, लाखा श्रावक श्राविका, पाया जवजल पार ॥ ३ ॥ (चाल-हीर

रंजेके ख्यालकी) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीयै ॥ जिनसासन ना-
 थक, मुगती जाणेकी मिगरी दीलियै ॥ जिन० ॥ खुद चेतन मुद्-
 ई बनादे, आठुं करम मुदाला ॥ दावा रसता मुगति मारगका,
 धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया, त-
 लषाणा कमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून वणाकर, अरजी
 आन गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ में जाता था मुक्तिमारगमें, करमोने
 आघेरा ॥ धोखा देकर राह चुलाया, लूट लिया सब मेरा जी ॥ जि०
 ३ ॥ बहोत खराब किया करमोने, चौरासीके मांही ॥ दुस्क अ-
 नंता पाया मेने, अंत पार कठु नांही जी ॥ जि० ४ ॥ सच्चे मिले
 वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कोना, तब
 में अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुति ए, आ-
 ठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर वना चौधरी, उसकूं पूठ मंगावो
 जी ॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी ॥
 हाजर आवो जुआव लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥
 जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आवे, मोह मुगत्यार
 बुलाये ॥ ब्यार कषायरु आठे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये
 जी ॥ जि० ८ ॥ (ढेर मुदायलेकी) ॥ जिनशासन ना-
 थक, फूग दावा दे चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही बहकाया
 इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, ऐसा फरेव
 मचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयजोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा
 न जाणा ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी ॥
 जि० १० ॥ हाजर खमे गवाह हमारे, पूठियै हाल जु सारा ॥
 बिना लियां करजा चेतनसें, कैसें करे किनारा जी ॥ जि० ११ ॥
 (ढेर मुद्दीकी) ॥ चेतन कहै सतावी मांही, सुण शास-
 न सिरदार ॥ इमानदार है गवाह मारे, जाणे सब संसार जी ॥

जि० मे० १३ ॥ में चेतन अनाथ प्रज्ञूजी, करम फरेबी ज़ारी ॥
 जीव अनंते राह चलतकुं, लूट चोरासीमें मारी जी ॥ जि० मे०
 १३ ॥ वने२ पंक्ति इन लूटे, ऐसा दम बतलाया ॥ घरम कहां
 नर पाप कराया, ऐसा करज चढ़ाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥ अ-
 सल एन सरकारी सूत्रमें, मन मत अर्थ धसाया ॥ धर्म एनमें
 हिंसा कहकर, जलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ जेद
 अर्थसें वेद पढ़ाया, हिंसक यज्ञ बताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग दि-
 खाकर, ऐसा मुजे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे धर्म
 बताया, तपस्या सेती निगाया, इंडिय सुखमें मगन करीनै, जूठा
 जाल फेलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ ऐसा करो इनसाफ प्रज्ञूजी,
 अपील होण न पावे ॥ इकरसी चेतनकी होवे, जन्म मरण मिट
 जावै जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दोनो-
 कों समझाया ॥ चेतनकी निगरी कर दीनी, करमूका करज बता-
 या जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मोंका, चेतन
 सेती दिलाया, जि० ॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन निगरी
 पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् जगणीस अठाई जी,
 जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर बैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम च-
 लाए है ॥ शील हे सिरदार और दान हे दरोगा जाके, दयारूपी
 वारण सत्त श्रावण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको ल-
 ग्यो हे मोहोसल ताकी, माल जासनीमें श्रीजिनवरजी लिखाए
 है ॥ रोसकी रसूम नर कमीसन लगे कर्मनकुं, मोहकों म्याद इ-
 सत्यार लटकाये है ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जीवकी जुवानबं-
 धी, तबके कुछ स्वाल जवाब सतगुरुने बताए हैं ॥ ओम्कार सा-

श्री पायो पकम्यो अरिहंतजीको, अनुजव पद पायवेकी निगरी
कराय लाये है ॥ अबतो दरकास मेनें करी हे तुमारे पास, साइब
जिनराज अरज मेरी सुण लीजीयै ॥ अष्ट करम आतुं जाम करत
दे कार साजी, साहिब बुलाय इसें पिसेमान कीजीयै ॥ २ ॥
मेंतो हूं गरीब मेरी करेगा उकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मि-
सल आज कीजीयै ॥ दारुं तो हाजर इज्जरीमें रह्या करुं, जीतूं
तो लगाय जुगल चरणनेमें लीजीयै ॥ अब तो फरियाद नाथ
करी हे तुमारे पास, मेरी दाद दीजीयै तो रावरी बमाई हे ॥ मु-
नसबकी बात और मामलत अडालतकी, अब तो अफील मान अ-
रजी लगाई हे ॥ जूठमूठकार साजी करत हे पांच तीन, साचो
मत जैन जाकी धैन अधिकाइहे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों जू-
ठावत हे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई है ॥ ठोमकार सा-
जी पायो पकम्यो अरिहंतजीको, अनुजव पद पायवेकी निगरी
कराय लाए है ॥ ४ ॥ इति निगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी ज़ारी, देखनकूं आवै नर नारी ॥ अनं-
ता घोमा नर हाथी, मिनखकी गिणती नही आती ॥ उंठ पर
घजा जो फरराती, धमकसें घरती अरराती (डहा-साखी) समुझि-
जयजीका लामला, नेम उनोंका नाम ॥ राजुलदेकूं आवा परणवा,
उग्रसेन घर ठाम ॥ प्रसन जई नगरी जव सारी ॥ नेमकी० १ ॥
कसुंबल बागा अति ज़ारी, काने कुंमल ठवि है न्यारी ॥ किलंगी
तुररासुखकारी, माल गल मोतियनकी मारी ॥ (डहा-साखी) काने
कुंमल जगमगे, शीश मुगट जलकार ॥ कोमि चानुकी करुं ठप-
मा, शोजा अधिक अपार ॥ बाज रह्या बाजा टंकसारी ॥ नेम०
२ ॥ बूट रही उनकी बरसाई, आहमें आये बने ज़ाई ॥ ऊरोखे

राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (डहा-साखी) जयसेनजी देखके, मनमें करे विचार ॥ बढ़ोत जीव करि एकठा, वामो जन्म रघो अपार ॥ करी सब जोजनकी त्त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी तोरणे पर आवे, पशुजीव सबही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुरमाये, पशुजीव काहेकुं लाये ॥ (डहा-साखी) यांको जोजक होवसी, जान वासते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, घरहर कांपे देह ॥ जावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ४ ॥ पीठेसें राजुलदे आई, हाथ जब पकम्यो ढिन मांही ॥ कहां तूं जावै मेरी जाई, उर वर देखूं मुकताई ॥ (डहा-साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥ और जुवनमें वर नही, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम० ५ ॥ सहेब्बयां सबही समजावै, हियै राजुलके नहि आवै ॥ जगत सब जूठो दसतावै, मेरे मन नेमकुमार जावै ॥ (डहा-साखी) तोम्या कांकण दोरमा, तोम्या नवसर हार ॥ काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥ सहेब्बयां सबही विलखाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्या सब शोले सिणगारा, आज्ञापण रत्न-जमित सांरां ॥ लगे मोहे सबही सुख खारा, ठोरुकर चाली निरधारा ॥ (डहा-साखी) मातपिता परवारकुं, तजतां न लागी वार ॥ वियोग करके चली आपसुं, जाय चढि गिरनार ॥ जूरति ठोरि माप्यारी ॥ नेम० ७ ॥ दया दिल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो ढिन मांही ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन बुरुवाई ॥ (डहा-साखी) नेम राजुल गिरनारपें, जिनो संजमदान ॥ नवलराम यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

आई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह डख जारि

॥ ग० ॥ चोमासा लग्या रस जिना, अलि अषाढ रंग
 महिना ॥ थ्यारुं तरफसें वादल पिना, बिजलिने चमकणा
 किना ॥ दिल होत धमकता सिना, में अबला सखी
 पति हीना ॥ (उमाना) सरररर चलत समीर, धरररर
 करत सरीर ॥ मरररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदवीर,
 बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ श्रावणमें
 श्याम, धनघोर, जरजोर बोलते मोर ॥ दांडुर मिल करते दोर,
 पित्र पपश्या सोर ॥ ऊरु लग्यो वूंद ऊमऊर, बिच चमके दा
 मनी कोर ॥ (उमावनी) खरुमरुमरु रवधनमाला, तमरुमरुमरु
 जल परनाला, अरुमरुमरु नाला खाला, में डखी हुई बेहाल, हीथेमें
 साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ जाद्रवमें पवन प्राचीना, वाद
 लमें धनुष, रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर जीणा, ज्युं बाजै मनोहर
 बीणा ॥ अब ऐसे कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझे डख दीना ॥
 (उमाना) थुं विलपत मुख मुरझाई, सखियन मिल दौम जगाई,
 थुं विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोरुके प्री
 त, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नही धीर, याडुचंद
 जये वे पीर ॥ ऊठ चली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर ॥ प्रीतमसें
 लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ (उमाना) शिव राजुल
 नेम सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, निविजन मिल शीश नमाए ॥
 मुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे वंद, जाऊं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज दे, प्रितम दोनुं प्यारीका ॥ जगमा
 दिल धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोनुं नारीका ॥ वि० ॥
 कहंति सुमता सुणरी शोकन मोह लिया प्रितम प्यारा, अविरत उ-
 र कयाथ इस्कमें झूल गया सुधनुष सारा ॥ तूं बैरण दे जन्म३की

तेरा संग लेंग खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होती :
 न्यारा ॥ कहूँ खराबी कब लग तेरी तेरा चरत उंदगारीका ॥
 जगन्ना दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग
 अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क जेमर है, इंद्री पांच सवादीका
 ॥ कर सिणगार कसाय सोलेके राग रंग उनमादीका, मेंहुं मोह-
 रायकी ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नही आवेगा
 वालम वो है फूल हजारीका ॥ ज० २ ॥ सुण रे वैरन वात ह-
 मारी तेरे संग दुख पावेगा, तेरा महल पाताललोकमें जहां वो
 वास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकूं लगेगा फिर पीठै पठतावेगा,
 आखिर बेह देवेगी वैरण कैसे प्रीत निजावेगा ॥ में समझाउंगी
 प्रीतम मेरा जो माने दिलदारीका ॥ ज० ३ ॥ कुमता बोली वात
 सुमतसें तेरे संग क्या होणा दे, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख
 दुख दोनं खोणा दे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही
 सोणा दे, नही ऊजावा नही अंधेरा शिखा सहज विगोना है ॥
 ऐसा मेरा जोग बोरके सहे न दुख अणगारीका ॥ ज० ४ ॥
 कहती सुमता सुण भैरे प्रीतम इसकी संगत नही करणा, ठुंका
 इक सोच करो दिल जीतर मेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद
 इस्की बात कठिन है समझके बूझके नहि पचना, पहली सुखसें
 फिर दुख उपजै वो सुखसें चातुर मरणा ॥ रतन तीनका तूं है
 जोगी मुगति महल सिणगारीका ॥ ज० ५ ॥ ऐसे बोल सुणे
 सुमताके चिदानंद उठके चला, नेणोमें आंसु जर रोती प्रीतमका
 पकन्या पला ॥ मत ना बेह दिखावो साजन सौकणकी सुणके
 सला, में अवलारें दगा करोगे कैसें दोय तुमरा जला ॥ मेंहुं
 दासी जनमरकी मानो वचन करारीका ॥ ज० ६ ॥ तजके संग
 कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया है, संजमते सिणगार वणाकर

शील सुगंध लगाया दे ॥ प्रीत रीतसे सदा मगन हुय सुगतिम-
 दल जब पाया दे, सीख सुरंगी मानो जविजन अपणां दिल सम-
 जाया दे ॥ कहे रामरुखितार प्यारसें तजो ख्याल संसारीका ॥
 ऊ० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रभूकी लावणी ॥ सज शोले
 सिणगार दुई दुसीयार सहेब्ब्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे० ॥
 कर केसरिया वेस ठिटक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो
 जेसे केसर क्यारी रे ॥ गल मोतियनको हार, वणी तो दिलदार
 हंस जेसी चाली, मधुर मुख वैण उच्चारी रे ॥ (उमावणी) नेण-
 नमे कजरा हृद नीका, सिर सोहै रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा
 हुसन परीका, लगी पियासें लगन, मगन दिल सघन घटा जेसें
 कारी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासें अरज गरज मेरी सुण
 वालम दिल वाते, गुने विन क्युं ठिटकाते रे ॥ में चरणनकी
 दाश रहो मेरे पाश जोवन मदमाते, जोरु कर शीश नमाते रे ॥
 (उमावणी) आठ जवनकी प्रीत हमारी, आप पिया में प्रीतम
 प्यारी ॥ साजन प्रीत निज्जा इकतारी, तेरे विना नहीं चैन, नींद
 नहीं रैन, सज्जी तो लगे खारी ॥ च० १ ॥ सजके खुब वरात साथ
 लियै राम कृष्णसे जाई, पहली तो क्यों लगन लगाई रे ॥ अब
 क्या देखी खोट लगा दिल चोट चला मुरजाई, कहो मुऊकूं सम-
 जाई रे ॥ (उमावणी) तुमसे प्रीतम नहीं कोइ स्याणा, दिलमें
 अरज हमरी लाणा, सुखसे रंगजर चैन उमाणा ॥ नेणा वरसे
 मेह लग्या तुमसे नेह, विरहकी मारी ॥ च० ३ ॥ नेम प्रभु दे
 ज्ञान एक धर ध्यान सदा निज जाणी, प्रीतका अंत न आवे रे ॥
 विजली जेसी चमक दमक जेसें उस वृंदका पाणी, अंत मोती
 खिर जावे रे ॥ (उमावणी) ज्योतिरूपका अज ले सरणा, नित
 प्रेम उसीसे कणा, उर किसीके फंद नही पमणा, मेरा वचन ले

मान, ज्यान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोंका संग
 रहे नित रंग समझले स्थायी, जगत थोमी जिंदगानी रे ॥ चली
 जाय सब खलक पलकका नहीं ज़रोसा जाणी, करो सुकृतकी
 निसाणारे ॥ (उमावणी) इतना कह्या जब दिल समझाया, अविचल
 राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास वसाया, कहै राम रुद्धसार,
 करो तो ऐसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंदावदनी मुखसे केती गिरनारीकूं जावोगे, रा-
 जुल ऊज्जी अरज करत हे प्रीतम कब धर आवोगे ॥ डुब ज़र ग-
 ती मनमें चिंता नेणामें आसुं ऊरते, हाथ जोरुके राजुल ऊज्जी
 वार वार विनती करते ॥ ज्यान वणाई व्याहन आए घरमें
 आनंद वरते, किस विध गंरु चलै गिरनारी मेरी दया नहीं दिल
 धरते ॥ में चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नहीं सरते,
 ज्युं सागरमें जल विन मछली प्राण धनी पलमें हरते ॥
 (उमावणी) हे तूं महिर निजर कर आव फेर रखला रे, तूं चं-
 दवदन दीदार मुजें दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी धुंसी खोल चूक
 बतला रे, हे तूं मोहनगारा प्यारे हे जी मुऊकूं साथ निजावोगे
 ॥ रा० १ ॥ डुखसुं ज़री वातां मत वोखो राजुल मन धीरज धा-
 रो, एकर थांसु मिलणे कारण मुगतीमहलमें मन मारो ॥ ज़र नार
 नहीं दाय हमारे शिवनारीसुं मन प्यारो, पांच सखी ले साथ सि-
 धावो मुगतिमहलकूं शिणगारो ॥ कवल वचन थांसुमें कीनो रा-
 खो मनमें पतियारो, मुगतिमहलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं
 विसारो ॥ (उमावणी) हे तूं चंपकली सी नार जोवन मतवाली,
 हे तूं मिरगानेणी मुख चंद मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शीख सखूणी
 उग्रशेनकी लाली, हे तूं लागे सबको प्यारी हे जी मुऊकूं कदि न
 जुलावोगे ॥ रा० २ ॥ कपटी साजन हसकर बोले मनकी गुंदी

नहि खोलै, या दुनिया मुतलबकी गरजी बिन मुतलब मुख नहि
 बोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निजानी मुसकल होलै,
 धन मानव जो प्रीत निजानै तरर अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनती
 करै राजुल वचन रसीला अणमोलै, जलदी आयजो नेमकुमरजी
 मुगतिमहलमें रमजोलै ॥ (उमावणी) देवा चंदरूपर अपूरव
 ख्याल वणावै, देवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ देवा जांज
 साल रुफ दोल मृदंग बजावै, देवा आनंद हर्ष बधावै हे जी मन
 वंदितफल पाजुंगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ
 देखा रे, हो सांवलिया साद्वि प्यारा लागे रे० ॥ अथशेन घर
 जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद
 वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हारे० मु० कोइ० १ ॥ बालपणे
 प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हरयो डखदाई
 रे, मंत्र वियो हितकारी नाग सदाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर
 मुगट श्रवण कुंमल हृद ज्ञारी रे, कर श्रीफल जुजबंघ जलक विव
 न्यारी रे, गल मोतियनको हार वणयो गुलजारी रे ॥ हारे गु०
 को० ३ ॥ प्रतित उधारण तारण विरुद्ध वसाई रे, पारसर नाम
 जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम बधाई रे ॥ हारे प्रे० को० ४ ॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ़ जाणा धूलेवा ॥
 गढ़पति मुनकां वसा अरुंगा, मत ठेको तुम उन देवा ॥ सु० १ ॥
 सकतावत चंदावत बोले, हमही नोकर उनहीका ॥ हींडपति वाकूं
 दाय जोमे, तीन भुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु
 पाताल सबेही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन
 आवै, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसें
 आवै, निर्धनियाकुं धन देवै ॥ बांज खिलावै सुंदर लम्का, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग
 निवारे ज्वरका ॥ नूप नुजंग महरि करि नदियां, चोरन बंधन
 अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौ धौ धौ धौ धौसा वाजै, दशो दिशामें
 हे मंका ॥ जात तातिया नहीं जलाइ मत . वतलाओ गढ़ चंका ॥
 ॥ सु० ६ ॥ राणाजीके ऊमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥
 आंरा कीया गेहीज पावो, म्हे नहिं आंवां आं साथां ॥ सु० ७ ॥
 मूठ मरोरु चढ़ा अजिमाने, जहर जरा हैं निजरुमें ॥ रूपनदेव
 हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरुमें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत
 जणे मूखचंद, वने सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घरर घोमां,
 खजा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिन-
 राज ॥ धुलेवनाथ जाचो धणी, वरुणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ (चाल
 लावणी) कास्यपगोत इन्द्रवाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥
 नाजि नरेसर वंश बजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ १ ॥
 सोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपे न्हवरायो ॥ इसो
 रूपन निधि प्रगट कळपतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ २ ॥
 खरुगदेशमें नगर धुलेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा
 अपरंपारा, कविजन कीरत करता है ॥ ३ ॥ आदौ मुरत काल
 असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद
 युग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी,
 वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण
 गुणरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लवमन, ए सुरत पूजन
 लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उज्जैनी ठहराए
 ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, वा-

पकरम अरु आपकरमकी, जई लमाई मरमनकी ॥ ७ ॥ आपक-
 रमके ऊपर नृपनें कुष्टी वरपे परणाई ॥ मयणा चिंते कांई नवाई,
 करम लिखी सो बन आई ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन,
 आई श्रीजिनमंदिरपे ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै
 मनकंदरपे ॥ ९ ॥ (मोतीदाम वंद) तूंहि अरिहंत तूंहि
 जगवंत, तूंहि जिनराज तूंहि जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि
 प्रतिपाल, तूंहि मनमोहन तूंहि दयाल ॥ १ ॥ तूंहि जगजंजन
 जाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन जूप, तूंहि अविनासी
 तूंहि वीतराग, तूंहि माहाराज तूंहि वरजाग ॥ २ ॥ तूंहि गुण-
 धाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरु नाम ॥ तूंहि अघ-
 नाश तूंहि अविनाश, तूंहि मतिवंत तूंहि मतिवात ॥ ३ ॥ तूंहि
 गुण केवलरूप अनंत, तूंहि जगतारन तारण संत ॥ तूंहि जग ध्येय
 तूंहि जग ध्यान, तूंहि चिदरूप तूंहि जगवान ॥ ४ ॥ तूंहि मम
 तात तूंहि मम मात, तूंहि मम आत तूंहि मम बात ॥ तूंहि
 सरणागत राखणहार, तूंहि डुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ (चाल
 लावणी) ॥ करुं अरज एक तोपे जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते
 ॥ पूरव करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥
 पण तुज शासन जगत हेलना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म
 अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो डुख मोसें
 सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग
 निवारण, गुण कीजै जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यरु प्रसन्न हुय फल
 बीजेरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब उच्चास जई
 मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु
 फरसें, कुष्टरोग सब नास्तत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवन,
 नृप श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी नूतल,

प्रगट प्रवल हे जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देशमें
 प्रजु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागमदेश वमोद नगरमें, जग पर प्रजु क-
 रुणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल जूतल
 रुद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान जयो तब, पातस्याह ल-
 मवा आयो ॥ बूत जूत पत्थरकी मूरत, जन्मुद्धासें उखरायो ॥
 ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, आको यों वाचा बोले ॥ देव
 हिंदको वमो जागतो, यूं बोलत फिर मोले ॥ ९ ॥ सुनो बात
 काजी मुद्धां तुम, एक बातसें त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल क-
 हाई, गो वधसें ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निज
 रे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब जये महाबल,
 शस्त्र जमोजम विकराला ॥ ११ ॥ (दूहा) महा युद्ध करण लगे,
 घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गामली, आये धुलेव सुरंग ॥ १२ ॥
 (चाल लावणी ॥) गांव धूलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हैं प्रजु
 धरती ॥ गाय एक कोनी वनियनकी, आइ वाहां चरती २ ॥ खवे
 तिहां पयधारा शिर पर, सांज समें फिर नही दूजै ॥ रीस करी
 तब गोपालन पर, गौपाल थरहर धूजै ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो,
 लह्यो जेद कह्यो वनियनपें ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित
 जयो हे तन मनपें ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रुपजनाथकी
 मूरत हे ॥ बहिर निकासो करो लापसी, जीतर मूरत पूरत हे ॥ ४
 ॥ नव दिनमें सब घाव मितासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियो
 सेठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु ठ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी
 केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चलै ॥ केइ लोककूं डु-
 कर बाधा, कब प्रजुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस-
 तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओ २ महाराजकी मूरत,
 संघ सवे लीनो आओ ॥ ७ ॥ जवरदस्तसें दिवस सातमें, लापसी

बाहिर तब कीने, अंसर नर वरण रहाए, संध लोक दर्शन दीने ॥
 ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें डूब्य दिखायो, संघे मिल केवल कीनो ॥
 मध्य विराजै शेषन तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ९ ॥
 (दुहा) संवत अठारे तेसठे, जान सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो
 डुष्टने, जाखूं वरण बनाय ॥ १ ॥ (मोतीदाम ठंड ॥) सदा-
 शिव राय चिते मन एह, लूटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ जिह्वां
 पति नाथ धुलेव कहाय, लखो लग डूब्य जंमर सुणाय ॥ १ ॥
 जावां अब लूटण गाम धुलेव, अहुं सब माल जई ततखेव ॥ आयो
 निज फोज लई दल गाज, तोपां दोय साथ लियां बहु साज ॥ २ ॥
 कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, उंठा नर साथ लियां कोकवाण ॥
 तवां बहु लोक कहे महाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥
 ॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे महीं लाज ति
 हारिय काय ॥ तवां फिर बोले शदाशिव चूप, यहां सब माल
 अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट कहर, कीयो नज
 राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तवे नजराण, जयो मन
 चकितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चित जंमारी बुलाय, मीठे
 वच बोले सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मजार, कियो
 तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार, जंमारी सबे
 इ पुकार ॥ करो अब बाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज
 गरीब निवाज ॥ चढो अब बाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ (दुहा)
 जण समें कोउ सेठको, बाहण तारण काज ॥ गये अधिष्ठायक
 नाथजी, जेरुं गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी
 सहेर धुलेव मजार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार
 ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संजाल ॥ दो घोरे
 दोनुं चढे, जेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिह्वां कोप आपे कियो, द-

क्ष दिशि फौज हजार ॥ मार २ चौ तरफते, जई लमाई त्यार ॥
 ४ ॥ (जुजंग प्रयात बंद) कूंकू कुकू कुकू वहे कोकवाण, सण-
 ण सणण तीर तरकस्त वाण ॥ धुवाके धमाके वहे नाल गौला,
 जिंसा कर्कसा जम्मरा नयनमोला ॥ १ ॥ किते अंगपे शस्त्रा
 धाव लागे, किते मारते कंपते दूर जागे ॥ किते दंतपे तिरण लेवे
 वराका, किते थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुद्धाई-
 लछ्मा पुकारे, किते दीन होके खुदापे संजारे ॥ किते नाथपे केत-
 रा खून माणै, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणै ॥ ३ ॥ सदाशि
 वने धाव लागो अटारो, पुनी जाड जसवंत दोनुं संहारो ॥ वसो
 कोप जाणी सबे फौज जाजी, दुई केशरीनाथकी जीत वाजी ॥ ४ ॥
 सदाशिवने आखनी अटक लोनो, सदापांचसें रकमरो खून दीनो ॥
 इसो नाथ धुलेवरो मर्दगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥ ५ ॥
 (दूहा) या विध कलियुग जग जणा, तास्या केई जिनराज ॥
 दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ (मोतीदाम
 बंद) तूंही नवनिद्ध तूंही अमसिद्ध, तूंही मनवंडित वंडित रुद्ध ॥
 तूंही तिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥
 तूंही कामकुंज तूंही कामधेन, तूंही सुरवृक्ष तूंही मम शेन ॥
 तूंही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूंही विसराम तूंही वस सेव
 ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इंडित दायक
 नूर ॥ तूंही मम भूप तूंही पतसाह, तूंही मम रुद्ध भंमार अगाह
 ॥ ४ ॥ तूंही मम मंत्र तूंही मम यंत्र, तूंही मम सत्य तूंही मम
 तंत्र ॥ तूंही गच्छनायक तूंही श्रीपूज्य, तूंही मम पूज्यतूंही जग-
 पूज्य ॥ ५ ॥ (लावणी चाल) नाथ धुलेवा कीरत सुणके, देश
 नृप आवत हे, केशरमें गरकाव रहते, केशरनाथ कहावत हे
 ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिशावर, फिरे छुदाई नाथनकी ॥ दिंड

मूसल वर राणा होजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट
 थलवट चाढ़घाटमें, रण रावल डुख दूर हूरै, एक चित्त ध्याने जे
 नित समरे, अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप
 धपमप धपमप, ताल प्रखावत राजतहे ॥ गरुगरु दौ गरुगरु दौ गरु-
 गरु, धौ धौ नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊदेपुर, ज़ीम-
 सिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें
 ॥ ५ ॥ संवत अठार पञ्चोत्तर वर्षै, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥
 मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन दो जलसे ॥ ६ ॥ (क-
 लश-वप्पय वंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल
 हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, जरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म
 नीती हरन, सब करम नथ घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि हरन, सु-
 कनु वरन शुद्ध चरन, इंड चंड पदजुगल सेवन, जगत विरुद्ध तार-
 नतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, ऋषजनाथ असरनशरन
 ॥ १ ॥ ऋषजनाथ महाराज, सबे डुख दालिइ जंजन ॥ ऋषजनाथ
 महाराज, सबे जूप मनरंजन ॥ ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, समरघो
 बाहर धाये, ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय
 कविराज बहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं,
 सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म बनारशी हे जिनका, घ-
 ननं घननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान घरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥
 जब कमठासुर कोप कियो तव, स्यामघटा विजुरी चमका ॥ गिरु
 आ गाज जल मूसलधारा, धरु धरु काजन शंका ॥ आ० २ ॥
 अरर आशन कंपे सुरको, तव घरणीधर चित्त चमका ॥ फण
 विस्तार हजार किया तव, ऊमक जाय प्रभु तन टंका ॥ आ० ३ ॥

जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकश्र
धौं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी
कट नौवत बाजै, धौं धौंकट डुंडुंझि धौंका ॥ या विध गीत संगीत
बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तरर तंत
ताल सब, रुफ मौं मौं करते रुंका, जेरण फेरणके ऊनकारे,
ऊगमदी ऊलरके ऊंका ॥ आ० ६ ॥ सुरनर इंड सब जै जै करते,
जीवत सफल जया जिनका ॥ अमृत उंदय तिण वैर जयो
सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलमी ॥ आ० ॥
घमा एकसो आठ शेलमी, रस जरिया बै नीका ॥ उलटजाव
श्रेयांश वहिरावै, मान दिवीआठूकरे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुंजी
वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो,
गई जूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोका-
मना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा
त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेतूंजा सिद्धेक्षेत्र है, मोटो कहिये
धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥
संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोमी
नानु कहता, रुषजदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर
जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा
वांक, रजलियो रांक, अनंता जवमें ॥ अ० ॥ आव्यो हुं तारा
शरण, बली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार,
लग्या मुऊ केमे ॥ ल० ॥ बली पापी म्दारो नाथ, ठेक ठंठेमे

स्था नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकेंतितणां
दातार रे ॥ करजोनी कवियण एम जणे, मारो जवनो फेरो टाल
॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रूपभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी रूपज विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥
पो० ॥ प्रजु आलस अंग हुलसाई, पूबै मरुदेवा माई ॥ पो० १ ॥
प्रजु नंदा सुमंगला राणी, उन रुच२ सेज विठाणी ॥ पो० २ ॥ प्र
जु नवलसु नेह सनेहा, प्रजु मनवंठित फल देहा ॥ पो० ३ ॥
प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंठित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अ
जर अमर पद पावै, करजोनी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल ज्यार, आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजै० ॥
पहिले मंगल प्रजुजीकूं पूजूं, धसी केसर धनसार ॥ आ० १ ॥
बीजुं मंगल अगर उखेबुं, कंठै ठबुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ बीजे
मंगल आरती ऊतारूं, घंट वजानं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मं
गल प्रजुगुण गांनं, नाचू धै धैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कदै ना
थ निरंजन, चरण कमल जानं वार ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटो रे, जविजन सुखकारा ॥ सि० ॥
प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, जारुया विविध प्रकारा ॥ इण गिरि
साधु अनंता सीधा, एइनी हुं बलिहारा रे ॥ ज० सि० १ ॥ रु
पज्ज जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल
पंगला प्रजु जेट्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ ज० सि० २ ॥
चोमुख विंन मनोहर अदजुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलना
यक श्रीआदजिनेश्वर, पूजत डख सहु वारा रे ॥ ज० सि० ३ ॥

सात चक्केसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ उष्ट
निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥
४ ॥ खरतर गच्छ नायक सुख दायक, कीरत जग विसतास ॥ गु
ण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५
॥ संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन
मैंने हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज० सि० ६ ॥ धर्मशील प
दपंकज सेवक, कुशल निधान नदारा ॥ तास पशाये गिरवरना
गुण, पन्नणे मुनि कविसारा रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले नारी ॥ प्रथम
पद तीर्थपती राजै, दोष अष्टादशकूं त्याजै ॥ आठ प्रातीहारज
गजै, जगत प्रभु गुण बारै साजै ॥ (दोहा—साखी) अष्ट करम-
दल जीतके, सकल सिद्ध ते आय ॥ सिद्ध अनंता नजो बीजे पद,
एक समय शिव जाय ॥ प्रगट नयो निज स्वरूप नारी ॥ ज०
१ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंद्र सूरज जेशी ॥ नमारयो
राजा परदेशी, एक नव मांहे शिव लेशी ॥ (दोहा—साखी)
चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी नवझाय ॥ सब साहु पंचम पदे,
धन धनो मुनिराय ॥ वखाण्यो वीरजिणंद नारी ॥ ज० २ ॥ द्र
व्य षट्की श्रद्धा आवै, सम संवेगादिक पावै ॥ विना यह ग्यान
नही किरिया, जैनदरशनसें सब तिरिया ॥ (उहा—साखी) ज्ञा
न पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें,
निजपद साये काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जो
गकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर गोमी सब राणी ॥ यती दश ध
रम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ (उहा—साखी)
करम निकाचित कापवा, तप कुमार कर ध्याय ॥ हमी युत नव-

मा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ नजो तुम नवपद सुखकारी ॥
 ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र नजो नार्ई, अचामल तप विधिसें आई ॥
 पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, नाव श्रीपाल परे करजो ॥ (दूहा-
 साखी) संवत जगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र
 धवल पूनम दिने, सफल फली मुऊ आश ॥ बाल कहै नवपद
 ठवि प्यारी ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल इंसज्जाकी ॥

ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जे
 सा जगसें तारण, मिलणा नही ऐसान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें
 जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत,
 इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ट जगंदर राजरोग सब, जूत प्रेत
 बल नाश ॥ नवपद जैसा निरजय शरणा, फेर करो क्या आश
 ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहं, अर्ह पद अरिहंत ॥ सिद्ध सूरि
 जवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव
 पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर
 होंगे, कोश्य न पाया पार ॥ ५ ॥ इनको महिमा कहां लग वरण,
 मेंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुधान
 ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत उजमाल ॥
 सुरनर जूपति सेव करत दे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीवि-
 मलेश्वर यक्ष सदाई, वरचक्केसरि मात ॥ उठव विविध करै मन
 शुद्धसें, त्रिजुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन
 जिनंदसें, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जय
 श्रीरुद्धसार ॥ ए॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ (रथ चढ जडनंदन
 आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शाखी जिनमंदिरमें, जग नवपद
 महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तमित्कांति प्रज, मदन
 चंड ठवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र पुर तीन तलासें, व-

सुधा पीठ विराजत है, तीर्थनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि
 कर गोजत है रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदधन, चरण
 निरजरा साजत है ॥ परम करण मन वंछित दायक, अतुल सु-
 जश जग वाजत है रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश,
 जोति अरुज सब ज्ञाजत है ॥ ध्यान रंग मन संग एकसें, जग
 दानंद निवाजत है रे ॥ च० ४ ॥ शंजव जुवन पुरी बालूचर,
 अंतरंग अरि दाऊत है ॥ शंकर बृह्मदेव तुम ध्यावै, गोविंद चरणा
 माजत है रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति
 उपम काजत है ॥ मंत्र मणी तुम जमी नामकी, लखमी लोल
 पराजत है रे ॥ च० ६ ॥ दीजै कुशल निधान नक्तिनर, रुद्धसार
 सुख राजत है रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अं-
 गज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें
 प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि नक्तकूं तारो ॥ सां० १ ॥
 चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज बीदारो ॥ लगन तिहारें
 दरश शरसकी, कैसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥
 सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद वदनामृत, नवणकमल उजियारो ॥
 धन२ आज दिवशकी महिमा, जीवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग
 सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुवस थिर श्रीसंध, करत
 सदा जयकारो ॥ रामदाग विच इंद्रजुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो,
 बन्यो अति सुख दानारो ॥ सां० ४ ॥ उगणीसैं अमृतालीश शुभ
 दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवृद्धन बहु विधतें, चैत्य
 प्रतिष्ठा सारो, कुशल निधी कहै रुद्धसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ (हमकूं गंम चले ॥ इस चान्दमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रज्जुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत
 वाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर
 तन ठवि दमकत, चमकत दामनी ज्ञास रे ॥ आ० १ ॥ प्रज्जु
 आनन अमृतरश धारा, ऊनी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत
 वचन मन मेरो, प्राण प्रज्जूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कवाण
 इंधनुपनकी, हिलमिल जमर उजास रे ॥ अपठर गान करत
 सुर वनिता, कोयल वचन उल्लास रे ॥ आ० ३ ॥ शिर चित्त
 लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अविर सुवास रे ॥ तन मन प्रीत
 जरी पिचकारी, षेलूं प्रज्जूसें कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गु-
 लाव फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान भरो
 वतियनपें, रुद्धसार प्रज्जु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषज गया क्युं व-
 नमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरपणकी
 आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें प्रई उदासा, प्रज्जु रुषज गये वनवासा
 ॥ (दूहा-साखी) रुषज प्रज्जु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥
 ज़रतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी
 मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी फिरमिर
 मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ ज़रतादिक जी सौ पूत्र-
 नके रुसैं, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ (दूहा-साखी) नगर
 अयोध्या गुं जुरै, गये कहां महाराज ॥ दे जलंजा ज़रतकूं, मेरा
 पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी
 विनमें ॥ मे० २ ॥ ज्ञादू महीना जी तज धन दोलत माया, वो
 गया इकेली काया ॥ ज़रतादिक रे तुम मनमें दरखाया, राज ये
 विना कमाये पाया ॥ (दूहा-साखी) नित नव नाटक होत हे,

कर रहै जोगविलास ॥ सब माया या रूपज्ञकी, ठोर गया वन-
 वास ॥ हेजी जगतारण जी डुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३॥ आ
 सू महीने जी मूरतकी ठिब लागी, वो होयगया बैरागी ॥ धनके
 सब लोन्नी जी पूत्र जये नीरागी, कज्जी खबर न लो वरुजागी ॥
 (दूहा-साखी) जरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप
 ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रज्नु आप ॥ इंद पद सेवे जी
 नहीं हे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो रु-
 पज्ञ घर आवै, मोहे नेणा आण वतावै ॥ नही कागद जी मुजकूं
 पूत्र पठावै, मेरा जीव बहोत डुख पावै ॥ (दूहा-साखी) जरती
 निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उमकर मिलती रूपज्ञसें,
 जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे ॥
 मे० ५ ॥ भिगसर महीना जी जरत बाहुबल जाई, आपसमें करे
 लमाई ॥ जरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-
 कर आई ॥ (दूहा-साखी) बारा वरस लरते जये, इंद्र दिये सम
 जाय ॥ चक्रवर्ति वनता गये, जये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप
 कारण जी खमे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी
 पमे ठंरका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा
 जी रूपज्ञ जगत प्रतिपाला, में रहुं रूपज्ञकी माला ॥ (दूहा-साखी)
 कोइ परवतकी जूदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंर तापकी विपतमें, सहै
 बहोत डुख धंद ॥ जरत मेरे सुतका जी नहीं फिकर तेरे मनमें ॥
 मे० ७ ॥ माइका महीना जी किसें कहूं डुख मेरा, सब पूत्र विना
 अधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रूपज्ञका
 बेरा ॥ (दूहा-साखी) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥
 राज रमणकी संपदा, वो गया ठिनकमें ठोर ॥ एसा निरमोही जी
 पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

ज़रत), सूने मन घरमें फिरती ॥ ज़रत यूँ केता जी सोच फिकर
 फ्यूं करती, रहे निशदिन मुऊसैं लरती ॥ (दूहा-साखी) ज़रत विविध
 तर ज्ञांतसों, कहता वात वनाय ॥ वनपालक उद्यानके, दीवी वधाइ
 आय ॥ प्रभू पणधारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए ॥ चैतका
 महीना जी हय गय रथ सब त्वारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥
 ज़रत कर जोसे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥
 (दोहा-साखी) इंद्रध्वज आगे चले, जामंरुख हे लार ॥ चोसठ
 चमर सुरपति करै, डुंडुजी गगन मऊार ॥ एसो सुत तेरो जी
 विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा
 मन हरखै, जब रूपजप्रभू मुख निरखै ॥ नैणपट उवरुया जी वीत
 राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा-साखी) गज ऊार
 मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी दई, एसें रु-
 पज सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभू मगनमें ॥ मे०
 ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, में रूपज चरण
 छई छई, दरस भित तेरो जी मुऊकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम
 सदा मन जाई ॥ (दूहा-साखी) धरम शील आधारसैं, कुशल
 सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसैं, हरे उरित डख धंद ॥ हे
 जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका वारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूंवरि वोमयुरावाली एचाल) ॥ सावण
 महीने नेम पिआ मोहे व्याहनकूं आये, उग्रशेन घर वटत वधाई
 खव मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण जाई, तोरणसैं रथ फेर सि-
 धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी-मोह लियो
 गिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ जादू महीने गगन
 बीच पीया इंदर चढ आयो, वैरग बीज खीज रही मोपैं जोगन

गरणायो ॥ सखी मोकुं विरहा संतायो, मोर पपड़या बोले पापी,
 मदन सदन ठायो ॥ तीज विन प्रीतम यूँ जासी ॥ मोह लि० २॥
 आसू महीने आश पीयाकी मिलणेकी लागी, तेल चढ़ी मोकुं ठि-
 टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने
 तकशीर कंत मोहे, कैसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी—
 मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी,
 उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी ॥ पशुनकी दयापै
 चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग जीनी ॥ स्याम
 तोकुं मति ये क्या ज्ञासी—मोह लि० ४ ॥ भिगसर मोहन तीन
 लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत
 त्यारी ॥ पिया तुम चढ़गये गिरनारी, अनंत लोग जोगी सो काम-
 ण, लगी तुममें प्यारी ॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि० ५ ॥ पोश
 पीया जलंजा देती हिये नहीं धारो, नहीं ठोसूंगी संग नाथ अब चाहे
 सो कर मारो ॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक बेर घर अंगण आवो
 फेर तजूं लारो ॥ सखी सब मिलकर समजासी—मो० ६ ॥ माह
 महीने रुत सरदीकी ठंढ बढ़ोत बाजै, सेज लगे नागण सी सु-
 ङ्गकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण ज्ञाजै, नहीं वरुन
 कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह ठाजै ॥ पिया विन करुं में गति
 काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणै,
 में अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानै ॥ कौन संग में
 खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं वाला जोरी ॥
 कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई
 कोयल सोर करै, ऐसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद पमै ॥
 प्रीत जिन नव जवकी तोरी, राजुल तज सिलगार द्वार कूं मदन
 मान मोही ॥ नेम विन हो रही ऊदासी—मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख यूँ उलजै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज डुला-
री गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंड चंड शेक्ति
पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी—मो०
१० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं बाजै कंत बुरी, नही रैण सुख
चैन शखीरी चल रही प्रेमबुरी ॥ पाप कोइ पूरब उदै आया,
ठोरु चले घनस्याम आज में दरशण सुख पाया ॥ तजी में सब
घरकी फासी—मो० ११ ॥ माश असाढ़ सखी संग राजुल नेम
चरण जेव्या, धर करणी जव तिरणी होकर धंद सजी मेव्या ॥
प्रीत तुम अजर अमर राखी, रुद्धसार आधार तुमारो प्रेम शिवा
शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी—मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अजिन
तोत्तम जक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज
सुंदर सङ्गुणमंदिरं, विमल केवल बोध विकेश्वरं ॥ अति सुवर्ण
सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय
जक्तिर्नविनां जवेजवे, जवेदन्नीष्टार्थ निदानमजुतं ॥ सएव नंदा-
त्म समुज्ज्वो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्मा
जितमान् जवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥
सदेव देवो जवतात् सदैवमे, सदिए सिद्धये जिनराज शीतलः ॥
४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढस्थ तनुं जन्मा
सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्तिः स्फुर्चिमत् पुण्यकीर्तिः,
जयतु गत जवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित दुरित राशि

विश्व विश्वावदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्भो, जय
 तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली
 मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कृत पदाब्जेयस्य जृंगीव पद्मा ॥ अवि
 कृतमात कायोत्सर्ग मुशान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु
 वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि विघ्नत् सत्फलानां सहस्रं,
 बहुल विमल ज्ञास्वदूषणोज्ञासि गात्रः ॥ गुरुतर वर ज्ञन्या सक्त
 चित्ताङ्गनाजां, जवतु शिव समृद्धयै चाश्वसे निर्जिनेऽः ॥ ३ ॥
 कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक शंका
 प्रहर्ता ॥ विकशित मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु जुज्जग
 लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेन्द्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्या
 र्श्व तीर्थेशो, निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै,
 रघाधस्यानघा गुणः ॥ स्मर्थते येन सस्मार्यो, जवेत् प्राचीन वर्द्धि
 पां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यता
 मक्षयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन,
 येन कल्पद्रुमा अपि ॥ जवेदन्धर्चितो लोके, स श्रिये चामृताय च
 ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाज प्रदायकः ॥ कल्याण
 कारको ज्ञूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥
 यक्षेश पार्श्व शित पाद पार्श्व ॥ नुवामी पार्श्व जवजेद पार्श्व ॥ १ ॥
 स्मेरातसी सून सम प्रज्ञावा, सम प्रज्ञावा जवदीय मूर्तिः ॥ वि-
 ज्ञाति वामां प्रज्जव त्रिलोके, जव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥
 तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता जवेदेक

पदे पराया, निर्वेज वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष जूषयितं
 दान वारि, र्यन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गव्युत्तम दानशरो,
 प्रोच्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव,
 सुज्ञान सुज्ञानत्रिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णजूषः, कट्याण
 कट्याण कटं गज्जाजां ॥ ५ ॥ यैर्य्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोजिरामैः
 सुमनोजिरामै ॥ कर्मान्निधै रुज्जित जूषनास्ते, विसारि लोकेश
 विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य जगवन् प्रोदाम धामा
 न्वितं, पादाब्जं परज्जाग जृत् त्रिजुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं
 कर्म विपक्ष पक्ष दलने जव्या जवंतु क्षमाः, कट्याणाश्रय मुक्ति
 माप्नु मखिलंतीर्त्वा जवानोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी ठंडः ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे, जीराव-
 ट्या पत्तने लोड्वाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपा-
 र्थेशं नौमि शंखेश्वरस्यं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा
 देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे जूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥
 २ ॥ जित्वा ज्ञेयं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं
 चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्थ्व० ३ ॥ विश्वाधी
 शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कत्रत्रं ॥ अंजोजाक्षं
 सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्थ्व० ४ ॥ वर्षे रम्यं खंग दोर्नाग चंड, संख्ये
 मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा०
 ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन सोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, धनयना धननाद विज्जाजि-
 तं ॥ जजत जक्ति जरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं
 ॥ १ ॥ विविधवर्ण विज्जूपित विग्रहाः, विहित उर्द्धम दर्पक निग्रहाः ॥

वसु युगार्क मिताः सुरुताकराः, जिनवराः प्रज्जवंतु शिवंकरा ॥ २ ॥
 रुचरवर्ण निबद्ध मनिन्दितः, सुमनसा प्रकरै रज्जिवन्दितं ॥ निखिल
 साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल
 प्रव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिन-
 वरानन पद्म गतोन्मुदा, ज्वतु वाग्जिनलान्न शुज्जार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांजौनिधेः, सद्भा-
 धेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदतस्थुपः ॥ सद्भुत प्रतिविं तस्तु-
 सुतरां गोम्नीपुरोद्भासिनः, सोद्भासंप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैव नित्यं
 स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो ज्वयाव्रजंतोध्वनि,
 स्पृश्यंतेनहि छुष्टजंतुनिवहे र्वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्ज्वालद्वानलै
 र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सःश्रीपार्श्वविज्जुर्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्यो-
 नकेपांजवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणद्भुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भा-
 वितां, धृत्वानिर्मलज्ञावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लज्जयन्ते
 नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा
 संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीरुपजस्ततोजितजिनः, श्रीशंजवस्तीर्थकृत् ॥
 सुश्रीमानजिनंदनश्चसुमतिः, श्रीसद्मपद्मप्रजः ॥ पृथ्वीकुक्षिजवसुपा-
 र्श्वे, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रजः ॥ सर्वज्ञःसुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्री
 शीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रज्जुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः,
 शांतिःकुंभुररस्ततोजितरिपुर्भक्षिर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्द्धतो नमिनेमिशुद्ध
 मुनिपौविश्वत्रेयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान
 प्रज्जुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्रद्धपाश्र्वतुर्विंशति, निःशेषां-
 तमज्जव्यजंतुहृदयांजौजप्रवीणोद्यताः ॥ वंथन्तेसुरवृंदवद्यविशदक्षो

कव्रजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा, ज्ञास्वत्पादनखेदव-
प्रवचनांजोधौव्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-
साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्वर्यपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द-
र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-
र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्मःसूक्तिसुधाश्वैत्यमखिलं जैनालयंश्चालयं
प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ २ ॥ नाज्ञेयादिजिना-
धिपा स्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोन्नरतेश्वरप्रभृतयोयेच
क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशती,
त्रैलोक्येजयदा त्रिपटिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषजस्य
निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशे
लेहतां ॥ शेषाणामपिचोर्द्धयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणा
विनयःप्रसिद्धविज्जवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरज्ञावनाम
रगृहे मेरौकुलादौस्थिता, जंबुशाळमलिचैत्यशाखिपुतथावहाररूपा
दिपु ॥ इहवाकारगिरौचकुंभलनगेष्ठीपेचनंदीश्वरे, गौलेयेमनुजोत्तरे
जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगज्ञवितरोजयत्यर्हतांजन्मान्नि-
पेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचज्ञवो यःकेवलज्ञानज्ञाक् ॥ यःकै-
वल्यपुरप्रवेशमहिमा संज्ञावितः स्वर्गिज्ञिः, कल्याणानिचतानिपंच
सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ६ ॥ येषंचोपधिरुद्धयः श्रुततपोरुद्धिगतापंचये,
येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्वयेपि
बलिनोयेबुद्धीरुद्धीश्वरा, सप्तैतैसकलाश्वतेगणभृताकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ७ ॥
देव्याश्चाष्टजयादिकादिगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थकरमातृका-
श्रजनकायक्ताश्वयक्तीश्वराः द्वात्रिंशत्त्रिदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यका
श्चाष्टधा, दिक्पादादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्यं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकल्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्देपिमहोत्सवेपिस-
ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येऽगृण्वन्तिपठन्ति तैश्चमनुजैर्द्धर्मार्थिकामा-
न्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वन्तुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति
मङ्गलाष्टकं संपूर्णं ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबन्धुं नकर्म नकर्ता ॥
न ग्रंथं नसंगं नशृङ्गा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥
नबन्धो नमोक्तो नरागादि लोकं, नजोगं नजोगं नव्याधि नजोकं ॥
नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ
नघ्राणं नजिह्वा, नचकुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिश, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं
नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिन्ता, नहुतृट्
नजोतं नरुष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नमृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि० ४ ॥
त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वव्यापं, रुषीकेश विद्वंस कर्म्मरिजातं
॥ नपुण्यं नपापं नअहानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नवाढ्यं नवृद्धं
नविद्धि नमूढा, नवेद्यं नजेद्यं नमूर्तिर्नमीदा ॥ नरुष्यं नशुक्लं नमोदं
नतंश, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नड्वयं नहेत्रं
नदृष्टो नजन्म्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥
इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, नपूणां नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो
न्निजिष्ठं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणानि
विश्वैतन्यरत्नाकरं, सर्वज्ञतगतागते सुख दुःख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥
त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायन्ति योगेश्वराः, वंदेत्तं हरिवं-
श हर्ष हृदयं श्रीमान्मूढच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं,
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ॥

नतिष्ठति चिरं पापं, विद् हस्ते यन्मोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य
 स्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश
 कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि-
 नाशाय, वृद्धणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेज्जक्ति, जिनेज्जक्ति दिने ॥
 सदा मेस्तु, सदा मेस्तु ज्वेश ॥ ५ ॥ नहि त्राता, नहि त्रा
 ता जगत्रये ॥ वीतराग समो देवो, न जूतो न ज्ञविष्यति ॥ ६ ॥
 अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन,
 रक्ष ॥ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रज्ञं ॥
 नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि-
 स्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्मः सर्वत्र
 मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहा र्हितः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो
 कोत्तमो यतीशानां, धर्मो लोकोत्तमो र्हितां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदा र्हि
 तः, शिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म शरणं मर्ह
 तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ तपगुष्ठ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोचन वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स
 कुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपति त्रि
 सलातणो, नंदन गुण गंजरी ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान
 यशवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिनंदनें, चरणें करी परिणाम ॥
 ज्ञविक जीवना इति ज्ञानी, पूछै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मा
 रग आराधियै, कहो किय पर अरिदंत ॥ सुधा सरस तव वचन
 रस, ज्ञाखे श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोच्यै, व्रत धरीये गु
 रु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥
 विधिसुं वधि वीसरारविधे, पाप स्थानक अघार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदियै, जा
 व जलो मन आनि ॥ अणनाण अवसर आदरी, नवपद जपो सु
 जाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधनतणा, ए ठै दश अधिकार ॥ चि
 त्त आणीने आदरो, जिम पामो जव पार ॥ ८ ॥ (ढाल ॥ १ ॥
 ए ठिन्नी किहां राखी ॥ इस चालमें) ज्ञान दरिशाण चारित्र तप
 वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह जव पर जवना, आलोश्ये
 अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी
 रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु जुलविये नही गुरु विनयें, कालै धरी बहु
 मान ॥ सूत्र अर्थ तज्जय करी सूधा, जणिये वही उपधान रे ॥
 प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ एह
 तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥
 ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव प
 र जव वलिय जवोजव, मिठाडकरु तेहरे ॥ प्रा० समकित
 ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत
 अजिलाष ॥ साधुनणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥
 प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं ठंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा
 हमीने धर्मे करि श्रिता, जगति प्रजावना करिये रे ॥ प्रा० स०
 ६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे
 वको जे विणसाख्यो, विणसंतां जेवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-
 त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥ आ जव प०,
 मि० ॥ प्रा० चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण
 गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे घरमे प्रमादे, अशुद्ध
 वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ९ ॥ आवकने धर्मे सामायक, पो
 सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जेआठे, प्रवचनमायन पाली
 रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र म्होळ्युं

जेह ॥ आज्ञव०, मित्रा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ वारे जेदे तप नवि
 कीधो, ठते योगे निज शकते ॥ धर्मे जन वच काया वीरज, नवि
 फोरविउं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर,
 विविध विराध्या जेह ॥ आज्ञव०, मित्रामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥
 वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोश्ये ॥ वीरजिनेसर व
 चन सुणीनें, पाप मैल सवि घोश्ये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२)
 पृथ्वी पाणी तेउ, वाउ वनस्पती, ए पांचे आवर कह्या ए ॥ करी
 करसण आरंज, खेत्र जे खेमीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥ १ ॥
 थर आरंज अनेक, टांका ज्योरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥
 लीपण गुंण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥
 २ ॥ धोयण नाहण पाणी, जीलण अप्पकाय, ठोती धोती कर दू
 हव्या ए ॥ जाठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा, जामजूंजा लिहालागरा
 ए ॥ ३ ॥ तापलसेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए ॥ इ
 णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेउ वाउ विराधिया ए ॥ ४ ॥ वामी
 वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूटीया ए ॥ पौंदक
 पापनि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेद्या ठूंद्या आश्रिया ए ॥ ५ ॥ अल
 शीने एरंरु, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलू
 मांदि, पीली सेलमी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकें-
 डी जीव, हएया हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आज्ञव
 परज्ञव जेह, वलिय ज्ञवोन्नव, ते मुऊ मित्रामिडुक्कमं ए ॥ ७ ॥
 क्रमी सरमिया कीमा, गामर गंमोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥
 वाला जलो चूमेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥
 ८ ॥ इम वेइंड़ी जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ मि० ॥ उहेदी जूं
 लीख, मांकरु मंकोमा, चांचरु कीमी कंथुआ ए ॥ ९ ॥ गदहिया
 धीवेख, कानखजुरमा, गींमोला धनेरीयां ए ॥ इम तेइंड़ी जीव,

जे में दूहव्या, ते मुऊ मित्रा० ॥ १० ॥ माखी मञ्जर मास, मसा
 पतंगिया, कंसारी कोलियावमा ए ॥ ढीकण विठु तीर, जमरा
 जमरीय, कौंता बग खरमांकनी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव,
 जे में दूहव्या, ते मुऊ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या,
 वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीरुया पंखी जीव, पामो पा-
 समां, पोपट वाढ्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंडी जीव, जे में दू०, ते
 मुऊ० ॥ १३ ॥ (ढास ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए
 चाल) क्रोध लोभ जय हासणी जी, बोला वचन असत्य ॥
 क्रूर करी धन पारका जी, लोधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी
 मित्रामि दुक्कर आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥
 देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥ १ ॥ देव मनुज तिर्यचना जी,
 मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह
 रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जवर मेळी आधि ॥
 जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोश्य न आवै साथ रे ॥ जि० ३
 ॥ रयणी जोजन जे कर्मा जी, कीधा जक अजक ॥ रसना र
 सनी लावचें जी, पाप कर्मा परतक रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई
 बीसारीया जी, वलि जांग्या पञ्चरक्षाण ॥ कपट हेतु किरिया करी
 जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी,
 आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अ-
 धिकार रे ॥ जि० ६ ॥ (ढाल ४ ॥ साहेलमीनी देशी ॥) पंच
 महाव्रत आदरो, साहेलमी रे ॥ अथवा ढ्यो व्रत वार तो ॥ यथा
 शक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १ ॥ व्रत लिवा
 संजारीये, सा० ॥ हीयमै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन-
 तणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवै खमाविये
 सा० ॥ योनि चोरासी लाख तो ॥ मनगुदै करो खामणा, सा० ॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवौ, सा० ॥
 कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजै
 जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साइमी संघ खमावियै, सा० ॥ जे उप
 नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा
 सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमावियै, सा० ॥ एहीज धर्म
 नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि
 कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ घन मुर्खा मैथुन्न
 तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥
 निंदा कलह न कीजियै, सा० ॥ कूमा न दीजै आल तो ॥ रती
 अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-
 विधर वोसरावियै, सा० ॥ पाप स्थान अघार तो ॥ शिवगति आ
 राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥ (ढाल ए मी
 ॥ हवै निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥) जनम जरा मर-
 णे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कर्या कर्म सहु अनुजवे ए,
 कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण
 सिद्धजगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रौजैननो ए, साधु शरण गुणवंत
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार
 तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥
 आज्ञव परज्ञव जे कर्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म
 साखे निंदिये ए, पक्कमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत
 वर्त्ताविआ ए, जे जाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वसे ए,
 बलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५ ॥ घम्या घमाव्या जे घणा ए, घरटी
 हल हथियार तो ॥ जवर मेली मूकीया ए, करतां जीव संहार
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोपीया ए, जनमर परिवार तो ॥ जन-
 मांतर पोइतां पढी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आज्ञव

परजन्म जे कर्या ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध वैसि
 राविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निदा इम
 करी ए, पाप कर्या परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए
 ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥ (ढाल ठो ॥ आवि तु जोइने आपणी
 ॥ ए चाल ॥) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान
 शीयल तप आदरी, ठाढ्या दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शत्रुजादिक तीर्थ
 नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्या पात्र ॥
 ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर चिन चैत्य ॥ संघ चतु
 विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पम्किमणा सुपैर कर्या,
 अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवझायने, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥
 धर्मकारज अनुमोदिये, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो,
 सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जाव जलो मन आणीये, चित्त आ
 णी गम ॥ समता जावे जाविये, ए आसमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख
 दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचर्या,
 जोगविये सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य
 काम ॥ ठारि ऊपर ते लीपणू, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ जोग
 जली परे जाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो,
 आठमो अधिकार ॥ ध० ९ ॥ (ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपर
 ॥ ए चाल) हवै अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसणो
 आदरिये पञ्चस्की ब्यार आहार ॥ लजुता सवि मूकी गंभी ममता
 अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति ज्यारे कीधा आ
 हार अनेत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीन रंक ॥ इसहो
 ए वली२ अणशणनो परिणाम, एइथी पामीजै शिवपद सुरपद ठान
 ॥ २ ॥ धन धन्ना आलिजइ खंयो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या
 जवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्ये करी एक अवतार, आराधन केरो

ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारै महा मंत्र नवकार,
 मनथी नवि मूँको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये दुर्म
 ति दोष विकार, सुपरे ए समरो चउव पूरबनो सार ॥ ४ ॥ ज-
 न्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाळी पामे सुर अव-
 तार ॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह जव ने परजव सुख
 संपति दातार ॥ ५ ॥ जुज जीव जीवणी राजा राणी थाय, नवपद म
 हिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं पाम्या बै सुर
 जोग, इक जवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व
 ली मंत्र फळ्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥
 शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना
 सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर जाख्यो, आराधनकेरो विधि
 जिणे चित्तमां राख्यो ॥ तिणे पाप पखाळी जवजय दूरे नांख्यो,
 जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥ (ढाल ७
 मी ॥ नमो जवि जावसुं ए ॥ ए चाल) सिद्धारथराय कुल तिलो
 ए, त्रिशला मात मळहार तो ॥ अवनी तलै तुमे अवतरया ए,
 करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में
 अपराध करया घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आ
 व्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० १ ॥ आश करीने आवियो
 ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम
 रहस्यै लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूण आकरा ए, जनम मरण
 जंजाल तो ॥ हुं वुं एइथी उजग्यो ए, गेरुव देवदयाल ॥ ज०
 ४ ॥ आज मनोरथ मुळ फळ्या ए, नाठा दुःख दंदोल तो, तूगे
 जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ जव
 विनय तुम्हारमो ए, जाव जगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि
 दीजीये ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ज० ६ ॥ (कलश) इय

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर-
जिणवर चरण धुणतां, अधिकमन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव
सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगच्छपति श्रीविजयप्र-
जसूरि, सूरि तेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वा-
चक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय वि-
जये, धुणयो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीसे,
रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण
अन्यास ए ॥ ४ ॥ नरन्नव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील वि-
लास ए ॥ निर्झरा देते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥
इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिंहाय लिख्यते ॥

जरहेसर बाहुबली, अन्नयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिउ
अणियाउत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अऊधूविज्जदो, वरय
रिसि नंदिसेण सीद्गिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंरुरिओ केसि
करकंभू ॥ २ ॥ इल्ल विदल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिन्न
दोअ ॥ नदोअ दसन्ननदो, पसन्नचंदोअ जसन्नदो ॥ ३ ॥ जंबूपहू
वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चि-
लाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अऊगिरि अऊरस्किय, अऊमुहत्थो
उदाय गोमणगो ॥ कालयसूरि संवो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥
पन्नवो विन्हुकुमारो, अदकुमारो इढपहारोअ ॥ सिऊंस कूरगड्डअ,
सिऊंनव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुदं गुण-
गणेहि संयुत्ता ॥ जेसिं नामगहणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ७ ॥
सुवसा चंदणवाला, मणोरमा मणरेदा दमयंती ॥ नमयासुंदरि
सीया, नंदा न्हा सुज्जदाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिदत्ता, पन्नमावई
अंजणा सिरीदेवी ॥ जिण सुजिण भिगावई, पन्नावई चिद्धणदेवी

॥ ए ॥ वंजी सुंदरी रुपिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई
 दोवई धारणी, कलावई पुष्पचूलाय ॥ १० ॥ उपमावईय गोरी,
 गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चानामा, रुपिणी कन्ह
 महिसीउ ॥ ११ ॥ जस्काय जस्कदिना, जूआतह चव जूअ दि-
 नाय ॥ सेणा वेणा रेणा, जअणीओ थूलजदस्स ॥ १२ ॥ इच्चाई महा-
 सईओ, जयंती अकलंक शोल कलिआउ ॥ अऊ विवऊई जासिं,
 जस परुहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीउनी सिंहाय
 ॥ अथ मन्हजिणाणं सिंहाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिछंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ ठव्हिदआव-
 हसथमि, उज्जुतोदोइपथदिवसं ॥ १ ॥ पवेसुपोतहवयं, दाणंशोले
 तवोअजावोअ ॥ सज्जायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥
 २ ॥ जिणपूआजिणधुणिणं, गुरुधुअलाहम्मिआणवच्छलं ॥
 ववहारस्सयसुद्धी, रद्धयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवदामविवेकसंवर,
 आसासमिईवज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोच
 रणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवस्विहुमाणी, पुत्थयलिदणंपजावणा
 तित्थे ॥ सट्ठाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोम, जिनवर नामे मंगल कोम ॥ पदेले
 स्वर्गे लाख वत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ वीजै लाख
 अणावीश कहा, वीजै बार लाख सरदहा ॥ चोथे स्वर्गे अम लख
 धार, पांचमें वांदूं लाखज ब्यार ॥ २ ॥ ठेठे स्वर्गे सहस्र पचास,
 सातमें चालीस सहस्र प्राशाद ॥ आठमें स्वर्गे ठ हज्जार, नव द-
 शमें वंदू ज्ञात चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसे सार, नव ग्रैवे
 पके त्रणसे अटार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधि-
 का वली ॥ ४ ॥ सहस्र सत्ताणु त्रेवीम सार, जिनवरजुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पच्चास उंचा बहोत्तर धार ॥ ५॥
 एकसो असी विंब परिमाण, सत्ता सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम
 बावन कोम संजाल, लाख चोराणुं सहस चोआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर
 साठ विसाल, सवी विंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहो-
 त्तर लाख, चुवनपतीमां देवल जारव ॥ ७ ॥ एकशो अशी विंब
 प्रमाण, इकर चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोमि निव्याशी कोमि,
 साठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्तीशे ने ओगणसाठ, तिर्ठा-
 लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते
 विंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेइ, शाश्वता जिनवर
 वंदू तेइ ॥ रुपजा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-
 शेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥
 विमलाचल ने गढगिरनार, आवू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥
 शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-
 काणो पाश, जीरावलो ने थंजणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर
 पाटण जेइ, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेइ ॥ विहरमान वंदू जिन
 वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-
 शार, अठार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार,
 पाळे पलावै पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अच्यंतर तप उजमाल, ते
 मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नितर ऊगी कीर्तिकरुं, जीव कहे जव-
 सायर तरुं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हतप्रतिष्ठान, मधिष्ठानंशिवश्रियः ॥ नृर्जुवःस्वस्वयी-
 शान, मार्हत्यप्रणिदध्मदे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यजावैः, पुनतःस्त्रिज-
 गजनं ॥ क्षेत्रेकालेचतर्वस्मिन्, नर्हतःतमुपास्मदे ॥ २ ॥ आदि-
 मंपृथ्वीनाय, मादिमंनिःपरियद ॥ मादिमंतीर्थनाथंच, रुपजस्वा-

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरजास्करं ॥ अम्बान-
 केवलादर्श, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वज्जव्यजनाराम, कुड्या-
 तुड्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंजवजगत्पतेः ॥ ५ ॥
 अनेकांतमतांजोधि, समुद्धाशनचंडनाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, जगवान्
 जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणाग्रो, तेजितांजिनखावलिः ॥
 जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रजप्रजोर्देह,
 ज्ञासःपुष्पांतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमश्रने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥
 श्रीसुपार्श्वजिनेंशाय, महेंद्रमहितांहये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-
 जोगजास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रजप्रजोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्ति-
 मुर्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल-
 यनकेवलश्रियां ॥ अर्चित्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिवोधयेस्तुवः ॥ ११ ॥
 सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्दादामृतनिस्यंदी, शीतलः
 पातुवोजिन ॥ १२ ॥ ज्वरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ नि-
 श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीञ्चूत,
 तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः ॥ १४ ॥
 विमलस्वामिनोवाचः, कृतककोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,
 जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पर्दि, करुणारसवारिणा ॥
 अनंतजिदनंताव, प्रयत्नतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्मणा,
 मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्ध्याधर्मदेष्टारं, धर्मनाथंमुपास्महे ॥ १७ ॥
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्म्यातमःशांत्यै,
 शान्तिनाथजिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनायोजगवान्, सनाथोतिशयर्षि-
 ज्ञिः ॥ सुरासुरनृनाग्राना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तुज-
 गवां, भ्रतुर्यारनजोरविः ॥ भ्रतुर्यपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः ॥ २० ॥
 सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमज्जि-
 तुमः ॥ २१ ॥ जगन्महामोहनिश, प्रत्युपनमयोपमं ॥ मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतोनमतांमूढि, निर्मलीकारकारिणं ॥
 वारिह्णवाश्वनमेः, पातुंपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यद्ववंशसमुद्भूतः,
 कर्मककुहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान्, जूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥
 ॥ २४ ॥ कमठेधरणेद्रेच, स्वोचितंकर्मकुर्वति ॥ प्रज्जुस्तुव्यमनो
 वृत्तिः, पार्श्वनाथःश्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथा
 याद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायाहतेनमः ॥ २६ ॥ कृता
 पराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्वाष्पार्दयोर्जद्र, श्रीवीरजिनने
 त्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितःश्री
 मान् ॥ विमलस्त्रातविरहित, स्त्रिज्जुवनचूरामणिर्जगवान् ॥ २८ ॥
 वीरः सर्वसुरासुरेण्महितो, वीरंबुधाःसंभ्रिता ॥ वीरेणाज्जितःस्वक
 र्मेनिचयो, वीरायनित्यंनमः ॥ वीराक्षीर्धमिदंप्रवृत्तमतुलं, वी
 रस्यधोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्तिं कांतिनिचयः, श्रीवीरज्जडंदिशः ॥
 ॥ २९ ॥ अवनितलगतानांकृत्रिमाकृत्रिमानां, वरज्जुवनगतानांदिव्य
 वैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानांदेवराजार्चितानां, जिनवरज्जुवनानां
 ज्ञावतोदंनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिज्जत्त-
 पालग, निव्वाणीगरुक्कयसेवं ॥ १ ॥ उँसनमो विप्पोसहिपत्ताणं,
 संतिसामि पायाणं ॥ जौँस्वाहा मंतेणं, सव्वाणिवडुरिअदरणाणं
 ॥ २ ॥ उँसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइल्लहिपत्ताणं ॥ सोंहँीनमो
 सव्वोसहि, पत्ताणंचंदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसाभिणी, सिरि-
 देवीजस्करायगणिपिरुगा ॥ गहदितिपालसुरिदां, सयाविरस्कंतुजि-
 णज्जे ॥ ४ ॥ रस्कंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जासिंखलासया ॥ व-
 ऊंकुत्तिचक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-
 धारी, महजाला माणवीअ वइरुद्धा ॥ अज्जुत्तामाणसिआ, माहा-

माणसिआउं देवीउं ॥ ६ ॥ जस्कागोमुद्दमहाजस्का, तिमुद्दजस्के
 सुतुंबरुकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिउं, बंजोमाणुउंसुरकुमारो ॥ ७ ॥
 उम्मुद्दपायालकिन्नर, गरुलोगंधवतद्वयजस्किंदो ॥ कुबेरवरुणोजिउमी
 गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउंचकेसरी, अजिआडुरिआरि
 कालीमहाकाली ॥ अञ्जुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिक्का ॥ ९ ॥
 चंमाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निदाणिअञ्जुआधरणी ॥ वइरुट्टु-
 न्गंधारी, अंबपन्नमावईसिध्वा ॥ १० ॥ इयंतित्थरस्करया,
 अन्नेविमुरासुरीचक्काहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्कंसयाअ
 म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिठिसुरगण, सहिओसंघस्तसंतिजिणचंदो ॥
 मझविकरेउरस्कं, मुणिसुंदरसूरिषुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना
 इसम्मदिठी, रस्कंसरइतिकालंजो ॥ सवोवइवरहिओ, सलइंसुह
 संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगच्छगवणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरु
 णं ॥ सुपसायलद्वगणहर, विज्जासिद्धिंजणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥
 ॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ॥ पुस्कलवई विजं
 ये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगणी, नयरी
 ये सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, जवियणना मन मोहे ॥ २ ॥
 चउद सुयन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंयु अर जिन
 अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रभु जनमिया, वली
 योवन पावै ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावै ॥ ४ ॥
 जोगवी सुख संसारना, संजम मन लावै, मुनिसुवत नमी अंतरे,
 दीक्षा प्रभु पावै ॥ ५ ॥ धाती कर्मनो कष करी, पाप्मा केवल
 नांण ॥ वृषन्न लंठने शोभता, सर्व ज्ञावना जाण ॥ ६ ॥ चौराशी जस
 गणधरा, मुनिवर एकसो कोमी ॥ त्रण ज्ञुवनमां जोयतां, नहि
 कोई एइनी जोमी ॥ ७ ॥ दश लाख कहा केवली, प्रभुजीनो

परिवार ॥ एक संनय त्रण कालेना, जौणै सर्व विचार ॥ ८ ॥
 छिंदय पैढाल जिनांतरे ए, आशै जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु
 प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः
 ॥ असांमंधर जगधणी, आ जरते आवो ॥ कहरावंत कहरा
 करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमे धणी ए, जो होवें
 अम नाथ ॥ जवोजव हूं हूं ताहरो, नहीं मेळूं हवे साथ ॥ २ ॥
 सयल संग ठंढी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने,
 शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुज्जे धणी ए, पूरो सोमं-
 धरदेव ॥ इहांथको हूं वीनवूं, अवधारो मुज्जे सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिजुवन दिनकरं ॥
 सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल
 गिरिवर शृंग मंमण, प्रवर गुणगण जूधरं ॥ सुर असुर किन्नर
 कोमि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिने
 नगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमैं अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंन-
 रीक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल
 गिरिवर शृंगं सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद
 मुनिवर, कोमिनंत ए गिरिवर ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगै, नमो० ॥
 ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि
 अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर
 शिखर मंमण, दुःख विहंमण ध्याईयै ॥ निज शुद्ध सत्ता साध-
 नार्थे, परम ज्योतिनें पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विठोह निडा,
 परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मवि-
 जयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीगजुंजव
 सिद्धक्षेत्र, दीठै दुर्गति वार ॥ ज्ञाव धरीनें जे चढे, तेने जव पार

छतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥
 पूर्व नवाणूं रुषजदेव, ज्यां ठविया प्रजु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुं
 सोहामणो, कवरुयह अजिराम ॥ नाजिराया कुलमंणो, जिन-
 वर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेश्वर परमात्मा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधि-
 देव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा
 रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण
 अनंत प्रजु ताहरा ए, किमही कलवा न जाय ॥ राम प्रजु जिन
 ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमात्म पासै जावजो ॥ मुज
 बीनतम, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संजलावजो ॥ जे त्रण्य ज़ुवन
 ना नायक वै, जस चोसठ इंदर पायक वै, नाण दरशण जेहना
 दायक वै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया वै, जश धोरी
 लंठन पाया वै, पुंरुगीणी नगरीनो राया वै ॥ सुणो० ॥ २ ॥
 वार पर्पदा मांदि विराजै वै, जश चोत्रीश अतिशय गजै वै,
 गुण पेत्रीस वाणीचें गाजै वै ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ जविजनने ते पमिबोहे
 वै, तुम अधिक शीतलगुण सोहे वै, रूप देखी जविजन मोहे वै ॥
 सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो वूं, पण जरतमां दूरै वसि
 ओ वूं, महा मोहराय कर फसियो वूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण
 साहिव चित्तमां धरियो वै, तुम आणा खरुग कर ग्रहियो वै, तब
 कांइक मुजथी रुरियो वै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे
 पूरो, कहै पद्मविजय आऊं शूरो, तो बाधे मुज मन अति नूरो ॥
 सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आखमिये रे में आज सेत्रुंजो दीगो रे, लवालाख टकानो
दिहामो रे, लागे मुंने मीगो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो ऊमा
हो, वालामारा, जवनो संशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यच गति दूर
निवारी, चरणे प्रजुजीने लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवजवनो
लाहो लीधो, वाला० देहनी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपाने फू-
लमे वधावी, प्रेमे प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधमे पखालीने
केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे
जोतां, पापमेवासी धुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु-
रपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ
मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इइ सरीखा ए
तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल
टालै, सूरजकुंममां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरेश श्रीसिद्धक्षेत्रे,
वा० साधु अनंता सीया रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अ-
नंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाजिराया सुत नयणे जोतां, वा०
मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री
आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदिये, कोजै एहनी सेवा ॥ मानू
हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जल जिन गृहमंरुली,
तिहां दीपै उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विघ्नमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि०
२ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि
आगलै, श्रीसीमंथर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या,
जात्राफल लहियै, तेदथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥
वि० ४ ॥ जनन सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश
विजय संपद् लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥
 पूर्व नवाणूं रुषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुं
 सोढामणो, कवरुयक अजिराम ॥ नाजिराया कुलमंरणो, जिन-
 चर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेश्वर परमात्मा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधि-
 देव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा
 रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण
 अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कळया न जाय ॥ राम प्रभु जिन
 ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमात्म पासै जावजो ॥ मुज
 वीनतम, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संजलावजो ॥ जे त्रण्य भुवन
 ना नायक वै, जस चोसठ इंदर पायक वै, नाण दरशण जेहना
 दायक वै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया वै, जश धोरी
 लंठन पाया वै, पुंरुगीगणी नगरीनो राया वै ॥ सुणो० ॥ २ ॥
 बार पर्पदा मांदि विराजै वै, जश घोत्रीश अतिशय ठाजै वै,
 गुण पेत्रीस वाणीयें गाजै वै ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ जविजनने ते पस्विदे
 वै, तुम अधिक शीतलगुण सोदे वै, रूप देखी जविजन मोदे वै ॥
 सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो वूं, पण जरतमां दूरै वसि
 ओ वूं, मद्दा मोहराय कर फसियो वूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण
 साहिव चित्तमां धरियो वै, तुम आणा खरग कर ग्रहियो वै, तब
 कांइक मुजथी रुसियो वै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे
 पुरो, कहै पद्मविजय थाऊं शूरो, तो बाधे मुज मन अति नूरो ॥
 सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखमिये रे में आज सेत्रुंजो दीगो रे, सवांलाख टकानो
 दिहामो रे, लागे मुंने मीगो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो ऊमा
 हो, वालामारा, जवनो संशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर
 निवारी, चरणे प्रभुजीनें लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवजवनो
 लाहो लीधो, वाला० देहनी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपाने फू-
 लमे बधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधमे पखालीनें
 केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे
 जोतां, पापमेवासी धुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु-
 रपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ
 मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इंदु सरीखा ए
 तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल
 टालै, सूरजकुंरुमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरेश श्रीसिद्धकेत्रे,
 वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अ-
 नंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाजिराया सुत नयणे जोतां, वा०
 मेह अमीरश बूढ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री
 आदीश्वर तूढ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदियै, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू
 हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्ज्वल जिन गृहमंरुली,
 तिहां दीपे उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि०
 २ ॥ कोइ अनेरुं जग नदी, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि
 आगलै, श्रीसीमंथर बोले ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ करया,
 जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥
 वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश
 विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनान्निराजांगजं,
 धंदैरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारंगेअजितंजिनं नृगु
 पुरे श्रीसुव्रतंस्थंजने, श्रीपार्श्वप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्द्धमानंत्रिधा
 ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प जुवनेग्रैवैयकेव्यंतरे, ज्योतिष्कामरमंदरा
 ज्विसतो स्तीर्थकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुवके नंदीश्वरे
 कुंभले, येचान्येपिजिनानमामिसततं तान्कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥
 श्रीमद्गीरजिनास्यपद्महृदतो निर्गम्यतेगौतम, गंगावर्त्तनमेत्ययाप्रवि-
 श्मवे मिथ्यात्ववैतादयकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहति त्रिपथगा ज्ञानां-
 युयावृद्धिगा, सामेकर्ममलंहरत्वविकलं श्रीद्वादशांगीनदी ॥ ३ ॥ शक
 ध्वंद्ररविग्रहाश्रधरण ब्रह्मैंद्रशांत्यंत्रिका, दिग्पालाः सकपर्दिगो मुख
 गण श्रकेश्वरीज्जारती ॥ येन्येज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रा
 दिपु, श्रीसंघस्यतुराचतुर्विधसुरा स्तेसंतुजद्रंकराः ॥ इति श्रीपंच
 तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिझाय ॥

(नदी यमुनाके तीर उमे दोय पंखीया ॥ ए देशी) पिन्नजी
 पिन्नजी रे नाम जपुं दिन रातियां, पिन्नजी चढ्या परदेश तपे मो
 री वातियां, ॥ पगपग जोती वाद वालेसर कव मिले, नीर विठो
 ह्या मीन के ते जुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज सादिव विण
 नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारुं मन जमे ॥ जो होव
 सज्जन दूर तोही पास वसै, किहां सायर किहा चंद देखी मन उ
 छलै ॥ २ ॥ निस्नेहीलुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावै
 बेह दीपक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहनें,
 साखे रे साल समान दियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीर
 जोवनवय अति रहै, जेहनो पिन्न परदेश ते माणस डख सदै ॥

कुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आव्यो नेम मि
ली नयणें इसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहनु रंग टाढयो ते नवि टलै,
चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आंवा केरो स्वाद निंबू
ते नवि करै, जे नाह्या गंगा नीर ते ठीलर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या
मालतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥
जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजोवन तजी नेम वैरागी
थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वां
द्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनै ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती
मनरखी, रूपविजय प्रभु नेम जेठे आशा फलो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिंहाय लिख्यते ॥

आजखो तूटाने सांघो को नही रे, तिण कारण म करो
जीव प्रमाद रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा ठोमने
दया पाव रे ॥ आ० १ ॥ कुटंब कबीला नारी कारणे रे, मूरख
संच्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ठंफी जूरसे रे, सहीसे इह
लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ उंचा चिशाव्या मंदिर मालि
आ रे, दे दे धरतीमें ऊंफी नीव रे ॥ एक दिन अणजाणुं ऊगी
चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जोव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्र
वर्षि हर बल राणो केशवो रे, जोजो वली इंद्र सुरानो नाथ रे ॥
ऊगी२ने उवेही आथम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥
आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीतरया रे, करता मुनि
नवला तेह विहार रे ॥ जारंरुपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे मम-
ता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पावै रुमी रीतसुं रे, देवे
मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोक्षने रे, जज
लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता
धरो रे, म करो मुनि ज्ञानुं अजिमान रे, कपी चोथमल सूत्र

देखीने रे, जोरु करी जालोर मऊार रे ॥ आनु० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतोर्या चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रति
मा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव,
नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आबू रुपन जूहार
॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय
मूर्ति मानसुं, जरेते जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ
वसूं, ज्यां बीजै जिन पाय ॥ वैज्जारकगिरि ऊपरै, श्रीवीर जिने
श्वरराय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ रुपन
कहै जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

हु विध धर्म जिन उपदिश्यो, चोथा अजिनंदन ॥ बीजै
जन्म्या ते प्रजु, जवहुःख निकंदन ॥ १ ॥ हु विध ध्यान तुम्हे
परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाशयुं सुमतिजिन, ते चविया
बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने जवि तजिये ॥
मुऊ परे शीतल जिन कहै, बीज दिन शिव जजिये ॥ ३ ॥ जी
वाजीव पदार्थनुं, करो नाण मुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे,
लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न
ग्रहिये ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥
॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीशीये, एम जिनकळ्याण ॥ बीज दिने केइ
पामिया, प्रजु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीये, हुआ
बहुत कळ्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख
खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगमै वैरा वीरजिन, ज्ञाखै जविजन आगै ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो जवि जावसें, पांचम
 अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येदज तित्थि निहाली ॥ २ ॥
 ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी
 लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कहा,
 काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान
 ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करै कर्मनो खेद ॥ पूर्व कोमी वरसा
 लगै, अज्ञाने करे तेद ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व
 आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥
 पंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच
 माशनी, पंचमी करो शुद्ध दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,
 कान्तसग लोगस्त केरो, ऊजमणूं करो जावगुं ए, टाळे जव फेरो
 ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणो जाव अपार ॥ वरदत्त
 गुणमंजरी वरे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमी चैत्य-
 वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण
 चदि आठमें, संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें,
 जनम्या रुपज्जिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम
 मुनिचंद ॥ २ ॥ माघव सुदि आठम दिने, आठ कर्म करचा दूर ॥
 अजिनंदन चोथा प्रज्ज, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम
 ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-
 रावै मुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिमुव्रतस्वामी ॥
 नेम आपाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ आवण
 वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगज्जाण ॥ तिम आवण सुदि आठमें,
 पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ जाइवा वदि आठम दिने, चविया

स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, सैवोवाश्री शिववास ॥७॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवन्दन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभुकेवल पायो, संघ चतुर्विधथापवा,
महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमलद्विज
यज्ञ ॥ इन्द्रुति अदे मिट्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें
चतु गुणी, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अजिमान
अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीर
थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर
मल्लि पास, वर चरण विलागी ॥ रुयज्ञ अजित सुमती नमी, मल्लि
घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ शिव वाश पास, जवजवना
तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्रि सगली जोमी ॥ ६ ॥ दश
क्षेत्रे त्रिदु कालनां, देहसें कल्याण ॥ वरज अग्यार एकादशी, आराधो
वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखाविये, एकादश पाठा ॥ पूंजणी
ठवणी विटणी ॥ मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अग्यार अव्रत ठंरवा ए,
वहो परिमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनै, सफल करो अव-
तार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साद्वि देव, अरिहंत सकलनी
जाव धरी कलं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर ज्ञापित वाणी,
जयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणवाणी ॥ १ ॥ (यह थुई च्यार
वखते पण कद्वाय ठे)

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंयु
अरजिन अंतर जनम्या, त्रिदुअण जश परसंता जी ॥ सुव्रत नमि
अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ नदय पेढाल जिनांत-
रमां प्रभु, जासे शिवबहु पासे जी ॥ १ ॥ वत्रीस चउसदि

चनसठि मलिया, इगसय सठि उक्किठ जी ॥ चन अम अम मित्ती
 मव्यम काले, वीश जिनेसर दिठा जी ॥ दो चन च्यार जधन्य
 दश जंबू, धायई पुरकर मजारे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे,
 प्रवचनसार उद्धारेजी ॥ २ ॥ सीमंवर वर केवल पामी, जिनपद
 खवण निमित्ते जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत
 विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरब युत रचिया, गणधर लब्धि विक-
 सिया जी ॥ अपङ्कवसिय जिनागम वंदो, अकर पदना रसिया
 जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगो, विविध जंग व्रतधारी जी
 ॥ चनविह संय तीरथ रखवाली, सहु उपइव हरनारीजी ॥ पंचां-
 गुली सुरी शासनदेवी, देती तस जश रुद्धी जी ॥ श्रीशुभ चीर
 कहै शिवसाधन, कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्र-
 णमें चंद्रतणी जिहां रेख ॥ तिहां चंड विमानें शाश्वत जिनवर
 जेह, जे बीजतणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन
 चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव
 साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें
 दिन प्रणमुं ते सुविद्याण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजै द्विविध धर्म जग-
 चंत, जेस विमला कमला विजल नवण विकसंत ॥ आगम अति
 अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कोजै पातिकनो परि-
 हार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्रे-
 सरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोमीबीजे हुं प्रणमुं तस पाय,
 इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज शुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

आपण सुदि दिन पंचमी ए, जनन्यानेमजिनंद तो ॥ स्वासकं

रण तनु शोज्तो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रनु
 आउखो ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए,
 पोहता मुक्ति मजार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्पा
 मुक्ति मजार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार
 तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-
 शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥
 नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, ज्ञाखे सार वचन तो ॥ जीवदया गुण
 बेलमी ए, कीजै तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए,
 चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थकर इम कहे ए, परहरियै
 परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यहु जलो ए, देवी श्रीअंबिका
 नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥
 तपगच्छ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिप-
 जदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, ज्ञाव धरी सुरराजाजी ॥
 आठ जातिना कलश करीने, न्हवरायै जिनराजा जी ॥ वीरजिने
 श्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप
 करतां अम घर, मंगलकमला बाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी
 गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी,
 मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुँता जिनवर,
 फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुंतप करतां अम घर, नित्य
 बाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण
 जिन राजे जी ॥ आठमे आठ सो आगम ज्ञाखी, जिव मन संशय
 ज्ञाजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पालै निरन्तीचारो जी ॥
 आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा कराने, मानवजन्म फल लीजै जी ॥ सिद्धाई देवी
जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजैजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजै,
निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, तपथी,
कोरु कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति खूबसी, गोविंद पूव नेम ॥ कोण कारण
ए पर्व मोटुं, कहो सुजसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अति-
धणा, एकशो ने पञ्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोटोहुं, करो मौन
उपवाश ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहै ते जिनवर
देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौबीश
जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल
नीर जेहनुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखाविये,
अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवलो विंटणा, ठवणो पूंजणी
सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी
इम ऊजमो, जेम पानिये जव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी
कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ जुजमं चंम अखमं
जेहनें, समरतां सुख आय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि
दुर्प पंक्ति शीज, शासनदेवी विघन निवारो, संघतणा निश
दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शय्याविजोः शैशवे ॥ रूपा-
लोकनविस्मया, हृतरसत्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टनयनप्रज्ञा
धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति, श्रीवर्ध-
मानोजिनः ॥ १ ॥ इत्तांसाडितपद्मरेणुकपिश, क्षीगर्णवांजो नृतैः ॥
कुंजैरप्यगसांपयोधरत्नर, प्ररपथिजिःकांचनैः ॥ येषां सदरत्नशैल-

शिखरे जन्मान्निपकेःकृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेपांनतोदं
 क्रमान् ॥ २ ॥ अर्द्धद्वक्प्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥
 चित्रंबद्धर्षयुक्तंमुनिगणवृषजै, धारितंबुद्धिमन्निः ॥ मोक्षाम्बुद्वारज-
 तंत्रचरणफलं, ज्ञेयज्ञावप्रदीपं ॥ नक्तयानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं,
 सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचं-
 द्रजदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो-
 दिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुज्जूतिर्दिश-
 सुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्याणकंदं पदमं जिणंदं, संतितञ्ज नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं
 पयासं सुगणिकघणं, नत्तीश्वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार
 संसार समुद्वपारं, पञ्चाशिवं दितु सुदृक्सारं ॥ सध्वे जिणंदा सुर-
 विंद विंदा, कल्याणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजा
 ण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुद्धाणं
 ॥ नमामि निञ्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींउ गोखीर तुसारवन्ना,
 सरोज इत्ता कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुब्बवग्ग इत्ता ॥ सुद्धा
 यसा अम्ह सयापसत्ता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरिवरमांहे जिम मेरु उदार,
 ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम
 चंद्र वखाणूं, जलवर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम
 देश, कुलमांहे जिम रूपजनो वंश, नात्तितणो जे अंश ॥ हमा
 चंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गु-
 णवंता ॥ १ ॥ रूपज अजित संजव अजिनंदा, सुमतिनाथ मुख
 भूतमचंदा, पद्मप्रज सखकंदा ॥ श्रीसुपार्थ चंद्रप्रज सुविथी, शीतल

श्रेयास सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत
 जिन धर्म ए शांती, कुंशु अर मल्लि ननुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद
 पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश,
 सिद्धगिरि आभ्या ईश ॥ ९ ॥ जतराय जिन साथै वोदै, स्वामी
 शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रूपन्न कहै सुणो जर
 त्तराय, ठहरी पालंता जे नर जाय, पातक नूको आय ॥ पशु पं
 खी जे इण गिरि आवै, जववीजे ते सिद्ध ज आवै, अजरामर
 पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिखमांहे
 आय्यो, सुणता सुख जर आय्यो ॥ ३ ॥ संघपति जरत नरेसर
 आवै, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूर्ति ठावै, नागिरा-
 य मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं
 आता ॥ गोसुख नें चकेसरीदेवी, शेरुंजय सार करै नित्यमेवी,
 तपगठ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव
 सूरी प्रणामी पाया, रूपन्नदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंथरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमंथरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी,
 रूपाना कोशीता विराजै रत्नना दीदा दीपै जी ॥ कुंकुमवर्णी
 गदगदी विराजै मोतीना अकृत सार जी, त्यां वेठा सीमंथरस्वामी
 बोलै मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन जरी रे कचोली क
 स्तूरी वरान जी, पद्मारे पूजा अनारी रे होजो छगमते परजात जी ॥

॥ अथ पंचिदिय संवरणो ॥

॥ पंचेदिय संवरणो, तद् नव विद् वंजचेर गुणिवरो ॥ च
 उद्दिह कलाव मुक्तो, इय अछारस गुणेहि संजुक्तो ॥ १ ॥ पंच म
 द्यग जुक्तो, पंच विद्याचारपालण समर्थो ॥ पंच समईतिगुक्तो,
 वृत्तीत गुणेहि गुरुमत्त ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाश्यवयजुतो, जावमणेहोशनियमसंजुतो ॥ विन्नइअ सुदंकम्मं, सामाश्यजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाश्रंमिउकए, समणो इवसावन्तहवइजह्मा ॥ एएणकारणेणं, बहुसोसामाश्यंकुळा ॥ २ ॥ सामायक विधे लीधु विधे पारिउं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सवे हुं मन वचन कायार्थे करी मिछामि उक्कमं ॥ दश मनना दश वचनना वरै कायाना एवं वत्तीस दूषणामांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायार्थे करी मिछामि उक्कमं ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवर्गिसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह पदिमा, अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासजाहणिऊा, सुवसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइअयवं, दह्वयंतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लोधुं विधे पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन कायार्थे करी मिछामि उक्कमं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यंवदन ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सइ जगवन् चैत्यंवदन करुं, इच्चं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्त्यवाह, जगज्जाव वियक्खण ॥ अछावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पमिहय शाशण ॥ १ ॥ कम्मजू-मिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरं त लअई ॥ नवकोमिहिं केवल्लिण, कोमि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमिहिं वरणाण ॥ समणइकोमी सहस दोअ, थुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसहसंतुंजि उज्झित पडू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंण, जरुअछहि मुणिसुवय ॥ महुरिपसा

डुह डुरिय खंमण, अवर विदेहिं तित्थयरां ॥ चिट्ठं दिसि विदिसि
जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ
सहस्सा, लरका उपन्न अठ कोमीन, बत्तीसय बासीआइ, तिय
लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लरक
अम्वन्ना ॥ ठत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंवाइ पणमा-
मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिन ॥ १ ॥ काले विणए
बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुज्जय,
अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निवि ति
गिञ्जा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वञ्जल पन्नावणे अठ
॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस
चरित्ता यारो, अठविहो होइनायवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमिवि तवे, अ
अंतिर बाहिरे कुशल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायवो सो त
वायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसच्चानं
काय किलेसो संली ए याय, वञ्जो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्चित्तं वि
णन, वेयावच्चं तहेव सज्जानं ॥ जाणं उस्सग्गोविय, अंतिर न
वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्त मा
ऊत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनैन्द्रस्य,
मुखपद्मंपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामग्निपेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात्
सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते
जिनैः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सद्बोदयं ॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रनापितं, दिनागने नोमिधुवैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ सुयदेवतानो स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि कान्तसगं० सुअ देवया जगवई, ना
णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेज सययं, जोसिं सुअसायरे जती ॥

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंलण नाणेहिं चरण सइएहिं ॥ साई
ति मुक्कमगं, सा देवी हरज डुरियांइ ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी आपना मूकीने आ
वक आविका कटासणुं मुंहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहरी ज
ग्या धूंजी कटासण ऊपर वैशी मुंहपत्ती कावा हाथमां मुख पासे
राखी, जमणो हाथ आपनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी
(पंचिंदिअ) कहो इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी
अन्नवन्नससिएणं कहै, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो कान्त
सगं करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देई इच्छाका
रेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुंहपत्ती पमिलेहुं इच्छं । एम कहो
मुंहपत्ती तथा अंगनी पमिलेहणना पचास बोल कहो मुंहपत्ती प
मिलेहीए पढी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामा
यक संदिस्सानं इच्छं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकगानं
इच्छं । एम कहो वे हाथ जोनी एक नवकार गणी इच्छाकार जग
वन् पसाय करी सामायकदंरक उच्चरावोजी, पढी गुरु प्रमुख व
नेल करेमिज्जंते कहै, पढी खमासमण देई इच्छा० वैसणो संदिस्सा
नं । खमा० इच्छा० वैसणोगानं, खमा० इच्छा० सिद्धाय, संदिस्सानं
खमा० इच्छा० सिद्धाय करुं इच्छं, एम कहो त्रणनवकार गणवा । पढी
वे घमनी सिद्धाय धर्मध्यान करुं ॥ इति सामायक लेवानो विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पनिकम्याथी (यावत्) लौ
गस्स सूची कही खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पनिलेहुं एम कही मुंह
पत्ती पनिलेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति,
वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं तहत्ती कही पढी ज
मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव
कार गणी सामाश्यवयजुत्तो० कहिए, पढी जमणो हाथ थापना
सामो सबलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार
वानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजै, पढी पाणी वावरुं होय तो मुंहपत्ती
पनिलेहवी अने आहार वावरुं होय तो वांदणा बे देवा, तिहां
बीजा वांदणामां आवहिसयाए ए पाठ नही कहिवो. पढी यथाशक्ति
पञ्चकाण करुं, पढी खमासमण देई इच्छा० कही वनेसयें अथवा
पोते चैत्यवंदन कहवुं, पढी जंकिंचि० नमोत्तुणं० कही ऊजा थईने
अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसगग करी नमोर्हत्तुं क
हीने प्रथम थुई कहवी, पढी लोगस्स० सबलोए अरिहंतचेइयाणं
कही एक नवकारनो काउसगग पारीने बीजी थुई कहवी, पढी
पुस्करवरदी० कही सुअस्सन्नगवन्न करेमिकाउसगग वंदण० कही
एक नवकारनो काउसगग पारी बीजी थुई कहवी पढी सिद्धाणंबुद्धाणं०
कही वेयावच्चगराणं० करेमि काउसगग अनत्तुं कही एक नवका
रनो काउसगग पारी नमोर्हत्तुं चोथी थुई कहवी पढी वैसोने
नमोत्तुणं कहै, पढी चार खमासमण देवापूर्वक जगवान् आचार्य
उपाध्याय सर्वसाधुऋषिः प्रते थोजनवंदन करीयै. पढी इच्छाकरेण०
दैवशिक प्रतिक्रमणठानं एम कही जमणो हाथ चवला अथवा कटा

सणा ऊपर थापीने इच्चं सबस्सवि देवसियं कहेवुं, पठी ऊजा थई
 करेमिज्जंते इच्छामिगामिकानसगं जोमेदेवसिज्जं तस्सज्जत्तरी० कहीने
 अतीचारनी आठ गाथानो कानसग करवो, आठ गाथा न आवमे
 तो आठ नवकारनो कानसग करवो. ते कानसग पारीने लोगस्स
 कहेवुं, पठी वैसीनै त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पम्फिलेहीने वांदणा
 बे देवा, पछी ऊजा थईने इच्छाकरेण० देवसियं आलोउं इच्चं आलो
 एमि जोमेदेवसिज्जं० कहीने सातलाख कहवा. पठी अठार पाप
 स्थानकआलोइये, सबस्सविदेवसिअ कहीने वेसवुं, वेसीने एक नव
 कार गणी करेमिज्जंते इच्छामिगामिपम्फिमिज्जं कहीने वंदित्तु कहेवुं
 पठी वांदणा बे देवा, पठी अपुच्छिमिअप्रितर देवसिअं खामीने
 वांदणा बे देवा, पठी ऊजा थई ओयरियजवद्याए कहीने करेमि
 ज्जंते० इच्छामिगामि० जोमेदेवसिज्जं० तस्सज्जत्तरी० कही बे
 लोगस्स अथवा आठ नवकारनो कानसग करवो, ते पारीने लोगस्स
 कही सबलोए अरिहंतचेइयाणं वंदणवत्ति० कही एक लोगस्स
 अथवा च्यार नवकारनो कानसग पारीने पुरकरवरदी० सुअस्सज्ज
 गवज्ज करेमिकानसगं० वंदण० कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार
 नवकारनो कानसग करवो, ते पारीने सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुय
 देववाए करेमिकानसगं अनज्जु० कही एक नवकारनो कानसग
 करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहेली थुई कहवी
 अने स्त्रिये कमलदलनी पहेली थुई कहवी. पठी खेत्रदेवतानी
 बीजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे वनेए एकज कहवी. पठी १ नवकार
 प्रगट गुणी वैसीने ठीका आवश्यकनी मुंहपत्ती पम्फिलेहीने बे
 वांदणा दीजै, पठी सामायक चउवीसठो वंदनक पम्फिमणुं कान
 सग अने पञ्चकाण करुंजुंजी एम ए ठए आवश्यक संज्जारवा. पठी
 इच्छामो अणुसद्धिं नमोखमात्तमणाणं० कही नमोऽर्हत् कही पुरुष

नमोस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संतारदावानी त्रण शुई कहे
 पढी नमोस्तुणं कही स्तवन कहवुं, पढी वरकनक कही जगवान
 आदे वांदवा, पढै जमणो हाथ उपधी ऊपर आपी अद्वाइजेसु क-
 हेवुं, पढी देवसिअपायञ्चित्तनो कान्तसग च्यार लोगस्स अथवा
 शोलनवकारनो करवो, कान्तसग पारी प्रगट लोगस्स कही बेसोने
 खमासमण देई इच्छा० सिद्धायसंदिस्सानं, बीजुं खमासमण देई
 इच्छा० सिद्धायज्जणूं एम सिद्धायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी
 सिद्धाय कहवी, पढी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःखक-
 नकम्मकननो कान्तसग च्यार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल
 नवकारनो करवो, ते एक वदेरे अथवा पोत पारीने नमोऽईत्तकही
 लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहै, पढी इरियावही० तस्सज-
 त्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो कान्तसग करी
 प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी चउकसाय० नमोत्तुणं० कही जावंति
 वे कहीने उवसगहरं० जयवीयराय कही मुंहपत्ती पढिजेहवो पढी
 इच्छामि० इच्छाका० सामायकगरुं यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका०
 सामायकगरुं तहत्ति कही पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर आपी
 एक नवकार गणीने सामाइयवयजुत्तो० कहेवुं, पढी आपेली आ-
 पना होयतो एक नवकार गणी उठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि
 कह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समज्यो ॥ इति देवशी प्रति-
 क्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूर्वली रीते सामायक लेवुं पढी इच्छामि० इच्छाका०
 कही कुसमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्सनो अथवा शोल
 नवकारनो कान्तसग करी पारी प्रगटलोगस्स कहवो, पढी खमास-
 मण देई जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सूधी कहेवुं, पढी

च्यार खमासमणपूर्वक जगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधू प्र-
 त्येके वांदवा, पढी खमासमण बे देई सध्यायनो आदेश मांगी एक
 नवकार जणीने जरदेसरनी सध्याय कहीने फरी ? नवकार गण-
 वो, पढी इच्छाकारसुहराईनो पाठ कहवो, पढी इच्छाका० राईपनि-
 क्रमणोवातुं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर आपीने पढी इच्छं
 सबस्सविराईय डुच्चिंतिय० कही नमोत्थुणं तथा करेमिज्जंतं कही
 इच्छामिठामिकाजसगं० तस्सज्जत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा
 च्यार नवकारनो काजसग पारीने प्रगट लोगस्स कही सबलोएअ-
 रिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काजसग करवो,
 पढी पुरस्करवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आव गा-
 थानो अथवा न आवने तो आव नवकारनो काजसग पारी सि-
 द्धानंबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेही वांदणा
 बे देवा तिहांथी लेने अप्पुठ्ठिमिखामी वादणा बे दीजै तिहां सूधी
 देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवै ते ठिकाणे
 राईयं कहेवुं, पढी आयसियजवद्याए० करेमिज्जंतं० इच्छामिठामि०
 तस्सज्जत्तरी कही तपचिंतामणी करतां न आवने तो च्यार लोगस्स
 अथवा शोल नवकारनो काजसग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स
 कही बडा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेही वांदणा बे देवा, पढी स-
 कल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पञ्चस्काण करवुं, पढी इच्छा-
 कारेण संदिस्सह जगवन सामायकचजवीसत्थो वंदनक पमिक्कमण
 काजसग पञ्चस्काण करवुं ठेजी, एम ठ आवश्यक संज्जारवा, पढी
 पञ्चस्काण करवुं होयतो करवुं ठेजी अने धारवुं होयतो धारवुं ठेजी,
 एम कहवुं, पढी इच्छामोअणुसट्ठिं० नमोखमासमणाणं० नमोर्हत्त०
 कहीने विशाललोचन० नमोत्थुणं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक
 नवकारनो काजसग पारी नमोर्हत्तकही कट्टयाणकंदनी प्रथम थोय

कहवी, पढी लोगस्स० पुरस्करवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनु-
क्रमे च्यार ओयो कहवी, पढी नमोत्तुणं कही जगवान् आदि चारने
च्यार खमासणे वांदवा, पढी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर आपी अ-
च्छांइजेसु कहेवुं पढी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवी-
राय० कानसगग० ओय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पढी खमा-
सणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय कान-
सगग० अने ओय कहवी, पढी सामायक पारवानी विधियें सामा-
यक पारवुं इति ॥

॥ अथ परकी प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदितु कही रहियै तिहांमूधी
सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हतनुं कहेवुं अने ओयो स्नात-
स्यानी कहेवी, पढी खमासमण देखेने इच्छाकारेण संदिस्सह जग-
वान् देवसियं आलोइयंपरिक्कुंता इच्छा० परिक्रियमुंदपत्ती पनिलेहुं
एम कही मुंदपत्ती पनिलेहीये, पढी बांदणा वे दीजै, पढी इच्छा-
कारेण० संबुद्धाखामणेणं अप्पुठ्ठिहं अप्पितर परिक्रियंखामेनुं इच्छं
खामेमिपरिक्रियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं०
कही इच्छाकारेणसं० परिक्रियंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपरिक्रि-
यंअइयारोकन कही इच्छा० परकी अतीचार आलोऊं. एम कही
वृद्ध अतीचार कहीये, पढी एवंकारे श्रावकतणें धर्मे श्रीसमकितसृ-
लवारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पद्धदि-
वसमांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुन-होय ते सबे हुं
मनकर वचनकर कायार्येंकरी मिच्छामिउक्कमं ॥ सबस्सविपरिक्रिय
उच्चित्तिय उप्पासिय उच्चिठिय इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स
मिच्छामिउक्कमं ॥ इच्छाकारिजगवन् पसान करी परकी तपप्रशाद
करानु जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकन-

पवाज्ञ बेआंविन त्रणनीवि च्यारएकाशणा आववेआसणा बेईजांर सज्ञाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश करयो होयतो पइठी कहीए, करवो होयतो तहत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोद्धया रहीये पठी वांदणा बे दीजै, पठी इच्छाकरे० पत्तेयखामणेणं अणुठिउहं अप्रिंतर पस्किअं खामेनं इहं खामेमिपस्किअं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पठी वांदणा बे दीजै पठी देव-सियआलोश्यपम्किंता इच्छाका० जगवन् पस्किअं पम्किअं समपम्किअं ममि इहं एम कही करेमिज्जंतेसामाअयं० कही इच्छामिपम्किअं मिजं जोमेपस्किअं० कहवो पठी खमासमण देई इच्छाका० पस्कीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदितु कहै, पठी सुयदेवयानी थोय कहवी पठी देवा बैसी जमणोढींचण ऊजो राखो एक नवकार गणी करेमिज्जंते० इच्छामिपम्किअं० कही वंदितु कहेवुं०, पठी करेमिज्जंते इच्छामिपम्किअं० तस्सज्जत्तरी० अन्नहू० कहीने (१२) अर लोगस्सनो कान्तसगं करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मल यरा सूधी कहवा अथवा अन्नतालोस नवकारनो कान्तसगं करी पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंदपत्ती पम्किहेहीने बांदणा बे दीजै, पठी इच्छाका० समासिखामणेणं अणुठिउहं अप्रिंतर० पस्किअंखामेनं इहं खामेमिपस्किअं पन्नरसदि० कही पठी खमासण देई इच्छाका० कही पस्कीखामणाखामूं एम कही खामणा च्यार खामवा पठी दैवसीप्रतिक्रमणामां वंदितु कह्या पठी बे बांदणा देईने तिहांथी ते साम्रायक पारीये तिहांसूथी सर्व दैवसीनी पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कहवी स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सज्ञायने ठिकाणे उवसगगहरं तथा संसारदावानी थुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोइटी

शांति कहेवी ॥ इति परकी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कहा प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो वि-
शेष, बार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे वीस लोगस्सनो काउ-
सग्ग करवो अने परकीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहवा,
यथातपने ठेकाणे ठेकेणं बे उपवास च्यार आंबिल ठनीवी आठ ए-
काशणा शोल बेआसणा च्यारहजारसजाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण परकीना
बार लोगस्सने ठिकाणे चाळीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एक
शो शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अढमन्नत
एटले त्रणउपवाश ठआंबिल नवनीवी बारएकाशण चोवीश बेआ-
सणा अने ठहजार सिजाय ए रीते कहवुं अने परकीना आगारने
ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधी ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पम्किमवी. थापना हो-
यं तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पठी उस्सउत्तरी कही एक लो-
गस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही
उत्ते पगे बैसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीजं कंदोरो
आदिनुं पम्किलेहण करवुं, पठी काजो काढी जीव कलेवर सञ्चित
आदि जोवुं, पठी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उत्तो रही
इरियावही पम्किमे पठी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार
अणुजाणहजस्सुगो कही काजो परठवे, पठी त्रण बार वोसिरे
कहे ॥ इति पम्किलेहण करवानो विधी ॥

॥ अथ पञ्चस्काण पारवानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पम्किमिये, पठी जगर्चितामणीनुं चैत्य
वंदनं जयवीथराय सूधी करवुं पठी मन्हजिणाणंनी सिझाय कह
वी, मुहपत्ती पम्किह्वी इन्नामि० इन्नाका० पञ्चस्काणपारुं यथाश
क्ति० इन्नामि० इन्नाका० पञ्चस्काणपारयुं तहन्ति एम कही जमणो
हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी प
ञ्चस्काण करयुं होय ते कहेवुं, ते लखियेठिये ॥ जग्गए सूरें नमोका
रसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुठिसहियं पञ्चस्काणकरयुं
चनुविहार आंबिल नीवी एकासणुं बेआसणुं करयुं त्रिविहार पञ्च
स्काण फासियं पासियं सोहियं तोरिअं कीट्टिअं आराहिअं जंचुन
आराहियं तस्समिन्नामिडुक्कम् ॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

पुस्कलवइ विजयें जयो रे, नयर पुंररीगणी सार ॥ श्री
सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय धरज्यो धर्म
सनेह ॥ (आंकणी)। मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥
शशि दरिशाण सायर वधै रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० २॥ ठाम
कुठाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वा
सियो रे, बाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा
गणे रे, नद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते विहुं तणा रे, ताप करे
सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे ठो
माहाराज ॥ मुऊसुं अंतर किम करो रे, बांह ग्रह्यांनी लाज ॥ जि०
॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो
माने सवितणो रे, साहिव तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषजलंगन
माता सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाचक जश इम वीनवे
रे, जयजंजण जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ बीजनं स्तवन ॥

(॥ फतमल पाणीमाने जाय ए देगी ॥) ॥ प्रणमी

शारदमाय, शासन वीर सुदकरुं जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, आ
दरो ज्ञवियण सुंदरु जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कढ्याण, विवरीने
कहुं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अन्ननंदनतणो
जी ॥ २ ॥ श्रावण सुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी
जी ॥ तारण ज्वोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥
समेतशिखर शुभ्र ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र व-
दिनी हो बीज, वर्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाड्युन
मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस व्यवन,
कर्मकर्ये तब पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजे
वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराज
नो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहा
जो ॥ खातर किरिया हो जाण, खेन समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥
उपशम-तद्रूप नोर, समकित ठेन प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी
अहो वाम, पञ्चखाण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु
चोर, समकित वृक्ष फट्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुन्नवरूप, उत्तरे
चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी
सुख लोजीये जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस
कीजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीस मास, उत्कृष्टी बावीस
मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालिये शील वसुधासती जो
॥ ११ ॥ आवश्यक दोष वार, पमिलेहण दोष लीजीये जी ॥ दे
ववंदन त्रिण काल, मन वच कायाये कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊज
मणुं शुभ्र चित्त, करी थरीये संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम,
पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एशि विध करिये हो बीज,

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति नल्लट
धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी
॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति
बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

(॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥) सुत सिद्धारथ
भूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, ज्ञाखे
श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ भवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय
अमायो रे, ज्ञान भक्ति करो ॥ एआंकणी ॥ गुण अनंत आतमत-
णारे, मुख्यपणे तिहां दियो ॥ तेमां पण ज्ञानज वसुं रे, जिएथी
दंसण होय रे ॥ ज० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने
उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने शिवरपणं लहे रे, आचारज उवझाय रे
॥ ज० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोद्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥
वह्नि जेम इंधन दहे रे, कणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ४ ॥
प्रथम ज्ञान पढे दया रे, संवर मोह विमाश ॥ गुणठाणां
पगधालीये रे, जेम चढे मोह आवासोरे ॥ ज० ५ ॥ मइ सुअ
नहि मणपज्जवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक
ढे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ६ ॥ तेहना साधन जे
कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी धरी
अप्रमादो रे, ॥ ज० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, जणतां
करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबन्ना रे, मुंगा पांगुल आय रे
॥ ज० ८ ॥ जणतां गुणतां न आवने रे, न मले वल्लभ चीज ॥
गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ९ ॥ प्रेमें
पूढे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे,
करो अधिकार पसायो रे ॥ ज० १० ॥ इति ॥

(॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥)

जंबुद्धेपना नरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजित-
सेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आ-
राधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए
आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें
जणवा मूंकित रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंक्ति
यत्न करे घणो रे, ठात्र जणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमे रे,
अंघ्रतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोठें व्यापी देहनी रे, राजा
राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे
॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुण
मंजरी तस बेटनी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल
वरसनी सा अई रे, पामो यौवनवेश ॥ दुर्जग पण परणे नही रे,
मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे,
विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रत-
धार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक नूपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥
चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्म-
देशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन
मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परजवे रे,
मूर्ख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसै दुःखीया दीन
रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥
ज्ञान विना जगजीवना रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥
श्रेष्ठी पूवै मुण्डिंदने रे, जाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी सुज अंग-
जा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

(ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमां)

धातकीखंरुना नरतमां, खेटक नयर सुवाम ॥ व्यवहारी

जिनदेव ठै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामेणा,
 पुत्री चतुरा चार ॥ पंमितपासे सीखवा, तातें मुंक्या कुमार ॥ २ ॥
 बालस्वजावें रामतें, करतां दहामा जाय ॥ पंमित मारे जाहेरे,
 मा आगल कहे आच ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, ज्ञानवानुं
 नही काम ॥ पांम्यो आवे तेमवा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥
 पाटी खनिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि-
 रुचै, जेम करहाने ज्ञाख ॥ ५ ॥ पामा परे मोहोटा अया, कन्या
 न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥
 त्रटकी ज्ञाखे ज्ञामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी,
 जाणे ठै सहू कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म
 बोल ॥ रीसाली कहे तादरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें
 मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटा उपनी, ज्ञान
 विराधन हेव ॥ ९ ॥ मुर्झांगत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥
 ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे
 सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो
 वंछित योग ॥ ११ ॥ नज्जवल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥
 नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव
 उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य
 फळादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवटतणो, साधियो मंगल गेह ॥
 पोसदमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा
 सौजाग्यपंचमी, नज्जवल कार्तिक मास ॥ जावझीव लगे सेविये,
 ऊजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

(॥ ढाल चोथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥)

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चावखी दोरा रे,
 पाट्टी पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, कांबी खनिया लेखणी ॥

कवली मावली रे, चंद्रुआ ऊरमा पूंजणी ॥ १ ॥ (त्रूटक) प्रा-
 साद प्रतिमा तास जूषण, केसर चंदन मावली ॥ वासकूंपी वाला
 कूंची, अंगदूहणा ठावनी ॥ कलश आली मंगलदीवो, आरती नें
 धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती साहमी वच्छल, नोकरवाली आपना ॥
 ॥ २ ॥ (ढाल) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप
 संयुत रे, गुणमंजरीयें सदह्या ॥ नृप पूवै रे; वरदत्त कुंवरनें अंग
 रे ॥ रोग उपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ (त्रूटक) मुं
 निराज ज्ञासै जंबुद्वीपें, जरत सिंदपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु
 तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय
 बांधव, पुण्य योगें गुरु मढ्या ॥ वैराग्य पामी जोग वामी, धर्म
 धामी संवरया ॥ ४ ॥ (ढाल) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी
 लहै, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे,
 अशुज उदय अयो अन्यदा, संधारे रे, पोरसी जणी पोढ्यो यदा
 ॥ ५ ॥ (त्रूटक) सर्वधाति निंद व्यापी, साधु मांगे वायणा ॥
 ऊंधमां अंतराय आतां, सूरि दूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जा-
 ग्यो, लाग्यो मिळ्या जूतमो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जरयो
 षापतणो घमो ॥ ६ (ढाल) मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥
 अत अज्यासो रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुज बांधव रे, ज्ञोयण
 खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥
 (त्रूटक) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज
 ध्याने आयु पूरी, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जम
 पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो
 सही ॥ ८ (ढाल) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ जव दीवो रे,
 गुरु प्रशमी कहे शुज मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दी
 वमो ॥ गुण अवगुण रे, ज्ञासन जे जग परवमो ॥ ९ ॥ (त्रूटक)

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो किम आवमे ॥ गुरु कहे
तपशी पाप नासै, टाढ जेम घन तावमे ॥ जूप पन्नै पत्रने प्रनु,
तपनी शक्ति न एवमी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा
दियो बेवमी ॥ १० ॥ इति ॥

(ढाल पांचमी ॥ मैदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥)

सजुरु वयण सुधारसे रे, जेदी साते घात ॥ तपसु रंग लागो,
गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप
महिमा घणो रे, पसरयो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस
सयंवरा रे, वरदत्त परायो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपें कीधो पाट
वी रे, आप थयो मुनि जूप ॥ त० ॥ जौम कांत गुणें करी रे, वर
दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, जौगवै
जोग अखंरु ॥ त० ॥ वरसें ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंरु ॥ त०
॥ ४ ॥ जुक्तजोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥
गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावै निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख
विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण
ऊपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा धरे
रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्य
कीधो जेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या ज
रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥
त० ॥ ८ ॥ जिहां पण ते तप आदरचुं रे, लोक सहित जूपाळ ॥
त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पालै राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ९ ॥
चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि
मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु
जापुरी रे, जंबुविदेह मजार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे,
अमरावती धरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धरयुं सु
 ग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ बीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥
 त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥
 पंचमी तप महिमा विषे रे, जाबै निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे
 जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

(ढाल छठो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी)

चोवीश दंरुक वारवा, हुं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे,
 हुं वारी लाव ॥ प्रगव्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसला उर
 सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आं-
 कणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे,
 हुं० ॥ माहाविशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे,
 हुं० मा० १ ॥ अपराधी पण उधरयो, हुं० ॥ चंरुकोसियो साप रे,
 हुं० ॥ यज्ञ करंता बांजणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा०
 ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषजदत्त वली विप्रे, हुं० ॥
 व्यासी दिवश संबंधथी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं०
 मा० ४ ॥ कर्मरोगने ढालवा, हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे,
 हुं० ॥ आदर्यो में आसा धरो, हुं० ॥ मुऊ ऊपर हित आशि रे,
 ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास
 रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास
 रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिमाविजय
 गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो, हुं० ॥ पंचमी
 तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ (कलश) इय वीर लायक
 विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोमर
 गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर त्राणुं संवत्सरे,
 श्रीपार्श्व जन्मकट्याण दिवसें सकल जिवि संगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारि मारे ठाम धरमना साढापचवीश देश जो, दोषे रे
 त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हारि मारे नगरी तेहमां राज
 गृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजै गज परे रे लो ॥ १ ॥
 हारि मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां
 आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चउद सहस मुनिवरना साथे साथ
 जो, सूधा रे तप संयम शियले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूड्या
 रसनर जूड्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलवन हसि
 रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो,
 वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतु-
 र्विध आवै कोमाकोम जो, त्रिगुं रे मणि हेम रजतनुं ते रवे रे
 लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होमाहोम जो, आगे रे रस लागे
 इंझणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेग
 आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जमया रे लो ॥ हां०
 सुणतां डुंडुनि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस
 जानू अमया रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजै तेजे गाजे धन जेम लूंब
 जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी
 हरखी आवै जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पमे धोषे नर्ममां
 रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो,
 आव्यो रे परवरियो ह्य गय रथ पायगे रे लो ॥ हां० दइ प्रद-
 क्षिणा वंदी वैवो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे जायगे रे
 लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिजूननायक लायक तब जगवंत जो, आणी
 रेजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी
 जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो ॥ ८ ॥
 इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपद्विसे, सांजलौ चतुरसुजाण रे ॥
 मोहनी नौदमां कां पम्तो, नुलखो धर्मनां ठाण रे ॥ १ ॥ विरति
 ए सुमति धरी आदरो, (ए आंकणी) परिहरो विषय कषाय रे ॥
 बापसा पंच परमादधी, कां पम्तो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥
 करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले
 करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ
 पर्व खटना कहा, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आ
 राधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु
 परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह ज्ञानी एह आराध
 तां, प्राणिनु सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल
 तिहां, पूछै गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे
 वीरप्रभु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, सं
 पदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजै, एहथी आठ गुण
 सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पम्तिहारनो, अठ पवयसा
 फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे
 ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म क
 ट्याण रे ॥ ज्यवन संजवतणो एह तिथे, अजिनंदन निर्वाण रे ॥
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमोया, नेमनो सुक्ति दिन
 जाण रे ॥ पासजिन एह तिथे सिद्धला, सातमा जिन ज्यवन माण
 रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिनु, दंमवीरज लह्यो
 सुक्ति रे ॥ कर्म हणवा ज्ञानी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि०
 ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कट्यापा
 रे ॥ एह तिथे वलि घणा संजमी, पामले पद निर्वाण रे ॥ वि०
 ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिआ, एह तिथे करे जयवास रे ॥
 व्रतधारी जीव पोसो करै, जेहमे धर्म अज्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

जांखियो वीरे आठमतणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें उच्चरी प्राणिया, पामसे जवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लखै, टले कंठनी कोरु रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोरु रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कलश) एम त्रिजग ज्ञासन अचले शासन वर्द्धमान जिनेश्वरु, बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी संशुण्यो अलवेसरु ॥ जिन गुण प्रसंगे ज्ञायो रंगे स्तवन ए आठमतणो, जे जविक ज्ञावे सुणो गावै कांति सुख पावै यणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरया ॥ जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवरया ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, जक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूढै कृष्ण, द्वायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुणनिखो ॥ जगपति कोय उपाय बताय, जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्जल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पच्चाश, कढ्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेउ जिनना कढ्याण, विवरी कहूं आगलि बली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मछ्छी जन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवीशी, मांहे कढ्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखरु, पश्चिम दिशि इकुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

जिधान, साचो नृप प्रज्ञापालणी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंडावती
 तास, चंडमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शीयल
 सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नृपण
 चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा
 करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषक करै ॥
 नरपति देववंदन आवश्यक, काल बेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति
 (ढाल बीजी) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ वि
 नयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुळ दिन
 एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाघे जिम वरुबीज, शुभ अनुबंधी
 थयो री ॥ २ ॥ मुनि जाषै महाज्ञाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ ए
 कादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी
 सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शु
 ब्धे री ॥ ४ ॥ सांजलि सजु वैश, आनंद अति उल्लस्यो री ॥
 तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर
 आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांजल केशवराय, आगलि जेह थसे
 री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धत वमो री ॥ प्रीतिमती प्रिया
 तास, पुण्यें जोग जळ्यो री ॥ ७ ॥ तस कूर्खें अवतार, सूचित
 शुभ स्वप्ने री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥
 नाल निक्षेप निधान, नृसिंधी प्रगट हवो री ॥ गर्ज दोहद अनु
 जाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र
 अनेक जण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥
 ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पञ्चस्काण धरे री ॥ अगियार
 कंचन कोम, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणमार,
 तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे
 री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साग्य, जर्के तप उचरे री ॥ एक

दशी दिन आठ, पहारो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ (ढाल श्री
 जी) पत्नी संयुते पोसह लीधो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ अवसर
 जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लुंढै तदा जी ॥ १ ॥ शासनज
 के देवीशक्ते, शंजाणा ते बापमा जी ॥ कोलाहल मुणि कोटवाल
 आव्यो, तूप आगल धर्या रांकमा जी ॥ २ ॥ पोसहपारी देव जुहारी,
 दयावंत लेइ जेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठे की
 धा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरम
 आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे हठ कां
 करो जी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट वखारो शेठनी, उगरी सहू प्रसंसा
 करै जी ॥ हरखे सेठजी तप ऊजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥
 ॥ ५ ॥ पुत्रनें घरनो जार जलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ च-
 न नाणी विजयशेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक
 खटमासी च्यार चोमाशी, दोसय ठठसो अढस करै जी ॥ बीजा तप
 पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरें जी ॥ ७ ॥ एक अध-
 म सुर मिथ्यादृष्टि, देवतासुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जितकर्म उदेरी,
 अंगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८ ॥ कर्मै नमियो पापे जमियो, सुर क-
 है जान औषधजणी जी ॥ साधु न जाये रोष जराये, पाटु प्रहारें
 हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल
 दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी जितपदरामी, सुव्रत नेम कहे
 श्यामनें जी ॥ १० ॥ (ढाल चोथी) कान पयंपै नेमने ए, धन्य
 यादव वंश, जिहां प्रभु अवतरया ए ॥ मुऊ मन मानस हंस, ज
 यो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावनी ए, समुद्रविज
 य धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥
 ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥
 तिष्ठे मन नवि मल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं नपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण
 हुं न करी सकुं ए, डुठ कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो
 बलियातणो ए, कीजै सीजै काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांज
 ली ए, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए,
 समकित युत आराध ॥ ज० ॥ आईस जिनवर बारमो ए, ज्ञावी
 चोवीशीयें लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य
 पुरंदर रेवताचल मंरुणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे रा
 जनगरे संश्रुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय
 गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि कृमाविजय गणि, जिनविजय ज
 यसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीचुं हालरिजं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला जुलावै पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हाल
 रुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नं जन्मियुं पालणुं, रेसम दोरी
 घूघरी वागे ठुमठुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने
 ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रज्जुथी वरस अहीशें अंतरे, होसे चोवीशमो
 तीर्थंकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी चाणी सांजली,
 साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने
 होवै चक्री के जिनराज, बीता बारे चक्री नहि हुवै चक्रीराज ॥
 जिनजी पास प्रज्जुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चो-
 वीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज,
 मारी कूखें आव्या त्रण्य जुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या
 संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी आई आज ॥ हा० ॥
 ॥ ३ ॥ मुऊनें मोहलो नपण्यो जे वेसुं गजअंबामीयें, सिंहासन पर
 वेसुं चामर ठत्र धराय ॥ ए सह लक्षण मुऊने नंदन ताहरा ते-
 जनां, ते दिन संजारुनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ हैं, तेइसी निश्चय जाण्यो
 जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जंगें लंछन सिंह विराजसो,
 में पहले सुपनें दीगो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला
 बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देवर गो सुकमाल, ह
 ससैं जोजाइयो कही देवर माहरा लामका, हसशे रमशे नें वली
 चूटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा०
 ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेमाराजाना ज्ञाणेज गो, नंदन नवला पां-
 चसैं मामीना ज्ञाणेज गो, नंदन मामलिआना ज्ञाणेजा सुकमाल ॥
 हशशे हाथे उछाली कहीने नाहना ज्ञाणेजा, आंख्युं आंजीनें
 वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे
 टोपी आंगलां, रतने जमिया जालर मोती कशबीकोर ॥ नीला
 पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकि
 शोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखमलो सहु लावशे
 नंदन गजुवे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखना जोईने लेशे
 मामी जामणा, नंदन मामी कदेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥
 ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेमा मामानी साते सती, मारी जत्राजी ने
 बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंजे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें
 जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे
 लावशे लाखटकानो घूयरो, वली गूना मेंना पोपट नें गजराज ॥
 सारस हंस कोयल तीतर नें वलि मोरजी, मामी लावशे रमवा
 नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें
 नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी
 वृष्टि कीधी योजन एकने मंमले, बहु चिरंजीवो आशीष
 दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमनें भेरुगिरिवर सुरपतिये नव-
 राविआ, निरखी हरखी सुकत लाज कमाये ॥ मुखना ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंडमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥
 हा० १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशाखे पण मूकशुं, गज पर
 अंबास्त्री बेसास्त्री मोहोटे साज ॥ पसली जरशुं श्रीफल कोफल
 नागरवेलशुं, सूखरुली लेशुं नीशाखीआने काज ॥ हा० १४ ॥
 नंदन नवला मोहोटा आशोने परणावशुं, बहु वर सरखी जोमी
 लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूने पधरावशुं, वर बहु
 पोखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर तासर मा-
 रा बेनं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-
 हरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया
 सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गाथुं माता त्रिशला
 सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा
 नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय
 कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिद्धाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोळया महा
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे
 मायवाप रे ॥ निं० १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब
 लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेळामें धोया लूगमां रे, कहो केम
 ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,
 निंदानी मूंको परी टेव रे, ॥ थोमे घणे अवगुणे सहु जरया रे, के-
 हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते
 थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-
 जो आपणी रे, जेम वूटकवारो आय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-
 जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख
 पाशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पन्निक्कमवाथी मांमीने यावत् लोगस्त कहि पढी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्पुणं कहि अमधुं जयवी शाय आत्तवमखंता सूधी हाथ जोमी कहै, वली चैत्यवंदन कहिने नमोत्पुणं कहि यावत् चार थोयो कहिये गीये तिहां सूधी बधू क हेवुं, पढी नमोत्पुणं कहि वली चार थोयो कहिये त्यांसूधी बधू क हेवुं, पढी नमोत्पुणं तथा बे जावंती कहि स्तवन कहि अमधुं ज यवीअराय आत्तवमखंता सूधी कहि पढी चैत्यवंदन कहि नमोत्पुणं कहि आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवा तेमां मन्ह जिणाणंनी सझाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजे देववांदवामां सझाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशो देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पन्निक्कमी कान्तसग करी लोगस्त० क ही एक खमासमण देइ इच्छाका० श्रीरुषज्जिन आराधनार्थ चैत्य वंदन करुं, एम कहि चैत्यवंदन करै ॥ (श्री आदिजिन चैत्यवंदन लिख्यते) ॥ प्रथम जिनेसर रुषज्जदेव, सब्बथी चविया ॥ वदि चउथे आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दि वसे प्रज्जु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी आया ॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुज ध्यान ॥ महा वदि ते रणे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहां नमोत्पुणं० अरिहंत चेइयाणं० वंदणवत्तिया कहि एक नवकारनो कान्तसग पारी शुइ क्रमथी कहिये ते लिखिये गीये ॥ (॥ अथ थोय जोमो प्रारंभ ॥) रुषज्जिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला जास जम्हा ॥ वृषज्ज खंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय धणु गाया ते प्रज्जु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

त्रैवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरथा निरधार ॥ गिरि
 कमणें आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते वंदू जयकार
 ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकअंगे अंतगम सूत्र मजार, सिद्धाचले सीधा
 बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार
 जिन जेठे आवे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेसरी शा
 सननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करै संजाल ॥ गिरुओ
 जस महिमा संप्रति कालै जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरी नामें
 लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोऽस्तुषुं जावंती वे कही
 नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उलगनी अवधार ललना ॥ प्रथम
 जिनेसर प्रणमीये, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ०
 ॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत जगदान ललना ॥ अवि-
 नाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥
 गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें
 लहै, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इकाग छै जे
 हनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ जरतादिक अया केवली, अ-
 नुजव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुलमंरणो,
 मरुदेवी सर हंस ललना ॥ रुषजदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल
 अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रुषजजिन स्तवनं ॥
 पठो जयवीअराय अधौ कहेवुं, एक खमासमण देई इच्छा० श्री
 अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी तेरशें, चविया विजयंत ॥ माह सुदि आ-
 र्थमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माह शुदि नवमें सुदि अया,

पोषी इग्यारस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, अया अक्षय कृपारस ॥
 वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल
 कविरायनो, नय प्रणमें धरी नेह ॥ १ ॥ इति ॥ पढी नमोत्पुणं
 अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको कामसग करके धुईनी गाथा
 कहै. इसी तरै सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्य-
 ते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कंचन जरीनो ॥ नविक जन
 नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुज पद लीनो, जेम जल मां-
 हे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति
 अजित श्रोत्र ॥ ॥ अथ श्री शंजवनाथ चैत्यवंदन ॥
 सत्तम ग्रैवेयक अकी, चविया श्री शंजव ॥ फागुण सुदि आठम
 दिने, शुदि चवदशी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासे जनमीया,
 तणी पूनम संजम ॥ कार्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरु-
 पम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी कजलो ए, शिव पोहता जिनराज ॥
 ज्ञानविमल प्रभु प्रणमतां, सीजै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य-
 वंदन ॥ ॥ अथश्रोत्रप्रारज्यते ॥ जिन शंजव वारू, लं-
 ठने अश्व धारू ॥ जवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ सुर
 तरुपरी वारू, डसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना
 ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति श्रोत्र समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अजि-
 नंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानअकी चवया, अजिनंदनराया
 ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि वारशे
 अहिय दिस्क, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें
 शिवसुख रश ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार
 ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ २ ॥
 ॥ अथ स्तुति प्रारज्यते ॥ ॥ अजिनंदन वंदो, साम्यमाकंद
 कंदो ॥ नृप संवरनंदो, धर्मिष्वशेषकंदो ॥ तमतिमिरदिगंदो, लंठने

वानरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सारिंदो ॥ १ ॥ इति
 थोय ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ श्रावण
 सुदि बीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं,
 पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संज
 म ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्या-
 रश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें,
 नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ
 थोय प्रारज्यते ॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोरि कापै
 ॥ सुमति सुजन आपे, बोधिनुं बीज आपै ॥ अविचलपद आपे,
 जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नावें, जो प्रजुध्यान व्यापे ॥
 १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रज्जु चैत्यवंदन ॥
 नवम अवेयकथी चव्या, माहा वदि ठठदिवसें ॥ काती
 वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखै ॥ वदि तेरस संज-
 म ग्रहे, पद्मप्रज्जस्वामी ॥ चैत्रीपूनम केवली, वलि शिवगति पामी
 ॥ मृगशिर वदि इग्यारसें, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन
 राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्य
 ते ॥ पद्मप्रज्जु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधू म
 नावे, रक्त तनुं कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य
 पावे ॥ प्रज्जु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि आवे ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री
 सुपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥ ठठा अवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥
 ज्ञादरवा वदि आठमें, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसी जण्या,
 तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि ठठे केवली, शिव लहे तस स
 तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ज्ञानविम-
 ल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय
 प्रारज्यते ॥ फले कामित आशे, नामथी दुःख नाशे ॥ म

हिम महि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपासे ॥ सुरनर जस दास, संप
दानो निवाश ॥ गाय जवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥
इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्ञजिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आ

ठमा, चंद्रप्रज्ञ शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चै
त्रेह ॥ पोष वदि बारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण व
दिनी सातमै, केवल निराबाध ॥ ज्ञाद्रव सातम शिव लह्याए, पूरी
पूरण ध्यान ॥ अठ महासिद्धि संपजै, नय कहै जिनअग्निधान ॥ २

॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ ॥ शुभ नरगति पामी, उद्यमें
धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ञ नाम स्वामी ॥ मुज्ज
अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति दरगामी, रेहन
पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥

गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्पदंत ॥ फागुण वदि न
वमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस
ठहें दिक्का ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिये बहु परें शिक्षा ॥ शु
दि नवमी ज्ञाड्वा तणी ए, अजर अमर पद दौय ॥ धीर विमल
सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शो

य प्रारज्यते ॥ सुविधि जिन जहंत, नाम बलि पुष्प-
दंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म
धुरंत, लहि लीला वरंत ॥ जव जलधि तरंत, ते नमीजे
महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

प्राणतकद्वेषकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी ठ
है, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माडा वदि बारस जनम दिख्या,
तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ व
दि बीजै वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन
राजथी, सीजे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शोय

प्रारज्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वावही तुझ सेवा ॥ जेम
गज मन रेवा, तूही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम ठै नित्य
मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु डःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पशकी
चव्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस ठेठे, करत बहु आ
नंद ॥ फागुण वदि वारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह
अमावशि, देशन चंदबरस ॥ वदि श्रावण त्रीजै लह्या ए, शिवसु
ख अक्षयअनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए जगवंत ॥ १ ॥
इति ॥ ॥ अथ श्रेय प्रारज्यते ॥ सवि जिन अवतंस,

जास इक्षागवंश ॥ विजितमदन कंश, शुद्धचारित्र हंश ॥ कृतज्ञय
विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ वृषज ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश
॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आवियां,
ज्येष्ठ सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥
माह शुदि बीजै केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या क
र्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन वारमा ए, विद्रुमरंगे
काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रेय प्रारज्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीज
यादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंठन विख्यात ॥ जस
गुण अवदात, गीत जाणै निवात ॥ होय नित सुख गात, ध्याव
तां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवं

दन ॥ ॥ अष्टम कल्पशकी चव्या, माधव सुदि वारस ॥ शु
दि महा त्रीजै जण्या, तस चोथे व्रत रस, शुदि पोष ठेठे लह्या,
वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल
॥ विमल जिणैसर वंदियै ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो
जिन नितु दिये, पुण्य परिधल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

थोय प्रारज्यते ॥ विमलश् ज्ञावे, वंदतां छुख जावै ॥ नव
 निधि घर आवै, विश्वमां मान पावै ॥ सुधर लंठन कावै, ज्ञोमि
 ज्ञरस्वेद आवै ॥ मनु विनति जणावै, स्वामिनुं ध्यान ध्यावै ॥ १ इति ॥
 ॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां,
 श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत ॥
 वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी
 दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चवदमाए, कीथा छ
 ष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥
 ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ अनंत जिन नमीजै, कर्मनी कोटि बीजै ॥
 शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ बोधिबीज मोह दीजै,
 एटलुं काज कीजै ॥ मुऊ मन अति रीजै, स्वामिनुं कार्य सीजै ॥
 ॥ १ ॥ ॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि
 सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमाशनी, शुदि त्रीजै
 जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमजार ॥ पोषिपूनमें के
 वली, गुणना जंमार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या
 जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥
 ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमां
 ज्ञीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ शिजुवन सुख
 कीनो, लंठने वज्र दीनो, नवि होय ते दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥
 ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ज्ञाद्रवा
 वदि सातम दिने, सव्वथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जएया, उः
 खदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥
 केवल उज्जलपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवमा ए
 शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो
 काज ॥ १६ ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिचुवन सुखकारी, सस जय ईति
वारी ॥ सहस चउसठि नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति
जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, मांहे क-
धूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, बासियें गंध धूली ॥ जरी पुष्प
पटोली, टालीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें जाव
लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ बलि मूल
सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, वेद खट वृत्ति
सार ॥ प्रवचन विस्तार, ज्ञाप्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय
जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करै परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥
ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्या
नधी नित्य जदा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥
मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुंकंदा, शांतिकरण
श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिवा जिनराज हमार, मोहना जिनराज
हमार ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो, पलक मात्र
न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे,
ठंरुयो पण तुम्हें नवि ठंराशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न
लावो, वीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर
कहो एम समजे, पण ठौरु दीधायी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना
हठथी नवि चालै, जे मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ जक्ति
खांची मनमांहे आय्यो, सहज स्वजावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥
माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥
॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो वूटीजे, जेह मुंद मागे तेहिज दीजै ॥
सा० ॥ अजेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकल-
शो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अकयजाव निधी तुम पाश, आपी दासनें
पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुतार्ई, दीधी साहब एह व

माई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंथुनाथ चैत्य-
वंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सव्वष्ठी चविया ॥ वदि
चवदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,
लीये संजमजार ॥ शुदि त्राजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प
मिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ ठठा चक्री जय
करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥ १७ ॥ ॥ अथ श्रौय प्रारब्धते ॥

जिन कुंथु दयाला, ठाग लंगन सुहाला ॥ जश गुण शुभमाला,
कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति नवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला
॥ त्रिभुवन तेजाला, तांदरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति श्रौय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारश्री आविया,
फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जणया, अरदेव नमी
जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती बळ्ळल
बारसें, केवलगुण बरिज ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद
लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रानें नमूं, नय कहे जोमी हाथ ॥ १८

॥ ॥ अथ श्रौय प्रारब्धते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारूं, क
र्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संजारूं, तांदरो नाम धारूं ॥ कृत ज
यजयकारूं, प्रात संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप
तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

चव्या जयंतविमानश्री, फागुण शुदि चउथें ॥ मृगशिर सुदि इग्या
रसें, जनम्या दिग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकरा दिनें, कळ्याणक तीन ॥
फागुण शुदि बारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर
नीलमा ए, उगशीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणनूपपद, नव
जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ श्रौय प्रारब्धते ॥

जिन मल्लि महिला, वान वै जेह नीला, ए अचरज लोला, स्त्री
पणें नाम पीला ॥ दुष्मन सवि पीळ्या, स्वासि जो वै वसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीजिये सुण रंगीला ॥ १ए ॥ इति मन्त्रि
 स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा
 जितथी आविया, आवण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी,
 अयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥
 फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णै निर्वाण ॥ वर्ण श्याम, गुण उ-
 जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमलजिनराजना, सुरनरन-
 यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ शोच प्रारच्यते ॥ मुनिसुव्र
 तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुऊ अंतरजामी कामदाता अका-
 मी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्भ्या सर्वदारामी
 राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै
 त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ आ
 वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढ
 नी, अथा तिहां अणगार ॥ सृगशिर सुदि श्रृंगारसें, वर केवल
 धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अरुण अनेता सुरक ॥ नय कहे
 श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःख ॥ १ ॥ ॥ अथ शोच प्रा
 रच्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नही विश्वगानो ॥ सुत वप्रा मानो,
 पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंज ठे जे कृपानो ॥ स
 वि ज्ञुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ २ ॥ ॥ अथ श्रीने
 मीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, कासी वदि
 वारस ॥ आवण शुदि पंचमी जणया, यादव अवतंस ॥ आव
 सुदि ठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढ
 ठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमी अणपरणीया ए,
 मतीना कंत ॥ ज्ञानविमलगुण एहना, लोकोतरवृत्त ॥ २२ ॥ ॥
 ॥ अथ शोच प्रारच्यते ॥ गया शस्त्रागारे, शं
 निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंधो तिवारे ॥

संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचा
रे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंमे,
सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ सं
प्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, ज
वजलनिधिने तारे ॥ कोहादिक मोटा, मन्त्रतणा जय बारे ॥ जिहां
जीवदयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ जवि ज्ञाव धरीनें चित्त करीनें
चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विनारे ॥ समकित
दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो ज
व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो ध
नीयां, दो घनीयां दो चार घनीयां ॥ रहो रहो ० ॥ मोज महिरा
ण शिवादेवी जाया, तुमें गो आधार अरुवनियां ॥ रहो ० १ ॥ ना
ह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चनियां ॥ रहो ०
२ ॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, गेरुदीए पशुपंखी चनियां
॥ रहो ० ३ ॥ गोद विठानं में बली जानं, करुं वीनती चरणे प
नियां ॥ रहो ० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरु, न गमे
स्वपनमें सेजनियां ॥ रहो ० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन,
वामी वन घर सेरनियां ॥ रहो ० ६ ॥ अष्ट ज्ञवांतर नेह निज्ञाव
त, नवमें जव ते वीठनीयां ॥ रहो ० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी
सुणीने, राजुल रेवतगर चनियां ॥ रहो ० ८ ॥ पीयु करे निज
शिरे हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलनियां ॥ रहो ० ९ ॥ जादव
वंश विष्णुषण नेमजी, राजुल मीठी वेलनियां ॥ रहो ० १० ॥ ज्ञान
विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखनीयां ॥ रहो ०
११ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्स्ववंदन ॥

॥ कृष्ण चौथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोष वदिदशमी ज-

नमः, त्रिभुवन सुख पावा ॥ पोष वदि इग्यारतें, लहै मुनिवर पंथ ॥
 कमठासुर उपसर्गनो, टाढ्यो पत्नीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चौथह दिनें
 ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल
 सुख जरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ जलधर
 अनुकरे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विमा
 रे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोमि वारे ॥ मुक्त प्राणाधारे, माति
 वामा मढ्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावै ॥ अ
 नुजव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कढ्याण, संप्रति जे
 प्रमाणे ॥ सदि जिनवर ज्ञाण, श्रीनिवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दशवि
 धि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सप्त प्रकार, पंचस्का
 णादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे जया जिहा उदार ॥ ते
 प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला,
 जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयवि
 मल विशाला, ज्ञान लछी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे
 सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ आरे मा
 थे पंचरंगी पाग सोनानो गोगलो मारूजी ॥ प्रभु पास जिनेसर
 भुवन दिनेसर संकरो, साहिवजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर
 भूधरो ॥ साहिवजी ॥ तूं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो,
 सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुठवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥
 तूं अकथ अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी
 तुम गुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी
 निजमते, सा० ॥ जिन आतम दरंसी अमल अजेसी नयमते ॥
 सा० २ ॥ षट् दर्शन ज्ञाते युक्ति निरासे शासने, सा० ॥ स्याद-
 वाद विशाले सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानने ज्ञाने
 आतमध्याने आतमा, सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेद नदी त-

मा ॥ सा० ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेके देखिये, सा० ॥ आत
 म ततकामी अगुण अकामी लेखिये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरा
 मी ठो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ आपे गतनामी अंतरजामी ज्ञा
 नमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी-योगमां, सा०
 ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्या
 सी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितका
 शी कवि ज्ञणे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनदायक गुणमणी दायक
 नाथ है, सा० ॥ दुर्गति दुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ है ॥
 सा० ॥ जित मनमथ सायक त्रिजुवन नाथक रंजणो, सा० ॥ अ
 नेकांती एकांती तूं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें
 पुदगल जोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न
 वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं हेतू समीयो सुरवर नमीयो सह
 कहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुण लहे ॥ सा०
 ७ ॥ इम तुम गुण शुणियें कर्मने हणिये पलकमां, सा० ॥
 षण नवि अवगणियें सेवक गणिये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे
 नंदा त्रिजुवन इंदा संयुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय
 वंदा गुण ज्ञणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान
 जिनचैत्यवंदन ॥ शुदि आषाढ ठठ दिवसें, प्राणतथी चवि
 या ॥ तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिसवार्ये जणिया ॥ मृगशिर वदि
 दशमी दिने, आपे संजम आराधै ॥ शुदि दशमी वैशाखनी, वर
 केवल साधै ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करै उद्योत ॥
 ज्ञानविमल गौतम लहै, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति ॥
 ॥ अथ श्रेय प्रारब्धते ॥ लह्यो नवजल तीर, धर्म कोटीर
 हीर ॥ दुरति रज समीर, मोह मूसार सीर ॥ दुरित दहन नीर,
 भाण ॥ कर्पे सग कर पणसय धणु माणुं. सासय असासय

मेरुश्री अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कटपट्ट कीर ॥
 ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दयाला,
 धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला बिशाला ॥
 सुरनर महिपाला, वंदता ठै त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर वाणी,
 द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रचणखाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ न-
 वम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी नीसाणी ॥ डह पीलण घाणी,
 सांजलो ज्ञाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपा-
 ला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला,
 टालीने मोहहाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥
 ॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ श्री हुं समव-
 सरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता
 जाया जी ॥ हरि लंठन कंचन सम काया, सुज मनमंदिर आया
 जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समर्थे शासन जेहना, शीतल चं-
 दन ढाया जी ॥ जे सेवता जिविजन मधुकर, दिन२ होत सवाया
 जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी, जस मनमां-
 जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया
 जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर, वीर विरुद्ध जिन
 पाया जी ॥ एकलमल अतुलीवल अरिहा, डसमन डुर गमाया
 जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिना तूं सहा-
 या जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान वजाया जी ॥
 वंदो० ५ ॥ गुण अनंत जगवंत विराजै, वर्द्धमान जिनराया जी
 ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, शुद्ध समकित गुणदाया जी
 ॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीरराय कहेवो ॥
 ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ सकल
 मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय णाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही,

अध्यात्म गुणठाण ॥ १ ॥ (सही ए नमो जिणां-) २ (ए
 आकणी) विहुंतेर लख सगकोमि जवणवई, सासय जिण
 हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, सगस ह बिंबह परिमाणं ॥
 सही० ॥ ३ ॥ मेरु वैताढ्य वस्कारा कंचन, यमक कुंरु इह जाणुं ॥
 एकत्रीश ओगण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥
 त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, व्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुच
 क कुंरुल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु
 शत सय सहस चालोसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्तीससैं
 गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणुं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख
 सहस एकाणुं, चउ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर
 त्रिवारा, रुचक कुंरु नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोके नव
 ग्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रे
 वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं,
 सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोके, जिन प-
 निमा मन आणुं ॥ स० ॥ ९ ॥ त्रिचुवनमांहे सासय जिनहर,
 सगवन्न लख बसैं व्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सु
 णजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी वैतालीश
 कोमी, तेम अठावन्न लखा ॥ ठत्रीश सहस अशी वलि साधिक,
 सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे, प्रति
 मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सत्ता तिहां साठ वधारो, एकश
 त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषज चंडानन नें वर्द्धमान, वा
 रिखेण चउ नामे ॥ व्यंतरं ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पणि
 मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर जावना जावै, समकि
 तगुण दीपावै ॥ परित्त संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन
 जावे ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाण ॥ सं० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष बली शास्य विष्णु, सेत्रुंजादि
 क बहुला ॥ ते सविहूनें त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥
 सं० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंता, लहिये कोमि कळ्या
 ण ॥ मनह मनोरथ सगला सीजै, जनम सफल सुविहाण ॥ सं०
 ॥ १७ ॥ जयहर जगवंताणं जयत्तुर, नमो जिणाणं सही ए ॥
 नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥
 ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोग
 स्सको काजसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काजस
 ग्ग पारी पढी चार ओयो कहेवी ते लखिये ठिये ॥
 ॥ अथ ओय प्रारब्धते ॥ रूपज्जदवे नमुं गुण निर्मला, दुध-
 मांहे जिम जेली सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार ठै,
 जवरे मुऊने चित्ते रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली,
 जेह हसे विचरंता जे बली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे,
 जिन पणिमा प्रणमुं नित जंगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम कोर
 महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ जविक देह सदा पावन
 करे, डुरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन ज्ञासन
 कारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये
 दीपता, डुरित दुष्टतणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशा-
 श्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण
 मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काजसग्गमां सांजलै ॥
 पढी सर्वे जणा काजसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहै ॥
 पढी वैसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पढी सर्वे
 जण मुखयकी आवी रीते कहे--श्रीसेत्रुंजायनमः १ श्री पुंनरीका
 यनमः २ श्रीसिद्धकेत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री
 सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

अध्यात्म गुणघाण ॥ १ ॥ (सही ए नमो जिणाणं) २ (ए
 आकणी) विहुंतेर लख सगगकोमि जवणवई, सासय जिण
 हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, सगस ६ बिंबह परिमाणं ॥
 सही० ॥ ३ ॥ मेरु वैताढ्य वस्कारा कंचन, यमक कुंरु इह जाणुं ॥
 एकत्रीश ओगण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥
 त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, व्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुच
 क कुंरु नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु
 शत सय सहस चालोसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्तीससैं
 गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणुं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख
 सहस एकाणुं, चउ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर
 त्रिवारा, रुचक कुंरु नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोके नव
 त्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रे
 वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं,
 सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोके, जिन प-
 मिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ९ ॥ त्रिजुवनमांहे सासय जिनहर,
 सगवन्न लख बसैं व्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सु
 णजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी बेंतालीश
 कोमी, तेम अठावन्न लखा ॥ उत्रीश सहस अशी वलि साधिक,
 सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति
 मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सत्ता तिहां साठ वधारो, एकश
 त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषन्न चंडानन नें वर्द्धमान, व
 रिखेण चउ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पमि
 मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर ज्ञावना ज्ञावै, समकि
 तगुण दीपावै ॥ परित्त संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन
 जावै ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाण ॥ सं० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष बली शासय विणु, सेत्रुंजादि
 क बहुला ॥ ते सविहूने त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥
 सं० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रज्जु नाम जपंता, लहिये कोनि कळ्या
 ण ॥ मनह मनोरथ सगला-सीजै, जनम सफल सुविहाण ॥ सं०
 ॥ १७ ॥ जयहर जगवंताणं जयत्तुर, नमो जिणाणं सही ए ॥
 नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥
 ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोग
 स्सको काउसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काउस
 ग्ग पारी पढी चार थोयो कहेवी ते लखिये ठिये ॥
 ॥ अथ थोच प्रारज्यते ॥ रुपज्जदवे नमुं गुण निर्भला, डुध-
 मांहे जिम जेली सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार ठै,
 जवरे मुज्जने चित्ते रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली,
 जेह हसे विचरंता जे बली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे,
 जिन पद्मिमा प्रणमुं नित जंगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम कोर
 महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग-करी वधी ॥ जविक देह सदा पावन
 करे, डुरित तापर जोमल अपहेरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन ज्ञासन
 कारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रज्जुताचे
 दीपता, डुरित डुष्टतणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशा-
 श्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण
 मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउसग्गमां सांजलै ॥
 पढी सर्वे जणा काउसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहे ॥
 पढी वैसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पढी सर्वे
 जण मुखथकी आवी रीते कहे-श्रीसेत्रुंजायनमः १ श्री पुंमरीका
 यनमः २ श्रीसिद्धदेवायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री
 सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेश्वरायनमः ९ श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री-
 शाश्वतायनमः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३
 श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय-
 नमः १६ श्रीसूरजगिरयेनमः १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री-
 पातालमूलायनमः १९ श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा-
 यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहिने,
 पठे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये ठिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशो ॥

नीलमी रायणतरूतले, साहेलमियां ॥ पीलमा प्रभुजीना
 पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइये, सा० ॥ एहीज मुग्-
 ति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतमी ठायये बैसीये, सा० ॥ रातमो
 करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल अई, सा० ॥ पहेरी व-
 स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलमे, सा० ॥ नेह
 धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे जवे जिव लहे, सा० ॥ आये निर्म-
 ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे
 सार ॥ गु० ॥ अजंग प्रीति होए जेहने, सा० ॥ जव१ तुम आ-
 धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा अम-
 ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाअछै, सा० ॥ तीरअने अनुकूल ॥
 ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरअ ध्यान धरी मनै, सा० ॥ सेवो एहने उवाह
 ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु ज्ञाखियो, सा० ॥ जत्रुंजा महातम
 मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरिनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामंती दोय के कामे व्यापियो, होला० कामें० ॥ ए
 चाह ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करुं, हो लाल के ॥ सेव० ॥

अहनिश ताहरूं ध्यान के दिल मांहे धरूं हो लाल, दि० ॥ शंख
 लंठन गुणखाण के अंजन वान वै हो लाल के अं० ॥ राजिम-
 तीना कंत के परया विणुअ वै हो० प० ॥ १ ॥ तूंदीज जीवन-
 प्राण के आतमराम वै हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरूं
 नाम वै हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो०
 नि० ॥ कीजाये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥
 जीत्या मनमथ राज रही गढ़ ऊपरै हो० र० ॥ पहरी शील
 सन्नाह उदास एसी धरै हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि
 तुझे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुमारपणे धरी धोर महाव्रत
 उंचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेह जे तेह जेखीने
 हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥
 पूरणा पाली प्रीत बली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमजोर
 पड़ोचामी पारभैं हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते
 जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धर। नेह के ते विरला सुण्या
 हो० ते वि० ॥ राजामतीनो कंत बखाणे कविजना हो० व० ॥
 तुझे तो दीधा ठेह के तेहना धिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जाद-
 वनाथ सनाथ करो मुऊनैं सदा हो० फ० ॥ दिल मुऊ शिर हाथ
 होवे जेस संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नई
 हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोमो दोमो सही हो० घो० ॥ ६ ॥
 सबला साथे प्रीत निबलनैं नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी
 जे ओमी किहां जाअे बही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते ज्ञानी
 न मंजीये हो० जी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मन
 मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि
 मंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दग्धान दीजीजे हो०
 द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मर्जीनैं कीजाये होला० म० ॥

॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥
 ॥ आवो आवोने राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइयै ॥ श्रीजिनवरनी
 जक्ति करीने, आतम निर्मल अइये ॥ आवो ० ॥ विमलवसीना
 प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख
 कुसमवर, कंठे टोरु र ठविये ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे दूषण
 वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखी, दुःख दो
 हग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धचल श्रीरुपज जिनेसर, रैवत
 नेम समरिये ॥ अरे दो वसीनी यात्रा करतां, बिहुं तीरथ चित्तधरिये ॥
 आ० ३ ॥ मंरुप मंरुप विविधि कोरणी, निरखी हियमै ठरियै ॥
 श्रीजिनवरना बिंब निहाली, नरजव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥
 अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुजकरम सब हरिये ॥ पाश शां
 ति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो मुंगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे
 चढतां उजम बाधै, जेम घोमे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी के
 शर, पापफल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकल ध्यानें प्रभुनें ध्या
 तां, मनमांहे नवि रुरिये, ज्ञानविमल कहै प्रभु सुपशायें, सकल
 संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥ पु
 ष्पक नामें विमाने बैशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्रीजिन पूजियें
 लाल, समृक्ति निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरजव
 सफलो कीजै ॥ हियमै हरखी लाल, समता संग करीजै ॥ (आं
 कणी) चउमुख चउगति हरण प्रशादें, चउवीशें जिन वैठा ॥ च
 उदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरव दिशि दोय जिठा ॥ श्री० २

॥ संज्ञव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि न
 तरदिशि जाणो, एवं जिन चन्वीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैठा सिंहतणे
 आकारे, जिनहर ज्जरते कीधा ॥ रयणबिंब मूरत आपीने, जग ज
 शवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण
 तांत वजावै ॥ मादल बीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावै ॥
 श्री० ५ ॥ ज्ञक्तिज्ञावै एम नाटिक करतां, तूटो तंत विचालै ॥
 सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥
 द्रव्य ज्ञावशुं ज्ञक्ति न खंमी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुर-
 तरु फल पामोनें, तीर्थकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इणि परें ज्ञ
 विजन जे जिन आगें, बहुपरे ज्ञावनाज्ञावें ॥ ज्ञानविमल गुण ते
 हना अहनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवनं ॥

॥ समेतसिखरगिरि जेटीये रे, मेढवा ज्ञवना पास ॥ आत
 मसुख वरवा ज्ञणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ ज्ञवियां
 सेवो तीरथ एह, समेतसिखर गुणगेह रे ॥ ज्ञवि० से० १ ॥ (आंक
 णी) समेतसिखर कलपें कह्यो रे, बीश हुंक अधिकार ॥ बीश ती
 र्थकर शिव वस्था रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ ज्ञ० से० २ ॥ सि
 ष्ठेत्र मांहे वस्था रे, ज्ञाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूप-
 मारे रे, दोथ नय प्रभुजीना साररे ॥ ज्ञ० से० ३ ॥ आगमवचन वि
 चारता रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्त्व जिणे जाणिये रे, ते
 आगम स्याद्वाद रे ॥ ज्ञ० से० ४ ॥ जयरश्रायतणी परे, जात्रा
 करो मनरंग ॥ ज्ञवदुःखने देइ अंजली रे, आयें सिद्धवधूतो संग रे
 ॥ ज्ञ० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु आय
 ॥ ज्ञवहेतु किरिया त्यागशी रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ ज्ञ० से०
 ६ ॥ जेइ समें समकित अयो रे, तेइ नयये दोय लाग ॥ ज्ञान

विमल गुरु-ज्ञाखियो रे, आवश्यकज्ञाप्यनी वाण रे ॥ ज्ञ०-से०
॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववंदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणयर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोच्चव कीजै जी
॥ ढोल दमामा जेरी नफेरी, ऊत्तरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन
आगल ज्ञावना ज्ञावी, मानवज्जव फल लीजै जी ॥ परब पजूसण
पूरव पुन्ये, आव्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वत्रो द-
शम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय क
रीनें, जिन चौबीश पूजीजै जी ॥ वरमाकटवनो ठठ करीनें, वीर-
वखाण सुणीजै जी ॥ परवाने दिन जन्म महोच्चव, धवल मंगल
वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावी, अठमनुं
तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परै केवल लहिये, जो शुभ ज्ञावै
रहिये जी ॥ तेलाधर दिन त्रय कट्याणक, गणधरवाद वदीजै
जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, रुषज चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥
वारशें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पन्तिकमिये जी ॥ चैत्यप्र-
वानी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें स्वामीजै जी ॥ पारणाने दिन
सामीवञ्चल, कीजै अधिक वरमाई जी ॥ मानवेजय कहे सकल
मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू जली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-
णथी रथ फेरीयो रे लाल, नीतुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-
मणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी
अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नायो
पीठ ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥
हो० २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुख दैण ॥

तो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥
 माहमहीने सी पसे हो लाल, प्रीत संग पोछै नारी ॥ प्रीतम वि
 ण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले
 हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हूं क्लिणसुं खेलूं हिवे हो
 लाल, पाश नदी नरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहीने चादणी रे ला
 ल, संजोगण सुख दैण ॥ विरहणमें वालम विना रे लाल, रोवत
 जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही
 महकाय ॥ अरज सुणी अवला तणी हो लाल, तपत मिटावो
 आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाजै कोम
 लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूवै मुऊ
 वात ॥ हो० ८ ॥ आसाढे काली घटा हो लाल, ऊनमि आयो
 मेह ॥ कंत मिल्पा निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥
 हो० ९ ॥ आवण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे ऊरला-
 इ ॥ इण रुत सूनां एकली हो लाल, क्युं कर रैण बिदाई ॥ हो०
 १० ॥ काली कालाहण मिलो हो लाल, जाइवै वर खंत ॥
 अरज सुणीनै साहिवा हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ११ ॥
 आसोजै आंसू ऊरै हो लाल, नाइ विना निसदीश ॥ सार न
 पूठा साहिवे हो लाल, राखि रह्यो मन रीज ॥ हो० १२ ॥
 काती दृढ ठाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख
 निज नाहनो हो लाल, सफल गिणो अवतार ॥ हो० १३ ॥
 संयम ले पिउ सेंद्रे हो लाल, पामे नवनो पार ॥ इण पर पावे
 प्रीतनी हो लाल, घन २ ते नर नारि ॥ हो० १४ ॥ जे कीधी
 पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद जणी द्यो करि
 दया हो लाल, प्रजु चरणारी सब ॥ हो० १५ ॥ इति श्रीनेम
 राजुल वारेमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपठरा करतो आरती जिन आगै, हारे जिन आगे रे जिन
 आगै, हारे ए तो अविचल सुखमा मागै, हारे नात्तीनंदन पाश ॥
 ॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हारे दोय च-
 रणे जांऊर ऊमकै ॥ हारे सोवनना बूधरी धमकै, हारे लेती फूद-
 मो बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशलो रुफ वीणा, हारे
 रूमा गावंती स्वर जीणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणां, हारे जो-
 ती मुखहुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रज्नु जा-
 या, हारे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हारे मे तो पूरब पून्ये पाया,
 हारे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रज्नु
 प्यारो, हारे प्रज्नु सेवक हूं तुं तारो, हारे ज्ञवोज्ञवना दुखमा
 वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो
 चित्त धरजो, हारे मोरी आपदा सधली हरजो ॥ हारे मुनि मा-
 णक सुखिज करजो, हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिंहाय ॥ देशो उमादे भटीयाणोरी ॥

पहली तो समरुं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां
 रे पाय ॥ प्रज्नुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिव जिनतणा, सुज्जमत
 आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरोपुरहुंती हो नेमीसर साहिव थे
 चढ्या, जान करी याडाय ॥ हसता तो सिणगास्या हो नेमीसर
 साहिव थे ज्ञला, धोरुलांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अ-
 धिका हो नेमीसर साहिव वाजता, आया तोरण वार ॥ महिल
 चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥
 आंख फरुके हो सहेलो मारी जीमणी, फिरताइ दीसे वै जरता-
 र ॥ वामो तो जरियो हो नेमीसर साहिव जीवनो, पशुवाणी
 पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊजो तो रथनें हो नेमीसर साहिव राखी-

यो, ए पशु बांध्या वै किण काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर
 साहिव तुमतणो, सारथी कहे वै महाराज ॥ ५ ॥ थोमा तो
 सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥
 जीव बांध्याने हो नेमीसर साहिव ठोमिया, जीव सवे तिण वार
 ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुल हो नेमीसर साहिव ठोमने, जाय
 चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिव जीतवा,
 लीधो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो जूरे हो नेमीसर साहिव
 एकली. जल विन मठली जेम ॥ नव जवारो हो नेमीसर साहि-
 व ठोमनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावै हो
 राजुल दुःख मत करो, एतो कालो वै जरतार ॥ पागो तो राजुल
 जापै हो सहेली मारी थे सुणो, इण जव ए जरतार ॥ ९ ॥ रा-
 जुल तो चाली हो नेमीसर साहिव बांदवा, साथे तो घणुं रे परि-
 वार ॥ गिरनारे चढतां हो सव आगे पाठै नीकढ्या, एकली रही
 वै राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिव अ-
 तिवणा, जाज्या वै सवि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल
 नारी अति जली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो
 चाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, धृवरना ऊणकार ॥ ऊणका तो
 सुणिया हो रहनेमी वैठे ध्यानमें, खोली वै पलक तिणवार ॥ १२ ॥
 रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी वैठे ध्यानमें, कहै सुंदर करो मोसुं
 प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मानै ठोमी वै
 नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांसो,
 जलटी करै नाखि तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पागो नही
 जम्ये, जखती काग कुता जेम ॥ १४ ॥ हुं तो माता हो रहनेम
 थारे सारखी, हुं वमा जाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम
 साहरे ऊपगं, तो परस्यो थे नरक मजार ॥ १५ ॥ एहया तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपमा
तो पहर्या हो राजुलनारी आपणा, पुहती है प्रजु दरबार ॥ १६ ॥
राजुल तो ढरखे हो नेमीसर साहिब वांदिया, वांदीनें लीधो सं-
जमनार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती
है मुगति मऊार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आग-
लै, मिलिया है मुगति मऊार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब
गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिंज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिंज्ञाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूछा करे, बिनय करी शीस नमाय प्रज्जूजी ॥
अविचल आनक में सुण्यो, कृपा करी मोय बताय प्रज्जूजी ॥ शिव-
पुरनगर सोढामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सारया
आतम काज प्रज्जूजी ॥ ठूटा संसारना डुख थकी, रहवानो
किहां ठाम प्रज्जूजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द लोकमां,
सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे,
तेहना वारे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस
जोजना, लांबी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जामी
विचै, वेमे माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला द्वार
मोतीतणा, गोडुग्ध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली
अधिणी, नलटो ठत्र संगण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजन-
स्वर्ण शम दादली, प्रठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन
थकी निरमली, सुंआली अतंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥
सिद्धशिला उलंवी गया, अधर रह्या सिद्धाज हो गोतम ॥
अलोकसुं जाई अरया, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि०
॥ ७ ॥ जनम नही मरणो नही, नही जरा नही रोग हो गोतम ॥
वैरी नहीं मित्रो नही, नही संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ८ ॥ झूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सौक हो गो-
 तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥
 शि० ९ ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नहीं नही वेद हो
 गोतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणूं नही खेद हो गोतम ॥
 ॥ शि० १० ॥ गाम नगर ए को नहीं, बसती नही ऊजाम हो गोतम ॥
 काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम ॥ शि०
 ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नही ठाकुर नहीं दास हो गोतम
 ॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु बरमाई वास हो गोतम ॥
 शि० १२ ॥ अनंता सुखमें जिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो
 गोतम ॥ सहुकोईने सुख सारिखा, सगलाने अविचल राज हो
 गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, बली अनंता जाय
 हो गोतम ॥ अवर जग्या रूखे नही, जोतमां जोत समाय हो गो-
 तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित ठै, केवलदर्शन खास हो
 गोतम, हायकसमकित दीपता, कदय न होवै ऊदाश हो गोतम ॥
 शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे भुलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥
 शिवरमणी वेगे बली, नवि कहे सुख अग्राग हो गोतम ॥ शि०
 १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन डालो द्यो अविस्त
 वाणी ॥ कहूं सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांहे वेम्मेरो ॥ १ ॥
 नगरी सोरीपुरपृथ्वीमें दीपे, रिद्धै समृद्धै अलकाने जीपे ॥ राजा समुद्र
 विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपे कर अधिकी बखाणी ॥ २ ॥
 तेहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणसुं घाले वै बाथो ॥ आणंद
 घणें वसंत आयो, कुली उचीसैं फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमबाजी
 सारू चलिया गोपालो ॥ रुफ चंग बाजै रेम्मे गुजालो ॥ रुखमण

राणी राधा सतनामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेम-
 नाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥
 राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई,
 जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरधू सखरी सरणाई, जुंगलने
 जेरी सखरी सजाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाळ कुहके करनाला, गोरो
 जी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजै धूधरमाला, मदऊरता
 मंगल जाकऊमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ला
 की राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग जराई ॥ सीस
 फूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले जालै टीकोजी सोहै, अ
 णियाली आंघ्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकवे-
 सर मोती जलके जलेरा ॥ ९ ॥ दामिमकुलियां दांत बत्तासे, वदनी
 बोले सार ठत्तीसै ॥ डुलनीतिलनी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर
 कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूमे नें गहणें जाइ न वखाणी, रू
 पैकर गोरी जीपे इंडाणी ॥ जांऊरनें नेवर धूधर धमकंती, हंसा तो जीपे
 सुंदर हालंती ॥ ११ ॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामेदेही गर
 काव कीधी ॥ फावेंते कपमै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न
 काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां ति
 ण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें
 मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता सता करता गहगाटो, कोमजी
 गधानें जादव थाटो ॥ धणुं मठसाला महा अजिमाणी ॥ केसरियेवागै
 मिलिया वै जानी ॥ १४ ॥ उरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही
 जानी नूपति जलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजामै, जातां कालनें
 जाल पठमै ॥ १५ ॥ तिहां मांहे नेमजी महावलवंती ॥ अनंता
 सुरपतिसुं नर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोजे जु चंदो, तिण विध
 मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ ठुमाया, अण-

परण्या नेमजी पाठाजी आया ॥ धिग्ग् संसार मायाजंजालो,
जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी
चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल वाल
ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम
नाथजीरो शिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चौढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चौढालिया लिखयते ॥
प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूखे रे तेहने चरणे नित
नमूं ॥ धुरि तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपा-
ध्याय मन आणियै ॥ (उल्लाखो) आणियै निज मन जाव सुद्धै,
उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमजूमिमांहे, साधु प्रणसुं ते
वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नें शुक्ल पक्ष बलि शील पाळ्यो ते
सुणो, जरतारने क्खो विन्दे तेहनो चरित जावेसुं जणो ॥ १ ॥
(ढाल) जरतक्षेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसे, कव्वदेसै रे विजय-
सेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लिखो, बालागणै रे ए-
हवो निश्चै मन कियो ॥ (उल्लाखो) मन कियो एहवो तेण निश्चै
परक अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टाल-
स्युं ॥ इकअवै सुंदर रूप विजया नाम कन्या तेवली, पिण शुक्ल
पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्म-
जोगे रे मांढोमांढे विहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुत्त विवाह सुहाम-
णो ॥ तब विजया रे सोले शृंगारजलाकरी, पिउमंदररे पोइती मन
उल्लट धरी ॥ (उल्लाखो) मन धरी उल्लट अधिक पढुता पिवा
पाते सुंदरी, ते देखि हरखे मेठ बोले शील निश्चो संजरी ॥ मुज
शील निश्चो परवअंधारे तेहना दिन तीन वै, ते नेम पालो शुक्ल
पक्षे हुं जोग जोगविस्सुं पवै ॥ ३ ॥ (चाल) इ मांजल रे वि-

जया मन विलखी अई, पिउ पूछै रे किम चिंता तुजने जई ॥
 तब विजया रे कहै शुक्लपक्ष व्रतमें लियो, व्रत चोथे रे बालापण
 निश्चो कियो ॥ (उल्लाखो) बालपणमें कियो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत
 पालस्युं, तो उज्जय पक्ष द्वि शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥
 तुझे अवर नारी परणने द्वि शुक्लपक्ष सुख जोगवो, कृष्णपक्ष
 अनज निमय पाली अज्जिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तब
 चलतो रे तसु जगतार कहै इसो, विषयारस रे कालकुटविष
 ह्वे तिसो ॥ ते ठंरी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे माता
 पिता न जणावस्यां ॥ (उल्लाखो) मातपिता जब जाणस्ये तब
 दिख्य लेस्यां धर दया, इम अज्जिग्रह लेईने ते जावचारत्रिया
 थया ॥ एकत्र सय्या सयन करतां खरुगधारां व्रत धरे, मन वचन
 काया करी सूधो शील वेजं आचरै ॥ ५ ॥ (ढाल २) विमल
 केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥
 आणी अधिक विवेक, आवक जिणदास, कहै विनयगुण परि-
 वरयो ए ॥ ६ ॥ सहस चोरासी साधु, मुऊ घर पारणो, करै मनो-
 रथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहै आवक सुणो, एह
 बात तो नवि मिलै ए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार, किहां वलि
 सूऊतो, जातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो द्वि तेह विचार, करो
 तुम्हें जिम तिम, फल अम्ह हुवै तेतलो ए ॥ ८ ॥ अठै द्वि कञ्च-
 देश, सेठ विजय वली, विजया जार्या तसु धरै ए ॥ जावयती
 अहवास, तेहनें जोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ९ ॥ जिण
 दास कहै जगवंत, ते मांहे एतला, कुण गुण कुण व्रत वै घणा
 ए ॥ केवली कहै अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपक्ष व्रतत
 णा ए ॥ १० ॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहै जग हूं वमो ए ॥ देशी ॥
 केवलीनें मुख सांजली, आवक ते जिनदास रे ॥ कञ्चदेशें द्वि

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो,
 शील शमो नही कोय रे ॥ शीलै देव सानिध करै, शीलथा शिव
 सुख होई रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजयाजणो, जगतसुं ज्ञो-
 जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारशानो फल लेई रे ॥
 ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूवै तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥
 केवलीने मुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥
 ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ जाय रे ॥
 कृष्ण शुक्लपद्म दंपती, जोजननो फल आय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥
 मातपिता जव जाणियो, प्रगट हूनु संबंध रे ॥ सेठ विजय विज-
 था लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ दाल ४ ॥
 केवलीनें पाले, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूंही, पालै निर-
 तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते मु-
 गते पहुंचता, दंपती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै,
 जावै जे नर नार ॥ ते बंठित सुख लहै, पहुंचै जवनें पार ॥ १९ ॥
 ॥ कलश ॥ इम कृष्णपद्म नें शुक्लपर्के शील पाढ्यो निरमलो,
 ते दंपतीना जाव शुद्धै सदा शुभगुण सांजलो ॥ जिम डुरिय दो-
 हग दूर जायै सुख आयै बहु परै, बलि सकल मंगल मनह बंठत
 कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे वैठी राणी कमलावती, जीणी तो उमै मारग
 खेद ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौत्तक उपनो मनमें एह ॥
 सांजल रे दासी आज नगरमें वढ़दो किम धणो ॥ १ ॥ कांतो
 परधान सखी मंझिया, कां केइ लंछ्या राजा गांव ॥ कां कोइ गा-
 म्यो धन नीतरयो, गामा रह्या ठै ठामो ठाम ॥ सां० ॥ आ० ॥
 ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी मंझिया, ना कोइ राजा लंछ्या

गांव ॥ जग्गूपुरोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवा
 चाव ॥ सांजल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥
 ३ ॥ बेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घएयोही पितामात ॥
 ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, जग्गू जसा तिणें मोह ललचात ॥
 सांजल हे रा० ॥ ४ ॥ इन सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां
 तो कमी नहीं काय ॥ सांजलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म
 मता नही गाय ॥ सा० दासी राजानें ए वाता जुगती नही ॥ ५
 ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई वै राजारे हजूर ॥ वचन कहै
 राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा
 ब्राह्मण गोमी रुद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोमी कमला कहै, सां
 जल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे रुद्धि परिहरि, ते तो घर भांदि म
 त आण ॥ सांजल हो राजा० ७ ॥ ए रुद्धिसुं अणणे कांइ धणो हुसी,
 राजारा मोटा वै ज्ञाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा
 कै काग ॥ सांजल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीगो नर जखै,
 नही परसंसवा जोग ॥ जग्गूपुरोहित रुद्धि तज नीसरयो, थे
 जाण्यो वै असी म्दारे जोग ॥ सां० राजा० ॥ ९ ॥ संक-
 लपियोमो पागो किम लियै, सांजल हो महाराज ॥ दान दि-
 यो थे पहिलां हाथसुं, ते पूगो लेतां नावै आंने लाज ॥ सांजल
 रा० १० ॥ निहच्चे तो मरणो राजाइक दिने, गोमीनें काम विशेष
 ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥
 सांजल हो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन जैलो करी, थे घालो
 जंमारारे मांदि ॥ तोपिण त्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमो
 थाय ॥ सांजल हो राजा० १२ ॥ सांजलनें इखुकारराजा बोलीयो,
 तूं जाबैनी वचन संजाल ॥ का तनें राणी जालो वाजियो, का
 काई कीधी मतवाल ॥ सांजल हो राणी राजानें करमा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी जोलो वाजीयो, ना कोइ
 कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वसियो धन थे आदरो, वरजण
 आई हो जूपाळ ॥ सांजल हो रा० १४ ॥ बलतो राजा राणीने
 इम कहै, इसमी वैरागण आय ॥ अजूं तो निजरां आवै नही, तूं
 बैठी ठै वर मांय ॥ सांजल हे राणी० १५ ॥ उत्तरवाली तो दीते
 नही, इसमी आई ठै मतवाल ॥ हुंतो घर ठोकीने नीसरी, थे
 पिण ठोको हो जूपाळ ॥ सांजल हो राजा आग्या देवो तो संजम
 आदरुं ॥ १६ ॥ रतन जम्तरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पणियो
 फंद ॥ इण रतै हूं थारे राजमें, रहिने पांमु आणंद ॥ सांजल
 हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोमनें, आरंज
 धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत थई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो
 सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मऊं,
 हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आलिप देखनें, मनमां-
 हे हरखित आय ॥ सां० रा० राग छेपरा ज्ञांगा लग रह्या १९ ॥
 मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ डुस्मन
 तो मनमें हरख पाभ्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥
 सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोन्नी सूरख थका, मुरऊ
 रह्या जोगमांहि ॥ पहिलाने डुखियो देखी चेतें नही, लागी राग
 द्वेपरी लाय ॥ सांजल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी वोटी
 पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पणियो आय ॥ आमिप सम
 जोग ठोमनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांजल रे प्राणी संय
 मथी सुख पाभिये २२ ॥ महल पिलंगादिक अग्रि ठै, ते पाभ्यां ठै
 आपणे दाथ ॥ कामजोगमें रक्त होयरह्या, ते तजदोय सांताथ ॥
 सांजलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंजीवारा जोग ठोमने, इय ज्ञावै
 दलक आय ॥ सहज वायु पंखीनी पणें, विचरस्यां आपणी दाथ ॥

सांजल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं जोग जाणज्यो, ए काम
 बधारे संसार ॥ साप ज्युं मोर घकी मरतो रहै, ज्युं पापसुं संक-
 स्यां इण वार ॥ सांजल रे प्रा० २५ ॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां
 संयमजार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां नय विहार ॥ सांजल
 रे प्रा० २६ ॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल बीज समान ॥ खिण २
 खूटै आजखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांजल रे प्रा० २७ ॥
 हस्ती ज्युं बंधण तोरुनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटै संयम
 लियां, सुणो कहुं तुं महाराय ॥ सांजल हो रा० सं० २८ ॥ इम
 सुणनें इखुकारराजा चेतियो, ठोकीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो
 ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सारयां काज ॥ सांजल हो राणी
 सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह ठोरुके, पायो जिनध-
 रम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥
 ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पावै सदा, सुमति गुपति
 दयाल ॥ जमरांनी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां०
 प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज वै, जव्यजीवनें उतारै
 पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं०
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समजनें, निरमल ज्ञावना ज्ञाव ॥
 ठएजणा थोमा कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, जृगुपुरोहित जसा नार ॥
 जृगुप्रोहितना दीय दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० सं०
 ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा जृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥ ७६ ॥ प्रथम जिनेसर पाव नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान
 शील तप ज्ञावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसरया
 राजगृही उद्यान ॥ संभवसरण देवै रब्धो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बैठी बारै परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रभु हुं वमो,
 मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमें, कुण बै मुऊ
 समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिखुं दान ॥ ४ ॥
 प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीधारी देवल चढै,
 सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरनें पारणे, कुण करस्यै मुऊ
 होम ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारै कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग
 सगलो बस करुं, मुऊ मोटी बै वात ॥ कुण २ दानथकी तिरया,
 ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ दाव ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥
 धनसारअवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थकर पद में
 दियो, तिणें सुऊनें अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हुं
 वमो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा,
 दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुसुख नाम गाथापती,
 पमिलाज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहु सुख लहै, ते तो मुऊ
 उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पमिलाज्यो
 ऊषिराय ललना ॥ शालिज्जइ सुख जोगवै, दानतणें सुपसाय ल-
 लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण
 ललना ॥ जतरत थयो चक्रवर्त्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-
 लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उमदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष
 ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥
 ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेवमी-
 रस बहरावियो, पाम्यो जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद-
 नबाला बाकुला, पमिलाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट
 थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव
 पारेवहुं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थकर चक्रव-
 र्त्तिपणें, प्रगटयो पुन्य पमूर ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गुजजन शिशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अ
 वतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में
 ऊधर्या, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुऊ
 पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दा-
 न तुं, किस्यो करै अहंकार ॥ आंवर आवै पहुर, याचकसुं विव-
 हार ॥ १ ॥ अंतराय बलि ताहरै, जोगकरम संसार ॥ जिनवर
 कर नीचो करै, तुऊने पमो धिकार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान
 तुं, मुऊ शूठै सऊ कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्थुं राजा
 होय ॥ ३ ॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी
 दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सऊ टले,
 शीले जश शोभाग ॥ शीलेसुख सानिध करै, शील वमो बेराग ॥ ५ ॥
 शीलै सर्प न आन्रमै, शीले शीतल आग ॥ शीलै अरिकरी केसरी,
 जय जावै सब जग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जय थकी, में ठोर
 व्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांजलजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ दाल २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहे
 जग हूं वमो, मुऊ वात सुणो अंत मीठी रे ॥ लालच लावै लो-
 कनें, में दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग
 जाणीयें, बलि विरती नही पण काई रे ॥ ते नारद में सीऊव्या,
 मुऊ जुन ए अधिकार रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिण्या बैरखा, अं-
 खराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव
 कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंडै घर आणी
 रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी०
 ४ ॥ चंपावार उघामिया, बली चलणियें काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय
 सुजद्रा जस थयो, में तसु कीधी जरीरे रे ॥ शी० ५ ॥ राजा मा-
 रण मांकीयो, गणी अजगार्यें दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासन

में कियो, में श्रेष्ठ सुदर्शन रख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह
 मंत्रीसरें, अ वतां अरिदल धंज्यो रे ॥ तिहां पिण सानिय में करी,
 वला धरम काज आरंज्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट
 किया, में अजेतरसो वारो रे ॥ पांखवनारी झोपड़ी, में राखी मा-
 म नारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, बलि शीलवनी
 दवदंती रे ॥ चेदानी साते सुत, राजीमती सुंदर कुंती रे ॥ शी०
 ९ ॥ इत्यादिक में ऊधरया, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर अ-
 नु वीरजी, पहिले मुऊ आबंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥
 तप बोड्यो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुऊ आगल तुं
 किसुं, सांजल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा जोजन तें तज्या, जगमें
 मीठा नाद ॥ देहतणी शोजा तजी, तुज्झां किंथो सवाद ॥ २ ॥
 नारी थकी मरतो रहे, कायर किंथुं वखाण, कूरु कपट बहु के
 लवी, जिख तिथ्य राखै प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुज्झ आदरै, ठंठ
 सहु संसार ॥ आप एक तूं ज्ञांजतो, बाजा ज्ञांजै चार ॥ ४ ॥ क-
 रम निकाचित तोरवा, ज्ञांजु जवजय जीम ॥ अरिहंत मुज्जे
 आदरै, वरस ठग्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरै, मुज्ज
 लबधै सुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वना, आनंद अंग न साय ॥
 ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रश्च पां-
 यकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसै उपशमें, कु-
 षादिकना रोग ॥ लब्धि अठ्ठावीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥
 जे में तारया ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार रित पाया
 सो, देशो मुऊ साबास ॥ ९ ॥ ॥ दाल ३ ॥ नशखरी
 शी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कधी चार हो सुंदर ॥ १० ॥
 पिण तिण जव ऊधरयो, मूक्यो मुगति मजार हो सुंदर ॥ ११ ॥
 तप सरखो जग को नही, तप करै कर्मनूं सूख हो सुंदर ॥ १२ ॥

करवुं अति दोहिलूँ, तपमां नही को कूरु हो सुंदर ॥ त० २ ॥
 सात माणस नित मारतो, करतो पाप अधोर हो सुंदर ॥ अर्जुन
 माली में ऊधरयो, वेद्या कर्म कवोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिपे
 एनें में कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुतर सहस अतेगरी,
 सुख भोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप काले घ
 णो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमली सेवा करै, ते में
 कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लबधे कियुं, ला
 ख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुऊ शक्ति
 अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, बांध्या जिन
 चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिवूज्यो, निण मुऊ अधिक
 जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधनो अ
 णगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद बखाणीयो, ए पण मुऊ अधिकार
 हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै, डुकरकारक एह हो सुं
 दर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुऊ महिम। सवि तेह हो सुंदर ॥ त०
 ९ ॥ नंदिपेण विहरण गयो, गणिका कीती द्रुम हो सुंदर ॥ वृष्टिकरी सोव
 नतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इम बलज्जद्रप्रमुख
 बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी,
 पहिलो मुऊ प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ जाव कहै
 तप तूं किसुं, वेमयुं करै कषाय ॥ पूर्वकोमो जो तप तपै, कृणमां
 खैरुं थाय ॥ १ ॥ खंयक आचारज प्रते, ते वाढ्यो सवि देश ॥
 अशुज नियाणो तूं करै, कृमा नही लवलेस ॥ २ ॥ द्वीपायन
 रुषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्न सनाह ॥ ते तब क्रोध करी तिहां, किधो
 द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शील तप सांजलो, म करो जूठ गुमान ॥
 लोक सडूको साख दे, धर्म जाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक गो
 त्रिएहे, ये व्याकरणी साख ॥ काम सैरे नहि कोइनुं, जाव जणे में

पाख ॥५॥ रस दिन कनक न नीपजै, जल दिन तरुअर वृद्ध ॥ रस-
 वति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र
 मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ जाव विना ते सवि वृथा, जाव फलै
 नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विधश्कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो
 जाव न हुंततो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ जाव कहे में एकले,
 तारथा बहु नर नार ॥ सावधान अइ सांजलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥
 (ढाल चौथी ॥ कपूर हुवै अति उजलो रे, एदेशी) ॥ काननमें का
 नसग रह्यो रे, प्रश्नचंद रुषिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, तत-
 खिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, जाव वनो संसार ॥
 एतो बीजो मुज परिवार, सौ० ॥ दानादिक विण एकलो रे,
 पोहचाडूं जवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एला-
 पूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०
 ३ ॥ जूख तृषा खसैं अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल
 महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाजघी लोच
 वाधे घणो रे, आयो मन वैराग ॥ कपिल अयो मुनि केवली रे,
 ते मुजनें सोजाग ॥ सो० ५ ॥ अणिकासुत गडनो धणी रे,
 खीणजंघा बलि जाण, कीधो अंतगम केवली रे, गंगाजल गुण
 खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसैं तापसजणी रे, दीधी गौतम दिस्क ॥
 ततखिण कीधा केवली रे, जो मुज मांती सीख ॥ सो० ७ ॥
 पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी
 बोरुव्या रे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंमरुइने चालतारे,
 दीधो दंम प्रहार ॥ नवदीक्षित अयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी
 चार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पतिलाज्यो उवास ॥
 मृगलो जावना जावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥
 निज अपराध खमावती रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीने

में दिखुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपर
 रे, देखी पूत्रनी रुद्धि ॥ मुऊने मनमांहे धरयोरे, ततखिण पामी
 सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाढ्यो मारगे रे, चांण्यो चपल
 तुरंग ॥ दर्डुर नामे देवता रे, तेह अयो मुऊ संग ॥ सो० ॥ १३ ॥
 प्रभु पाय पूजन नीसरी रे, दुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचक्षां
 करी रे, पोहती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोना
 कारमी रे, रूप किसुं अजिमान ॥ नरत आरोलाचुवनमां रे ॥
 पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढजूति कलानिलो रे, प्र
 गद्यो नरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप
 ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काजलग रह्यो रे, गजसुकमाल म-
 साण ॥ सोमल शीस प्रजातीयो रे, सिद्धि गयो शुज जाण ॥ सो०
 ॥ १७ ॥ गुणसागर अयो केवली रे, सांजल पृथ्वीचंद ॥ पोते
 केवल पामियो रे, सेव करै सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक
 में ऊधर्या रे, मूक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी रे,
 मुऊने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर
 कहै तुमें सांजलो, दान शील तप जाव ॥ निंदा ठै अति पापणी,
 धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पशनिंदा करतां यकां, पापे पिरु नरा-
 य ॥ वेद राम बाधै घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक स-
 रिखो पापीयो, जूंको कोइय न दिठ ॥ बलि चंशाल समो कह्यो,
 निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद
 नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासै निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को
 केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो,
 सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको जाव ठै, एकाकी
 समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें जला, पण जाव विना अकथञ्च
 ॥ ६ ॥ अंजन आंखै आंजता, अधिको आणी रेख ॥ रजमांहे

तज काढतां, अधिको ज्ञाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण
 जणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चन विध
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ५ सी ॥ वीर जिणेसर
 इम जणे रे, वैठी परखदा बार, धर्म करो तुमैं प्राणिया रे, जिम
 पामो ज्ञाव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे,
 जवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मशकी
 धन संपजै रे, धर्मशकी सुख होय, धर्मशकी आरति टले रे, धर्म
 समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति परतां प्राणिया रे, राखै
 श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहको कारमो रे, मति जूलो जवि जर्म रे ॥
 ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे ठै जेह ॥
 ते जिनवरना धर्मथी रे, छत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥
 सोलेसे वासठ सखे रे, सांगानेर मजार, प्रद्वप्रनु सुपसानले रे,
 एह जणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे,
 खरतर गह कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु-
 नींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत ज-
 सवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ ध० ॥
 ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ स-
 मयसुंदर वचक जणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥
 दान शीयल तप ज्ञावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां
 ज्ञावसुं रे, रुद्धि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति दान शील
 तप ज्ञाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमा नित्य धारो, अरि क्रोधनें मन्नथी दूर
 वारो ॥ संतोपवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर आन उठाही ॥
 ॥ १ ॥ पछ्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्त्वनी वात तेणे न

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो गो, जैनमार्ग ठंरी जुलां
 कां जमो गो ॥ २ ॥ अलोत्ती अमानी निरागी तजो गो, सलोत्ती
 समानी सरागी जजो गो ॥ हरि हरादि अन्यथी सुंरमो गो, नदीगंग
 मुकी गल्लीमां पमो गो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ
 देव घाले गले रुंममाला ॥ केइ देव उत्संगे राखेवे वामा, केइ
 देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ
 मांस जह्नी माहा विक्रमाला, केइ योगणी जोगिणी जोग मांगे,
 केइ रुद्रणी बागनो जोग मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश रा
 खै, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥ ६ ॥ जदा लोचना ओकनो पार
 नाव्यो, तदा मयने विंडुन मन जाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी
 आस राखे, तेह पिंमने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी जीम
 ते केम जाजे, फूटो ढोल होवे कहो केम वाजै ॥ ७ ॥ अरे मूढ
 भ्राता जजो मोहदाता, अलोत्ती प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ ८-
 त्नचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंमसुं मत
 राचो ॥ ९ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेवै, सविधर्म एकत्व जूलो
 जमेवै ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शू-
 रवीरं ॥ १० ॥ किहां स्वर्णधालं किहां कुंजखंमं ॥ किहां कोइवान
 किहां क्षीरमंमं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु
 किहां बागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां क्रमवाणी, किहां
 रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवजोगी, किहां
 इंददेही किहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म
 धारी, नमो वीरस्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिली सेजमां स्वप्न-
 थी राज्य पामो, राचे मंदबुद्धी धरो जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अग्रिर
 सुख संसारमां मन्न माचे, जना मूढमां श्रेष्ठसुं इष्ट वाजै ॥ तजो
 मोह माया हरो दंज रोसो, सजो पुण्य पोसी जजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आब्या आस धारी प्रजु
पाय स्वामी ॥ तूंही२ तुंही प्रजु पर्मेरागी, जवफेरनी शंखला मोह
जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी ठै एक अर्ज मेरी, दीजै दासकूं
सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुआ गुरु आज मेरो, विवेकें
लह्यो में प्रजु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ बंछित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥
निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अमृत अक्षर
अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ बीतराग सैमुख वदे, पंच
परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्त्यां संपत्ति
प्राप्य ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल
मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु ज्ञापित सार, सोजवियां मन शुद्धसैं,
नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥ (छंद हाटकी) नवकार अकी
श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समस्तान विषे शिव नाम कु
मरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपंता नरक निवारै, पामे ज
वनो पार ॥ सो ज्ञवियां ज्ञते चोखे चित्ते नित जपियै नवकार ॥ ५
॥ बांधी वरुसाखा ठीके बैसी हेठल कुंरुहुताश, तस्करने बलि मं
त्र समर्प्यो श्रावक उड्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विष
धर विष टालेढाले अमृतधार ॥ सो० ६ ॥ बीजोश कारण राय महा
बल व्यंतर छुट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्र
तिबोध ॥ नवलाख जपंता आयै जिनवर एहवों ठै अधिकार ॥
सो० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध,
परजव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परधल रिद्ध ॥ ए मंत्रअको
अमरापुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी कासी
तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीगो श्रीपासकुंमारे पन्नग अधवलतें

ते टाले ॥ संज्ञलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इन्द्रुवन अवतार ॥
 सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण
 ध्याने कुष्ट टट्युं नंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नव-
 निधि आयै धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णजुजंगम
 घाढ्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रज्ञावे हारफूलनो, वसुधा-
 मांहि विद्वात ॥ कमलावतियें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥
 सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पामी बाण प्रहार,
 पद पंच सुणंता पांसुपतधर ते अइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख
 महिमा मंदिर नवडुख जंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल
 कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकोरे गया देवलोके
 विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसे
 जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार
 अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम ज्ञाखै जगवंत ॥
 पूरवदिसि चारै आदि प्रपंचे समरथां संपति सार ॥ सो० १४ ॥
 परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंरगिरि ऊपर
 प्रत्यह पेख्यो मणिधर नें इक मोर ॥ ~~सर्वगुरु~~ सन्मुख विधियें
 समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूखी आरोपण तस्कर
 कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अ-
 मरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार
 ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच
 सिंहाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित, पंच प्रमाद विषय तजो
 पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ (कलश ॥ ठप्पय) नित्य
 जपिये नवकार सार संपति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो
 एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिदंत सुसिद्ध सुद्ध आचार्य जणीजै,
 श्रीजवज्ञाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजै ॥ नवकार सार संसार

वै कुशल लाज वाचक कहै, एक चितै आराधता रुदिसिद्धिवंशित
लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणी लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥
जाकी ठवि कांति अनोपम उपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-
ज्योति जिगामिग जिगमग२, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप
वखाणाहि नूपत, तूही त्रिचुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर
लोक सबे मिल, जाका जस्त गुणंदा हे ॥ तेरी खिजमत्त करे
इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आगनिकाड्या नाग,
किया वरुजाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला
अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रत्न वन पंचागनि,
ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी उद्धाधारी, अढप अहार
लियंदा हे ॥ सब जेष्ठ सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा
हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥
महिमा बद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण
वत्तां धरिय उक्ततां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अस्कै कुण तो
परके, मेरा हूंस्त पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो
गारंज जगंदा हे ॥ ४ ॥ जननी मन आसा पूरण पासा, औरापत्ति
सजंदा हे ॥ गल घूग्घरमाला जाण हेमाला, दंताला उपंदा हे ॥
वर वीर घंटाळा मद मतवाला, जोलालो जलकंदा हे ॥ ५ ॥
पंचरंगी परकर सजी सस्कर, ढालांसुढलकंदा हे ॥ धतकरे धत्ता मत्ता
अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खमे रहाए, प्रचु
झानी आस्कंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अग्निमानी तप अज्ञानी, पावक
जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाम डफाम दिखाले लक्रम, वरु फणधर
नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा हे ॥

तिण किया नियाणा तप खजाणा, कोमी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥
 हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन
 सुतन महाराज विषय डख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुठी
 लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रभु अप्रतिबंध वि-
 हार कियो तब, रनवन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे
 कानसग मऊरे, कमठासुर दाव लहंदा हे ॥ वना असुराणा बली
 हेराणा, पिठाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार
 विरोध, महा अजिमान धरंदा हे ॥ वाजल मतवाली नीली काली,
 वायु महा वाजिंदा हे ॥ ९ ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट,
 दिवाकर तेज ठिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा नमटी, अरु वाजू
 गाजंदा हे ॥ गरमाटा वाटा सुणिया आटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥
 हुआ अकाला धुर वरसावा, बीजलिया पीवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी
 धारासुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चह्ने जल खावा नदियां
 नाला, हेमावा हालंदा हे ॥ दरियाव नलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि
 मावंदा हे ॥ दिगपाल दहट्टां धरिय उत्थट्टां, खोणीपत्ति खिसंदा
 हे ॥ ११ ॥ वने पाहामां जंगी जामां, सजामां दाहंदा हे ॥ सम
 दाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर वूढा जाण
 किरुवा, जूग मन असुरेंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, कान
 सग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ नवसग्गाहंदी केल करंदी, पाठा
 नांहि मुमंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान
 धरंदा हे ॥ प्रभु नासा तांइ नदी आई, तोही नांहि खुजंदा हे ॥
 देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीन सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिण
 अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण वेग चलंदा हे ॥ तिण अवधि
 प्रयुंजी दीठे प्रभुजी, तन मन अति नलसंदा हे ॥ तिहां पदमा-
 वती देव सकृती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराणा वैठ वि

माना, पांवां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फलनाग हजारों कर विस
 तारा, उत्तर ज्युं ठावंदा हे ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरब
 प्रीत सुखंदा हे ॥ इंडाणीनारी सब सिणगारी, जोवन अंग जिल
 कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सो
 हंदा हे ॥ अणियाला कज्जल जलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा
 हे ॥ नकवेसरनत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती जलकंदा हे ॥ नठण
 पाटंबर जीणी अंबर, आभूषण जलकंदा हे ॥ १६ ॥ नर कंचु क
 सिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा
 हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कमियां सोने जमि
 यां, हीरा बीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घूघरियां पाए धरियां,
 पग नेवर रणकंदा हे ॥ ले जांऊर ताला ताल कंसाला, पस्कावज
 वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला बीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा हे ॥
 बाजे सरणार्ई सखरी घार्ई, नगारा रोमंदा हे ॥ १८ ॥ पउसा वै
 रुष्टा आण जलष्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइ२ तान त
 रंमा, रस जेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न बीता, पा
 वस जल पसरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिठाण्या,
 कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्तो आख्या रत्ती, किच्ची रीस
 आवंदा हे ॥ रे मुठा धिठा चित्त विणठा, क्युं नांही समजंदा हे ॥
 साहिव बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए
 कमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा हे ॥ असमांन खमाई
 रीस नरार्ई, हिकाइ बजरंदा हे ॥ किच्ची बहु गह्वां पमै दहह्वां,
 धरुहरु देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र मराया तव ते आया, पावां आय
 लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोमि खमाया सीस नमाया, जगनायक
 जिनचंदा हे ॥ तूं साहिव सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा
 हे ॥ तें रीस न धरियां क्षिणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥

कमठासुर किन्ती बहु विनती, निज अपराध स्वमंदा हे ॥ ११ ॥
 सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा हे ॥ सुध सं
 जम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा हे ॥ सम्मेतशिखर पर
 चढकै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीरती जग ऊपती, पर
 न को पावंदा हे ॥ १३ ॥ तूं सच्चा रखे जेद परखे, गुमानी मो
 रंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं
 दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अछा पीर फकीर
 मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुह्मां मरद अ
 टह्मां, तूंही शेष फरींदा हे ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मश्यामें मु
 लकंदा हे ॥ तूं बूढा वाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं
 कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा हे ॥ २५ ॥ बाबागो-
 साई जेद न पाई, ज़ीरू पड्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरा-
 यण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा
 देवंदा हे ॥ तूं एकां अण्णे एक न्अण्णे, अिति निज सुध आपंदा हे
 ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संझा, सीरणिया वाटंदा
 हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत ज्ञासे, जीणे सुर गावंदा हे
 ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेमा धुखंदा हे ॥ कुंकुम कसतूरी
 केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला
 हंदा, टोमर कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलावां जरीया ठावां, परमल
 तिहां वासंदा हे ॥ कसाबोई चंगी रचिये अंगी, फूलां बीच फावं
 दा हे ॥ आजूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंरुल कान जिगंदा हे ॥
 २८ ॥ सूरत सोहंदी मूरत हंदी, दीठां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि
 जानं मोजां पानं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कथूं ग
 ह्मां हुकम अदह्मां, समकित मनउलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिहा
 रदासा, तुऊ सेवक विलसंदा हे ॥ घग्घर नीसांणी पास बखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीधग्घर नीसाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवेन प्रारंभ ॥

॥ विलशे रुद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगै पुण्यदशा सफली
॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंछित आपै दादो रंग
रली ॥ १ ॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोछव राजेला ॥ सुप-
सायें गुरु चढती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही
दिन आयै सबला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ
पायक बहुला, किल्लोख करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वीजै चमर नि
साण घुरै, नर बै दरबार खमा पुहरै ॥ जय २ करजोमी उचरै, सा
निद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा जोजन पान सदा, डख
रोग डकाल न होय कदा ॥ अविचल जलट अंग मुदा, गुरु कूरम
दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ घमघम मादल नाद घुमें, बत्तीसे नाटक
रङ्गरमै ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें
॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहरैं बेलानल होयरनें ॥ ध्या
वि कुशल गुरु एक मनें, जूँजक सुर मंदिर जरै धनें ॥ ७ ॥ तत
खण घण खंच्यो आवै, करि स्यामवटा मेह वरसावै ॥ तिसीयां
तोय तुरत पावै, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां
जल कल्लोख करै, प्रवहण जवसायर मझ मरै ॥ वूमता वाहण जे
समरै, ते आपद निश्चेतुं नवरै ॥ ९ ॥ खरुखरु खरुग प्रहार वहै,
सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल २ गुरु नाम कहै, ते खे-
मकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुंन सकल परचा पूरै, श्रीनाग
पुरै संकट चूरै ॥ मंगलोर अधिके नूरै, देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥
वीरमपुर वानै सुधरै, खंजायतपुर विक्रमनयरै ॥ जिणचंद सूर पा
टे पवरै, जसु कीरति महीमंजल पसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम-द
क्षण आगै, उत्तर गुरु दीपै शोभागै ॥ दहदिशि जन सेवा मागै,

श्रीखरतरंगवती महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जनपद गामे, गा
ईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पद
वी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजननें सुखिया
साखै ॥ समर्यां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक ज्ञाखै
॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सगुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश
फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपत्ति आश फलै ॥ १
॥ जय २ जिनदत्त सूरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ ज-
सु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥
शुभ्र मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥
आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥
जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश वावन खेतलवीर कियां ॥
जसु नामे न पमे बीजलियां, नूत प्रेत न कर सके बलवलियां
॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधो, पंच पीर नदी जिण
पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु
सिद्ध बाधी ॥ ५ ॥ सुत सुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा
नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक
कीध सहू ॥ ६ ॥ वरुनगरे ब्राह्मण द्वेष धरो, मृत गाय लइ जिण
चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेध सहू गुरु पाय
परी ॥ ७ ॥ वज्रमय अंजो दोष खंन कियो, पोथी परगट परजा
व धियो ॥ विद्या सोवनवरणे सजियो, वर नयर उज्जोणी सुजश
लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंवर वंसे जीवदया, मंत्री वाठग परसिद्ध
अया ॥ बाहरुदे कूखै जनम जणूं, ते चवदे विद्या जाण धणूं
॥ ९ ॥ इग्यार बत्तीसै जनम जणूं, इग्यार इगतालै दिऊ शुणूं ॥

युगवर इग्यारै गुणहत्तरै, स्वर्गे बारेतै इग्यारै ॥ १० ॥ जिनवल्लभ
 सूरी पटोधरणं, परजाव उदेसर जयहरणं ॥ नवनिधि लबमी
 संपति करणं, वलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ शुंज
 सकल श्रीअजमेरे, गढमंनो वर वीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल
 मेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा
 सागै, जावठ दालिद दूरे जागै ॥ मेरे असमालखानके सोजागे,
 गुरु पुरमें कीरति जागै ॥ १३ ॥ धन२ जे सहुरु ध्यान धरे,
 तेरनवन पूजा जेह करै ॥ गढ खरतरनी महिमा पसरै, कवि
 सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सहुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसद जिनसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव
 वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ (चोपाई) चंद
 कुलावर पूनमचंद, बंदो श्रीजिनकुशल मुणिंद ॥ नाम मंत्र जसु
 महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंनल सवि-
 याणो गाम, धण कण कंचन अति अजिराम ॥ जिहां बसै जि-
 ढहागर मंत्र, जैतसिरी जसु धरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे
 तीसे जम्म, सेताले सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरें जसु पाट,
 निव्यासियै तसु सुरगे वांट ॥ ४ ॥ चूमंनल सरंगे पायाल, अचि-
 राचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रजु प्रताप नवि माने सोय, में नवि
 नयणें दीगो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन सुवन्न, पुन्नहीण
 पामें बहु पुन्न ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मना करतां गुरु
 ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संप-
 ति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते बंनि नवि मंमै व्याप ॥
 ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उल्कंवा जिहां ॥
 सेवता सुरतरनी गंइ, निभै दालिद मेटे बांदि ॥ ८ ॥ विसहर

विसनरे विस नरनाह, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रजु नामें ते न
 करै पीरु, जाजै जावठ जवजय जीरु ॥ ए ॥ रोग सोग सवि
 नासै दूर, अंधकार जिम जगै सूर ॥ मूरख फीटी पंथित थाय,
 प्रजु पसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिग्गज जिमसासन उ-
 द्योत, जिहांअठै जवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में जेव्यो आज,
 रलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअं-
 गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उदयो पर-
 मानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धन्ने गिलियो, जुगपवरागम जो
 में थुणियो, चंद्रगच्छ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी
 पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥ १४ ॥
 वार१ एक चित्त जणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज
 आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै, मुलक वाहण
 पुरमें मन हरसै, अजिय जिणेंसर पर जुवणें ॥ १६ ॥ कीयो क
 वित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत
 संसो धरो मनै ॥ १७ ॥ जिम१ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल
 मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय थुणो ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु
 गुण अजिनंदै, रुद्धि समृद्धै सो चिरनंदै, मनवंठित फल मुऊ हुवो
 ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ
 आश धरे, गुरु मोन ग्रहां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिलो सद
 गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी
 चिरियां आयवणी, केहवी करिये तुऊ अरज घणी ॥ हिव अलगा
 वो तो वेगा आवो, हिव ढील घनीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद
 गुरु खरतर गच्छ साचो, कोइय न जाणो तुऊने काचो ॥ इण संक
 टमें आलश म करो, दादा इसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक
 पमी सदगुरु हमसुं, तो ज्युं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा हठ

थे मत ताणो, निशे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सब
 श्रीसंघ अठा लगै, पाठा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये
 गुरु अरज इसी, दिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुश
 ल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद-ले
 नजवालो, परघल निज ठेरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गमाथे
 ए गावो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजो हुय सगला रंगरली,
 जिनचंदनी आस्या सकल-फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥
 सदगुरुजी थे सांजलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध
 करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संप
 ति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, आंहरा विरुद अने
 क हो ॥ आं समस्यां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो
 ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥
 सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥
 पम्किमणामांहे बीजली, बली२ ऊबकाय हो ॥ थे मंत्री
 राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्चव क
 रतां उच्चमें, मूँउ मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवानियो, संघ
 मांहे राख्यो दादे सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वरुनगररे ब्राह्मणें, देहरे
 धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पा
 य हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकोया तें सहू डुस्क
 हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुख हो ॥ दो०
 ७ ॥ अंबरु हाथे अकरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग
 तूं जयो, आखै अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ आंजो वज्र विदारनें,
 पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअकरे, उज्जेशीमांहि लीध
 हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा ठै ताहरा, कहतां नाधै पार
 हो ॥ जागसंजोगे दादो जेटियो, अरुवनियां आधार हो ॥ दो० ॥

॥ १० ॥ हुं वूं सेवक ताहरो, ये आपो धन रुद्ध हो ॥ कनककीरत
 सुपसानलै, लाज्जनदय सुख सिद्ध हो ॥ दा० ११ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशण सदा देवो ॥
 दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथां आपे सुखशाता, दादो
 जगबंधव जगगुरु आता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगले पूरै,
 दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो डुरित हरै सहूनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥
 दादो अलगांथी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा
 दादाजीनी जोरु कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे
 राजै, जिहां सुजशनगारा नित वाजै, दादो गोगावां सेहर ठाजै,
 दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकरु घोली, हाथे लेइ सोवन क,
 घोली, पूजो दादाजीनें मिलइ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरति-
 यां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन
 सासन नित उजवालै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत
 मादाराजा, दादो राजै खरतर गठ राजा, दादो समरथां सफल
 करै काजा ॥ दा० ॥ ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी,
 दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जातं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥
 दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन ग,
 हगाटै, जसु थांन सोहे जग थिरथाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिरु
 निजर सुऊ पर करियै, दादा आरति पीमा छुख हरियै, दादा जिम
 जग जयकमला वरिये ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध कर
 ज्यो, दादा छुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवंठित फलज्यो ॥
 दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गमालै,
 सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै,
 सेवकनी चिंता चूरै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ उत्तरीनितरी ठवि ठाजै,
 विचमें थिर धुंन विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ ऊलरे यात्री मिल

आवै, दादोजी दीठां सुख पावै हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घस
 जरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ८ ॥ पूजो
 पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ९ ॥
 दादोजी दुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा०
 ॥ १० ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥
 ॥ गा० ॥ ११ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी
 हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ अलगांथी रोग गमावै, गुरु पूज्यां वंगित पावै
 हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण
 वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ ग्रह गोचर चोर
 जंजालै, पीमा हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १५ ॥ बाजै
 जग जशना बाजा, राजै खरतर गछ राजा हो ॥ गा० ॥ १६ ॥
 जसु जैतसिरी वर माता, जिद्धा गरमंत्र विख्याता हो ॥
 गा० ॥ १७ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥
 गा० ॥ १८ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासै
 हो ॥ गा० ॥ १९ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनजक्ति जतीसर
 वंदे हो ॥ गा० ॥ २० ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सदाइ मेरे श्रीजि-
 नकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमांहे प्रमटयो, खरतर गछ वरू
 ॥ स० ॥ वावनेचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम जरू ॥ स० १ ॥
 चिंता चूरण विघ्न विमारण, दालिइ दूरहरू ॥ स० २ ॥ दिन३
 साहिब चढते वानं, ध्यावो ग्यानधरू ॥ स० ॥ वाजै जेहना
 जशना बाजा, ठावी ठामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अठारसमें
 अरुसवै, मिगसरमाश थिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसद्गुरु जेदे,
 श्रीजिनहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गमालै चरण नमंता, तूठो
 कद्वपतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिने, उदयरत्न करू ॥
 स० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जो, समरंता दादोजो

आयो ॥ संकट देख सेवककूं सदगुरु, देराजरतें ध्यायौजी ॥ स०
 ॥ १ ॥ दादा वरसे मेहनें रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो ॥
 पंचनदी हम बैठे बेनी, दरीयै चित्त मरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥
 दादा उच्चजणी पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो ॥
 समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स०
 ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ ज्ञाया जक्तिसूं पूर रहो रे,
 डरिजन सब डुर हरो रे ॥ ज्ञा० ॥ मेरे मनमें जक्ति वैरागी, चित्त
 परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी ज्ञाग्यदशा अब जागी, जीया हो
 ज्ञा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आवो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥
 बलि अकृत थाल बधावो, जीहा हो ज्ञा० ॥ २ ॥ गुरु महिमावतं
 सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया
 हो ज्ञा० ॥ ३ ॥ घस केसर जरके कचोली, मांहे मृगमद कुंकुम
 धोली ॥ गुरु पूज रचो जर जोली, जीया हो ज्ञा० ॥ ४ ॥ श्री
 जिनदर्प सूरिसरराजा, बाजै जग जशना बाजा ॥ सत्यरत्न करै
 सुज काजा, जीया हो ज्ञा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः
 ॥ राग कैरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो जवि हितसुं, कु० ॥
 कशर चंदन कपूर अरगजा, जाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु०
 १ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती, मन सुध माल करै जवि रुच-
 सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो
 आतम रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आता
 पूरै गुरु घणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारै ज्ञान बधारै, रूप रंग
 देवै चित हित मतिसुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ कुशल सूरिंद गुरु सानिधका-
 री, परतिख परचा पूरै संतसुं ॥ कु० ॥ ६ ॥ श्रीजिनदर्प सदा
 सुविवाशी, सत्यरत्न सुख एही उतसुं ॥ कु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥
 ॥ राग देवश्रीचलत ॥ आज करो रे उवाह, श्रीजिनकुशल

सूरिंद आगै ॥ आ० ॥ आ आन्ही बेला नै नै आगे दाव, इण
 आगे बेला क्यूं करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो
 मनरंग, हिलखिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै
 वय सार, फुलवारीनो नहीं जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अकृत
 श्रीफल ढोवै जेह, पुत्र कलत्र पासे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥
 सुर नर नारी ऊजा करजोरु, कोण करै म्हारा दादाजीनी होम
 आ० ॥ ४ श्रीखरतर गह्वरपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार
 ॥ आ० ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु
 गरीबनिवाज ॥ आ० ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै ठठरंग, सत्यरत्न मन
 ग्यान नमंग ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग बंगालोघाटो ॥ में
 निरख्या गुरु माहाराज, बतियां हर्षजरी ॥ में० ॥ अमल अनंत
 गुण आगरु रे, समतारसनो धाम ॥ परम परम परमात्मा रे, वं
 षित दायक स्वाम ॥ ठ० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन
 प्रतिपाल ॥ जविजन जके जावसुं रे, ब्यावै जरश आल ॥ ठ० २ ॥
 केशरचंदन कुमकुमारे, जरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती
 रे, पूजै सहियर साथ ॥ ठ० ३ ॥ कुशल सूरीसर साहिबारे, श्रीजिन
 चंद सूरी पाट ॥ बलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै धणुं गहगाट ॥
 ठ० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन
 हर्ष सूरीसरु रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ ठ० ५ ॥ इति पदं ॥
 ॥ राग प्रज्ञाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जातं गुरुरा
 य चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु, सफल धर्मी
 सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम संगल गुरुरायकी सेवा, अशुज
 करम सब हरणकी ॥ वा० २ ॥ दालिज्जंजन अरि सब गंजण ॥ प-
 ग२ सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी, सर
 ण अही इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दा

ज्ञा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥
 अब मोहि दरसन दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी ज्ञात क
 रो मेरे सहगुरु, ज्हां मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥
 जलदातार विरुद अमृतसर, श्रवण अंजलजर पीजै ॥ सुरतरु
 शम्भ दरसन विन देख्यां, कहो नयन किम रीजै ॥ कु०
 ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥
 परमजगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥
 इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो जरपूर, सेवकजन मन
 वंछित पूरण, समस्यां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रे
 मरस पूरण, अशुभ हरण जये दूर ॥ संघ नदोकर सहगुरु मेरा,
 बीनवै श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल
 लूवरकी ॥ सहगुरु पूजन जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण
 गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल जेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी
 पूज रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारुदेशमें सोजता, नगरवी
 काणे राजे हे माय ॥ गाम गमालै दीपता, ज्यांरी महियल महि
 मा गाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समस्यां संकट चूरता, कुशल करण
 अवतारी हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंधनें, खरतर गह्वर अधिकारी
 हे माय ॥ सा० ३ ॥ दूर देशांतरश्री घणा, हिलमिल यात्री आवे हे
 माय ॥ लुल १ शीत नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥
 स० ४ ॥ सऊ सिलगार मनोहरू, ठमर पाय ठमकावे हे माय ॥
 तन मन प्राण लोनावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥
 विठड्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनो
 रथ पूरवै, परघल लखमी ड्यावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विषमी वे
 ला वाटमें, समस्यां सानिय आवे हे माय ॥ नूखां नोजन मेलवै,
 तिनियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवै नित नवां,

आन आंगल धिर आट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामगी, गावै
 गुण गद्गाट हे माय ॥ स० ॥ ७ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै;
 जवि मिल ज्ञावना जावे हे माय ॥ चंद फते मुनि नित नमै, पर
 मानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥
 श्रीसद्गुरुजीसैं वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अ
 रज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सु-
 धकर ध्यान लगायो ॥ महिर, निजर अब कीजोये जी, चरणक
 मेल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट डुख मेटो,
 सोमवार पूनम दिन जेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, वधती
 संपद सारी ॥ दादा० ॥ २ ॥ नर नारी अपठर सिल आवै, अतर
 गुलाब केवलो लयावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर
 क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरै, चिंता दोखी ड
 स्मन चूरै ॥ धन१ सद्गुरु जगज्यो रे, सहस्र किरण अवतारी ॥
 दा० ॥ ४ ॥ गणेशसे अछावन वरसै, कातीपूनम दिन जलसै ॥
 गङ्गपति कीर्ति सूरीसरू रे, वंदै वार हजारि ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस
 परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुजै समजीजै ॥ जगमें सु
 रतरु सारखो रे, कीर्ति ठारही आरी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणें व
 रदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल
 सूरिंद धणी रे, कहै रामरुदिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥
 ॥ पुनः ॥ ॥ चाल जरतरीकी ॥ सद्गुरु दीनदयाल, गङ्गपति
 दिनकर लुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, डुखंतमहारण दिनम
 णी ॥ १ ॥ गढ सवियाणो जी देश, गाजेन कुल उदयाचले ॥
 जिह्वासाह पितेश, जैततिरी अंबर जलै ॥ २ ॥ गङ्गपति चंदमु
 णिदि, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्र
 काशन मनरखी ॥ ३ ॥ पुर पवन सब देश, जिनमिग ज्योती जी

जिंगमिगै, पुनमनै सौमवार ॥ नर नारी गुरु लखगे ॥ ४ ॥ अरचै
 अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चंपक वेल, सुं
 दर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुभ थिर थुंन वीकाण, बालूचर म
 हिमा धणी ॥ कीरतबाग प्रधान, दुखजंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥
 पूरो वंछित आश, ठांया तुम सुनिजरतणी ॥ दाता सुख कैलाश,
 चरण शरण किंकर जणी ॥ ७ ॥ पूजै पद गोविंद, चंडशिखर
 जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥
 ॥ ८ ॥ जगणीसे अमृताल, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण
 अतहि विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ९ ॥ गुरुगुण शरिता
 नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, रुद्धिसार जस
 वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी
 गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी बेनिया पार उतारो, तूं वण
 अब मांजी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता ज्ञाव नीर जलधि ज्युं, यो
 संसार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥
 सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिररही नर मज धारो ॥
 में वेठो परमारथ खातर, मोह मगरनै उठारो ॥ सु० ॥ २ ॥
 जक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण वाल ग
 णपति करुणानिध, याविपतितसे वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उलकापात
 गगन ज्युं विषयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह व्यथादिक
 निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु
 रटै कोइ ईसा, अह्मा जमया प्यारो ॥ में ध्याउं जिनदेव
 कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सुण अरजी
 आवे गठ तमहर, तुरतही विघन विमारो ॥ रामबाग पुर गंज
 अजीमें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ॥ ६ ॥ केशवक गुरुसे लखमी
 पावत, हुकम धरै वसुधारो ॥ में इक सेवा चरणकमलकी, मां॥

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत जगणीसे अमृतालोश, मेरुत्रयो-
 दशी लागो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, दे ऋद्धसार ति-
 हारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस
 कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या में दरश तिहारा, दे० ॥ श्रीसद्
 गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु
 आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख
 साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुऊ मन निरमल काज ॥ दे०
 २ ॥ गुण रुद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब
 सिद्धि लीला प्रगटी, डुख दोहम गये जाज ॥ दे० ३ ॥ गुरु
 तुल्य परउपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुज
 आन पुर२ सोहे, मुलक वीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गढ खरतर
 राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रामरुद्ध
 सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥
 ताल तुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, द्यो दोलत गुरु
 रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटै, दिन२ वधे
 सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुज
 परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधा
 रण, नितप्रति हरख उवाह जी ॥ स० २ ॥ राजा परजा पाय नमें सहू,
 गुरु समरण सुभायजी ॥ स० ॥ दोखी दुसमन नृप जय पदियां,
 सद्गुरु करय सहायजी ॥ स० ३ ॥ विखमो विरियां संकट पदियां,
 समरया आवै धायजी ॥ स० ॥ चूखां जोजन तिसिया पाणी,
 निरनिजा धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संव सकलने द्यो सुखसाय,
 जिन कीरत जग आय जी ॥ स० ॥ सालक शिरना परगल जोजन,
 पगर कुशल सहाय जी ॥ स० ५ ॥ अजय महा सुखदाई सदाय,
 नवनिधि वंजित आयजी ॥ स० ॥ सुमति सदाई नित घर सदाय

दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जिनकुश
 लसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब
 हाजरे, देश देशांतर कांइ जमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु
 विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिगि
 नाम मंत्र नर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥
 इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो
 ॥ जि० ४ ॥ अजय महा सुख संपति पामो, सुधिर आनेक धित
 जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ठत्रपती आरे पाय
 नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत आरी जग जागती जी, दुनि
 थांमे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, ह्वारा राज दादेरे
 दरवार ॥ केसर अंबर केवसो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय
 चंपेली, जक्ति करूं जरपूर ॥ हुं० १ ॥ पांगूलियांने पांव समावै,
 आंधलियांने आंख ॥ रूपहीणाने रूप देव दादा, पांखहीणाने पांख
 ॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिवा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥
 आठ पहर आने नलगे जी, रंग यणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥
 पुनः सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम किये
 बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पलर चूक परी सदगुरुजी, में
 मुतलवका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहुं न ध्यायो,
 पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूर्या, आही आरी
 मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावै, तुरत कटत डख
 वेनी ॥ जक्त उधार कहावत जगमें, तादे करत हुं अरजी ॥
 स० ३ ॥ और देवकूं में नही ध्याजं, शरण ग्रही में तेरी, दूरयका
 में जेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका
 में हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ कमारत्तकी वीनती
 सुणवै, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ ॥ सदगुरुके चरण चित्त
 लायरे, जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ बा-
 वन वीर अने बलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या
 पुस्तक सोवनअकर, थांजो वज्र विहार प्राय ॥ सद० १ ॥
 मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साधी चित्त लाय ॥
 इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समरथा सब डुख जाय ॥ स० २ ॥
 गुरुके नामसें अरुसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥
 श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु पर, सहिर करो गुरु सुखदाय
 ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ होरी खेलो जविक सदगुरुके
 संग, नित आनंद उछव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण
 आया, श्रीरांधसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत
 स्वर जीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रत वसंत
 आनंद पिया संग, गोरी गावत वजत चंग ॥ हो० ॥ ऐसें साज
 समाज नक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अजंग ॥ हो० ॥ २ ॥
 निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥
 ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, ठिरको सहकत सुरजिगंग
 ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन दरसनसे नैण, रामरुद्रीसारके चित
 उमंग ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ नेमस्यामसें कहियो मेरी ॥
 इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुझानी, जली हिये नक्ति नसानी
 ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरिसर साहिब, खरतरगठरा जानी ॥
 देशदेशमें आनक गुरुका, सोजा जग पहिचानी, सदा रवि तेज
 समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद जेली, चरणांरी पूज
 रचानी ॥ धूप दीप बलि आगल ढोवी, बहु विध पुष्प चढ़ानी,
 जला फल जेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक,
 हाजर होत सहानी ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरिके साहिब, वं ठत

काज करानी, सदा गुरु महिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये
 श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये वालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद
 यालकेसनमुख गानै, पठत मधुरधुन गुण गोरी ॥ स० ॥ १ ॥ केशर
 घोली जरी रे कचोली, पूजत हे वारीजोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल
 मच्यो सदगुरुके, अबीर उन्नावत जरीजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धनश
 ज्ञाय हमारे प्रगटे, सदगुरुनं पकनी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरं
 जण दुसमन गंजन, बलिहारी चरण तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि
 तदाता जगके त्राता, अरजी हय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत
 रामरुदिसार सुपाठक, वंदत हे डुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥
 इति पदं ॥ राग प्रज्ञाती ॥ कैसेर अवसरमें गुरु रखी लाज
 हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल जरोसा तेरा, चंद सूर
 पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या
 जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥
 के० २ ॥ आगे तो कई बेर हमारी, चिंता दूर निवार ॥
 अबकी विरिया झूल मत जावो, सदगुरु परजपगारी ॥ के० ३ ॥
 अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल
 सूरिंद गुरु तेरा, वना जरोसा जारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥
 पुनः ॥ श्रीजिनकुशल सूरिसर साहिब, तुम हो परजपगारी ॥ श्री० ॥
 खरतर गठ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री०
 १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, जीरुजंजण अति जारी ॥
 नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजार ॥ श्री० २ ॥
 जगवन्त तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जि
 चंद मेरे हो सदगुरु, हम हैं सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति
 पदं ॥ पुनः ॥ श्रीगणेश गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

वारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अरुत कुंकुम, जलजर कंचनजारी ॥
 देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरुं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी
 ज्ञाति करुं विध पूजा, आणके चित इकतारी ॥ राज कहत मेरे
 परमगुरुकी, चेर वलिहारी ॥ श्री० २ ॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥
 कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत हे परशन ॥
 जगतमें या शमो कोई, न देख्या नयण जर जोई
 ॥ १ ॥ विरुद जूमंरुखे गाजै, फरशतां पाप सब जाजै ॥
 पूजतां संपदा पावै, अचिंती लख घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख
 गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज
 सुण जाजै, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥
 राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजै हो ॥ कु० ॥ खरतर
 गढपति कुशल सुरिंद गुरु, मुऊ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥
 पतित उधारण विरुद तुह्यारो, इतनी अरज सुणीजै हो ॥ कु० २ ॥
 आधि व्याधी अरु दोखी डसमन, ए सब दूर हरीजै हो ॥ कु० ३ ॥
 खेमरतन सेवगकुं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥
 इति पदं ॥ पुनः ॥ पूजो जजो रे जाई, गुरु महिमा
 ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर
 घुष चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ जविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके
 सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु मेरे, नि
 शदिन हर्ष बधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो
 अरज करुं करजोरुने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥
 विरुद घणा बै राजरा जी कांई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥
 सुनिजर जोयजो साहिबा ॥ १ ॥ आरै रावल राणा राजवी जी,
 थारा पूनम पूजै पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नैं कुमकुमा जी,
 काई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ आरै घुमलां रे आगल

धूमरा जी, कांई हूलत चमर गजदाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम
 नी जी, कांई निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थारी ठावी
 ठोमे आपना जी, कांई उदयापूर आवेर ॥ स० महिमा जलौ
 गुरु मेरते जी, कांई सालूमेवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४ ॥ थारी
 ज्योति धणी गुरु जिंगमिगे जी, कांई त्वथती गढ वीकाण ॥ स० ॥
 आसा पूरण आविजो जी, थेलो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥
 म्हासी वीनतमी जलै मानज्यो जी, कांई दादाजी दीनदयाल ॥
 स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांई पाटोधर प्रतिपाल ॥ स०
 सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजै, गुरु परतिख
 तिहां राजै रे ॥ म्हारा, सदगुरुजीनी बलिहारी ॥ मनवंछित पूरो
 म्हारा, म्हेतो करण पखालां आस रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन जरियं
 कचोली, मांहे बलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरुं
 पाया, पूज्यां सब पाप पुलायारे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमने सोमवारा,
 थारे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० ॥ सुध मन पूजा कीजै, दुख
 दोहग दूर हरीजै रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमां
 हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमांहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अ
 वर न कोई, दीगे में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवा
 ली सांगाने रे, जिहां राज करै नितमेप रे ॥ म्हा० ॥ श्रीलंघ मिल
 तिहां आवै, जिहां लूणियां गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान
 सार गुरुराजा, ज्यारा वाजै सदाइना वाजारे ॥ म्हा० ॥ कमानंद-
 न गुण नावै, करजोमी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥
 ॥ अथ दादांजीकी लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गठपति साहिवा ॥
 ॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि दिखशता ॥ सद
 गुरु मईर करीज्यो मुऊपर, ज्युं मिन्ननकुं साता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सै
 कट काटै, संघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा
 अधिकारि, जाणे सब संसार ॥ जरदरियांमे ज्याज उगारी, जिन गु
 रुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणसेती, पा
 पतिमर हट जाय ॥ गुरु परमात्म सुगुण शोभागी, गुरुगुण केम
 कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर ठणकाती, लिये अली
 बहु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अत्र विचक्षण, मृड समीर ऊणकार
 हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसद्गुरु दरबा
 र ॥ इंद नरिंद नमे पदपंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥
 ६ ॥ रुद्र सिद्धके आगर सद्गुरु, जो ध्यावे सो पावै ॥ जात्री
 आवै जात्र करणकुं, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन
 अर्चन सद्गुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊ
 द्यर, करै सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत
 सुखकर, नंद चंड शशि वार ॥ स्तैष माश प्रतिपत् दिन जेव्या,
 शुक्ल पक्ष शुभ वार हो ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहै,
 तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र उ
 दार हो ॥ स० ॥ १० ॥ सद्गुरु धर्मशील परभावै, कुशल होत नित
 साय ॥ रुद्रिसारपे महिर करीनें, अविचल लील बताय हो ॥ स०
 ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सहेब्यां आज
 चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्रीजि
 नकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद हे
 ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगहना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥
 डुष्ट कष्ट जय दूर करीनें, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥
 पूनमश् जक्ति धरीनें, आवै संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद
 घोली, पूजै विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सद्गुरु आगले

सरे, सज्ज शोखे सिणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेनर
 ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवै चित्त
 उलझाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥
 मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥
 बलिहारी गुरुनामनीसरे, बारीजानं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥
 संवत नगण वत्तीसे कार्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम
 गंगालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगढ
 सुखकर सोजागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत शशि
 अग्निनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज
 सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ रुक्सार गुरु गुणगण ऊपर, नित
 प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥
 कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह
 अकवर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर
 मंमल सम सूरी, दीपत वदन बवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंमल
 मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमा
 णिक्य सूरी पाट नदयगिरि, श्रीजिनचंद्र रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पे
 खतही हरखित ज्यो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥
 इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीमौज्याय सूरिसरु,
 गुरु गढपति हो, खरतर गढ सुखकार ॥ साहिवजी ॥ कोठारी
 कुल दीपता, गुरु गढपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥
 करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत
 अठारे वासवै, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे
 मीनोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरम अठारे वाणमें,
 गु० पद उलाकर जण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोजता,
 धनु कान्त जग उज्ज्वल ॥ सा० ॥ पारज जगमें लज्जता, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोवरू, गुं० दीपत
 गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ जगणीसे सतरे समें, गु० पायो देववि
 मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद बन्धि निधि उमुपती, गु० साधमाश
 सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पद्म तूर्या तिथि, गु० प्रेम धर्णे हरखाय
 ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरिसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥
 कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमें इम रुद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥
 इति सौजाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये ठे देशना रे, त्रिजुवन जन हितकारज ॥ पर
 खद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रजु
 मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ जव्य मधु-
 र तो ज्ञावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज
 रपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रजु वचनामृत पान
 थी रे, अजर अमर पद आय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपर्णे मनमोहनी
 रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांजले जव्य लहे सही रे, जिन पर
 ज्ञाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणारे, नय निक्षेप
 अजंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतजंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥
 शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर
 वरसतारे, जवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाज पसा
 यथी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश
 जणें कळयाण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि
 श्रीजिनचंद मुणिंदा, सुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर
 वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना हिव दीजै ॥ आंरी देशना सुण मन
 रीजै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, जूमंरुल ऊपर
 गायो ॥ कमलादि सकल मन जायो, सु० ॥ २ ॥ वेलानुल देव-

गंधार, वलि जैरव राग मज्जार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥ ३ ॥
 पंच सवद गहिर ध्वनि गाजै, जिनवर घर जालर बाजै ॥ सह
 सज्ज यथा धर्म काजै, सु० ॥ ४ ॥ दिव वहिला पाट पधारो,
 श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरै स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥
 सुण विनंती वचनविशेष, गुरु आपै धर्म उपदेश ॥ टालो जनि
 कोम कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो
 जनिप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रत
 पो ज्युं शशि सूर, दिनप्रति वधैते नूर ॥ हरो संघ सकल डस
 दूर, सु० ८ ॥ गोरी मिल मंगल गावै, जर मोतियां आल वधावै ॥
 लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापूत्र गोखे रतन जमाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद
 सूरीसरू, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गढराय हो ॥ श्रीजिनलाज पा
 टोधरू, सुगुरु म्हारा दिन२ साजे सवाय हो ॥ म्हारा सहज सो
 जागी, म्हारा शुज गुण रागी, म्हारा हितधरू ॥ १ ॥ सुगुरु म्हारा
 देशना यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उठक थयो, सु० सुणवा अमृ-
 तवाण हो ॥ वहिला वंठित पूर हो ॥ सु० थे ठो अवसर जाण
 हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण घर संचरया, सु० विकस्या कमल
 कलाप हो ॥ राग विज्ञास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप
 हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसवद जालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार
 हो ॥ इम बहु विध जूममलै, सु० वरत्या जय२कार हो ॥ म्हा०
 ४ ॥ संघ सकल जगते करी, सु० जोवै थारी वाट हो ॥ नचि
 पधारो गठपती, सु० यो दरिशन गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण
 अवसर सिंघासणें, सु० पावधारै जलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहरे
 स्वरै, सु० वांचै सूत्र सिद्धंत हो ॥ म्हा० ६ ॥ बहु जवियण प्रति-

ब्रूजै, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु०
 टावै जवडुख जोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी,
 सु० गुण उत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निर
 ख्यां मन उद्धास हो ॥ म्हा० ८ ॥ थे चिरजीवो गणपती, सु०
 राज करो इंक आण हो, इम बोलै मुनि सुध सदा, सु० वाणी
 कृमाकळ्याण हो ॥ म्हा० ९ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा
 निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदिदै, जविकजन
 ॥ एहवा ० ॥ आप तरे उरनकूं तरै, शरण तिहारी गहियै ॥
 ज० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंछित देशें वहियै ॥
 ज० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशो, लहै जविक सुख कहियै ॥ ज०
 २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखै गांजन महियै ॥ ज० ॥
 बलि निर्यामिक उपमा धारै, जिम नाथिक नौ तरियै ॥ ज० ३ ॥
 एक असंजम दोय विधि बंधन, त्रिविध दंरु परिहरियै ॥ ज० ॥
 चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ ज० ४ ॥ षट्
 काय रक्षक महाजय जीपक, अशरण शरण कहीजियै ॥ ज० ॥
 एहवा सदगुरुना बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ ज० ५ ॥
 गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ ज० ॥
 रिदयकमल नितप्रति राखोजै, आनंद शिवपद लहिय ॥ ज०
 ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः जवि तुल्य वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥
 ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थकरू रे, वरधमान जिनरा
 ज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोजत तेज समाज ॥
 जविकजन वंदो रे जावै गणपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुध-
 रम गणधरू रे, ज्ञाता द्वादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहा
 मणो रे, चवद पूरधर चंग ॥ ज० २ ॥ प्रजव सज्यंजव जगमें
 परगमा रे, श्रीयशोज्ञ मुनिंद ॥ श्रीसंजुतविजय जइव दुजी रे,

श्रीधूलज्जड दिणंद ॥ ज० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हुवा
 वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो जूनखे रे, सुरनर नामत शित ॥
 ज० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुले जला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री
 उद्योतन सूरि सोदामणा रे, वयरी साख मऊार ॥ ज० ५ ॥ वरधमान
 परमुख शिष्य जेहनारे, चार अशी परिमाण ॥ गच्छ चोराशी प्रगव्या
 तिहायकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ ज० ६ ॥ तास शीस जिने
 श्वर सूरिजी रे, दुर्वजराय समक ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवमो
 रे, गच्छपति जीत प्रत्यक्ष ॥ ज० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता
 रे, श्रीअन्नयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनकल्लज जिनदत्त गच्छपती रे,
 श्रीजिनकुशल अमाय ॥ ज० ८ ॥ परम प्रज्ञावक इण गच्छमें अ
 या रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि
 हरखंत होय संत ॥ ज० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां अया अनुक्रमे रे, श्री
 जिनलज्ज सूरिश ॥ तास पटोधर जगमां परगमा रे, श्रीजिनचंद
 मुणीश ॥ ज० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे
 द्विजपति ॥ गंज्जीरगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥
 ज० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥
 ज्ञान पदार्थ अति विस्तारसें रे, जाखे ज्ञानि हितकार ॥ ज० १२
 ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे ज्ञानी रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने
 सेवो रे क्युं जूला जमो रे, आय सफल अवतार ॥ ज० १३ ॥
 सुरतरु ठंणी वांवल आदर रे, काइ नर मूढ गिमार ॥ ए उखाणो
 साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ ज० १४ ॥ नाम धार-
 क आचारज ठै क्षणा रे, पंचम काल मऊार ॥ पिण इण सरिखो
 जगमां को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ ज० १५ ॥ वाचक लाव
 एकमल पसावशी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख
 पामस रे, पातकनी करि हाण ॥ ज० १६ ॥ इति वशावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस जलस्थो ॥ ए चाल ॥ मोतिधने मेह
 वरसीयो, सखि आज हुज आणंद ॥ पूज पधारथा विहरता, नामें
 सौजाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सद्गुरु सुरतरुनो
 कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ कान्तिगुणे
 करी शोजता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर बचीस गुणे सदा,
 विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसिया जे पर उपगार रे, उपशमरशना
 झंझार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता,
 सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी
 खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपै जिम जलदल जाण
 रे ॥ जेहनो अतिशय विनाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु
 सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहनें शोजता, मुनिवर
 जिम मोतीमाल रे ॥ कोई शिवर ने कोई बाल रे, वंदीजै तेह त्रि
 काल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गढ
 सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ स
 हु संघतणा सिरदार रे, सखि सुभक्तितणा जरतार रे ॥ जेहनें प्र
 णमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ विसतारता, सखि दे
 ता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप जावना, बारे जावन सुविशेष
 रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश रे ॥ सखि०
 ॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना, सखि अभूतवचन विलाश ॥ कृण
 में कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ आय निज ज्ञान प्र
 काश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करतां निज रूप सुजाष
 रे ॥ सखि० ७ ॥ इति वधावो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी,
 जगगुरु गोतम गणवारी रे ॥ सहियां गुंहली करो ॥ गुंहली करो

गुरु संगे, जगति तलै उबरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराया
 राजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेड़ी विषय निवारी,
 नवविध ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ ड्यार कषायकुं टालै,
 पंच महाव्रत सूखा पाले रे ॥ सही० २ ॥ सेवे पंचाचार, धरै पंच
 सुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती बलि ठाजै, इम ठत्रीश
 गुणै गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धात्म
 अनुभव संगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम जंग
 प्रवादी रे ॥ सही० ४ ॥ मोक्षमार्ग उपदेशी, धरे धरमध्यान शुज
 लेशी रे ॥ स० रत्नत्रय अज्यासी, जिविजन चितकमल विकासी
 रे ॥ स० ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै, गणधर वंदन शुज जावे रे ॥
 सही० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर जर्मने चूरे रे ॥ सही०
 ॥ ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै शाणी रे ॥
 स० ॥ श्रुत सेवा जे करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स०
 ॥ ७ ॥ इति पद ॥

पुनः देशना ॥ नणदलवाई चुमले जोवन जिल रह्यो ॥ ए
 चाल ॥ सुणीधे सदगुरु देशना ए सहियां, मधुर सुधारश वाण ॥
 सदगुरु म्दारा, द्यो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिम उप
 दिस्या ए सहियां, नय निक्षेप सरूप ॥ स० ॥ तुम मुखवाणी नि
 रमलो ए सहियां, ज्योसे घट्ट चूंय ॥ सद० ॥ २ ॥ तखत विराजो
 साजता ए सहियां, उदयाचल ज्युं दिणंद ॥ स० ॥ तेजे ऊलामल सुर
 तरू ए सहियां, मुखठवि पूनमचंद ॥ स० ३ ॥ जीवदया तरू सींच
 वा ए सहियां, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर धीरजधरा
 ए सहियां, जाखो नव तत्व सार ॥ सद० ॥ ४ ॥ संघ जगति
 नित साचवै ए सहियां, पूरव पुन्यसुधान ॥ सद० ॥ तारण तरण
 जिहाज ज्युं ए सहियां, सुध समकित सुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरगत महिमा निली ए सहियां, सदगुरु कुशलनिधान ॥ सदा० ॥
 रुद्रस्तारनी ज्ञावना, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदे-
 शना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा ज्याजनी पर तारो, गुरु म-
 न्नो थे मोह्यो म्हारे ॥ सवाईगुरु ज्याजनी० ॥ अमृत उ-
 पम जिनवाणी, स्याद्वाद सुधारश खाणी, अति नय निक्षेप प्रमा-
 णी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर ज्ञाखी, गणधर मुनि-
 सूत्रे साखी, आगमनिधि हृदयें राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु
 ज्ञानी गुणवंता, जवि हृदयकमल बोधंता, गुरु सदस किरण ऊ-
 लकंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ जविजीव भवण गुण रसिया, चात्रक
 ज्युं जलधर हसिया, उपदेशे दुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥
 गुरु धर्म शील सोजागी, तसु चरणें श्रुतमति जागी, रुद्रस्तार व-
 चन धुन जागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥



॥ अथ श्रीखरतर वृहद्भक्तो सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पञ्चरक्षण व्रत
पिठली अष्टावास्या ३० तिथिको करे, ८ अष्टमी कम होय तो
अष्टमीका व्रत सप्तमीको करे, और जो चतुदस कम होय तो १४
का उपवास अमावस या पूनमको करे, इसका कारण यह है की
यह दोनों तिथि परावर पर्व है, चौदश पर्वदिन हैं तेरस अमावस
पूनम जी चिरंतन पक्षीका दिन है, यह दोनों दिन धर्मकृत्य के
रणके हैं, पारण उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत
जैनो पंचांगको प्रवर्ति नहीं, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां
गिणनेमें आती है, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोंका कय
वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपन्नत्तीमें पांच संवत्सर कहे हैं, उसमें
से अग्नि बर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर रक्का है, लेकि
न् सूर्यसंवत्सर तीनसे सवापेंसठ दिनका होता है, इस वास्ते जै
नागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नववाद हेतुसे. इस वास्ते
जो चौदश कम हो तो उपवास तथा परकी प्रतिक्रमण निस्संदेह
पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन तेरस तथा चौदस कय
तिथिके वितत्प्रेको न करे, और जो बेखा करे तोहरीगोमेतो दोनों
दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य है ॥ अब कोइ वखत संबहरीकी चोथ
कम हो तो पांचमके दिन संबहरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन तीजके
दिन कदापि काले जी नहि करे, और जो चोथ दो होय तो पड़ली
चोथको संवत्सरी करे, और कोइ जी तिथि दो होयतो पड़ली
तिथि माननीय है, दूसरी लोमतिथि है. दूसरा
साठ घन्टीकी तिथि ठोमके दूसरी घन्टी अधवर्ग

ह्रमानोका काम नहीं, इस पर कोई ऐसा कहे की अपणे तो
 तिथि मान्य है, सूर्य उदय होय जहां तक कोई भी तिथि
 तो उस दिन वोही तिथि मानते है, इस वास्ते जो दुसरी
 थ अधधनी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष है?
 प्रश्नका उत्तर—हे ज्ञान, जो पहले दिन तिज मानी है, उर ती
 ५ दिन चौथ बहुत धनी जुगतेगा, लेकिन वह तिथि तीजही
 नीजेगा, इसी तरे चौथके दिन सूर्य उदयकी वखत धनी अ
 ानी चौथ होणेंसं चौथ मानीजेगा, लेकिन जो तिथी दो हागी
 नमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहेगी, तबतो
 ती संपूर्ण तिथिकों ठामके दुसरी थोनीसी तिथिकूं व्रत करणा
 पजम नहीं, कार्तिक मास बंद तो पहले कार्तिक चोमासा करे
 ष्ट्युण तो बढ़ताही नहीं, अगर बढ़तो दुसरे फाल्गुणमें चोमा
 करे, असाढ दो होयतो दुसरे असाढमें चोमासा करे, असाढ
 मासेकी चौदससैं पच्चास गुणपच्चासमे दिन चौथकूं संवत्सरी
 रे, चौथ कम होयतो पांचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण जा
 वा आसोज बढ़तो पंचमासी चोमासा करे, श्रावणमास दो हो
 तो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवत्सरी करे, चोमासेकी चौदससैं
 पच्चास दिन लांघके संवत्सरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीक
 ष्णसूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ है, उर जो दो महीना
 होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष दुसरे बढे महीनाका शुक्ल
 पक्ष ऐसे कल्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका
 सुदपक्ष दुसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूम जानना, इन ३०
 दिनोंमें कल्याणकतिथिका व्रत पञ्चस्काण नहि करे, यह तिथियो
 का प्रमाण श्रीहरिज्ञासूरजी कृत तत्त्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध है,
 सो किंचित्प्रमाण गाथा लिखे है ॥ निहिपक्षगेपुषतिः, केयं

जुतधम्मकज्जेय ॥ चान्हसीविलोवो, पुन्नमियपस्किपन्निक्कमणं ॥ १ ॥
 तथेवपोसहविही, कायवासवगेहिसुहहेज ॥ नहुतेरसीइकीरई, ज
 म्हाणाणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरौदयपनियायावी, तेरसीहुंतिनप
 स्कियंकुळा, चउम्मासियकरणे, एसविहीदेसिउसअणा ॥ ३ ॥ ति
 हिबुद्धीएपुवा, गहियापनिपुन्नजोगसंयुता, इयराविम्माणणिळा, परं
 थोवत्तितत्तुल्ला ॥ ४ ॥ (तेसेइ ज्योतिष्करं पयन्नेमें जी एसाही
 लिखा हे) ॥ ठहिसिहियानअठमी, तेरसिसहियानपस्कियाहोई ॥ ५ ॥
 निवेसहियानकयावि, इइजणियावीयरणेण ॥ ६ ॥ अठमिदिनंमि
 पायं, कायवाअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमंमि, नवमीठधीनका
 यवा ॥ ७ ॥ पनरसम्मियदिवसे, कायवंपस्कियंतुपाएण ॥ चान्हसे
 विकइया, नहुतेरसिसोलसमेकहवि ॥ ८ ॥ तथा श्रावक साम्मायक को
 लव पइली सामायकदंरुक ३ वीर उच्चरके पीठे इरियावही पन्निक्कमें,
 कयोकी आत्मारथी आचार्य श्रीजद्रवाहूस्वामी, श्रीहरिजद्रमूरजी,
 तथा श्राद्धविधिके कर्ता तपागच्छी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमल
 गच्छी नवपद प्रकरण कर्ता श्री सूरिः प्रमुख आचार्योंके बनाय
 ग्रंथोंमें पहले कोमिजंते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ।
 तथा श्रीमहावीरस्वामीके ठव कढ्याणक मान्य हे, इस बातक
 कल्पसूत्रादिक अनेक ग्रंथोंमें पाठ हे; खरतरगच्छ, तपगच्छ के आच
 र्योंने ग्रंथोंमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध ज
 एके ठछा कढ्याणक न मानते हे उनोकों मिगंवरकी तरे महि
 नायस्वामीकों जी स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्यूंकी वो ज
 आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे, डुसरा अपणे मनकळितपणें
 न माणनेसें अपणेही पूर्वाचार्य गुरुवोकी आज्ञा लोपन होती हे
 तेसें सर्वे पोषय अष्टमी चतुर्दशी कढ्याणकादिक पर्वतिथिको कोरे
 लेकिन् त्रितापर्व सामान्य तिथिमें पोसह करणेका कथन कित

सिद्धातमें जी नहीं है, पर्युसणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही करणी ऐसा बंधाण नहीं, अवकी जी करे । तथा आंबिलमें एक अन्नद्रव्य दुसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका कथन है इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रहण करणा नहिं चाहिये । तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनायकजीकी पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योंने मना किया है, कारण इस कालमें प्रायें स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीवर्म प्रगट होना दीख रहा है, तथा श्रावस्त्रुं पञ्चस्त्राणमें पाणस्तलेणवाका पाठ कइया सुक्त बढी, यह पाठ साधूका है, तथा दिनप्रति एक उपवाश पञ्चस्त्रावे, जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें धारणा रखे, लेकिन पञ्चस्त्राण कित्य सूर्योदयकी वखतही करे । तथा जिस धान्यकी दो फारु होय सो सब बिदलकी गिणतीमे है, इस द्विदलधान्यकुं गोरस दही बाढके साथ जइया नहि करे, तथा मरण जन्मका सतक जिस घरमें होय उस घरका आहार पाणी साधू वर्जन करे, लेकिन संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं माने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी है, अनेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके है जिसमे सरल शुद्धोपयोगी समयसुंदरोपाध्याय विरचित सामाचारीशतक पंचांगी प्रमाण सूत्रोंके पाठ संयुक्त है सो अनेकांती बुद्धिवानोंने गुरुगमसें देखके धारणा ॥ यह खरतरगढमेंसे चोरासी गच्छ जया है, जिस वास्ते खरतरगढमें चोरासी नंदि है, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के निजशिष्य थे, इस उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य नर ८४ में निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरिः एवं ८४ को आचार्यपद दिया, वर्द्धमानसूरिःके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० को शालमें अणहिलपुरपत्तनमें चैत्यवाशी उपकेशी गणवालोकुं ज्ञान नर किया

करके जीता, तब डुर्लभराजाने खरतर विरुद्ध दिया, तबसे कोटिक गह्व चंडकुल वज्रशाखावाले खरतरगह्व कहलाए लगे, लेकिन अजी स्वमताभिमानो खरतरगह्वकूं संवत् वारेसे ४ की सालमें जिनदत्तसूरजीसे जया ऐसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित ग्रंथोंमें लिखा हे, लेकिन अप्रणे पूर्वाचार्योंके बणाये सम्प्रकृतसति आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरिके दो शिष्य जये, बने जिनचंडसूरि, जिनोने संवेगरंगशालादि ग्रंथ बणाये, उर श्रीमाल गोत्र थापा, डुसरे श्रीअन्नयदेवसूरि, जिनोने नवांगकी वृत्ति शाश नदेवताकी वीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवृद्धजसूरि, जि नोने हजारों राजपूतोंको श्रावक बणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिन दत्तसूरजी एक लाख तीस हज़ार राजन्यवंसो माहेश्वरी तथा ब्रा ह्मनोंको श्रावक बणाये, राखेचा लूणीया पारख, सांवसुखा माढू कोठारी, वोथरा नाहटा, बनेर गोलठा जावक चम्म डुगर सेठिया ब्रह्मेचा, इत्यादिक तीनसे गोत्र स्थापक ज्ञानशाली प्रमुखगोत्रोंकूं उंसवंशमें श्रावक बणाया, सब गोत्रोंके नाम लिखएसे ग्रंथ बढ़ जायगा इस वास्ते इतने पर सजज लेखा. एक अठारे जानि रत्न प्रज्ञसूरिजीने उसियामे उंसवाल बणाये हे, बाक्री प्रायें सर्व उंस वाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीने लेकर श्रीजिनवृद्धसूरि, माहाराज तक खरतरगह्वके प्रतिबोधक हे, पीठे उंसवालवंशी हुये पीठे सं वत् १५ से लेकर आज दिन तक उरर शठियोले तथा सताव लंवियोने इनोपर अर्पणा सिद्धा जमाया हे, मूल वंशावली देखो गे तो सब व दोलत खरतर वृद्धगह्वकी हे, यह बात हमने बहोती की वंशावली तपासके लिखी हे, जिनोके पट्ट परंपरामें दादा श्री जिनकुशलसूरजी जये, उनोके शिष्य उराध्याय श्रीहेमकीर्तिने हेमथामशाखा सविवाणगह्वमें पांचसे राजन्यवंशीयोकूं दीहा देणे

से प्रसिद्ध जई, उस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधूगुणसे विराजमान धर्मशीलगणिः परमगुरु जये, जिनोके शिष्य पंक्ति श्रीकुशलनिधानमुनिः जये, उन परमपुरुषसाधूजी माहाराजका चरणाब्जचंचरीकउ० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंजली पं० हेमचंद्रमुनिः चि० हेमचंद्र अमरचंद्रादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य अनेक विद्यार्थियोंके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्तव्य सर्व जीवोके उपगारार्थ उपायके प्रसिद्ध करा हे.

निकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर बम्हा उपासरा विद्या-
शाला श्री० परमोपगारी युक्तिवारिधिः॥ रामलालज। गणिः ॥



समाप्त.

